आराध्य सूत्र

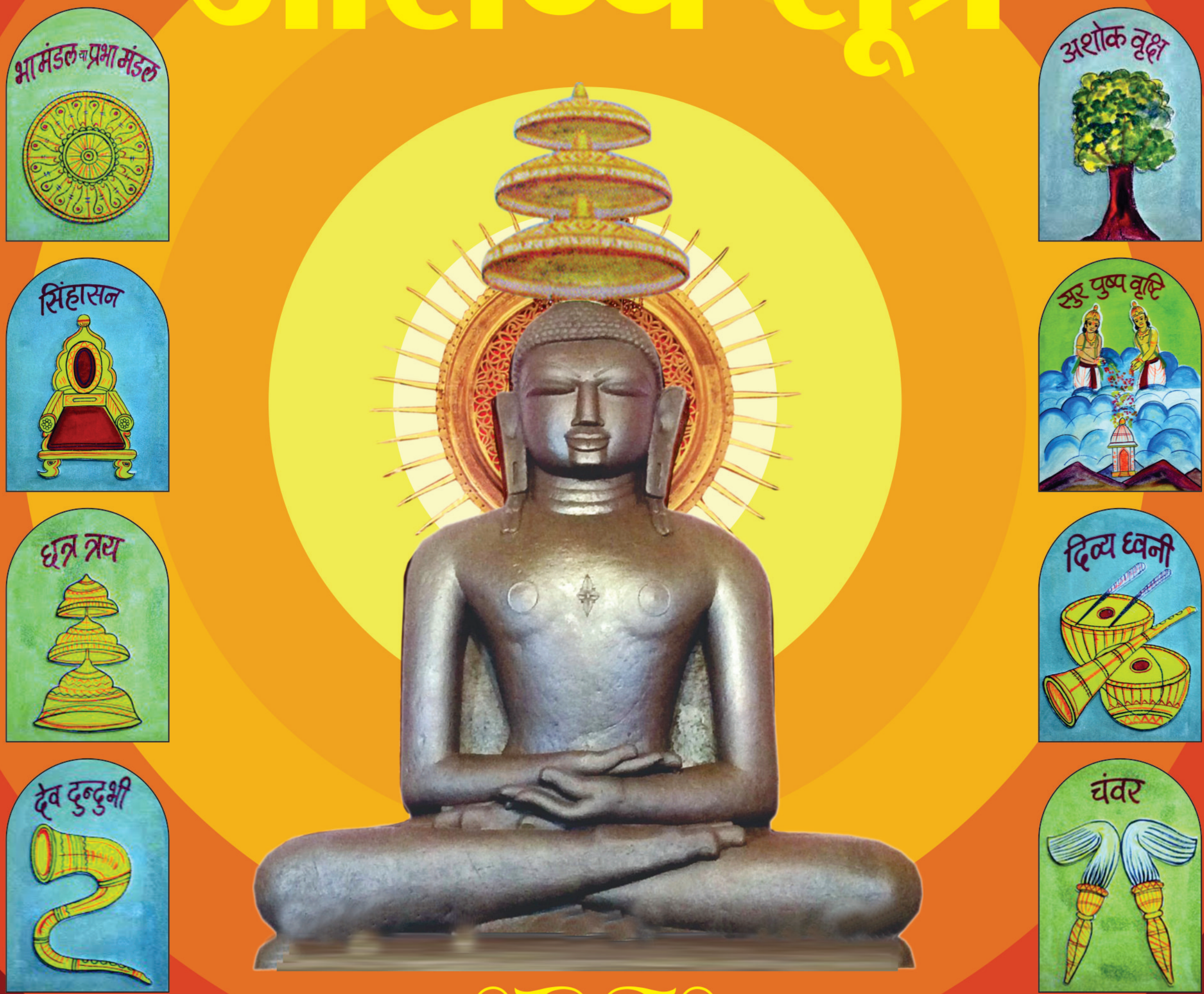

नैतिक, व्यवहारिक, धार्मिक बनाने वाला, आध्यात्मिक जीवन जीने की कला, साथ ही ढंग से मरने की कला सिखाने वाला, सफलता के अद्भुत रहस्य, उन्नति के उपाय बताने वाला, घर को स्वर्ग बनाने वाला, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, कन्नड़ छह भाषाओं में अनुवादित लोकप्रिय ग्रन्थ "आराध्य सूत्र"

संकलन/सम्पादन

निर्दोषसागर जी एवं निर्लोभसागर जी

प.पू. मुनिश्री निर्दोषसागरजी

जीवन-परिचय

पूर्व नाम	-	बाल ब्रह्मचारी श्री पवन जैन
जन्म स्थान	-	तारादेही, जिला-दमोह (म.प्र.)
जन्म तिथि	-	02 अक्टूबर 1967
पिता का नाम	-	श्री हकुमचन्द डेवडिया
माता का नाम	-	श्रीमती पुत्तीबाई जैन
भाई (दो बड़े)	-	श्री चन्द्रकुमार जैन , श्री कैलाशचन्द्र जैन
अध्ययन	-	सिद्धांत रत्न, न्याय रत्न
मातृभाषा	-	हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत
ब्रह्मचर्य व्रत	-	पूज्य 108 श्री निर्वाणसागरजी से 29 जून को
मुनि दीक्षा	-	10 अगस्त 2013, रामटेक, नागपुर
मुनि दीक्षा गुरु	-	संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज
कृति संपादन	-	सूक्तिमुक्तावली, सुबोध संस्कृत भारती, श्रावक चर्या, दशधर्म स्कंध, वृहद् सामायिक पाठ, नाममालादि शब्दकोश, अराधना पाठावली, जयसेन प्रतिष्ठा पाठ, अमृत भारती, श्रुताराधना, तत्त्वार्थ सूत्र (प्रभाचंद्राचार्य कृत), जैनेन्द्रवृत्ति, आराध्य सूत्र, आराध्य सूक्ति, आराध्य मञ्जरी, णमोकार का जाप करो अपनी रक्षा आप करो इत्यादि।

आराध्य सूत्र

संकलन/सम्पादन
मुनि श्री १०८ निर्दोषसागरजी एवं निर्लोभसागरजी महाराज

नैतिक, व्यवहारिक, धार्मिक बनाने वाला, आध्यात्मिक जीवन जीने की कला, साथ ही ढंग से मरने की कला सिखाने वाला, सफलता के अद्‌भुत रहस्य, उन्नति के उपाय बताने वाला, घर को स्वर्ग बनाने वाला, हिन्दी, अँग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, कन्नड़ छह भाषाओं में अनुवादित लोकप्रिय ग्रन्थ ''आराध्य सूत्र''

प्रकाशक
श्री दिगम्बर जैन शान्तिनिकेतन उदासीन आश्रम
ईसरी बाजार, जिला-गिरिडीह (झारखण्ड)
फोन : ०८९६९१६६९१९

कृति : आराध्य सूत्र

संकलन/सम्पादन : मुनि श्री १०८ निर्दोषसागरजी एवं मुनि श्री १०८ निर्लोभसागरजी

संस्करण : पंचम, अगस्त २०२४, अवसर–रक्षाबंधन पर्व

आवृत्ति : ११०० प्रतियाँ

न्यौछावर राशि : स्वाध्याय

प्राप्ति स्थान :

१. श्री दिगम्बर जैन शान्तिनिकेतन उदासीन आश्रम
ईसरी बाजार, जिला–गिरिडीह (झारखण्ड)
८९६९१६६९१९

२. ब्र. जिनेश शास्त्री अधिष्ठाता
श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल
पिसनहारी मढ़िया के सामने, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

३. साहित्याचार्य (डॉ.) पं. पन्नालाल जैन संस्थान
जैन मंदिर के सामने, ९१०, संजीवनी नगर, गढ़ा, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
९८२६१४४६५४

४. ब्र. अनिल जैन (एम.ए. एल.एल.बी.)
उदासीन आश्रम, छप्पन दुकान के पीछे, तुकोगंज, पलासिया, इंदौर
०७३१–५५४४७४४, ९४२५४७८८४६

गुरु चरण रज सेवकः

मुद्रक : **पारस प्रिंटर्स (पवन जैन)**
207/जी–10, सांई बाबा काम्पलेक्स, जोन–1, एम.पी.नगर, भोपाल–462011
फोन : 0755–4620034, 9826240876

ॐ

चेतावनी

- बिना कुछ तर्क-वितर्क किए पूरा एवं अनेक बार अवश्य पढ़ें, कल्याण होगा।
- इस ग्रन्थ को याद करने वाला महा पण्डित बन जाता है और जीवन में उतारने वाला महा संत बन जाता है।
- जितने बार इस ग्रन्थ को पढ़ोगे उतने गुना आनन्द बढ़ता चला जायेगा।

विषय-सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	आत्म साधना सूत्र	०१
२.	णमोकार की महिमा	०७
३.	रात्रि में भोजन क्यों नहीं करना चाहिए?	१६
४.	पानी क्यों छानना चाहिए?	२०
५.	पर प्रशंसा निज निंदा ही अर्चा है	२१
६.	चिद् विलास, सबसे खास	२९
७.	ईर्ष्या नहीं, ईश्वर चाहिए	३५
८.	चारित्र-ज्ञान-श्रद्धान, ये ही मोक्ष प्रधान	४३
९.	धर्म से रिक्त - १० लोग	५६
१०.	अहिंसा	६२
११.	अनुमोदना	६४
१२.	ब्रह्मचर्य	६५
१३.	गरीब रोटी को और अमीर भूख को ढूढ़ता	७२
१४.	सबसे सुन्दर एक-जिसका नाम विवेक	७४
१५.	चेहरा नहीं, चारित्र उज्ज्वल हो	८३
१६.	लड़के व्यसन में-परिवार टेंशन में	९२
१७.	खुश मिजाज-हाजिर जवाब	९९
१८.	चिंता	१०९
१९.	दान	१११
२०.	धैर्य	११५
२१.	दुरुपयोग	१२०
२२.	एकाग्रता	१२०
२३.	गंभीरता	१२२
२४.	गुरु	१२२
२५.	झूठ	१२६
२६.	मुस्कुराती शकल से आती अकल	१२७
२७.	दुर्लभ गुण उपकार और कृतज्ञता	१३१
२८.	क्षमा	१३३

२९.	विनम्रता का द्वार, करे जग से उद्धार	१३७
३०.	कपट से दु:ख प्रकट	१४४
३१.	लोभ	१४५
३२.	कंजूस	१४७
३३.	दारिद्र्य विजयी–लक्ष्मी	१४८
३४.	मित्रता	१५०
३५.	मौन रखता कौन	१५६
३६.	देवप्रिय	१५८
३७.	कुटिल नीति पर नहीं, धर्म नीति पर चलें	१६१
३८.	सुभाषित	१७१
३९.	नीति वाक्यामृत	१७९
४०.	निंदा जिन्दा की होती है, मृतक की प्रशंसा करते हैं	१९५
४१.	दाम करे सब काम	२००
४२.	घड़ी घड़ी सजगता	२०१
४३.	पुरुष हो, पुरुषार्थ करो	२०२
४४.	धर्म धुरी मजबूत हो	२१०
४५.	चुनौतियाँ चलना सिखलाती है	२१५
४६.	सोलह सुख	२१८
४७.	समय, समझ, शक्ति का होना दुर्लभ है	२१९
४८.	स्वयं स्वयं पर बनो कृपालु	२२२
४९.	सोना बना लो या सोने में गुजार दो	२२६
५०.	परोपकारी स्तुत्य	२३०
५१.	पित्त चित्त और चारित्र शुद्धि करो	२३३
५२.	अनुभव खुली किताब पढ़ो	२३६
५३.	कार्बन पेपर बनो, रेत पेपर नहीं	२४०
५४.	सज्जनों का काम ट्रेफिक पुलिसवत्	२४६
५५.	उन्नति का मूल मंत्र–सेवा और प्रेम	२४९
५६.	कामना की भावना रोकती प्रभावना	२५१
५७.	पुजारी बने भिखारी नहीं	२५५
५८.	संस्कारों का शंखनाद	२५६

५९.	संस्कृति की रक्षा संस्कारों से	२६२
६०.	शिष्य और शीशी को डाँट चाहिए	२६८
६१.	सच्चा जीवन साथी ज्ञान है	२७०
६२.	सबका हित साहित्य से है	२७५
६३.	सोच बदलो, सितारे बदल जाएगे	२७९
६४.	संत सायर सपूत से जीना सीखो	२८४
६५.	प्रशंसकों से निज को ना आँको	२९०
६६.	हम बिना रोये, गम भुलाना जानते हैं	२९७
६७.	मैं जो बंधन में पड़ा– इसका दोषी कौन?	३०१
६८.	दुश्मनी मिटाने का फार्मूला	३०९
६९.	साहित्य साधने का सदन है	३१०
७०.	विद्वान् सर्वत्र पूज्यते	३१७
७१.	सत्संगति से सुगति गमन	३१९
७२.	पुरुषार्थों का मूल कारण – आरोग्य	३२५
७३.	पाणिग्रहण हो प्राण ग्रहण ना	३३१
७४.	सराहना से भी प्रभावना	३३६
७५.	संघे शक्तिः, कलौ युगे	३३७
७६.	त्याग करो मन से करो	३३९
७७.	तन मिला तुम तप करो	३४४
७८.	प्रेम से सब कुछ पाया जा सकता है	३५०
७९.	वाणी वीणा हो, बाण नहीं	३५६
८०.	जीवन सुधरे जीभ से	३६४
८१.	याचना नहीं अर्चना करो	३६६
८२.	यश हो, परवश न हो	३६७
८३.	स्वाध्याय	३६८
८४.	हमारी आँखें : जीवन का आधार	३७०

आराध्य सूत्र का प्रादुर्भाव

सन् २०१९, ग्रीष्मावकाश प्रतिभास्थली जबलपुर में हो रहा था, एक दिन पुस्तकालय का निरीक्षण करते समय अचानक कोश विभाग पर दृष्टि पड़ी, जिसके '**विश्व सूक्ति कोश**' का '**तीसरा भाग**' उठा कर देखा, कुछ पृष्ठ पलटा कर देखें अच्छा लगा, मन में आया कि इसको पढ़ना चाहिए। पठन करते समय विचार आया कि अच्छी-अच्छी सूक्तियों को डायरी में नोट करना चाहिए। मेरे पढ़ने के बाद मुनि श्री निर्लोभसागरजी ने भी पढ़ने का मन बनाया, पढ़ना प्रारम्भ किया तो साथ ही साथ अच्छी-अच्छी सूक्तियों को डायरी में नोट कर लिया। बाद में मुनि श्री निराकुलसागरजी ने '**विश्व सूक्ति कोश**' का पहला दूसरा भाग भी लाकर दिया उनका भी अध्ययन किया। इस प्रकार के अध्ययन से करीब १०० पृष्ठीय विषय इकट्ठा हो गया, उसके बाद कुछ और भी ग्रन्थ उपलब्ध हुए, उसके साथ-साथ नसरुल्लागंज मंदिर में एक पुस्तक उपलब्ध हुई, जिसका नाम '**उन्नति के सूत्र**' उसको पढ़कर भी कुछ नोट कर लिया, कुल मिलाकर करीब ४००-५०० पृष्ठ का विषय इकट्ठा हो गया। मुनि श्री निर्लोभसागरजी ने कहा कि ये विषय जन-जन को उपलब्ध हो जायें तो लोगों के जीवन में बहुत परिवर्तन आ सकता है, ऐसा सोचकर इस संकलन को पुस्तक का रूप देकर श्रोताओं को उपलब्ध कराया जा रहा है। इन सुन्दर-सुन्दर सूक्तियों को पढ़कर जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। जैसे कि "**सबसे सुन्दर एक जिसका नाम विवेक**"

❑ गुस्सा करना, दूसरों की गलतियों की सजा खुद को देना।

❑ निषेधात्मक दृष्टि कोण व्यक्ति को हताश किये बिना नहीं रहता, एवं सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति को संक्लेश से बचाता हैं।

❑ जीवन जीने का आनंद संघर्ष में नहीं समर्पण से मिलता हैं जैसे विभीषण ने संघर्ष नहीं समर्पण किया, तो राम ने उसको लंका का राजा बना दिया, रावण ने संघर्ष किया तो मिट्टी में मिला दिया।

❑ जहाँ सजावट है, वहाँ मिलावट है।

❑ कष्टों से डरने वाला कठोर परिश्रम नहीं कर सकता।

❑ कलम चलाने से नहीं, कदम बढ़ाने से मंजिल मिलती है।

❑ गाय घास खाकर दूध देती है, साँप दूध पीकर भी जहर उगलता है, अतः प्रकृति को बदलने की

कोशिश मत करो, ''वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे''। इत्यादि अमृतमयी सूक्तियों के अध्ययन से व्यक्ति संत बने या न बने, संतोषी अवश्य बन जाता है।

- मुनि श्री १०८ निर्लोभसागर जी ने भीषण गर्मियों के दिनों में अथक परिश्रम करके अपने उपयोग हेतु इन पंक्तियों को संजोया था। पर हृदय में लोक कल्याण की भावना हुई। इसी परोपकार की पवित्र भावना से प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान की।
- इस ग्रन्थ के प्रकाशन की तीव्र भावना सागर के मैत्री सेवा समूह को प्राप्त हुई।
- श्री बा.ब्र. पंकज भैया जी ईसरी वालों ने प्रूफ रीडिंग आदि कार्य तत्परता के साथ किया। बा.ब्र. पियूष भैया जी इंदौर ने भी सहयोग प्रदान किया। प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से अनेक लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ, उन सबको शुभाशीर्वाद।

आराध्य सूत्र

१. आत्म साधना सूत्र

१. बुद्धि, कुलीनता, इन्द्रिय निग्रह, शास्त्र ज्ञान, पराक्रम, अधिक न बोलना, शक्ति अनुसार दान देना और कृतज्ञता–ये आठ गुण पुरुष की ख्याति बढ़ा देते हैं।

२. किसी वस्तु के संयोग के लिए शोक करना इसलिए व्यर्थ है क्योंकि संयोग में शान्ति और स्वाधीनता नहीं है किसी वस्तु के वियोग में शोक करना इसलिए व्यर्थ है क्योंकि पर की रक्षा अपने अधीन नहीं है व पर का अपने से तादात्म्य नहीं है तथा वियोग में अपने स्वरूप की हानि भी नहीं है।

३. प्रकृति ने सूर्योदय, सूर्यास्त, गर्मी, बरसात, ठंड सब का समय निश्चित कर रखा है केवल मनुष्य को ही हर बात की छूट दे रखी है, कब सोना, कब जागना, क्या करना सब कुछ स्वयं मनुष्य के हाथ में है वह सब कुछ करने में स्वतंत्र है।

४. उपदेश भले ही थोड़ा हो पर जो उच्चारण में हो वही आचरण में हो, जो मुख में हो वही मन में हो, जो दिमाग में हो वही दिल में हो, जो जिह्वा में हो वही जीवन में हो।

५. गृहस्थ के द्वारा मरण पर्यन्त जो पाप संचित किए जाते हैं। उन सब पापों को एक रात्रि का दीक्षित साधु'' नियम से भस्म कर देता है।

६. जिन्दगी छोटी है जंजाल बड़े हैं। जंजालों को छोटा करो, जिन्दगी स्वयं सुखी और लम्बी हो जाएगी।

७. आपके पास सिर्फ तीन ही चीजें हैं तन–मन और धन। अतः आप तन को अपने बीबी–बच्चों को दे देना, धन कुटुंब–कबीले को देना तो चल भी सकता है किन्तु 'मन' किसी को मत देना, मन तो मात्र परमात्मा के स्मरण में लगाना चाहिए।

८. दुर्गति का घोंसला छोटी–छोटी बुरी आदतों के तिनकों से ही बुना जाता है।

९. दूसरों के दोषों पर ध्यान देने से स्वयं का मन गंदा होता है।

१०. धर्म कथा सुनते समय, श्मशान में शवदाह की ज्वाला देखते समय और रोग से सन्तप्त रोगी के कष्ट का अनुभव करते समय मानव हृदय में जो संसार से विरक्त होने की बुद्धि पैदा होती है, यदि वह मनोदशा मस्तिष्क में क्षणिक न रहे स्थिर हो जाये तो मनुष्य संसारी मायाजाल से शीघ्र ही मुक्ति पा लेता है।

११. जीव का 'अपवित्र मन' ही प्रधान नरक है। उस मन की वेदना–चिंता, भय और अशान्ति ही नारकीय यातना है।

१२. तन से नहीं, मन से मिलें, पर से नहीं, स्व से मिलें।

१३. जो 'वर्तमान' में नहीं जीता है वह कभी 'वर्द्धमान' नहीं बन पाता है।

१४. यदि अपना उत्थान औरों के भरोसे हो सकता, तो गधा अब तक इंसान बन गया होता।
१५. हर दिन यह सोचकर जियो कि आज जीवन का आखिरी दिन है।
१६. यह पर्याय पदार्थ पाने को नहीं, परमार्थ पाने को मिली है।
१७. आत्महित का पथ चर्चा प्रधान नहीं, चर्या प्रधान है।
१८. आत्म रक्षा में कभी भी आलस्य या असावधानी नहीं करना चाहिए।
१९. सत्य माता, ज्ञान पिता, धर्म भाई, दया मित्र, शान्ति पत्नि और क्षमा पुत्र; ये छह ही संसारी प्राणी को सुख देने वाले हैं।
२०. यह जीव पुण्य से स्वर्ग पाता है, पाप से नरक जाता है और पुण्य-पाप दोनों से ममता छोड़कर जो अपने आत्मा का मनन करता है, वह शिवमहल में वास पाता है।
२१. जैसे अतिथि आपके माल पर मालकियत नहीं जताता है, वैसे ही आप भी पर पदार्थ पर मालकियत मत जताओ क्योंकि आप भी अतिथि हो।
२२. निरन्तर अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त होता है।
२३. मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी शरीर को व्यायाम की।
२४. प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन के द्वारा अधिक व्यक्ति महान् बने हैं।
२५. अध्ययन हमें आनंद प्रदान करता है, अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है।
२६. जिसकी अनुभूति जितनी गहरी होती है, उसकी संवेदना उतनी ही व्यापक होती है।
२७. दुनिया में सभी को अकेले ही जीना मरना पड़ता है, भले ही बहुत भीड़ हो किन्तु अपने आँसु स्वयं को ही पोंछने पड़ते हैं।
२८. आशा और आकांक्षा की दीवार परमात्मा के दर्शन नहीं होने देती।
२९. आकुलता ही दुःखों की जननी है।
३०. स्वच्छ आँखों के दर्पण से ही स्वच्छ आत्मा के दर्शन सम्भव हैं।
३१. कैमरा नहीं, एक्स-रे की मशीन बनो, जिससे प्रत्येक प्राणी में परमात्मा दिखने लगे।
३२. चिन्ता नहीं चिन्तन करो।
३३. सच्चरित्र ही तीर्थ है, सद्ज्ञान ही धन है, सद्-दर्शन ही धर्म है।
३४. आत्मविश्वास से मनुष्य को वीरता तथा सुदृढ़ता पैदा होती है।
३५. जिस मनुष्य को आत्मविश्वास नहीं, वह कभी भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकता है।
३६. अच्छी जीवन शैली के लिए आवश्यक है कि अगर हम गर्मी से बचने के लिए कमरे में एयर कंडीशनर का उपयोग कर रहे हैं तो दिमाग हीटर की तरह गर्म न रखें।
३७. आत्मा की हानि शारीरिक रोग से नहीं, विकारी भावों से होती है।
३८. यदि आत्म कल्याण करना है तो बुरी आदत और भीड़ से मुक्त होना होगा।
३९. विषयों से विरक्ति व अध्यात्म में आसक्ति वाला ही आनंद को प्राप्त करता है।

४०. मनुष्य जितनी अधिक आवश्यकता पैदा करता है, उतना ही वह पराधीन हो जाता है।

४१. धन्य है वह जो आशा नहीं रखता क्योंकि उसे कभी निराश नहीं होना पड़ेगा।

४२. विश्वास ही व्यक्ति के लिए संजीवनी औषधि होता है।

४३. आत्म कल्याण के लिए सरस्वती से श्रेष्ठतर कोई वैद्य नहीं और उसकी साधना से बढ़कर कोई औषधि नहीं।

४४. समस्त भय और चिंताएँ इच्छाओं का परिणाम हैं।

४५. कनक, कामिनी और कीर्ति की कामना ही साधक को साधना से गिराती है।

४६. सुख इन्द्रिय-विषयों में नहीं, इच्छाओं के रोकने में है।

४७. इन्द्रियाँ स्विच और मन मैन स्विच है, अतः इन्द्रियों को नहीं मन को जीतो।

४८. इन्द्रियों को काबू में रखने की एक ही युक्ति है–उनसे प्रतिकूल काम करते रहना।

४९. जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में रखता है, वह देवों के द्वारा भी वंदनीय है।

५०. मनुष्य का शरीर रथ है, बुद्धि सारथी है और इन्द्रियाँ इसके घोड़े हैं। इसको वश में करके साधना करने वाला चतुर एवं धीर पुरुष काबू में किए हुए घोड़ों से सारथी की भाँति सुखपूर्वक यात्रा करता है।

५१. इन्द्रियाँ वश में न होने के कारण अर्थ को अनर्थ और अनर्थ को अर्थ समझकर अज्ञानी पुरुष बहुत बड़े सुख से हाथ धो बैठता है।

५२. जो अधिक धन का स्वामी होकर भी इन्द्रियों पर अधिकार नहीं रखता वह इन्द्रियों को वश में न रखने के कारण ही ऐश्वर्य से भ्रष्ट हो जाता है।

५३. ईश्वर के द्वारा बताये नियमों का पालन करना ही ईश्वर का जाप है।

५४. किसी को किसी भी धार्मिक कार्य से रोकने पर आपने उसे ही नहीं रोका किन्तु अपने पुण्य आस्रव को रोका है एवं अपने पुण्य के द्वार बन्द किए हैं।

५५. उपकार करके उसके बदले की आशा रखना अपने सत्कर्म पर राख डालने के समान है।

५६. साधक का न तो जन-समुदाय में राग होना चाहिए, न एकान्त में। कल्याण परिस्थिति से नहीं होता, अपितु राग रहित होने से होता है।

५७. हमारे जीवन में सुख कम और दुःख ज्यादा हैं, इसका कारण यह है कि हमने अपना उपयोग धर्म कमाने में कम और कर्म कमाने में अधिक किया है।

५८. सांसारिक उपलब्धियाँ समय में हैं, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ संकल्प में हैं।

५९. आत्मा और परमात्मा का चिन्तन करने का नाम ही उपवास है।

६०. किसी के अभाव में कष्ट की अनुभूति न होना अनासक्ति है।

६१. जो चीज आपको आपसे दूर ले जा रही हो, वह 'पाप' है और जो चीज आपको आपके पास ला रही हो, वह 'पुण्य' है।

६२. मनुष्य को कर्मों का त्याग नहीं करना, अपितु कामना का त्याग करना है।

६३. 'कुकर्म' करते समय मीठे और सुखदायी लगते हैं और कर्मफल भोगते समय दुःखदायी लगते हैं।

६४. मानव जीवन कलह करने को नहीं कल्याण करने को मिला है।

६५. संसार से विमुख होने पर बिना प्रयत्न किए स्वतः सद्गुण आते हैं।

६६. गुरु कहते हैं–तुम्हारी जैसी अर्जी, प्रभु की वैसी मर्जी।

६७. विचार करो कि अपना कौन है? अगर अभी मौत आ जाये तो क्या कोई हमारी सहायता कर सकता है?

६८. बालक जन्मता है तो वह बड़ा होगा कि नहीं, पढ़ेगा कि नहीं, उसका विवाह होगा कि नहीं, उसके बाल-बच्चे होंगे कि नहीं, उसके पास धन होगा कि नहीं आदि सब बातों में सन्देह है, पर वह मरेगा कि नहीं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

६९. आगमन शब्द में ही गमन छुपा है। अतः जो आयेगा वह जायेगा जरूर लेकिन हाँ, जो जा रहा वह आयेगा इसकी कोई गारंटी नहीं, यही जीवन का सच है।

७०. जन्म को नहीं, मरण को सुधारो, अगला जन्म सुधर जायेगा।

७१. स्वयं को जाने बिना, संसार का सब कुछ जानना अन्ततः घातक ही है।

७२. जीवन को सहज भाव से लेना मुक्ति का पहला चरण है। आप स्वयं को महत्त्वाकांक्षों से जितना अधिक बाँधोगे, मुक्ति की मंजिल उतनी ही दूर होती जाएगी।

७३. हमारा जन्म नर से नारायण बनने को हुआ है, ना कि नर से वानर बनने को।

७४. जीवन जीने की कला है कि आप अपने निन्यानवे रुपये में सुखी रहिए एक रुपये की कमी की चिन्ता मत करिए।

७५. निष्कर्म होने के लिए जीवन में सरलता एवं सहजता लाइए।

७६. जीवन का अमर फल उसी को प्राप्त होता है, जो स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को अधिक महत्त्व देता है और समभाव से जीवन व्यतीत करता है।

७७. जीवन सफल करने के लिए पहले खोजिए 'मैं कौन हूँ?'

७८. मुक्ति इच्छा के त्यागने से होती है, वस्तु के त्यागने से नहीं।

७९. दुनिया का सबसे दरिद्र व्यक्ति वह है जिसके पास अपने लिए समय नहीं है।

८०. देह की उपयोगिता तो है किन्तु देह ही अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता, समूचे व्यक्तित्व का विकास करना है तो देह के साथ आत्मा को भी जानना होगा।

८१. धर्म और प्रेम जीवन का दान देकर हासिल किया जाता है।

८२. जब तक तुम्हें अपने लिए सुख और दूसरे के लिए दुःख की चाह है, तब तक तुम सदा दुःखी रहोगे।

८३. यदि जिंदगी को नरक नहीं बनाना चाहते तो न किसी से अपेक्षा करो, न उपेक्षा पर ध्यान दो।
८४. संत, पंथ, मंत्र और ग्रन्थ को बार-बार बदलने वाला दु:खी होता है।
८५. अब देश से नहीं अपितु इस देह से स्वतन्त्र होना चाहिए।
८६. अपने दोषों को माफ मत कीजिए और दूसरों के दोषों पर ध्यान मत दीजिए।
८७. 'सन्तोष' से काम, क्रोध और लोभ; तीनों नष्ट हो जाते हैं।
८८. हम जैसे होते हैं या हमारी दृष्टि जैसी होती है वस्तु प्रायः वैसी दिखती है पर आवश्यक नहीं वस्तु वैसी ही है।
८९. जिसकी दृष्टि में भुक्ति है अर्थात् भोग हैं; मुक्ति उससे बहुत दूर है।
९०. अपने कृत्य पर दृष्टि नहीं और दूसरे के कृत्य पर दृष्टि रखना ही सबसे बड़ी अज्ञानता है।
९१. जिससे राग हो जाता है, उसमें दोष नहीं दिखते और जिससे द्वेष हो जाता है, उसमें गुण नहीं दिखते।
९२. राग-द्वेष रहित होने पर ही वस्तु अपने वास्तविक रूप में दिखती है।
९३. धर्म को तिलांजलि देकर न कभी कोई सुखी हुआ है और न ही कभी कोई सुखी हो सकता है। धर्म नहीं जाना चाहिए चाहे सब कुछ चला जावे। धर्म गया तो फिर कुछ नहीं बचेगा।
९४. धर्म 'पंथ' नहीं, 'पथ' देता है जिस पर चलकर परमात्मा तक जाया जा सकता है। पथ चलने के लिए होता है जबकि पंथ पकड़ने और झगड़ने के लिए होता है।
९५. दुनिया का सबसे बड़ा धर्म स्वयं को जानना है।
९६. 'धर्म' का सम्बन्ध तन से नहीं मन से होता है, देह से नहीं दिल से होता है, प्रदर्शन से नहीं आत्मदर्शन से होता है।
९७. 'कर्म' को ध्वस्त करने के लिए धर्म में व्यस्त रहिये।
९८. 'अधर्म' से जीने की अपेक्षा धर्म से मरना ही श्रेयस्कर है।
९९. 'धर्म' का आभूषण वैराग्य है, वैभव नहीं।
१००. 'धर्म' हीन मनुष्य बिना पतवार की नाव के समान है।
१०१. 'धर्म' के बिना विज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान बिना धर्म अंधा है।
१०२. यदि गुलाब की तरह सभी को आकर्षित करना चाहते हो तो याद रखो कि सुख में फूलना नहीं और दु:ख में कूलना नहीं।
१०३. ईश्वर के चिंतन से करोड़ों पाप इस तरह नष्ट हो जाते हैं, जैसे आग की एक चिंगारी सूखी घास के ढेर को जला देती है।

१०४. जैन दर्शन में आत्मा का ध्यान प्रमुख है और जैनेत्तर दर्शन में परमात्मा का ध्यान मुख्य है।

१०५. 'ध्यान' स्वयं में सोई हुई शक्ति को जगाने की प्रक्रिया है।

१०६. 'ध्यान' में परिग्रह और परिचय ही बाधक है।

१०७. 'ध्यान' की अग्नि कर्मों के पर्वतों को तिनके की भाँति जला देती है।

१०८. आत्महित की भावना ही सच्चा 'ध्यान' है।

१०९. 'ध्यान' के लिए वित्त की नहीं चित्त की जरूरत होती है।

११०. दुनिया में ऐसा कोई मंत्र नहीं जो एकाग्रता से सिद्ध न हो सके।

१११. व्रतों को सही ढंग से समझने से नम्रता अपने आप आने लगती है।

११२. उस काम को, जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो लेकिन दूसरों पर दोषारोपण न करो।

११३. अपनी आलोचना (निंदा) में रुचि होना इस बात का सबूत है कि मैंने अपने घर की देखभाल शुरू कर दी है।

११४. चाहे आप हिम के समान निर्मल और निष्पाप हो जाओ तब भी निंदा से नहीं बच सकते।

११५. दूसरों की निंदा और अपनी प्रशंसा करने से नीचगोत्र का बंध होता है और वह बंध दूसरे गुणस्थान तक ही होता है अत: निंदा करने वाला नियम से ही मिथ्यादृष्टि पापी है।

११६. दूसरे की जिन्दगी के बारे में अँगुली उठाना बहुत आसान है स्वयं की तरफ उठाना उतना ही कठिन है।

११७. वास्तव में मूल चीज 'मानसिक नियंत्रण' है।

११८. सब नियंत्रणों से बढ़कर 'आत्म नियंत्रण' श्रेष्ठ होता है।

११९. 'निराग्रह' व्यक्ति ही निर्माण को उपलब्ध होता है।

१२०. आजकल ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण का इतना आतंक नहीं है जितना कि मानसिक प्रदूषण का है।

१२१. आत्मविश्वास, दृढ़ता, वैराग्य; ये गुण जिस मानव में होते हैं, वही सभी उदार गुणों का स्वामी होता है।

१२२. मुनिपद के समक्ष संसार के सभी पद फीके पड़ जाते हैं।

१२३. संसार के सारे पद भूतपूर्व बनाते हैं लेकिन परमपद (मोक्ष) अभूतपूर्व बनाता है। किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी बेचना है।

१२४. भीख माँगने वाला भी स्वाभिमानी होता है, लेकिन दूसरों पर आश्रित रहने वाला दीन हीन होता है।

२. णमोकार की महिमा

१२५. णमोकारमन्त्र के एक अक्षर का भी भक्ति पूर्वक नाम लेने से सात सागर के पाप कट जाते हैं, पाँच अक्षरों का उच्चारण करने से पचास सागर के पाप कट जाते हैं तथा पूर्ण मन्त्र का उच्चारण करने से पाँच सौ सागर के पाप कट जाते हैं। (तत्त्वानुशासन)

सागर का दृष्टान्त-

१. सुमेरु पर्वत पर कोई चिड़िया आकर चोंच घिसे और सौ-सौ वर्ष बाद पुनः आ-आकर चिड़िया एक-एक बार चोंच घिसे ऐसा करने पर जितने समय में सुमेरु पर्वत पूरा घिस जाये उससे भी बड़ा एक सागर का काल होता है।

२. समुद्र के एक ओर जुआँरी डाली जाए और दूसरी ओर से सेल डाला जाये, जितने समय में लहराते-लहराते जुआँरी सेल में अपने आप घुस जाये उससे भी बड़ा एक सागर का काल होता है।

१२६. जो श्रद्धावान, जितेन्द्रिय, भव्य श्रावक एकाग्रचित्त हो सुगन्धित श्वेत पुष्पों से विधिपूर्वक सर्वभय नाशक णमोकार का 'एक लाख जाप' करता है, वह प्राणी 'त्रिलोकपूज्य तीर्थंकर पद' को प्राप्त करता है। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१२७. जिन्होंने पञ्चपरमेष्ठियों के नाम से उत्पन्न समस्त विघ्नों को हरने वाले एवं नित्य ऐश्वर्य के साधक नमस्कार मन्त्र का पूर्व में जाप किया था अथवा जो त्रिशुद्धिपूर्वक निरन्तर वर्तमान में उनका जाप करते हैं, वे ज्ञानवान् अतिशय धार्मिक पुरुष 'परलोक में त्रिलोकीनाथ' अवश्य होवेंगे। (पार्श्वनाथ चरित-आचार्य वादिराज)

१२८. अपवित्र हो, चाहे पवित्र हो, सुस्थित हो चाहे दुःस्थित हो, जो णमोकार का ध्यान करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। (यशस्तिलक चम्पू-आचार्य सोमदेव)

१२९. जो भव्य प्राणी उठते समय, गिरते समय, विश्राम करते समय, शयन के समय, जाग्रत होने के समय, श्मसान एवं वन में, भय के अवसर पर, विकट मार्ग में, नूतन गृह प्रवेश में, हर कार्य में णमोकारमन्त्र का स्मरण करता है, उसके समस्त विघ्न दूर होकर इच्छित कार्य की सिद्धि नियम से होती है। (उमास्वामी श्रावकाचार)

१३०. नौ बार णमोकार का चिन्तन करने पर २७ उच्छ्वास मोक्ष प्राप्त कराने में समर्थ हैं। (अमितगति श्रावकाचार)

१३१. परमात्मा पर वस्तु है किन्तु परमात्मा का ध्यान निज वस्तु है एवं संसार से पार उतारने में समर्थ है।

१३२. मन का ३३ प्रतिशत, वचन का ३३ प्रतिशत और काय का ३३ प्रतिशत पुण्य मिलता है, अगर जाप में मन नहीं लगता तो वचन और काय का ६६ प्रतिशत पुण्य मिलता है और

संस्कार वश अँगुली चल रही है तो काय का ३३ प्रतिशत पुण्य मिलता है और ३३ प्रतिशत में विद्यार्थी उत्तीर्ण माना जाता है।

१३३. **जे केई गया मोक्खं, गच्छन्ति य के वि कम्म फल मुक्का।**
ते सव्वे वि य जाणसु जिण णवकारप्पभावेण ॥ (तत्त्वविचारसार)
जो कोई भी मोक्ष गए हैं, जा रहे हैं, जायेंगे वे सभी णमोकार के प्रभाव से ही गये हैं, जा रहे हैं, और जायेंगे।

१३४. **जिण सासणस्ससारो, चउदस पुव्वाण समुद्धारो।**
जस्स मणे णमोक्कारो, संसारो तस्स किं कुणई ॥
जिनशासन का सार, चौदह पूर्वों से निकाला हुआ णमोकार मन्त्र जिसके मन में है संसार उसका कुछ नहीं कर सकता है।

१३५. **स्वाध्यायः परमः ताव,-ज्जपः पञ्चनमस्कृतेः।**
पठनं व जिनेन्द्रोक्त शास्त्रयेकाग्र चेतसा ॥ (तत्त्वानुशासन-आचार्य नागसेन)
एकाग्र चित्त से पञ्च नमस्कार का जाप करना अथवा जिनेन्द्रोक्त शास्त्र का पढ़ना दोनों परम स्वाध्याय हैं।

१३६. **पदस्थं मन्त्र वाक्यं च, पिण्डस्थं स्वात्म चिन्तनं।**
रूपस्थं सर्व चिद्रूपं रूपातीतं निरञ्जनं ॥ (ज्ञानांकुश स्तोत्र-आचार्य योगीन्द्रदेव)
अर्हन्त, सिद्ध के समान आत्मा का चिन्तन करना पिण्डस्थ ध्यान कहलाता है, मन्त्र वाक्यों का ध्यान करना पदस्थ ध्यान कहलाता है, अर्हन्त का ध्यान करना रूपस्थ ध्यान कहलाता है और सिद्धों का ध्यान करना रूपातीत ध्यान कहलाता है।

१३७. **कृत्वा पाप सहस्त्राणि हत्वा जन्तु शतानि च।**
अमुं मन्त्रं समाराध्य त्रिर्यञ्चोऽपि दिवङ्गतः॥ (ज्ञानार्णव-आचार्य शुभचन्द्र)
हजारों पाप करके तथा सैकड़ों जीवों को मार कर तिर्यञ्च भी इस मन्त्र की आराधना करके स्वर्ग को प्राप्त हुए हैं।

१३८. घर में जाप करने से जितना पुण्य होता है, उसकी अपेक्षा वन में जाप करने पर सौ गुना ज्यादा पुण्य प्राप्त होता है, उसकी अपेक्षा पवित्र बगीचे एवं घने जंगल में जाप करने से हजार गुना ज्यादा लाभ होता है, उसकी अपेक्षा पर्वत पर दस हजार गुना ज्यादा लाभ होता है, उसकी अपेक्षा नदी किनारे जाप करने से लाख गुना ज्यादा लाभ होता है उसकी अपेक्षा जिनालय में करोड़ गुना ज्यादा लाभ होता है एवं भगवान् के निकट जाप करने से अनन्त गुना ज्यादा लाभ प्राप्त होता है, मुख्य रूप से जितनी श्रद्धा, विशुद्धि और एकाग्रता है उतना फल मिलता है। (अनगार धर्मामृत)

१३९. हे जिनेन्द्र भगवान्! हे देवों के देव! बाल्यावस्था से आज तक आपके श्रीचरणों की सेवा

में आसक्त शिष्यों को कल्पलता सम सेवा से जो काल व्यतीत हुआ है, आज उस सेवा का वह फल आपसे चाहता हूँ कि प्राणों के निकलते समय आपके नाम से सहित अक्षरों के पढ़ने में मेरा गला कुण्ठित न हो। (समाधि भक्ति-आचार्य पूज्यपाद)

१४०. पञ्च नमस्कार रूपी पूज्य देवता मेरी रक्षा करें, जो सुर सम्पदा को प्रदान करता है, मुक्ति लक्ष्मी को प्राप्त कराता है, चारों गतियों की विपदाओं को दूर करता है, आत्मा से पापों को दूर करता है, दुर्गति मे जाने वालों के लिए स्तम्भ के समान रोकता है और मोह को भी नष्ट करता है। (समाधि भक्ति-आचार्य पूज्यपाद)

१४१. कदाचित् विष खाकर मरने वाला व्यक्ति यदि तत्काल सद्बुद्धि आ जाने से पश्चाताप करके पञ्च नमस्कार मन्त्र का जप करते हुए प्राण छोड़ता है, तो वह अपनी गलती का प्रतिकार कर लेता है, एवं अनन्त दुःख का भागी नहीं होता है। (अनगार धर्मामृत)

१४२. जो मुनि मन-वचन-काय की शुद्धिपूर्वक णमोकार मंत्र का एक सौ आठ बार चिन्तन करता है, वह आहार करता हुआ भी एक उपवास का पूर्ण फल प्राप्त करता है। (ज्ञानार्णव)

१४३. जिस प्रकार अणु से कोई छोटा और आकाश से कोई बड़ा नहीं है, उसी प्रकार इस मन्त्रराज से बढ़कर कोई दूसरा मन्त्र सब सिद्धियों को करने वाला नहीं है, मन्त्र तोप के गोलों से भी बलवान होता है''। (पार्श्वनाथ चरित)

१४४. कल्याण के इच्छुक मनुष्य ''सभी अवस्थाओं में, सभी स्थानों में'' नित्य मन्त्र का ध्यान करें और वचन से जाप करें। (पार्श्वनाथ चरित)

१४५. स्फटिक, मोती, सोना, चाँदी, अच्छे रंग का मूंगा, कमलबीज या सूत की माला से जाप कर सकते हैं।

१४६. मनोरथों को पूर्ण करने के लिए कामधेनु तथा पापरूपी वृक्ष को जलाने के लिए अग्नि स्वरूप इस मन्त्र के रहते हुए अनिश्चित फल वाले अन्य मन्त्रों में क्यों लगा जावे?

१४७. णमोकार के स्मरण से-

१. साता वेदनीय आदि पुण्य प्रकृतियों का बहुतायत से बन्ध होता है।
२. जो पुण्य प्रकृतियाँ उदय में आने वाली हैं, उनमें अनुभाग वृद्धि होती है।
३. बंधे हुए पाप कर्मों की स्थिति-अनुभाग की हानि होती है।
४. नवीन पाप का बन्ध रुकता है।

ये चार फल प्राप्त होते हैं। (अनगार धर्मामृत)

१४८. तत्काल किया गया धर्म भी शुभ परिणामों की उत्कृष्टता से पाप कर्म के फल देने की शक्ति की उत्कृष्टता का घात कर शीघ्र ही मनुष्य को शान्ति देता है।

१४९. णमोकार पूर्वबद्ध तथा आगामी समस्त पाप कर्म नष्ट करता है, अभ्युदय तथा कल्याणकारी

पुण्य को लाता है, मंगलों में उत्कृष्ट मंगल है, जपों में उत्कृष्ट जप है एवं स्वाध्याय रूप तप भी है। (अनगार धर्मामृत)

१५०. णमोकार के प्रभाव से ही जिनागम का पाठी और जिनलिङ्ग का धारी अभव्य भी नवम ग्रैवेयक तक जाता है। (अनगार धर्मामृत)

१५१. **मकारं च मनः प्रोक्तं त्रकार त्राणमुच्यते।**
मनसस्त्राण योगेन मन्त्र इत्यभिधीयते ॥
मकार को मन, त्रिकार को त्राण (रक्षा करने वाला) कहा गया है, अतः जो मन को पाप से बचाता है उसे मन्त्र कहते हैं।

१५२. जिस प्रकार महाव्रतों में ब्रह्मचर्य उत्कृष्ट है, मन्त्रों में कर्म को जीतने वाला णमोकारमन्त्र श्रेष्ठ है। अन्य मन्त्रों के फलदायक होने पर भी यही मन्त्र सेवनीय है क्योंकि यद्यपि वृक्ष अग्रभाग में फल देता है तथापि इसकी जड़ ही सींची जाती है अर्थात् यह मन्त्र सब मन्त्रों का मूल है तथा समस्त मंगलों में पहला मंगल है। (यशस्तिलक चम्पू)

१५३. सिद्ध किया हुआ यह एक मन्त्र ही समस्त मन्त्रों का कार्य करने वाला होता है और वे अन्य सब मन्त्र इसके एकदेश का भी कार्य नहीं कर सकते हैं। (यशस्तिलक चम्पू)

१५४. दुनिया माल वाले के पीछे घूमती है, पर प्रभु माला वाले के साथ होते हैं, साधक माला के लिए और संसारी माल के लिए बड़ा महत्त्व देता है, माला मालिक की प्रार्थना है नोट गिनने के लिए भी दो अँगुली ही चाहिए, फिर माला क्यों नहीं फेरते भाई, वरमाला के लिए जैसे उत्सुक रहते हैं, वैसे ही यदि करमाला के लिए उत्सुक रहें, तो मुक्ति वधु भी माला डालने को तैयार हो जाये, माला से ही व्यक्ति माला-माल होता है।

१५५. स्थिर मन वाले मनुष्यों को वचन अथवा मन से णमोकार मन्त्र का जाप करना चाहिए, वचन से जाप करने में सौ गुणा फल प्राप्त होता है तो मन से जाप करने में हजार गुणा फल होता है। (अनगार धर्मामृत)

१५६. आश्चर्य की बात नहीं है कि मन्त्र की शक्ति से इस जगत् में धर्मात्माओं पर आई हुई समस्त विपदाएँ सम्पदा रूप हो जाती हैं और दुःख सुःख रूप परिणत हो जाते हैं। सप्त व्यसनों में आसक्त अञ्जन चोर आदि तथा क्रूर परिणाम वाले जो तिर्यञ्च थे, वे भी मृत्यु के समय इस मन्त्र को प्राप्त कर स्वर्ग और मोक्ष को प्राप्त हुए थे। (पार्श्वनाथ चरित)

१५७. ग्वाले ने मुनि के दर्शन कर णमोकार मन्त्र पढ़ने का नियम ले लिया, घर आया पत्नी ने प्रश्न किया तो उसने णमोकर मन्त्र ही पढ़ा, दो चार बार पत्नी ने कुछ पूछा ग्वाले ने हर बार णमोकार मन्त्र ही पढ़ा, पत्नी ने गुस्से में आकर जलती हुई लकड़ी मार दी, णमोकार मन्त्र के प्रभाव से सारे अंगारे मोती बन गये थे।

१५८. सुभग ग्वाले ने मुनि से णमोकार मंत्र पढ़ने का नियम लिया था अगले भव में सेठ सुदर्शन

बने एवं पटना गुलजार बाग से मोक्ष पधारे। इनकी कथा पुण्यास्रव कथाकोश क्र.१७ पृ. ८९ पर देखें।

१५९. यह मन्त्रराज ज्ञानावरणादि कर्मसमूह को दूर करने वाला है, भव-भ्रमण का नाशक है, स्वर्ग और निर्वाणपुरी को प्राप्त कराने वाला है, भव्य जीवों के विघ्नों का निवारक है, मोहरूप सघन अन्धे गड्ढे में पतित जीवों को हस्तावलम्बन देने वाला है, प्राणिमात्र को जीवन दान देने वाला है, ऐसा यह मन्त्र समस्त त्रस व स्थावर जीवों की रक्षा करे। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६०. णमोकारमन्त्र का जाप करने से संग्राम, समुद्र, गजराज, भुजंग, सिंह, भयंकर दुःसाध्य रोग, अग्नि, शत्रु, बन्धन, चोर, ग्रहबाधा, शाकिनी-डाकिनी आदि सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६१. णमोकार मन्त्र के प्रभाव से चन्द्रमा सूर्यरूप, सूर्य चन्द्रमारूप, पाताल आकाशरूप और समस्त पृथ्वी स्वर्गरूप हो जाती है, अधिक कहने से क्या ? तीनों लोकों में जो-जो विषम स्थितियाँ हैं वे सभी अनुकूल हो जाती हैं। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६२. संसार-शरीर-भोगों से विरक्त साधुजन भी मन्त्रराज के जाप के बिना मुक्ति को नहीं प्राप्त कर सकते, तब दीन संसारीजन तीनों लोकों के जीवों का उद्धार करने वाले मन्त्रराज के जाप के बिना कैसे स्वर्ग/मोक्ष के सुखों को प्राप्त कर सकते हैं ? (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६३. इस लोक में हिंसक, असत्यभाषी, परधनहर्ता, परस्त्रीरत इत्यादि तथा अन्य भी अनेक लोक निन्दित कुकर्म में रत रहने वाले प्राणिगण मरणकाल में श्रद्धापूर्वक मन्त्रराज के जाप के प्रभाव से अपने दुष्कर्म की निन्दा करके स्वर्ग को प्राप्त हुए हैं। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६४. इस मन्त्रराज की अधिक प्रशंसा क्या करें ? यह णमोकारमन्त्र कल्याणकारी धर्मरूप है, आराधने योग्य जिनदेव रूप है, स्वर्ग/मोक्ष सुखदायी व्रत रूप है, अतः प्रत्येक प्राणी को इस मन्त्रराज की नित्य उपासना करनी चाहिए। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६५. प्रत्येक प्राणी को शयन से पहले, जागने के बाद, किसी स्थान पर निवास करते समय, गमन के अवसर पर, गृहप्रवेश के समय, यहाँ-वहाँ भ्रमण के अवसर पर, आमोद-प्रमोद के अवसर पर, वन प्रवेश के समय, पर्वत पर चढ़ते-उतरते समय, समुद्र से पार होने के अवसर पर इत्यादि अवसरों पर मन्त्रराज का जाप अवश्य करना चाहिए। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६६. दुःख में, सुख में, भय के स्थान में, मार्ग में, दुर्गम स्थान में, युद्ध के अवसर पर पञ्चनमस्कार मन्त्र का जाप करना चाहिए। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१६७. जो पञ्चगुरुओं के नमस्कार रूप लक्षण से सहित है तथा जगत् के जीवों को पवित्र करने

में समर्थ है, ऐसे श्रेष्ठतम णमोकारमन्त्र का ध्यान करो। (ज्ञानार्णव)

१६८. विद्वानों को समस्त कल्याण की सिद्धि के लिए तथा समस्त विघ्नों को नष्ट करने के लिए, कहीं भी इस दुर्लभ मन्त्र को हृदय तथा वचन से नहीं छोड़ना चाहिए। (ज्ञानार्णव)

१६९. जिस प्रकार अग्नि से सन्तप्त स्वर्ण शुद्ध हो जाता है उसी प्रकार महान् पापों से कलंकित मनुष्य भी इस मन्त्र की ध्यानरूपी अग्नि के द्वारा सन्तप्त होकर शुद्धि को प्राप्त हो जाते हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१७०. इस सम्पूर्ण मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण सहित आनन्द विभोर होता हुआ जो जाप करता है, निःसन्देह उसके सर्व मनोरथों की सिद्धि होती है। (यशस्तिलक चम्पू)

१७१. इस लोक तथा परलोक में निश्चित ही वाञ्छित फल की सिद्धि के लिए पञ्चपरमेष्ठी वाचक मन्त्र के सिवाय दूसरा मन्त्र न हुआ है, न है और न होगा। (यशस्तिलक चम्पू)

१७२. मुनिसंघ भी परमपद की प्राप्ति के लिए सल्लेखना के काल में पैंतीस अक्षर वाले इसी मन्त्र का निरन्तर जाप करते हैं। (यशस्तिलक चम्पू)

१७३. यह णमोकार मन्त्र संसार में सारभूत है, तीनों जगत् में अनुपम है, समस्त पापों का शत्रु है, संसार को नष्ट करने वाला है, विषम विष को हरने वाला है, कर्मों को निर्मूल करने वाला है, सिद्धि को देने वाला है, मोक्षसुख को उत्पन्न करने वाला है, केवलज्ञान को उत्पन्न करने वाला है, हे भव्यजनों ! इस मन्त्र का बार-बार जाप करो क्योंकि जपा हुआ यह मन्त्र संसार से निर्वाण प्राप्त कराने वाला है। (यशस्तिलक चम्पू)

१७४. जिनका मन इस समीचीन मन्त्र में लग रहा है, उनके दुष्ट राजा आदि से उत्पन्न होने वाले समस्त विघ्नों के समूह आधे क्षण में दूर हो जाते हैं। (यशस्तिलक चम्पू)

१७५. इस मन्त्र द्वारा कीलित हुए शाकिनी, ग्रह तथा भूत आदि दुष्ट सर्पों के समान सत्पुरुषों का कहीं भी अनादर नहीं करते हैं। (यशस्तिलक चम्पू)

१७६. चोर, शत्रु, दुष्ट राजा तथा दुर्जन आदि से उत्पन्न बुद्धिमान् मनुष्यों के उपद्रव महामन्त्र के द्वारा शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१७७. वज्र से पर्वतों के समान मन्त्र जाप से कुष्ठ तथा वात, पित्त, कफ से उत्पन्न होने वाले समस्त रोग क्षय को प्राप्त हो जाते हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१७८. दुष्ट भूत, पिशाच, शाकिनी और दुर्बुद्धि देव मन्त्र में संलग्न मन वाले मनुष्यों को परास्त करने में समर्थ नहीं होते हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१७९. साँकल आदि बड़े-बड़े जाल तथा दृढ़ बन्धन आदि, मन्त्र के स्मरण मात्र से सैकड़ों टुकड़ों को प्राप्त हो जाते हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१८०. मन्त्र से उत्पन्न पुण्य के द्वारा सर्प सत्पुरुषों के लिए हार हो जाता है, विष निर्विषता को प्राप्त हो जाता है और तलवार पुष्पमाला के समान हो जाती है। (ज्ञानार्णव)

१८१. मन्त्र ध्यान में कुशल मनुष्यों के लिए वज्राग्नि शीतलता को प्राप्त हो जाती है, समुद्र स्थल के समान हो जाता है और सिंह आदि सेवा करने लगते हैं। (ज्ञानार्णव)

१८२. जिस प्रकार सूर्य के द्वारा अन्धकार नष्ट हो जाता हैं, उसी प्रकार मन्त्र के ध्यान से बुद्धिमान पुरुषों के सैकड़ों अनिष्ट करने वाले बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं, मन्त्र लाखों करोड़ों मील दूर स्थित वस्तु और व्यक्ति को भी प्रभावित करता है। (ज्ञानार्णव)

१८३. पाप में फँसे हुए जीव इसी मन्त्र से विशुद्ध होते हैं और बुद्धिमान् मनुष्य इसी मन्त्र के द्वारा संसार के क्लेश से मुक्त होते हैं। (ज्ञानार्णव)

१८४. इस जगत् में यह मन्त्र ही भव्य जीवों को कष्ट से बचाने वाला बन्धु है, इसे छोड़कर जीवों पर कृपा करने वाला दूसरा कोई नहीं है। (ज्ञानार्णव)

१८५. दुःख दायक बीमारी में, समुद्र में, वन में, मृत्यु में, भयंकर युद्ध में, सब आपदाओं में यह मन्त्र ही जीवों का शरण है रक्षक है दूसरा कोई नहीं है। (ज्ञानार्णव)

१८६. रण में, राजदरबार में, अग्नि में, जल में, भारी संकट में, श्मशान में, वन में और शत्रु के विषय में यह मन्त्र ही निश्चय से सिद्धिदायक है। (ज्ञानार्णव)

१८७. सुमन्त्र का ध्यान करने में तत्पर रहने वाले मनुष्य इन्द्र, अहमिन्द्र, चक्रवर्ती तथा बलभद्र आदि के उत्तम पद एवं अन्य महान् पदों का उपभोग करते हैं। (ज्ञानार्णव)

१८८. मन्त्र के प्रभाव से कुत्ते ने भी देव पद, धनपति सेठ ने नीरोगता और जिनदत्त सेठ ने आकाशगामिनी विद्या प्राप्त की थी। (ज्ञानार्णव)

१८९. मन्त्र का समस्त प्रभाव योगी भी नहीं कह सकते हैं, उसे जो अज्ञानी कहता है, वह वायुरोग से पीड़ित है ऐसा मैं मानता हूँ। (ज्ञानार्णव)

१९०. मन्त्र के प्रसाद से त्रिभुवन में होने वाली धर्मनिमित्तक लक्ष्मियाँ धर्मात्मा मनुष्यों के पास दासियों के समान चली आती हैं। (पार्श्वनाथ चरित)

१९१. यह मन्त्र सत्पुरुषों को कल्पवृक्ष के समान अभीष्ट सुख को देने वाला है और अमूल्य चिन्तामणि के समान चिन्तित अर्थ को प्रदान करने वाला है। (पार्श्वनाथ चरित)

१९२. यह मन्त्र अभिलषित समस्त वस्तुओं को देने वाली कामधेनु है, यह मन्त्र ही प्राणियों का भण्डार है, स्वामी है, पिता है, माता है और इससे बढ़कर दूसरा हितकारी मित्र नहीं है। (पार्श्वनाथ चरित)

१९३. इस जगत् में जो कुछ भी दुःसाध्य, दूरवर्ती अथवा अत्यन्त दुर्लभ वस्तु है, वह सब इस मन्त्रराज का ध्यान करने वाले मनुष्यों के हाथ में शीघ्र ही आ जाती है, मन्त्र की सिद्धि पुण्य, साहस और मन की एकाग्रता से होती है। (पार्श्वनाथ चरित)

१९४. इस विषय में बहुत कहने से क्या लाभ है ? इतना ही कहना पर्याप्त है कि प्राणी जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है, मन्त्रराज के प्रसाद से उसे वही-वही वस्तु निश्चित ही

प्राप्त होती है। (पार्श्वनाथ चरित)

१९५. गणेशप्रसाद वर्णी जी के पिता जी जन्म से वैष्णव थे, उनकी णमोकार मन्त्र के प्रति बहुत श्रद्धा थी, उन्होंने वर्णीजी से कहा–तुम जैनधर्म नहीं छोड़ना, एक बार जंगल में बैल पर सामान लादकर जा रहे थे और शेर की आवाज आई, सामान उतार कर बैल को भगा दिया, स्वयं माला फेरने लगे, कुछ भी किए बिना ही शेर उनके पास से निकल गया।

१९६. चारुदत्त ने बकरे को णमोकार मन्त्र सुनाया, वह देव हुआ, रत्नगिरी पर्वत पर मुनिराज के निकट बैठे हुए देखकर बकरे के जीव देव ने पहले अपने उपकारी चारुदत्त को नमस्कार किया, बाद में मुनिराज को नमस्कार किया था। (चारुदत्त चरित्र–आचार्य सोमकीर्ति भट्टारक)

१९७. जो बिना अर्थ जाने भी णमोकार को पढ़ता है, तो भी उसका भला होता है, जैसे कुत्ते को जीवन्धर स्वामी ने और बैल को पद्मरुचि सेठ ने सुनाया था, वे अर्थ नहीं जानते थे फिर भी उन्हें सद्गति की प्राप्ति हुई थी।

१९८. पञ्चपरमेष्ठी की वन्दना के नामान्तर जिस अक्षर समूह से या परिणाम से या क्रिया से आने वाले कर्मों का नाश होता है, उसे कृतिकर्म कहते हैं, जिससे तीर्थङ्कर आदि पुण्य कर्म का सञ्चय होता है उसे चितिकर्म कहते हैं, जिससे अर्हन्त आदि की पूजा की जाती है, उसे पूजाकर्म कहते हैं, जिससे कर्मों का संक्रमण, उदय, उदीरणा आदि होकर निराकरण किया जाता है, उसे विनयकर्म कहते हैं, ये सब वन्दना के नामान्तर है, जो मुमुक्षु कर्मों की निर्जरा करना चाहते हैं, उन्हें मोक्ष हेतुक विनय अवश्य करना चाहिए। (अनगार धर्मामृत)

१९९. मन में विकार उत्पन्न होने पर तत्क्षण सत्ताईस उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करना चाहिए प्राणी वध सम्बन्धी, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह सम्बन्धी दोष लगने पर एक सौ आठ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग अर्थात् छत्तीस बार णमोकार पढ़ना चाहिए। (अनगार धर्मामृत)

२००. मन्त्र जाप के चार भेद हैं–

१. बैखरी–जोर से बोलकर जाप करना, इसमें शब्द बाहर बिखर जाते हैं, इससे पच्चीस प्रतिशत लाभ होता है।
२. मध्यमा–इसमें ओठ नहीं हिलते हैं जीभ हिलती है, इसे उपांशु भी कहते हैं।
३. पश्यन्ति–इसमें होठ और जीभ दोनों नहीं हिलते हैं, मन में चिन्तन होता है।
४. सूक्ष्म–मन से णमोकार भी छूट जाता है, उपास्य-उपासक आत्मा-परमात्मा का भेद समाप्त हो जाता है।

२०१. जिस प्रकार जल में असीम शक्ति है, एक लोटा पानी में विद्युत शक्ति का पता नहीं लगता, जब वह एकत्र होकर सरोवरों में पहुँचता है तो उसमें असीम शक्ति प्रकट हो

जाती है, उससे कई मेगावाट बिजली बनने लगती है, जिससे बड़ी-बड़ी मशीने व रेल आदि चलने लगती हैं, बिजली की शक्ति उसमें छिपी है, इसी प्रकार मन की बिखरी शक्ति ध्यान से एकत्र होती है।

२०२. मणि, मन्त्र और औषधि में अचिन्त्य प्रभाव होता है, वनस्पति से बनी एक छोटी सी गोली व्यक्ति को जीवन दान दे देती है, मन्त्र में भी विद्युत की तरह शक्ति है, एक मन्त्र से व्यक्ति भस्म हो सकता है, शब्द की भी शक्ति होती है, जैसे-रेडिओ, टेलीविजन पर शब्द सुनते हैं, प्रचण्ड ध्वनि से इमारतें हिल जाती हैं, एक खेत में रसायन से सोलह किलो ककड़ी उत्पन्न की एवं मन्त्र से चालीस किलो ककड़ी उत्पन्न हुई।

२०३. मन्त्र जाप से शरीर और मन पर रक्षा कवच बन जाता है, बुरी शक्ति अनिष्ट नहीं कर सकती हैं। मन्त्र के प्रभाव से सोमासती के लिए सर्प भी माला बना, सुदर्शन की सूली सिंहासन बन गयी। पैंतीस अक्षर वाला णमोकार ३+५=८ आठ कर्मों का नाश करने वाला है।

२०४. णमोकार पढ़ने से तीनलोक, तीनकाल के नवदेवताओं का स्मरण वन्दन हो जाता है।

२०५. श्रीपाल जी का कुष्ठ महामन्त्र के प्रभाव से दूर हुआ था, क्षुद्र देवों द्वारा कीलित पाँच सौ जहाज णमोकार के प्रभाव से चले थे, समुद्र में गिरने पर णमोकार के प्रभाव से जीवित बचे थे, बहुत समय से बन्द सहस्रकूट जिनालय के द्वार णमोकार के प्रभाव से खुले थे। (श्रीपाल चरित्र)

२०६. घटना जखौरा की है-एक मुसलमान भाई ने णमोकार मन्त्र के सहारे अनेक लोगों की विपत्तियाँ दूर कीं, वह सामायिक भी करता था, एक बार पलंग पर लेटा था, थोड़ी देर बाद सपना आया कि तेरे पलंग में सर्प है, उठकर दो-तीन बार ऊपर-नीचे देखा कहीं नहीं दिखा, पुनः णमोकार मन्त्र पढ़कर सो गया, प्रातः बिस्तर लपेटा बिस्तर में से सर्प निकल कर बाहर चला गया, उसका कुछ नहीं हुआ, यह मन्त्र का प्रभाव था, गाँव के मुस्लिम भाइयों को पता चला यह जैन धर्म मानता है, पञ्चायत बुलाई, भला-बुरा कहा, वह सब कुछ सुनता रहा, पर जैनधर्म छोड़ने को तैयार नहीं हुआ, जाति भाइयों ने उसे मार डालने का निर्णय लिया, जिससे दूसरा धर्म ग्रहण नहीं कर सके, सामायिक में बैठा विरोधियों ने वहाँ सर्प छोड़ दिया, वह चारों ओर घूमता रहा उसका कुछ नहीं हुआ, तीन दिन बाद सर्प छोड़ने वाले को ही सर्प ने डँस लिया, वह मर गया, दो दिन बाद उसके पिता को भी काटा, वह भी मर गया, यह था मन्त्र का प्रभाव।

२०७. अमेरिका में एक मुसलमान को णमोकार मन्त्र मिल गया, वह मन्त्र से ताबीज बनाता था, सौ डॉलर में बेचता था।

२०८. अरिहन्त का अ, अशरीरी का अ=आ, आचार्य का आ = आ, उपाध्याय का उ = ओ, मुनि का म्=ओम्।

२०९. ओम् का ध्यान करने से शरीर में पाँच तत्त्वों की पूर्ति होती है–अ=अवनि, अ-अम्बु, अ= अग्नि, अ= अनिल, अ=आकाश।

२१०. णमोकार मौन सिखाता है, नमो का उल्टा मौन होता है।

२११. एक-एक इन्द्रिय में एक-एक परमेष्ठी को स्थापित कर ध्यान कर सकते हैं।

२१२. मध्यमा और अंगुष्ठ से जाप करें, नाखून न लगावें, मेरु न लाँघे, माला भूमि से स्पर्श न करें।

२१३. सिद्धक्षेत्र का द्योतक णमोकार–अरहन्त से अष्टापदजी, सिद्ध से सिद्धोदयजी, आचार्य से आहारजी, उपाध्याय से ऊर्जयन्तजी, साधु से सम्मेदशिखरजी।

२१४. मन्त्र छोटा होता है, ग्रन्थ की तरह बड़ा नहीं होता, हीरा छोटा होता है, चट्टान की तरह बड़ा नहीं होता पर बड़ी चट्टान को काट देता है, अंकुश छोटा होता है पर मदोन्मत्त हाथी को वश में करता है, वट का बीज भी छोटा होता है पर विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है, इसी तरह णमोकार मन्त्र वट के बीज की तरह महान् फल देने वाला है।

३. रात्रि में भोजन क्यों नहीं करना चाहिए?

२१५. वनमाला और लक्ष्मण का संवाद आगम सम्मत–

लक्ष्मण ने कहा! ''मुझे छोड़ दो'' कार्य हो जाने पर मैं तुम्हें लेने आऊँगा, मुझे देव आदि की शपथ है, लेकिन वनमाला को उनके आने में संदेह हुआ, तब लक्ष्मण ने कहा कि, सुनो यदि मैं न आऊँ तो मुझे रात्रि भोजन का पाप लगे।

(धर्म संग्रह श्राव. अधिकार-३] श्लोक २८/२९)

रामचन्द्र जी को अच्छी तरह व्यवस्थित करके यदि मैं तुम्हारे पास न आऊँ तो मुझे (लक्ष्मण को) गौ हत्या, स्त्री हत्या आदि का पाप लगे। इस प्रकार अन्य शपथों के करने पर भी वनमाला ने लक्ष्मण से एक ही शपथ करायी कि आपको रात्रिभोजन का पाप लगे। (सागार धर्मामृत, अध्याय ४/२६)

२१६. **अस्तङ्गते दिवानाथे ह्यापोरुधिर मुच्यते।**
अन्नं मास समं प्रोक्तं मार्कण्डेय महर्षिणा॥

वैष्णव साधु मार्कण्डेय महर्षि ने भी कहा है कि सूर्य के अस्त हो जाने पर पानी खून कहलाता है और अन्न मांस के समान कहा गया है।

२१७. **चातुर्मासे तु सम्प्राप्ते रात्रिभोजं करोति यः।**
तस्य शुद्धि र्न विद्येत् चन्द्रायण शतैरपि ॥

वर्षा ऋतु में जो रात्रिभोजन करता है उसकी सैकड़ों चन्द्रायण व्रतों से भी शुद्धि नहीं हो सकती है। कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा की कला की तरह एक-एक ग्रास घटाना शुक्ल पक्ष में एक-एक ग्रास बढ़ाना इस प्रकार एक माह में एक चन्द्रायण व्रत होता है। ''सूर्य के अस्त हो जाने से हृदय और नाभि में स्थित कमल भी बंद हो जाता है इसलिए रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए।''

२१८. **श्वभ्रद्वाराणि चत्वारि प्रथमं रात्रिभोजनं।**
परस्त्रीगमनं चैव संधानानन्त कायिनां ॥
नरक के चार द्वार रात्रिभोजन, परस्त्रीगमन, अचार भक्षण और जमीकंद भक्षण।

२१९. भोजन के साथ पेट में मक्खी जाने से उलटी होती है, चींटी जाने से पेशाब में जलन होती है, बाल जाने से स्वर भंग होता है, जुँआ जाने से जलोदर रोग होता है, मकड़ी जाने से कोढ़ होता है, छिपकली जाने से मृत्यु होती है इसलिए भोजन में सूर्य का प्रकाश विवेक और शोधन क्रिया आवश्यक है।

२२०. अहिंसा व्रत की रक्षा और मूलगुण की शुद्धि के लिए धीर पुरुष मन-वचन-काय से रात्रि में चारों प्रकार के आहारों का त्याग करें। (सागार धर्मामृत)

२२१. जो स्वभाव से रात्रिभोजन का त्याग करता है, वह अपने कुल के आभूषण तथा तीन जगत् के स्वामियों की सम्पदा को प्राप्त होता है।

२२२. रत्नत्रय से परिपूर्ण तथा अणुव्रतों को धारण करने में तत्पर भव्य जीव सूर्योदय होने पर दोष रहित भोजन करते हैं।

२२३. जो दयालु पुरुष रात्रि में भोजन नहीं करते, वे विमानों के स्वामी अर्थात् वैमानिक देव होते हैं और वहाँ उत्कृष्ट भोगों को प्राप्त करते हैं। (पद्मपुराण)

२२४. स्वर्ग से च्युत होकर प्रशंसनीय मनुष्य पर्याय प्राप्त कर चक्रवर्ती आदि के वैभव से प्राप्त सुख का उपभोग करते हैं। (पद्मपुराण)

२२५. जगत् में जो धनवान्, गुणों से उदार, सुन्दर, दीर्घायु, सम्यग्ज्ञान से सहित और प्रधान पद पर स्थित हैं, वे सब दिन में भोजन करने से हुए हैं। (पद्मपुराण)

२२६. जो दिन में भोजन करने में उद्यत हैं, वे सूर्य के समान प्रभा वाले, चन्द्रमा के समान सौम्यदर्शन तथा स्थायी भोगों से युक्त होते हैं। (पद्मपुराण)

२२७. दिन में भोजन करने से मनुष्य संसार में असह्य प्रताप से युक्त, नगरों के स्वामी, नाना प्रकार के वाहनों से सहित, सामन्तों से पूजित, भवनवासी देव, वैमानिक देव, चक्रवर्ती के वैभव से सहित और महान्-उत्कृष्ट लक्षणों से सम्पन्न होते हैं। (पद्मपुराण)

२२८. दिन में भोजन करने से मनुष्य उन नगरियों में ऐसे विद्याधर राजा होते हैं, जो कलाओं में निपुण हैं, जिनके शरीर और नेत्र हृदय में स्नेह उत्पन्न करने वाले हैं, जो अमृतस्रावी

वाणी से समस्त जगत् को आह्लादित करते हैं तथा उत्साह से युक्त होते हैं, दिन में भोजन करने से मनुष्य नारायण, बलदेव, चक्रवर्ती, बिजली और लाल कमल के समान कान्ति वाले दैदीप्यमान, सुन्दर कुण्डलों से युक्त एवं राजाओं से सम्बन्ध करने वाले होते हैं। (पद्मपुराण)

२२९. जो दया में तत्पर रहने वाली स्त्रियाँ रात्रि में भोजन नहीं करती हैं, उन्हें सेवकों के द्वारा तैयार किया हुआ इच्छानुकूल भोजन प्राप्त होता है। (पद्मपुराण)

२३०. जो स्त्रियाँ रात्रिभोजन से विरत रहती हैं, वे शान्त हृदय, शील सहित तथा साधु समूह के लिए हितकारी होती है। (पद्मपुराण)

२३१. दिन में भोजन करने से स्त्रियाँ श्रीकान्ता, सुप्रभा तथा सुभद्रा के समान लक्ष्मी तुल्य कान्ति वाली होती हैं।

२३२. जिन्होंने पहले रात्रिभोजन का त्याग किया था, वे स्त्रियाँ यान तथा हाथी आदि वाहनों पर लीलापूर्वक गमन करती हैं और सुन्दर भवनों में निवास करती हैं, वे स्त्रियाँ स्वर्ग में इच्छानुकूल भोगों को प्राप्त होती हैं तथा मस्तक पर हाथ रख आज्ञा की प्रतीक्षा करने वाले परिवार से घिरी रहती हैं। (पद्मपुराण, पूज्यपाद श्रावकाचार)

२३३. जिन पुरुषों ने पहले रात्रिभोजन का त्याग किया है, वे सुरीली आवाज वाले, निर्मल शरीर से युक्त तथा सुन्दर वस्त्राभूषणों से सहित मनुष्य होते हैं, वह सब रात्रिभोजन त्याग का ही फल है, इसमें संशय नहीं है। (पूज्यपाद श्रावकाचार)

२३४. जो मनुष्य सूर्यास्त हो जाने पर भोजन करते हैं, वे विद्वानों के द्वारा मनुष्यता से युक्त पशु कहे गये हैं। (पद्मपुराण)

२३५. जो रात्रि में भोजन करता है, वह अल्प आयु तथा अल्प धन से युक्त, रोग से पीड़ित शरीर वाला और परभव में सुख से हीन होता है। (पद्मपुराण)

२३६. जो दुर्बुद्धि रात्रि में भोजन करता है, वह हजारों उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल तक खोटी योनियों में दुःख को प्राप्त होता है। (पद्मपुराण)

२३७. रात्रि में भोजन करने से स्त्रियाँ अनाथ सौभाग्यहीन, माता-पिता तथा भाई से रहित, शोक एवं दरिद्रता से युक्त होती हैं, जिनके हाथ-पैर आदि अंग रूक्ष तथा फटे हुए हैं, जिनकी नाक चपटी है, जिनका देखना ग्लानि को उत्पन्न करता है, जिनके नेत्र कीचड़ से भरे हैं, जिनके लक्षण दुष्ट हैं, जिनके शरीर से दुर्गन्ध आती है, जिनके होठ कटे तथा मोटे हैं, जिनके कान विरूप है, जिनके केश पीले तथा रूक्ष हैं, जिनके दाँत तूमड़ी के बीज के समान हैं, शरीर सूखा हैं, जो कानी, लंगड़ी और कान्ति रहित हैं, विरूप हैं, कठोर चमड़ी वाली हैं, अनेक रोगों से सहित हैं, मलिन हैं, फटे वस्त्र वाली हैं खराब भोजन से जीवित हैं, दूसरों के कार्य पर आश्रित हैं, दुःखों के भार से दबी हुई हैं, बालावस्था में ही वैधव्य

के दुःख से दुःखी हैं, पानी भरती हैं, लकड़ियाँ ढोती हैं, बड़े दुःख से पेट भर पाती हैं, सब लोगों से तिरस्कृत हैं, कुवचन रूप वसूला से जिनका चित्त नष्ट हो गया है तथा शरीर सैकड़ों घावों का आधार है, ऐसी स्त्रियाँ रात्रिभोजन करने से होती हैं। (पद्मपुराण)

२३८. रात्रिभोजन में तत्पर स्त्रियाँ कटे कान, कटी नासिका, धन तथा बन्धुओं से रहित पति को प्राप्त होती हैं, जो रूक्ष शरीर वाली दासी आदि है, जो पुत्र और पति से रहित हैं और जो दुर्भाग्य रूपी ग्रह से ग्रस्त हैं, वे रात्रिभोजन से ही होती हैं। (पद्मपुराण)

२३९. रात्रिभोजन के पाप से जीव दुर्गति को प्राप्त होते हैं, लोक में जो रोगी, दरिद्र और क्रूर पुरुष दिखाई देते हैं, वे भी रात्रिभोजन के पाप से दिखाई देते हैं, जिनके हाथ पैर फटे हैं, जो दीन हैं, लकड़ी और घास ढोते हैं, मलिन वस्त्र वाले हैं तथा नीच कुल में उत्पन्न हैं, वे सब रात्रिभोजन करने से ही होते हैं, रात्रिभोजन के फल से मनुष्य रोग से पीड़ित, दूसरों के घरेलू नौकर तथा अपने बन्धुजनों से रहित होते हैं, रात्रि में भोजन करने वाला मिथ्यादृष्टि मनुष्य सूकर, भेड़िया, बिलाव, उल्लू तथा कौआ आदि की योनियों में उत्पन्न होता है। (पद्मपुराण/पूज्यपाद श्रावकाचार, धर्मसंग्रह श्रावकाचार)

२४०. भोजन की तीव्र लालसा रखने वाला जो पापी जीव सूर्य के दृष्टि अगोचर हो जाने पर भोजन करता है, वह दुर्गति को नहीं जानता, यह नहीं समझता कि इस रात्रिभोजन के पाप से मुझे नरकादि दुर्गति में जाना पड़ेगा। (पद्मपुराण)

२४१. अन्धकार के समूह से जिसके नेत्र आच्छादित हो रहे हैं तथा पाप में जिसकी बुद्धि लग रही है, ऐसा पापी जीव मक्खी, कीड़े तथा बाल आदि को खा जाता है। (पद्मपुराण)

२४२. जो रात्रिभोजन करता है, वह डाकिनी-शाकिनी तथा भूत-प्रेतादि निन्द्य प्राणियों के साथ खाता है। जो रात्रि में खाता है उसने कुत्ता, चूहा, बिल्ली आदि मांसाहारी जीवों के साथ खाया अथवा व्यर्थ के विस्तार से क्या? इतना ही कहा जाता है कि रात्रि में खाने वाले ने सब अपवित्र पदार्थ खाये, रात्रि में दीपकों के ऊपर जो पिपीलिका आदि जीव पड़ते हैं, रात्रि में खाने वाले पुरुष ग्रासों के साथ उन्हें भी निगल जाते हैं। (पद्मपुराण/पूज्य. श्राव.)

२४३. जिन लोगों ने रात्रिभोजन रूप अधर्म को धर्म मान रखा है, उन पाप कर्म से क्रूर मनुष्यों को समझाना कठिन है।

२४४. सूर्य की किरणों से अछूता भोजन प्रेतों के समूह से (उच्छिष्ट) जूठा हो जाता है तथा सूक्ष्म जीवों से युक्त होता है, अतः रात्रि में खाना उचित नहीं है।

२४५. जो रात-दिन खाता है, वह जिनधर्म से विमुख है, व्रतरहित है तथा नियम से दूर है, ऐसा मनुष्य परभव में सुखी कैसे हो सकता है ?

२४६. रात्रिभोजन के लोभी मनुष्य परभव में तिर्यञ्च तथा नरकादि गतियों में अन्धे, बौने, विकलांग, अल्पायु, शोक, क्लेश, विषाद तथा दुःख से परिपूर्ण, कोढ़ आदि रोगों से

सहित, दरिद्रता से पीड़ित अत्यन्त चञ्चल और अल्प आदर वाले निश्चित रूप से होते हैं। (पद्मपुराण)

२४७. रात्रि में अन्न के बर्तन तथा अग्नि आदि में अनेक जीव पड़ते हैं, जिससे मांस खाने का दोष तथा हिंसा होती है, अतः रात्रिभोजन छोड़ने के योग्य है। (पद्मपुराण)

२४८. एक बार रात्रि में लाइट में भोजन बना, खाने बैठा तो लाइट चली गयी, उसने सोचा उजाले में तो बनाया, अब अंधेरे में खाने से क्या बाधा है, इसलिए जिसे वह अचार समझकर खा रहा था इतने में लाइट आ गयी देखा तो वह मेंढक था।
इसी प्रकार बारात में रात्रि में खीर बनी, उसमें एक छिपकली गिर गयी थी, उसी खीर को खाने से अनेकों की मौत हो गयी, रात में नहीं खाने वाले जिनकी हंसी उड़ाई जा रही थी केवल वे ही बचे थे।

४. पानी क्यों छानना चाहिए?

२४९. दया से परिपूर्ण हृदय वाला जो गृहस्थ छने हुए जल से सब कार्य करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५०. सत्पुरुषों ने जैनधर्म के नीति मार्ग में ऐसा ही कहा है कि पानी का छानना धर्म है, जैनियों का यह धर्म तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५१. जिनेन्द्र भगवान् ने पृथ्वी पर जीव दया की सिद्धि के लिए मोटे सूत के दुहरे वस्त्र से पानी छानने को पुण्य कहा है। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५२. श्रीमज्जैनधर्म में निपुण तथा जीवदया में सदा तत्पर रहने वाले मनुष्यों को पानी छानने की शुभ क्रिया में प्रमाद नहीं करना चाहिए। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५३. जो छना जल पीते हैं वे इस जगत् में भव्य एवं बुद्धिमान हैं, अन्यथा पाप से विकल हृदय वाले पुरुष पशु तुल्य हैं। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५४. छने, निर्मल और समीचीन मन्त्र से पवित्र किए हुए जल से जिनपूजा के लिए, विधि पूर्वक प्रतिदिन स्नान करना चाहिए। वह जल नाली आदि में नहीं जाना चाहिए। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५५. स्त्री समागम, आहार, मल विसर्जन तथा आरम्भादि में लीन रहने वाला और अशुद्ध वस्तुओं को स्पर्श करने वाला गृहस्थ स्नान कर तथा धुले हुए पवित्र वस्त्र धारण कर ही पूजा करें। (धर्मोपदेश पीयूष श्रावकाचार)

२५६. पूजा के लिए स्नान करने से जीवघात होता है, ऐसा जो कहता है वह पसीना आदि मल को दूर करने के लिए स्नान करता हुआ लज्जित क्यों नहीं होता है? (धर्मो. पी.श्रावका.)

२५७. नदियों और तालाबों का जो गहरा पानी, वायु तथा घाम से अच्छी तरह स्पृष्ट है, उस जल

में प्रवेश कर स्नान के योग्य नहीं माना गया है बर्तन में लेकर प्रयोग कर सकते हैं। (धर्मो. पी.श्रावका.)

२५८. वायु से ताड़ित, पत्थर तथा घटीयन्त्र से ताड़ित एवं सूर्य की किरणों से संतप्त वापिका के जल को मुनि प्रासुक मानते हैं, यद्यपि उपर्युक्त लक्षण वाला जल आगम में प्रासुक कहा गया है तथापि अत्यावश्यकता वश उससे स्नान ही करना चाहिए, उसे बिना छाने पीना नहीं चाहिए। वस्त्र धोने तथा नहाने का पानी जलाशय में नहीं जाना चाहिए।

२५९. जो वस्त्र छत्तीस अँगुल लम्बा और चौबीस अँगुल चौड़ा है, उसे दुहरा कर पानी छानना चाहिए। वस्त्र के मध्य आये हुए जीवों को जल के मध्य में स्थापित करना चाहिए, ऐसा कर जो पानी पीता है वह उत्कृष्ट गति को प्राप्त होता है। (धर्मो. पी.श्रावका./प्रश्नो. श्रा.)

२६०. छना हुआ पानी १ मुहूर्त (४८ मिनट) तक, प्रासुक २ पहर (६ घंटे) तक और अत्यधिक गर्म किया हुआ पानी दिन रात अर्थात् २४ घंटे तक चलता है, पश्चात् उसमें सम्मूर्छन जीव उत्पन्न हो जाते हैं। (धर्मो. पी.श्रावका.)

२६१. एक मुहूर्त के बाद पानी को फिर से नहीं छानना अथवा सछिद्र या मलिन वस्त्र से छानना और जीवानी को अन्य जलाशय में डालना, जलगालन व्रत में योग्य नहीं माना गया है। (सागार धर्मामृत)

२६२. इस प्रकार जो सदा पानी छानने में यत्न करते हैं, वे धर्मस्नेही भव्य जीव निरन्तर सुखी रहते हैं। जिस जलाशय से यत्नपूर्वक छानकर जल लाया गया है, ज्ञानी पुरुष जीवसहित जल को उसी जलाशय में स्थापित करें अर्थात् जिवानी उसी जलाशय में डाले। (सागार धर्मामृत)

२६३. बिना छने जल में असंख्यात जीव होते हैं, अतः बिना छना पानी पीने वाला पुरुष पाप का अर्जन करता है। (सागार धर्मामृत)

२६४. एक व्यक्ति को मग से बिना देखे, बिना छना पानी पीने से, कुछ दिनों में पेट में तकलीफ होने लगी, तो एक्सरे करवाया डॉक्टर ने उपवास करने के लिए कहा–उसने कहा हम तो एक घंटे भी भूखे नहीं रह सकते, डॉक्टर ने कहा स्वस्थ होना है, तो उपवास करना ही होगा उसने जिस किसी तरह उपवास किया दूसरे दिन दस-पाँच चने के दाने खाने को दिए, जब चने की धंध पेट में पहुँची तो उल्टी की इच्छा हुई, डॉक्टर ने कहा उल्टी कर दो, उल्टी की तो साँप का बच्चा निकला यह अनछना पानी पीने का परिणाम था।

५. पर प्रशंसा निज निंदा ही अर्चा है

२६५. पाप की कालिमा को नदी समुद्र का पानी नहीं धो सकता, उसे तो पश्चाताप के आँसू ही धो सकते हैं एवं परमात्मा तक पहुँचने के लिए प्रायश्चित सबसे सरल मार्ग है।

२६६. पुण्य के उदय में रावण और पाप के उदय में राम मुस्कुराते हैं।
२६७. यदि सचमुच ही तुम दुःख से डरते हो और तुम्हें दुःख अप्रिय है, तो फिर प्रकट या गुप्त किसी भी रूप में पाप कर्म मत करो।
२६८. एक छेद भी जहाज को डुबा देता है और एक पाप भी पापी को नष्ट कर देता है।
२६९. अज्ञानी तो बीते हुए को स्वप्न की तरह मानता है, पर ज्ञानी (विवेकी) वर्तमान को स्वप्न की तरह मानता है।
२७०. आदमी को अपनी प्रसिद्धि के लिए अपनी विशुद्धि नहीं खोना चाहिए।
२७१. प्रभु से पद की नहीं परमपद की प्रार्थना करो।
२७२. संसार के काम में तो नफा और नुकसान दोनों होते हैं, पर भगवान् के काम में नफा-ही-नफा होता है, नुकसान होता ही नहीं है।
२७३. राजभवनों के मोह से मनुष्य आजीवन मानसिक कारावास भोगता है।
२७४. सुन्दर विचार जिनके साथ हैं, वे कभी अकेलेपन में नहीं रहते हैं।
२७५. वैरागी की आत्मशक्ति के सम्मुख विश्व की समस्त शक्तियाँ असफल हैं।
२७६. हम हर बार शरीर का परिचय लेते रहे, पर शरीर ने हर बार धोखा दिया, यदि हम एक बार भी आत्मा का परिचय ले लेते तो वह हमें शाश्वत धाम तक पहुँचा देता।
२७७. जिसमें शान्ति का निवास नहीं है, उसके सारे सद्गुण व्यर्थ हैं।
२७८. शान्ति की विजय भी युद्ध की विजय से कम महत्त्व की नहीं होती है।
२७९. तन की पवित्रता से नहीं मन की पवित्रता से परमात्मा प्रसन्न होते हैं।
२८०. दूसरों की प्रशंसा और अपनी निंदा करना ही परमात्मा की अर्चना करना है।
२८१. जैसे दूध में घी छिपा होता है वैसे ही शरीर में आत्मा छिपी होती है।
२८२. विगत में जो किया, उसकी फसल वर्तमान में काट रहे हो, वर्तमान में जो बोओगे, उसकी फसल भविष्य में काटोगे।
२८३. परिस्थिति नहीं बदल सकते तो अपनी मनःस्थिति बदल लो सब दुःख-सुख में बदल जायेंगे। जो परिणामों को विशुद्ध बनाये उसका नाम पर्व है।
२८४. जो पापों को गलाये तथा पुण्य की वृद्धि कराये, वह पर्व है।
२८५. जल से वस्त्र शुद्ध होते हैं, सत्य से मन शुद्ध होता है, अहिंसा से आत्मा पवित्र होती है और ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है।
२८६. जो पुण्य कार्य करने से रोके वही पाप है और पाप कार्य न करने दे, वही पुण्य है।
२८७. संसार में रहना पाप नहीं है, संसार में रमना पाप है अर्थात् पदार्थों के प्रति आसक्ति पाप है।
२८८. आज का श्रम कल का विश्राम है।

२८९. प्रायश्चित्त से पिछले पाप के प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी होती है।

२९०. भूल की पुनरावृत्ति न होने देना भी भूल का सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है।

२९१. ''पहले पाप कर लें पीछे प्रायश्चित्त कर लेंगे'' इस प्रकार जान-बूझकर किए गये पाप प्रायश्चित्त से नष्ट नहीं होते हैं।

२९२. जैसे बालक हर अवस्था में माँ को ही पुकारता है, ऐसे ही आप हर अवस्था में भगवान् को पुकारो। जो मन की शान्ति व संतोष पा लेता है, वही असल में जीवन जीता है, वही संग्राम विजयी है। फिर उसके पास मोटर, घर, धन-सम्पदा हो या न हो लेकिन यदि मन की शान्ति न रही तो सारे सुख-वैभव के बावजूद भी वह मनुष्य सुखहीन है।

२९३. जीवन आज और अभी है, उसे कभी अतीत या भविष्य में न देखें, जिसने जीवन को अतीत या भविष्य में देखा उसने जीवन को जाना ही नहीं। हमेशा ध्यान रखें कि जो सामने है वही सच है। उसके बाद जो कुछ भी है वह सिर्फ संभावना है।

२९४. राग के समान कोई आग नहीं, द्वेष के समान कोई अनिष्ट ग्रह नहीं, मोह के समान कोई जाल नहीं और तृष्णा के समान कोई नदी नहीं है।

२९५. मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारों, जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो, खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ, लेना चाहते हो तो प्रभु का नाम लो, बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो, छोड़ना चाहते हो तो पाप और अत्याचार को छोड़ो, पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो, देखना चाहते हो तो अपने दुर्गुण देखो कल्याण हो जाएगा।

२९६. सुख चाहते हो तो रात में खाना नहीं, शान्ति चाहते हो तो दिन में सोना नहीं, सम्मान चाहते हो तो व्यर्थ में बोलना नहीं और निर्वाण चाहते हो तो धर्म को छोड़ना नहीं।

२९७. जिनके चित्त से राग द्वेष का नाश हो जाता है वे ज्ञानी, गुणी, दानी और ध्यानी हैं।

२९८. खोज करने पर कदाचित् अग्नि के मध्य शीतलता दिख सकती है परन्तु संसार में सुख किसी तरह और किसी समय नहीं दिख सकता है।

२९९. मनुष्य को किसी भी समय काम वासना से, भय से, लोभ से या जीवन रक्षा के लिए धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि धर्म नित्य है और सुख-दु:ख और जीवन अनित्य है।

३००. जो बुद्धि का विषय नहीं है वहाँ श्रद्धा तथा विश्वास के बल पर ही मानव सफलता के मार्ग तक पहुँच सकता है।

३०१. परमात्म तत्त्व का अनुभव तभी होगा, जब 'विषयभोग, निद्रा, हँसी, जगतप्रीत, बहु बात'; ये पाँचों सुहायेंगे नहीं।

३०२. भगवत् प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है—भोग और संग्रह की रुचि। दूसरों के सुख से सुखी

होने पर 'भोग' की रुचि और दूसरों के दुःख से दुःखी होने पर 'संग्रह' की रुचि मिट जाती है।

३०३. संसार के त्याग में 'विवेक' काम आता है और भगवान् की प्राप्ति में 'विश्वास' काम आता है।

३०४. परमात्मा के सम्मुख होने का उपाय है–संसार से सर्वथा विमुख होना।

३०५. जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो फिर भय किसका और किसलिए?

३०६. जो अध्यात्म से रहित होता है वही मौत से डरता है।

३०७. सब प्रकार का भाग्य संकटपूर्ण होता है। सौभाग्य ईर्ष्या को लाता है और दुर्भाग्य लज्जा को।

३०८. अपने भाव और भाग्य पर भरोसा नहीं करना चाहिए क्योंकि भाव कब बिगड़ जायें और भाग्य कब रूठ जाए, इसका कोई भरोसा नहीं।

३०९. भाव बिगड़ता है तो भव बिगड़ जाता है और भाग्य बिगड़ता है तो भविष्य बिगड़ता जाता है। अतः अच्छे भाव (परिणाम) और अच्छे भाग्य का सदुपयोग कर लो क्योंकि भाव सम्भलते ही भव सम्भल जाता है और भाग्य सँवरते ही भविष्य सँवर जाता है।

३१०. खोटी भावना से किया गया अच्छा कर्म भी पाप को देने वाला होता है।

३११. भावना जल है, उस पर देश-काल-गति का प्रभाव बड़ी जल्दी पड़ता है।

३१२. भावना के आधार पर कोई विचार स्थिर कर लेने में सदैव कष्ट होता है क्योंकि भावना स्थायी नहीं होती है। परिस्थियाँ बदलते ही मान्यताएँ बदल जाती हैं।

३१३. मन, वचन, कर्म से जो कर रहे हो वही ब्याज सहित वापस मिलने वाला है।

३१४. मन में किसी प्रकार की आसक्ति का न होना पवित्रता है।

३१५. मन पवित्र हो तो बुराई में भी अच्छाई दिखाई देती है।

३१६. मन को मारने की नहीं मन पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता है क्योंकि मन पर विजय ही समस्त संसार पर विजय पाने जैसा है।

३१७. जब तुम्हारा मन सत्य से विमुख होकर असत्य की ओर झुकने लगे तो समझ लो कि तुम्हारा सर्वनाश निकट ही है।

३१८. वस्त्र मैला हो जाए किन्तु मन मैला नहीं होना चाहिए।

३१९. वातावरण के जहर से ज्यादा जहरीला है मन का जहर।

३२०. मनुष्य का सबसे बड़ा नुकसान उसके मन में बुरे विचारों का आना है।

३२१. वास्तव में मनुष्य जन्म ही सब जन्मों का आदि तथा अन्तिम जन्म है, यदि मनुष्य परमात्म प्राप्ति कर ले तो अन्तिम जन्म भी यही है और परमात्म प्राप्ति न करे तो अनन्त जन्मों का आदि जन्म भी यही है।

३२२. मनुष्य पर्याय मौज-मस्ती करने को नहीं मोक्ष प्राप्ति को मिली है।

३२३. सज्जनों को अपने रूप की नहीं अपने स्वरूप की चिन्ता करनी चाहिए क्योंकि रूप तो नश्वर है किन्तु स्वरूप शाश्वत है।

३२४. मालिक गुलाम का भी गुलाम होता है क्योंकि मालिक को नौकर की पराधीनता झेलना पड़ती है।

३२५. अपनी मुक्ति अपने प्रयासों से होगी, दूसरा कोई तुम्हारा सहायक नहीं बन सकता है।

३२६. किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है।

३२७. समय का सदुपयोग करने वाला मोक्षमार्गी होता है।

३२८. वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकान्त, आचरण में अहिंसा ही मुक्ति का द्वार है।

३२९. मोही-ज्ञानी भी संसारी है जबकि निर्मोही अल्पज्ञानी मोक्षमार्गी होता है।

३३०. मोक्ष मार्ग में शरीर की शुद्धता से ज्यादा आचार-विचार और दिल-दिमाग की शुद्धता की आवश्यकता होती है।

३३१. जो हँसी-हँसी में भी मोक्षमार्ग की अवहेलना करता है, उसकी मुक्ति संभव नहीं है।

३३२. मृत्यु से वे ही डरते हैं, जिसका जीवन पाप कर्मों में निकला है। मौत बड़ी नींद है, नींद छोटी मौत है।

३३३. मृत्यु से भयभीत होना कायरों का काम है क्योंकि असली जीवन तो मृत्यु ही है।

३३४. जब मृत्यु तय है जो उसका उल्लास से वरण करें क्योंकि मृत्यु प्रतिदिन निकट आ रही है।

३३५. अत्यन्त अभिमान, अधिक बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, अपना ही पेट पालने की चिन्ता और मित्र मोह; ये छह तीखी तलवारें देह धारियों की आयु को काटती हैं।

३३६. मनुष्य का बचपन कभी-कभी लौटता भी है अर्थात् वृद्धावस्था में भी बचपन जैसी दशा हो जाती है पर यौवन कभी वापस नहीं आता है।

३३७. सिद्धशिला का रास्ता लंबा अवश्य है पर पहुँचना असंभव नहीं है।

३३८. मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य अपने में देवत्व को पहचानकर उसे प्राप्त करना है।

३३९. अप्राप्त वस्तु को पाने की लालसा दुःख का कारण है, परन्तु वस्तु प्राप्त हो जाने पर उसकी सुरक्षा महादुःख का कारण है।

३४०. स्वर्ग नरक स्वयं के भीतर है जैसा सोचोगे वैसा पाओगे।

३४१. दूसरे के प्रति बुरा विचार करके अपनी उपयोगी ऊर्जा का दुरुपयोग मत करो।

३४२. विज्ञान सुविधा देता है समाधि नहीं, समृद्धि देता है शान्ति नहीं, साधन देता है साधना नहीं।

३४३. विज्ञान की आँख पदार्थ को तो देख सकती है किन्तु परमात्मा को नहीं, परमात्मा को देखने के लिए अध्यात्म की आँख चाहिए।

३४४. आन्तरिक विरक्तता के बिना बाह्य विरक्तता शव के शृंगार के समान है।

३४५. कल्याण का पथ प्रत्येक पदार्थ से विरक्त होना है।

३४६. वैराग्य से आत्म सुख प्राप्त होता है, वैराग्य से दु:ख का नाश होता है, वैराग्य से शरीर में नीरोगता रहती है और वैराग्य से मोक्ष का सुख प्राप्त होता है।

३४७. स्वाभिमानी और पवित्र हृदय वाला पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

३४८. किसी पर सन्देह करने से अपना चित्त मलिन होता है।

३४९. जो ताकत आपको लक्ष्य की ओर ले जा सकती है वह आपके अन्दर है बाहर नहीं।

३५०. संसार में सबसे शक्तिशाली वही है जो आत्म निर्भर स्वाधीन है।

३५१. जैसे कुश्ती लड़ने से बल बढ़ता है वैसे ही परिस्थितियों से लड़ने से अर्थात् शान्ति से आत्मबल बढ़ता है।

३५२. ''जैसा मैं चाहूँ वैसा हो जाये'' यह इच्छा जब तक रहेगी, तब तक शान्ति नहीं मिल सकती। चाहे साधु बनो, चाहे गृहस्थ बनो, जब तक कामना (कुछ पाने की इच्छा) रहेगी, तब तक शान्ति नहीं मिल सकती।

३५३. जिसको अपने में ही शान्ति मिल गई उसके लिए सारा संसार शान्तिमय है।

३५४. स्वयं शांत रहने वालों की शान्ति को कोई भंग नहीं कर सकता है।

३५५. मन में शान्ति चाहिए तो व्यर्थ की भाग-दौड़ और उत्तेजनाओं से बचिए।

३५६. दूसरों को न बदल सको तो स्वयं को बदल लीजिए, शान्ति के द्वार खुल जाएँगे।

३५७. शान्ति मानव-जीवन के लिए एक परम पावन और वांछनीय निधि है।

३५८. जगत् की अशान्ति देखकर अपनी शान्ति भंग मत करो।

३५९. शान्ति मानव जीवन का चरम उद्देश्य है, संसार में जितने धर्म-कर्म हम करते हैं, उन सबके पीछे यही लालसा रहती है कि हम शान्तिपूर्वक जीवन बिताएँ।

३६०. आज व्यक्ति के पास पर्याप्त धन-दौलत, वैभव सब कुछ है, पर शान्ति नहीं है और शान्ति नहीं है तो सब कुछ पाना और न पाना बराबर है।

३६१. ऐसे जियो कि दुनिया में तुम रहो किन्तु दुनिया तुम में न रहे अर्थात् किसी वस्तु से राग न हो।

३६२. संसार में जो मिलता है, वह रुचता नहीं और जो रुचता है वह मिलता नहीं इसलिए सुख मिलता नहीं और दु:ख मिटता नहीं।

३६३. संसार के संयोग का वियोग तो अवश्यम्भावी है, पर वियोग का संयोग अवश्यम्भावी नहीं है अत: संसार का वियोग ही सत्य है।

३६४. सांसारिक पदार्थ, मान, बड़ाई, प्रशंसा, आराम, सत्कार आदि प्रिय लगना पतन का कारण है।

३६५. शरीर-बल से प्राप्त सत्ता मानव देह की तरह क्षणभंगुर रहेगी जबकि आत्मबल से प्राप्त सत्ता आत्मा की तरह अजर और अमर रहेगी।

३६६. दूसरों के निर्णय पर जीने वाला व्यक्ति कभी भी सत्य के दर्शन नहीं कर पाता है।

३६७. सत्य की खोज करने वाले में निर्भयता का गुण होना ही चाहिए।

३६८. आत्महत्या समस्या का समाधान नहीं अपितु एक नई समस्या है।

३६९. जो समाधि में डूबता है वही मुक्ति का वरण करता है।

३७०. समाधि आत्महत्या नहीं, आत्म जागरण है।

३७१. सांसारिक सम्पदायें आँख खोलने से मिलती हैं लेकिन आध्यात्मिक सम्पदा आँख बन्द करने पर मिलती है।

३७२. शुद्ध आत्मा की प्राप्ति ही सच्ची सम्पत्ति है।

३७३. देव-शास्त्र-गुरु के प्रति सच्ची अकाट्य श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

३७४. सत्पुरुषों का सम्यग्दर्शन के साथ नरक में भी निवास करना अच्छा है और सम्यग्दर्शन के बिना स्वर्ग में भी निवास शोभा नहीं देता है।

३७५. सम्यग्दर्शन के अभाव में जन्म मरण की पीड़ा सताती है।

३७६. सम्यग्दृष्टि स्वर्ग की सम्पदा को पाकर भी उदासीन रहता है।

३७७. सम्यग्दृष्टि का परिवार से अटेचमेंट तो होता है पर आसक्ति नहीं रहती है।

३७८. जिस प्रकार प्राणरहित शरीर मृतक कहलाता है उसी प्रकार सम्यक्त्व से रहित मनुष्य चलता फिरता मृतक कहलाता है।

३७९. ईश्वर ही हमारा आश्रय और बल है वही आपत्ति के समय में रक्षा करता है।

३८०. डोली से शिखर जी की यात्रा तो आप कर सकते हैं, श्मशान तक कंधे पर चढ़कर पहुँच सकते हैं पर उसके आगे तुम्हें किसी का सहारा नहीं मिलेगा।

३८१. दुःखों का मूल ममता है तो सुखों का मूल समता (सुख-दुःख में समान भाव) है।

३८२. सच्चा सुख बाहर से नहीं, अंदर (हृदय) से मिलता है।

३८३. शारीरिक सुख पराधीन है परन्तु आत्मिक सुख स्वाधीन है।

३८४. स्थान बदलने से नहीं मनःस्थिति बदलने से सुख मिलता है।

३८५. सुख धन के अर्जन में नहीं धर्म के अर्जन में है।

३८६. सुख के लिए शरीर को सुन्दर नहीं मन को सुन्दर बनाओ।

३८७. जो आपने खो दिया उसकी तरफ कभी न देखें अपितु उस तरफ देखें जो अभी यहीं आपके पास शेष बचा है, यही सुख का रहस्य है।

३८८. जिसे सोने के लिए नींद की गोली नहीं खानी पड़ती और जागने के लिए अलार्म की जरूरत नहीं पड़ती वही सुखी है।

३८९. निर्मोही ही सच्चे सुख का अधिकारी होता है।

३९०. जो सुखदायी परिस्थिति में दूसरों की सेवा करता है तथा दुःखदायी परिस्थिति में दुःखी नहीं होता अर्थात् सुख की इच्छा नहीं करता वह संसार-बन्धन से सुगमता पूर्वक मुक्त हो जाता है।

३९१. गृहस्थी में अगर सबका यह भाव रहे कि मेरे को सुख कैसे मिले तो सब दुःखी हो जायेंगे और यह भाव रहे कि दूसरे को सुख कैसे मिले तो सब सुखी हो जायेंगे।

३९२. जो सुख लेने की इच्छा से किसी के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ता वह जीता है तो आनन्द से जीता है और मरता है तो आनन्द से मरता है परन्तु सुख लेने की इच्छा से सम्बन्ध जोड़ने वाला जीते हुए भी दुःख पाता है और मरते हुए भी दुःख पाता है।

३९३. जब तक सांसारिक सुख लेने की वृत्ति नहीं मिटेगी, तब तक कितना ही पढ़-लिख लें, कितने ही चतुर और समझदार बन जायें, कितनी ही योग्यता का सम्पादन कर लें, कितने ही व्याख्यान दाता बन जायें, कितनी ही पुस्तकें लिख लें किन्तु परम शान्ति नहीं मिलेगी।

३९४. सांसारिक पदार्थों के संयोग से होने वाला सुख हमारा नहीं है हमारे लिए भी नहीं है; क्योंकि हम तो सदा रहने वाले हैं और सांसारिक सुख मिटने वाला है।

३९५. हमारे पास जो भी वस्तु, योग्यता, सामर्थ्य आदि है, वह सब स्थाई नहीं है हमसे भूल यह होती है कि उस वस्तु आदि को हम स्थाई मानकर उससे सुख भोगने लगते हैं इससे हमें विवश होकर दुःख भोगना पड़ता है।

३९६. जो अहित करने वाली चीज है वह थोड़ी देर के लिए सुंदर बनाने पर भी असुंदर है क्योंकि वह अकल्याणकारी है, सुंदर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो।

३९७. सौभाग्यशाली वे नहीं जिसके पास धन, दौलत और सुख के साधन हैं बल्कि सौभाग्यशाली वे हैं जिनके पास प्रभु भक्ति व आत्मकल्याण के लिए समय है।

३९८. धार्मिक स्थान मनोरंजन का नहीं आत्मरंजन का स्थान है।

३९९. स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम स्वयं कर लेता है।

४००. सम्पत्ति से नहीं स्वतंत्रता से व्यक्ति सम्राट् बनता है।

४०१. पूर्ण स्वतंत्रता में ही सत्य से साक्षात्कार होता है।

४०२. निज स्वंतत्रता में स्वर्ग और परतंत्रता में नरक है।

४०३. देश तो स्वतंत्र हो गया पर देह अभी परतंत्र है।

४०४. किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी बेचना है।

४०५. स्वभाव केवल आच्छादित ही हो सकता है, विनष्ट नहीं हो सकता है।

४०६. जीव का स्वभाव सिर्फ देखना-जानना है।

४०७. यदि अन्तर्मन में आनंद हो तो स्वर्ग आपके साथ में है।

४०८. स्वाद और स्वार्थ की चाह ही जीवन को तबाह करती है। स्वाद आदमी के स्वास्थ्य को बिगाड़ता है और स्वार्थ परमार्थ को बिगाड़ता है। स्वाद की अग्नि आदमी के तन को जलाती है और स्वार्थ की अग्नि आदमी के मन को जलाती है।

४०९. स्वार्थी व्यक्ति परमात्मा से दूर होते हैं।

४१०. जो मनुष्य प्रायश्चित्त, आयुर्वेद, ज्योतिष और धर्म निर्णय की बात शास्त्र के बिना कहता है उसे ब्रह्मघाती कहते हैं।

४११. एक सच्चा हृदय सारे संसार की विलक्षण शक्तियों से अधिक मूल्यवान है।

४१२. अधूरी श्रद्धा के गर्भ से भय का जन्म होता है।

४१३. श्रद्धा का अर्थ अन्धविश्वास नहीं है। किसी ग्रन्थ में कुछ लिखा हुआ या किसी व्यक्ति का कुछ कहा हुआ अपने अनुभव बिना सच मानना श्रद्धा नहीं है।

४१४. बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान एवं तपा हुआ तप और जो कुछ भी किया हुआ शुभ कर्म है वह सब असत् कहलाता है वह न तो इस लोक में लाभदायक होता है न मरने के बाद परलोक में सुखदायी होता है।

४१५. धर्म के क्षेत्र में श्रद्धा सर्वोपरि होती है।

४१६. जो श्रद्धा अनुभव की अपेक्षा नहीं रखती, वही सच्ची श्रद्धा है।

४१७. श्रद्धावान वही है जो विपत्तियों से घिर जाने पर भी डिगे नहीं।

६. चिद् विलास, सबसे खास

४१८. संतोष गरीबों को अमीर बनाता है, असंतोष अमीरों को गरीब बनाता है।

४१९. हित का बुद्धिगत उपाय 'एकान्तवासी' होकर स्वाध्याय तथा तप करना है।

४२०. जब त्यागी हुए तब आत्म कल्याण के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य का लक्ष्य नहीं बनाओ। लोग तो उद्धार, परोपकार और शुभोपयोग आदि शब्द कहकर राग की आग लगाकर अलग ही रहते हैं, जलना पड़ता है तुम्हें।

४२१. सोचना भूल है कि निरन्तर ज्ञानोपयोग नहीं रह सकता, रह सकता है, इतना जरूर है कि कभी कभी कम कभी ज्यादा।

४२२. तुम कुछ बाह्य उपक्रम मत करो, बस इतना ही तो होगा की कोई तुम्हें जानेगा नहीं। सो परिचय उपक्रम में भी कोई तुम्हें जानता नहीं है बाह्य शरीर से परिचय हो जाने पर भी तुम्हें कुछ मिलता नहीं अथवा मिलता है तो विकल्पों का क्लेश/जानने वाले भी विनाशीक है, न जाना तो क्या? तुम तो तुम ही हो अपने में लीन होओ और अनंत सुखी होओ।

४२३. किसी से खास परिचय करना विकल्पाग्नि का ईंधन है, महती विपत्ति है। आत्मा की तो विकल्प में हत्या ही होती रहती है।

४२४. अनिष्ट विषय में अरुचि का होना इष्ट विषयों में रुचि का द्योतक है।

४२५. भोग की इच्छा रोग है और भोग दवा है, रोग पैदा करके दवा करने (दबाने) में रुचि करना विवेकी पुरुष का कर्त्तव्य नहीं है, रोग पैदा ही न हो, इससे बढ़कर स्वास्थ्य नहीं है, अतः तत्त्वज्ञान से इच्छा को दूर करो।

४२६. दूसरों को अपने अनुकूल करने में या दूसरों के अपने अनुकूल होने में क्या भलाई है? अरे! अपने को अपने वश में कर लो तो सर्वसिद्धि है।

४२७. कोई पुरुष किसी के प्रेम में आकर अपने आप को भूल जाता है तो क्या वह आत्मा में रुचि करके पर को नहीं भूल सकता है? आत्म रुचि करो सर्व चमत्कार व सिद्धि पा लोगे।

४२८. मान करन तें मर गये रहे न जिनके वंश।
तीनों को तुम देख लो रावण कौरव कंश ॥

४२९. संसार की असारता, दुःखों की अपारता।
उलझ गये तो कुछ नहीं, सुलझ गये तो शाश्वता॥

४३०. महा पुण्यात्मा जीव ही गुरु आज्ञा में रहकर चारित्र का पालन करता है।

४३१. जब तुमने दुनिया को त्यागा, तब दुनिया के लिए तुम्हारी सत्ता नहीं रही यानि तुम कुछ नहीं रहे, फिर भी यदि जबरन किसी के कुछ बनना चाहो तो तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ है और दुःखमय है।

४३२. लेखन, स्वाध्याय स्वाधीन है, सल्लेखना-कल्पवृक्ष है, 'मौन' मुमुक्षु का सर्वोपरि कार्य है।

४३३. प्रशंसा किए जाने पर संतुष्ट होना कापोत लेश्या है, प्रशंसा की चाह होना अशुभ परिणाम है।

४३४. हम भीतर गये हम भी तर गये। तुम भीतर जाओ तुम भी तर जाओ अर्थात् आत्म ध्यान से कल्याण होता है।

४३५. अपने चैतन्य की विशुद्धि से अपना लाभ मानने वाला कभी प्रशंसा के शब्दों में हर्ष की आकुलता और निंदा के शब्दों में विवाद की आकुलता नहीं कर सकता।

४३६. मृदुता से प्रभुता मिलती है।

४३७. मेरा कर्त्तव्य तो निवृत्ति पथ गमन अर्थात् आत्मकल्याण करना ही है।

४३८. मुझे लाभ नहीं, जो जनता मेरे समीप आवे, मुझे लाभ नहीं जो उपकार के कोई गुण गावे। कोई क्या कहेगा? यही तो कहेगा कि उपदेश दिये, इनका अच्छा प्रभाव है आदि। सोचो,

जो पर पदार्थ के कर्तापन की बात लादे, वह ज्ञानियों की दृष्टि में सम्मान है या अपमान?

४३९. कोई भी प्राणी तुम्हारे द्वारा तिरस्कार के योग्य नहीं है, ये तो सब स्वतन्त्र पदार्थ हैं, इनसे तेरा सम्बन्ध क्या है? अपने क्रोध-मान-माया-लोभ का तिरस्कार तेजी से करो, इन्हीं कषायों ने तुझे भटका रखा है और दुःखी कर रखा है।

४४०. 'समानता' के भाव से अभिमान और दीनता का अभाव होता है।

४४१. समता की साधना से मरण की चिन्ता भी नहीं होती है।

४४२. निःस्पृह आत्मा ही समता रूप अमृत के पाने का अधिकारी है।

४४३. अपनी आत्मा को प्रसन्न रखो, कोई अन्य प्रसन्न हों, चाहे न हों।

४४४. गृहस्थों के चक्र में न पड़ना तथा निरपेक्ष त्यागी रहना, पत्थर पर सोना पर चटाई न माँगना, लँगोटी न मिले तो द्रव्य मुनि ही बन जाना, पर लगोटी न माँगना, सूखी रोटी मिल जावे तो खा लेना, पर घी की इच्छा न करना आदि, आत्म निर्मलता में ही तुम्हारा कल्याण है।

४४५. परमानन्द की प्राप्ति के लिए तो सबसे चित्त हटाना ही होगा।

४४६. राग-द्वेष बढ़ाना ही आत्मबल घटाना है, समता रखना ही आत्म बल बढ़ाना है।

४४७. सबसे दुर्लभ तो आत्मस्थिरता है, उसके पाने पर फिर कोई भी स्थिति पाने योग्य नहीं रहती।

४४८. आत्मन्! यह मनुष्यत्व अति दुर्लभ है, चिंताग्रस्त रहकर जीवन व्यर्थ मत करो।

४४९. पापोदय में हानि नहीं किन्तु पापात्मा हो जाने में आत्मगुणों की हानि है।

४५०. रागद्वेष मोह का निमित्त, आश्रय, आधार और विषय पर पदार्थ हैं। यदि किसी से कहा जाये कि तुम रागद्वेष मोह करो किन्तु शुद्धात्मा के सिवाय अन्य पदार्थ में मत करो तो वह कर ही कैसे सकता है।

४५१. जो आत्महित पर पहुँचा दे, वह सत् उद्देश्य है।

४५२. राग की वेदना मेटने का उपाय तो यह है कि राग के विषयभूत पदार्थ को भिन्न समझो तथा उस राग को भी अपने स्वभाव से भिन्न एवं अहितकारी समझो।

४५३. मोक्षमार्ग के सेवक को धार्मिक संस्थाओं के झंझट में भी नहीं पढ़ना चाहिए क्योंकि लोग जुदे- जुदे ख्याल के होते हैं, अपने अभिप्राय के अनुकूल कार्य का होना अत्यन्त कठिन है।

४५४. मीठे वचनों से स्वागत ही सच्चा अतिथि सत्कार होता है।

४५५. व्यवहार यद्यपि निश्चय नहीं हैं तो भी व्यवहार के होते हुए ही निश्चय मिलता हैं, जैसे दूध से घी आदि प्राप्त होते हैं।

४५६. सुवर्ण के आभूषण का उपादान सोना ही है, परन्तु ढाँचे में ढलने का निमित्त पाये बिना आभूषण नहीं बनता है उसी प्रकार व्यवहार के बिना निश्चय प्राप्त नहीं होता।

४५७. व्यवहार सर्वथा अभूतार्थ नहीं है क्योंकि अहिंसादि में धर्म का व्यवहार किया जाता है हिंसादि में नहीं? एवं अहिंसादि से निश्चय की प्राप्ति होती है

४५८. आत्मा अनादि अनन्त है तब मनुष्य पर्याय के व्यवहार में क्या रुचि रखना।

४५९. पर की अनुकूल परिणति नहीं स्वयं का विरक्ति भाव ही सुखी बनायेगा।

४६०. न तो यश हित का साधक है न अपयश, बल्कि इच्छा का अभाव हित का साधक है।

४६१. आत्मा का महत्त्व स्वयं है, पर निंदा आत्म प्रशंसा से नहीं, समुद्र की महत्ता स्वयं है तालाबों की तुच्छता बताने से नहीं।

४६२. तत्त्वदर्शी बनकर स्व-पर कल्याण में तत्पर रहना ही मनुष्य जन्म का सार है।

४६३. पापानुबंधी पुण्य नहीं पुण्यानुबंधी पुण्य सुशील है क्योंकि वह मोक्ष का कारण होता है।

४६४. जब एक गृहस्थ मुनि दीक्षा नहीं दे सकता है तो भगवान् को दीक्षा कैसे दे सकता है? सबसे बड़ी बात ऐसे लोग जो बिना मुनि से सूरि मंत्र की प्रतिष्ठित मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं, उनमें से किसी का भी समाधिमरण नहीं देखा जा रहा है।

४६५. भगवान् के गुणों की प्राप्ति के लिए धार्मिक अनुष्ठान करना शुभोपयोग है।

४६६. आत्मा-परमात्मा का राग नहीं माना जाता जैसे दर्पण में हम अपने को सम्हालते हैं।

४६७. ''पावन मेरे नयन भये तुम दरश तैं, पावन पाणी भये तुम चरणन परस तैं।
पावन मन हो गयो तिहारे ध्यान तैं, पावन रसना मानी तुम गुण गानतै ॥''

४६८. जो आत्म कल्याण में लगा है उससे जीवों का कल्याण व रक्षा होती ही हैं।

४६९. किसी वस्तु से लगाव होना राग है और उसके बिना न रह पाना मोह है।

४७०. सबमें न वह योग्यता, मिले न सबको मोक्ष।
बीज सीझते सब कहाँ, जैसे ठर्रा मोठ ॥

४७१. मूर्छित, सुसुप्त अवस्था में भी आत्मा पर मन्त्रों का प्रभाव होता है संक्लेश खत्म होता है अतः समाधिमरण पाठादि सुनाना चाहिए।

४७२. कभी पुण्योदय से शुभ निमित्त मिलते हैं कभी शुभ निमित्तों से पुण्य की उदीरणा होती है इसी तरह कभी के उदय से अशुभ निमित्त मिलते हैं, कभी अशुभ निमित्तों से पाप की उदीरणा हो जाती है, अतः शुभ निमित्त जुटाना चाहिए।

४७३. भगवान् जगत् के लिए मंगलकारी हो इसलिए प्रतिमा के नीचे स्वस्तिक आदि रखे जाते हैं।

४७४. आत्म शुद्धि पर अधिक लक्ष्य रखो। तुम्हारे क्षमादि भाव ही तुम्हारे रक्षक हैं और कोई रक्षा करने वाला नहीं है।

४७५. बाह्य कार्य कोई भी अपने ऊपर मत लो, इस मनुष्य जीवन के क्षण ही कितने है? आत्मा का लाभ शुद्धात्मा के ज्ञान व ध्यान से है।

४७६. इस असार परिवर्तनशील संसार में प्रतिष्ठा का व्यामोह करना घोर दुःखों का कारण है।

४७७. परवस्तु को ग्रहण करने वाला चोर कहलाता है, परन्तु तुम तो सतत पर को अपना मानते हो धिक्कार ऐसी चोर जैसी जिन्दगी को।

४७८. जो प्रत्येक साधन का लक्ष्य शुद्धात्म तत्त्व को बनाता है, वह शिवपथिक है।

४७९. सम्मान का अभाव अखरना, दूसरे अच्छी दृष्टि से न देखे तो अखरना, पड़ोसी से अधिक वैभव न हो तो अखरना, पर आत्माओं से स्नेह होना ये सब पर द्रव्य को अपना मानने के कारण होता है। अनात्म दृष्टि पिशाचिन की करतूत है।

४८०. आत्म शान्ति के लिए परिचय, उपकार, कषाय, विषयाभिलाषा छोड़ना होगी।

४८१. त्याग में पराधीनता नहीं सामाजिक बातों में बहुत पराधीनता है।

४८२. हे देव! मुझे अनंत दर्शन नहीं आत्म दर्शन की चाह है। धन, वैभव और कीर्ति आदि से अपने को बड़ा मत समझो, वे तो पर वस्तु हैं, अपने को बड़ा समझो अपनी वस्तु अर्थात् दर्शन, ज्ञान और चारित्र की स्वच्छता या वृद्धि से।

४८३. आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ अच्छा आदर्श छोड़कर जाना अध्यात्म का एक हिस्सा है।

४८४. खलनायक पथभ्रष्ट और नायक सत्यनिष्ठ होता पर जैन संस्कृति मूलनायक बनने की है।

४८५. डेढ़ घंटे में १० मिनट सप्ताह में एक दिन एक महीने में २-३ दिन एक वर्ष में ८-१५ दिन सपरिवार तीर्थक्षेत्र पर या साधु संगति में धर्मध्यान कर मनोरंजन करें।

४८६. भगवान् नहीं कहते मुझे मन्दिरों में बसाओ, वे कहते हैं मुझे दिल में बसाओ।

४८७. निष्कपटता की परीक्षा स्वार्थ साधन के अवसर पर होती है। छलने से आत्मा मलिन होती, छले जाने से नहीं।

४८८. भविष्य में स्वप्नवत् हो जाने वाली घटना को अभी स्वप्न वत समझो तो महती शान्ति मिलेगी।

४८९. विभाव-विकार के वियोग से मोक्ष मिलता है, अतः अच्छा है।

४९०. सांसारिक सुख रेत का घर है और उसका फल उसे मिटना ही है।

४९१. यदि तुम कल्याण व उन्नति चाहते हो तो दूसरों के कल्याण व उन्नति में ईर्ष्या मत करो प्रत्युत उनके कल्याण व उन्नति की भावना रखो क्योंकि मात्सर्य भाव स्वयं अकल्याण है, इस अशुभ प्रयोग के रहते उन्नति हो ही नहीं सकती है।

४९२. जब तुम्हें कोई चिंता हो, तब अखण्ड अविनाशी अपने ज्ञायकभाव का चिंतन करो, इसके ध्यान के प्रताप से तत्काल चिंता नष्ट हो जाती है।

४९३. संसार में सार क्या है, जिसके लिए असंतोष किया जाय असंतोष तो दरिद्रता है।

४९४. जो सबसे बड़ा और मालिक बनना चाहेगा वह संतोष नहीं पा सकेगा।

४९५. चिंता-शंका से रहित, परमात्म गुणस्मरण-आत्म स्वरूपलीनता ही मोक्ष का उपाय है।

४९६. ''सुख पर में और पराधीनता में नहीं निज में और निजाधीनता में है'' अतः ज्ञायक बनो।

४९७. पर पदार्थ की उधेड़बुन में समय क्यों खोते हो? भगवान् के ज्ञान में जो झलका है वह तो होकर ही रहेगा, तुम्हारे सोचने से क्या होता है।

४९८. स्वाधीन कार्य शान्ति में अधिक सहायक है, सत्समागम व सेवा पराधीन है, स्वाध्याय बहुशः स्वाधीन है। ''जो विषय-कषाय में बंधा है वह पराधीन है।''

४९९. विषयों और प्रतिष्ठा में बुद्धि का न फँसना ही स्वतंत्रता है स्वतंत्र व्यक्ति ही तत्त्वतः सुखी होता है, निर्विकल्प आत्मा का अनुभव ही तुम्हारा कष्ट हरेगा।

५००. धर्म में अनुराग हुए बिना धर्मात्मा की सेवा नहीं हो सकती व धर्म में दृष्टि हुए बिना संसार से पार होने का पात्र नहीं हो सकता है।

५०१. जिन पदार्थों के देखने से राग-द्वेष बढ़े उनका देखना और सुनना भी अपशकुन है।

५०२. जिन पदार्थों के देखने-सुनने से राग-द्वेष मोह में शैथिल्य हो उनका देखना-सुनना शुभ शकुन है।

५०३. पर पदार्थ में ममत्व रखने के कारण अनन्त काल से दुःख भोगा है, पर पदार्थ अपना होता नहीं है, फिर ममत्व क्यों करना ?

५०४. जब-तक राग रहेगा चाहे वह धार्मिक संस्था का भी क्यों न हो, निर्भय और निःशल्य नहीं रह सकोगे, निर्मलता ही अलौकिक वैभव है और वही सहायक है।

५०५. आशा व तृष्णा का स्वभाव ही आकुलता उत्पन्न करना है चाहे वह धार्मिक कार्य की ही क्यों न हो अतः प्रत्येक कार्य के ज्ञाता-दृष्टा बने रहो।

५०६. कोई भी घटना होने पर ''ऐसा तो होना ही था, अनहोनी तो नहीं हुई है फिर उस सम्बन्ध में कुछ भी विकल्प करना व्यर्थ है एवं आगामी दुःख के लिए नया बंध बांधना है।''

५०७. अनासक्ति की परीक्षा इष्ट अनिष्ट द्रव्य के लाभ होने में होती है।

५०८. निःस्वार्थ भाव ही अमृत है और निःस्वार्थ भाव से कार्य करना ही अमृतपान है।

५०९. दुःख में दुःखी, सुख में सुखी रहने वाला पुरुष अधम है, दुःख में भी सुखी रहने वाला मध्यम पुरुष है, दुःख सुख में समान रहने वाला उत्तम पुरुष है और दुःख सुख की कल्पना से भी रहित है वह उत्तमोत्तम है।

५१०. इच्छा करना अपनी आत्मा को दुःखी करना है। जिसकी इच्छा की जाती है उसका परिणमन उसके होनहार से होता है इच्छा से अपना बिगाड़ करने के अलावा और कुछ नहीं होता। कदाचित् इच्छा के अनुकूल उसी की होनहार से कुछ हो भी जावे तो भी राग रूपी कीचड़ लपेट देने के सिवाय आत्मा को और क्या मिल जाता है?

५११. जगत् में केवल रोने वाले ही पापी नहीं है किन्तु हँसने वाले भी पापी समझिए क्योंकि

जैसे उनके अरति शोक मोहनीय पाप का उदय है, इनके भी हास्य, रति, मोहनीय पाप का उदय है, पुण्यात्मा तो वे हैं, जिनकी रुचि परमात्मा या निज शुद्धात्मा में है।

५१२. सत्पुरुष वही है जो संसार शरीर और भोगों से विरक्त है।

५१३. शास्त्र सभा में जो शब्द निकलते हैं, वैसे शब्द यदि एकान्त में अपने लिए निकल जायें तब तो ज्ञानी है अन्यथा ग्रामोफोन है।

५१४. आत्मन्! तुम्हें तो प्रत्येक पदार्थ या अवस्था के गुण ग्रहण करने की ही आदत डालनी चाहिए।

५१५. अपने लक्ष्य में ज्ञायक स्वरूप बना रहना एक किला है, यदि तुझ पर विपदा रूप शत्रु आक्रमण करे, तब अपने उपयोग को उस किला में गुप्त कर दे, फिर तू अजेय है।

५१६. किसी भी कार्य को तन-मन-धन और सर्वस्व लगाकर भी किया हो तब भी वह पर है, उसे छोड़ना ही होगा, आत्म स्वरूप में उपयोग रमाये बिना असन्तोष नष्ट न होगा अतः जो मार्ग जान चुके हो, उस पर प्रवृत्ति करने में विलम्ब मत करो।

५१७. हे आत्मन्! तूने अनन्त भव बिता दिये, जिनमें विविध भोग भोगे, अब यह भव बिना भोग के ही सही, फिर बिना अहंकार ममकार का ही सही फिर तू अनन्तकाल सुख भोगेगा, दुःख की छाया भी न रहेगी।

५१८. पत्थर पर कितनी टाँकियों की चोट लगती है, यदि टाँकियों की चोट सहले तो पूज्य मूर्ति बन जाती है यदि टाँकी की चोट न सह सके और भग्न हो जावे तो वह पत्थर भी किसी काम का नहीं रहता इसी प्रकार नाना विपदाओं का सहन हो जावे तो आत्मा महात्मा बन जाता है, यदि न सह सके तो संसारी बन जाता है।

५१९. विचार के अनुकूल वस्तु स्वरूप बनाने में अशान्ति है और वस्तु स्वरूप के अनुकूल विचार बनाने में शान्ति है।

५२०. जहाँ तक शरण का प्रश्न है, तेरे क्षमादि परिणामों को छोड़कर अन्य कुछ भी जगत् में शरण नहीं है।

५२१. हाथ से छूटे उसका नाम त्याग है और हृदय से छूटे उसका नाम वैराग्य है। संसारी तन धन को, संन्यासी मन-जीवन को संभालता है।

५२२. जिन माता-पिता ने पाला वे ही छोड़कर चले जाते तब दूसरा कौन साथ देगा, मृत्यु तो 'रिटर्न' टिकट है।

७. ईर्ष्या नहीं, ईश्वर चाहिए

५२३. ईर्ष्या का दुःख प्रायः निष्फल ही जाता है अधिकतर तो जिस बात की ईर्ष्या होती है, वह ऐसी बात होगी जिस पर हमारा वश नहीं होता है।

५२४. ईर्ष्या और क्रोध जीवन को छोटा कर देते हैं।
५२५. जितना सौ दीक्षा देने में पुण्य मिलता है उतना एक समाधि कराने में पुण्य मिलता है।
५२६. भवसागर पार करने के लिए शुद्धभाव रखने से श्रेष्ठ कोई नौका नहीं है।
५२७. दुनिया में वस्त्र रहितों की संख्या तो बहुत है किन्तु वासना रहितों की संख्या कम है।
५२८. यदि आपके निमित्त से हिंसा हो रही है तो आप भी हिंसक हैं।
५२९. भीड़ का भी आनंद होता है, लेकिन भीड़ से करोड़ गुना आनंद एकान्त में मिलता है।
५३०. ज्ञान से बड़ा आनंद संसार में अन्य कोई नहीं है। ''खुशी पर से मिलती है, आनंद निज से प्राप्त होता है।''
५३१. योगी के एक क्षण का आनंद भोगी को जीवन भर में नहीं मिल पाता है।
५३२. दूसरों के रूपों को देखने के कारण आज तक हमारी आत्मा रूपातीत न हो पायी है।
५३३. सबको अपना बनाने की चाह शव बना देती है, सब कुछ छोड़ने की चाह शिव बना देती है।
५३४. इन्द्रिय विषयों की अभिलाषा आभ्यन्तर परिग्रह है।
५३५. शरीर से भोगों के त्यागी और भावों से भोगों के रागी का शुभ उपयोग नहीं हो सकता है।
५३६. भगवान् भवातीत बनने का उपदेश तो दे सकते हैं, भवातीत बना नहीं सकते हैं, बनना स्वयं को पड़ेगा।
५३७. योग और उपयोग के निर्मल रहने पर ही कल्याण संभव होता है।
५३८. भगवान् से न डरो तो चलेगा लेकिन कर्मों से जरूर डरो क्योंकि किए हुए कर्मों का फल तो भगवान् को भी भोगना पड़ता है।
५३९. संक्लेशता की हानि होने पर असाता कर्म साता रूप संक्रमित हो जाता है।
५४०. कषाय परिणाम जहर है जो एक क्षण में सभी जप तप को नष्ट कर देता है।
५४१. कष्टों में कर्त्तव्यों को भूलने वाला बहिरात्मा है। छिपे कर्त्तव्य में ही मजा है।
५४२. आप सबसे लड़-झगड़ तो सकते हो किन्तु कषायों में अकेले ही जलना पड़ेगा।
५४३. प्रत्येक कषाय का काल ४८ मिनट होता है। अगर आप अन्तर्मुहूर्त बच गये तो विकार अपने आप शान्त हो जायेंगे।
५४४. जैसे-जैसे मोह घटता है और योग निर्मल होता है वैसे-वैसे गुणस्थान बढ़ता है और जैसे-जैसे मोह बढ़ता है वा योग चंचल होता है तो गुणस्थान गिरता है।
५४५. गुणस्थान उपवास, जाप से नहीं बढ़ते निर्मल परिणामों से बढ़ते हैं।
५४६. आप तभी तक श्रेष्ठ हो, तभी तक ज्येष्ठ हो, जब तक आपके मन में कुछ लेने की इच्छा नहीं हुई, इच्छा होते ही मन नीचे चला जाता है और मन के नीचे जाते ही चारित्र

(आध्यात्मिक स्तर) नीचे चला जाता है।

५४७. जीवन को नियम के अधीन कर देना आलस्य पर विजय पाना है।

५४८. संसार की असारता ही संसार में सदा ध्यान करने योग्य है।

५४९. संयम की विराधना से बचना ही आत्म प्रभावना है एवं श्रावक की टूटी आस्था को धर्म से जोड़ना धर्म की प्रभावना है।

५५०. परिणामों की विशुद्धि केवल मंत्र जाप से नहीं, स्वाध्याय से भी होती है।

५५१. आपके जैसे भाव होते हैं देह का परिणमन वैसा होना प्रारम्भ हो जाता है।

५५२. भगवान् को मन्दिर में सुमन न चढ़ाओ तो चलेगा पर अपने सु-मन को भगवान् की भक्ति में नहीं लगाओगे तो नहीं चलेगा। अरे भाई! जब कुरूप, निर्धन, अपंग को राज कन्या वरमाला नहीं डालती तो फिर कुरूप मन अर्थात् अशुद्ध मन वाले को मुक्ति लक्ष्मी कैसे वरमाला डालेगी।

५५३. मुझे ईर्ष्या नहीं, ईश्वर चाहिए, मैं प्रसिद्धि के लिए विशुद्धि नहीं खोना चाहता हूँ, मैं शल्य में नहीं वात्सल्य में जीना चाहता हूँ, मैं हर काम में आऊँ जरूरी नहीं, मैं हर एक के काम आऊँ ऐसी मेरी भावना है, मैं जीत कर हारना नहीं, हारकर भी जीतना चाहता हूँ अर्थात् हारकर भी दूसरों का दिल जीतना चाहता हूँ।

५५४. धर्म के बल से मनुष्य, देव, विद्याधर और धरणेन्द्र के सुख प्राप्त होते हैं, इस लोक, पर लोक में चन्द्रमा के समान यश तथा पूजा, सम्मान आदि प्रतिदिन प्राप्त होते हैं। पाप के द्वारा दुर्गति सम्बन्धी दुःख नरकगति तथा असहनीय निन्दा और अपयश प्राप्त होते हैं इसलिए हे भाई! जो इष्ट हो वही करो।

५५५. सम्यग्दृष्टि जीव तीनों लोकों में कही भी हो पूज्य ही होता है, पर सम्यग्दर्शन के बिना साधु भी पद-पद पर निन्दनीय होता है।

५५६. अज्ञानी कर्मों से बंधता है और ज्ञानी कर्मों से छूटता है।

५५७. जिसने वैराग्य रूपी तलवार के द्वारा इन्द्रियरूपी चोरों को नष्ट कर दिया उसको स्वर्ग मोक्ष अवश्य प्राप्त होता है। वैराग्य के बिना शरीर को दण्डित करना व्यर्थ है। जब चित्रादि में निर्मित स्त्री मन में क्षोभ उत्पन्न करती है तब स्त्री के संसर्ग और वार्तालाप में मन एकाग्र कैसे रह सकता है?

५५८. जो एकाग्रता से सदा वीतरागता की उपासना करता है वह संसार के सभी सुखों को भोगकर उन्हीं के समान हो जाता है।

५५९. न किसी के अभाव में जियो न किसी के प्रभाव में जियो ये जिन्दगी है आपकी, अपने स्वभाव में जियो।

५६०. जलना नहीं तपना सीखो, जलने वाला राख और तपने वाला परमात्मा बन जाता है।

५६१. वैभव से ज्यादा पुण्य निर्मल सोच के लिए चाहिए।

५६२. तीर्थ मंगल, क्षेत्र मंगल, काल मंगल में भी प्रबल भाव मंगल होता है।

५६३. करोड़ों स्वर्ण मुद्राएँ इतनी कीमती नहीं जितनी कीमती एकक्षण की भाव विशुद्धि है, साधना से ज्यादा शक्ति भोगों में लगती है, साधना से शक्ति तो क्रमशः बढ़ती है किन्तु भोगों से शक्ति क्रमशः घटती जाती है।

५६४. संसार में सभी प्राणियों को संयोग-वियोग, लाभ-अलाभ, सुख-दुःख तथा मान-अपमान नियम से प्राप्त होते ही हैं।

५६५. जब मेरा भव ही शाश्वत नहीं तो वैभव कैसे शाश्वत होगा ?

५६६. धर्मात्मा श्री को श्रीमति में नहीं श्री जी में लगाता है।

५६७. जगत् के सारे वास छोड़े बिना सिद्धों में वास नहीं हो सकता है। धर्म संत भेष में नहीं संत स्वभाव में होता है।

५६८. प्रतिष्ठा की आकांक्षा ही साधना से पतन कराती है।

५६९. साधु की सच्ची साधना ही सिद्ध भगवान् बनाती है।

५७०. संसार में कर्म बंधन का मूल कारण स्त्री है मोक्ष का कारण स्त्री त्याग है।

५७१. सच्चा सुख स्त्री आदि से नहिं संतोष से मिलता है।

५७२. तपस्या और विद्या अन्तःकरण की पवित्रता बिना व्यर्थ है।

५७३. अध्यात्म शास्त्र यानि गूढ़ विद्या, रहस्यमयी ज्ञान, आत्म बोध, भेदविज्ञान वह है जिसके सुनते ही भाव बदल जाये, आचरण में आते ही रहन-सहन बदल जाये।

५७४. दूसरों के लिए हम उपादान नहीं बन सकते लेकिन निमित्त बन सकते हैं, अतः अच्छे काम में निमित्त अवश्य बने क्योंकि निमित्त के बिना काम नहीं होता है।

५७५. जो मनुष्य अपने साथी से घृणा करता है, वह उसी मनुष्य के समान हत्यारा है जिसने सचमुच हत्या की है।

५७६. आगे वालों से जलिए मत और पीछे वालों पर हँसिए मत।

५७७. आज दुनिया का हर आदमी इसलिए दुःखी हैं कि उसका पड़ोसी क्यों सुखी है?

५७८. ईर्ष्या करने वाले, घृणा करने वाले, असंतोषी, क्रोधी, सदा शंकित रहने वाले और दूसरों के भाग्य पर निर्वाह करने वाले सदा दुःखी ही रहते हैं।

५७९. किसी के भी गुणों में दोष ढूँढ़ना, ईर्ष्या, निन्दा करना नरक गति की तैयारी करना है।

५८०. ईर्ष्या करके मनुष्य उसका तो कुछ बिगाड़ नहीं सकता, पर अपनी निद्रा, सुख, पुण्य, सन्तोष अवश्य खो देता है। ''स्वयं को उपदेश देने वाला उन्नति करता है।''

५८१. दुष्टा ईर्ष्या दरिद्रतारूपी दानवी को बुलाती है और मनुष्य को नरक के द्वार तक ले जाती है।

५८२. ईर्ष्या असफलता का दूसरा नाम है, ईर्ष्या से अपना ही महत्त्व कम होता है।

५८३. ईर्ष्या करने वाले का सबसे बड़ा शत्रु उसकी ईर्ष्या ही है।

५८४. हत्यारे की कुल्हाड़ी की तुलना में ईर्ष्या की धार दो गुनी तेज होती है।

५८५. जैसे जंग लगने से लोहा खराब हो जाता है, वैसे ही ईर्ष्या से मनुष्य नष्ट हो जाता है।

५८६. ईर्ष्या जीत लो तो राग स्वयं दिशाओं में भाग जाता है।

५८७. जितना आप पाप करके कर्मों का बंधन नहीं करते उतना कर्त्ता पने से बंध करते हैं।

५८८. माध्यस्थ भाव कषायों से बचने के लिए होता है।

५८९. अपनी प्रशंसा करना, पूज्य पुरुषों में दोष निकालने का स्वभाव होना, बहुत काल तक वैर धारण करना ये तीव्र कषायी जीव के चिह्न हैं।

५९०. अपना हित चाहते हो तो कषाय भाव से निज की रक्षा करो।

५९१. विषय कषाय की ज्वाला आत्मा को दग्ध करती है, अन्दर ही अन्दर झुलसाती है, बाहर धुँआ भी दिखाई नहीं देता है।

५९२. शत्रु के भी गुणों को ग्रहण करना चाहिए और गुरु के भी दुर्गुणों का त्याग करना चाहिए।

५९३. अवगुण नाव के छिद्र के समान हैं जो नाव को ले डूबते हैं।

५९४. ग्यारहवें गुणस्थान से चौथे गुणस्थान में आना सम्यक्त्व का नहीं चारित्र का दोष है।

५९५. ज्ञान एंटीना के समान है चारित्र टेलीविजन के समान है एंटीना तरंगें पकड़ता है, टेलीविजन चित्र दिखाता है। ऐसे ही जिनवाणी की तरंगों को पकड़ना ज्ञान का विषय है, परन्तु जिनवाणी में प्रसारित वर्गणाओं का दृश्य चारित्र ही प्रकट करता है

५९६. ज्ञान से सम्मान मिलता है, सेवा से प्रशंसा प्राप्त होती है, चारित्र से पूज्यता प्राप्त होती है।

५९७. मन का भ्रमण ही जीव के भव भ्रमण का कारण है, मन की निर्मलता श्रेष्ठतम तीर्थ है।

५९८. मन, स्वाध्याय से एकाग्र होता है और चिन्ता छोड़ने से प्रसन्न होता है।

५९९. स्वयं का कल्याण, देव, शास्त्र, गुरु के आश्रित नहीं अपितु मन की पवित्रता के आश्रित है।

६००. मन की एकाग्रता के अभाव में दृष्टि विषय-कषाय पर जाती है।

६०१. जिसका मन शान्त होगा उसे ही सुख शान्ति की प्राप्ति होगी।

६०२. चिन्तन धारा के अभाव में कल्याण की प्राप्ति असंभव है।

६०३. आत्मा का चिंतन करने से क्षुधा, मात्सर्य, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, भय और निद्रा आदि का नाश होता है। ज्ञानी हमेशा गुणग्राही होता है।

६०४. जो ज्ञानी जीव है वह विषयों का संग होने पर भी उनसे लिप्त नहीं होता, जैसे मल के मध्य में पड़ा सोना मल से लिप्त नहीं होता है।

६०५. जीव की सहन शक्ति और उत्साह शक्ति ही उसे महान् बनाती है।

६०६. इस जीव ने अचेतन से सुख प्राप्त करने के भ्रम में अनन्त जन्म धारण किए हैं।

६०७. जीवन के अंतिम क्षणों में भी जो अपनी शान्ति और स्वतंत्रता को नष्ट नहीं होने देते वो ही मोक्ष के अधिकारी हैं।

६०८. सुखमय जीवन जीने के लिए हर परिस्थिति में रहना सीखो।

६०९. जीना हमारा अधिकार है और दूसरों को जीने देना हमारा कर्त्तव्य है।

६१०. आपको पाप से डर नहीं लगता और पापी कहलाने से डर लगता है, जो पाप से डरते हैं वे मुमुक्षु होते हैं, जो पापी कहलाने से डरते हैं वे मायावी दीर्घ संसारी होते हैं

६११. शक्ति से कम या ज्यादा तप दोनों ही आत्म कल्याण से च्युत करा सकते हैं।

६१२. कठिनता से प्राप्त धर्म को पाकर विषय सुख में रंजित होना, भस्म के लिए चंदन को जलाने जैसा है। विषयों से विरक्त होने पर भी तप भावना, धर्म भावना, समाधि भावना अति दुर्लभ है। जिसको सहना आ गया उसको रहना आ गया।

६१३. प्राणायाम से शरीर की और ध्यान से आत्मा की शक्ति बढ़ती है।

६१४. धर्म कोई वाशिंग पाउडर नहीं, जिसे पहले इस्तेमाल करो फिर विश्वास करो। धर्म तो जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी जीवन बीमा कम्पनी की तरह लाभदायक ही है।

६१५. जब से अग्नि, अम्बर हैं तब से धर्म दिगम्बर है और जब तक अग्नि अम्बर हैं। तब तक धर्म दिगम्बर है। अकषाय भाव का नाम धर्म है।

६१६. व्यवहार दृष्टि कैमरे जैसी एवं निश्चय दृष्टि एक्स-रे जैसी होती है।

६१७. यदि किसी को अपना बनाना चाहते हो तो उसका नाम लो, नाम सभी को प्रिय होता। जितने भी भूतल पर सो गये, सोयेंगे वे सब नाम के राग में निज को खो गये। बाहर की ख्याति अन्दर से खाली कर देती है।

६१८. पर की निंदा करने वाला और स्वयं की निंदा नहीं करने वाला मिथ्यादृष्टि होता है।

६१९. जो चारित्र को धारणकर परीषह के भय से छोड़ देते हैं वे कायर पुरुष हैं।

६२०. जिसका यशःकीर्ति नाम कर्म का उदय होता है, उसके नाम को रोकने वाला कोई नहीं है। नव नारायण नव बलभद्र में सिर्फ राम-लक्ष्मण, कृष्ण बलराम का ही नाम प्रसिद्ध है। १२ चक्रवर्तियों में भरत ही प्रसिद्ध हुए, ११ रुद्रों में सिर्फ शिव ही प्रसिद्ध हुए बाकी क्यों नहीं? प्रशंसा मुक्ति नहीं बंधन है।

६२१. असाधु को साधु बनाने का भाव ही प्रभावना है।

६२२. जिसकी होनहार खराब होती है वह गुरु के सामने अपने दोषों की आलोचना नहीं करता है। शुद्ध प्रेम सब थकान दूर करता है।

६२३. पर्याय को दोष मत दो अपने परिणामों को दोष दो, पर्याय तो मटके के समान है उसमें अमृत भरो या जहर विवेक आपका है।

६२४. स्वयं की बुद्धि सुखकारी, गुरु की बुद्धि विशेष, पर की बुद्धि विनाश कारी और स्त्री बुद्धि प्रपंचकारी होती है अतः अपने ज्ञानी शुभ चिन्तकों की सलाह से काम करें।

६२५. मुनिराज परिग्रह में नहीं निज गृह में विचरण करते हैं। नारी सबसे बड़ा परिग्रह है।

६२६. जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा, जो होगा अच्छा होगा, तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा कर दिया, जो नष्ट हो गया? तुमने जो लिया यही से लिया, तुमने जो दिया यही पर दिया; जो आज तुम्हारा है, वह ''कल किसी और का था, कल किसी और का होगा, परिवर्तन संसार का नियम है'' तुम इसे अपना मान रहे हो, बस यही तुम्हारे दुःख का कारण है।

६२७. जो परिणामों की विशुद्धि का घात कर रहा है उससे बड़ा शत्रु संसार में कोई नहीं है।

६२८. पानी के छानने की तरह यदि अपने परिणामों को भी छान लें अर्थात् बुरे परिणाम छोड़ अच्छे परिणाम ग्रहण करें तो कल्याण निश्चित है।

६२९. अज्ञान से किए पाप सम्यग्ज्ञान से नष्ट हो जाते हैं, पर ज्ञानी बनकर किए पाप वज्रलेप के समान होते हैं। सातिशय (पुण्यानुबंधी) पुण्य वही जो पुण्य का बंध कराये।

६३०. सभी को पापों का ज्ञान होता है पर पापों से बचने का ज्ञान सबको नहीं होता है।

६३१. पुण्य के अभाव में असंयम का आगमन शीघ्रता से होता है।

६३२. यदि पुण्योदय न हो तो शान्त भाव से समय व्यतीत करें।

६३३. धर्म पुरुषार्थ से कर्म भी कमजोर हो जाते हैं।

६३४. बुराई मन को खुशी देती है परन्तु आत्मा को दुःख देती है किन्तु अच्छाई मन और आत्मा दोनों को सुख देती है।

६३५. भव्य जीव पल-पल अपने विशुद्ध भावों की रक्षा करता है।

६३६. जैसे पिंजड़े का तोता पिंजड़े से मुक्त होना चाहता है, निकट भव्य शरीर से मुक्त होना चाहता है।

६३७. निकट भव्य जीव को पाप का जो पश्चाताप से शोक होता है वह शोक किसी को नहीं होता है।

६३८. भाषा और भाव की निर्मलता ही भव से पार करायेगी।

६३९. प्रेम मन से, विश्वास बुद्धि से परन्तु श्रद्धा आत्मा से उत्पन्न होती है।

६४०. भगवान् आपको भगवान् नहीं बनाएँगे, आपको अपने भाव ही भगवान् बनायेंगे।

६४१. साधक को संकट में या अंतिम दिन नहीं प्रतिपल भगवान् दिखते हैं।

६४२. देवाधिदेव के भक्तों की देव रक्षा अवश्य करते हैं।

६४३. जो भाग्य में है वह भागकर ही आएगा, जो भाग्य में नहीं वह आकर भी भाग जाएगा।

६४४. बड़ा बनने का अवसर छोटे ने दिया उसकी उपेक्षा क्यों ? अर्थात् छोटे के कारण आप बड़े हैं अत: उसका ध्यान रखें।

६४५. विसंवाद से बचने के लिए एकत्व आवश्यक है।

६४६. लोकोत्तर आचार छोड़ जो लोकाचार को अपनाता है उसका निर्जरा का कारण संयम नष्ट हो जाता है।

६४७. व्यक्ति की महानता अहं से नहीं, विनय से प्रकट होती है।

६४८. जितनी तीव्रता से पापास्रव किया है उतनी ही विशुद्धि से निर्जरा भी करनी पड़ेगी।

६४९. साम्यभाव और नि:शल्य भाव के बिना समाधि संभव नहीं है।

६५०. गुरु आज्ञा न मानने वाले की कभी समाधि संभव नहीं हैं।

६५१. टकराव टालिए क्योंकि टकराव ही बिखराव का कारण है।

६५२. ईर्ष्या की आग को बुझा दीजिए नहीं तो यह आपको जलाकर राख कर देगी।

६५३. वैय्यावृत्ति से आत्मबल, साधना, अनुभव, ज्ञान आदि की वृद्धि होती है।

६५४. निजदेव से मिलने के लिए जिनदेव से मिलना अनिवार्य है।

६५५. कलिकाल में मन को वश में करने का उपाय शास्त्र का अध्ययन ही है।

६५६. शरीर का रोग तो सिर्फ वर्तमान की पर्याय को नष्ट कर सकता है किन्तु भोगों का रोग भव-भव की पर्यायों को नष्ट कर देता है।

६५७. जिसका मन सदा शुद्धज्ञान में रमा रहता है अन्य किसी कार्य में जिसकी कोई प्रवृत्ति नहीं होती है उसके भोग आसक्ति के अभाव में संसारवर्धक नहीं होते हैं।

६५८. विद्या सभी का भूषण है।

६५९. ज्ञानांकुश से मन रूपी हाथी को वश में किया जाता है।

६६०. जो प्रतिदिन जिनालय जाता है वह एक दिन सिद्धालय अवश्य पहुँच जाता है।

६६१. मनुष्य गति में मरने या जीने नहीं आये अपितु जन्ममरण मिटाने आये हैं।

६६२. स्त्रियाँ सिर्फ ईर्ष्या से दु:खी होती हैं।

६६३. घृणा से घृणा को नष्ट नहीं किया जा सकता है, घृणा को दूर करने के लिए स्नेह की आवश्यकता होती है।

६६४. प्रेम कहता है आगे बढ़ो, प्रतिस्पर्धा कहती है मेरे पीछे रहो।

६६५. घृणा व द्वेष से ग्रसित व्यक्ति दूसरों को सुख नहीं पहुँचा सकता है।

६६६. ईर्ष्या अपनी हीनता के बोध से जन्म लेती है और ईर्ष्या उस हीनता को दूर नहीं करती सिर्फ दबाती है। ईर्ष्या रखने वाले मनुष्य को इतना दु:ख अपनी असफलता पर नहीं होता जितना दु:ख दूसरे की सफलता देखकर होता है।

६६७. जिस आदमी के भीतर घृणा है उसके लिए सारा जगत् शत्रु हो जाता है और जिसके अंदर प्रेम है उसके लिए सारा जगत् मित्र हो जाता है।

८. चारित्र-ज्ञान-श्रद्धान, ये ही मोक्ष प्रधान

६६८. वाद-विवाद न करना श्रेष्ठ पुरुषों का लक्षण है।

६६९. मन की पवित्रता से चारित्र में पवित्रता आती है। चरित्रवान के साथ दुनिया होती है। अपरिग्रही अनगार को जो आनंद होता वह अहमिन्द्र को भी नहीं होता है, चक्रवर्ती को उसके अनंतवें भाग भी नहीं होता है।

६७०. मानस की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं चारित्र है क्योंकि यही सबसे बड़ा रक्षक है, चारित्र के बिना व्यक्तित्व खोखला है।

६७१. श्रावक अभिषेक के समय प्रभु के और आहार दान के समय गुरु के अति निकट होता है, तब दो बांसों के घर्षण के समान भक्ति व चारित्र की ज्योति प्रकट होती है।

६७२. चारित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है। छोटे-छोटे प्रलोभनों का आकर्षण चारित्र को गिरा देता है।

६७३. चारित्र की तलवार के साथ वैराग्य की ढाल होना परमावश्यक है।

६७४. जिसका चारित्र शुद्ध है, उसकी समाधि भी श्रेष्ठ होगी।

६७५. वैराग्य के बिना चारित्र विधवा स्त्री के श्रृंगार के समान है।

६७६. गुप्ति, समिति, परीषहजय, चारित्र की रक्षा करने वाली बारह भावनाएँ हैं।

६७७. यदि धन नष्ट हुआ तो कुछ नहीं हुआ, यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ, यदि चारित्र नष्ट हुआ तो सब कुछ नष्ट हुआ अतः चारित्र अच्छी तरह रक्षणीय है।

६७८. अध्ययन करना-सुनना, चारित्र पालन करने वाले का ही सार्थक है।

६७९. खराब चित्र देखने से चित्त खराब होता है और चित्त खराब होने से चरित्र खराब हो जाता है। जैसे दिखते हो या दिखाना चाहते हो वैसे बनो।

६८०. जो हितकारी तप, दान, धर्म तथा चारित्र आदि को प्रेरणा देकर कराते हैं, वे श्रेष्ठ हैं।

६८१. मायाचारी से कार्य सिद्धि नहीं होती, पुण्य से होती है।

६८२. ज्ञान या चारित्र की कमी से मोक्षमार्ग नहीं छूटता श्रद्धा की कमी से नियम से मोक्ष मार्ग छूटता है। मौन से ज्ञान बढ़ता है।

६८३. जब परमात्मा का राग परमात्मा नहीं बनने देता तब पाप का राग परमात्मा कैसे बनने देगा? एक लाख शिखर बंद जिन मंदिर की सुरक्षा करना सरल है, परन्तु एक क्षण के विशुद्ध परिणामों की सुरक्षा करना कठिन है।

६८४. वैराग्य योगी को नहीं, भोगी को होता है, योगी वैराग्य को सुरक्षित रखते हैं और वैराग्य योगी को सुरक्षित रखता है।

६८५. मृत्यु के समय उसे ज्यादा कष्ट होता है, जिसने इन्द्रिय और कषायों को नहीं जीता है।

६८६. मुमुक्षु जीव ज्येष्ठ बनने की नहीं श्रेष्ठ बनने की भावना भाता है।

६८७. मोह में हम बुराइयाँ नहीं देख पाते और घृणा में हम अच्छाइयाँ नहीं देख पाते हैं।

६८८. यदि मेरे लिए रोये तो मैं मरता नहीं हूँ और शरीर के लिए रोये तो मैं इसे साथ लेकर जाऊँगा नहीं।

६८९. अपने छूट जाते हैं तो दूसरे अपने हो जाते हैं, अपना स्थाई कोई नहीं है।

६९०. मोक्षमार्ग व्यवस्थाओं का नहीं व्यवस्थित रहने का है, स्वच्छन्दता का नहीं है स्वतंत्रता का है, उदासी का नहीं उत्साह से साधना का मार्ग है।

६९१. ज्ञान के साथ श्रद्धान, आचरण के साथ विवेक मोक्षमार्ग बनाता है।

६९२. पाँच व्रतों को संयम माना है। शौच, तप, सन्तोष, स्वाध्याय और देव का स्मरण इन पाँच को नियम माना। करण आसन को कहते हैं, श्वासोच्छ्वास की स्थिरता प्राणायाम है तथा विषयों से इन्द्रियों की निवृत्ति करना प्रत्याहार है, संसार की असारता का चिंतन समाधि है और चिंतन में मन का लगना धारणा और मन का स्थिर हो जाना ध्यान है। ये ८ प्रकार का योग मुक्ति के लिए कारण है।

६९३. यदि मनुष्य यथा शक्ति धर्म कार्य को करते हुए भी उसमें सफलता न पा सके तो भी उसे उसका पुण्य अवश्य प्राप्त होता है।

६९४. तन और धन के राग में ही जीव का पुण्य क्षीण होता है।

६९५. जीवन में किसी से राग और किसी से द्वेष भी मत करना, माँ के तीव्र राग ने सुकौशल मुनि को व्याघ्री बनकर खाया था और भाभी के द्वेष ने स्यालिनी बनकर सुकुमाल मुनि को खाया था।

६९६. शक करके बर्बाद होने से अच्छा है, विश्वास करके लुट जाना।

६९७. जब पर्याय शाश्वत नहीं, परिणाम शाश्वत नहीं है तो फिर पर की पर्याय में राग क्यों ?

६९८. प्रथम आत्म पोषण का लक्ष्य होना चाहिए न कि शरीर पोषण का।

६९९. आगमज्ञान के अभाव में तत्त्वोपदेश नहीं करना चाहिए।

७००. व्रत का अर्थ है आत्म शोधन के निमित्त किए गये बुद्धि संगत उपायों को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना।

७०१. जिसके हृदय में सदा निर्मलता होती है, उसे व्रती कहते हैं।

७०२. जो नियम से नहीं बँधना चाहता, तो समझना कि वह नरक से बँध चुका है। कहता है रात्रि में नहीं खाते, पर नियम लेकर नहीं बँधेंगे।

७०३. दिगम्बर मुनि से भगवान् पारसनाथ के जीव ने हाथी की पर्याय में अणुव्रत धारण किए थे और महावीर के जीव ने शेर की पर्याय में मांस का त्याग किया था और आप उनके

भक्त मनुष्य पर्याय में भी व्रत नहीं लेते तो फिर कैसे कल्याण हो सकता है?

७०४. सिद्धालय में बैठने वाला मन व इन्द्रियों को वश में न करने के कारण संसार में भटक रहा है। वन्दनीय की वंदना किए बिना स्वयं वंदनीय नहीं हो सकते।

७०५. भावों से की गयी वंदना भव बंधन से मुक्त कराती है।

७०६. जिस जीव के वंदना में भाव नहीं लगते उसका भव भ्रमण अभी दीर्घ है।

७०७. वस्तु में न बंध है न मोक्ष है, लेकिन पर वस्तु बंध मोक्ष का कारण अवश्य है।

७०८. जुबान का वजन बहुत कम होता, लेकिन बहुत कम लोग सम्हाल पाते।

७०९. सबसे ज्यादा राग-द्वेष की वृद्धि वचनों से होती, आत्मा को चंचल करने का सबसे बड़ा हेतु वचन है।

७१०. सम्माननीय बनकर जीना चाहते हो तो वाणी संयम रखना आवश्यक है।

७११. जो निज में वास न करने दे उसका नाम है 'वासना'।

७१२. जैसे बहुत समय से दुर्गन्धित मल-मूत्र वाले घड़े से दुर्गन्ध नहीं छूटती, वैसे ही सम्यक्त्व रूपी जल से धोने पर भी ज्ञानामृत से पूर्ण होने पर भी अनादिकालीन दुर्वासना आसानी से नहीं छूटती है। जैसे खोटे बर्तन में खीर सुरक्षित नहीं रहती वैसे ही विषय-कषाय से खट्टी आत्मा में जिनवाणी नहीं रहती। विषयों में प्रवृत्ति भूल से नहीं राग से होती है।

७१३. जैसे वायु का चक्रवात अपने साथ रास्ते की सब चीजों को उड़ा ले जाता है, वैसे ही विषयों की वायु का चक्रवात पुण्य के भण्डार को अपने साथ उड़ाकर ले जाता है।

७१४. हलाहल विष तो एक पर्याय को नष्ट करता है परन्तु विषयों का विष अनंत पर्यायों को नष्ट करता है।

७१५. ज्ञान, संयम, तप तभी तक हैं जब-तक विषय विष का सेवन नहीं किया है।

७१६. मनुष्य का विकास धन से नहीं, धर्म से होता है।

७१७. चिन्ता प्रसन्न चेहरे को भी मलिन कर देती है।

७१८. जब भी अनावश्यक, अनुपयोगी एवं अवांछनीय विचार मन में आने लगें तभी समझ लेना कि भगवान् से सम्बन्ध विच्छेद होना प्रारम्भ हो गया है।

७१९. मन, वचन, काय की अशुद्धि में, विशुद्ध कार्य नहीं हो सकता है।

७२०. बाहरी पापाचरण के त्याग, विशुद्धि के परिणामों की निर्मलता के मुख्य कारण हैं।

७२१. परिणामों में जितनी विशुद्धि होती है उतना पुण्य होता है।

७२२. बिना ज्ञान के विशुद्धि नहीं आती और बिना विशुद्धि के चरित्र नहीं पलता है।

७२३. सम्पूर्ण साधना/आराधना आचरण का सार विशुद्धि की वृद्धि करना है।

७२४. वैराग्य का अर्थ परिवार या निमित्तों का नाश नहीं अपितु निज स्वभाव में दृष्टि का आना है।

७२५. पिच्छी को लेके चले थे, पर पीछे देखने के लिए नहीं आगे चलने के लिए।
७२६. यदि समर भूमि में सेनापति का भाषण नहीं होता, तो योद्धाओं की भुजायें नहीं फड़कती और समवसरण में प्रभु की देशना नहीं खिरती तो किसी को वैराग्य नहीं होता।
७२७. स्वयं पर अनुशासन करने वाला तीन लोक पर शासन करता है।
७२८. वैराग्य को अहंकार कहाँ, अहंकारी को वैराग्य कहाँ?
७२९. अपनी हंस दृष्टि रखो, काग दृष्टि नहीं। कौआ मोती में भी मल को देखता है परन्तु हंस पानी में भी क्षीर को देखता है, ऐसे ही भेद विज्ञानी पुरुष मल के पिण्ड में लिप्त होने पर भी भगवान् आत्मा को ही देखता है।
७३०. जब वैराग्य होता है तो एक लँगोटी भी भारभूत नजर आती है और रागी को चक्रवर्ती की विभूति में भी भार नहीं दिखता है।
७३१. संघ में स्वाध्याय गौण वैय्यावृत्ति प्रधान होती है क्योंकि वैय्यावृत्ति करने वाला उपगूहन, वात्सल्य, स्थितिकरण और निर्विचिकित्सा इन चार अंगों से मंडित होता है। यदि ये गुण नहीं है तो कोई वैय्यावृत्ति नहीं कर सकता, जो तीर्थंकर प्रकृति की सोलह कारण भावनाओं में से एक है।
७३२. दीपक में जब तक स्नेह/तेल रहता है तब तक उसे जलना पड़ता है और जब स्नेह/तेल समाप्त हो जाता है तब वह निर्वाण को प्राप्त हो जाता है–बुझ जाता है, इसी प्रकार संसारी जीव स्नेह–प्रीति के कारण दुःखी होता है और प्रीति त्यागकर निर्वाण–मोक्ष को प्राप्त होता है। स्नेह रहित को इष्टवियोग और अनिष्ट संयोग से उत्पन्न दुःख नहीं होता।
७३३. आपने घी खाया, दूध पिया फिर भी सिर के बाल सफेद हो गये, आप अपने बालों को झड़ने से नहीं रोक पाये, तो फिर दूसरों को अपनी इच्छा से कैसे परिणमन करा सकते हो? जब निज देह का परिणमन अपने वश में नहीं है तो फिर पर का परिवर्तन कैसे कर सकते हो? क्योंकि कण–कण स्वतंत्र है।
७३४. शब्दों की सीमा है पर स्वभाव की सीमा नहीं है।
७३५. जो रूप के पीछे स्वरूप को भूल जाता है वह लंकेश की तरह नरक जाता है।
७३६. राख होने से पहले राख होने वाले रूपों को देखना छोड़ दो। यदि रूपातीत होना है तो स्वरूप में लीन हो जाओ।
७३७. अगर आप को ३३ करोड़ देवी–देवताओं पर भरोसा है लेकिन स्वयं पर नहीं तो आपको मुक्ति नहीं मिल सकती है अतः स्वयं पर भरोसा रखें, अडिग रहें और मजबूत बनें।
७३८. जब आप स्वयं को नहीं बदल सकते, तो दूसरे को बदलने का प्रयास सार्थक नहीं होगा।
७३९. स्वाध्याय ही प्रगति का द्वार है।
७४०. दृष्टि में अनेकान्त, वाणी में स्याद्वाद और चर्या में अहिंसा यही जैन दर्शन का मूल

सिद्धान्त है।

७४१. सेहत सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

७४२. अनेकान्त की वैशाखी के सहारे व्यक्ति शान्ति की दिशा में प्रस्थान कर सकते हैं।

७४३. सर्वज्ञ के स्तवन मात्र से सब रोग, सब भय और समस्त दुःखों की परम्परा नष्ट हो जाती है इसमें संशय नहीं है।

७४४. जो देव-शास्त्र-गुरु का भक्त है और संसार-शरीर-भोगों से विरक्त है वह सम्यग्दृष्टि है।

७४५. सम्यग्दृष्टि प्रभु के पास भिखारी नहीं भक्त बनकर जाता है।

७४६. जैसे दरिद्री व्यक्ति स्वर्ण/रत्न को देखकर उठाने के लिए दौड़ता है वैसे ही सम्यग्दृष्टि साधु/रत्नत्रयधारी को देखकर दौड़ पड़ता है।

७४७. सम्यग्दृष्टि अन्याय, अभक्ष्य और अनीति से दूर रहता है।

७४८. सम्यग्दृष्टि क्रम-क्रम से सप्त परम स्थानों को प्राप्त करता है– १. सज्जाति, २.सद्गृहस्थता, ३. मुनियों के व्रत, ४. सुरेन्द्र पद, ५. राज्य पद, ६. अरहंत पद, ७. सिद्ध पद।

७४९. निःशंक हुए बिना निःसंग नहीं हुआ जा सकता है।

७५०. उपगूहन अंग जिसके पास नहीं वह सम्यग्दृष्टि तो दूर भद्र परिणामी मिथ्यादृष्टि भी नहीं है। साधक की निर्मल साधना ही सच्ची प्रभावना है।

७५१. असाता कर्म को साता में बदलने का एक मात्र उपाय वीतराग देव, शास्त्र, गुरु की शरण है।

७५२. जिससे तत्त्व का बोध हो, चित्त का निरोध हो, आत्मा का शोध हो, हित की प्राप्ति अहित का निषेध भी हो उसको जिनशासन में सम्यग्ज्ञान कहा है।

७५३. सम्मान पाने के लिए सम्मान देना जरूरी है।

७५४. जो तीन लोक के नाथ के सामने, गुरु के सामने 'सम्मान' करवाता है वह सम्माननीय नहीं हो सकता है। जिस जगह खड़े होकर निर्वस्त्र होने के भाव होने चाहिए थे, उस जगह शाल ओढ़ रहा है, जिस भूमि पर बैठकर माला फेरने के भाव होने चाहिए थे, वहाँ पर माला पहन रहा है इसका तात्पर्य अभी भव-भ्रमण की माला बाकी है। जिन्होंने मान और मालायें छोड़ी हैं, उनके चरणों में भवसागर तिरने आना था वहाँ सम्मान कराने लगे हैं। अरे जब तक भव (शरीर) का सम्मान चलता रहेगा तब तक भवातीत नहीं हो सकते हैं। कहते हो आज अष्टमी को हरी का त्याग है और उन्हीं पुष्पों की जिसमें करोड़ों कीड़े भरे हैं, उनकी माला पहन रहे हो, भले ही प्लास्टिक के फूलों की हो, ध्यान रखना जब पाषाण के परमात्मा की वंदना करने से निर्बन्ध हो सकते हो, तो फिर फूलों के नाम पर प्लास्टिक के फूलों की माला पहनने से कर्म बंध क्यों नहीं होगा? क्योंकि संकल्प तो पुष्प माला का ही किया है।

७५५. यदि आपने अपने अपमान के कारण धर्म छोड़ा तो भूल होगी क्योंकि अपमान द्रव्य का नहीं पर्याय का हुआ है अर्थात् आत्मा का नहीं शरीर का हुआ है।
७५६. छोटे-छोटे संकल्प ही आत्मशक्ति को बढ़ाते हैं। संकल्प सर्वश्रेष्ठ शक्ति है।
७५७. असत्य आत्मा को खा जाता है और सत्य आत्मा को पुष्ट करता है।
७५८. अशुभ से निवृत्ति शुभ में प्रवृत्ति का नाम संयम है।
७५९. वैराग्य और ज्ञान के अभाव में संयम निधि लुट जाती है।
७६०. जिसे संयम में आनंद आने लगता है, उसे सुलभ से सुलभ इन्द्रिय भोग रुचिकर नहीं लगते हैं।
७६१. संयम जीवन रूपी गाड़ी का ब्रेक है।
७६२. सबसे सरल संयम यह है कि दूसरों के बारे में अशुभ सोचना छोड़ दो।
७६३. संयम का अर्थ पराधीनता नहीं स्वयं का स्वयं पर अनुशासन है, जिसने स्वयं पर शासन नहीं किया वह दूसरे पर शासन कैसे कर सकता है, यदि करता है तो हँसी का पात्र होता है।
७६४. संयम से ज्ञान के क्षयोपशम में वृद्धि होती है।
७६५. जो विषमता के आने पर समता की छतरी ओढ़ लेता है वह कर्मों के जल से भीग नहीं पाता है।
७६६. समाधि की साधना जीवन भर चलती है।
७६७. समतापूर्वक देह का त्याग करना ही समाधि है। समाधि का सबसे बड़ा शत्रु राग है।
७६८. शरीर और कषाय को कृश करने का नाम समाधि है, यदि शरीर को सुखा डाला किन्तु कषाय नहीं सूखी तो समाधि नहीं होगी।
७६९. स्वाध्याय का फल संयम और संयम का फल समाधि है।
७७०. निन्दा, गर्हा, आलोचना किए बिना, प्रायश्चित्त लिए बिना समाधि मरण नहीं हो सकता क्योंकि अन्दर दोषों की शल्य बैठी है, परिणामों की शुद्धि के अभाव में समाधि होती ही नहीं है।
७७१. जो साधक रत्नत्रय की निर्मल आराधना करता है उसकी सम्यक् समाधि होती है।
७७२. सहजता संयम की सीढ़ी है और समाधि संयम का शिखर है।
७७३. सम्बन्ध से संकल्प-विकल्प होते हैं जिससे अनेक प्रकार के कर्मों का बंध होता है, जिससे संसार में परिभ्रमण होता है अतः सम्बन्ध बनाने से बचें।
७७४. सुख से जीना है तो अपने पुण्य के अनुसार आचरण करो, अन्यथा दुःख मिलना प्रारम्भ हो जायेगा। हीन भावना के कारण संक्लेशता बढ़ती है।
७७५. संसार के उच्छेद का कारण रत्नत्रय की आराधना ही है।

७७६. संसार कषायों को कृश करने से समाप्त होता है।

७७७. पंच परावर्तन से बचना है तो पंच परमेष्ठी को भजो पाँचों पापों को तजो।

७७८. संसार में सिर्फ दो को देखो जिनदेव को या फिर, निजदेव को।

७७९. संतोष रहित मनुष्य को चक्रवर्ती, नारायण और बलभद्र की विभूति से भी तृप्ति नहीं होती है। शान्ति से बढ़कर कोई तप नहीं, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं, लालच से बढ़ा कोई रोग नहीं और दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं हैं।

७८०. जिसके हाथों में जिनवाणी हो, पास में दिगम्बर गुरु हों और मन में जिनेन्द्र प्रभु हो तो उसके पास सब कुछ है ऐसा समझना चाहिए।

७८१. सद्भावना में शक्ति है, जो सोचता है कि मैं दूसरों के काम आ सकने के लिए कुछ करूँ, वही आत्मोन्नति का सच्चा पथिक है।

७८२. जो मन से संचालित नहीं अपितु अपने विचारों द्वारा मन को चलाता है, उसे 'मनीषी' एवं ऐसी प्रज्ञा को 'मनीषा' कहा जाता है।

७८३. आगम के अनुसार चल न पाना कमजोरी है पर बोल भी न पाना अच्छा नहीं है।

७८४. समर्पण का अर्थ पूर्णरूपेण प्रभु गुरु को हृदय से स्वीकार करना, उनकी इच्छा, प्रेरणाओं के प्रति सदैव जागृत रहना और जीवन के प्रत्येक क्षण में उसे परिणत करते रहना है।

७८५. दुनिया से मौन लेकर निज में चर्या करने का नाम सामायिक है।

७८६. साधक की दृष्टि प्रतिक्षण कषायों को घटाने की रहती है।

७८७. सहज भाव से जीने वाला साधु ही स्वानुभूति का सही अनुभव कर पाता है। जिस साधु को देह से भी राग नहीं होता उसे नाम का भी राग नहीं होता है।

७८८. जो साधु श्री और स्त्री को महत्त्व देता है उसकी साधना समाप्त हो जाती है और लोकापवाद भी होता है।

७८९. आत्मसिद्धि के लिए कम बोलो, कम देखो और कम सुनो।

७९०. अज्ञानी इच्छा की पूर्ति होने से सुख मानता है और ज्ञानी इच्छा के अभाव को सुख मानता है।

७९१. जब इन्द्रियों के भोग शान्त होने लगते हैं तब ज्ञान का सुख प्रारम्भ होता है।

७९२. जीवन का निर्वाह पिता या गुरु के नाम पर नहीं होता, स्वयं के पुण्य-पाप से होता है, कोई किसी को सुखी-दुःखी नहीं करता, अपितु स्वयं का पुण्य-पाप सुखी-दुःखी करता है।

७९३. अरहंत संसार पार नहीं लगाते, उनके प्रति आस्था पार लगाती है।

७९४. जब भी बुद्धि और श्रद्धा के बीच मतभेद होता है, तब श्रद्धा को महत्त्व देना चाहिए।

७९५. धर्म को समझने के लिए बुद्धि और आँखों की अपेक्षा श्रद्धा अधिक जरूरी है।

७९६. एकलव्य की आस्था थी तो पत्थर के गुरु से भी विद्या प्राप्त हो गयी थी।

७९७. दूसरे के घर से लाकर पत्नी को सब कुछ सौंप देते उसी प्रकार श्रद्धा रूपी पत्नी को सब कुछ देना पड़ेगा, तभी पूर्णानंद मिलेगा।

७९८. श्रद्धा अंक और ज्ञान चारित्र शून्य के समान हैं, अंक के बिना सारे शून्य बेकार है।

७९९. जो गृह में रहकर निमित्त-नैमित्तिक अनुष्ठान करता वही श्रावक कहलाता है।

८००. दूध की मीठी चम्मच बच्चे का मुख तो मीठा कर ही देती है दूध पियेगा तो पेट भरेगा, उसी प्रकार देशना के शब्द अन्दर गये तो कल्याण होगा ही बाहर रहे तो भी पुण्य बंध होगा ही एवं उतने समय पाप से बचेंगे।

८०१. जिनवाणी विराजमान करने वाली चौकी पर बैठने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है क्योंकि वह चौकी शास्त्र पीठ है, उसकी असादना जिनवाणी की असादना है।

८०२. शिष्ट शिक्षा ही शिष्य को विशिष्ट बनाती है।

८०३. जो आत्मा के स्वरूप की शुद्धि का घात करे उसका नाम अशुद्धि है।

८०४. भावशुद्धि के लिए भोजन शुद्धि अनिवार्य है।

८०५. द्रव्य शुद्धि के बिना भावशुद्धि नहीं होती, कषायों के अभाव में भावशुद्धि होती है।

८०६. दुनिया आपको तब तक नहीं हरा सकती जब तक आप स्वयं हार नहीं मान लेते।

८०७. वह 'सुख' है जहाँ दुःख नहीं है, वह 'गति' है जहाँ से पुनः न आना पड़े, वह 'ज्ञान' है जहाँ अज्ञान न हो, इसलिए हे भाई! तू शाश्वत पद की भावना कर।

८०८. धर्म धैर्य की अपेक्षा रखता है।

८०९. एक छेद भी जहाज को डुबा देता है और एक पाप भी पापी को नष्ट कर देता है।

८१०. जिसने अपने आप को जीत लिया वह अपने आपका बंधु है और जिसने अपने आपको नहीं जीता वह अपने आप का शत्रु है।

८११. दूसरों के लिए रत्तीभर काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिए रत्तीभर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह का बल आ जाता है।

८१२. मेरी शक्ति दस लोगों के बराबर है क्योंकि मेरा हृदय पवित्र है।

८१३. नीच मनुष्य इस लोक के लिए ही कार्यारम्भ करता है, मध्यम श्रेणी का मनुष्य परलोक में फल पाने के लिए और विशिष्ट धर्म वाला उत्तम श्रेणी का मनुष्य पुनर्जन्म से मुक्ति के लिए ही कार्य करता है।

८१४. संसार में जो केवल भगवान् का ही भजन करते हैं वे बलवान हैं और जो किसी के द्वारा उद्विग्न नहीं किए जाते वे सन्त हैं।

८१५. महासागर पत्थर फेंकने से चंचल नहीं होता है उसी प्रकार जो साधक खिन्न हो जाये वह अभी थोड़े पानी में है।

८१६. साधना का लक्ष्य है–एक ओर तो वासनाओं का नाश करना और दूसरी ओर सद्वृत्तियों का विकास करना–वासनाओं के नष्ट होते ही हृदय दिव्य भावों से परिपूर्ण हो जायेगा और हृदय में दिव्य भावों के प्रवेश करते ही समस्त दुर्बलतायें भाग जाएंगी।

८१७. अशुद्ध साधना का परिणाम अशुद्ध ही होता है।

८१८. संसार में दु:ख अनन्त है तथा सुख अत्यल्प है इसलिए दु:खों से घिरे सुखों पर दृष्टि नहीं लगानी चाहिए।

८१९. मौत को टाला नहीं जा सकता पर सुधारा अवश्य जा सकता है।

८२०. हँसते हुए जीना एक कला है, हँसाते हुए जीना और भी बड़ी कला है पर हँसते हुए मरना सबसे बड़ी कला है।

८२१. अपने हृदय में दया का अभाव हो तो अपने पूर्व कृत पुण्यों का फल भी प्राप्त नहीं होता है। तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ, पवित्र वस्तुओं में अति पवित्र वस्तु 'विशुद्ध हृदय' ही है।

८२२. जो बड़ी कठिनता से मिलता है, बिजली की चमक की तरह चंचल है, ऐसे 'मनुष्य जन्म' को पाकर जो धर्म साधना में प्रमाद करता है, वह सज्जन नहीं दुष्ट एवं दूर भव्य है।

८२३. उत्तम विचार और महान् चरित्र बल ही परम धन है।

८२४. जिस इन्द्रिय को संयमित करोगे उसमें ऋद्धि उत्पन्न हो जायेगी।

८२५. यदि पुत्र अच्छा हो तो सास-बहु क्यों लड़े ? यदि तवा भारी हो तो रोटी खराब क्यों हो? यदि सवार ठीक हो तो घोड़ा क्यों अड़े ? यदि नियत अच्छी हो तो व्यक्ति भूखा क्यों मरे?

८२६. यह दुर्भाग्य की बात है कि हम आत्मिक स्वतंत्रता खोकर सांसारिक सुखों को खरीदते हैं।

८२७. विद्वत्ता, विद्या और विद्वान् की कद्र विद्वान् ही करते हैं मूर्खों के बीच विद्वान् की दशा वैसी ही होती है जैसे अंधों के बीच किसी सुन्दरी की और नास्तिकों के बीच किसी धर्म ग्रन्थ की होती है। पुस्तकों के ज्ञान में तुम चतुर हो, फिर भी तुम्हें चाहिए कि तुम अनुभव जन्य ज्ञान प्राप्त करो और उसके अनुसार व्यवहार करो।

८२८. अनुरक्त व्यक्ति जिस चीज की प्रशंसा करता है विरक्त व्यक्ति उसी की निंदा करता है और मध्यस्थ व्यक्ति उस सम्बन्ध में उदासीन रहता है।

८२९. राग-द्वेष की हानि से ही सारे गुण प्रकट हो जाते हैं।

८३०. वस्तु के प्राप्त न होने पर लोगों का उसमें अनुराग होता है तथा प्राप्त हो जाने पर वैराग्य होता है।

८३१. हेमन्त ऋतु में आग की कामना होती तथा ग्रीष्म में पुन: हिम की आवश्यकता होती है।

८३२. दुर्बल मनुष्य, मुनि और विषधर सर्प इन तीनों की दृष्टि अत्यन्त दु:सह होती है, इसलिए तुम इन्हें असंतुष्ट नहीं करना।

८३३. वाक्शक्ति निःसन्देह एक बड़ा वरदान है क्योंकि वह अन्य वरदानों का अंश नहीं, अपितु स्वतंत्र वरदान है।

८३४. कहना मुश्किल है कि राम और कृष्ण में कौन उन्नीस है और कौन बीस है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि स्वयं बृज के चारों ओर की भूमि के लोग भी वहाँ एक दूसरे को जय राम जी से नमस्ते करते हैं।

८३५. धर्म का दान सारे दानों को जीत लेता है, धर्म रस सारे रसों को जीत लेता है, धर्म में प्रेम सब प्रेमों को जीत लेता है, तृष्णा का विनाश सारे दुःखों को जीत लेता है।

८३६. भयंकर युद्ध में हजारों दुर्जय शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा अपने मन को जीत लेना ही सबसे बड़ी विजय है।

८३७. संसार में रहो परन्तु संसार अर्थात् राग-द्वेष को अपने अंदर न रहने दो यही विवेक का लक्षण है। विवेक वीरता का श्रेष्ठतर भाग है।

८३८. मन को विश्राम देने का तरीका है मन के कार्य को बदलते रहना, सबसे अधिक विश्राम की सम्भावना निश्चल शांत वातावरण के अन्दर विद्यमान है।

८३९. वृद्धावस्था से पूर्व मुझे भली प्रकार जीवित रहने की चिन्ता थी, वृद्धावस्था में भली प्रकार मरने की चिंता है।

८४०. लक्ष्मी हिंडोले की तरह चंचल है। विषयों से उत्पन्न हुआ सुख अंततः दुःखप्रद है। देह विपत्ति का घर है। अत्यधिक धन मृत्यु का प्रचुर साधन है। संसार अत्यधिक शोकपूर्ण है। स्त्रियाँ अनर्थ की जड़ हैं। फिर भी लोग इस घोर संसार में ही रत रहते हैं। आत्मा में रत नहीं होते यह आश्चर्य है।

८४१. भोग में रोग का भय है, कुल आचार में भ्रष्टता का भय है, धन में राजा का भय है, अभिमान में दीनता का भय है, सामर्थ्य में शत्रु का भय है, सौन्दर्य में वृद्धावस्था का भय है, शास्त्रज्ञान में तर्कशील विवादी का भय है, गुण में दुष्ट का भय है और शरीर में मौत का भय है, इस संसार में सभी वस्तुएँ भययुक्त हैं, वैराग्य ही अभय है।

८४२. व्यसन तो बहुत प्रकार के होते हैं परन्तु विद्याभ्यास और भगवत् सेवा ये दो व्यसन (आदतें) ही सच्चे व्यसन हैं।

८४३. 'साधना' मात्र ही शक्ति की आराधना है।

८४४. संतों की संगति करके नर देह सार्थक कर लेना चाहिए। आसन से रोगों का नाश और प्राणायाम से पापों का नाश और योगी के मन के विकार प्रत्याहार से दूर हो जाते हैं। धारणा से धैर्य आता है तथा अद्भुत चैतन्य की प्राप्ति होती है समाधि से शुभाशुभ कार्यों को त्याग कर साधक मोक्ष को प्राप्त करता है।

८४५. जो व्यक्ति युवावस्था में शान्त है, वही वास्तव में शान्त है। धातुओं के क्षीण हो जाने पर

कौन शान्त नहीं हो जाता है ?

८४६. क्रोध से सब काम वैसे नहीं बनते, जैसे शान्ति से बनते हैं।

८४७. इच्छा पूर्ति में नहीं अपितु संयम में शान्ति मिलती है।

८४८. संसार का मूक शिक्षक 'श्मशान' क्या डरने का स्थान है? जीवन की नश्वरता के साथ ही सभी आत्माओं के उत्थान का ऐसा सुन्दर स्थल और कौन है ?

८४९. सब कुछ अपने संकल्प द्वारा ही छोटा या बड़ा बन जाता है।

८५०. इच्छा का मूल 'संकल्प' है। विधान, व्रत, यम, धर्म आदि संकल्प से ही होते हैं। संकल्प शक्ति तो मानसिक शक्तियों की शिरोमणि है।

८५१. मनुष्य में शक्ति की कमी नहीं होती, संकल्प की कमी होती है।

८५२. मनुष्य के मन में संतोष प्राप्त होना स्वर्ग प्राप्ति से बढ़कर है।

८५३. दरिद्र कौन? जिसे भारी तृष्णा है और धनवान कौन? जिसे पूर्ण सन्तोष है।

८५४. क्या किसी को अपने मन के अनुसार सब सुख प्राप्त हो सकता है? जबकि सब कुछ भाग्य के अधीन है अतः सदा संतोष धारण करना चाहिए।

८५५. संतोष रूपी अमृत से संतुष्ट मनुष्य के लिए सदा सुख शान्ति ही है।

८५६. मनुष्य की संस्कृति क्या है ? वह आत्म शोधन की, आत्मोद्धार की, अपने आपको मुक्त कराने की प्रक्रिया है।

८५७. किसी भी संगठन में सम्मिलित होने का अर्थ है, अपने आप पर बंधन लगाना, अपनी स्वतंत्रता को सीमित करना।

८५८. साधु पुरुष का हृदय समृद्धि में कोमल और आपत्ति के समय कठोर हो जाता है।

८५९. जो उपकारियों के प्रति सज्जन है, उसकी सज्जनता में क्या? जो अपकारियों के प्रति भी सज्जनता का व्यवहार करता है, सज्जन उसे ही साधु कहते हैं।

८६०. गुण का सच्चा मानदण्ड मन में स्थित है। जिनके सद्‌विचार हैं वे सत् पुरुष हैं।

८६१. जिससे प्राणियों का अत्यन्त हित होता हो वह वास्तव में असत्य सत्य है, इसके विपरीत जिससे किसी का अहित होता हो वो सत्य भी अधर्म है। धर्म की सूक्ष्मता देखो।

८६२. झूठ से जो पाऊँगा वह पाना नहीं खोना है और सत्य से जो खोता है वह खोना नहीं पाना है।

८६३. समय आये बिना वज्रपात होने पर भी मृत्यु नहीं होती है और समय आ जाने पर पुष्प भी प्राणी का प्राण हर लेता है।

८६४. चित्त को वश में करने के लिए अध्यात्म विद्या का ज्ञान, सत्संगति, वासनाओं का भलीभाँति परित्याग तथा प्राणायाम ये प्रबल उपाय हैं।

८६५. असावधानी विनाश को शीघ्र बुलाती है। सावधान रहो, जीवन महल के किसी भी

दरवाजे से काम-क्रोध रूपी किसी भी चोर को अन्दर न घुसने दो और सावधानी के साथ जो पहले से घुसे बैठे हों, उन्हें दृढ़ता और शूरता के साथ निकालने की प्राणपन से चेष्टा करते रहो, सावधानी ही साधना है।

८६६. सौन्दर्य पवित्रता में रहता है और गुणों में चमकता है।

८६७. इन्द्रिय संयम न रखना आपत्तियों का मार्ग है और इन्द्रिय विजय सुखों का मार्ग है। दोनों में जो इष्ट हो वह करना चाहिए।

८६८. संत पुरुष के लिए एकान्त में रहकर विचार मात्र से भी सेवा कर सकना संभव है, ऐसा लाखों में एक कर सकता है।

८६९. सच्चे सौन्दर्य का रहस्य सच्ची सरलता है।

८७०. सौन्दर्य पर आधारित प्रेम सौन्दर्य की ही भाँति शीघ्र नष्ट हो जाता है।

८७१. मनुष्य स्वतंत्रता से सुख, शान्ति, परम तत्त्व एवं परमपद प्राप्त करता है। स्वयं अपने प्रति उत्तरदायी होना अर्थात् कर्त्तव्य करना ही स्वतंत्रता है।

८७२. अपने कल्याण के इच्छुक व्यक्ति को स्वेच्छाचारी नहीं होना चाहिए।

८७३. क्रोध में किसी को कुछ बक दो तो अन्तःकरण की अदालत में स्वयं न्यायाधीश बनकर, स्वयं को खड़ा कर स्वयं को प्रायश्चित्त दो।

८७४. जीवन में और सब कुछ हो, सिर्फ मन की शान्ति न हो तो जीवन बेकार है।

८७५. कोई कितना भी शुद्ध और उद्योगी क्यों न हो, लोग उस पर दोषारोपण कर ही देते हैं। अपने धार्मिक कार्यों में लगे हुए वनवासी मुनि के भी शत्रु, मित्र और उदासीन ये तीन पक्ष पैदा हो जाते हैं।

८७६. पूजन, अध्ययन, दान, तप इन चार का तो कोई लौकिक प्रयोजन के लिए भी सेवन कर सकता है, परन्तु सत्य, क्षमा, दया, निर्लोभता ये चार तो जो सज्जन नहीं हैं उनमें रह ही नहीं सकते हैं।

८७७. जिसमें धर्म की रक्षा हो वही कार्य श्रेष्ठ मानना चाहिए।

८७८. कामना, भय, लोभ अथवा जीवन रक्षा के लिए भी 'धर्म' का त्याग नहीं करना चाहिए, धर्म नित्य है जबकि सुख-दुःख अनित्य हैं, जीव नित्य है तथा बन्धन का हेतु अनित्य है।

८७९. स्वदेश ही नहीं समूचे विश्व का व्यवहार जिसके बल पर सुचारू रूप से चलता है, उसे ही धर्म कहते हैं।

८८०. किसी वस्तु को स्वीकार और किसी धर्म पर विश्वास उसके गुणों के आधार पर करो। स्वयं उसको परखो जाँचो उसका सूक्ष्म विश्लेषण करो।

८८१. पृथ्वी पर खोटे स्थान भौमिक नरक हैं, खोटे भाव और उस सम्बन्धी यातनापूर्ण अवस्था मानसिक नरक है, माया-मोह में स्वरूप विस्मृति की अवस्था आध्यात्मिक नरक है।

८८२. जीव का अपवित्र मन ही प्रधान नरक है एवं उसकी वेदना, चिन्ता और भय अशान्ति ही नारकीय यातना है।

८८३. पराई स्त्री और पर धन जिसके मन को अपवित्र नहीं करते, गंगादि तीर्थ उसके चरण स्पर्श की अभिलाषा करते हैं।

८८४. पाप करने वाला मनुष्य अपने पाप को कह देने से, पश्चाताप करने से, तपस्या से, अध्ययन से और आपत्ति काल में दान देने से अपने पाप से मुक्त हो जाता है।

८८५. मन से किया हुआ पाप ही पाप है, शरीर द्वारा किया हुआ नहीं क्योंकि जिस शरीर से पत्नि का आलिंगन करते हैं उसी शरीर से पुत्री का आलिंगन करते हैं भावों में अन्तर होता है।

८८६. अन्य क्षेत्र में किया गया पाप पुण्य क्षेत्र में नष्ट हो जायेगा किन्तु पुण्य क्षेत्र में किया हुआ पाप तो वज्र लेप के समान स्थायी हो जायेगा अर्थात् उसका फल भोगना ही पड़ता है।

८८७. अत्यन्त उत्कृष्ट पुण्य और पापों का फल तीन वर्षों में, तीन मास में तीन पक्षों में अथवा तीन दिन में यहीं मिल जाता है।

८८८. प्रमाद से बढ़कर इस संसार में मनुष्यों के लिए दूसरी कोई मृत्यु नहीं। प्रमादी मनुष्य को सारे अर्थ सब ओर से त्याग देते हैं और अनर्थ बिना बुलाये ही उसके पास चले आते हैं और ध्यान रहे आलस का अभाव अमर बनाने वाला है।

८८९. प्रसन्न चित्त रहने से मनुष्य के सब दुःख दूर हो जाते हैं, प्रसन्नचित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है।

८९०. प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होता है इसलिए गूँगे, तोतले और मूर्ख भी प्रार्थना कर सकते हैं।

८९१. स्वार्थ के कारण विघटित हुए समाज के अनेक दल रूपी फूलों को गुलदस्ता बनाने के लिए प्रार्थना एक साधन है।

८९२. मानव को बंधन दूर करने के लिए आत्मा और अनात्मा का विवेक करना चाहिए। विवेक से स्वयं को सत्-चित्त-आनंद रूप जानकर आत्मा आनंदित हो जाता है। ''शुद्ध बुद्धि ही कामधेनु है।''

८९३. बंधन दो प्रकार के होते हैं–पहला प्रेम का बंधन दूसरा द्वेष का बंधन।

८९४. धन बल नहीं है, साधुता एवं पवित्रता ही बल है।

८९५. यदि बुद्धि जीवी का समाज में कोई प्रकार्य है तो यह कि मानसिक आवेगों को सब प्रकार के प्रलोभन मिलने पर भी ठंडा रखें और पक्षपात रहित निर्णय बनाये रखें।

८९६. जो मनुष्य निश्चय करके कार्य प्रारम्भ करता है, कार्य के मध्य में रुकता नहीं है, समय को नष्ट नहीं करता है और स्वयं के वश में रहता है, उसी को पंडित कहा जाता है।

८९७. बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी अपने वर्तमान दुःखों के लिए रोया नहीं करते हैं, अपितु वर्तमान में दुःख के कारण पापों को रोका करते हैं।

८९८. सब प्रकार का भाग्य संकटपूर्ण होता है, सौभाग्य ईर्ष्या को लाता है और दुर्भाग्य लज्जा को।

८९९. भारत में दार्शनिक तो संत होते हैं और संत दार्शनिक होते हैं।

९००. चिंतन द्वारा मन विलीन होता है और मन के विलय होने पर ही कल्याण होता है।

९०१. यदि मन में प्रपञ्च हो तो मन में भगवान् नहीं हो सकते हैं और यदि मन में भगवान् है तो प्रपञ्च नहीं हो सकता है।

९०२. दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर जिसने भोगों में नष्ट किया है उसने मानों ईंधन के लिए कल्पवृक्ष को उखाड़ डाला है।

९०३. वैराग्य एवं तपस्या की कमी के कारण आज कल लोग परमात्मा तो बनना चाहते हैं किन्तु महात्मा नहीं बनना चाहते हैं।

९०४. परोपकार में सर्वदा संलग्न रहने वाला सज्जन व्यक्ति विनाश के अवसर पर भी विनाश करने वाले से भी शत्रु भाव नहीं रखता है जैसे चन्दन का वृक्ष काटने वाले कुल्हाड़े का भी मुख सुगन्धित कर देता है।

९०५. दो अक्षरों का 'मम' (यह मेरा है ऐसा भाव) मृत्यु है और तीन अक्षरों का 'न मम' (यह मेरा नहीं है, ऐसा भाव) अमरता है।

९०६. मनुष्य 'योग' में स्थित होकर, तत्त्व को जानकर, मृत्यु काल में भी दुःखी नहीं होता है।

९०७. ऐसे मरो की फिर से गर्भ वास न हो।

९१०. मैंने मृत्यु का चिंतन तो काफी किया, लेकिन मृत्यु की चिंता मैं नहीं करता हूँ।

९. धर्म से रिक्त-१० लोग

९११. मनुष्य की आयु सौ वर्ष की अवधि में सीमित है, उसका आधा रात्रि में बीत गया, शेष का आधा बालत्व और वृद्धत्व में बीत गया शेष भाग रोग वियोग, दुःखादि के साथ सेवा आदि में बीत गया जल की तरंग के समान अत्यधिक चंचल जीवन में प्राणियों को सुख कहाँ मिलता है?

९१२. रत्नों से भरी हुई सारी पृथ्वी, संसार का सारा स्वर्ण, सारे पशु और स्त्रियाँ किसी एक पुरुष को मिल जायें तो भी वे सब उसके लिए पर्याप्त नहीं होगे, वह और भी पाना चाहेगा, ऐसा समझकर संतोष धारण करें, भोगेच्छा को दबा दें।

९१३. सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, इन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही सुगन्ध आपके भीतर समाएगी।

९१४. जहाज किसी भी दिशा में क्यों न जाय, कम्पास की सुई उत्तर दिशा ही दिखाती है, इस

कारण जहाज को दिशाभ्रम नहीं होता। इसी प्रकार मनुष्य का मन यदि भगवान् की ओर रहे तो फिर उसे कोई डर नहीं रहेगा।

९१५. समय कैसा है, मित्र कौन-कौन हैं, देश कैसा है, क्या आमदनी है, क्या खर्च है, मैं कौन हूँ, मेरी शक्ति कितनी है, इन बातों पर मनुष्य को बार-बार विचार करना चाहिए।

९१६. जीवित मनुष्य के लिए दुष्ट अन्तःकरण की यातना ही तो नरक है।

९१७. जो सन्तोष रूपी अमृत पीने से शान्त व तृप्त हो जाते हैं, वे आत्मा में रमण करने वाले महात्मा ही परमपद को प्राप्त होते हैं।

९१८. हे भव्य! यह समझ लो मोक्ष का रहस्य वैराग्य ही है।

९१९. दस प्रकार के लोग धर्म के तत्त्व को नहीं जानते हैं –१. नशे में मतवाला, २. असावधान, ३. पागल, ४. थका हुआ, ५. क्रोधी, ६. भूखा, ७. जल्दवाद, ८. लोभी, ९. भयभीत, १०. कामी।

९२०. काम करने पर भी बोझ न लगे यह अनासक्ति का रूप है।

९२१. यौवन, रूप, जीवन, धन-संग्रह, आरोग्य और प्रियजनों का समागम ये सब अनित्य हैं विवेकशील पुरुषों को इनमें आसक्त नहीं होना चाहिए।

९२२. सबसे अधिक अच्छी लगने वाली वस्तुओं का संग्रह ही पुरुष के लिए दुःखदायी है एवं जो अकिंचन है, वह विद्वान् अनंत सुख पाता है।

९२३. जो अपने कल्याण की बात है, उसे आज ही कर, वृद्ध होकर क्या करेगा? क्योंकि वृद्धावस्था में तो अपने अंग भी भार हो जाते हैं।

९२४. यज्ञ में मन्त्र बोलकर द्रव्य चढ़ाई जाती है तप में समता की मुख्यता होती है।

९२५. इस शरीर में रहते हुए ही हम आत्मा को जान लेते हैं तो ठीक है, यदि उसे नहीं जाना तो बड़ी हानि है जो उसे जान लेते हैं, वे अमर हो जाते हैं।

९२६. 'आत्म विश्वास' सफलता का प्रथम रहस्य है।

९२७. मैं अब अपने आदर्श से हटकर जीने की अपेक्षा आदर्श के समीप मरना अधिक पसंद करूँगा।

९२८. 'आयु' तो वायु से भी चंचल कमल पत्र पर स्थित जल बिन्दु के समान है।

९२९. जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के दोषों पर अँगुली उठाता है तो उसे ध्यान रखना चाहिए कि शेष तीन अँगुलियाँ उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं।

९३०. वास्तव में जिसे किसी प्रकार की आशा नहीं है, वही सुख से सोता है, आशा का न होना ही परम सुख है।

९३१. अंग गल गए हैं, बाल सफेद हो गए हैं, दाँत गिर गए हैं, काँपते हाथों में डंडा लिया हुआ है, फिर भी 'आशा' मनुष्य का पिण्ड नहीं छोड़ती है।

९३२. 'आशा' एक नदी है जिसमें मनोरथ रूपी जल है, तृष्णा रूपी तरंगें उठ रही हैं, राग रूपी मगरमच्छ है, वितर्क रूपी पक्षी है, यह नदी धैर्य रूपी वृक्ष को उखाड़ फेंकने वाली है, इसमें अज्ञान रूपी भँवर हैं, जिनके पार जाना कठिन है और जो अतिगहन हैं, इसके चिन्ता रूपी तट बहुत ऊँचे हैं, इसके पार जाकर विशुद्ध मन वाले योगीराज ही आनन्दित होते हैं।

९३३. जो आशा के दास हैं, वे सम्पूर्ण लोक के दास हैं तथा आशा जिनकी दासी है, सम्पूर्ण लोक उनका दास बन जाता है।

९३४. आशा मनुष्यों की कोई आश्चर्यमयी शृंखला है, जिससे बँधे हुए मनुष्य तो दौड़ लगाते हैं तथा उससे मुक्त व्यक्ति पंगु के समान स्थिर रहते हैं अर्थात् आशावान को दौड़ धूप करना पड़ती है।

९३५. संसार से प्रतिदिन प्राणी यमलोक में जा रहे हैं किन्तु जो बचे हैं, वे सर्वदा जीते रहने की इच्छा करते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या होगा ?

९३६. यह ''स्नेहमय पाश'' ज्ञान और वैराग्य, ज्ञान वैराग्य के बिना नहीं तोड़ा जा सकता है।

९३७. हर कहीं, हर किसी वस्तु में मन को मत लगा बैठिए।

९३८. संतों की वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान् हो जाओ, लेकिन ईश्वर के प्रतिभक्ति नहीं तो कुछ नहीं।

९३९. तृष्णावान का मन धन सम्पत्ति में और मूर्ख का मन काम सुख में रमता है पर जो सज्जन है वह ज्ञान द्वारा भोग इच्छा को जीतकर शान्ति में रमता है।

९४०. इच्छा से पाप का बंध होता है, इच्छा से दुःख होता है, इच्छा को दूर करने से पाप दूर हो जाता है, पाप दूर होने से दुःख दूर हो जाता है।

९४१. इच्छा रखनी ही है तो पुनः जन्म न लेने की इच्छा रखनी चाहिए।

९४२. जिसका साथी ईश्वर है उसको दुःख क्या, फिक्र क्या, दूसरे साथी की आवश्यकता क्या है ? मेघों से ढके हुए सूर्य वाला दिन 'दुर्दिन' नहीं है, उसी दिन को दुर्दिन कहो जिस दिन भगवान् की कथा का अमृतमय सुन्दर आलाप रस सुनायी नहीं पड़ता है।

९४३. निष्काम भाव से की जाने वाली भक्ति की तुलना तीनों लोकों के किसी भी पदार्थ से नहीं की जा सकती है। मन में कामना रखकर भजन करने से केवल उसका फल मिलता है, पर निष्काम भक्ति से प्रभु पद की प्राप्ति होती है।

९४४. कर्म भावना प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है, फल भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ का ही एक छुपा रूप है।

९४५. जो भारतवर्ष में जन्म लेकर पुण्य कर्मों से विमुख होता है वह अमृत का कलश छोड़कर विष का पात्र अपनाता है।

९४६. आत्म कार्य भी महान् कार्य है, केवल पर कार्य ही नहीं।

९४७. है आदमी, है काम, नहीं है आदमी, नहीं है काम।

९४८. निश्चय ही इस संसार में कर्मों के अनित्य सम्बन्ध से कभी कोई वस्तु स्थिर नहीं रहती है।

९४९. पराधीनता का सुख और अज्ञानी का वैराग्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

९५०. स्वयं को ज्ञान और विनय से नित्य शुद्ध करें, ऐसा करने पर मरण होने पर पश्चाताप नहीं होगा।

९५१. मनुष्य का समस्त चरित्र उसके विचारों से बनता है।

९५२. एकान्त स्थान में अकेले ही अपने हित का नित्य चिंतन करे क्योंकि अकेले सोचने वाला ही परम कल्याण को प्राप्त करता है।

९५३. परमानन्द में लीन दो ही तो चिन्तारहित हैं-अज्ञानी बालक और गुणों के परे पहुँचा हुआ संन्यासी।

९५४. मनुष्य का जितना चित्त इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है उतना यदि आत्मा में हो जाये तो बंधन से मुक्त हो जाये।

९५५. प्राणायाम द्वारा अत्यन्त तीक्ष्ण बनाई ऊँकार रूपधार वाली और वैराग्य रूपी पत्थर पर घिसी हुई बुद्धी रूपी छुरी से संसाररूपी सूत्र को काटकर योगी फिर कर्मों से नहीं बँधता है।

९५६. योगी विरक्ति रूपी स्त्री के साथ बड़े वैभवशाली राजाओं की तरह सुख और शान्तिपूर्वक सोता है, पृथ्वी ही उसकी सुन्दर शय्या है, हाथ ही बड़ा तकिया है, आकाश ही चंदोबा है, अनुकूल पवन ही उसका पंखा है, चन्द्रमा ही उसका प्रकाशमान दीपक है।

९५७. अल्पबुद्धि मनुष्य परमात्मा को मूर्तियों में देखते हैं, योगी लोग अपने हृदय में परमात्मा को देखते हैं।

९५८. स्वभाव, रुचि, अभ्यास, संगति, सम्प्रदाय और विवेक बुद्धि ये न्यूनाधिक विकास के कारण हैं क्योंकि सबको ये सब चीजें एक सी हृदयंगम नहीं होती हैं।

६५९. जब कभी अपने हृदय को प्रफुल्लित करना चाहो, अपने निकटवर्तियों के शुभ गुणों को चित्त में लाओ, जैसे कि एक की स्फूर्ति, दूसरे की विनम्रता, तीसरे की उदारता, चौथे की ऐसी ही कोई अच्छाई अर्थात् गुणों की ओर दृष्टि होने से मन प्रसन्न रहता है।

९६०. जिसने प्रथम बाल्यावस्था में विद्या का अर्जन नहीं किया, द्वितीय युवावस्था में धन का अर्जन नहीं किया और तृतीय प्रौढ़ अवस्था में तप का अर्जन नहीं किया, वह चतुर्थ वृद्धावस्था में क्या करेगा? जीवन को कल्याण मय और सुन्दर बनाने से ही मृत्यु भी शुभ बन सकती है।

९६१. जीवन का आदर्श यही है कि जीवन के उस पार देखा जाये।

९६२. कितना सरल हो जाता है जीवन जब विकल्प नहीं रहते हैं।

९६३. कमल के पत्ते पर ओस की बूँद के समान मानव जीवन क्षणभंगुर है, हम लोग सिर्फ मुँह से ही यह कहते हैं परन्तु आत्म कल्याण करके नहीं दिखाते हैं।

९६४. ज्ञान रहित योग से भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है, अतः मुमुक्षु को ज्ञान व योग दोनों का दृढ़ अभ्यास करना चाहिए।

९६५. आगामी कल के विषय में डींग मत मारो क्योंकि तुम नहीं जानते कि कल क्या लेकर आयेगा।

९६६. आहार के लिए निन्दनीय कर्म नहीं करना चाहिए, आहार भी प्राण धारण करने के लिए करना चाहिए, प्राणों को तत्त्व विज्ञान के लिए धारण करना चाहिए तत्त्व इसलिए जानना चाहिए कि पुनर्जन्म न हो।

९६७. जैसे बसंत ऋतु में वृक्षों की सुन्दरता तथा शोभा आदि गुण बढ़ जाते हैं, वैसे ही तत्त्व को जान लेने वाले मनुष्य में बल, बुद्धि और तेज आदि गुण बढ़ जाते हैं।

९६८. ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है, तीर्थों में भी श्रेष्ठ तीर्थ है मन की परम शुद्धता।

९६९. भीतर का अभिप्राय शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थ यात्रा, शास्त्र श्रवण और स्वाध्याय- ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं।

९७०. जिसने इन्द्रिय समूह को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ निवास करता है वही तीर्थ बन जाता है।

९७१. ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञान रूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेष रूप मल को दूर करने वाले मानस तीर्थ में जो पुरुष स्नान करता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है।

९७२. १. जो अश्रद्धालु है, २. पापात्मा है, ३. नास्तिक है, ४. संशयात्मा है और ५. केवल तर्क वितर्क में ही डूबा रहता है–ये पाँच प्रकार के मनुष्य तीर्थ के फल को प्राप्त नहीं करते हैं।

९७३. 'तृष्णा' सबसे बढ़कर पापिष्ठ तथा नित्य उद्वेग करने वाली बताई गई है, उसके द्वारा प्रायः अधर्म ही होता है, वह अत्यन्त भयंकर पाप रूपी गड्ढे में डालने वाली है, जहाँ-जहाँ 'तृष्णा' है वहाँ-वहाँ संसार है।

९७४. जब तक मनुष्य तृष्णा से युक्त रहता है, तब तक समृद्धिशाली होने पर भी दरिद्र ही रहता है। 'तृष्णा' दुश्चरित्र स्त्री के समान मनुष्य को अनुचित कामों में प्रेरित करती है।

९७५. यदि तुम्हारी इच्छाएँ अनंत होगीं, तो तुम्हारी चिंताएँ व भय भी अनंत होंगे।

९७६. मान को त्याग कर मनुष्य प्रिय होता है, क्रोध को त्याग कर शोक नहीं करता है, काम

को त्याग कर अर्थवान होता है, लोभ को त्याग कर सुखी होता है।

९७७. बाहर और भीतर जो कुछ भी मन को फँसाने वाली चीजें हैं, उन सबको छोड़ने से मनुष्य त्यागी होता है, केवल घर छोड़ देने से त्याग की सिद्धि नहीं होती है।

९७८. जब जगत् का वियोग निश्चित है, तब धर्म के लिए परिवार से स्वयं पृथक् हो जाना अवश्य श्रेष्ठ है।

९७९. आनन्दित रहने वाला हृदय उत्तम दवा है, निराश मन हड्डियों को भी सुखा देता है।

९८०. 'आशा' उत्साह की जननी है, आशा में तेज है, बल है, जीवन है, आशा ही संसार की संचालक शक्ति है।

९८१. उस व्यक्ति को क्या लाभ जो सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त कर ले किन्तु अपनी आत्मा को भूल जाये। धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सकें, तो यह कोई मँहगा सौदा नहीं है।

९८२. अन्तःकरण यदि मलिन और अपवित्र बना रहे, तो परमात्मा की उपासना भी फलवती न होगी अतः ईश्वर की उपासना निष्पाप हृदय से करें।

९८३. जो दूसरों को जानता है, वह विद्वान् है और जो स्वयं को जानता है वह बुद्धिमान है।

९८४. प्रेम सब पर करो, विश्वास कुछ पर करो, बुरा किसी का भी न करो।

९८५. बिना श्रद्धा के किया हुआ शुभकर्म सब असत् कहलाता है वह न तो इस लोक में लाभदायक होता है न मरने के बाद परलोक में लाभदायक होता है।

९८६. श्रद्धा का अर्थ अंध विश्वास नहीं है, किसी ग्रन्थ में कुछ लिखा हुआ या किसी व्यक्ति का कुछ कहा हुआ अपने अनुभव बिना सच मानना श्रद्धा नहीं है।

९८७. शान्ति मानव जीवन के लिए एक परम पावन और वांछनीय निधि है, शान्ति बाहर की से नहीं मिलती, वह अपने अंदर की वस्तु है।

९८८. जो कुछ मिले उसी में संतोष रखना तथा दूसरों से ईर्ष्या न करना ही शान्ति की कुंजी है और शान्ति जैसा आनंद कहीं नहीं है।

९८९. जिसके अंतरंग में शान्ति है, उसे बाह्य वेदना कभी कष्ट नहीं दे सकती है।

९९०. जीवन में सम्पत्ति एवं स्वास्थ्य से भी अधिक मन की शान्ति का मूल्य है।

९९१. अपनी आवश्यकताएँ कम करके आप वास्तविक शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

९९२. असत्य में शक्ति नहीं है अपने अस्तित्व के लिए भी असत्य को सत्य का आश्रय लेना पड़ता है।

९९३. किसी ने सच्चाई के रास्ते पर चलने वालों को कभी भटकते नहीं देखा है।

९९४. सत्य के लिए हर वस्तु की बलि दी जा सकती है, पर सत्य की बलि किसी भी वस्तु के लिए नहीं दी जा सकती है।

९९५. सारे पुण्यों और सद्‌गुणों की जड़ 'सत्य' है।
९९६. समय मूल्यवान अवश्य है किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है।
९९७. जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक न एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते है, वे आत्म संस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते हैं।
९९८. मन को वश में करने के लिए अध्यात्म विद्या का ज्ञान, सत्संग, वासनाओं का भलीभाँति परित्याग तथा प्राणायाम ये प्रबल उपाय हैं।
९९९. वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है।
१०००. यह जिन्दगी हँसते-खेलते हुए जीने के लिए है, चिंता, भय, शोक, निराशा, ईर्ष्या, तृष्णा व वासना में बिलखते रहना मूर्खता है।
१००१. अपना हृदय पवित्र रखो, धर्म का समस्त सार इसी उपदेश में समाया है शेष कथन सब इसी का विस्तार है।
१००२. यदि किसी को अपनी आत्मा से प्रेम है, तो उसे पाप की ओर किंचित् भी नहीं झुकना चाहिए
१००३. यह बुद्धि ही है जो इन्द्रियों को इधर-उधर भटकने से रोकती है उन्हें बुराई से दूर रखती है और शुभ कर्म की ओर प्रेरित करती है।
१००४. जब तुम्हारी आत्मा अहंकार और क्रोध से मोहित होने को हो, तब मस्तक में उनका स्मरण रखो, जो लापरवाही और असावधानी से नष्ट हो गये हैं।
१००५. गुप्तचरों और दूतों को चाहिए कि वे साधु-सन्तों का वेश धारण करें और खोजकर सच्चा भेद निकाल लें किन्तु चाहे कुछ भी हो जाए, वे अपना भेद न बतावें।
१००६. अरे! यह खाल क्या ऐसी अमूल्य वस्तु है, जो अपनी प्रतिष्ठा बेचकर भी इसे बचाये रखना चाहते हो?
१००७. रमणी के सतीत्व की तरह महत्त्व की रक्षा भी केवल अन्तरात्मा की शुद्धि से ही की जा सकती है।
१००८. सन्त लोगों का धर्म है-'अहिंसा' परन्तु योग्य पुरुषों का धर्म है 'परनिन्दा' से परहेज करना।

१०. अहिंसा

१००९. करुणा से आर्द्र हृदय वाले व्यक्ति सभी के निःस्वार्थ बंधु होते हैं।
१०१०. जो पर की करुणामयी आवाज नहीं सुन सकता, प्रभु भी उसकी भक्ति की आवाज कैसे सुन सकते हैं?
१०११. पाप का फल पेड़ा नहीं पीड़ा है।

१०१२. दुःख भोगने वाला तो आगे सुखी हो सकता है, पर दुःख देने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता है।

१०१३. एक आह सारे संसार में खलबली मचा सकती है, अतः किसी के भी दिल को मत दुःखाओ।

१०१४. अहिंसा की साधना से बढ़कर श्रेष्ठ दूसरी कोई साधना नहीं है।

१०१५. जैन दर्शन के सम्पूर्ण सिद्धान्त अहिंसा की नींव पर खड़े हैं।

१०१६. अहिंसा और कायरता पूर्ण रूप से परस्पर विरोधी है।

१०१७. अदालत द्रव्य हिंसा पकड़ती है तथा अध्यात्म द्रव्य व भाव दोनों प्रकार की हिंसा को पकड़ता है। हम दूसरों को बचायेंगे तो दूसरा हमें बचायेगा।

१०१८. अहिंसा परम धर्म है। अहिंसा परम तप है। अहिंसा परम ज्ञान है। अहिंसा परम पद है।

१०१९. अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है, हिंसा के पीछे हर तरह का पाप लगा रहता है।

१०२०. सत्य और अहिंसा से तुम संसार को अपने सम्मुख झुका सकते हो।

१०२१. किसी को इतना मत सताओ कि वह आँसुओं का बदला खून से ले।

१०२२. जिनके करुणा के द्वार बंद हैं उनके लिए परमात्मा का द्वार भी बन्द है।

१०२३. भिखारी बनकर जीवन व्यतीत करना श्रेष्ठ है लेकिन शिकारी बनकर जीवन व्यतीत करना निकृष्ट है।

१०२४. जिसके जीने से लोग जीवित रहें इस संसार में वास्तव में वही जीता हैं।

१०२५. जिसका मन दया से द्रवीभूत रहता है उसी को ज्ञान और मोक्ष प्राप्त होता है।

१०२६. दया से लबालब भरा हुआ दिल ही सबसे बड़ी दौलत है क्योंकि दौलत तो हर किसी के पास देखी जाती है।

१०२७. दया से हीन धर्म पाखंड है।

१०२८. दूसरों को दुःख देकर कोई हमेशा सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

१०२९. उठते-बैठते, सोते-जागते हर क्षण प्रभु से एक प्रार्थना अवश्य करना कि-हे भगवन्! मुझे हजारों कष्ट भले ही सहन करने पड़ें पर मेरे द्वारा किसी को एक भी कष्ट न मिलें।

१०३०. दुष्ट को मारने से दुष्टता नहीं मरती।

१०३१. जो धर्म अहिंसा की कसौटी पर खरा उतरे वही सच्चा धर्म है।

१०३२. नौकर के साथ घर के सदस्यों जैसा व्यवहार होना चाहिए।

१०३३. पानी छानकर पीने वाले दहेज के लिए जीवित बहु-बेटियों का खून पी रहे हैं। धूप जलाने में हिंसा देखने वाले अब दहेज के लिए बहु-बेटियों को जला रहे हैं, प्याज से पेट न भरने वाले गरीबों का पेट काटकर ब्याज से पेटी भर रहे हैं।

१०३४. मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

१०३५. निरपराधी मनुष्य पर अपराध का आरोप लगाना महापाप है।

१०३६. लोक में विश्वास घात से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है।

१०३७. पाप का परिवार-पिता-लोभ, माता-हिंसा, भाई-झूठ, बहन-चिंता, पुत्र-परिग्रह, पुत्री-माया, मूल मुखिया क्रोध है।

१०३८. पाप का बोध परिवर्तन लाता है।

१०३९. भूखा मनुष्य क्या पाप नहीं करता? दुर्बल (भूख से व्याकुल) मनुष्य निर्दयी हो जाते हैं।

१०४०. मानसिक पीड़ा शारीरिक पीड़ा की अपेक्षा अधिक कष्टप्रद होती है।

१०४१. यदि मनुष्य शरीर में जो भी क्रूरता और कठोरता का भाव धारण करता है तो वह मनुष्य रूप में नारकीय जीव या यमदूत माना जायेगा।

१०४२. शाकाहार से हिंसात्मक विचार नहीं उठते हैं।

१०४३. संस्कृति की रक्षा से ही प्राणियों की रक्षा सम्भव है।

१०४४. सत्य और दया को नहीं त्यागें उन्हें अपनी ग्रीवा पर माला की तरह पिरो लें, अपने हृदय पटल पर अंकित कर लें।

१०४५. जो दूसरे को दुःख देता है, उसका पूजन-भजन में मन नहीं लगता है।

१०४६. जो दूसरों का बुरा करता है, वह वास्तव में अपना ही महान् बुरा करता है और जो दूसरों को सुख पहुँचाता है, वह वास्तव में अपने को ही सुखी बनाता है।

१०४७. जितनी छूट या स्वतंत्रता आप अपने लिए चाहते हैं उतनी दूसरे को क्यों नहीं देना चाहते हैं? सिर्फ स्वाद, सौन्दर्य और सम्पदा (सम्पत्ति) के लिए हिंसा होती है।

१०४८. अपनी मान्यताओं को दूसरों पर थोपना हिंसा है।

१०४९. जीने के लिए साधु नहीं बना जाता, समाधि के लिए बना जाता है। अतः कितनी बड़ी बीमारी आ जाये परन्तु हिंसा की औषधि मत लेना।

११. अनुमोदना

१०५०. घर में पिच्छी होने पर पिच्छी लेने की याद बनी रहती है एवं अचानक किसी की सल्लेखना हो तो भी काम आ सकती है।

१०५१. ज्ञान, वैभव और आनंद जितना बाँटो वह अनेक गुना वापस लौटेगा।

१०५२. संसार में वह गरीब नहीं जिसके घर खाना न हो, गरीब तो वह है जो गुणियों के गुण कहने में दरिद्रता रखता हो।

१०५३. महिलाएँ पारिवारिक जीवन बखूबी निभा सकती हैं, शर्त यह है कि परिवार में उनकी तारीफ होती रहे।

१०५४. ''परिवार रूपी बगीचे के माली बने मालिक नहीं।''

१०५५. जो तप, शास्त्र ज्ञान, धैर्य, ध्यान, विवेक, यम और संयम के द्वारा वृद्ध हैं, वे प्रशंसनीय हैं न कि सफेद बालों से वृद्ध प्रशंसनीय हैं।

१०५६. क्रांतिकारी की प्रशंसा मैं तब करूँगा, जब वह अहिंसक हो।

१०५७. जिन लोगों ने इन्द्रियों के समस्त भोगों को त्याग दिया है और जो तपस्वी जीवन व्यतीत करते हैं, धर्म शास्त्र उनकी महिमा को अन्य समस्त बातों से अधिक उत्कृष्ट बताते हैं।

१२. ब्रह्मचर्य

१०५८. नंगा मन और नंगा तन ही मनुष्य की आदर्श स्थिति है।

१०५९. दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है संतोष को भी तीर्थ कहा जाता है लेकिन ब्रह्मचर्य परम तीर्थ है।

१०६०. सुन्दर चेहरा देखकर विद्वत्ता भैंस चराने चली जाती है, अतः राख बनने वाले चेहरे देखने से बचें।

१०६१. काम क्रोध ऊर्जा का अपव्यय है।

१०६२. स्त्री नहीं बाँधती, स्त्री की आकांक्षा बाँधती है।

१०६३. काम का चिन्तन मन को और काय का आलिंगन देह को विकृत कर देता है।

१०६४. विचार करो, जिससे आप सुख चाहते हैं, क्या वह सर्वथा सुखी है? क्या दुःखी नहीं है? दुःखी व्यक्ति आपको सुखी कैसे बना सकता है।

१०६५. पुरुष के पास दृष्टि होती है और नारी के पास विषय कषाय सम्बन्धी दिव्य दृष्टि होती है अतः सावधान रहें।

१०६६. जिस प्रकार सूक्ष्म छेद वाले जाल में फँसी हुई दो बड़ी-बड़ी मछलियाँ मिलकर जाल को काट डालती हैं, उसी प्रकार ये काम और क्रोध दोनों विशिष्ट ज्ञान को लुप्त कर देते हैं।

१०६७. काम वासना पर विजय जीवन का सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है।

१०६८. बुद्धिमान व्यक्ति वासना को शान्ति से वश में करता है, द्वेष तिरस्कार को प्रेम से जीतता है और अपकार के बदले में उपकार करता है।

१०६९. बाहर जाती हुई उपयोग की धारा को अन्तर्मुखी बना देना ब्रह्मचर्य है।

१०७०. शरीर व शरीर के अन्य अंगों से ब्रह्मचर्य पालना आसान है किन्तु मन का ब्रह्मचर्य अति कठिन है, मन का ब्रह्मचर्य ही परमब्रह्म से मिला सकता है।

१०७१. जो जननेन्द्रिय के विकारों को रोकने की ठाने, उसे तमाम इन्द्रियों के विकारों पर काबू पा लेना चाहिए।

१०७२. मन के विकार में हम मददगार न हों तो आखिर हमारी जीत ही है।

१०७३. यह सच है कि वीर्य-रक्षा ही ब्रह्मचर्य नहीं है पर वीर्य-रक्षा उसका प्रथम चरण अवश्य है।

१०७४. वीर्य नाश से शरीर को निचोड़ना बेवकूफी है क्योंकि वीर्य का उपयोग शरीर और मन की शक्ति बढ़ाने के लिए है।

१०७५. सच्चा मित्र और उत्तम पुस्तकें ब्रह्मचर्य पालन में सहायक होती है।

१०७६. साधना के लिए विवाहित हो ही गये हो तो दोनों स्त्री-पुरुष एक दूसरे को भाई-बहन समझें।

१०७७. बुद्धि व विवेक उसी का साथ देता है जो स्पर्शन, रसना इन दोनों काम इन्द्रियों को जीत लेता है। ब्रह्मचर्य-व्रत पालन के चार उपाय हैं–

१. उसकी आवश्यकता को अच्छी तरह समझना तथा सत्संगति करना।
२. इन्द्रियों को धीरे-धीरे वश में करना तथा मन में बुरे विचार न आने देना।
३. शुद्ध साथी, शुद्ध मित्र, शुद्ध पुस्तकें रखना और शुद्ध सात्त्विक आहार करना।
४. नित्य योगाभ्यास करना।

१०७८. ब्रह्मचर्य का पालन करने से आत्म बल बढ़ता है।

१०७९. जिसके पास शील है वह कुरूप होकर भी रूपवान, निर्धन होकर भी धनवान है तथा जिसके पास शील नहीं है वह रूपवान होकर भी कुरूप और धनवान होकर भी निर्धन है।

१०८०. जिन साधकों ने स्त्रियों के संसर्ग से पीठ फेर ली है वे साधक समस्त उपसर्गों में स्थिर रहते हैं। विष खाना अच्छा है किन्तु विषय सुख का सेवन करना अच्छा नहीं है क्योंकि विष खाने से तो जीव एक ही बार मरण का कष्ट पाता है किन्तु विषय रूपी स्त्री के सेवन से मनुष्य नरक के गड्ढे में गिर कर बार-बार कष्ट पाता है अरे! विष तो खाने से ही मनुष्य को मारता है लेकिन विषय तो स्मरणमात्र से मनुष्य के संयमी जीवन की हत्या कर डालते हैं।

१०८१. माता, बहन, पुत्री के साथ भी एकान्त में नहीं बैठना चाहिए क्योंकि इन्द्रियाँ बड़ी बलवती होती हैं, वे तपस्वी पुरुषों को भी अपनी ओर खींच लेती हैं। अरे जिस प्रकार लाख का घड़ा आग के पास रखते ही पिघल जाता है, वह शीघ्र ही चारों ओर से तपकर गलकर नष्ट हो जाता है, वैसे ही ब्रह्मचर्य भी स्त्री के साथ निवास करने से भ्रष्ट, शिथिलाचारी हो जाता है, अरे संसर्ग तो दूर रहा, स्त्री के स्मरण मात्र से ब्रह्मचारी का संयम नष्ट हो जाता है।

१०८२. काम-भोगों की लालसा में ही प्राणी उन्हें भोगे बिना ही दुर्गति में चले जाते हैं।

१०८३. स्त्री के साथ भोजन न करें, भोजन करती, छींकती, जंभाई लेती, एकान्त में सुखपूर्वक बैठी स्त्री को न देखें, नेत्रों में काजल या अंगों में उबटन लगाती हुई, नग्न बैठी हुई, स्नान करती हुई या प्रसव करती हुई स्त्री को तेजस्वी होने की इच्छा वाला साधक न देखें।

१०८४. दिन में अनुराग बुद्धि से युवती (स्त्री) के साथ हर्षित होकर संभाषण करने वाले की अन्यजन हँसी मजाक किया करते हैं और दूसरे कितने ही जन उसकी निन्दा भी करते हैं, अतः साधु को स्त्री चर्चा छोड़ देना चाहिए।

१०८५. असावधान यौवन का भविष्य, दयनीय 'बुढ़ापा' होता है।

१०८६. शीलवती स्त्री के पास लज्जा स्वभाव से होती है।

१०८७. जो कोई भी स्त्री को वासना की दृष्टि से देखता है, समझ लो कि वह अपने मन के द्वारा उससे व्यभिचार कर चुका है।

१०८८. वासना का पागलपन थोड़ी देर रहता है किन्तु उसका पछतावा बहुत देर तक रहता है।

१०८९. जिस सौन्दर्य में शील नहीं, वह अशोभनीय है और जिस शील में संयम नहीं, वह नाटकीय है। बिना सद्‌गुण के सुंदरता अभिशाप है।

१०९०. यदि आप सच्ची सुगंध फैलाना चाहते हैं तो शृंगार से परहेज करें और सुगंधित द्रव्यों के पीछे न दौड़ें।

१०९१. स्वच्छता फटे पुराने वस्त्रों में भी सौन्दर्य ला देती है।

१०९२. कुरूपता शील से सुशोभित होती है।

१०९३. लज्जा नारी-जीवन का अनमोल रत्न है, जिसने इसे खो दिया उसका जीवन व्यर्थ है, फिर चाहे वह धनसम्पन्न परिवार की नारी ही क्यों न हो?

१०९४. अच्छे कुल की सती स्त्री, पर पुरुष का धक्का लगने पर क्षमा माँगकर आगे बढ़ जाती है।

१०९५. स्त्रियों पर विश्वास करना विनाश का कारण होता है। नारी शीघ्र शान्ति का हरण करने वाली होती है।

१०९६. इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले के लिए नारी महत्त्वहीन है।

१०९७. किसी भी पुरुष का दूसरी स्त्री से सम्बन्ध जोड़ना पाप है।

१०९८. जिस तरह मुर्दे को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करना व्यर्थ है, उसी तरह स्त्री के सुख भोग से विरक्त हुए व्यक्ति के लिए धन का संचय करना व्यर्थ है।

१०९९. जो मुनि महीने-महीने का उपवास करके केवल जल ही ग्रहण करता है ऐसा तपस्वी भी स्त्री की संगति पाकर मोहित हो जाता है।

११००. पुरुष को दूषित करना स्त्रियों का स्वभाव है, इसलिए विवेकी पुरुष युवती (स्त्रियों) के विषय में कभी प्रमाद नहीं करते हैं।

११०१. क्रोधित शेरनी का आलिंगन करना अच्छा है, कुपित नागिन से लिपट जाना अच्छा है किन्तु परनारी का आलिंगन करना योग्य नहीं है।

११०२. कामी व्यक्ति का मन सत्तर वर्ष की उम्र में भी सत्तरह वर्ष का हो जाता है।

११०३. बच्चे माता-पिता के प्यार से वंचित हो रहे हैं, तभी वे दूसरे के प्यार के चक्कर में जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं।

११०४. सभी नकारात्मक भावनाओं का एक ही समाधान है कि इस हालात और हकीकत को स्वीकारें जब भी दुःखी हो अपने आप से एक प्रश्न पूछे ''मैं क्या स्वीकार कर रहा हूँ'' यदि यह समझ में आ गया तो कभी दुःखी नहीं होंगे।

११०५. सर्पिणी स्पर्श से खाती है पर स्त्री दूर से ही खा लेती है अतः स्त्री का नाम भी सुनकर दूर भाग जाना चाहिए।

११०६. कामी पुरुष सुख-दुःख, हित-अहित, पुण्य-पाप, वध-बन्धनादि, मरण की समीपता और दुर्गति को नहीं जानता है तिल बराबर सुख के लिए सुमेरु बराबर इस लोक-परलोक में दुःख भोगता है। संयमित जीवन ही जिनशासन की प्रभावना का प्रतीक है।

११०७. मनुष्य जन्म उसका सार्थक है जिसका जीवन संयम मय और मरण समाधिपूर्वक होता है।

११०८. अब्रह्म से शारीरिक क्षति से सहस्त्रगुणी आध्यात्मिक क्षति होती है।

११०९. मोती की कीमत चमक, साधना की कीमत ब्रह्मचर्य है। जीवन में करोड़ों उपवास, लाखों जप कर लेना लेकिन शीलहीन का जप-तप कार्यकारी नहीं होता है। सील की कीमत होती है, यदि सील खुल गयी तो बाजार में कीमत कम हो जाती है।

१११०. कार्य सिद्धि होने तक अपनी बात गुप्त रखें।

११११. बुद्धि को सुरक्षित रखना है तो वीर्य की रक्षा करो, संयम का पालन करो।

१११२. परस्त्री पर मोहित होना ही अपनी स्वतन्त्रता बेचना है।

१११३. व्रत पालन करना आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है।

१११७. व्रत हीन जीवन बिना ब्रेक की गाड़ी के समान खतरनाक होता है।

१११८. व्रत एक प्रकार का आत्मानुशासन है, जिससे व्यक्ति सतर्क रहता है।

१११९. प्राणों का अंत भी क्यों न हो जाए लेकिन गुरु की साक्षी में लिए व्रत भंग मत करना, यदि प्राणों का अंत होगा तो मात्र उसी समय दुःख होगा किन्तु जिसने एक बार व्रत को भंग कर दिया वह भव-भव में दुःखी होगा।

११२०. संसार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हो तो वैराग्यपूर्वक व्रतों को धारण करो। व्रत पालन के लिए भी प्रबल पुण्य चाहिए।

११२१. जिस प्रकार स्विच ऑन करने पर लोहे के तारों में तुरन्त विद्युत प्रवाहित होने लगती है उसी प्रकार हमारे जीवन में वासनाओं की स्थिति है। भोगसम्बन्धी चर्चा, वार्ता, क्रिया, स्मरण, दर्शन, चिन्तन आदि से वासनाएँ सक्रिय हो जाती हैं।

११२२. साधना की विराधना का कारण 'काम वासना' है। वस्त्र नहीं वासना उतारना कठिन है।

११२३. वासना के पीछे ही घर गृहस्थी बसाना पड़ती है यदि वासना वश में हो जाये तो संसार वास समाप्त हो जाये। सारा संसार वासना का फल है।

११२४. विषयों का सेवन छोड़ने पर भी जिसके विषय वासना नहीं छूटी उसकी भव सन्तति अभी कम नहीं हुई है। विकार भाव जीव को ज्ञान शून्य बना देता है।

११२५. इस लोक में शरीर के शीलवंत लाखों करोड़ों मिल जायेंगे पर मन के शीलवंत कम ही मिलेंगे।

११२६. जिनालय बाहरी मंदिर है, शरीर रूपी घर भीतरी मंदिर है।

११२७. जब-तक आपका कामदेव सोया है तभी तक आप संयमी हैं।

११२८. शील के साथ गरीब होना श्रेष्ठ है पर कुशील के साथ वैभवशाली होना ठीक नहीं है।

११२९. शील में ताकत होती है, सील बन्द में विश्वास होता है, सील खुल गई तो विश्वास चला जाता है। संसार में सबसे श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य है।

११३०. संकट के समय जिसका कोई सहारा नहीं होता उसका शील सहारा होता है, सभी व्रतों में शील राजा है।

११३१. शील अपरिमित बल है, शील सर्वोत्तम शस्त्र है, शील श्रेष्ठ आभूषण है, शील चिन्तामणि रत्न है और शील ही रक्षा करने वाला अद्भुत कवच है।

११३२. विज्ञान ने जितनी समस्याएँ हल की हैं, उतनी ही नई समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। (इन्दिरा गाँधी)

११३३. विद्या लाभ विद्यालय के ऊपर नहीं, बल्कि मुख्यतः छात्र के ऊपर निर्भर करता है।

११३४. अशुद्ध हृदय लेकर अपनी पुस्तकों या अपने शिक्षकों के पास मत जाइए शुद्ध हृदय लेकर उनके पास जाइए, तभी आपको जो कुछ आप चाहते हैं वह प्राप्त होगा।

११३५. अनुभव बीस वर्ष में सिखाता है, विद्वत्ता एक वर्ष में उससे अधिक सिखा देती है।

११३६. अभीष्ट फल की प्राप्ति हो या न हो विद्वान् पुरुष उसके लिए शोक नहीं करता है।

११३७. विद्वान् की संसार में प्रशंसा होती है, विद्वान् सारे भूमंडल का गौरव है, विद्या से सभी कुछ मिल जाता है और विद्या की सभी जगह पूजा होती है।

११३८. बुद्धिमान, प्रज्ञावान, बहुश्रुत तथा बहुत बातों का विचार करने वाले रोते नहीं हैं, आदमियों का यही परम शरण स्थान है कि पण्डित शोक को जीत लेते हैं।

११३९. विद्वानों का मनोरंजन करने वाली शास्त्र ज्ञान गरिमा मूर्खों का मनोरंजन नहीं कर सकती, मोतियों में छेद करने वाली सलाई पाषाणों के छेदन में काम नहीं आ सकती है।

११४०. महान् लोग खेल में भी ऐसा शब्द नहीं कहते कि जिससे चैतन्य शील व्यक्ति उपदेश न ले सकें लेकिन बुद्धिमत्ता के सौ अध्याय भी नादान के सामने पढ़ें तो उनके कानों को खेल ही लगते हैं।

११४१. जो व्यक्ति मूर्खों के सामने विद्वान् लगने की कामना करते हैं, वे विद्वानों के सामने मूर्ख लगते हैं।

११४२. राजा, मंत्री, वैद्य, विद्वान् तथा संन्यासी को वृद्धावस्था अलंकृत करती है तथा वेश्या, योद्धा, गायक एवं सेवक को अपमानित कराती है।

११४३. पंखों के बिना उड़ा नहीं जा सकता नाव के बिना पार नहीं उतर सकते, शील के बिना कभी भी निर्वाण प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

११४४. शील रूपी चिंतामणि का विनाश हो जाने पर कौन-सी वस्तु है जो नष्ट नहीं हो जाती है?

११४५. उस स्वर्ण से भी क्या जहाँ चारित्र का खण्डन हो? यदि मैं शील से विभूषित हूँ तो मुझे और क्या चाहिए?

११४६. स्त्रियों में समझ हो तब भी वे विचित्र प्राणी होती हैं।

११४७. स्त्री को छोड़ने पर जगत् छूट जाता है अतः स्त्री छोड़कर सुखी बनें।

११४८. स्त्रियाँ मनुष्यों को जन्म देने वाली हैं किन्तु प्राणों को हरने वाली भी हैं, ये भीरु स्वभाव वाली भी हैं तथा अग्नि में प्रवेश भी कर सकती हैं, ये अत्यन्त कठोर भी हैं, साथ ही पल्लव के समान कोमल अंगों वाली भी हैं, वे सहज ही मुग्ध हो जाने वाली भी हैं किन्तु विद्वानों को भी ठग सकती हैं।

११४९. मोहित करती हैं, मदयुक्त बनाती हैं, उपहास करती हैं, भर्त्सना करती हैं, प्रमुदित करती हैं, दुःख देती हैं, ये स्त्रियाँ पुरुषों के दयामय हृदयों में प्रवेश कर क्या-क्या नहीं करती हैं?

११५०. सब जगह पुरुष ही पंडित नहीं होता, जिस-तिस विषय में विचक्षण स्त्रियाँ भी पंडिता होती हैं।

११५१. स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशंसा करो।

११५२. स्त्री पुरुष से पूजा नहीं चाहती किन्तु सुख-दुःख में सहयोग चाहती है।

११५३. अन्धे, कुब्जे, कोढ़ी, रोग से पीड़ित तथा आपत्ति ग्रस्त पति को जो नहीं छोड़ती वह महासति है।

११५४. संसार में लकड़ी, डोरी या लोहे का बंधन उतना दृढ़ नहीं है जितना चंचल नेत्रों वाली स्त्री के मुख और ललित वाणी का दृढ़ बंधन है।

११५५. सैकड़ों पुराणों, शास्त्रों व स्मृतियों के अध्ययन से उत्पन्न विवेक तभी तक समर्थ रहता है, जब तक मृग नयनी स्त्री का कटाक्ष हृदय में स्थान नहीं बना लेता है।

११५६. हाथी जब कमलिनी को देख लेता है तब उसे ग्राह नहीं दिखाई देता उसी प्रकार पुरुष जब स्त्री को देख लेता है तब उसे नरक का भी डर नहीं लगता है।

११५७. अवलोकन, संभाषण, विलास, परिहास, क्रीड़ा और आलिंगन आदि तो दूर रहे स्त्रियों का स्मरण भी मन को विकृत करने के लिए पर्याप्त है।

११५८. विंध्यपर्वत के वन में भूख-प्यास से पीड़ित होकर मर जाना अच्छा है, सर्पों से भरे हुए तथा घास- फूस के घिरे कुँए में गिरना अच्छा है, गड्ढे और भँवर वाले गहरे जल में डूब जाना अच्छा है परन्तु समझदार कुलीन का शील से भ्रष्ट होना अच्छा नहीं है।

११५९. स्त्री के संग से मन में शीघ्र ही विषय वासना उत्पन्न हो जाती है, उससे वैराग्य नष्ट होता है और वैराग्य न होने से पुरुष उत्तम तपस्या से भ्रष्ट हो जाता है अतः तपस्वियों को स्त्रियों का संग नहीं करना चाहिए क्योंकि वह विषय-कषाय की जड़ है एवं ज्ञान वैराग्य का विनाश करने वाली है।

११६०. सुख प्राप्ति की इच्छा रखने वालों को संयम का जीवन व्यतीत करना चाहिए।

११६१. संयम के चार रूप हैं—मन का संयम, वचन का संयम, देह का संयम और उपाधि सामग्री का संयम।

११६२. जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा वह सदैव दूसरों का सेवक रहेगा।

११६३. सर्व शक्तिमान वही है जो आत्म संयमी है।

११६४. असंयमी व्यक्ति जानवरों से भी गया बीता है। जानवर भी भोजन और वासनापूर्ति में कुछ संयम रखते हैं किन्तु इंसान बुद्धिमान होकर भी आहार-विहार में बड़े असंयमी होते हैं जिससे वे बीमार पड़ते हैं, संयम एक ऐसा अंकुश है जो हमें विवेक और सत्य के पथ पर आरूढ़ रखता है।

११६४. सब संयम का मूल 'जुबान और जननेन्द्रिय' को नियंत्रण में रखना है।

११६५. आत्म संयम की रक्षा अपने खजाने के समान ही करो क्योंकि उससे बढ़कर इस जीवन में और कोई निधि नहीं है।

११६६. धन्य है उसका पुरुषत्व जो पराई स्त्री पर दृष्टि भी नहीं डालता वह केवल श्रेष्ठ और धर्मात्मा ही नहीं वह सन्त है।

११६७. यदि तुम्हें किसी बात की कामना करनी ही है, तो पुनर्जन्म के चक्र से छुटकारा पाने की कामना करो और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम कामना को जीत लोगे।

११६८. उस आदमी को देखो, जो दूसरों के प्रति बिना अपने किसी कर्त्तव्य को कम किए शीलवान रह सकता है, वह पृथ्वी को उत्तराधिकार में पालेगा।

११६९. वेश्या जब अपने प्रेमी का दृढ़ आलिंगन करती है, तो वह ऊपर से यह प्रदर्शन करती है कि वह उससे प्रेम करती है; परन्तु मन में तो उसे ऐसा अनुभव होता है, जैसे कोई बेगारी अन्धेरे कमरे में किसी अज्ञात लाश को छूता है।

११७०. जिन लोगों के मन का झुकाव पवित्र कार्यों की ओर है, वे असति स्त्रियों के स्पर्श से

अपने शरीर को कलंकित नहीं करते हैं।

११७१. चंचल मन वाली स्त्री, मद्यपान और जुअ, ये उन्हीं लोगों के लिए आनन्दवर्द्धक हैं, जिन्हें भाग्य– लक्ष्मी छोड़ देती है।

१३. गरीब रोटी को और अमीर भूख को ढूँढ़ता

११७२. जो विषयों में फँसा है, वही असमर्थ है।

११७३. विषय–वासनाएँ व्यक्ति को अंधा बनाती हैं।

११७४. योगी की बाहर की आँखें बंद होती हैं और अंदर की खुलती हैं किन्तु भोगी की बाहर की आँखें खुलती हैं अंदर की बंद हो जाती हैं।

११७५. विचार और वासना का कोलाहल ही अन्दर की आवाज को नहीं सुनने देता है।

११७६. मनुष्य धन के अभाव में इतना कष्ट नहीं पाता, जितना अपने फिजूल खर्चों के कारण कष्ट पाता है।

११७७. वासनाओं का त्याग करो, चिंताएँ स्वयं पीछा छोड़ देंगी।

११७८. संसार दुःख का कारण नहीं संसार के प्रति आसक्ति दुःख का कारण है।

११७९. यह दुनिया एक सुसज्जित नवयुवती के समान है जो प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

११८०. जो व्यक्ति दरिद्र होकर भी इन्द्रियजन्य सुखों की कामना करता है वह निन्द्य या पशु तुल्य है।

११८१. आज भूखे पेट वाले ज्यादा पाप नहीं करते बल्कि भरे पेट वाले ज्यादा पाप करते हैं।

११८२. पाप पहले तो बहुत मजा देता है, फिर जिंदगी भर सजा देता है।

११८३. छिपकर किया गया पाप जीवन भर काँटे की तरह चुभता रहता है।

११८४. उसी की बुद्धि ठीक अथवा स्थिर रह सकती है, जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में हों। भोग भोगने से नहीं रोकने से शान्त होते हैं।

११८५. भोगों में लिप्त रहने वाला कभी सचेत नहीं होता है।

११८६. जितना भोग करना बुरा नहीं है, उतना वर्जित भोग का चिन्तन करना बुरा है।

११८७. 'दूषित मस्तिष्क' जीना दूभर कर देता है।

११८८. योगी के द्वारा सबको सुख मिलता है और भोगी के द्वारा सबको दुःख मिलता है।

११८९. भगवान् को अपना मानना योग है और भगवान् से कुछ चाहना भोग है।

११९०. विषयों को मन में घुमाना ही कुमार्ग है।

११९१. भोग ही रोग के कारण हैं–अति भोग अर्थात् अति रोग।

११९२. नाग के द्वारा आधा निगले जाने पर भी मेंढ़क मक्खियों को खाता रहता है, उसी तरह तृष्णांध पुरुष अवस्था के ढल जाने पर भी विषय–सेवन करता रहता है।

११९३. वासनाएँ आदमी को बदसूरत और सरलता आदमी को सुन्दर बना देती है।
११९४. विषयभोग में रमने वाला आत्मसुख माँगेगा भी तो नहीं मिलेगा।
११९५. विषय भोग दिखते तो सरल हैं परन्तु पड़ते बहुत मँहगे हैं।
११९६. तामसिक अन्न खाने वाले व्यक्ति की सन्तान दुर्गुणों का भंडार होती है।
११९७. व्रत से विकास व वासना से विनाश होता है।
११९८. यदि आपको शान्ति चाहिए हो तो वासना से मुक्त होना चाहिए।
११९९. किसी भी भोग को भोगें, अन्त में उस भोग से अरुचि अवश्य होती है यह नियम है, परन्तु मनुष्य भूल यह करता है कि वह उस अरुचि को महत्त्व देकर उसको स्थायी नहीं बनाता है।
१२००. लोगों में भोग और संग्रह की वृत्ति अधिक होने से ही अकाल पड़ता है।
१२०१. हम जिससे सुख लेंगे उसका दास होना ही पड़ेगा, सुख का भोगी कभी स्वाधीन नहीं हो सकता है। सोचो! इतनी धन सामग्री भोग पाओगे या नहीं क्योंकि साथ ले जाने की व्यवस्था नहीं है।
१२०२. साधना में जीने वाला नहीं अपितु साधन में जीने वाला अन्तिम समय में सोचता है अब क्या होगा? जीभ के स्वाद के लिए ही व्यक्ति सारे पाप करता है।
१२०३. सुख भोग की लालसा आत्म सम्मान का सर्वनाश कर देती है।
१२०४. भोगों को नहीं भोगा हम ही भोगे गये, तप नहीं तपा गया हम ही तप्त हो गये, काल नहीं बीता हम ही बीत गये तृष्णा जीर्ण नहीं हुई हम ही जीर्ण हो गये।
१२०५. विषय तो विष्ठाभोगी सूकर-कूकर को भी मिल जाते हैं अतः आत्महित में लगें।
१२०६. आपके पास जो कुछ है उसका मजा उठाएँ, उसके स्वाद को यह कहकर खराब न करें कि मेरे पास वह नहीं है। आनंद निज के सुधार में है 'पर' में नहीं।
१२०७. निर्माल्य भोग करने वाला संतान हीन, सम्पत्ति हीन, सुख हीन होता है।
१२०८. इस जीव ने नरकों में महादुःख भोगे हैं, यदि उनका स्मरण हो जाये तो कौन भोगों की इच्छा करेगा?
१२०९. भोगों की भट्टी में अनंत भव भस्म हो चुके हैं। "मदन का दमन तन से नहीं मन से करें" तिल के बराबर जमीकन्द में अनन्त जीव होते हैं, जमीकन्द खाने से मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा वे सब जीव खा लिए जाते हैं।
१२१०. व्याघ्र, चोर, शत्रु, सर्प, अग्नि, तीव्र रोग और विष एक ही भव में दुःख देते हैं परन्तु भोग असंख्यात भवों में दुःख देते हैं।
१२११. जो भोगों को तो छोड़ता नहीं है मात्र मुनि मुद्रा को ग्रहण करता है, उसका तप और ध्यान, मौन आदिक सभी श्रम व्यर्थ हैं।

१२१२. शक्ति क्षीण होने से बुढ़ापा भी शीघ्र आता है।
१२१३. तन से वृद्ध हो गये तो कोई बात नहीं किन्तु मन से वृद्ध मत बनो।
१२१४. आत्महित के कार्य करने वाला मरने के कुछ घंटे पूर्व ही वृद्ध होता है।
१२१५. वृद्धावस्था और मृत्यु के वश में पड़े हुए मनुष्य को औषधि, मंत्र, होम और जप भी नहीं बचा पाते हैं।

१४. सबसे सुन्दर एक-जिसका नाम विवेक

१२१६. ज्ञानी श्मशान में रहकर भी सिद्धों की बस्ती का जीवन जीता है और अज्ञानी बस्ती में रहकर भी गिद्धों की आसक्ति का जीवन जीता है।
१२१७. जो कार्य प्रज्ञा कर सकती है वह कार्य तलवार नहीं कर सकती है।
१२१८. जिस कषाय भाव से वर्तमान की शान्ति भंग हो रही है उससे भविष्य में सुख कैसे मिल सकता है। 'गुस्सा' करना दूसरे की गलतियों की सजा खुद को देना है।
१२१९. अपनी हजारों गलतियों के बाद भी हम अपने आपको प्यार करते हैं फिर किसी की एक गलती पर हम उससे नफरत क्यों करते हैं ?
१२२०. बुद्धिमान वह नहीं जो बहुत सी बातें जानता है अपितु वह है जो काम की बातें अधिक जानता है।
१२२१. बुद्धिजीवी समस्याओं को हल करते हैं जबकि मेधावी समस्याओं को पैदा ही नहीं होने देते हैं। बुद्धिमान वह है जो बुद्धिमत्ता से ज्यादा खुशी को पसंद करता है।
१२२२. दुष्कर्म करने की अपेक्षा दुष्कृत को स्वीकार करने में अधिक बुद्धिमत्ता है।
१२२३. बुराई से बुराई पैदा होती है इसलिए आग से भी बढ़कर बुराई से डरना चाहिए।
१२२४. किसी वस्तु के दोष का ध्यान न करते हुए विद्वान् उनके गुणों को ग्रहण कर लेते हैं जैसे भौंरा काँटे वाले पौधे का भी उपयोग कर लेता है।
१२२५. वास्तविक विद्वान् वही है जो दूसरों में गुणों को खोजता है एवं अवगुणों को नहीं देखता है।
१२२६. विवेकशील कीचड़ में पड़ें रत्न को भी ग्रहण कर लेते हैं।
१२२७. पराक्रम का प्रमुख अंग विवेक है।
१२२८. विवेकी मनुष्य को पाकर गुण सुंदरता को प्राप्त होते हैं जैसे सोने में जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त सुशोभित होता है।
१२२९. उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं में शोक और आनंद दोनों नहीं होते हैं।
१२३०. कोपाग्नि, दुर्भाव, ईर्ष्या और प्रतिशोध विवेक को नष्ट कर देते हैं।
१२३१. न्याय से कमाओ, विवेक से खर्च करो।

१२३२. विवेकहीन व्यक्ति के सारे गुण व्यर्थ हैं।

१२३३. बिना विवेक के वीरता महासागर की लहरों में डोंगी-सी डूब जाती है।

१२३४. दृश्य को बदलना अपने हाथ में नहीं है परन्तु दृष्टिकोण को बदलना अपने ही हाथ में है, निषेधात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति को हताश किए बिना नहीं रहता है।

१२३५. किसी भी व्यक्ति को नाराज किए बिना अपनी बात कह देने की काबलियत ही व्यावहारिकता है। अधिक बलवान तो वही होते हैं जिनके पास बुद्धि बल होता है, जिनमें केवल शारीरिक बल होता है उन्हें बलवान नहीं माना जाता है।

१२३६. जिनके ऊपर दोषारोपण करने से योग और क्षेम में बाधा आती हो उन लोगों को देवता की भाँति सदा प्रसन्न रखना चाहिए।

१२३७. सारी शिक्षाएँ एक किनारे रखी जाएँ और शिष्टाचार दूसरे किनारे रखा जाए तो शिष्टाचार की कीमत अधिक होगी।

१२३८. श्रेष्ठ घोड़ों को कोड़े की छाया ही काफी होती है, कोड़ा नहीं, कोड़े मारने की जरूरत तो खच्चरों को होती है, घोड़े तो कोड़े की छाया में ही चल पड़ते हैं।

१२३९. यह संसार उन लोगों के लिए सिद्ध है जो अवसर देखकर काम करते हैं।

१२४०. उत्पत्ति और विनाशशील वस्तुओं के वश में न होना अर्थात् उनके लिए दुःखी न होना ही मनुष्य की वास्तविक विजय है।

१२४१. जो बिना कहे समझे वह देवता, जो कहने पर समझे वह मनुष्य, जो कहने पर भी न समझे वह जानवर के समान है।

१२४२. दुनिया आपके अनुसार नहीं चलेगी आपको दुनिया के अनुसार चलना होगा अतः यदि संसार में सुखी रहना है तो समन्वय करना सीख लें।

१२४३. जीने का आनंद संघर्ष में नहीं समर्पण में होता है संघर्ष में हमेशा पुरस्कार नहीं तिरस्कार ही मिलता है और समर्पण में सदा आदर-सत्कार मिलता है, इतिहास में हनुमान का समर्पण और रावण का संघर्ष दोनों दृष्टान्त हैं।

१२४४. परिस्थितियों व वातावरण के अनुरूप अपने आपको ढालने (बदलने) वाला ही सुखी होता है। सुख के लिए अपने से हीन गरीबों को देखकर जियें।

१२४५. अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, शुरू में यह मेलजोल बड़ा सुखद लगता है किन्तु अंत में तिरस्कार को जन्म देता है।

१२४६. आज जो अच्छा महसूस हो रहा है वह कल भी अच्छा था पर समझ नहीं पा रहे थे क्योंकि हमारी सोच अच्छी नहीं थी अतः इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि अच्छे-बुरे पदार्थ नहीं, हमारी सोच होती है।

१२४७. प्रतिभावान वह है जिसमें समझदारी व कार्यशक्ति विशेष है।

१२४८. आँखों के सामने जब फूल खिला है तो काँटों के बारे में सोच-सोचकर स्वयं को क्षत-विक्षत मत कीजिए।
१२४९. विवेकी पुरुष को अपने मन में यह विचार करना चाहिए कि मैं कहाँ हूँ, कहाँ जाऊँगा? मैं कौन हूँ? यहाँ क्यों आया हूँ? और किसलिए? किसका शोक करूँ?
१२५०. स्वयं को न बदलने वाला कभी आनंदित नहीं हो सकता, सदा संतप्त व दु:खी रहता है तथा वह स्वर्ग में भी नरक निर्मित कर देता है।
१२५१. रात-रात भर प्रार्थना करने की अपेक्षा एक घंटा भी दूसरों को ज्ञान देने में खर्च करना ज्यादा अच्छा है। ज्ञानवान् को जगत् में कोई झंझट नहीं रह जाती है।
१२५२. यदि किसी वस्तु की आवश्यकता है तो वह है व्यावहारिक ज्ञान की।
१२५३. जिसके पास ज्ञान है वही सच्चा धनवान है।
१२५४. ज्ञानी पद ग्रहण करते समय रोता है और अज्ञानी पद ग्रहण करते समय हँसता है क्योंकि पद आपद का आस्पद (स्थान) है।
१२५५. जन्म के बाद मृत्यु, उत्थान के बाद पतन, संयोग के बाद वियोग, संचय के बाद क्षय निश्चित है। यह समझ कर ज्ञानी हर्ष व शोक के वशीभूत नहीं होते हैं।
१२५६. जो ज्ञानियों के साथ चलता है वह अवश्य ज्ञानी हो जाता है।
१२५७. ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक से पढ़ सके और परिस्थिति के अनुसार चल सके।
१२५८. ज्ञानी प्रशंसा से फूलते नहीं हैं और निंदा से कूलते नहीं हैं।
१२५९. स्थितियाँ गतिशील हैं उन्हें लेकर चिन्तित होना ज्ञानी को शोभा नहीं देता है।
१२६०. भूल मालूम होते ही उसे तुरन्त सुधारना ही ज्ञानी का लक्षण है।
१२६१. स्वयं की प्रशंसा व दूसरों की निन्दा (बुराई) करने वाला कभी ज्ञानी नहीं हो सकता है।
१२६२. दो ज्ञानियों के मिलने से रहस्य खुलते हैं और दो अज्ञानी के मिलने से विसंवाद के द्वार खुलते हैं।
१२६३. बल से कम बुद्धि से ज्यादा काम लेने वाला विवेकी माना जाता है।
१२६४. प्रशंसा करने वाले ने तुम्हें क्या दे दिया? वह तो आप में क्षोभ पैदा करके संकल्प-विकल्प की चक्की चलाकर चला गया है।
१२६५. जब सुखी जीव भी अपना सुख और ज्ञान नहीं दे सकते हैं तब जिनके पास सुख नहीं है वे हमें सुखी कैसे कर सकते हैं।
१२६६. गाड़ी में पेट्रोल के समान संहनन के बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता है।
१२६७. रात्रि में 'पानी' पीना खून एवं भोजन व द्रव्य खाना 'मांस' के समान माना गया है, तब रात्रि में अभिषेक पूजन कैसे करें?
१२६८. नरकों में उपदेश देने वाले आचार्य नहीं होते फिर भी पूर्व संस्कार से सम्यग्दर्शन हो जाता है।

१२६९. चाण्डाल धीवरादि सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते हैं अणुव्रत धारण कर सकते हैं पर अभिषेक नहीं कर सकते हैं क्योंकि जैन दर्शन में पर्याय की प्रधानता से क्रियायें होती हैं।

१२७०. विज्ञान मानववादी है और महावीर मानवतावादी थे, आतंकी दुर्घटनाओं, बड़ी-बड़ी बीमारियों में भी वर्तमान विज्ञान के उपकरण कारण बन रहे हैं लोगों का जीवन-अस्त व्यस्त हो रहा है, लाभ कम हानि ज्यादा हो रही है।

१२७१. 'पर' का विचार एवं पर की चर्चा ही बेचैनी के कारण है।

१२७२. कषाय करने वाला व्यक्ति अपना पुण्य क्षीण करता है व पाप बाँधता है।

१२७३. अपने मिलने वालों के संग जैसा हम व्यवहार करेंगे, वही बीज बनकर पनपेगा, वैसा वे हमारे साथ व्यवहार करेंगे। अपने साथियों को पद, आयु के अनुसार आदर-सम्मान स्नेह दें, उनके अभिवादन का समुचित उत्तर दें, बात के दौरान अशिष्ट और अश्लील भाषा का प्रयोग न करें, उपकार के बदले धन्यवाद देना न भूलें, किसी रुग्ण से बात करें तो सदा हौसला बढ़ायें, रोग की भीषणता का आभास न होने दें। हर्ष-विषाद न करके समता की रक्षा करना भी तपस्या है।

१२७४. सोचना आस्रव है, सोचना ही है तो आत्मा परमात्मा का चिंतन करो। बोलना आस्रव है, बोलना ही है तो जिससे वैराग्य का विकास हो वही बोलो। चेष्टा आस्रव का कारण है, करना पड़े तो इन्द्रिय संयम, प्राणी संयम के संयमरूप चेष्टा हो।

१२७५. काम वह करो जो सबकी जानकारी में किया जा सके। बात वह बोलो जिसके गुप्त बनी रहने की चिन्ता न करनी पड़े।

१२७६. बच्चों को खेलने का अवसर दीजिए, जो खतरों से नहीं खेलेंगे वे जीवन में आगे कैसे बढ़ेंगे? किसी बच्चे को वह पुस्तक मत दीजिए जो आप खुद नहीं पढ़ेंगे।

१२७७. कमाते हैं सिर से पर सिर को भोजन कराने अर्थात् स्वाध्याय की कभी सोचते ही नहीं है।

१२७८. कॅरियर निर्धारण में दूरदर्शी सोच, संयम, स्वयं की रुचि, प्रभुता, योग्यता, हुनर हर पहलु का सही मिश्रण होना चाहिए।

१२७९. हाथ-पैर के साथ-साथ मंदिर में मन को भी पवित्र करके जाना चाहिए।

१२८०. कोई भी कार्य हो क्रय-विक्रय, किसी तरह की सेवा, घर का कोई कार्य या रिश्ता सभी जगह जरूरत का सही आँकलन अत्यन्त आवश्यक है।

१२८१. मूर्खों की संख्या हमेशा ज्यादा होती है। हमें क्या मूर्खों की परवाह करनी चाहिए या समझदारों का अनुसरण करना चाहिए?

१२८२. प्रश्न ऐसा न पूछें, जिसका कोई उत्तर ही न हो।
१२८३. बोलने और प्रश्न करने से पहले सोचें कि परिणाम क्या होगा ?
१२८४. अधिक लोगों के द्वारा लिया गया निर्णय सभी के लिए सही हो जरूरी नहीं।
१२८५. अगर निर्णय सही है तो आप सफल कहलायेंगे और अगर गलत हुआ तो आप अच्छे मार्गदर्शक बनेंगे, निर्णय उचित समय में लिए जाने चाहिए, विलम्ब करने से विफलता की संभावना अधिक रहती है।
१२८६ वियुक्त वस्तु के संयोग होने का नियम नहीं है, परन्तु संयुक्त वस्तु का वियोग नियम से होता है। सदा अपने ज्ञायक स्वभाव की रक्षा करें।
१२८७. अच्छा या बुरा कुछ नहीं है, केवल विचार ही किसी वस्तु को अच्छा या बुरा बनाते हैं।
१२८८. आँख से देखना नियत है पर क्या देखेगी यह अनियत है अन्यथा पञ्चेन्द्रिय निरोध मूलगुण पालन के पुरुषार्थ का उपदेश क्यों?
१२८९. वे ही शब्द अनुराग से सुनो जो परिणाम की निर्मलता के लिए आवश्यक है।
१२९०. उसे ही देखो जिसके देखने से आपके दर्शन, ज्ञान, चारित्र में बाधा न आ सके।
१२९१. वही भोजन पान, रस ग्रहण करो, जितने से समिति पालन और स्वाध्याय आदि संयम के साधन के योग्य शारीरिक शक्ति रहे।
१२९२. वही बात विचार में लाओ जो आत्महित के लिए आवश्यक हो, यदि विपरीत बात विचार में आवें तो भेदविज्ञान की भावना से शीघ्र नष्ट कर दो।
१२९३. किसी के सम्बन्ध में किसी को कुछ समाचार आदि कहने में सबके हित का ध्यान रखना मनुष्य जीवन में ऊँचे उठने का एक मन्त्र है।
१२९४. दूसरे की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से असन्तुष्ट न रहकर अपनी स्वच्छन्द प्रवृत्ति से असंतुष्ट रहो। वीर प्रतिज्ञा निभाता है, दीन च्युत हो जाता है।
१२९५. ऐसी चेष्टा मत करो जिससे तुम्हारा अहंकार प्रतीत हो या दूसरों को क्लेश उत्पन्न हो। शान्ति का प्रदर्शन भी अशान्ति के बिना नहीं होता है।
१२९६. तुम्हारे नाम से यदि कोई सामाजिक संस्था खोली जाये, तब वहाँ कभी डेरा नहीं डाल देना क्योंकि वह राग का साधन हो सकता है।
१२९७. थोड़ा-सा तो जीवन है, उसका भी विश्वास नहीं और विकल्प साधन कितने बना रखे हैं क्या यह शान्ति का मार्ग है?
१२९८. उम्र के बड़े हो गये तो अब भावनाओं के भी बड़े होना चाहिए, लड़के वालों से लड़की ने कहा, ''रामायण तो आप अभी सुन लीजिए, महाभारत घर आकर सुनाऊँगी।''
१२९९. झूठी तसल्ली देर सवेर चिंता का कारण होती है।
१३००. सकरी गली से आते हुए साँड को देखकर राजा का स्वामित्व जताये बिना रास्ता छोड़

देना बुद्धिमानी है।

१३०१. नकल करना है तो फिल्म एक्टर की चेष्टाओं की नहीं मूल नायक की करो।

१३०२. 'ओल्ड इज गोल्ड' यह नियम हर जगह लागू नहीं होता, जिस दवा की डेट निकल गयी है, वह अभक्ष्य है, हर पुराना विचार सही हो जरूरी नहीं है।

१३०३. देव-अदेव, पात्र-अपात्र, शुभ-अशुभ, गुण-अवगुण और शास्त्र आदि के विषय में जो विचार है वह विवेक कहलाता है, विवेक के बिना सब व्यर्थ है।

१३०४. दिन में कोई भी कार्य ऐसा न करें, जिससे रात की नींद हराम हो जाए।

१३०५. रात में कोई कार्य ऐसा न करें कि सुबह मुँह दिखाने योग्य न रहें।

१३०६. एक मिनट मोबाइल से बात करने में एक घंटे की शान्ति भंग हो जाती है।

१३०७. एक घंटे टी.वी. देखने पर १२ घंटे आँख बन्द करना जरूरी होता है।

१३०८. अपेक्षा ही मनोव्यथा की जड़ है अतः किसी से भी अपेक्षा न रखें।

१३०९. जो उपलब्ध है उसकी श्रेष्ठता न समझी जाये तो अभाव ही दिखेगा।

१३१०. जो काम प्रेम से हो सकता है वह क्रोधावेश या द्वेष से नहीं होता है।

१३११. जहाँ कुछ दिन ठहरना है वहाँ मकान बना रहा है, जहाँ अनंत काल रहना वहाँ के बारे में सोच नहीं रहा है। ''सज्जन को शान्ति अमृत है।''

१३१२. तोता पिजड़े को नहीं सजाता, आप तन पिंजड़े को कैसे सजाने में लगे हो, तोता मुक्त होना चाहता आप क्यों नहीं, तोता पराधीनता के कारण दुःखी, आप स्वतंत्र होकर क्यों दुःखी जीवन जी रहे हो। धर्म का ह्रास पापियों से नहीं ढोंगी/पाखण्डी धर्मात्माओं से होता है।

१३१३. किसी से भी बहुत ज्यादा उम्मीद और आशा मत पाल लेना वरना जब उम्मीद पूरी नहीं होगी तब बहुत कष्ट होगा।

१३१४. इंसान होता है प्यार करने के लिए और पैसा होता है उपयोग करने के लिए किन्तु लोग प्यार पैसों से करते और उपयोग इंसान का करते हैं।

१३१५. अपनी गलतियाँ मानने में कभी भी देर न करें क्योंकि रास्ता जितना लम्बा होगा, वापसी उतनी मुश्किल हो जायेगी।

१३१६. जीवन में दो व्यक्ति असफल होते हैं, एक वो जो सोचता है पर करता नहीं, एक वो जो करता है पर सोचता नहीं।

१३१७. चमकते काँच के पीछे कहीं मूल्यवान रत्नों को न्यौछावर तो नहीं कर रहे हो ?

१३१८. जीवन भर कोई व्यक्ति पाप नहीं करता किन्तु क्षण भर का पाप जीवन बर्बाद करता है।

१३१९. ईर्ष्या, लोभ, काम, क्रोध आदि का कोई भी वेग हो, आप उस वेग में तात्कालिक कोई भी निर्णय मत लेना क्योंकि आवेग में विवेक खो जाता है और आवेग में लिया गया निर्णय कभी भी यथार्थ नहीं होता। कार्य दिख रहा है कारण खोजो।

१३२०. किसी भी रोते या मुस्कुराते को देखकर प्रभावित मत होना क्योंकि ज्ञानी कार्य को नहीं कारण को देखता है, अश्रुपात देखकर न्यायालय में न्याय नहीं दिया जाता, हेतु देखकर न्याय दिया जाता है, अश्रु देखकर निर्णय मत करना, चेहरा और भाव भी देखना जरूरी है।

१३२१. योग्यता और परिस्थिति को ध्यान में न रखकर महत्त्वाकांक्षाएँ गढ़ने वाला दु:खी रहता और उपहास सहता है।

१३२२. पवित्रता की परीक्षा अपवित्रता के घर्षण में होती है।

१३२३. ऐसा कोई काम मत करो जिससे स्वयं के या दूसरे के परिणाम खराब हो। जो खतरों से डरते हैं, जिन्हें कष्ट सहने में भय लगता है, जिन्हें कठोर परिश्रम करना नहीं आता, उन्हें अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने की कल्पना नहीं करना चाहिए।

१३२४. आप खाली हाथ आये और खाली हाथ जाओगे, जो आज आपका है वह कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा, आप इसे अपना समझकर प्रसन्न हो रहे हो, बस यही प्रसन्नता आपके दु:खों का कारण है।

१३२५. जहाँ बुद्धि के प्रयोग की आवश्यकता है वहाँ बल का प्रयोग करना व्यर्थ है।

१३२६. बुद्धि क्षीण होने लग जाये तो भी विवेक को क्षीण मत होने देना।

१३२७. बुद्धिमान वे हैं जो बोलने से पहले सोचते हैं, मूर्ख बोलते पहले सोचते बाद में हैं।

१३२८. बुद्धिमान व्यक्ति धन के नाश को, मनस्ताप को, पत्नी के दोषों को प्रकट न करें।

१३२९. बुद्धिमान को उपाय के साथ-साथ कार्य की हानि को भी सोच लेना चाहिए।

१३३०. बुद्धिमान को उत्तम और अधम व्यक्तियों से विरोध नहीं करना चाहिए।

१३३१. अज्ञानी सधर्मी व ज्ञानी विधर्मी के द्वारा शोधित व पकाया भोजन ग्रहण न करें।

१३३२. याद रखना जिस दिन आपके कारण माँ-बाप की आँखों में आँसू आते हैं, उस दिन आपका किया हुआ सारा धर्म माँ-बाप के आँसू में बह जाता है।

१३३३. श्री के राग में श्रीजी को मत भूलो। राग सत्य पर आवरण कर देता है।

१३३४. यदि सपने सच न हो तो रास्ते बदलो सिद्धान्त नहीं क्योंकि पेड़ भी सुख से जीने के लिए पत्तियाँ बदलते जड़ें नहीं बदलते हैं।

१३३५. अन्दर जब विषय कषाय की आँधी चलती है तब विवेक की आँख बन्द हो जाती है।

१३३६. रत्नत्रय धर्म को पाकर विषय सुख में रंजित होना भस्म के लिए चंदन को जलाने के समान निष्फल है। विषय विरक्त होने पर भी तप भावना, धर्म भावना सुखपूर्वक मरणादि रूप समाधि अति दुर्लभ है।

१३३७. जहाँ विवेक होता है वहाँ वेग नहीं काम करता, जहाँ वेग होता वहाँ विवेक नहीं होता है।

१३३८. करणीय अकरणीय का ज्ञान ही विवेक कहलाता है।

१३३९. सब प्रकार की क्रियाओं में विवेक प्रधान है।

१३४०. विवेकी वैरागी मनुष्य स्त्री को शृंखला के समान मानता है।

१३४१. जब आपका तन भी आपका साथ नहीं देगा तो फिर तन के सम्बन्धी कैसे आपका साथ दे सकते हैं, जिसके लिए कमाया वह तन भी आपके साथ नहीं जायेगा। पाप कर्म के उदय से घर में भी बहुत दुःख होता है।

१३४२. जब हम दिन की शुरूआत करते हैं तब लगता है कि पैसा ही जीवन है, लेकिन जब शाम को लौटकर घर आते हैं तब लगता है कि शान्ति ही जीवन है।

१३४३. उपलब्धि और आलोचना एक-दूसरे के मित्र हैं, उपलब्धियाँ बढ़ेगी तो निश्चित ही आपकी आलोचनाएँ होंगी।

१३४४. श्रद्धा रहित का तप करना एवं साधु बनना व्यर्थ है।

१३४५. साधु साधना से दिव्य चिन्तामणि भी प्राप्त कर सकते और खली का टुकड़ा भी, अब विवेक उस साधक का है कि वह क्या प्राप्त करना चाहता है ?

१३४६. संवेदनशील इंसान कभी-कभी छोटी बातों को बहुत ज्यादा सोचकर अपनी सारी खुशी को दफन कर देता है।

१३४७. हमें शंका के आधार पर फैसला नहीं लेना चाहिए।

१३४८. किसी को दुबारा बुलाने के लिए 'आना' शब्द का प्रयोग करने के स्थान पर 'आइये' शब्द का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि आना में 'आ' के साथ 'ना' शब्द लगा हुआ है जो नहीं का सूचक है, ऐसे ही 'भोजन करो न' के स्थान पर 'भोजन कीजिए', 'बैठो न' के स्थान पर 'बैठिये' आदि शब्द बोले।

१३४९. हम जो भी करें उसमें हमें हेय-उपादेय का ज्ञान होना चाहिए।

१३५०. पुण्य या पुण्य क्रिया हेय नहीं है, उसके फल में तल्लीन हो जाना हेय है।

१३५१. जिस पुण्य के आवेग में जीव धर्म कार्य को भूल जाये, अहिंसा को भूल जाये, धर्मात्माओं की अवहेलना करने लग जाये, पुण्य क्रिया को भूल जाये वह पुण्य सर्वथा हेय है।

१३५२. जिस घर में जिनेन्द्र देव का समीचीन बिम्ब नहीं है उसे विद्वानों ने पक्षी के घोंसले के समान पापदायक कहा है।

१३५३. अज्ञान से किया पाप सम्यग्ज्ञान से छूट जाता है परन्तु ज्ञान से जानकर किया पाप वज्रलेप हो जाता है।

१३५४. यदि धीरता और कायरता में भी मृत्यु होती है तो तू कायरता को छोड़कर धीरता से ही मरण कर। जो मनुष्य दो कोस गाँव को जाता है तो नाश्ता ले जाता है वह दुर्बुद्धि परलोक में जाते हुए क्या धर्म रूपी नाश्ता नहीं ले जायेगा ?

१३५५. जहाँ अज्ञान वरदान हो वहाँ बुद्धिमानी दिखाना मूर्खता है।

१३५६. अपनी भूल को स्वीकार करने में जो गौरव है वह अन्याय को चिरायु रखने में नहीं है।

१३५७. कितना भी दु:खद विषय क्यों न हो उसकी चर्चा करते समय कठोर भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

१३५८. पशु न बोलने से कष्ट उठाता है और मनुष्य बोलने से क्योंकि बोलने की कला नहीं जानता, कहाँ क्या बोलना?

१३५९. विवेक हीन व्यक्ति को केवल स्नेही होने के कारण गुप्त विचारना में सम्मिलित नहीं करना चाहिए।

१३६०. मन के हाथी को विवेक के अंकुश में रखो क्योंकि तुम्हारा विवेक ही तुम्हारा गुरु है।

१३६१. शंका के बादल विवेक के सूरज को ढँक देते हैं।

१३६२. जो मनुष्य हँसी उड़ाने वालों को शिक्षा देता है वह स्वयं अपमानित होता है। दुर्जनों को चेतावनी देने वाला अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारता है।

१३६३. रोगी को देखकर आना शिष्टाचार है, दवा लाकर देना सच्ची संवेदना है।

१३६४. वक्त पर एक टाँका लगा दिया जाए तो बाद में नौ टाँके नहीं लगाने पड़ते हैं।

१३६५. जब तुम किसी दुर्बल को सताने के लिए उद्यत हो तो सोचो कि आपसे बलवान मनुष्य के आगे भय से जब तुम काँपोगे तब तुम्हें कैसा लगेगा?

१३६६. पहले यह देख लें कि इस काम में लागत कितनी लगेगी, कितना माल खराब जायेगा और इसमें लाभ कितना होगा? बाद में उस काम को हाथ में लें।

१३६७. कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें नहीं करना चाहिए, उन्हें यदि तुम करोगे तो नष्ट हो जाओगे तथा कुछ काम ऐसे है कि जिन्हें करना ही चाहिए, यदि तुम उन्हें नहीं करोगे तो भी नष्ट हो जाओगे। जिसका तुम्हें उपकार करना है उसके स्वभाव का यदि तुम ध्यान न रखोगे, तो तुम भलाई करने में भी भूल कर सकते हो।

१३६८. हद से ज्यादा मात्रा में रखे जाने पर मोर पंख भी गाड़ी की धुरी को तोड़ डालते हैं।

१३६९. अनजाने मनुष्य पर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुष पर संदेह करना; ये दोनों ही बातें एक समान अगणित आपत्तियों की जननी है।

१३७०. जब एक सम्बन्धी जिसका सम्बन्ध तुमसे टूट गया हो और तुम्हारे पास किसी प्रयोजन के कारण वापस आता है तो तुम उसे सतर्कता के साथ स्वीकार करो।

१३७१. बुद्धिमान लोगों के सामने उपदेशपूर्ण व्याख्यान देना जीवित पौधों को पानी देने के समान है।

१५. चेहरा नहीं, चारित्र उज्ज्वल हो

१३७२. कम खाने से शरीर स्वस्थ होता है, गम खाने से आत्मा स्वस्थ होती है और नम जाने से व्यवहार स्वस्थ होता है।

१३७३. आज का मनुष्य धर्म के लिए लड़ेगा, मरेगा, लिखेगा पर धर्म के लिए जियेगा नहीं।

१३७४. किसी के बुरा भला कहे जाने पर भी अपनी सहजता, सरलता को संतुलित रखिए क्योंकि यही महानता की निशानी है।

१३७५. विपद काल में धैर्य, ऐश्वर्य में क्षमा, सभा में वचन चातुर्य, संग्राम में पराक्रम, सुयश में अभिरुचि और शास्त्रों के अध्ययन का व्यसन ये महापुरुषों के स्वभाव में होते हैं।

१३७६. आत्मसम्मान, आत्मज्ञान, आत्मसंयम ये तीनों ही जीवन को परम शक्ति की ओर ले जाते हैं।

१३७७. निश्चित समय पर चलने वाली गाड़ी के लिए भी जब पहले से सावधानी रहती है तो फिर मौतरूपी गाड़ी का कोई समय निश्चित नहीं है, उसके लिए तो हरदम सावधानी रहनी ही चाहिए।

१३७८. आप उस पाप से बचिए जिसके कारण आप अनजाने भय से घिरे रहते हैं।

१३७९. पाप का मूल 'आलस' है और पुण्य का मूल समीचीन 'पुरुषार्थ' है।

१३८०. चरित्र एक ऐसा हीरा है जो अन्य सभी अवगुण रूपी पाषाणों को नष्ट कर देता है।

१३८१. आदमी की पहचान उसके चेहरे से नहीं चरित्र से होती है।

१३८२. चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए।

१३८३. गुण एकान्त में भली-भाँति विकसित होते हैं, जबकि चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में ही होता है।

१३८४. चरित्र वृक्ष है तो प्रतिष्ठा उसकी छाया है।

१३८५. चरित्र की सम्पत्ति दुनिया की तमाम दौलतों से बढ़कर है।

१३८६. चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताकत बन जाता है।

१३८७. अगर आप अपने चरित्र का ध्यान रखेंगे तो आपकी प्रतिष्ठा आपका ध्यान स्वयं रख लेगी।

१३८८. चरित्र प्रतिभा से श्रेष्ठ है क्योंकि चरित्र मनुष्य के जीवन का शासक है।

१३८९. जिस तरह माली घास-फूस निकालकर पेड़-पौधों का जीवन बचाता है, उसी तरह हमें भी अपना चरित्र बचाने के लिए अपनी कमियों को दूर करना चाहिए।

१३९०. आप प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, यदि आप गंभीरता से देखें कि वह प्रशंसा से कितना प्रभावित होता है।

१३९१. ईमानदारी कोई मुखौटा नहीं है जिसे चाहे जब पहनें या उतार दें, यह तो चरित्र का अविभाज्य अंग है।

१३९२. चरित्र दो वस्तुओं से बनता है, आपकी विचारधारा से और आपके समय बिताने के ढंग से।

१३९३. उज्ज्वल भविष्य के लिए देखकर पाँव रखें, छानकर पानी पिएँ, सच बोलें और पवित्र आचरण करें।

१३९४. चरित्र का निश्चित परिचय वाणी के अलावा और कुछ नहीं है।

१३९५. उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।

१३९६. सुखमय जीवन का तीन चौथाई आधार नेक चाल-चलन है।

१३९७. सादगी मनुष्य का अमूल्य पहनावा है।

१३९८. हजारों वर्षों का यश एक बार के दुराचरण से नष्ट हो जाता है जिन भेष में जिन चर्या होना चाहिए निज चर्या नहीं।

१३९९. सिनेमा या टी.वी. देखने से चार हानियाँ होती हैं–
१. चरित्र की हानि, २. समय की हानि, ३. नेत्र-ज्योति की हानि और ४. धन की हानि।

१४००. जिस प्रकार समुद्र की लहरें कचरे को बाहर फेंक देती हैं उसी प्रकार सज्जन पुरुष भी मानसिक विकार रूपी कचरे को तुरंत सम्यक् चिन्तन से बाहर फेंक देते हैं।

१४०१. चेहरे से ज्यादा चारित्र को मूल्य दीजिए क्योंकि चेहरा तो सिर्फ चार दिन सुहाता है पर सुंदर चरित्र तो पूरे जीवन को प्रभावित करता है।

१४०२. जिस तरह बिल्लौरी पत्थर पास वाली चीज का रंग धारण करता है उसी तरह चेहरा भी दिल की बात को प्रकट करने लगता है।

१४०३. मकान यहाँ बना रहे हो, सजावट यहाँ कर रहे हो, संग्रह यहाँ कर रहे हो, पर खुद मौत की तरफ भागे चले जा रहे हो। जहाँ जाना है पहले उस परलोक की तैयारी तो करो।

१४०५. कोई मनुष्य जब लिख रहा हो तो बिना उसकी आज्ञा के उसे पढ़ने की कोशिश मत करो।

१४०६. शुभ कार्य को जल्दी और अशुभ कार्य को देरी से करने वाला सुख पाता है।

१४०७. आज को इस प्रकार जिएँ कि वह कल के लिए यादगार बन जाए।

१४०८. मानव जीवन समय काटने को नहीं पाप काटने को मिला है।

१४०९. जो दूसरों के लिए जीवन जीता है, उसका जीवन साधु जैसा होता है।

१४१०. संसार में जो अच्छा आचरण करते हुए जीवनयापन करता है वह दीर्घजीवी होता है। नेक बनने में सारी उम्र लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता है।

१४११. दर्पण को नहीं अपने दिल को साफ कीजिये। चेहरे को नहीं चरित्र को ठीक कीजिए।

१४१२. दीक्षा लेते समय के परिणामों का हमेशा चिन्तन करते रहने से संयम और वैराग्य सुदृढ़ रहता है।

१४१५. दुर्गुणों को दूर करो, दुःख दूर हो जाएगा।

१४१६. हे मानव! दुःखी मत हो, यदि तकदीर बदलनी है तो अपनी तरकीब बदलो खुशहाली आपके चारों ओर बरसेगी।

१४१७. दुनिया में राय देने वाले बहुत हैं पर सन्मार्ग पर चलाने वाले बहुत कम हैं, सलाहकार बहुत हैं पर सहयोगकार बहुत कम है, आदर्श की बातें करने वाले बहुत हैं पर आचरण करने वाले बहुत कम हैं।

१४१८. चरित्रवान् अपने दोषों को सुनना पसंद करते हैं दूसरी श्रेणी के लोग नहीं।

१४१९. धर्म के नाम पर शर्म करने वालों को सुख की प्राप्ति नहीं होती है।

१४२०. मनुष्य जब एक नियम तोड़ता है तब दूसरा अपने आप ही टूट जाता है इसलिए प्राण जाने पर भी प्रण (नियम) को नहीं त्यागना चाहिए।

१४२१. छोटे-छोटे संकल्प ही आत्मशक्ति को बढ़ाते हैं।

१४२२. क्रोध, हर्ष, गर्व, लज्जा, उद्दण्डता तथा अपने को पूज्य समझना; ये भाव जिसको पुरुषार्थ से भ्रष्ट नहीं करते वही पण्डित कहलाता है।

१४२३. जो पहले निश्चित करके फिर कार्य का आरम्भ करता है, कार्य के बीच में नहीं रुकता, समय को व्यर्थ नहीं जाने देता और चित्त को वश में रखता है वही पण्डित (ज्ञानी) कहलाता है।

१४२४. जो बहुत धन, विद्या तथा ऐश्वर्य को पाकर इठला कर नहीं चलता वह पण्डित (ज्ञानी) कहलाता है।

१४२५. जिसका जन्म गुरु सेवा में, मन समीचीन ध्यान की चिन्ता में और धन का उपयोग सत् पात्र दान में जाता है वह पंडित है।

१४२६. संयम व विवेक से रहने वाले पाप से बचते हैं।

१४२७. सन्त के चरण छूने से पुण्य गुण व आचरण में लाने से परमात्मा मिलता है।

१४२८. जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मात्सर्य इन छह शत्रुओं को वश में कर लेता है, वह जितेन्द्रिय पुरुष पापों से लिप्त नहीं होता और अनर्थों में नहीं पड़ता है।

१४२९. जिन वस्तुओं के बिना भी हम रह सकते हैं, फिर उनके हम गुलाम क्यों बनें?

१४३०. जहाँ सजावट है, वहाँ मिलावट है, जहाँ मिलावट है वहाँ बनावट है, जहाँ बनावट है वहाँ दिखावट है और जहाँ दिखावट है वहाँ गिरावट है।

१४३१. किसी को अपनी प्रशंसा करने के लिए विवश कर देने का केवल एक ही उपाय है कि आप 'सत्कर्म' करें।

१४३२. मेहनत के बिना दौलत, अंतरात्मा के बिना आनंद, चारित्र के बिना ज्ञान, त्याग के बिना

धर्म, सिद्धान्तों के बिना राजनीति, नैतिक मूल्यों के बिना व्यापार और इंसानियत के बिना विज्ञान व्यर्थ है, पाप है।

१४३३. कलम चलाने से नहीं कदम बढ़ाने से मंजिल मिलती है, अतः कलम पर नहीं कदम पर भरोसा रखो।

१४३४. दिन में वही कार्य करें जिससे रात में सुख से सो सकें। आठ माह में वह कार्य कर लें जिससे बरसात के चार माह धर्म्यध्यान से व्यतीत कर सकें। जवानी में तपस्या-साधना, दान-पुण्य कर लें जिससे वृद्धावस्था में प्रसन्न रह सकें। जीवन को सदाचार से जियें जिससे मरण समय में हँसते हुए विदा हो सकें। पूरे जीवन ऐसा काम करें जिससे भविष्य उज्ज्वल हो जाये।

१४३५. इन पाँच प्रकार के मनुष्यों को समाज में न तो धन प्राप्त होता है और न ही यश— १. मलिन वस्त्र पहनने वाले, २. मलिन दाँत रखने वाले, ३. सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सोने वाले, ४. कड़वी बात करने वाले, ५. अधिक भोजन करने वाले।

१४३६. जिनके अभिमान, काम क्रोधादि कषाय शान्त नहीं हुई है, जिनको इन्द्रियजन्य विषय भोगों से विरक्ति नहीं हुई है, जो जन्म-मरणादि के दुःख से भयभीत नहीं हैं जिन्हें शरीर सम्बन्धी सुख आदि से अभी वैराग्य नहीं हुआ है ऐसे प्राणियों की दीक्षा संसार में मात्र उदर पूर्ति के लिए ही है, मुक्ति प्राप्ति के लिए नहीं है, अतः ऐसे गुरुओं को तो दूर से ही त्याग देना चाहिए।

१४३७. भलाई करने की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी बुराई का त्याग करने की आवश्यकता है। बुराई का त्याग करने से भलाई अपने आप होगी, करनी नहीं पड़ेगी।

१४३८. जिसको हम अच्छा समझते हैं उसका पूरा-का-पूरा पालन करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर नहीं है, परन्तु जिसको हम बुरा समझते हैं उसका पूरा-का-पूरा त्याग करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर है और उसके त्याग का बल, योग्यता, ज्ञान, सामर्थ्य भी भगवान् ने हमें दिया है।

१४३९. जैसा तू बोलता है वैसा तू लिख और जैसा तू लिखता है वैसा तू दिख।

१४४०. भगवान् महावीर का सूत्र है—जो तुम अपने लिए चाहते हो वही दूसरों के लिए चाहो और जो आप अपने लिए नहीं चाहते वह दूसरों के लिए भी मत चाहो।

१४४१. एकान्त में रहना ही महान् आत्माओं का भाग्य है।

१४४२. लोग हमें अच्छा मानें या न मानें, अच्छा जानें या न जानें, अच्छा कहें या न कहें, पर हमारे भाव अगर अच्छे हैं तो हमारे मन में हर समय प्रसन्नता रहेगी और मरने पर सद्गति होगी।

१४४३. प्रत्येक मनुष्य को सच्चाई, कर्त्तव्य और मौत को हमेशा याद रखना चाहिए।

१४४४. महात्मा तो केवल वह है जिसकी कोई माँग नहीं है।

१४४५. पेट और पेटी रुपया और रोटी के लिए, गृहत्याग करने वाला महात्मा नहीं होता है।
१४४६. महान् पुरुष की महानता का पता इस बात से लग जाता है कि वह छोटे व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करता है।
१४४७. जैसे सूर्य आकाश में छिपकर नहीं विचर सकता वैसे ही महापुरुष भी संसार में छिपकर नहीं रह सकते हैं।
१४४८. मनुष्यों का गृहस्थ रहना अच्छा परन्तु इन्द्रिय, आहार दोष और रागद्वेषादिक के द्वारा कलंकित मुनिपद अच्छा नहीं है।
१४४९. प्रतिदिन यथायोग्य निर्दोष आहार करना अच्छा है परन्तु मासोपवास के बाद सदोष आहार करना अच्छा नहीं है।
१४५०. ग्रन्थ पढ़ने से नहीं निर्ग्रन्थ बनने से मोक्ष मिलता है।
१४५१. शान्त होना संत होने से भी ज्यादा कठिन है।
१४५२. अपने कर्तव्य में लगे रहना और मौन रहना लांछन का सबसे अच्छा उत्तर है।
१४५३. संसारी कीड़े की तरह मरने से कहीं अधिक अच्छा है कि संयम धारणकर कर्त्तव्य का पालन करते हुए समतापूर्वक समाधि से मरो।
१४५४. साधना त्याग से होती है और 'भोग' संयोग से होता है।
१४५५. योगी इन्द्रियों का दास नहीं मालिक होता है।
१४५६. जो मन, वचन और काय को अपने वश में रखे वही सच्चा योगी होता है।
१४५७. जब तक परिग्रह और परिचय के प्रति राग है तब तक सत्संग और संन्यास बकवास है।
१४५८. बुद्धिमत्ता का लक्ष्य स्वतंत्रता है, संस्कृति का लक्ष्य पूर्णता है, ज्ञान का लक्ष्य प्रेम है और शिक्षा का लक्ष्य चरित्र है।
१४५९. विचार शुद्धि से आचार शुद्धि स्वयमेव होती है।
१४६०. हजार मील चलने के विचार करने से एक कदम भी चलना ज्यादा मूल्यवान होता है।
१४६१. आपका हर विचार आपके भविष्य का बीज बनता है।
१४६२. आचरण रहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। अच्छे विचार रखना भीतरी सुंदरता है।
१४६३. महान् विचार जब कार्य रूप में परिणत हो जाते हैं तब महान् कृतियाँ बन जाती हैं।
१४६४. मारना चाहते हो तो स्वयं के बुरे विचारों को मारो।
१४६५. सहसा कम न करें, अविवेक मुसीबतों को आश्रय देता है, विचारशील मानव को गुणों से प्रेम करने वाली सम्पत्तियाँ खुद चुन लेती हैं।
१४६६. अगर किसी की गलती से अपना कुछ नुकसान हो जाए तो जान–बूझकर उसका नुकसान करने का विचार मन में मत लाओ।

१४६७. विज्ञापन वे करते हैं जिन्हें अपनी साधना पर विश्वास नहीं होता है।

१४६८. विद्या का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए।

१४६९. कठिनाइयों में ही सिद्धान्तों की परीक्षा होती है, बिना विपत्तियों में पड़े मानव नहीं जान सकता है कि वह ईमानदार है अथवा नहीं।

१४७०. मीठे शब्दों पर नहीं आचरण पर विश्वास करो।

१४७१. जिस किसी भी क्रिया से वैराग्य की जागृति होती हो उसका पूर्ण श्रद्धा के साथ आचरण करना चाहिए।

१४७२. जो गृहस्थ अधिकार और कर्त्तव्य का पालन करता है वह मानव है और जो अपनी स्वार्थ पूर्ति करता है वह दानव है।

१४७३. अभिप्राय में उदारता, कार्य सम्पादन में मानवता, सफलता में संयम इन्हीं तीन चिह्नों से मानव महान् बन जाता है।

१४७४. निरतिचार व्रत पालन ही संसार के विच्छेद का कारण है।

१४७५. व्रतहीन मनुष्य निरन्तर भाग्यहीन धन धान्यादि से रहित भयभीत तथा सदा दुःखी रहता है।

१४७६. आप संसार में रहें लेकिन आपके भीतर संसार न रहे।

१४७७. अनुशासन मात्र अपने जीवन को ही नहीं अपितु परिवार, समाज, देश व सम्पूर्ण विश्व को उज्ज्वल करता है।

१४७८. जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा वह सदैव दूसरों का सेवक रहेगा।

१४७९. जो अपनी बुराइयों पर विजय पा लेता है वही अजेय होकर संसार पर शासन करता है।

१४८०. सन्तों की इच्छाशक्ति और शासकों की कार्य शक्ति एक हो जाए तो देश की तस्वीर बदल सकती है।

१४८१. सांसारिक उपलब्धियाँ समय में हैं, आध्यात्मिक उपलब्धि संकल्प में है।

१४८२. संकल्प तलवार है जो समय को मारती है, शाश्वत की रक्षा करती है।

१४८३. संसार में पत्थर से शक्तिशाली लोहा, लोहे से शक्तिशाली अग्नि, अग्नि से शक्तिशाली पानी, पानी से शक्तिशाली हवा और हवा से शक्तिशाली संकल्प होता है।

१४८४. दुनिया बुद्धिमान का सम्मान करती है और चरित्रवान का अनुसरण करती है।

१४८५. संन्यास समाधि का प्रथम चरण है।

१४८६. दुर्बल मन का मनुष्य संयम पालन नहीं कर पाता, पर जिसके मन में लग्न होती है वह अभ्यास से संयम पालना सीख लेता है।

१४८७. सुख-शान्ति; ऐशो-आराम से नहीं संयम से प्राप्त होती है।

१४८८. सब संयमों का मूल जिह्वा और जननेन्द्रिय के नियन्त्रण में बसता है।

१४८९. मन के विकारों को जीतने के लिए इन्द्रिय संयम की सहायता लें, विजय निश्चित होगी।

१४९०. आत्मज्ञान, खिन्नता का अभाव, सहनशीलता, धर्मपरायणता, वचन रक्षा तथा दान ये गुण महापुरुषों में होते हैं अधमपुरुषों में नहीं।

१४९१. आत्मसंयम की रक्षा अपने खजाने के समान करो क्योंकि उससे बढ़कर इस जीवन में और कोई निधि नहीं है।

१४९२. नाशवान की दासता ही अविनाशी के सम्मुख नहीं होने देती है।

१४९३. जो तन व धन को संभाले वह संसारी और जो मन व वचन को संभाल ले वह संन्यासी है।

१४९४. भ्रष्टाचार संस्कृति की विकृति का कारण है।

१४९५. मन को चंचल करने वाले अश्लील चलचित्र व विज्ञापन पर कंट्रोल नहीं किया गया तो संस्कृति का नामोनिशान शेष ना रहेगा।

१४९६. मनुष्य या स्त्री की संस्कृति का पता इस बात से लग जाता है कि वे झगड़े के समय कैसा व्यवहार करते हैं।

१४९७. गाय घास खाकर दूध देती है और साँप दूध पीकर जहर उगलता है बस सज्जन और दुर्जन में यही अंतर होता है।

१४९८. सज्जनों का स्वभाव सूपा जैसा गुण ग्रहण का होता है जबकि दुर्जनों का स्वभाव चलनी जैसा दोष ग्रहण का होता है।

१४९९. राजकीय ठाठ-बाट की अपेक्षा सज्जनता की निर्धनता में अधिक मिठास है।

१५००. शान्ति और हर्ष (प्रसन्नता) सज्जन पुरुष के लक्षण हैं।

१५०१. संसार में सज्जन पुरुष ही स्वतंत्र होते हैं नीच पुरुष सेवक होते हैं।

१५०२. सज्जन चाहे फटेहाल ही हो, बड़प्पन के पूरे ठाठ वाले दुर्जन से अधिक शक्तिशाली होता है।

१५०३. यदि आप चाहते हो कि लोग आपके साथ सच्चाई का व्यवहार करें तो आप स्वयं सच्चे बनो और दूसरे लोगों के साथ सच्चा व्यवहार करो।

१५०४. यदि आपके जीवन में सच्चाई है तो उसका असर अपने-आप लोगों पर पड़ेगा।

१५०५. सत्य के रास्ते पर असफल हो जाना असत्य के रास्ते पर सफल हो जाने से लाख दर्जा बेहतर है।

१५०६. सत्य में सब बातों का समावेश हो जाता है।

१५०७. ऐसा हो ही नहीं सकता कि महान् व्यक्ति में सादगी, अच्छाई और सत्य न हो।

१५०८. अपने आचरण की पूरी देख-रेख रखो क्योंकि तुम जगत् में कहीं भी खोजो सदाचार से बढ़कर पक्का मित्र कहीं नहीं मिलेगा।

१५०९. मनुष्य के मार्ग पर नहीं प्रभु के मार्ग पर चलो, यह मत कहो कि हमें अमुक व्यक्ति के मार्ग पर चलना है बल्कि यह कहो कि हमें सत्य के मार्ग पर चलना हैं क्योंकि मनुष्य कितना भी महान् हो सदा अपूर्ण ही हैं।

१५१०. निषिद्ध कर्मों को करते हुए कोई व्यक्ति साधक नहीं बन सकता है।

१५११. साधक को चाहिए कि वह अपने को कभी भोगी या संसारी व्यक्ति न समझे, उसमें सदा यह जागृति रहनी चाहिए कि ''मैं साधक हूँ''।

१५१२. साधक उसी को कहते हैं, जो निरन्तर सावधान रहता है।

१५१३. जब तक साधक को अपनी स्थिति पर असन्तोष नहीं होता, तब तक उसकी उन्नति नहीं होती है। साधक वह होता है, जो चौबीसों घण्टे साधना करता है।

१५१४. साधक को सत्य-तत्त्व का अनुयायी होना चाहिए, किसी व्यक्ति, सम्प्रदाय आदि का अनुयायी नहीं।

१५१५. इन्द्रियों के निग्रह, राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने और प्राणीमात्र के प्रति अहिंसक रहने से साधक अमरत्व प्राप्त करता है।

१५१६. जैसी परिस्थिति आये उसी में साधना करनी चाहिए, अनुकूलता देखोगे तो साधना नहीं हो पायेगी।

१५१७. जो साधना सुगम दिखे उसको करना शुरू कर दें तो जो कठिन दिखती है वह सुगम हो जायेगी और जो समझ में नहीं आती वह समझ में आने लग जायेगी।

१५१८. यदि भगवान् की याद स्वतः नहीं आती, उन्हें याद करना पड़ता है तो समझें कि अभी साधना शुरू ही नहीं हुई है।

१५१९. साधुत्व का सम्बन्ध ख्याति, पूजा और लाभ से नहीं स्वयं से होता है।

१५२०. शास्त्र की आँख से जो देख-देखकर चलता है, जो देख-देखकर बोलता है, जो देख-देखकर पूर्ण क्रिया करता है वही साधु है।

१५२१. प्रायः समस्त प्रकार की उपाधि का मूल यह शरीर है, यह ही संसार में भटकाने वाला है, सभी को सबसे अधिक ममत्व अपने शरीर से होता है, साधु बनकर शरीर का गुलाम बनने वाले जीव के लिए नरक व पशु ये ही दो गतियाँ हैं।

१५२२. मात्र व्यापार करने से लाभ नहीं होता है बल्कि समझदारी से जो व्यापार करता है उसे लाभ होता है अन्यथा मूलधन भी खो बैठता है। इसी प्रकार साधु बनने मात्र से कल्याण नहीं होता, साधु बनने के बाद साधुपने के प्रति वफादार रहने से व साधुपने का पूर्ण पालन करते रहने से ही कल्याण होता है।

१५२३. जो हृदय से कोमल हो और काया से खूब कठोर वह साधक आत्म कल्याण साध सकता है।

१५२४. जितनी अधिक सहजता उतनी अधिक साधुता।
१५२५. साधु का जीवन साधा हुआ नहीं सहज होता है।
१५२६. साधु में यदि आध्यात्मिक निधि नहीं है तो मानवता पर कलंक है।
१५२७. साधु लोग यदि अपने आलस्य को दूर कर मठों, धर्मस्थानों में रखा धन सार्वजनिक सेवा में खर्च करें, तो उनके विरुद्ध जो शिक्षितों में भावना है वह अविलम्ब दूर हो सकती है।
१५२८. मुनियों का संयम गृहस्थों को दबाने के लिए नहीं बल्कि अपनी महत्त्वकांक्षा को मिटाने के लिए होता है।
१५२९. साधुओं के लिए श्रावक को डाँटना नहीं चाहिए क्योंकि श्रावक नौकर नहीं भक्त हैं वे साधुओं को भगवान् समझकर पूजते हैं।
१५३०. दु:ख आने पर प्रसन्न होना बहुत ऊँची साधना है।
१५३१. जो अवगुण तुम्हें दूसरे में दृष्टिगत हो उन्हें अपने भीतर न रहने दो।
१५३२. जब तक लोग स्वयं को सुधारने का प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक कोई सुधार होना असंभव है।
१५३३. बाह्य के साथ सुधार आंतरिक होना चाहिए, तुम सद्‌गुणों के लिए नियम नहीं बना सकते।
१५३४. सुंदर वह है जो सुंदर कार्य करें।
१५३५. यदि सुंदर दिखाई देना है तो तुम्हें भड़कीले कपड़े नहीं पहनना चाहिए बल्कि अपने गुणों को बढ़ाना चाहिए।
१५३६. 'शोभा' चाल-चलन में होती है, दिखावट में नहीं।
१५३७. शरीर का श्रृंगार दूसरों के लिए होता है किन्तु चेतना का श्रृंगार स्वयं के लिए।
१५३८. बुरा मत सोचना क्योंकि बुरा सोचने वाला भला नहीं बन पाता है।
१५३९. आदर्शों की होली जलाकर दूसरों की कृपा पर जीना तथा स्वार्थ के लिए अन्याय से समझौता करना चापलूसी है।
१५४०. परम ज्ञान ग्रन्थ पढ़ने से नहीं परम चरित्र व ध्यान से उत्पन्न होता है।
१५४१. ज्ञान बिना भी चरित्र पूज्य और हितकारी है।
१५४२. ज्ञानपूर्वक होने वाला समभाव ही सामायिक है।
१५४३. साधु साधना में श्रम करते हैं इसलिए श्रमण कहलाते हैं।
१५४४. जो श्रावक श्रावकत्व को छोड़कर मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा करता है वह अशिक्षित घोड़े के समान उन्मार्गगामी हो जाता है।
१५४५. ''नाच न जाने आँगन टेढ़ा'', नाचना सीखो आँगन को टेढ़ा मत कहो, त्याग करना सीखो काल को दोष मत दो, टेढ़े आँगन में भी व्यक्ति नाचा जा सकता है, जो परमात्म भाव से

भरा है वह पंचम काल में भी भावलिंगी मुनि बन सकता है।

१५४६. जिसके देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति, दान, दया और पूजन है तथा जो आठमद और सप्त व्यसनों से रहित है उसे जिनेन्द्र भगवान् ने श्रावक कहा है।

१६. लड़के व्यसन में-परिवार टेंशन में

१५४७. दरिया ने झरने से पूछा तुझे समन्दर नहीं बनना है क्या? झरने ने बड़ी नम्रता से कहा बड़ा होकर खारा होने की अपेक्षा छोटा रहकर मीठा होना अच्छा है।

१५४८. चंदन की अपेक्षा वंदन शीतल होता है, भोगी होने की बजाय उपयोगी होना ज्यादा अच्छा है।

१५४९. 'प्रभाव' अच्छा होने की बजाय 'स्वभाव' अच्छा होना ज्यादा अच्छा है।

१५५०. वस्त्र, धन, भोजन, यश और विद्या; ये पाँच जुए में हाथ डालने वाले के पास नहीं आयेंगे।

१५५१. समृद्धि के क्षणों में पिच्छी जैसी मृदुता और विपत्ति के क्षणों में कमण्डलु जैसी कठोरता होना चाहिए, मयूर-पिच्छी को देखकर जिसका मन मयूर नाच उठे कमण्डलु को देखकर आभामण्डल चमक उठे वही श्रावक है।

१५५२. इंसान से मोहब्बत आपकी सबसे बड़ी कमजोरी बन जाती है, भगवान् से मोहब्बत आपकी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है।

१५५३. हे आत्मन्! आप अपने प्राण दे देना पर नियम मत छोड़ना।

१५५४. गुण दिखाई दें तो मन को कैमरा बना लीजिए, अवगुण दिखाई दें तो आईना।

१५५५. माना दुनिया बुरी है पर आपको अच्छा बनने से किसने रोका है।

१५५६. जितना अँगूठा फोन पर चलता उतना माला पर चलता तो जीवन सफल हो जाता।

१५५७. प्रवीचार की भावना से सुविचार खत्म हो जाते हैं।

१५५८. बुरी आदतें अगर वक्त पर न बदली जायें तो वे आपका वक्त बदल देगीं।

१५५९. जिन्दगी में आप कितने खुश हैं यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण है कि आपकी वजह से कितने लोग खुश हैं।

१५६०. हमेशा छोटी-छोटी गलतियों से बचने की कोशिश किया करो क्योंकि इंसान पहाड़ों से नहीं पत्थरों से ठोकर खाता है।

१५६१. इंसान चेहरा तो साफ रखता है जिस पर लोगों की नजर रहती है, पर दिल को साफ नहीं रखता जिस पर ऊपर वाले की नजर रहती है।

१५६२. जमीं पर मकान बनाना सरल, दूसरे के दिल में जगह बनाने में जिन्दगी गुजर जाती है।

१५६३. एक बार इंसान ने कोयल से कहा—तू काली न होती तो कितनी अच्छी होती? फिर सागर से कहा तेरा पानी खारा न होता तो कितना अच्छा होता, फिर गुलाब से कहा—तुझमें काँटे

न होते तो कितना अच्छा होता? तब तीनों एक साथ बोले हे इंसान! तुझमें दूसरों की कमियाँ देखने की आदत न होती तो तू कितना अच्छा होता?

१५६४. भोगासक्त मनुष्य सप्तम नरक के नारकी से भी पतित है क्योंकि नारकी तो सम्यक्त्व उत्पन्न कर सकता है, परन्तु भोगासक्त मनुष्य नहीं।

१५६५. दोष का प्रायश्चित्त, उन्नति मार्ग में ही लग जाना है।

१५६६. मात्र पुण्योदय से लाभ नहीं होता है किन्तु पुण्यात्मा बनने में लाभ है।

१५६७. निर्मोही तो स्वयं ही पुण्यात्मा है धन, संतान, परिवार के कारण नहीं।

१५६८. यदि शान्ति चाहते हो तो किसी कार्य के मुखिया मत बनो, जो कार्य उचित लगे तो उसके बारे में बतलाकर विरक्त बने रहो।

१५६९. किसी भी प्रकरण में गुणों पर दृष्टि रहे तो वह समय व्यर्थ गया नहीं कहलाता है।

१५७०. फूलों की सुगंध केवल एक दिशा में फैलती है लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

१५७१. गाड़ी के चारों पहिया ठीक होना चाहिए एवं श्रावक की चारों कषायें मन्द होना चाहिए।

१५७२. हमें सुबह उठकर चेहरे पर मुस्कान रखनी है क्योंकि शीशे में स्वयं के मुरझाये चेहरे को देखने से अपशकुन हो जाता है। प्रतिदिन आधा घंटा योगासन, प्रार्थना, ध्यान करें, अपना घर, कार्यालय स्वच्छ, साफ रखें। अच्छा दिमाग और दिल ये दोनों विजय दिलाते हैं।

१५७३. लड़कियाँ फैशन में, लड़के व्यसन में रहने से परिवार टेंशन में रहता है। सादा और पौष्टिक आहार लेवें, छोटी-छोटी बचत नियमित करते रहें क्योंकि खराब समय जीवन में कभी आने की सूचना नहीं देता है।

१५७४. हर परिस्थिति में अपने को ढालें, कभी बिना ए. सी. पंखे के भी सोने की आदत डालें, हर जगह, हर समय हर चीज उपलब्ध हो जरूरी नहीं है।

१५७५. समय के पूर्णतः पाबंद रहें, आप घड़ी दिखाने के लिए नहीं, समय पर कार्य करने के लिए पहनते हैं।

१५७६. अगर आपका व्यवहार अच्छा है तो आप लोगों के दिल में उतरेंगे अन्यथा दिल से उतर जायेंगे।

१५७७. विफलता में गलती खोजना चाहिए भाग्य को नहीं कोसना चाहिए।

१५७८. हमेशा अपनी वाणी मधुर, कोमल तथा नम्र रखें।

१५७९. हमेशा हर कार्य के लिए अपनी जवाबदारी समझें और मौजूदगी दर्ज करायें।

१५८०. माफ करना, धन्यवाद, कृपया ये शब्द जितने अधिक प्रयोग करेंगे जीवन उतना ही आनंदित होगा।

१५८१. कार्यशैली हमेशा उत्तम होनी चाहिए आपका हर कार्य परफेक्ट होना चाहिए, कार्य को

पूजा समझ कर करें यही जीवन प्रबंधन की कला है।

१५८२. जिन्दगी मिली है जीने के लिए उसको हँस के जियो क्योंकि आपको देखकर भी कोई मुस्कुराता होगा।

१५८३. समय सभी के लिए २४ घंटे ही है, बेहतर प्रबंधन से २५ घंटे जितना कार्य २४ घंटे में किया जा सकता है।

१५८४. पूरा शरीर सिर्फ नौ महीने में बन जाता है, जीवन निर्माण के लिए ९० वर्ष मिलते हैं।

१५८५. आशातीत परिणाम के लिए पूरी लगन और ईमानदारी से काम करें।

१५८६. जीवन जीना है तो दर्पण की तरह जियो जिसमें स्वागत सभी का हो लेकिन संग्रह किसी का न हो।

१५८७. जीतने वाले कुछ अलग से नहीं करते वो कार्यों को अलग तरह से करते हैं।

१५८८. सफल उद्योगपति हमेशा जनता की जरूरत को समझ कर ही उत्पादन करते हैं।

१५८९. मंत्रोच्चारपूर्वक भोजन बनायेंगे तो 'हीरो' नहीं 'संत साधक' पैदा होंगे।

१५९०. यथासंभव हमें अपना जीवन 'सहज' में जीना चाहिए और किसी आदत को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए।

१५९१. बदलाव प्रारम्भ में सबसे कठिन, मध्य में सबसे बेकार और अंत में सबसे अच्छा होता है।

१५९२. खुद में वह बदलाव लायें, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

१५९३. सबसे कठिन बंधन स्नेह का है, परतन्त्रता भी मात्र इतनी है कि पर से स्नेह है, अपने को स्वतन्त्र, स्वतः सिद्ध, अविनाशी, अखण्ड, सत् जानकर बन्धन से दूर रहो और प्रसन्न रहो।

१५९४. परिचय बढ़ाना शान्ति का मार्ग नहीं है अतः किसी से विशेष परिचय मत पूछो और न अधिक समय तक एक स्थान पर रहो, परिस्थिति वश यदि एक स्थान पर रहने का प्रसंग आवे तो अपने ध्यान, अध्ययन, व्रताचरण से विशेष प्रयोजन रखो हाँ! सार्वजनिक शास्त्र प्रवचन एक बार करते रहें, जिससे स्व दृष्टि निर्मल हो और अन्य को भी लाभ हो सके।

१५९५. जब-तक सविकल्प अवस्था है तब तक अपनी गलती खोजो।

१५९६. यदि तुम्हें शान्ति पसंद है तो तुम अपना ऐसा व्यवहार रखो कि जिस व्यवहार के निमित्त से दूसरों को अशान्ति न पैदा हो क्योंकि तुम्हारे व्यवहार से दूसरों के अशांत होने पर तुमको शान्ति न होगी। कितने ही टूटी टाँग वाले हैं, तुम तो चलते-फिरते हो, कितने ही अंधे हैं तुम्हें तो कुछ दिखता भी है, कितने ही दारिद्रय या अजीर्ण से खा नहीं पाते हैं, तुम तो खाते भी रहते हो, फिर भी शान्ति नहीं रखते?

१५९७. कौन-सा पर पदार्थ मेरा हित करेगा? मेरा हित तो निर्विकल्प अवस्था में है, बाह्य पदार्थ

का ध्यान तो विकल्प का हेतु है व रहेगा।

१५९८. एक डण्डा मारकर बताया कि एक बज गया, पूछने वाला खुश हुआ। उससे पूछा क्यों हँस रहे? उसने कहा—एक घंटे पहले पूछता तो ये १२ डण्डे मारता, जो हर हाल में राजी है, उसे कोई दु:खी नहीं कर सकता है।

१५९९. गलतियाँ हों पर एक गलती दुबारा न हो, गलितयाँ उन्हीं से होती हैं, जो कुछ करने की कोशिश करते हैं, गिरते भी वही हैं जो चलते हैं, गलती से सबक लो, गलती से गिरो भी तो बॉल की तरह उछलो न कि मिट्टी के लौंदे की तरह गिरकर चिपको, यही उन्नति का राज है।

१६००. धर्म गुरुओं से लोग त्याग, न्याय, सत्य और ईमानदारी के पथ पर चलने की शिक्षा लेते हैं, अतः धर्म गुरु अनीति और अधर्म से बचें।

१६०१. माँ-बाप का नहीं किन्तु अच्छे मित्रों का चुनाव तो करना ही चाहिए।

१६०२. जीवन में आप न सबको प्रसन्न रख सकते हो और न सबसे प्रसन्न रह सकते हो अतः शान्ति धारण करो।

१६०३. एक छोटी-सी लड़ाई से हम अपना प्यार खत्म कर लेते हैं, इससे तो अच्छा है कि प्यार से हम अपनी छोटी सी लड़ाई ही खत्म कर दें।

१६०४. पाप में लीन पुरुष खोटा पुरुष है, पाप से निवृत्त पुरुष पुण्यवान है, निज-पर के हित में संलग्न पुरुष सत्पुरुष है और परहित करना ही जिनका कार्य है, वे महापुरुष हैं।

१६०५. दूसरों के प्रति हमारे शुभ विचार हमारी सुप्त चेतना को जाग्रत कर हमें प्रबल शक्ति प्रदान करते हैं।

१६०६. इस तरह से जीवन जीना चाहिए कि यदि कोई आपके बारे में बुरा कहे तो कोई भी उस पर विश्वास न करें।

१६०७. यदि स्वभाव में मधुरता नहीं है तो जीवन में कहीं भी आनंद नहीं मिल सकता है।

१६०८. दूसरे को बदलने में नहीं अपितु स्वयं को बदलने में सुख मिलता है।

१६०९. स्वयं का निर्णय ही सर्वोपरि होता है, पर के निर्णय से जीवन कष्टमय होता है।

१६१०. शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा सदाचरण का सौन्दर्य हजार गुणा श्रेष्ठ होता है।

१६११. इतने नरम भी मत हो जाओ कि दुनिया आपको खा जाये, इतने गरम भी मत हो जाओ कि दुनिया आपको छू न सके, इतने सरल भी मत हो जाओ कि दुनिया आपको मूर्ख बना दे, इतने ज्यादा अकड़ों भी मत कि दुनिया आपसे मिल न सके, इतने गम्भीर भी मत बनो कि दुनिया आपसे ऊब जाये, इतने छिछोरे भी मत बनो की दुनिया आपकी गिनती न करे इतने मँहगे भी मत बनो कि दुनिया आपको बुला न सके, इतने सस्ते भी मत बनो कि दुनिया आपको ना चाहे।

१६१२. जो विभिन्न महापुरुषों के चिंतन के साथ रहते हैं वे समझो कि उन्हीं के साथ रहते हैं।
१६१३. जो शरीर की अनुकूलता-प्रतिकूलता में राजी नाराज होता है, वह हड्डी-मांस का भक्त है भगवान् का नहीं।
१६१४. बिना पूछे सलाह देने से सब सम्मान समाप्त हो जाता है।
१६१५. अनेक जीवों को समझाने की अपेक्षा एक स्वयं को समझा लेना अच्छा है।
१६१६. प्रभु से मत कहो समस्या विकट है, समस्या से कह दो कि मेरा प्रभु मेरे निकट है। यदि किसी समस्या को सुलझाया जा सकता है तो फिर चिन्ता करने की क्या जरूरत है और यदि नहीं सुलझाया जा सकता तो फिर चिन्ता करने से क्या फायदा है?
१६१७. जो हाथ सेवा के लिए आगे उठते हैं, वे प्रार्थना करने वाले ओठों से अधिक पवित्र होते हैं।
१६१८. अपने आपको सुधारना संसार की सबसे बड़ी सेवा है।
१६१९. गरीबी की रोटियाँ खा लेना पर कलंक के रसगुल्ले मत खाना।
१६२०. विपरीत ज्ञानी बन के रहने की अपेक्षा कम ज्ञानी रहना अच्छा है।
१६२१. जो अपनी भलाई चाहते हैं, वे महापुरुषों का अपमान करने से बचें।
१६२२. परिचय, पत्रों से नहीं अपनी पात्रता से देना चाहिए।
१६२३. धनी व्यक्ति को भूला जा सकता है पर ज्ञानी को नहीं।
१६२४. दुनिया में मेहमान बनकर जियो मालिक बनकर नहीं।
१६२५. जो झुक सकता है वह सारी दुनिया को झुका सकता है। निर्ग्रन्थों का मार्ग निष्पृह वृत्ति का मार्ग है।
१६२६. प्रशंसा से पिघलना मत और आलोचना से उबलना मत।
१६२७. मूर्खों की तारीफ सुनने की अपेक्षा बुद्धिमानों की डाँट सुनना अच्छा है।
१६२८. जिसके वश में अपना मन नहीं है, उसको सिद्धि कैसे प्राप्त होगी?
१६२९. स्वयं का पाप स्वयं के लिए घातक है। बहाने बाजी कार्य को पीछे धकेलती है।
१६३०. हीरे की तरह काबलियत रखते हो तो अँधेरे में चमका करो, रोशनी में आकर तो काँच भी चमका करते हैं।
१६३१. आसमान में उड़ने की मनाही नहीं, शर्त सिर्फ इतनी कि जमीन को नजर अंदाज न करें।
१६३२. आलोचना, क्रोध, निंदा जैसे जहर को पीना सीखो।
१६३३. शराब से बढ़कर मनुष्य का नाश करने वाली कोई पेय वस्तु नहीं हो सकती है।
१६३४. शराब पर ही नहीं, सभी प्रकार की नशीली वस्तुओं के सेवन का निषेध होना चाहिए।
१६३५. शराब सम्पत्ति ही नष्ट नहीं करती बल्कि शरीर भी नष्ट करती है।
१६३६. पूर्व काल में जुआ खेलना मनुष्यों में वैर का कारण देखा गया है, अतः बुद्धिमान मनुष्य हँसी के लिए भी जुआ न खेलें।

१६३७. अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि आप संसार में महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।
१६३८. शालीनता बिना मोल मिलती है और उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।
१६३९. क्रोध में जवाब ना दो, अधिक खुशी में वादा न करो, दुःखी मन से फैसला न करो।
१६४०. बदला लेने में क्या मजा, मजा तो तब है जब सामने वाले को बदल डालो।
१६४१. उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम की देव भी सेवा करते हैं।
१६४२. भविष्य का भय न करने वाला ही वर्तमान का आनंद ले सकता है।
१६४३. सफल मनुष्य बनने से बेहतर है गुणी मनुष्य बनने का प्रयास करें।
१६४४. दूसरों को सुधारने का अहं पालने की अपेक्षा अच्छा है स्वयं को सुधारना।
१६४५. जो उपहास, व्यंग और विरोध से नहीं डरता वे ही बड़े परिवर्तन ला सकते हैं।
१६४६. प्रायः समान विद्या वाले लोग एक दूसरे के यश से ईर्ष्या करते हैं। ईर्ष्या विवेक की विरोधी है।
१६४७. स्पर्द्धा संसार में गुणी, प्रतिष्ठित और सुखी लोगों की संख्या में बढ़ती करना चाहती है और ईर्ष्या इनकी कमी करना चाहती है।
१६४८. दूसरों को गुलाम बनाने वाला खुद गुलाम बन जाता है।
१६४९. आदमी झूठी प्रशंसा सुन सकता है पर सच्ची आलोचना नहीं सुन पाता है। आपकी मानसिकता सशक्त किन्तु मृदु होना चाहिए।
१६५०. लोक में उदासीन वृत्ति से जीने वाले कभी दुःखी नहीं होते।
१६५१. आपके आगे-पीछे क्या है इसका नहीं अंदर क्या है इसका महत्त्व है।
१६५२. मत बनिये खुदा किसी के वास्ते, आदमी बन जाइये आदमी के वास्ते।
१६५३. अहं झुका तो सारे गुण ऊँचे उठ जायेंगे, अहं और इन्द्रिय दर्प विवेक को नष्ट कर देते हैं।
१६५४. बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है पर अच्छा आदमी बनना बड़ी बात है।
१६५५. रोग होने पर पथ्य सेवन, स्वामी के सामने सत्य बोलना, दुष्ट के साथ न्याय करना, शत्रु को क्षमा करना, ज्ञान होने पर ध्यान करना, धन होने पर दान करना और स्त्री के साथ कोमल व्यवहार करना औषध है।
१६५६. आँख खुले तो जिनदेव को देखना एवं आँख बंद हो तो निजदेव को देखना चाहिए।
१६५७. आँखें ही साधना की सिद्धि कर देती हैं और आँखें ही साधना का नाश करती हैं।
१६५८. जिसके परिणाम विशुद्ध होते हैं उसकी आँखें और चेहरा चमकता है और जिसका मन विकृत है उसकी भाषा और देह विकृत हो जाती है।
१६५९. बड़ी-बड़ी बातें करने से नहीं छोटी-छोटी कमियाँ दूर करने से समझदार कहलाते हैं।
१६६०. शाकाहार से शक्ति उत्पन्न होती है मांसाहार से उत्तेजना बढ़ती है।

१६६१. साख है तो सब कुछ खास है, साख नहीं तो सब राख है।
१६६२. जीते जी कद्र करो, अर्थी उठाते वक्त तो नफरत करने वाले भी रो पढ़ते हैं।
१६६३. इन्द्रिय निरोध तभी संभव है जब मन वश में हो।
१६६४. कर्म कलंक तो छूट जाते हैं पर अपयश का कलंक नहीं छूटता है।
१६६५. कलंक के रसगुल्लों से ईमानदारी की सूखी रोटी अच्छी है।
१६६६. परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है।
१६६७. हर किसी को सुखी रखना हमारे वश में नहीं, लेकिन किसी को हमारी वजह से दुःख न हो ये हमारे वश में हैं।
१६६८. अपनी गलती को तुरन्त स्वीकार कर लेना और दूसरों की गलती को नजर अंदाज कर देना ही सकारात्मक सोच की दिशा का पहला कदम है।
१६६९. यह सच है कि छोटा आदमी बड़े मौके पर काम आता है और बड़ा आदमी छोटी-सी बात पर औकात दिखा जाता है।
१६७०. गुणग्राह्य दृष्टि व्यक्ति को श्रेष्ठता प्रदान करती है।
१६७१. गुणी लोग दोषों को भी गुण रूप से ग्रहण करते हैं और दोषी लोग गुणों को भी दोष रूप से ग्रहण करते हैं।
१६७२. जो दूसरों से सबक लेकर चेत जाता है, वही चतुर होता है।
१६७३. चित्त की पवित्रता से चारित्र में पवित्रता आती है। चरित्रवान के साथ दुनिया होती है।
१६७४. अपरिग्रही अनगार को जो आनंद होता है वह अहमिन्द्र को भी नहीं होता। चक्रवर्ती को उसके अनंतवें भाग भी नहीं होता।
१६७५. मानस की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं चारित्र है क्योंकि यही सबसे बड़ा रक्षक है। चारित्र के बिना व्यक्तित्व खोखला है।
१६७६. श्रावक अभिषेक के समय प्रभु के और आहार दान के समय गुरु के अति निकट होता है, तब दो बासों के घर्षण के समान भक्ति व चारित्र की ज्योति प्रकट होती है।
१६७७. छोटे-छोटे प्रलोभनों का आकर्षण चारित्र को गिरा देता है।
१६७८. चारित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है। चारित्र की तलवार के साथ वैराग्य की ढाल होना परमावश्यक है।
१६७९. जिसका चारित्र शुद्ध है उसकी समाधि भी श्रेष्ठ होती है।
१६८०. वैराग्य के बिना चारित्र विधवा स्त्री के शृंगार के समान है।
१६८१. गुप्ति, समिति, परीषहजय चारित्र की रक्षा करने वाली भावनाएँ हैं।
१६८२. यदि धन नष्ट हुआ तो कुछ नहीं हुआ, यदि स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ, यदि

चारित्र नष्ट हुआ तो सब कुछ नष्ट हुआ अतः चारित्र रक्षणीय है।

१६८३. अध्ययन करना, सुनना, चारित्र पालन करने वाले का ही पूर्ण सार्थक है, नट के समान दुरात्मा मनुष्य का बहुत अध्ययन करना अति लाभदायक नहीं है।

१६८४. खराब चित्र देखने से चित्त खराब होता है और मन खराब होने से चरित्र खराब हो जाता है।

१६८५. जो हितकारी तप, दान, धर्म तथा चारित्र ग्रहण आदि की प्रेरणा देकर कराते वे श्रेष्ठ हैं।

१६८६. जैसे दिखते हो या दिखाना चाहते हो वैसे बनो।

१७. खुश मिजाज - हाजिर जवाब

१६८७. जो कोई रिश्ते न होने पर भी रिश्ता निभाते हैं, बस दुनिया में वो ही दिल को छू जाते हैं।

१६८८. अपना व्यवहार इतना आकर्षक रखो कि कोई तुम्हें छोड़ तो सके पर भुला न सके।

१६८९. जो रखती है मायके का मान, ससुराल का सम्मान, पति का अरमान, बच्चों का ध्यान रहती है खुद से अनजान वह है स्त्री की पहचान।

१६९०. न्याय प्रियता, लज्जाशीलता, सदाचार, हँसमुख चेहरा, उदार हाथ, मृदुभाषण और स्निग्ध-निरभिमानता ये उच्च कुलीन पुरुष के लक्षण हैं।

१६९१. स्वयं को ऐसा बनाओ जहाँ तुम हो वहाँ तुम्हें सब प्यार करें, जहाँ से तुम चले जाओ वहाँ तुम्हें सब याद करें, जहाँ तुम पहुँचने वाले हो वहाँ तुम्हारा सब इंतजार करें।

१६९२. अच्छाइयों का एक-एक तिनका चुन-चुनकर जीवन भवन का निर्माण होता है, पर बुराई का एक हल्का झोंका ही उसे मिटा डालने में समर्थ है।

१६९३. तीव्र कामी-क्रोधी-ईर्ष्यालु जीव को रोग ज्यादा घेरते हैं, एक समय सीमा के बाद उसके ज्ञान का क्षयोपशम नष्ट हो जाता है।

१६९४. अजीब है यह बात कि दूसरे की मदद करने का समय किसी के पास नहीं हैं लेकिन दूसरों के काम में अड़ंगे डालने का समय सबके पास है।

१६९५. जीवन जीने के सात सूत्र–

१. धीरे बोलिए शान्ति मिलेगी।
२. भक्ति करो मुक्ति मिलेगी।
३. सेवा कीजिए शक्ति मिलेगी।
४. दान कीजिए मान मिलेगा।
५. संतोष कीजिए सुख मिलेगा।
६. सहन कीजिए साथ मिलेगा।
७. अहम् छोड़ो अर्हं बनोगे।

१६९६. जो सदाचार का पालन नहीं करते उन्हें शिक्षित होने पर भी उसी प्रकार लाभ नहीं मिलता जिस प्रकार जादू की गाय दूध नहीं देती है।

१६९७. दिल बड़ा रखो, दिमाग ठंडा रखो, वाणी मीठी रखो फिर कोई आपसे नाराज हो तो कहना।

१६९८. क्या जरूरत है दिया सलाई की, यहाँ तो आदमी से आदमी जलता है।

१६९९. प्रसन्नता के सूत्र–संतोषी बनें, आशावादी बनें, हमेशा खुश रहें, हमेशा सकारात्मक एवं अच्छी सोच रखें, हमेशा चिन्ता मुक्त रहें, परोपकार की भावना रखें, विपत्ति में सोचें जो होगा सो देख लेंगे इत्यादि।

१७००. फूलों की सुगन्ध केवल वायु की दिशा में फैलती है परन्तु एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

१७०१. सफल व्यक्ति होने का प्रयास न करें, अपितु गरिमामय व्यक्ति बनने का प्रयास करें। आत्म प्रभावना से शून्य धर्म प्रभावना बंध्या स्त्री के श्रृंगार के समान है।

१७०२. हे प्रभु! मुझे अधिक लेने के नहीं अधिक देने के योग्य बनाओ।

१७०३. किसी को अपनी पसंद बनाना कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात है किसी की पसंद बन जाना।

१७०४. अपने रहस्यों को किसी के सामने प्रकट न करें, यह आदत आत्मघाती है।

१७०५. बुद्धिमान अपने अनुभवों से सीखता है, अधिक बुद्धिमान दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है।

१७०६. बुद्धिमान वह है जो जगत् को यथार्थ रूप से जाने, वर्तमान को ठीक से पढ़ सके, परिस्थिति के अनुसार चल सके और दूसरे का अभिप्राय समझ सके।

१७०७. वीरता के साथ जब बुद्धि नहीं रह जाती तो मानव भेड़िया बन जाता है।

१७०८. बुरा करने वालों का भी जो भला करता और सोचता है वह महान् होता है।

१७०९. प्रभावना चित्रों से नहीं चरित्र से होती है। विद्या का आभूषण शान्ति है।

१७१०. जो व्यक्ति गंभीर, शान्त चित्त, चंचलता रहित होगा वही मंत्र सिद्ध कर सकता है, वाचाल को मंत्र की सिद्धि नहीं होती है।

१७११. कर्म ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य जहाँ भी बैठ जाये वहाँ मन्दिर बन जाये।

१७१२. महात्मा स्वयं कष्ट में होने पर भी दूसरों को सहारा देता है, स्वयं मरणोन्मुख होने पर भी दूसरों को धैर्य प्रदान करता है।

१७१३. यदि आप सुख से जीना चाहते हो तो निर्ममत्व होकर जीना सीखो।

१७१४. ममत्व के वशीभूत जीव स्वयं के द्वारा स्वयं का ही पतन करता है।

१७१५. बुद्धिमान को एक व्यक्ति का त्याग कर कुल की, कुल का त्याग कर ग्राम की, एक ग्राम

का त्यागकर देश की और पृथ्वी का त्याग कर अपने आप की रक्षा करना चाहिए।

१७१६. सबसे मिलकर रहना पर किसी से भी बंधकर नहीं रहना चाहिए।

१७१७. जिनेन्द्र देव की वीतराग वाणी स्वतंत्र बनाती है, स्वच्छंद नहीं बनाती है।

१७१८. राग आग के समान है अतः राख होने से पहले राग छोड़ देना चाहिए।

१७१९. जो व्यक्ति सच्चाई के मार्ग पर चलता है वह हर प्रकार की उलझनों से दूर रहता है किन्तु जो व्यक्ति गलत तरीकों से आगे बढ़ता है उसका जीवन समस्याओं और उलझनों में घिरा होता है।

१७२०. राष्ट्र उत्कर्ष हेतु संत समाज का योगदान आपेक्षित है।

१७२१. समाज का नेता पवित्र जिह्वा वाला और हजारों का पालन पोषण करने वाला होना चाहिए।

१७२२. छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते हैं।

१७२३. रिश्तों की खूब सूरती एक-दूसरे की बात बर्दाश्त करने में है, खुद जैसे इंसान की तलाश करोगे तो अकेले रह जाओगे।

१७२४. सभी मेहमानों में से किसी को देखकर, किसी को मुस्कुराकर, किसी को हँसकर और किसी को सम्मान/भेंट देकर प्रसन्न किया जाता है।

१७२५. व्यसनी व्यक्ति को व्यसनों की तृप्ति के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता पड़ती है जिससे वह अन्याय, अनीति और अधर्म से धनोपार्जन करता है।

१७२६. जुआरी; धनहीन, वस्त्रहीन, भाग्यहीन, कुबुद्धि और धर्म से रहित देखे जाते हैं।

१७२७. जो सदाचारी, विनयवान, विवेकवान, विद्वान्, पवित्र, तत्त्वों का ज्ञाता, क्रोध-लोभ रहित, बुद्धिमान, सब दर्शनों-मतों के सारभूतज्ञान का ज्ञाता है, संसार से भयभीत है, मर्यादा से युक्त है वही श्रेष्ठ वक्ता है।

१७२८. जो बोलता कम और सुनता ज्यादा है उसका जीवन स्वर्ग बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

१७२९. जो विपत्तियों के दिनों में भी मुस्कुराना जानता है वह विपत्ति को भी विपत्ति में डाल देता है।

१७३०. बुद्धिमान व्यक्तियों की प्रशंसा की जाती है, धनवान से ईर्ष्या की जाती है बलशाली व्यक्तियों से डरा जाता है लेकिन विश्वास सिर्फ चारित्रवान व्यक्तियों पर ही किया जाता है।

१७३१. मीठे शब्दों पर नहीं अच्छे आचरण पर विश्वास करो।

१७३२. स्त्री की मधुरवाणी से परिवार में स्नेह की सरिता बह निकलती है।

१७३३. एक बुद्धिहीन महिला अपने पति को अपना गुलाम बनाती है और खुद गुलाम की पत्नि

बन जाती है, जबकि एक बुद्धिमती महिला अपने पति को राजा जैसा बनाकर खुद रानी बन जाती है।

१७३५. स्त्री आलिंगन किसी अन्य का करती है, वचन से किसी अन्य को बहलाती है, किसी अन्य को देखती है, किसी अन्य के कारण रोती है, किसी अन्य को शपथों द्वारा अभिप्राय प्रकट करती है, किसी को वरती है, किसी अन्य के साथ शयन करती है, शयन को प्राप्त होकर भी किसी अन्य का चिंतन करती हैं।

१७३६. प्रसन्न मुख, निर्मल दृष्टि, वार्तालाप में प्रीति, मधुर वाणी स्नेह का अधिक प्रकट होना तथा आदरपूर्वक देखना ये सदा अनुराग रखने वाले पुरुष के चिह्न हैं।

१७३७. स्वयं के दोष देखने वाले को दूसरे के दोष देखने का समय ही नहीं मिलता है।

१७३८. जिसके हृदय में सत्य है उसके हृदय में परमात्मा विराजते हैं।

१७३९. असंयमित जीवन पशु जैसा जीवन है, जिसके जीवन में संयम है उनको शान्ति है।

१७४०. संसार में महान् वह है जो गुणवान की प्रशंसा कर पाता है और सुन पाता है।

१७४१. संसार में सबसे अवगुणी वह है जो गुणीजनों के गुण कहने में हिचकता है।

१७४२. यदि आपको किसी एक से शिकायत है तो उससे कहिए, यदि अधिकतर या सभी लोगों से शिकायत है तो अपने आपसे कहिए और यदि किसी से भी शिकायत नहीं है तो शायद आप सन्त हैं।

१७४३. सहज, सरल, मृदु, विनयी, सदाचार ही सच्चे संत के गुण हैं।

१७४४. संत वही है जिसे देखकर असंत की दुर्जनता पलायन कर जाये।

१७४५. अपनों से तो सभी प्रेम से बोलते हैं पर जो परायों से भी अपनेपन से बोले वह संत पुरुषों की भाषा है।

१७४६. मनचाहा सुख किसे मिलता है क्योंकि सुख भाग्य के अधीन है इसलिए संतोष का आश्रय लेना चाहिए, जो संतोष से उत्पन्न अमृत को पीकर भोग तृष्णा को छोड़ते हैं वे गृहस्थ मुनि तुल्य होते हैं।

१७४७. अपनी स्त्री, भोजन और धन इन तीनों में संतोष करना चाहिए परन्तु स्वाध्याय, तप और दान इन तीनों में संतोष नहीं करना चाहिए।

१७४८. अगर आप संतुष्ट हैं तो आजाद रहेंगे क्योंकि आजादी ही संतुष्टि का फल है।

१७४९. अगर आप संतुष्ट हैं तो आपकी गिनती दुनिया के सबसे अमीर लोगों में होगी।

१७५०. दो ही पुरुष अपने विपरीत कर्म के कारण शोभा नहीं पाते–अकर्मण्य गृहस्थ और प्रपंच में लगा हुआ संन्यासी।

१७५१. जो व्यक्ति थोड़ी चीजों से संतुष्ट नहीं होता है, वह जिन्दगी में कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकता है।

१७५२. जब आप सच्चाई की राह पकड़ लोगे तो सब राहें आसान हो जायेंगी।
१७५३ जो मनुष्य बदला लेना चाहता है वह अपने घाव को ताजा बनाये रखता है।
१७५४. योग्यता और परिस्थिति को ध्यान में न रखकर महत्त्वाकांक्षा गढ़ने वाला दुःखी रहता है और उपहास का पात्र होता है।
१७५५. बेकसूर कौन होता इस जमाने में बस सबके गुनाह पता नहीं चलते हैं।
१७५६. ऐसी बात जिसे कहने में लज्जा आये उसे मन से भी नहीं सोचना चाहिए। ऐसा कार्य जिसे छुपकर करना पड़े उसे कभी नहीं करना चाहिए।
१७५७. कभी आप भगवान् से दूसरों के लिए माँग कर देखो, आपको कभी अपने लिए माँगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।
१७५८. नफरत को हजार मौके दो कि वो प्रेम में परिवर्तित हो जाये लेकिन प्रेम को एक भी मौका मत दो कि वो नफरत में बदल जाये।
१७५९. सिर्फ पुरुष ही क्यों अपने अंदर के रावण को मारें? स्त्रियों को भी चाहिए कि वो भी अपने अंदर की कैकई, मंथरा, शूर्पनखा को मारें।
१७६०. यदि आप बहुत अधिक लोगों पर निर्भर रहते हैं तो आपके निराश होने के अवसर अधिक होंगे।
१७६१. अपना दुःख हटाने का तरीका है सबका दुःख बाँटना और अपनी खुशी बढ़ाने का तरीका है सबको खुशी बाँटना।
१७६२. मनुष्य दुःखी, निराश, चिंतित, उद्विग्न बैठा रहता हो तो समझना चाहिए सही सोचने की विधि से अपरिचित होने का ही यह परिणाम है।
१७६३. स्वार्थ, अहंकार और लापरवाही बढ़ जाना ही व्यक्ति के पतन का कारण है।
१७६४. सबसे बड़ा दीन दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियंत्रण नहीं है।
१७६५. यदि हम सुधरे, हमारा दृष्टि कोण सुधरे तो दूसरों का सुधार कुछ भी कठिन न रह जायेगा।
१७६६. अज्ञानी को ज्ञान, भूखे प्यासे को भोजन, भूले को मार्ग दें, दुःखी की सेवा करें।
१७६७. जब भी कोई प्रतिभावान सामने आये तो हताश होने की बजाय उसके गुणों को बारीकी से पढ़ें।
१७६८. अब सहयोग की उम्मीद किससे करें भला मिट्टी के बने लोग कागजों में बिक जाते हैं।
१७६९. सज्जन गाय की तरह दुर्जन साँप की तरह होता है।
१७७०. सज्जन गुणहीनों पर भी दया करते है, पर के द्वारा किए हुए उपकार को नहीं भूलते हैं, अपनी कमजोरी दूसरों पर नहीं डालते हैं, दूसरों के दोषों को प्रकट नहीं करते हैं, गुणवान को देखकर प्रमुदित होते हैं, दूसरों के अल्पगुण की भी अनल्प प्रशंसा करते हैं, दूसरों

के वैभव से ईर्ष्या नहीं करते हैं, दूसरों के दुःख में दुःखी-सुख में सुखी होते हैं, स्व प्रशंसा नहीं करते हैं, दूसरे के द्वारा प्रशंसा किए जाने पर नम्रीभूत होते हैं, विषमताओं के आने पर निजशील, न्यायनीति और धर्म का परित्याग नहीं करते हैं, पर के द्वारा कटु व्यवहार किए जाने पर भी मधुर उत्तर देते हैं, दूसरों के दोष नहीं गुण ग्रहण करते हैं विसंवाद नहीं करते हैं।

१७७१. जो जितना सज्जन होगा उसके अंग-अंग में उतनी शालीनता होगी।

१७७२. जो समय बचाना चाहता है वह एक भी अनावश्यक बात नहीं करता है।

१७७३. यदि सुखमय जीवन चाहते हो तो अपरिचित रहना सीखो।

१७७४. यदि कुछ बनना चाहते हो तो सुनना व सहन करना सीखो।

१७७५. दो तथ्य आपको परिभाषित करते हैं, 'आपका धैर्य' जब आपके पास कुछ न हो और आपका व्यवहार जब आपके पास सब कुछ हो।

१७७६. अपने परिणाम सुधारो, दूसरों को मत सुधारो, तीर्थंकर आदिनाथ अपने परिवार के मारीच को नहीं सुधार पाये, तो आप कैसे सुधार सकते हो।

१७७७. रागी जीव ने शरीर के राग में न जाने कितनों को शरीर रहित कर दिया, एक पर्याय को सजाने में कितनों की पर्यायों को नष्ट कर दिया। सही चेहरा तो चारित्र से चमकता है किन्तु आपने परजीवों की हिंसक सामग्री से चमकाना चाहा है। चर्म सुन्दर नहीं सुन्दर तो आत्मा का धर्म है।

१७७८. अच्छे ने अच्छा, बुरे ने बुरा जाना मुझे जिसकी जैसी सोच उसने वैसा ही पहचाना मुझे।

१७७९. जिसकी बड़ी सोच होती है वही सबसे बड़ा होता है।

१७८०. सुख-दुःख का वेदन देखने से नहीं सोचने से होता है, यदि देखने से दुःख होने लगे तो फिर अग्नि के देखने से आँखें जलने लगेंगी।

१७८१. हम व्यक्ति के कामों से यह जानते हैं कि वह क्या-क्या सोचता है, न कि उसके बताने पर कि वह क्या सोचता है।

१७८२. आप वही बनते हैं जिसके बारे में आप पूरा दिन सोचते हैं।

१७८३. आप जिन चीजों के बारे में सोचते हैं, उनमें मास्टरी प्राप्त करते हैं।

१७८४. आप वो हैं जो आपकी सोच है अतः अपनी सोच को सही बनायें, वरना लोहे को दूसरा नहीं बल्कि उसकी जंग ही उसे नष्ट कर देती है।

१७८५. फर्क सिर्फ सोच का होता है सकारात्मक या नकारात्मक वरना सीढ़ियाँ वही होती हैं पर किसी को ऊपर ले जाती तो किसी को नीचे लाती हैं।

१७८६. जो धोखेबाज न हो, स्थिर रहने वाला हो, बुद्धिमान हो, संतोषी हो, चुगली से रहित हो, भर्त्सना करने पर उत्तर न देता हो तथा प्रशस्त वचन बोलता हो, स्वामी के शत्रु से

शत्रुभाव, मित्र से मित्रभाव रखता हो सत्पुरुष ऐसा सेवक चाहते हैं।

१७८७. सेवकों को अपने स्वामी से उचित सम्मान पाकर जैसा सन्तोष होता है वैसा सन्तोष बहुत धन देने पर भी नहीं होता है।

१७८८. अज्ञानी की श्वासें तेज और ज्ञानी की श्वासें मंद-मंद चलती हैं, स्वरूप का चिन्तन करने वाले योगी की श्वास मंद-मंद चलती है किन्तु भोगी की श्वांसें तेज चलती हैं, जो जितना उथला व्यक्ति होता है वह उतना ही हाँफता है।

१७८९. आपकी शिकायतें ही आपके व्यक्तित्व की सूचक हैं। निःशंक जीवन जियो।

१७९०. मेरे शब्द मेरी पहचान बने तो अच्छा है चेहरे का क्या वह तो मेरे साथ चला जायेगा।

१७९१. शरीर के स्वभाव का चिन्तन करने से वैराग्य में वृद्धि होती है।

१७९२. दूसरों के प्रति शिकायत की वृत्ति अनुभव हीनता का प्रतीक है।

१७९३. मैंने सरिता से सीखा है जीने का तरीका, चुपचाप से बहना और अपने मौज में रहना।

१७९४. अनुशासित शिष्य शिक्षा को सुगमता से प्राप्त कर लेता है।

१७९५. अत्यन्त क्रोध की अवस्था में भी पूज्य पुरुषों की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

१७९६. सच्चा शिष्य गुरु के प्रति भावों को नहीं बदलता है।

१७९७. सच्चा शिष्य गुरु के पीछे चलता है, गुरु से नीचे बैठता है, गुरु को सामने आते देखकर खड़ा हो जाता है और गुस्से में भी नीचे स्वर में बात करता है।

१७९८. सभ्यता पूर्ण व्यवहार को शिष्टाचार कहा जाता है।

१७९९. ताकत के साथ नेक इरादे भी रखना वरना ऐसा क्या था जो रावण भी हार गया था।

१८००. वो दुश्मन बनकर मुझे जीतने निकले थे, मोहब्बत कर लेते तो मैं खुद ही हार जाता।

१८०१. जो व्यक्ति शक्ति न होते हुए भी मन से हार नहीं मानता है उसको दुनिया की कोई भी ताकत हरा नहीं सकती है किन्तु हर हार से सीख ली जायें।

१८०२. जो मनुष्य प्रतिष्ठा को करने वाला है उसे संघ का अधिपति जानना चाहिए क्योंकि धर्म की वृद्धि किसी अन्य द्वारा नहीं होती है।

१८०३. भावना सहित प्राणी कदाचित् ज्ञान और चारित्र से च्युत भी हो जाता है तो वह स्वर्गादि के सुख प्राप्त कर मुक्ति का स्वयंवर होता है।

१८०४. जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र का पालन किए बिना दूसरे का भोजन करता है वह अगले भव में पशु के रूप में भार ढोने वाला होता है।

१८०५. मैं मानता हूँ जिसकी आशा नष्ट हो गयी वही पुण्यात्मा है, निष्पृह मनुष्य इस लोक-परलोक में इन्द्र तथा चक्रवर्तियों के द्वारा स्तुत्य होता है।

१८०६. सच्चा सुख अनन्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए भागने में नहीं है बल्कि जीवन में सादगी, संतोष और सदाचरण अपनाने में है।

१८०७. निस्संदेह दान की बहुत प्रशंसा हुई है परन्तु दान से धार्मिक आचरण ही श्रेष्ठ है।
१८०८. यदि किसी लड़की के दोष जानने हो तो उसकी प्रशंसा उसकी सहेली के सामने करो।
१८०९. निन्यानवें प्रतिशत अवस्थाओं में कोई भी मनुष्य स्वयं को दोषी नहीं ठहराता,चाहे उसकी कितनी भी भारी भूल क्यों न हो?
१८१०. दूसरों के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं बहुत भले बन जाते हैं, पर जब हम अपने दोषों पर ध्यान देंगे तो अपने आपको कुटिल और कामी पायेंगे।
१८११. ऐसा कोई महान् व्यक्ति नहीं हुआ जो वास्तव में सदाचारी न रहा हो।
१८१२. सदाचार की रक्षा यत्न से करना चाहिए, धन तो आता है और जाता है, धन क्षीण हो जाने पर भी सदाचारी मनुष्य क्षीण नहीं माना जाता किन्तु जो सदाचार से भ्रष्ट हो गया, उसे नष्ट ही समझना चाहिए।
१८१३. व्यभिचारी को इन चार बातों से कभी छुटकारा नहीं मिलता–घृणा पाप, भ्रम और कलंक।
१८१४. जो पुरुष बुराई से विमुख रहते हैं, वे लोभ नहीं करते और न ही दुष्कर्मों की ओर प्रवृत्त होते हैं।
१८१५. जो पुरुष न्याय की बात को समझता है और दूसरों की वस्तुओं को लेना नहीं चाहता लक्ष्मी श्रेष्ठता को जानती है और उसे ढूँढ़ती हुई उसके घर आती है।
१८१६. मुख से चाहे कोई कितनी ही धर्म–कर्म की बातें करे, पर उसकी चुगल खोर जिह्वा उसके हृदय की नीचता को प्रकट कर ही देती है।
१८१७. यदि तुम दूसरों की चुगली करोगे तो वह तुम्हारे दोषों को खोजकर प्रकट कर देगा।
१८१८. जिनकी दृष्टि विस्तृत है तथा जिनके विचार बड़े–बड़े प्रश्नों के हल करने में लगे रहते हैं, ऐसे लोग विकथा का एक शब्द भी अपने मुख से नहीं निकालते हैं।
१८१९. जो लोग दोषों से सर्वथा रहित नहीं है, वे स्वयं पर तो नहीं बिगड़ते फिर वे अपनी निन्दा करने वालों पर क्यों क्रुद्ध होते हैं ?
१८२०. वह प्रभावशाली मुख मुद्रा किस काम की जिसके हृदय में बुराई भरी हो।
१८२१. जो मनुष्य दूसरों की सम्पत्ति को हड़पने की प्रतीक्षा में बैठा रहता है उसके हृदय से दया और प्रेम कोसों दूर रहते हैं।
१८२२. उच्च कुल में जन्म लेने वाले मूर्ख का उतना आदर नहीं होता जितना निम्न कुल से उत्पन्न विद्वान् का होता है।
१८२३. मनुष्य पशुओं से जितना उच्च है शिक्षित अशिक्षितों से भी उतना ही श्रेष्ठ है।
१८२५. यह भी बुद्धिमानी का एक काम है कि मनुष्य लोक रीति के अनुसार व्यवहार करें।
१८२६. तुम्हारे पास कितना धन है इस बात का विचार रखो और उसके अनुसार ही तुम दान

दक्षिणा दो, योग क्षेम की बस यही रीति है।

१८२६. मनुष्य की भलाइयों को देखें और फिर उसकी बुराइयों पर दृष्टि डालें इन में जो अधिक हैं, बस समझ लो वैसा ही उसका स्वभाव है।

१८२७. कौआ अपने भाइयों से अपने भोजन को स्वार्थ से छिपाता नहीं है, बल्कि प्यार से उन्हें बुलाकर खाता है, ऐश्वर्य ऐसी ही प्रकृति के लोगों के साथ रहता है।

१८२८. यदि उदासी का कारण हटा दिया जाये तो सम्बन्धी का मन मुटाव दूर हो जाता है एवं वह पास में आ जाता है।

१८२९. चंचल मन वाला खोटा पुरुष सोचकर ठीक रीति निकाल भी ले पर उसे व्यवहारिक रूप देते हुए डगमगाता है और अपने अभिप्राय को कभी पूरा नहीं कर पाता है।

१८३०. मित्रता द्वारा मनुष्य को सफलता मिलती है किन्तु आचरण की पवित्रता उसकी प्रत्येक इच्छा को पूर्ण कर देती है।

१८३१. भले आदमी जिन बातों को बुरा बतलाते हैं, मनुष्य को चाहिए कि माता की रक्षा के लिए भी उन्हें न करें।

१८३२. सम्यक्त्व चारित्र से सहित एक दिन भी जीवित रहना श्रेष्ठ है लेकिन चारित्र से हीन सौ करोड़ वर्ष भी जीवित रहना व्यर्थ है।

१८३३. जिस सच्चारित्र को हीन शक्ति वाला जीव आचरण करता है, उसे उत्कृष्ट शक्ति वाले की अपेक्षा हजार गुना फल ज्यादा प्राप्त होता है।

१८३४. चारित्र के आसन पर आसीन प्राणी जिस वस्तु की आकांक्षा करता है तीनों लोकों में उसे वह प्राप्त होती है और वह तीन जगत् का स्वामी होता है।

१८३५. चारित्र से विचलित जीव जीवित रहता हुआ भी मृत के समान है लेकिन चारित्र से युक्त जीव मृत होकर भी इहलोक–परलोक में जीवित है।

१८३६. जिन लोगों में चरित्र के निर्माण करने की शक्ति नहीं होती है उन्होंने अन्य दिशाओं में चाहे कितनी ही महत्ता प्राप्त कर ली हो संसार उसकी कुछ परवाह नहीं करता है।

१८३७. कुलीन पुरुष को करोड़ों रुपये मिलें तब भी वह अपने नाम को कलंकित नहीं होने देता है। प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न हुए मनुष्य के दोष पर चन्द्रमा के कलंक की तरह विशेष रूप से सबकी दृष्टि पड़ती है।

१८३८. कुलीन मनुष्य के मुख से यदि फूहड़ और निकम्मी बातें निकलेंगी तो लोग उसके जन्म के विषय तक में शंका करने लगेंगे।

१८३९. पर्वत के समान उच्च प्रभावशाली लोग भी बहुत क्षुद्र दिखाई पड़ने लगेंगे यदि वे कोई दुष्कर्म करेंगे, फिर चाहे वह कर्म गोली के समान ही छोटा क्यों न हो।

१८४०. छोटे आदमियों के बीच का ही यह विशेष दोष है; जो वे महान् पुरुषों की प्रतिष्ठा, उनकी

कृपा दृष्टि और अनुग्रह को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते हैं।

१८४१. जो लोग अपने कर्त्तव्य को जानते हैं और अपनी योग्यता बढ़ाना चाहते हैं, उनकी दृष्टि में सभी अच्छे कार्य कर्तव्य स्वरूप हैं।

१८४२. सार्वजनिक प्रेम, सलज्जता का भाव, सबके प्रति सद्व्यवहार, दूसरों के दोषों को ढाँकना और सत्य प्रियता ये पाँच भाव शुभाचरण रूपी भवन के आधारस्तम्भ हैं।

१८४३. योग्यता की कसौटी क्या है? यही कि दूसरों में जो बड़प्पन और श्रेय है, उसे स्वीकार कर लिया जाये; फिर चाहे वह श्रेष्ठता ऐसे ही लोगों में क्यों न हो, जो कि तुम से अन्य बातों में हीन हों।

१८४४. योग्य पुरुष की योग्यता तब किस काम की, जबकि वह अपने को क्षति पहुँचाने वालों के साथ भी सद्व्यवहार नहीं करता है।

१८४५. करुणा, बुद्धि और शुभ संस्कारों के मेल से ही मनुष्य में प्रसन्नता उत्पन्न होती है।

१८४६. जो लोग न्याय, निष्ठा और धर्म पालन के द्वारा अपना और दूसरों का भला करते हैं; संसार उनके स्वभाव का बड़ा आदर करता है।

१८४७. हास–परिहास में भी कटुवचन मनुष्य के मन में लग जाते हैं इसलिए सुपात्र पुरुष अपने वैरियों के साथ भी असभ्यता से नहीं बोलते हैं।

१८४८. रेती तीक्ष्ण भी हो पर वह युद्ध में लाठी से बढ़कर नहीं हो सकती है इसी प्रकार आचरण हीन मनुष्य विद्वान् भी हो फिर भी वह सदाचारी से बढ़कर नहीं होता है।

१८४९. जो लोग धन उपार्जन के लिए सदा हाय–हाय करते फिरते हैं पर यश प्राप्त करने की परवाह नहीं करते उनका अस्तित्व पृथ्वी के लिए केवल भार स्वरूप है।

१८५०. योग्य पुरुषों का लजाना उन कामों के लिए होता है जो उनके अयोग्य होते हैं इसलिए वह सुन्दर स्त्रियों की लज्जा से सर्वथा भिन्न है।

१८५१. आहार, वस्त्र और सन्तान इन बातों में तो सभी मनुष्य समान हैं, यह तो एक लज्जा की ही भावना है जिससे मनुष्य में पात्रता और योग्यता वास करती है।

१८५२. लज्जाशीलता क्या सत्पात्रों के लिए रत्न के समान नहीं? और जब वे उससे रहित होते हैं तब उनकी शेखी और श्रेष्ठता क्या देखने वाली आँखों को पीड़ा पहुँचाने वाली नहीं होती है?

१८५३. जो लोग दूसरों का अपमान देखकर भी उतने ही लज्जित होते हैं, जितना कि स्वयं अपने अपमान से उन्हें लज्जा आती है वे ही लोग लज्जा और संकोच की मूर्ति कहलाते हैं।

१८५४. ऐसे साधनों के सिवाय कि जिनसे उन्हें लज्जित न होना पड़े, अन्य साधनों के द्वारा योग्य व्यक्ति राज्य तक पाने के लिए मना कर देते हैं।

१८५५. निर्दयी लोग जीवित होकर भी मरे के समान हैं, डोरी के द्वारा चलने वाली कठपुतलियों

की तरह उनमें भी एक प्रकार का कृत्रिम जीवन ही होता है।

१८५६. यदि निर्धनता सभी अपराधों की माता है, तो बुद्धिहीनता अपराधों का पिता है।

१८५७. सज्जन लोग रत्न पाकर उतने प्रसन्न नहीं होते हैं, जितने प्रसन्न उस रत्न को किसी निर्लोभ पात्र को देकर होते हैं।

१८५८. पुण्य बताने से घटता है, छिपाने से बढ़ता अतः छपाकर नहीं छिपाकर दान दें।

१८५९. थोड़े में से भी जो दान दिया जाता है, वह हजारों के दान की बराबरी करता है क्योंकि वह श्रद्धा पूर्वक दया से दिया जाता है।

१८६०. जलते हुए घर में से आदमी जिस वस्तु को निकाल लेता है, वही उसके काम की होती है न कि वह जो वहाँ जल जाती है इसी प्रकार यह संसार जरा-मरण से जल रहा है इसमें से दान देकर निकाल लो, जो दिया जाता है वह सुरक्षित होता है।

१८६१. यदि किसी को दूध नहीं पिला सकते तो छाछ देने में क्या हानि है? अन्न देने में समर्थ नहीं तो प्यासे को पानी तो पिला सकते हो।

१८६२. धन में अस्थिरता का स्वभाव होता है वह प्राप्त हो तो तुरन्त स्थिर धर्मों को सम्पन्न करना चाहिए।

१८६३. त्यागी व्यक्ति पहले धन का दान देता है बाद में प्राण त्याग करता है, कृपण पहले प्राण त्याग कर देता है बाद में धन।

१८६४. जिसमें उदारता है उसे वीरता की आवश्यकता नहीं है।

१८६५. उदार हृदय वाला पुरुष जब तक जीता रहता है तब तक आनन्द से ही रहता है और संकीर्ण हृदय वाला आयुपर्यंत दुःखी ही रहता है।

१८६६. सर्वस्व का त्याग मोक्ष है, मेरा मन मोक्ष चाहता है, यदि मुझे सब कुछ छोड़ ही देना है तो अच्छा है कि उसे प्राणियों को दे दिया जाय।

१८६७. जिस आदमी ने अपना सब कुछ दे दिया है, उसने दिया नहीं पाया है।

१८६८. धन का देना मित्रता का कारण है परन्तु वापस लेना शत्रुता का कारण है।

१८६९. प्रशंसा करने वालों के मुख पर सदा उन लोगों का नाम रहता है जो गरीबों को दान देते हैं।

१८७०. अप्रसिद्ध और अप्रतिष्ठित लोगों को प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित बनाने में धन का दान जितना समर्थ है, उतना और कोई पदार्थ नहीं।

१८. चिंता

१८७१. चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश होता है अर्थात् चिन्ता चिता बनाती है। जिसे नहीं करना चाहिए उसे करने से और जिसे करना चाहिए उसे नहीं करने से ही चिन्ता और भय होते हैं।

१८७२. जितना समय आप किसी कार्य की चिंता में लगाते हैं, यदि उतना ही समय आप उस कार्य में लगाएँ तो चिंता जैसी कोई चीज ही नहीं रह जाएगी।

१८७३. बिस्तर पर चिंताओं को ले जाना अपनी पीठ पर गट्ठा बाँधकर सोना है।

१८७४. चिन्ताओं से दूर भाग्यशाली व्यक्ति ही जीवन का आनन्द ले सकता है।

१८७५. सबसे ज्यादा हिंसा बुरा चिन्तन करने से होती है।

१८७६. उपहार का मूल्य बढ़ता जा रहा है और भावनाओं का अवमूल्यन हो रहा है।

१८७७. किसी दिन अखबार नहीं मिले और चाय नहीं मिले तो पेट साफ नहीं होगा मतलब हम किसी वस्तु के नियंत्रण में हैं।

१८७८. हमारी आदत के कारण हम स्वयं से ज्यादा अपने निकट के लोगों को परेशान करते हैं।

१८७९. कार्य करने के पहले सोचना चिंतन है बाद में सोचना चिंता है।

१८८०. मोह रहित अल्पज्ञान मोक्ष का कारण है मोह सहित बहुत ज्ञान संसार का कारण है।

१८८१. आप कैसे कृतघ्न बेटे हो जिस माँ ने दूध पिलाया उसे आप पानी भी नहीं पिलाना चाहते हो।

१८८२. आज आदमी को भोजन की भूख कम सम्मान की भूख ज्यादा सताती है।

१८८३. जिस प्रकार ईंधन सहित अग्नि में वृद्धि होती है उसी प्रकार चिंता युक्त मनुष्य के संसार की वृद्धि होती है क्योंकि चिंता से कर्म बंध होता है। ''दरिद्र को सदा अनेक प्रकार की चिंता होती हैं। जो होने वाला है वह होता है, जो नहीं होने वाला है, वह नहीं होता है इस प्रकार की निश्चित बुद्धि वाले को चिंता की बाधा नहीं सताती है।''

१८८४. चक्रवर्ती का बेटा चक्रवर्ती नहीं होता क्योंकि सभी का अपना-अपना पुण्य होता है, अतः आप अपने बेटों की चिन्ता मत करो, वे अपना कर्म साथ में लाये हैं।

१८८५. आप जिसके कारण चिंता करते हो उसका कुछ नहीं बिगड़ता, पर आपका सब कुछ नाश को प्राप्त हो रहा है।

१८८६. चिंतन चिदानंद के पास ले जाता है और चिन्ता चिता के पास ले जाती है।

१८८७. समय से पहले बूढ़ा होना, समय से पहले मरना, अपनी प्रज्ञा को नष्ट करना अपने शारीरिक एवं मानसिक बल को नष्ट करना हो तो चिन्ता करो।

१८८८. चिंतारूपी गुप्तरोग से पीड़ित मनुष्य के लिए मित्र उत्कृष्ट औषध है क्योंकि उसके लिए युक्त अयुक्त सब कुछ कह दिया जाता है।

१८८९. जिसका जितना विशाल चिंतन है उसके समीप चिन्ता परमाणु मात्र भी नहीं मिलती है।

१८९०. अपने को पर का और पर को अपना कर्त्ता मानने पर चिंता उत्पन्न होती है।

१८९१. चिन्ता से मस्तिष्क की नसें फूल जाती हैं, जिससे व्यक्ति 'पागल' हो जाता है।

१८९२. चिन्ता के दुष्परिणाम–१. मन का उदास रहना, २. बुद्धि का भ्रष्ट होना, ३. मस्तिष्क का

भारीपन होना, ४. चेहरे का मुरझाना, ५. शरीर की शक्ति का क्षीण होना, ६. क्रोधी स्वभाव का होना, ७. बालों का सफेद होना, ८. समय से पूर्व वृद्धत्व का आगमन होना है।

१८९३. जितना विशुद्ध संयम होता जाता है, उतना ज्ञान का क्षयोपशम होता जाता है।

१८९४. वैद्य और वक्ता दोनों ही धीरता से काम लेते हैं। ''चिंता सब सुखों को नष्ट करती है।''

१८९५. कल की चिंता करने वाले, आने वाले जन्म की चिंता नहीं कर पाते हैं।

१८९६. जब तक मन में विकल्प चलता है तब तक गुरु प्रभु कुछ भी नहीं दिखता है, विकल्प संसार बढ़ाने वाला है।

१८९७. वृद्धाश्रम में माँ बाप की दुर्दशा को देखकर सब बेटों को कोसते हैं परन्तु सब भूल जाते हैं कि दुर्दशा करने में किसी की 'बेटी' का अहम् रोल होता है।

१८९८. क्या बताऊँ बहन जब बहू थी, तो अच्छी सास नहीं मिली और अब सास बनी तो अच्छी बहू नहीं मिली अर्थात् महिलाएँ प्रायः अपनी गलती न स्वीकार करना चाहती हैं और न सुधरना चाहती हैं।

१८९९. बचपन की यादों को अगर ठीक से सँजोकर रखा जाये तो वे बुढ़ापे का अच्छा सहारा बन सकती हैं।

१९००. आम आदमी को अपनी विचारधारा बदलनी होगी और ऐसे संगठनों से कारोबार करना होगा जहाँ भ्रष्टाचार और अनैतिकता न हो। यही समस्या का समाधान है।

१९. दान

१९०१. दान के लिए वर्तमान ही सबसे उचित समय होता है।

१९०२. जब आपने किसी वस्तु का दान कर दिया तो फिर वह आपकी रही ही नहीं, तब उस पर आपके नाम की क्या जरूरत है ?

१९०३. दान हमारे समाज में बनाई गई एक सुन्दर व्यवस्था है, जो आर्थिक स्तर पर असमानता को पाटने में मदद करती है।

१९०४. जीवन में पहले दिन से कुछ न कुछ दान करने की आदत डालें, अगर आप दस हजार की आमदनी में दान नहीं कर सकते तो दस लाख होने पर भी नहीं कर पायेंगे। गुप्त दान को प्राथमिकता देनी चाहिए।

१९०५. दान की प्राथमिकता हमेशा हमारे नजदीकी परिजन, मित्र, कर्मचारी के प्रति पहले होनी चाहिए। देश में बहुत मात्रा में लोग आँखों की रोशनी से वंचित हैं।

१९०६. हर साल हजारों लोगों की मृत्यु जलने से होती है, जिन्हें नई त्वचा लगाकर बचाया जा सकता है। यह बहुत ही दूर-दृष्टि भरा साहसिक निर्णय है।

१९०७. प्रतिभा को तलाशना और प्रतिमा को तराशना अन्यथा जिंदगी 'लाश' से ज्यादा कुछ नहीं है।

१९०८. दान बंधी मुट्ठी, ध्यान बंद दृष्टि करें।

१९०९. जिस प्रकार स्वाति नक्षत्र में उत्पन्न नीर यदि सीप में जाता है तो वह मोती बन जाता है और सर्प के मुख में जाता है तो विष बन जाता है, उसी प्रकार पात्र-अपात्र में दिया दान भी जानना चाहिए।

१९१०. हमें जो मिलता है, उससे हमारी जिन्दगी चलती है, जो देते हैं उससे जिन्दगी बनती है। दान देने से पहले अपने कमजोर भाई को सहारा दो क्योंकि भगवान् से ज्यादा आपके भाई को आवश्यकता है। स्वयं जाकर दिया गया दान उत्तम, अपने यहाँ बुलाकर दिया गया दान मध्यम और माँगने पर दिया गया दान अधम व सेवा के बदले दान देना निष्फल है।

१९११. पूर्वाभिमुख होकर देना उत्तराभिमुख होकर लेने से दोनों की आयु बढ़ती है।

१९१२. जिसने कभी दान-पूजा नहीं की वह साधु बनकर भी दुःखी रहता है।

१९१३. जब हम किसी को कुछ भी देते हैं तो हमारे पास सच्चा और अच्छा है वह देना चाहिए।

१९१४. जिस मनुष्य ने सर्प की आयु का बंध कर लिया है, तो वह न स्वयं दान देता है और न किसी को दान देने देता है।

१९१५. यदि कोई दरवाजे पर माँगने आ जाए तो अपना सौभाग्य समझना चाहिए कि उसने आप को इस योग्य समझा।

१९१६. धर्म से धन आता है, धन से धर्म नहीं होता।

१९१७. बिना कुछ दिये कुछ पाने की कोशिश न करें।

१९१८. वस्त्रों का साफ होना जरूरी है, बहुमूल्य होना नहीं।

१९१९. खुद कमाना और खुद खाना प्रकृति है, दूसरों से छीनकर खाना विकृति है और स्वयं कमाना तथा दूसरों को खिलाना संस्कृति है।

१९२०. यदि आप लक्ष्मीपति हो तो दान करोगे लक्ष्मीदास हो तो धन की सेवा करोगे।

१९२१. एक व्यक्ति दिखने में सुन्दर है, पढ़ा-लिखा और बुद्धिमान है, निरोग है लेकिन दरिद्री है क्योंकि उसने पूर्व में आहारदान नहीं दिया।

१९२२. एक व्यक्ति जिसके पूर्वज बहुत ही सम्पत्ति छोड़ गये थे और वर्तमान में भी अच्छा व्यवसाय है, निरोग है, पढ़ा-लिखा है लेकिन प्रतिसमय खाते-पीते, सोते-जागते भय बना रहता है क्योंकि उसने पूर्व में अभयदान नहीं दिया।

१९२३. एक व्यक्ति के पास बहुत पैसा है, लक्ष्मी सम्भाले नहीं सम्भल रही, किसी प्रकार का भय भी नहीं है, वह विद्वान् है लेकिन हमेशा रोगी ही बना रहता है, मूँग की दाल भी नहीं

पचती क्योंकि उसने पूर्व में औषधिदान नहीं दिया था।

१९२४. एक व्यक्ति वैभव सम्पन्न है, निरोग है, पर दिन-रात अध्ययन करने पर भी कुछ याद नहीं होता क्योंकि उसने पूर्व में ज्ञानदान नहीं दिया था।

१९२५. अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर-उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है।

१९२६. दानशीलता हृदय का गुण है, हाथों का नहीं।

१९२७. लेकर देने की अपेक्षा न लेने का बड़ा भारी पुण्य है।

१९२८. जो दान कर दिया वह सोना है और जो बचा लिया वह मिट्टी है।

१९२९. दान यदि धर्म की प्रभावना और आत्मा के उत्थान के लिए दिया जाता है तो सम्यग्दर्शन आदि में कारण होता है।

१९३०. दान देने वाले का उद्देश्य सम्मान प्राप्त करने का नहीं होना चाहिए।

१९३१. उदार दिलवाला दे देकर धनवान बनता है, लोभी जोड़-जोड़कर निर्धन बनता है।

१९३२. जो कुछ हम दूसरों को देते हैं, वास्तव में वह सब हम अपने-आपको दे रहे हैं, अगर इस तथ्य को पहचान लिया तो फिर ऐसा कौन होगा जो दूसरों को दान न दे।

१९३३. दान से सम्पत्ति घटती नहीं, बढ़ती है, अँगूरों की शाखाएँ काटने से और अधिक अँगूर आते हैं। दानी के चरित्र का पता दान की अपेक्षा देने की विधि से अधिक लगता है।

१९३४. जो देता है वह देवता होता है और जो रखता है वह राक्षस होता है।

१९३५. यदि आप किसी को कुछ देना चाहते हो तो बस उसका चेहरा मुस्कुराहट से भर दो।

१९३६. अपना किया और अपना दिया ही काम आता है, दूसरे का किया और दिया हुआ अपने काम नहीं आता है।

१९३७. प्राप्त करने की अपेक्षा दान करना कहीं अधिक सौभाग्य का द्योतक है।

१९३८. माँगने पर देना अच्छा है, लेकिन जरूरत को समझकर बिना माँगे देना और भी अच्छा है।

१९३९. न्यायपूर्वक उपार्जित हुए धन के दो ही दुरुपयोग समझने चाहिए, अपात्र को देना और सत्पात्र को न देना।

१९४०. तुम्हारे द्वार पर कोई कुछ माँगने आया और तुमने नहीं दिया बस यही तुम्हारा दुर्भाग्य है।

१९४१. अतिथियों को आहार दान दिये बिना भोजन करने वाले गृहस्थ को दो पैर वाला बिना सींग-पूँछ का पशु कहा है।

१९४२. जिसके पास आकर याचक लोग सन्तुष्ट नहीं होते वह गृहस्थ निन्द्य है।

१९४३. प्रकृति वही लौटाकर देती है जो आप अपनी ओर से औरों को देते हैं।

१९४४. अन्त में अकेला ही जाना पड़ेगा इसलिए पहले से ही अकेले हो जायें अर्थात् वस्तु, व्यक्ति और क्रिया से असंग हो जायें, इनका आश्रय न लें।

१९४५. दूसरे की प्रसन्नता से मिली हुई वस्तु दूध के समान है, माँगकर ली हुई वस्तु पानी के समान है और दूसरे का दिल दु:खाकर ली हुई वस्तु रक्त के समान है।
१९४६. लोक में वीतराग को छोड़कर दूसरा कोई देव, ब्रह्मचर्य को छोड़कर दूसरा कोई तप, अभयदान को छोड़कर दूसरा कोई दान और मुनिराज को छोड़कर दूसरा कोई पवित्र प्राणी नहीं है।
१९४७. खाली पेट कोई व्यक्ति बुद्धिमान नहीं हो सकता है।
१९४८. मनुष्य को अतिथियों और आश्रितों के लिए आहार दान देकर ही भोजन करना चाहिए।
१९४९. जो कुछ आपके पास है अतिशीघ्र प्रभु को समर्पित कर दो क्योंकि पता नहीं किस क्षण सब छोड़कर जाना पड़ जाये।
१९५०. संसार एक प्रतिध्वनि है। जो बोलोगे वही आपके पास वापस लौटकर आएगा प्रेम दोगे तो प्रेम पाओंगे घृणा दोगे तो घृणा पाओगे।
१९५१. हाथों का सदुपयोग सुपात्रों को दान देने में ही है।
१९५२. सार्वजनिक संस्थाओं का काम उधार के रुपयों से नहीं चलना चाहिए।
१९५३. जो भक्ति में तत्पर होता हुआ जिनालय में चंदोबा देता है वह निश्चित ही एक छत्र राज्य प्राप्त कर निर्वाण प्राप्त करता है।
१९५४. जो मनुष्य पुण्य के हेतु जिनालय में घण्टा देता है वह घण्टा आदि से सहित विमान को प्राप्त कर मुक्ति का वर होता है।
१९५५. जो मनुष्य मुनियों के लिए ज्ञान दान करता है वह स्वर्ग लोक में सुख भोगकर राज्य एवं केवलज्ञान की विभूति को प्राप्त होता हुआ मोक्ष पाता है।
१९५६. जो मुनियों के लिए पुण्यकारी पवित्र औषध देता है वह देवलोक में सुख भोगकर कर्म रूपी रोगादिक को नष्ट करता है।
१९५७. प्राणी मात्र को अभयदान देने से जीव संसार सुख भोगकर निर्भय स्थान मोक्ष को पाता है।
१९५८. जो मनुष्य अल्प सम्पदा से युक्त होकर भी आत्मशक्ति को प्रकट कर नाना प्रकार का दान करते हैं, वे दानियों में श्रेष्ठ हैं।
१९५९. दुष्ट पुरुषों का बल है 'हिंसा', राजाओं का बल है दण्ड देना, स्त्रियों का बल है सेवा अथवा रोना, सत्पुरुषों का बल है धन, असफल व्यक्तियों का बल है धैर्य, गुणवानों का बल है क्षमा, संतों का बल है साधना।
१९६०. जैसे चारों ओर से जलते हुए मकान में फँसे शिशु की चिंता एक माँ को होती है, वैसी चिंता साधक को सामायिक (आत्मध्यान) की होनी चाहिए।
१९६१. भारत के साधु यदि नशेबाजी और दुर्व्यसनों का त्याग कर देश के रचनात्मक कामों में

लग जाएँ, तो वे जनता को अपने पक्ष में कर सकते हैं।

१९६२. आपत्ति, दुःख और चिंताएँ इसलिए आती हैं कि परमात्मा को याद करने का समय निकाल सकें, आत्मदर्शन कर सकें तथा दूसरों के दुःखों का अनुभव कर सकें।

१९६३. इस असार एवं दुःख पूर्ण संसार में अनन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल व्यतीत हो गए, उन समस्त कालों में यही मन्त्रराज महत्त्वपूर्ण रहा है अर्थात् अतीत काल में जिन भव्य प्राणियों ने मुक्ति पाई है, विदेहादिक से वर्तमान काल में पा रहे हैं, पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्र से भविष्यत् काल में मुक्ति पायेंगे, यह सब मन्त्रराज का ही प्रभाव जानना चाहिए। (उमास्वामि श्रावकाचार)

१९६४. यदि कोई तराजू के एक पलड़े पर णमोकारमन्त्र को स्थापित करे तथा दूसरे पलड़े पर त्रिलोक की सम्पत्ति को स्थापित करें तो प्रथम पलड़ा ही भारी होगा, ऐसे महान् गौरवशाली णमोकारमन्त्र को "मैं त्रियोग की शुद्धिपूर्वक नमस्कार करता हूँ"। (उमास्वामी श्रावकाचार)

२०. धैर्य

१९६५. जो व्यक्ति स्वभाव से धैर्यवान है, वह महान् विपत्ति के समय भी अधीर नहीं होता, संकट के समय धैर्य धारण करना मानो आधी लड़ाई जीत लेना है, अपने धैर्य के बिना और कोई संकट से मनुष्य का उद्धार नहीं कर सकता, सज्जनों का धन तो धैर्य ही है जिसके पास धैर्य है, वह जो भी इच्छा करता है उसे प्राप्त कर सकता है।

१९६६. जब तालाब भरता है तो मछलियाँ चींटियों को खाती हैं और जब तालाब खाली होता है तो चींटियाँ मछलियों को खाती हैं। मौका सबको मिलता है बस अपनी बारी का इंतजार करो।

१९६७. विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में क्षमा, सभा में वाक्पटुता, युद्ध में विक्रम, यश में अभिरुचि और ज्ञान का व्यसन; ये महापुरुषों के स्वाभाविक गुण हैं।

१९६८. जीवन में कोई विपत्ति आये तो कोई आपत्ति मत कीजिए, उसका धैर्यपूर्वक सामना कीजिए, दूध फटने पर वे ही लोग उदास होते हैं, जिन्हें रसगुल्ले बनाने नहीं आते हैं।

१९६९. दुःख में कभी घबराओ मत और सुख में कभी इतराओ मत।

१९७०. अज्ञानी दुःखों से डरता है, ज्ञानी दुःख में धैर्य धारण करता है।

१९७१. रोग पीड़ित व्यक्ति के लिए धैर्य को छोड़कर दूसरी कोई उत्तम औषधि नहीं है।

१९७२. बिना सोचे-विचारे जल्दी से लिया गया निर्णय विनाशकारी होता है।

१९७३. दुःख सभी को होता है, पर दुःख को दुःख मानकर भी जो उसे सहने की शक्ति रखते हैं, उनके लिए दुःख भी सुख हो जाता है।

१९७४. महात्मा पुरुष सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी खिन्न नहीं होते हैं।
१९७५. कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ कारक हैं।
१९७६. सत्य समझो, सहिष्णु व शीतल बनो, संक्लेश से बच जाओगे।
१९७७. धर्म के साथ सहनशीलता सबसे ऊँची तपस्या है।
१९७८. धैर्य और धर्म की परीक्षा संकट में होती है।
१९७९. धर्मात्मा जीव वही है जो कष्ट में भी धर्म को न छोड़ें।
१९८०. जिसमें धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता कामयाबी उसकी दासी है।
१९८१. धैर्यहीन मनुष्य तेलरहित दीपक के समान निन्दनीय है।
१९८२. धैर्य और शान्ति कठिनाइयों के बादलों को बिखेर देती है।
१९८३. बदला लेने में साहस नहीं, बल्कि उसे सहन करने में साहस है।
१९८४. सम्पूर्ण बल मिलकर एक धैर्य की बराबरी नहीं कर सकते हैं।
१९८५. मुसीबतें टूट पड़ें, हाल बेहाल हो जाए, तो भी जो लोग निश्चय से डिगते नहीं और धीरज रखकर चलते हैं वे ही सच्चे धैर्यशाली हैं।
१९८६. धैर्य और संतोष जीवन-नौका के वे पतवार हैं जो नौका को मंजिल तक ले जाते हैं।
१९८७. धैर्य व साहस संसार की हर आपत्ति का उपचार हैं।
१९८८. निराशा धैर्य को समाप्त कर देती है।
१९८९. आत्मा जिस कार्य से सहमत न हो, उस कार्य के करने में शीघ्रता न करो।
१९९०. धीरज से कमजोर आदमी को भी बल मिलता है बेसब्री से शक्ति बर्बाद होती है।
१९९१. बिना निराश हुए पराजय को सहन कर लेना, इस धरा पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।
१९९२. निर्भय का लोहा शत्रु भी मानता है।
१९९३. परिवर्तन प्रकृति का नियम है, जब अच्छे दिन नहीं रहे तो बुरे दिन भी नहीं रहेंगे।
१९९४. बुद्धि की स्थिरता के बिना भी आदर्श पूरा नहीं होता है।
१९९५. बुद्धिमान वही है, जो पूरे संकल्प से कार्य को निपटाना जानता है।
१९९६. संसार में आधे से अधिक सक्षम लोग तो इसलिए असफल हो जाते हैं क्योंकि समय पर उनमें साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।
१९९७. बाधाओं और विरोधों से भयभीत न हो।
१९९८. जिसके पास मनोबल नहीं उसके पास कुछ नहीं, यहाँ तक कि मनुष्यता भी नहीं है।
१९९९. उत्तम पुरुष वही है, जो अपने मन को वश में रखकर विपरीत स्थिति में धैर्य रखकर उन परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लें।
२०००. विपदाओं के समूह बाढ़ की लहरों के समान आया करते हैं, धीर पुरुष उन्हें चट्टान की

तरह सहता रहे, तो वह धीरे-धीरे आप ही चले जाते हैं।

२००१. हमारी जितनी मानसिक और शारीरिक शक्तियाँ हैं आत्मविश्वास उन सबका सरदार है।

२००२. जब सामने आई परिस्थिति का सामना करना तय है तो क्यों न धैर्य एवं साहस से सामना किया जाए।

२००३. जगत् में कुछ मानव ऐसे भी होते हैं, जो पेड़-पौधों की तरह सब कुछ सहन कर पाते हैं।

२००४. कोई भी साधना जल्दी परिणाम नहीं दिखाती, साधना सब्र माँगती है।

२००५. साहस गया कि आधी समझदारी भी उसके साथ चली जाती है।

२००६. मन में विकार उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के पास होने पर भी जिनके मन में पाप नहीं आता, वे ही धीर पुरुष माने जाते हैं।

२००७. शीघ्रता में आकर जो तुमने सुना और माना है उसे कहने मत लगो।

२००८. शान्ति की परीक्षा क्रोध का निमित्त मिलने पर होती है प्रिय विषय साधन मिल जाने पर तो सभी शांत बन जाते हैं।

२००९. धीरज की चाल धीमी पर फल मीठा होता है।

२०१०. किसी से भी सब खुश नहीं हो सकते अतः अपने संतोष से सन्तुष्ट रहना बुद्धिमत्ता है।

२०११. ऊपरी शान्ति से भी क्रोध की पुष्टी होती है।

२०१२. सफलता के शिखर पर समर्थक कम और विरोधी ज्यादा मिलेंगे उन विरोधियों को सकारात्मक ऊर्जा से शांत करना और संतुलन बनाये रखना आवश्यक है।

२०१३. खुद पर भरोसा करना कोई परिंदों से सीखे क्योंकि जब वो शाम को वापस घोंसलों में जाते हैं तो उनकी चोंच में कल के लिए कोई दाना नहीं होता है।

२०१४. हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हम कमियों को नजर अंदाज कर उस व्यक्ति की अच्छाइयों को कितना उजागर करते हैं?

२०१५. पूछे गये हर प्रश्न का उत्तर मिले, जरूरी नहीं।

२०१६. निर्णय पर दवाब या प्रभाव हावी नहीं होना चाहिए।

२०१७. सब कुछ खोने से बुरा क्या है? वो उम्मीद खोना जिसके भरोसे सब कुछ वापस पा सकते हैं। दुर्घटना को भी अवसर बनाना सीखना है, गिरो तो कुछ उठाकर ही उठना है।

२०१८. अगर हमारा मन कमजोर है तो हमें एक राई बराबर घटना पहाड़ जैसी लगने लगती है, अगर हमारा मन मजबूत है तो पहाड़ जैसी घटना भी राई बराबर नजर आती है।

२०१९. फैसला फासले से बेहतर होता है।

२०२०. दुनिया विरोध करे तुम डरो नहीं क्योंकि लोग फल-फूल से लदे वृक्ष को ही पत्थर मारते हैं।

२०२१. जो परिस्थितियों से सामंजस्य करना जानता है, प्रसन्नता परछाई की तरह उसका साथ देती है।

२०२२. परिणामों में निर्मलता आने से असंयम स्वयं ही भाग जायेगा।

२०२३. समता की परीक्षा विषमता में ही होती है। समता के बिना साधुपन नहीं रह सकता।

२०२४. समता के अभाव में मौन, अध्ययन, नियम, व्रत, उपवास, तप सब व्यर्थ हैं।

२०२५. हम हर मिलने वाले से कुछ सीख सकते हैं पर हमारा दिमाग खुला होना चाहिए।

२०२६. सब्र और सच्चाई एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को गिरने नहीं देती ना किसी के कदमों में और न किसी की नजरों में।

२०२७. सम्पत्ति स्वयं अपने साथ विपत्ति को लेकर आती है।

२०२८. साधु शरीर से श्रम भले करते हों पर लक्ष्य अंदर की शान्ति का रहता है, यदि अन्तरंग में शान्ति नहीं तो 'श्रम' मजदूर के श्रम समान है।

२०२९. साहस मानवीय गुणों में प्रमुख है क्योंकि वह बाकी सभी गुणों की गारंटी देता है, साहस सिर्फ खड़े होकर बोलना ही नहीं, बैठकर धैर्यपूर्वक सुनना भी है।

२०३०. 'शोक' धर्म, बुद्धि, शास्त्र ज्ञान, शरीर, जप, तप, संयम और शान्ति को नष्ट करता है। शोक से मुक्त होना है तो शौक करना छोड़ दो।

२०३१. जब भी आप हार जायें उसे सफलता की ओर एक सीढ़ी मानें, जो कि आप तय कर चुके हैं।

२०३२. कोटि-कोटि साधना का उद्देश्य मन को शान्त करना है, अन्यथा सारी साधना बेकार है।

२०३३. कटा हुआ वृक्ष भी बढ़ता है, क्षीण हुआ चन्द्रमा भी पुनः बढ़कर पूरा हो जाता है, इस बात को समझकर सन्त पुरुष अपनी विपत्ति में घबराते नहीं हैं।

२०३४. आपत्ति पड़ने पर जो घबराता नहीं है, वह कल्याण को प्राप्त करता है।

२०३५. अज्ञानी लोग छोटे काम ही आरम्भ करते हैं और अत्यन्त व्यग्र हो जाते हैं, बुद्धिमान लोग महान् कार्य हाथ में लेते हैं परन्तु व्याकुल नहीं होते हैं।

२०३६. दुःख आ पड़ने पर मुस्कुराओ उसका सामना करके विजयी होने का साधन इसके समान और कोई नहीं है।

२०३७. जो लुट जाने पर भी मुस्कुराता है, वह चोर का दिल चुरा लेता है।

२०३८. किसी कार्य के लिए कला एवं विज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, उसमें धैर्य की भी आवश्यकता है।

२०३९. धैर्यवान और बुद्धिमान मनुष्य को बहुविध शोक, विलाप और रुदन सभी अवस्थाओं में त्याग देने योग्य है।

२०४०. धीर पुरुष कार्य प्रारम्भ कर दृढ़ता से करते हैं, छोड़ते नहीं हैं।

२०४१. शक्ति भय के अभाव में रहती है, न कि मांस या पुट्ठों के गुणों में जो कि हमारे शरीर में होते हैं।

२०४२. परिस्थितियाँ ही मनुष्य में साहस का संचार करती हैं।

२०४३. तत्त्वज्ञ पुरुष को चाहिए कि वह अपमान को अमृत के समान समझकर उससे सन्तुष्ट हो और विद्वान् मनुष्य सम्मान को विष के तुल्य समझकर उससे सदा डरता रहे।

२०४४. जो अधीर और असमर्थ होते हैं, उनमें उत्साह उत्पन्न नहीं होता, प्रायः उत्साही पुरुष ही राज्य सम्पत्ति का उपभोग करते हैं।

२०४५. भरी नदी की भाँति व्यवहार, वचन और भावों में गंभीरता होना चाहिए चाहें, बिजली कितनी ही तड़के पर आकाश में खलबली नहीं मचती है, विविध लहरों में भी निश्चलता यही समुद्र का सच्चा गांभीर्य है।

२०४६. विश्वास पूर्वक अपराध करते जाओ हम तुम्हारा सब कुछ सहन कर लेंगे, विश्वास रखो कि गुणों से भरे हृदय में दोष नहीं समाते हैं।

२०४७. जीवन संघर्ष में वही सफल होते हैं, जिन्हें माता-पिता ने शान्त रहने और धैर्य रखने की शिक्षा दी हो, धैर्य प्रतिभा का एक आवश्यक अंग है।

२०४८. भय से मनुष्य को तब तक डरना चाहिए जब तक भय नहीं आया है, परन्तु जब आ ही जाए तो निडर होकर उस पर प्रहार करना चाहिए।

२०४९. मनुष्य के मन पर भय का जितना प्रभाव पड़ता है, उतना और किसी शक्ति का नहीं।

२०५०. संतोष रूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उन्हें जो शान्ति और सुख मिलता है, वह धन के लोभियों को इधर-उधर दौड़ने से भी प्राप्त नहीं होता है।

२०५१. चोर से जैसी सावधानी बरतते हो वैसी ही क्रोध से भी बरतो।

२०५२. मानसिक पापों से सदा सावधान रहो, उनका परित्याग करो, मन से उन कुवासनाओं को निकाल दो, जो दुष्कर्म कराती हैं।

२०५३. असावधानी विनाश को शीघ्र ही बुलाती है, सचेत रहो, सावधानी रखो, जीवन महल के किसी भी दरवाजे से काम-क्रोध रूपी किसी भी चोर को अंदर न घुसने दो और सावधानी के साथ जो पहले से घुसे बैठे हों, उन्हें दृढ़ता और शूरता के साथ निकालने की प्राणपन से चेष्टा करते रहो, सावधानी ही साधना है।

२०५४. जिस राजा में कानों को अप्रिय लगने वाले वचनों को सहन करने की क्षमता है, पृथ्वी निरन्तर उसकी छत्रछाया में रहेगी।

२०५५. संकट के स्थान में सहसा दौड़ पड़ना मूर्खता है, बुद्धिमानों का यह भी कहना है कि जिससे डरना चाहिए उससे डरते ही रहें।

२०५६. कामान्ध को कुछ नहीं दिखता, जो नशा करके मदोन्मत्त हो जाए उसे भी कुछ नहीं दिखता और जो किसी स्वार्थ के लोभ से अन्धा हो जाता है उसे भी किसी काम में कोई दोष

दिखाई नहीं देता है।

२०५७. जरूरत के मुताबिक जिंदगी जियो ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं क्योंकि जरूरत तो फकीरों की भी पूरी होती हैं और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती हैं।

२१. दुरुपयोग

२०५८. जो जिस वस्तु, व्यक्ति आदि का दुरुपयोग करता है, उसको उससे वंचित होने का दुःख भोगना ही पड़ता है।

२०५९. भाग्यवान वह है जिसका धन सेवक है और भाग्यहीन वह है जो धन का सेवक है।

२०६०. दौलत मनुष्य को अहंकार, अय्यासी और मूढ़ता के सामने ला पटकती है।

२०६१. धर्म के लिए धन नहीं चाहिए, मन चाहिए।

२०६२. धनवान वह नहीं जिसके पास अधिक धन है बल्कि धनवान वह है जो उसका उपयोग करना जानता है।

२०६३. धन कमाने की अपेक्षा उसे खर्च करने का काम ज्यादा कठिन है।

२०६४. संसार में धन की इच्छा से शाश्वत धर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

२०६५. कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करेगा तो वह भी एक दिन कंगाल हो जाएगा।

२०६६. जो धन अत्यन्त क्लेश उठाने से और धर्म का उल्लंघन करने से अथवा शत्रु के सामने सिर झुकाने से प्राप्त होता हो, उसमें आप बल न लगाए।

२०६७. धन को इतना मूल्य मत दीजिए कि आप अपने स्वभाव और चरित्र को गिरवी रख बैठें।

२०६८. हमें यह याद रखना चाहिए कि अपरिग्रह का सिद्धान्त, विचार-नियंत्रण के बिना अमल में नहीं आता है।

२०६९. धन के उपार्जन में दुःख, उपार्जित धन की रक्षा करने में दुःख, दान में दुःख और खर्च में दुःख इस प्रकार दुःख के कारण धन को धिक्कार हो।

२०७०. जीवन को क्षण भर कहा जाता है, इसका तात्पर्य है, एक भी क्षण बर्बाद न करो।

२२. एकाग्रता

२०७१. जब समय तुम्हारे प्रतिकूल हो तो बगुला की तरह अकर्मण्यता करो, लेकिन जब वह अनुकूल हो तो बगुले के समान ही झपटकर तेजी के साथ हमला करो।

२०७२. यदि जीवन में उन्नति करने और बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है।

२०७३. अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए, उस साध्य के सिद्ध होने तक दूसरी किसी बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, रात-दिन सपने तक में उसी की धुन रहे, तभी सफलता मिलती है।

२०७४. मनुष्य को प्रत्येक कार्य इतनी सतर्कता, साधना और निष्ठा से करना चाहिए मानो सम्पूर्ण

सृष्टि का कल्याण उसी के कार्य की सफलता पर निर्भर है।

२०७५. कार्य उसी का सिद्ध होता है, जो समय पर विचार कर कार्य करता है वह खिलाड़ी कभी नहीं हारता जो दाँव पर विचार कर लेता है।

२०७६. जो सिर्फ काम की बात करते हैं, वे ही सफल होते हैं।

२०७७. अगर आप चाहते हैं कि कोई काम अच्छी तरह से हो, तो उसे खुद करें।

२०७८. आज टी.वी. के विभिन्न चैनलों ने आदमी का चैन छीन लिया है।

२०७९. ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है।

२०८०. जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है।

२०८१. बाहर की हर चीज दौड़कर पाई जाती है, पर अन्दर की चीज ठहर कर पाई जाती है। सावधानी बुद्धिमत्ता की पहली सीढ़ी है।

२०८२. मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी को बारह भावनाओं का चिन्तन करना पड़ता है, फिर भले ही वह तीर्थंकर ही क्यों न हो?

२०८३. अपनी अभिलाषाओं को वश में कर लेने के बाद मन को जितनी देर तक चाहो उतनी देर तक एकाग्र कर सकते हो।

२०८४. जब विचार चंचल होता है तो वह अस्त-व्यस्त और शक्तिहीन हो जाता है, इसलिए विचारों की स्थिरता ही व्यक्ति को सम्पूर्ण बनाती है।

२०८५. संसार में प्रत्येक कार्य में विजय प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है, जो लोग चित्त को चारों ओर से बिखेरकर काम करते हैं, उन्हें कभी सफलता नहीं मिलती है।

२०८६. लक्ष्य साधने की सफलता अभ्यास से अधिक 'मन की एकाग्रता' पर निर्भर करती है।

२०८७. जो बात आपके मन की सुख-शान्ति और संतुलन को विचलित करे उसे मत सुनिये, मत देखिये, मत समझिये।

२०८८. टाइम-टेबल हमारे जीवन को व्यवस्थित रखता है।

२०८९. जैसे समरभूमि में युद्ध हो या न हो परन्तु योद्धा प्रतिक्षण तैयार रहते हैं क्योंकि पता नहीं शत्रु कब आक्रमण कर दे? वैसे ही साधक प्रतिक्षण तैयार रहते हैं क्योंकि पता नहीं मृत्यु कब आक्रमण कर दे?

२०९०. छोटी-छोटी बातों से ही हमारे सिद्धान्तों की परीक्षा होती है

२०९१. यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ सिखा देती है।

२०९२. मन की एकाग्रता ही लक्ष्य प्राप्ति का मूल मंत्र है।

२०९३. लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य के प्रति एकाग्र होना आवश्यक है।

२०९४. जो दूरदर्शी आदमी हर एक विपत्ति के लिए पहले से ही सचेत रहता है, वह उस वार से

बचा रहेगा जो अतिभयंकर है।

२०९५. एकाग्रता एक उपयोगी, निरापद, निश्चित, लाभदायक और प्राप्त करने योग्य गुण है।

२०९६. अपने गुरु के प्रति अपने प्रभु के प्रति अपने पति के प्रति यदि अशुभ परिणाम हो रहे हों तो बस समझ लेना कि मेरी खोटी गति का बंध हो गया है व मेरे तीव्र पाप कर्म का उदय चल रहा है।

२३. गम्भीरता

२०९७. गम्भीरता सज्जनों का पहला गुण होता है।

२०९८. दूरदर्शिता, साहस और गंभीरता के बिना जिंदगी एक अंधा तजुर्बा है।

२०९९. सच्चा बड़प्पन स्थान से कभी नहीं मिलता और न वह उपाधियों के वापस ले लेने पर कभी खो ही जाता है।

२१००. मस्तिष्क को शान्त रखने वाला सदैव विजयी होता है।

२१०१. युवकों में जोश और प्रौढ़ों में होश की प्रधानता होती है।

२१०२. गम्भीरता में जो प्रतिष्ठा निहित है वह वाचालता में त्रिकाली संभव नहीं है। ''एक क्षण का असंयम अनंत संसार का कारण है।''

२१०३. जैसे उत्साह स्त्रियों का गुण है, उसी तरह गंभीरता पुरुषों का गुण है।

२१०४. वह पुरुष धन्य है, जिसने गम्भीरता पूर्वक स्वाध्याय किया है और सत्य को पा लिया है, वह वैसे मार्ग पर चलेगा, जिससे उसे पुनः इस संसार में न आना पड़े।

२४. गुरु

२१०५. अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और विश्वसनीयता ये तीन ऐसे गुण हैं, जिन्हें देखकर गुरु खुश होते हैं।

२१०६. **सच्ची शिक्षा**—ममता छोड़ो मनन करो, बाधक नहीं साधक बनो, भोले नहीं पर सरल बनो, स्वच्छन्द नहीं पर स्वतन्त्र बनो, कुटिल नहीं पर चतुर बनो, मानी नहीं पर महान् बनो, कृतघ्नी नहीं कृतज्ञ बनो, क्रूर नहीं करुणा करो, शत्रुता नहीं मित्रता करो, हैवान नहीं इंसान बनो, भोगी नहीं योगी बनो, ईर्ष्यालु नहीं सच्चे इंसान बनो, कंस नहीं कृष्ण बनो, रावण नहीं राम बनो, मरीचि नहीं महावीर बनो।

२१०७. मैं उच्च शिक्षा उसी को कहूँगा जिसे पाकर मनुष्य विनम्र, परोपकारी, सेवाभावी और कार्य तत्पर बन जाये।

२१०८. सन्त के हाथों से लिखा गया हर शब्द 'ग्रन्थ' होता है और सन्त के मुँह से निकला हुआ हर शब्द 'मंत्र' होता है।

२१०९. जो व्यक्ति अपनी वाणी, मन, क्रोध, जिह्वा, उदर और लिंग; इन छह के वेग को जीत लेता

है, वही धीर कहलाता है, उसी को पूरी पृथ्वी पर शिष्य बनाने का अधिकार है अर्थात् वही गुरु बनने योग्य है।

२११०. गुरु अच्छा और सच्चा होना चाहिए।

२१११. गुरु जीवन को साक्षर नहीं अपितु सार्थक भी करते हैं।

२११२. जो दुनिया का गुरु बनता है, वह दुनिया का गुलाम हो जाता है और जो अपने आपका गुरु बनता है, वह दुनिया का गुरु हो जाता है।

२११३. गुरु से कुछ छिपाने का तात्पर्य है स्वयं को अशुद्ध रखना।

२११४. स्वाध्याय से भी अधिक श्रेष्ठ है गुरु सेवा।

२११५. गुरु के निर्देशन के आगे अपना चिन्तन एक किनारे रखना चाहिए।

२११६. जहाँ गुरुओं के प्रति भक्ति व प्रेम उमड़ता है वहाँ कर्त्तव्य स्वयं दौड़ लगाने लगते हैं।

२११७. सम्यक् शिष्य गुरु के वचन को अमृत समझकर स्वीकार करता है।

२११८. गुरु वही हो सकता है, जो गुणों और चरित्र में ज्यादा भारी है।

२११९. संन्यासी का जन्म माँ की कोख से नहीं, गुरु के वरद हस्त से होता है।

२१२०. गुरु के निकट होकर दूर होना श्रेष्ठ नहीं, दूर होकर निकट होना अतिश्रेष्ठ है।

२१२१. गुरु का विश्वास पात्र बनना, उनका मन जीतना, जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

२१२२. जिसके जीवन की डोर गुरु के हाथ होती है उसकी पतंग आकाश में नहीं अनन्त आकाश की भी यात्रा करती है।

२१२३. गुरु स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, परमार्थ सिद्धि के लिए उपदेश देते हैं।

२१२४. जैसे चार सौ चाचा की अपेक्षा एक पिता श्रेष्ठ होता है, वैसे ही हजारों संतों की अपेक्षा एक गुरु श्रेष्ठ होता है।

२१२५. यदि आपका शिष्यत्व ही झूठा है तो आप कभी गुरु न पा सकोगे।

२१२६. बुद्धिमान लोग गुरु का ऋण बहुत मानते हैं क्योंकि ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं किन्तु ज्ञान का ऋण सबके लिए लौटाना सम्भव ही नहीं है।

२१२७. यदि इहलौकिक व पारलौकिक सुख-प्राप्ति में बाधा न पड़ती हो तो गुरु के वचनों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

२१२८. वह गुरु, पिता और मित्र निन्दनीय है जो अपने शिष्य, पुत्र और मित्र के दोषों की निन्दा बहुतों के सामने करता है और उसे नैतिक शिक्षा नहीं देता है।

२१२९. भगवान् बैठे हुए मुनि हैं और 'मुनि' चलते फिरते भगवान् हैं।

२१३०. बड़प्पन अमीरी में नहीं किन्तु ईमानदारी और सज्जनता में है।

२१३१. मैं महान् उनको मानता हूँ, जो स्वयं अपना मार्ग बनाते हैं परन्तु कभी मिथ्या मार्ग पर चल पड़े तो लौट आने का साहस और बुद्धि भी रखते हैं।

२१३२. सन्तान के लिए तो माता–पिता ही प्रथम गुरु और सर्वथा पूज्य हैं।

२१३३. शास्त्र मील के पत्थर की भाँति हैं, जो मंजिल की तरफ इशारा करते हैं।

२१३५. शिक्षक में माता की ममता, पिता का प्यार, वैज्ञानिक सी सूझबूझ, तपस्वी सा मन और किसान जैसी सहजता–सरलता होनी चाहिए।

२१३६. शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क को भरना नहीं, उसका पूर्ण विकास करना है।

२१३७. जिस शिक्षा में समाज और देश के कल्याण की चिंता के तत्त्व नहीं हैं, वह कभी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती है।

२१३८. शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है।

२१३९. शिक्षा का मतलब—व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास करना है।

२१४०. जो मूर्ख और अहंकारी को शिक्षा दे, उसे स्वयं शिक्षा की जरूरत है।

२१४१. शिक्षक का आचरण ही बच्चों की असली किताब है।

२१४२. बच्चे को गधा कहकर शिक्षा देना, उसे लात मारने की कला सिखाना है।

२१४३. शिक्षा जीवन निर्वाह से अधिक जीवन निर्माण के लिए होनी चाहिए, उसका ध्येय जीविका मूलक नहीं जीवन मूलक होना चाहिए।

२१४४. आपके बल प्रयोग की अपेक्षा आपकी सज्जनता हमें सज्जनता की ओर चलने के लिए अधिक प्रेरित करती है।

२१४५. सन्तों के शब्द उन्हें समझ में आते हैं, जो श्रद्धा से भरे होते हैं।

२१४६. सन्त जलते हुए दीप हैं, जो बुझे हुए दीपों को जलाते हैं।

२१४७. पदार्थ का स्पर्श करते ही जिह्वा स्वाद को जान लेती है उसी प्रकार श्रद्धालु भी पलक झपकते ही सन्त को पहचान लेते हैं।

२१४८. मूर्ख दोस्तों के साथ बैठकर मुस्कुराने की अपेक्षा सन्त के सामने रोना अच्छा है।

२१४९. सन्तों की कृपा दृष्टि भाग्य तक बदल देती है।

२१५०. हृदय का मैल जल से नहीं, सन्तों की चरण रज से साफ होता है।

२१५१. तपस्वी का मुख मंडल ऐसा होना चाहिए कि जो तपस्वी नहीं है, वे भी तपस्या की ओर उन्मुख हो जाएँ।

२१५२. तत्त्वज्ञान रहित जीवों के परिग्रह का परित्याग (मुनिपना) भी निष्फल होता है।

२१५३. सन्तों को साधनों से नहीं साधना से स्नेह रखना चाहिए।

२१५४. जिसके पास भीतर कुछ होता है, वही बाहर सब कुछ छोड़ सकता है।

२१५५. सच्चे साधु वही हैं जो अपनी आयु को मनुष्य और प्राणीमात्र की भलाई के लिए लगा देते हैं।

२१५६. जिस प्रकार चन्दन जलाये जाने या घिसे जाने पर भी अपनी सुरभि का परित्याग नहीं

करता, उसी तरह सच्चे सन्त संकट आने पर अपनी साधना का त्याग नहीं करते हैं।

२१५७. सच्चा साधक लोभ और भय के आगे झुक नहीं सकता है।

२१५८. जिसके पास सब कुछ होता है उसे राजा कहते हैं किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं होता उसे महाराजा कहते हैं।

२१५९. सद्भाव में तो दुनिया सुखी रहती है पर सन्तों की विशेषता है कि वे अभाव में भी सुखी रहते हैं।

२१६०. मन में भगवान् का स्मरण बना रहे और मर्यादा का उल्लंघन न हो, यही सन्त का लक्षण है, संत प्रत्यक्ष शिक्षा न देते हों, तो भी उनकी सेवा करनी चाहिए।

२१६१. धनी लोग तो दूसरे को नौकर बनाते हैं, पर सन्त लोग दूसरे को भी सन्त ही बनाते हैं। संत जिस पर प्रसन्न होते हैं वह सदा सुखी रहता है।

२१६२. जो सन्त के सामने झुकते नहीं हैं, प्रकृति उनका सारा शरीर झुका देती है, वक्त की मार जब पड़ती है तो सन्त क्या शैतान के सामने भी सिर झुकाना पड़ता है।

२१६३. दुनिया पर बहुत ज्यादा भरोसा नहीं करना, वह कब, किस ओर लुढ़क जाए पता नहीं, गुरु जो रास्ता दिखाए, बस उसी पर चलना। वह सुई कभी नहीं खोती जिसमें धागा होता है। उसी प्रकार वह जीव कभी नहीं रोता जिसके अंदर जिनवाणी रूपी सूत्र होता है।

२१६४. जीवन में वही गुरु बना पाता है जिसके भीतर का गुरुर मिट जाता है।

२१६५. गुरु आपत्ति काल के सिवाय शिष्य के विद्याध्ययन में विघ्न न डाले।

२१६६. दूध में चावल मिलाने से खीर बनती है, सद्गुरु के चरणों में झुकने से तकदीर बनती है।

२१६७. सच्चे गुरु से ज्यादा कठिन समर्पित शिष्य का मिलना है।

२१६८. गुरु के चरणों में समर्पण सिर पर ही नहीं सिद्धालय में भी बिठा देता है।

२१६९. गुरु को शिष्य के मन का और शिष्य को गुरु के तन का ख्याल रखना चाहिए।

२१७०. गुरु जो करें वह नहीं अपितु गुरु जो कहें वह करना चाहिए।

२१७१. कितनी भी परेशानी आ जाये पर आप गुरु को मत छोड़ना।

२१७२. दीक्षा गुरु एक हो सकते हैं, शिक्षा गुरु अनेक हो सकते हैं परन्तु श्रद्धा गुरु तो तीन कम नौ करोड़ होते हैं।

२१७३. जहाँ प्रेम है वहाँ स्वर्ग है।

२१७४. गुरु को खुश करने का उपाय सिर्फ गुरु की विनय है।

२१७५. संसार में भाई तो इस लोक में प्रीति उत्पन्न करता है किन्तु गुरु तो इसलोक परलोक दोनों में प्रीति उत्पन्न करते हैं।

२१७६. गुरु आज्ञा भंग करने वाले शिष्य की कभी समाधि नहीं हो सकती है।

२१७७. गुरु को मनाने में अहंकार का भूत चढ़ सकता है, पर गुरु की मानने से कल्याण होता है।

२१७८. जो गुरु, शिष्य को एक अक्षर भी पढ़ाता है, उसे पृथ्वी पर ऐसा कोई पदार्थ नहीं जिसे देकर ऋण रहित हो सकें।

२१७९. शिष्य को गुरु के पास आनंद प्राप्त न हो तो उसे दूसरे गुरु का आश्रय ले लेना चाहिए।

२१८०. जीवन में गुरु गुणगान कहने से कभी पीछे न हटें।

२१८१. जिस प्रकार मलिन घी का घड़ा बिना जल के ही शुद्ध होता है उसी प्रकार ज्ञान-चारित्र से मुनिराज को निर्मल जानना चाहिए।

२५. झूठ

२१८२. समय पर रोने से आँसू भी मोती बन जाते हैं और असमय पर हँसी व मुस्कुराहट भी मौत बन जाती है। समय के साथ चलो वरना पीछे रह जाओगे और पछताओगे।

२१८३. जो समयानुसार धर्म, अर्थ और काम का सेवन करता है, वह इहलोक व परलोक में भी धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त करता है।

२१८४. गुस्सा अक्ल को खा जाता है, अहंकार मन को खा जाता है, चिन्ता आयु को खा जाती है, रिश्वत इंसान को खा जाती है, लालच ईमान को खा जाता है और झूठ सभी गुणों को खा जाता है।

२१८५. जो मनुष्य दूसरों को देते हुए नहीं देख सकता, उसका वंश रोटी और कपड़ों तक के लिए मारा-मारा फिरेगा और नष्ट हो जायेगा।

२१८६. सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं।

२१८७. अगर तराजू पर एक ओर समस्त पाप और दूसरी ओर असत्य बोलने का पाप रखा जाये तो दोनों समान कहे हैं। झूठ की उम्र लम्बी नहीं होती है।

२१८८. सत्य वह दौलत है जिसे पहले खर्च करो और जिन्दगी भर आनन्द पाओ और झूठ वह कर्ज है, जिससे क्षणिक सुख पाओ पर जिन्दगी भर चुकाते रहो।

२१८९. सत्य पर कोई विश्वास नहीं करता, झूठ पर सब विश्वास करते हैं, शराब बेचने वाले को कहीं नहीं जाना पड़ता, दूध बेचने वाले को गली-गली जाकर बेचना पड़ता है, इसी प्रकार सत्य को बार-बार परीक्षा देनी पड़ती है।

२१९०. शरीर में जैसे प्राणों का मूल्य है, वैसे ही समस्त सद्गुणों में सत्य का मूल्य है।

२१९१. सत्य जिसका डगमग होता उसकी सत्ता डगमगा जाती है।

२१९२. यदि सत्य के लिए अपनी देह त्यागना पड़े तो त्याग दीजिए, यही अन्तिम ममता है जिसे छोड़ना होगा।

२१९३. सत्य की नाव हिलेगी-डुलेगी पर डुबेगी नहीं।

२१९४. जो तटस्थ होता है वही सत्य को समझ सकता है और जो विकल्पों को दूर रख सकता है वह तटस्थ होता है।

२१९५. सत्यवादी को वचन सिद्धि हो जाती है।

२१९६. वह सत्य भी असत्य है जिससे धर्म और धर्मात्मा पर अँगुली उठती हो।

२१९७. ऐसा सत्य भी झूठ है, जिससे शान्ति भंग होती है।

२१९८. मनुष्य झूठ बोलकर जीवन की काफी सम्पदा खो देता है।

२१९९. झूठ बोलने पर कई बातें याद रखना पड़ती हैं किन्तु सच बोलने पर कुछ भी याद नहीं रखना पड़ता है।

२२००. झूठ दुनिया भर में घूमता-फिरता है, सच मजबूती से कदम जमाए रहता है।

२२०१. झूठ से जो पाया जाता है, वह पाना नहीं खोना है और सत्य से जो खोया जाता है वह खोना नहीं पाना है।

२२०२. झूठ बोलना कायरता की निशानी है।

२२०३. झगड़े में सत्य हमेशा खो जाता है।

२२०४. मान-सम्मान, वैर-विरोध, लोभ-हास्य में असत्य भी सत्य जैसा दिखता है परन्तु होता नहीं है। सत्य उनके लिए कड़वा है, जो कामवासना और असत्य में जीते हैं।

२२०५. खुली आँख का सपना आँख बन्द होने पर और बन्द आँख का सपना आँख खुलने पर झूठा होता है।

२२०६. सच सुनने से न जाने क्यों कतराते हैं लोग, तारीफ चाहे झूठी हो सुनकर खूब मुस्कुराते हैं लोग।

२६. मुस्कुराती शकल से आती अकल

२२०७. एक दिन की खुशी के लिए पिकनिक मनाइये, एक माह की खुशी के लिए शादी कर लीजिए और यदि जीवन भर के लिए खुशी चाहिए हो तो मस्त रहने की आदत बना लीजिए।

२२०८. सब रोगों की एक दवाई, हँसना सीखो मेरे भाई।

२२०९. हँसते हुए लोगों की संगत इत्र की दुकान जैसी है, कुछ न खरीदो फिर भी रूह महका देती है।

२२१०. सबको हँसाना पर किसी पर हंसना मत, सबके दु:ख बाँटना पर किसी को दु:खी करना मत, सबकी राह में दीपक जलाना पर किसी से जलना मत।

२२११. मुस्कुराते हुए चेहरे से किया गया स्वागत और जलपान पूरे भोजन के बराबर होता है।

२२१२. मुस्कुराहट वो हीरा है जिसे आप बिना खरीदे पहन सकते हैं और जब तक हीरा आपके

पास है आपको सुन्दर दिखने के लिए किसी और चीज की आवश्यकता नहीं है।

२२१३. जरा सी मुस्कान से फोटो अच्छी आ सकती है तो फिर हमेशा मुस्कुराने से जिन्दगी अच्छी क्यों नहीं बन सकती है?

२२१४. दूध पीने वाला शिशु जैसी निर्दोष हँसी हँसता है, वैसी हँसी मस्ती बिखेरने वाली हँसी, कष्टों को विदा करने की अचूक दवा है।

२२१५. प्रसन्न-मुख होना मोतियों के खजाने के दान से भी अच्छा है।

२२१६. प्रसन्नता पूर्वक उठाया गया बोझ हल्का प्रतीत होता है।

२२१७. खुश मिजाज और दिल के साफ आदमी का काम नहीं रुकता है।

२२१८. हम जो चाहते हैं यदि वह नहीं पा सके तो उसमें खुश रहें जो हमें मिला है।

२२१९. खुशी से बढ़कर पौष्टिक खुराक और कोई नहीं है।

२२२०. किसी भी व्यक्ति को इतना निर्धन नहीं होना चाहिए कि वह दूसरों को मुस्कान रूपी उपहार भी न दे सके।

२२२१. तीनों लोकों में ये मैत्री, दया, दान और प्रियवचन मनुष्य को सदैव प्रसन्न चित्त रखती हैं।

२२२२. जीवन पथ पर फूल नहीं बिखेर सकते तो कम से कम मुस्कान तो बिखेर सकते हो।

२२२३. प्रसन्नता टेंशन मुक्ति की रामबाण औषधि है।

२२२४. अपने पास प्रतिक्षण प्रसन्नता का गुलाब जल रखें।

२२२५. सदैव प्रसन्न रहो, इससे मस्तिष्क में अच्छे विचार आते हैं और चित्त शुभ कार्यों की ओर लगा रहता है।

२२२६. प्रसन्नचित्त व्यक्ति जहाँ कहीं भी जाता है, वहाँ अपना प्रभाव छोड़ आता है, वह सबको उत्साहित करने के साथ-साथ प्रेरणा देना, प्रसन्न रहना सिखाता है, ऐसा प्रसन्नचित्त व्यक्ति धूप की वह किरण है जिसका अत्यन्त सुखद प्रभाव खेतों और वनस्पतियों पर पड़ता है।

२२२७. मुस्कुराहट के द्वार पर बुढ़ापा दस्तक नहीं देता, इसलिए परमात्मा कभी बूढ़े नहीं होते। सम्पन्नता में सुख नहीं, प्रसन्नता में सुख है।

२२२८. प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्धक है, देह और मन दोनों के लिए मित्र-तुल्य है।

२२२९. विनोदप्रियता से ज्यादा असरकारक कोई भी स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक नहीं होता है।

२२३०. आपको जो भी चाहिए हो उसे अपनी मुस्कुराहट से प्राप्त करो न कि तलवार के जोर से। जीवन में प्रसन्नता उत्पन्न करो क्योंकि प्रसन्न व्यक्ति सबका प्रिय होता है।

२२३१. प्रसन्नता स्वास्थ्य है, उदासी रोग है।

२२३२. मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है।

२२३३. मुस्कुराहट से खर्च कुछ नहीं होता किन्तु इससे मिलता बहुत है।

२२३४. मुस्कुराहट थके हुओं के लिए आराम है, निराश लोगों के लिए आशा की किरण है, दु:खी लोगों के लिए सूर्य की रोशनी है और कष्टों के लिए प्रकृति की सबसे बेहतरीन दवा है।

२२३५. मुस्कुराहट मोल नहीं मिलती, न ही इसे चुराया जा सकता है, न ही उधार लिया जा सकता है, न ही भीख में मिलती है क्योंकि इसका तब तक कोई मोल नहीं है, जब तक कि इसे दूसरों को नहीं दिया जाता है।

२२३६. संसार में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है कि अपनी आवश्यकताओं को कम से कम रखो।

२२३७. इस संसार में वही जीव सुख का अधिकारी है जो लौकिक निमित्तों के मिलने पर हर्ष और विषाद से अपने को बचा सकता है।

२२३८. स्वार्थ पूर्ति के लिए बोले गये सत्य वचन भी असत्य से बढ़कर हैं।

२२३९. जो बहुत खिल-खिलाकर हँसते हैं, समझ लो भीतर-ही-भीतर बहुत दु:खी होते हैं, बात-बात पर हँसी भरे-पूरे जीवन का चित्र नहीं उभारती, जीवन की शून्यता और दर्द को उभारती है।

२२४०. मुस्कान पाने वाला मालामाल हो जाता है, परन्तु देने वाला दरिद्र नहीं होता है।

२२४१. दूसरों को हँसाने की कला सीखिए।

२२४२. सर्व रोगों की रामबाण औषधि हँसी है जो बिना पैसे की मिलती है और इसका कोई (दुष्प्रभाव) साइडइफेक्ट नहीं होता है।

२२४३. होंठों से तो सभी मुस्कुराते हैं, आप आँखों से मुस्कुरायें तो मुस्कान चौगुनी असरदार होगी।

२२४४. यदि हम दूसरों के लिए रोना सीख लेंगे तो बहुत से लोग हँसने लगेंगे।

२२४५. हँसना अच्छा है किन्तु हँसने से पूर्व हमें यह अवश्य जान लेना चाहिए कि हमारी हँसी कहीं किसी के रुदन का कारण तो नहीं है।

२२४६. जो खुद पर हँसना नहीं जानता, उस पर लोग हँसते हैं।

२२४७. दूसरों की हार पर हँसने वाला, एक दिन खुद अपनी हार पर आँसू बहाता है।

२२४८. हँसी आये तो हँस लेना इससे आँतें खुल जाती है और रोना आये तो रो लेना इससे आँखें धुल जाती हैं।

२२४९. अगर आपको किसी की हँसी निर्मल लगती है तो जान लीजिए वह आदमी भी निश्छल है।

२२५०. यदि विश्व में कोई ऐसा सद्‌गुण है जिसकी प्राप्ति सदैव हमारा लक्ष्य होना चाहिए तो वह है प्रसन्नता।

२२५१. जिसके पास प्रसन्नता है समझो उसकी आवश्यकता एवं इच्छाएँ कम हैं।
२२५२. जिसके पास पैसा नहीं वह दरिद्री नहीं अपितु जो दूसरों को देखकर प्रसन्न नहीं होता, दूसरों की प्रशंसा नहीं करता वह दरिद्री हैं।
२२५३. कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए प्रसन्न नहीं दिखाई देता कि उसको कोई परेशानी नहीं है। बल्कि इसलिए प्रसन्न रहता है कि उसका जीवन जीने का दृष्टिकोण सकारात्मक है।
२२५४. यदि प्रसन्न रहना चाहते है तो प्रशंसा सुनने के साथ आलोचना सुनने की शक्ति बढ़ाएँ।
२२५५. प्यार का सबसे खूबसूरत पौधा जमीं पर नहीं दिलों में उगता है।
२२५६. हँसता हुआ चेहरा आपकी शान बढ़ाता है मगर हँसकर किया हुआ कार्य आपकी पहचान बढ़ाता है।
२२५७. फूलों की तरह महकते रहो, सितारों की तरह चमकते रहो, किस्मत से मिली है ये जिन्दगी, खुद भी हँसों औरों को भी हँसाते रहो।
२२५८. हँसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है, हँसकर भी जीना है रोकर भी जीना है जब जीना ही है तो क्यों न हँसते-हँसते जिया जाये। अमीर दिल ही मुस्करा सकता है।
२२५९. हँसी मनुष्य के लिए सबसे बड़ा वरदान है क्योंकि जीव जगत् में सिर्फ मनुष्य ही हँस सकता है।
२२६०. चेहरे की हँसी से गम को भुला दो, कम बोलो पर सब कुछ बता दो, खुद न रुठो पर सबको हँसा दो, यही राज है जिन्दगी का, जियो और जीना सिखा दो।
२२६१. पता है तुम्हारी और हमारी मुस्कान में क्या फर्क है? तुम खुश होकर मुस्कराते हो, हम तुम्हें खुश देखकर मुस्कुराते हैं। मुस्कुराना एक ऐसा उपहार है बिना मोल के भी जो अनमोल है, देने वाले का कुछ कम नहीं होता पाने वाला निहाल हो जाता है।
२२६२. हँसी खतरनाक नहीं, उसके पीछे छुपा व्यंग्य खतरनाक है।
२२६३. उदयसुन्दर की हँसी भी ठीक थी क्योंकि वज्रबाहु को मोक्षमार्ग में लगा दिया था। (पद्मपुराण)
२२६४. द्रौपदी ने हँसी में कहा था–अंधों के अंधे होते हैं परिणाम स्वरूप महाभारत हुआ।
२२६५. हँसकर बोलने से गंभीर बात भी प्रभावशाली नहीं हो पाती है।
२२६६. हम अपने प्रण का पालन करते हैं, डाटफटकार सहते हैं और खुश रहते है क्योंकि रंज करना अधर्म कहा है।
२२६७. दूसरों को प्रसन्न रखने की कला स्वयं प्रसन्न होने में है। सौम्य होने का अर्थ स्वयं से व दूसरों से संतुष्ट होना है।
२२६८. भय रक्त के प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है और रक्त को विषाक्त तक कर देता है, हँसी और प्रफुल्लता रक्त परिसंचरण में वृद्धि करते हैं, वे रक्त के लिए शक्तिवर्धक हैं।

२२६९. मजाक चतुराई से किया गया अपमान है।

२२७०. मानव के अंदर जो कुछ सर्वोत्तम है, उसका विकास प्रशंसा तथा प्रोत्साहन के द्वारा किया जा सकता है।

२२७१. जो व्यक्ति प्रसन्न स्वभाव का होता है वह निश्चय ही किसी भी कठिन से कठिन कार्य को सफलतापूर्वक करके संतोषप्रद परिणाम ले सकता है। एक प्रसन्न चित्त युवक जीवन के अभिशाप को वरदान में बदल सकता है।

२२७२. चित्त प्रसन्न रहने से मनुष्य के सब दुःख दूर हो जाते हैं एवं बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है।

२२७३. मुस्कुराओ! गुलाब काँटों में मुस्कुराता है, आप भी प्रतिकूलता में मुस्कुराओ तो लोग आपसे गुलाब की तरह प्रेम करेंगे। जीवन में सुख आये तो हँस लेना और दुःख आये तो उसे हँसकर उड़ा देना।

२२७४. यदि आप अपने ज्ञान को बहुमूल्य तथा उपयोगी बनाना चाहते हैं तो अपनी बुद्धि का द्वार प्रसन्नता से खोल दीजिए।

२२७५. सौ वर्ष जीने के लिए अपने चारों और जवान और हँसमुख मित्रों का समूह रखो।

२२७६. तुम हँसोगे तो संसार हँस पड़ेगा किन्तु रोते समय तुम्हें अकेले ही रोना पड़ेगा।

२२७७. उन्मुक्त अट्टहास नई प्रेरणा, स्फूर्ति और विचारों का स्रोत है। जिस प्रकार वनस्पतियों के लिए खुली धूप की जरूरत होती है उसी प्रकार मनुष्य के लिए हँसना टॉनिक का काम करता है। मुख मण्डल हृदय का दर्पण है।

२२७८. जो समयानुसार धर्म, अर्थ, काम का सेवन करता है, वह इस लोक व परलोक में भी धर्म अर्थ और काम को प्राप्त होता है।

२२८९. ज्यादा से ज्यादा लोगों की सुनें लेकिन बात उन्हीं लोगों से करे जिनकी सोच आपकी सोच से मिलती है।

२२८०. ज्ञान को अपना गुरु बनाओ गरूर अर्थात् अहंकार का कारण नहीं बनाओ।

२७. दुर्लभ गुण उपकार और कृतज्ञता

२२८१. पशुओं के लिए माता दुग्धपान तक ही माता रहती है, अधम व्यक्तियों के लिए विवाह पर्यन्त तथा मध्यम व्यक्तियों को गृह कार्य देखभाल करने तक माता रहती है, उत्तम व्यक्तियों को तो माता जीवनपर्यन्त तीर्थ के समान रहती है।

२२८२. पुत्र पिता के सामने भूमि पर बैठा हुआ जैसा अच्छा लगता है वैसा सिंहासन पर नहीं। पुत्र को पिता के चरण दबाने में जो सुख मिलता है, वह राज्य पर शासन करने में नहीं। उसे पिता की जूठन खाने में जो सुख मिलता है, वह तीनों लोकों को भोगने में नहीं। माता–

पिता का परित्याग करने वाले पुत्र का राज्योपभोग तो क्लेश मात्र है उसमें कोई गुण नहीं है। जीवन में सुख-दु:ख जो भी मिले उन्हें स्वीकार करो। यदि ३६५ दिन में ५-१० दिन दु:ख के भी आयें तो प्रभु से शिकायत क्यों? बल्कि उसे कहो तूने इतने सारे मीठे फल में एकाध कड़वा फल देकर कड़वे मीठे का अंतर तो समझाया है।

२२८३. अपने साथ की गई बुराई बालू पर और की गई भलाई पत्थर पर लिखना चाहिए।

२२८४. सज्जन कभी उपकार भूलते नहीं और दुर्जन कभी उपकार मानते नहीं।

२२८५. माँ का कर्ज आदमी सात जन्मों तक नहीं उतार सकता है और गुरु का कर्ज अनेक जन्मों तक नहीं उतारा जा सकता है।

२२८६. जब तक दूसरों का कर्ज चुका नहीं दिया जाता तब तक हम सदाचारी कभी नहीं कहला सकते हैं और हमें स्वर्ग में प्रवेश भी नहीं मिल सकता है।

२२८७. भावना से कर्त्तव्य ऊँचा होता है।

२२८८. कृतज्ञता एक कर्तव्य है जिसे लौटाना चाहिए।

२२८९. दया और कृतज्ञता उदारता के सहायक हैं।

२२९०. ज्ञानी पद ग्रहण करते समय रोता है और अज्ञानी पद ग्रहण करते समय हँसता है।

२२९१. माता-पिता का ऋण सन्तान जीवन भर नहीं चुका सकती है।

२२९२. माँ-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़कर आप अपने घर से भगवान् को निकाल देते हैं।

२२९३. कोई भी अपराध माफ किया जा सकता है, लेकिन राष्ट्रद्रोह नहीं।

२२९४. उत्तरदायित्व से महान् बल प्राप्त होता है, जहाँ कहीं उत्तरदायित्व होता है वहीं विकास होता है।

२२९५. जिससे एक अक्षर भी सीखा हो, उसका आदर करो।

२२९६. जिन्होंने आपको संकट काल में सहारा दिया उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहो।

२२९७. पहली सीढ़ी से चढ़कर ही मानव अन्तिम सीढ़ी पर पहुँचता है अत: पहली सीढ़ी को कभी मत भूलो और पहली सीढ़ी पर खड़े व्यक्ति का साहस बढ़ाओ, तिरस्कार मत करो।

२२९८. संसार में दो व्यक्ति दुर्लभ हैं, उपकारी और कृतज्ञ।

२२९९. कृतघ्न शिष्य गुरु का उपकार नहीं मानते और संसार वृद्धि करते हैं।

२३००. आप प्रतिदिन कृतज्ञता की प्रवृत्ति को विकसित करें।

२३०१. माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है और पिता का गौरव आकाश से भी ऊँचा है।

२३०२. कृतज्ञता की सीमा किए हुए उपकार पर अवलम्बित नहीं है उसका मूल्य उपकृत व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर है।

२३०३. अन्य सब दोषों से कलंकित मनुष्यों का उद्धार हो सकता है किन्तु अभागे किए हुए उपकार को नहीं मानने वाले का कभी उद्धार नहीं होगा।

२८. क्षमा

२३०४. जीवन में गुरु, पण्डित, मित्र, पुत्र, पिता–माता, पत्नि और पड़ोसी से कभी वैर नहीं करना चाहिए, इनसे वैर करने वाले को सदैव दुःख ही दुःख मिलता है।

२३०५. किसी भी क्रोधी व्यक्ति के आगे न आवें।

२३०६. वैश्यों का क्रोध मीठे वचनों से शान्त हो जाता है।

२३०७. शत्रु का लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।

२३०८. अपेक्षा की उपेक्षा ही क्रोध का कारण है।

२३०९. क्रोध को प्रेम से विजय करें, बुराई को भलाई से विजय करें, लोभ को उदारता से विजय करें, असत्य को सत्य से विजय करें।

२३१०. जो क्रोध पर नियंत्रण रखते हैं वे ही स्वर्ग के सच्चे अधिकारी होते हैं।

२३११. क्रोध मस्तिष्क के दीप को बुझा देता है अतः महत्त्वपूर्ण परीक्षा में हमेशा शांत व स्थिर होना चाहिए।

२३१२. वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है जो क्रोधावस्था में भी गलत बात मुख से नहीं निकालता है।

२३१३. जो जितना असन्तुष्ट होगा उसके अंदर उसी मात्रा में क्रोध होगा।

२३१४. क्रोध इंसान को शैतान, दोस्त को दुश्मन, अपने को पराया बना देता है।

२३१५. क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है, ईर्ष्या अंधा ही नहीं, बहरा भी बना देती है।

२३१६. क्रोध जब भी आता है तो विवेक की आँखों को बन्द करके आता है, समझदारी के दरवाजे में बेहोशी की चटकनी लगा करके आता है।

२३१७. क्रोध मुसीबत में डाल देता है और अहंकार मुसीबत से बाहर नहीं आने देता।

२३१८. ज्यादा गरम होने पर दिमाग और मशीन दोनों बंद हो जाते हैं।

२३१९. क्रोधी व्यक्ति का मुँह खुला रहता है, पर दिमाग बंद हो जाता है।

२३२०. कामना, वासना ही नहीं क्रोध भी पशुता का द्वार है।

२३२१. जब स्वयं के अन्दर गंदगी होती है तब दूसरों की गालियाँ बुरी लगती हैं।

२३२२. अगर आप छोटी मामूली बातों पर गुस्सा होते हैं, तो इससे आपकी हैसियत का भी पता लगता है।

२३२३. जब आप सबकी बात नहीं मानते, तो फिर दूसरा कोई आपकी बात न माने तो आपको नाराज नहीं होना चाहिए।

२३२४. उस समय आप विशेष शांत रहें, जब अपना गुस्सा कोई आप पर उतारे।

२३२५. पुरुष गुस्से से और महिलाएँ जिद से दुःखी होती हैं।

२३२६. अति क्रोध, कटु वाणी, दरिद्रता, स्वजनों से वैर, नीचों का संग और अकुलीन की सेवाएँ यह सब नरकवासियों के लक्षण हैं।

२३२७. क्रोध को जीतने के लिए मौन हो जाना, उस जगह को बदल देना, विषय को बदल लेना, अपने हाथ पैर मुँह को ठंडे पानी से धो लेना, दर्पण में अपना चेहरा देखना, अपने मुँह में पानी भर लेना, कुछ समय के लिए श्वास रोक लेना, परमात्मा की मुद्रा को देखना, आदि सूत्रों के उपयोग से क्रोध पर विजय पाई जा सकती है।

२३२८. ईश्वर ने सबको अपना-अपना गुण दिया है जिससे सबका सम्मान होता है। कोयल की शोभा मधुर स्वर में है, स्त्री की शोभा उसके पतिव्रत होने में है, कुरूप की शोभा उसके विद्वान् होने से है, तपस्वी त्यागी की शोभा उसके क्षमा, शील, संयम से है। यदि कोई तपस्वी होकर भी अति क्रोधित हो जाये तो समाज में उसका सम्मान नहीं होता क्योंकि विपरीत गुणों में सम्मान नहीं मिलता है।

२३२९. वैर महादुःख दायी है वैर न वैर मिटाता है, वैर निरन्तर प्राणी को भवसागर में भटकाता है।

२३३०. जैसे धागे में गाँठ लग जाने पर वह छेद से पार नहीं हो पाता है, वैसे ही मन में वैर की गाँठ लग जाने पर व्यक्ति संसार पार नहीं कर पाता है।

२३३१. क्रोध से ज्यादा खतरनाक वैर है क्योंकि क्रोध तो अल्प समय के लिए आता है किन्तु वैर की गाँठें वर्षों तक कब्जा जमाए रहती हैं, जिससे आपसी बोल-चाल भी बंद हो जाती है और प्रेम-स्नेह के सम्बन्ध खत्म हो जाते हैं तथा सुलह के सारे रास्ते भी बंद हो जाते हैं और इसी से तनावपूर्ण जीवन हो जाता है सदैव आर्त्त-रौद्र ध्यान चलता रहता है, जिससे नियम से अधोगति में जाना पड़ता है।

२३३२. वैर की सड़ांध संड़ास की तरह होती है, जिससे जीवन का एक क्षण भी शान्ति से नहीं कटता है, अतः क्रोध को छोड़िये क्योंकि क्रोध नहीं होगा तो वैर की उत्पत्ति ही नहीं हो सकती है। आग में खेलने वालों का अन्त राख की ढेरी है।

२३३३. चार बार भोजन करने में जितनी ऊर्जा संग्रह होती है वह एक बार के क्रोध करने से नष्ट हो जाती है।

२३३४. जिस समय मन क्रोध से उत्तेजित हो उस समय कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

२३३५. ज्यादा क्रोध और चिड़चिड़ापन से लीवर, गालब्लेडर को हानि होती है।

२३३६. क्रोध और घमंड स्वयमेव विपत्ति उत्पन्न करते हैं।

२३३७. वैराग्य संसार से पार करा देता है, लेकिन वैर संसार में डुबो देता है।
२३३८. बदला लेने से इंसान अपने दुश्मन के समान हो जाता है किन्तु न लेने से वह सामने वाले से उत्तम बन जाता है।
२३३९. कुश्ती में सामने वाले को पछाड़ने वाला बलशाली नहीं है, बल्कि क्रोध को काबू में रखने वाला बलशाली है।
२३४०. अपने शत्रु के लिए (अपनी भट्टी को) इतना गरम न करें कि वह आपको ही भूनकर रख दे। किसी को अपना शत्रु मत बनाओ, एक शत्रु सौ मित्रों के होते हुए भी आपका बहुत कुछ बिगाड़ सकता है।
२३४१. शत्रु का प्रसन्न होना व रुष्ट होना बराबर है, वह सब प्रकार से हानि पहुँचाता है, पानी चाहे ठंडा हो या गर्म वह अग्नि को बुझा ही डालता है।
२३४२. जो स्वयं दोषी होकर भी निर्दोष आत्मीय व्यक्ति को कुपित करता है, वह सर्पयुक्त घर में रहने वाले मनुष्य की भाँति रात में सुख से नहीं सो पाता है।
२३४३. साधुता वही है कि स्वयं समर्थ होते हुए भी क्षमा भाव रखे।
२३४४. सच्चा साहस और शराफत सदा साथ रहते हैं, सबसे वीर लोग सबसे अधिक क्षमाशील व झगड़ों से बचने के लिए प्रयासशील होते हैं।
२३४५. दूसरों के घर में आग लगाने से पहले स्वयं के हाथ में मशाल लेनी पड़ती है।
२३४६. क्षमाशील होना सौ रोगों की एक दवा है
२३४७. क्षमा कर देना दुश्मन पर विजय है।
२३४८. विद्वान् क्षमा से ही शुद्ध होते हैं।
२३४९. क्षमा दंड से बड़ी है, दंड देता है मानव किन्तु क्षमा प्राप्त होती है देवता से, दंड में उल्लास है पर शान्ति नहीं और क्षमा में शान्ति भी है और आनंद भी।
२३५०. क्रोध एक गर्म लोहा है जबकि क्षमा ठंडा लोहा है, ठंडा लोहा गर्म लोहे को काट देता है, यही क्षमा की विशेषता है।
२३५१. मित्र की अपेक्षा शत्रु को क्षमा करना सहज है।
२३५२. शत्रुओं को क्षमा कर देना बदला लेने का सबसे सुन्दर साधन है।
२३५३. क्षमा से बढ़कर और किसी बात में पाप को पुण्य बनाने की शक्ति नहीं है।
२३५४. दुनिया का सारा विज्ञान भी क्षमा के बिना आपका कल्याण नहीं कर सकता है।
२३५५. शाकाहारी उतनी जल्दी मानसिक सन्तुलन नहीं खोता, जितना शीघ्र मांसाहारी खो देता है। क्रोध का फल तो कुछ अच्छा होता ही नहीं, चाहे न्याय पर हो या अन्याय पर।
२३५६. जातीय गुटों के संघर्ष के कारण कर्फ्यू में ड्यूटी दे रहे एस.पी. के मुँह पर एक लड़के ने थूक दिया इंस्पेक्टर ने लड़के के माथे पर रिवाल्वर तान दी, एस.पी. ने रोका रुमाल

से पोंछकर कहा जो काम रुमाल से हो जाये उसके लिए रिवाल्वर चलाने की क्या आवश्यकता है।

२३५७. क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन है क्रोध बुद्धि के दीप को बुझा देता है।

२३५८. क्रोध को काबू में रखने से उसके फायदे अनेक हैं, स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा, पारिवारिक रिश्ते बहुत मधुर रहेंगे, मैत्रिक व्यवसायिक सम्बन्ध मधुर रहेंगे, आपकी छवि बहुत ही खास रहेगी, इज्जत मिलेगी, शोहरत मिलेगी, सफलता मिलेगी, हर परिस्थिति में तालमेल बैठा सकेंगे।

२३५९. हमारे व्यवहार में क्रोध ही हमारे विनाश, पतन, हानि, नुकसान का कारण बनता है।

२३६०. भगवान् महावीर का मार्ग शत्रु मिटाने का नहीं शत्रुता मिटाने का है।

२३६१. माफी माँगना आसान है, माफ करना बहुत कठिन है, माफ करने की कोशिश करो, अपनी राहें स्वयं ही आसान हो जायेंगी।

२३६२. किसी के दिल को चोट पहुँचा कर माफी माँगना बहुत आसान है, लेकिन खुद चोट खाकर किसी को माफ करना बहुत मुश्किल है।

२३६३. क्षमा करने से पिछला समय तो नहीं बदलता लेकिन भविष्य सुनहरा हो जाता है।

२३६४. जो पहले क्षमा माँगता है वह सबसे बहादुर है, जो सबसे पहले क्षमा करता है वह सबसे शक्तिशाली है, जो सबसे पहले भूल जाता है वह सबसे सुखी होता है।

२३६५. क्षमा से टूटे दिल फिर से जुड़ जाते हैं और जीवन की गाड़ी पुनः प्रेम की पटरी पर दौड़ने लगती है।

२३६६. वात्सल्य के बिना क्षमा नहीं हो सकती है।

२३६७. तप करते जो भूख सहें वे ऋषि उच्च महान्। क्षमा शील के बाद ही, पर उनका सम्मान। अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का नेत्रधारी भी अंधा ही होता है।

२३६८. कुपित व्यक्ति की पहले विद्या धुँधली हो जाती है और बाद में भृकुटी टेढ़ी हो जाती है। प्रजा का कोप सब कोपों से बड़ा होता है।

२३६९. अनंत दुष्टों में से मैं कितनों को मार सकूँगा ? किन्तु क्रोध को चित्त में मार देने से मैंने सभी शत्रु मार दिये।

२३७०. क्रोध के लक्षण शराब और अफीम दोनों से मिलते हैं, शराबी की भाँति क्रोधी मनुष्य भी पहले आवेश वश लाल-पीला होता है, फिर आवेश के मन्द पड़ जाने पर भी यदि क्रोध न घटा तो वह अफीम का काम करता है और मनुष्य की बुद्धि को मन्द कर देता है, अफीम की तरह वह दिमाग को कुतर कर खा जाता है।

२३७१. क्रोध बैर का अचार या मुरब्बा है।

२३७२. मौन वह मंत्र है जिसके आगे क्रोध की सारी शक्ति विफल हो जाती है।

२३७३. पाँच मिनट का क्रोध जन्म भर की मित्रता को नष्ट कर देता है।

२३७४. क्रोधी मनुष्य उन्हें आघात पहुँचाते हैं जो उनके सर्वोत्तम हितैषी होते हैं।

२३७५. क्रुद्ध होने का अर्थ है दूसरों की गलतियों का स्वयं को दण्ड देना। क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण तथा समर्थ मनुष्यों का भूषण है।

२३७६. क्षमा सर्व तपस्याओं का मूल है, क्षमा करना अच्छा है, भूल जाना सर्वोत्तम है।

२३७७. क्षमा हीन व्यक्ति जो भी पुण्य करता है वह निरर्थक होता है।

२३७८. दंड देने की शक्ति होने पर भी दंड न देना सच्ची क्षमा है।

२३७९. क्षमा और उदारता वही सच्ची है, जहाँ स्वार्थ की भी बलि हो।

२३८०. छोटी नदियाँ शोर करती हैं और बड़ी नदियाँ शान्त चुपचाप बहती हैं।

२३८१. क्षुद्र बातें क्षुद्र मन वालों को प्रभावित करती हैं।

२३८२. दूसरों से गाली सुनकर भी स्वयं उन्हें गाली न दें, गाली सहन करने वाले का रोका हुआ क्रोध ही गाली देने वाले को जला डालता है और उसका पुण्य भी ले लेता है।

२३८३. बदला लेने का आनन्द तो एक ही दिन का होता है किन्तु क्षमा करने वाले का गौरव सदा स्थिर रहता है।

२३८४. यदि तुम में प्रहार करने की शक्ति न भी हो तब भी क्रोध से बढ़कर बुरा काम नहीं यदि तुममें शक्ति हो तब भी क्रोध करना बुरा है।

२३८५. अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है, परन्तु क्रोधाग्नि सारे कुटुम्ब को जला डालती है।

२३८६. जो पुरुष नारी को क्षमा नहीं कर सकता, उसे उसके महान् गुणों का उपयोग करने का कभी अवसर प्राप्त नहीं होता है।

२९. विनम्रता का द्वार, करे जग से उद्धार

२३८७. ऊँचा उठने के लिए पंखों की जरूरत पक्षियों को होती है इंसानों को नहीं, इंसान तो जितना विनम्रता से झुकता है उतना ही ऊपर उठता जाता है।

२३८८. मनुष्य के आचरण से उसके कुल का अनुमान लगता है, उसकी भाषा से उसके मूल देश का परिचय मिलता है और उसके द्वारा किए गए आदर-सत्कार से उसके हृदय की उदारता या कृपणता का अनुमान लग सकता है।

२३८९. जो मन की मानते हैं वे मानी होते हैं और जो मन को मारते हैं वे ज्ञानी होते हैं।

२३९०. ज्ञान वृद्धि के साथ विनम्रता का विकास होना जरूरी है।

२३९१. विद्या से विनय आती, विनय से योग्यता, योग्यता से धन, धन से धर्म, धर्म से सुख अतः सुख की प्राप्ति का मूल विनय है।

२३९२. जिन्दगी में अपने से बड़ों को प्रणाम करना सीखिए। कहा जाता है कि प्रणाम परिणाम बदल देता है।

२३९३. जो दूसरों से सम्मान नहीं चाहते और स्वयं ही दूसरों को सम्मान देते हैं तथा सम्माननीय पुरुषों को नमस्कार करते हैं, वे दुर्लंघ्य संकटों से पार हो जाते हैं।

२३९४. नम्र व्यवहार सबके लिए अच्छा है पर धनवान की नम्रता अमूल्य धन है।

२३९५. दुःख और हानि सहने के बाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी होता है।

२३९६. अधम मनुष्य धन चाहते हैं, मध्यम वर्ग के लोग धन और मान दोनों चाहते हैं किन्तु उत्तम वर्ग के लोग केवल मान चाहते हैं क्योंकि मान ही सब धन से बड़ा है।

२३९७. जहाँ नम्रता से काम चल जाय वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।

२३९८. आप अपनी अच्छाई का जितना अभिमान करोगे, उतनी ही बुराई पैदा होगी इसलिए अच्छे बनो पर अच्छाई का अभिमान मत करो।

२३९९. जो व्यक्ति अभिमान में चूर रहता है, धर्म उससे उतना ही दूर रहता है।

२४००. बल का घमंड करने से मनुष्य दुर्बल और धन का घमंड करने से दास बनता है।

२४०१. सन्तों के चरण छूने से पुण्य मिलता है और उनके आचरण को छूने से परमात्मा मिलता है।

२४०२. विनयी व्यक्ति सर्वत्र आदर-सम्मान पाता है और मरने के बाद देवेन्द्र, चक्रवर्ती, मण्डलीक, राजा-महाराजा आदि बनकर फिर मोक्ष पाता है।

२४०३. प्रेम, विनम्रता व अहिंसा से किसी का भी मन जीता जा सकता है।

२४०४. सम्मान ही सद्‌गुणों का प्रेरणास्पद पुरस्कार है।

२४०५. आत्मरक्षा के साथ दूसरों को सम्मान दीजिए और विवाद से दूर रहिये।

२४०६. व्यक्ति को अपने पूज्यों (माता-पिता-गुरु आदि) के लिए खड़े होकर नमस्कार करना चाहिए बैठकर नहीं।

२४०७. अत्यन्त क्रोध की अवस्था में भी पूज्य पुरुषों की आज्ञा का उल्लंघन और अपमान नहीं करना चाहिए।

२४०८. अपनी बुद्धि का अभिमान ही शास्त्रों की, सन्तों की बातों को अंतःकरण में टिकने नहीं देता है।

२४०९. जब तक स्वार्थ और अभिमान हैं, तब तक किसी के भी साथ प्रेम नहीं हो सकता है।

२४१०. अहंकार की कार में बैठकर अधोलोक की यात्रा नहीं, विनय के विमान में बैठकर ऊर्ध्व लोक की यात्रा करो।

२४११. अहंकार को तोड़ने का तरीका है-झुकना सीखो।

२४१२. अहंकार उत्थान के नहीं, पतन के मार्ग खोलता है।

२४१३. अहम् से बढ़कर पाप नहीं, रहम से बढ़कर धर्म नहीं।

२४१४. अभिमान से देव दानव बन जाता है, विनम्रता से दानव भी देव बन जाता है।

२४१५. दूसरों को कमजोर अपने को बड़ा समझने वाला कालांतर में खजूर का वृक्ष बनता है।

२४१६. आदमी बड़ा विचित्र है, पकड़ता है अहंकार को और पाना चाहता है आनन्द को।

२४१७. अहंकारी को आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति कदापि नहीं हो सकती है।

२४१८. अभिमान ही पराभव का द्वार है।

२४१९. नाश के पूर्व मनुष्य अहंकारी हो जाता है किन्तु नम्रता सदैव मनुष्य को सम्मान प्रदान करती है।

२४२०. अहंकार करना मूर्खों का काम है।

२४२१. अहंकार एक ही सुख जानता है दूसरों को नीचा दिखाने का।

२४२२. अहंकार चाहता है कि सब मुझे ध्यान दें और मैं सबकी उपेक्षा करूँ।

२४२३. अहंकारी व्यक्ति से बड़ा दीन व्यक्ति खोजना असंभव है।

२४२४. जिस प्रकार पत्थर पर फूलों के पौधे नहीं उगते, उसी प्रकार अहंकारी के आचरण से सदाचार का पौधा अंकुरित नहीं होता है।

२४२५. अहंकार का गिरना ही आत्म साक्षात्कार है।

२४२६. ब्राह्मणों के क्रोध को दान से, वैश्यों के क्रोध को मीठे वचनों से, क्षत्रिय के क्रोध को आदर सम्मान से, शूद्र के क्रोध को शक्ति से व गुरुजनों के क्रोध को प्रणाम करके शान्त करना चाहिए।

२४२७. मनुष्य जितना अहंकारी होगा, उसका व्यक्तित्व उतना ही घटिया होगा।

२४२८. परमात्मा झगड़ने से नहीं झुकने से मिलते हैं, अकड़ने से नहीं सिकुड़ने से मिलते हैं।

२४२९. अहंकार को जीतने के लिए हमेशा अपने अतीत और औकात को याद रखें।

२४३०. अहंकारी व्यक्ति मिट सकता है, पिट सकता है, लुट सकता है लेकिन झुक नहीं सकता है जबकि झुके बिना कभी झोली भरती ही नहीं है।

२४३१. गुरुजनों के क्रोधित होने पर जवाब न देना और उनकी सेवा-शुश्रुषा करना उनके क्रोध शान्ति की औषधि है।

२४३२. नम्रता व्रतों की अपेक्षा ज्यादा जरूरी है।

२४३३. सत्य का पालन करने वाले के लिए विनम्र होना आवश्यक होता है।

२४३४. नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं।

२४३५. ज्ञानियों का विश्वास है कि वास्तव में महान् व्यक्ति का लक्षण उसकी नम्रता है।

२४३६. नम्रता को बहुत से विद्वानों ने एक व्रत कहा है।

२४३७. नम्रता मनुष्य का आभूषण है।

२४३८. नम्रता तो सबके साथ हो, पर निकटता कुछ लोगों के ही साथ होना चाहिए।

२४३९. नम्रता सभी के प्रति रखी जा सकती है किन्तु विनय पूज्यों के प्रति होना चाहिए।

२४४०. जिसे दूसरे की सुविधा व दूसरे को निभाने की दृष्टि से झुकना और राह छोड़ना नहीं आता है वह जिंदगी में कुछ भी नहीं कमा पाता है यहाँ तक कि संतोष भी नहीं मिलता है।

२४४१. मनुष्य का स्वभाव होता है कि जब वह दूसरे पर दया करता है तो वह चाहता है कि याचक पूरी तरह विनम्र होकर उसे स्वीकार करे, अगर याचक दान लेने में कहीं भी स्वाभिमान दिखलाता है तो आदमी अपनी दानव वृत्ति और दयाभाव भूलकर नृशंसता से उसके स्वाभिमान को कुचलने में व्यस्त हो जाता है।

२४४२. बुढ़ापा रूप (सुन्दरता) को, आशा धीरता को, मृत्यु प्राणों को, दोष देखने की आदत धर्माचरण को, क्रोध लक्ष्मी को, नीच पुरुषों की सेवा सत्स्वभाव को, काम लज्जा को और अभिमान सर्वस्व को नष्ट कर देता है।

२४४३. मुनियों को नमस्कार करने से उच्च गोत्र, दान देने से भोग, उपासना से पूजा प्रतिष्ठा, भक्ति से सुन्दर रूप की और स्तवन से कीर्ति की प्राप्ति होती है।

२४४४. आश्चर्य है, आदमी मान-सम्मान पत्र चाहता है जबकि चार प्रकार की कषायों में मान भी एक कषाय है।

२४४५. नम्रता सारे सद्गुणों का दृढ़ स्तंभ है।

२४४६. विनम्रता के मार्ग से ही विपत्तियों के दलदल को पार किया जा सकता है।

२४४७. विनम्रता और श्रद्धा के सामने सभी तर्क बेअसर हो जाते हैं।

२४४८. जिस घर में बड़े-छोटे की मर्यादा है वह घर स्वर्ग है।

२४४९. पाँव का जूता सिर पर आये, इससे पहले सिर चरणों में रख दो, इज्जत बच जायेगी।

२४५०. जो झुकना जानता है, दुनिया उसे उठाती है, जो केवल अकड़ना ही जानता है, दुनिया उसे उखाड़कर फेंकती है।

२४५१. मान-सम्मान से दूर रहकर ही सच्ची विरक्ति प्राप्त हो सकती है।

२४५२. अपने से बड़ों के खड़े रहने पर स्वयं न बैठे रहो। जो गुरु के आने पर खड़े नहीं होते वह मरने के बाद अजगर बनते हैं।

२४५३. विनयशील, कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति को परमात्मा भी अपनी गोद में बैठा लेना चाहता है

२४५४. अनुशासित शिष्य शिक्षा को सुगमता से प्राप्त कर लेता है।

२४५५. सत्ता जिसके हाथ में आती है वही मदांध होकर बेईमान, दुश्चरित्र और बदनीयत हो जाता है।

२४५६. एक बार सत्ता मिलने पर उसे किसी मूल्य पर बनाये रखने की आकांक्षा सत्ताधारियों में उत्पन्न हो जाती है।

२४५७. भाग्य से ज्यादा, समय से पहले वही पाता है जो सन्त के चरणों में माथा झुकाता है।

२४५८. सम्मान की आकांक्षा में ही अपमान छुपा है।

२४५९. सत्कारपूर्वक स्वीकार किया गया सत्कार ही संतोष उत्पन्न करता है।

२४६०. सम्मान उसे ही देना चाहिए जो सम्मान को पचा सके और उतना ही देना चाहिए जिससे उसका अभिमान न जागे और अपना भी सम्मान बना रहे।

२४६१. जो अपने गुरुजनों का आदर नहीं करता वह अपना ही अपमान करता है।

२४६२. जब गृह पर शत्रु के भी आने पर उसका सम्मान किया जाता है तो फिर महापुरुषों के आने पर उनका सम्मान क्यों नहीं किया जाना चाहिए?

२४६३. आपका अपमान आपके सम्मान की आकांक्षा है।

२४६४. जिन लोगों को परामर्श का ज्ञान होता है उनका अपमान मत करो।

२४६५. स्वार्थ और अभिमान-इन दो चीजों से स्वभाव बिगड़ता है अतः साधक को स्वार्थ और अभिमान का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

२४६६. झुको उनके चरणों में जिन्होंने स्वयं की इन्द्रियों को झुका दिया है।

२४६७. उसके आगे हमेशा सिर झुकाओ जिसने तुम्हें सिर उठाना सिखाया है।

२४६८. हमारी संस्कृति हाथ मिलाने और हाथ हिलाने की नहीं, अपितु हाथ जोड़ने की है।

२४६९. नम्रता की परीक्षा अधिक गुणी या अधिक यश वाले पुरुषों के समागम में होती है।

२४७०. सम्मान सुख का साधन नहीं आत्मज्ञान सुख का साधन है।

२४७१. जितना प्रयत्न व परिश्रम परद्रव्य के उपार्जन या रक्षण में किया जाता है, उससे भी कम प्रयत्न यदि समता भाव के सम्भालने में किया जावे तो सांसारिक वैभव तो अनायास व अनाकुल सुख की प्राप्ति भी अविलम्ब होगी।

२४७२. जो आत्मा जिस भाव रूप परिणमन करता है, वह उस भाव के साथ तन्मय हो जाता है, अतः अर्हन्त के ध्यान में तन्मय आत्मा स्वयं भाव अर्हन्त हो जाता है। (अनगार धर्मामृत -पण्डित आशाधर जी)

२४७३. पर द्रव्य का आश्रय कर कुछ भी विचार कर दुःखी हो लो और आगे के लिए कर्म बाँध लो किन्तु परद्रव्य कभी सहायक नहीं होगा, मात्र अपने समता परिणाम का ही विश्वास रखो और समता सुधा का पान कर अमर बनो।

२४७४. निरभिमानता की परीक्षा अभिमान या अपमान का निमित्त मिलने पर होती है प्रशंसा के काल में तो सभी नम्र बन जाते हैं।

२४७५. जिसने मान का मर्दन कर दिया हो, वही बड़भागी वैय्यावृत्य कर सकता है।

२४७६. विनम्रता से हर उम्र में, हर जगह, हर क्षेत्र में इंसान की पहचान बनती है।

२४७७. जैसे पृथ्वी समस्त जीवों का आधार है वैसे ही 'विनय' समस्त सद्‌गुणों का आधार है।

२४७८. हे वीतराग! तुम्हारी पूजा करने की अपेक्षा तुम्हारी आज्ञा का पालन करना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

२४७९. जिसके पास विनय है, कल्पवृक्ष उसका सेवक है, चिन्तामणि रत्न उसके हाथ में है तथा यश उसके निकट है।

२४८०. शोक से बचना है तो शौक करना छोड़ दो। लघुता से प्रभुता प्राप्त होती है।

२४८१. महानता अहंकार में नहीं विनय में हुआ करती है। अहं से मौजूद गुण नष्ट हो जाते हैं।

२४८२. जीवन में सरलता से बढ़कर सुख नहीं, यदि पलकें झुकाकर जियोगे तो दुनिया पलकें बिछा देगी। दूसरों के प्रति उदारता, अपने प्रति कृपणता रखना ही दयालुता है।

२४८३. विनय के बिना विद्या, विज्ञान, दर्शन, चारित्र इत्यादि गुण भी आदर को प्राप्त नहीं होते हैं।

२४८४. जो प्रभु के सामने झुकता है वह सबको अच्छा लगता है लेकिन जो सबके सामने झुकता है, वह प्रभु को अच्छा लगता है।

२४८५. जो उलझनें कभी न सुलझें, वे माध्यस्थ भाव से क्षणमात्र में सुलझ जाती हैं।

२४८६. जो व्यक्ति जितना गुणवान होता है, वह उतना ही विनय से भरा होता है।

२४८७. अहंकार दिखाकर किसी रिश्ते को तोड़ने से अच्छा है कि माफी माँगकर उस रिश्ते को निभाया जाये।

२४८८. विनम्रता इंसान को सर्वत्र लोक प्रिय बनाती है शत्रु को मित्र बनाती है।

२४८९. विनम्रता वह चीज है जो पहाड़ को भी झुका सकती है, चट्टान को भी रुला सकती है।

२४९०. जहाँ से विनम्रता हटती है, वहाँ से सहज ही प्रभु की अनुकम्पा समाप्त हो जाती है।

२४९१. विनम्रता संसार सागर से तरने का श्रेष्ठ साधन है।

२४९२. विनय से गुरु, सर्व संघ, राजा, परिवार, शत्रु आदि सभी वश में हो जाते हैं।

२४९३. अज्ञानी मिथ्यादृष्टि ही परमेष्ठी की अवज्ञा करता है।

२४९४. जितनी जिनवाणी-जिनदेव के प्रति विनय होती है उतनी ही जिनेश्वर के लघुनन्दन मुनिराज की विनय करना चाहिए।

२४९५. शिक्षा का फल विनय है, विनय का फल सर्व कल्याण, विनय से संयम, तप, ज्ञान की वृद्धि होती है।

२४९६. जितनी विनय असंयमी संयमी की करता है उससे अधिक विनय संयमी को अपने संयम की करना चाहिए।

२४९७. फल युक्त वृक्ष और कुलीन मनुष्य नम्र होते हैं परन्तु सूखे वृक्ष और मूर्ख मनुष्य कभी नम्र नहीं होते हैं।

२४९८. जहाँ दूसरे को समझाना कठिन हो वहाँ अपने मन को समझाना चाहिए। जीवन की

सफलता का सही निशान है कि व्यक्ति कोमल बनता जाता है

२४९९. सभ्यता का स्वरूप सादगी है, अपने लिए कठोरता दूसरों के लिए उदारता होना चाहिए।

२५००. नम्रता कठोरता से अधिक शक्तिशाली है, जल चट्टान से अधिक शक्तिशाली है एवं प्रेम बल से अधिक शक्तिशाली है।

२५०१. दूसरों का सत्कार करना ही सज्जनों की सम्पत्ति होती है।

२५०२. विनीत व्यक्ति को धर्म-अर्थ-काम-यश और मोक्ष भी मिलता है।

२५०३. महात्माओं के चरित्र विचित्र होते हैं, वे लक्ष्मी की परवाह नहीं करते परन्तु लक्ष्मी के पास होने पर वे अधिक नम्र हो जाते हैं।

२५०४. महान् और सच्चे व्यक्ति सदा सरल और विनम्र होते हैं।

२५०५. जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता है, उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए।

२५०६. दूसरों की आध्यात्मिकता का हृदय से आदर करने से ही मनुष्य में आध्यात्मिकता उत्पन्न होती है।

२५०७. प्रत्येक व्यक्ति की बात सुनो पर किसी से कुछ मत कहो, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा निंदा सुन लो पर अपना निर्णय सुरक्षित रखो।

२५०८. वासनाओं में लिपटे लोग इस योग्य नहीं कि हम उनके सामने भक्ति से सर झुकाये, वैराग्य और परमात्मा से दिल लगाना ही वे महान् गुण हैं जिनकी चौखट पर बड़े-बड़े वैभवशाली और प्रतापी लोगों के सिर भी झुक जाते हैं।

२५०९. अभिमान से किसका पतन नहीं हो सकता? नम्रता से किसकी उन्नति नहीं हो सकती ?

२५१०. गुणी व्यक्ति को आता देखकर प्रसन्न होना चाहिए तथा आदर करना चाहिए फिर समादृत गुणी व्यक्ति उसके सुख के लिए चेष्टा करते हैं।

२५११. डॉक्टर का उचित सम्मान करो, उन लाभों के लिए जो तुम डॉक्टर से प्राप्त कर सकते हो।

२५१२. जो मनुष्य दूसरों पर दया करता है, वह स्वयं अपना हित करता है, पर निर्दयी मनुष्य स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

२५१३. नम्रता से बहुत से काम बन जाते हैं, जो कठोरता से नहीं बनते हैं।

२५१४. स्वाभिमानी होना अच्छा है, परन्तु स्वाभिमान से विन्रमता श्रेष्ठ है।

२५१५. किसी महान् व्यक्ति की प्रथम परीक्षा उसकी विनम्रता है।

२५१६. जो काम स्त्री का सौन्दर्य करके दिखा सकता है, वही नम्रता कर सकती है उसका प्रभाव तत्काल ही दूसरों पर पड़ता है।

२५१७. जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते हैं।

२५१८. सद्गुणों का होना ही काफी नहीं है, उन्हें व्यवस्थित रखना भी नितांत आवश्यक है, सारे सद्गुण विनय के आधीन हैं।

२५१९. नम्रता और प्रिय भाषण मनुष्य के आभूषण है।

२५२०. दुःख देने वाले व्यक्ति को शिक्षा अथवा दण्ड देने का यही एक उत्तम उपाय है कि तुम उसके बदले में भलाई करो जिससे वह मन ही मन लज्जा से भर जावे, यही उसके लिए गहरी मार है।

२५२१. नम्रता बलवानों की शक्ति है और वह बैरियों का सामना करने के लिए सद्गृहस्थ को कवच का काम भी देती है।

२५२२. यदि तुम्हारा पड़ोसी जानबूझ कर झगड़ा करने की भावना से तुम्हें सताता हो तो भी सर्वोत्तम बात यही है कि तुम अपने हृदय में बदले की भावना न रखो और न बदले में चोट पहुँचाओ।

३०. कपट से दुःख प्रकट

२५२३. दूसरों का विश्वास पाने के लिए जीवन में सरलता और सहजता लाइए।

२५२४. कपट एक न एक दिन पतन की खाई में गिराता है।

२५२५. जो दूसरों को छलता है, वह नरक में जाकर उछलता है।

२५२६. भूल करने में तो पाप है ही लेकिन उसे छिपाने में उससे बड़ा पाप है।

२५२७. पाप कभी छिप नहीं सकता अतः धोखा देने वाले को अवश्य ही धोखा खाना पड़ता है यह ध्रुव सत्य है।

२५२८. सरलता ही अपने आप में प्रार्थना है।

२५२९. बच्चों का मन अन्दर से मंदिर, बाहर बन्दर होता है।

२५३०. मनुष्य शरीर धारण करके भी जो शठता, धूर्तता और कपट का व्यवहार करते हैं वे मनुष्य रूप में पशु माने गये हैं।

२५३१. मायाचारी करने वाला मनुष्य मरने के बाद नियम से तिर्यंच गति में उत्पन्न होता है।

२५३२. छल, कपट, धोखा, मायाचारी करने वाला व्यक्ति मोर के समान होता है जैसे मोर देखने में सुन्दर, बोलने में मधुर बोलता है किन्तु उसका भोजन सर्प होता है।

२५३३. जहाँ भी छल-कपट है वहाँ अपने सद्भावों की हत्या है, शुभ विचारों का नाश है, शुभ विचारों के अभाव में पतन निश्चित है इसलिए कपटवादी नहीं स्पष्टवादी बने।

२५३४. अपने स्वभाव को इतना सरल बनाइये कि सपने में भी आपसे किसी का बुरा न हो।

२५३५. निष्कपटता की परीक्षा स्वार्थ साधन के अवसर पर हो जाती है।

२५३६. हम अगर किसी धार्मिक स्थल पर प्रार्थना करते हैं तो मन से कम दूसरों को दिखाने के उद्देश्य से ज्यादा करते हैं।

२५३७. विद्या, तप, धन, शरीर, युवावस्था और उच्चकुल ये छह सज्जनों के लिए गुण और दुष्टों के लिए दुर्गुण हैं जिनके कारण विवेक के नष्ट होने पर अभिमानी और दोषपूर्ण दृष्टि वाले होकर वे दुष्ट लोग महापुरुषों की तेजस्विता को नहीं देख पाते हैं।

२५३८. दगाबाजी से धन जमा करना ऐसा है जैसा कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भर कर रखना है।

३१. लोभ

२५३९. कर्ज होना गृहस्थ का कष्ट है, धन रखना योगियों का कष्ट है, आभूषण धारण करना विधवा का कष्ट है, भागना राजा का कष्ट है, पति का परस्त्री आसक्त होना स्त्री का कष्ट है, पुत्र का कुपुत्र होना माता-पिता का कष्ट है, स्त्री का योग्य न होना पति का कष्ट है और मन में संतोष न होना सभी का कष्ट है।

२५४०. आदमी में गुण तभी तक हैं जब तक वह तृष्णा से दूर रहता है।

२५४१. पदासीन और तिजोरी के निकट जिसका मरण होता है, वे नरक जाते हैं।

२५४२. धन, सत्ता और मान-मनुष्य से असंख्य पाप और अनर्थ कराते हैं।

२४५३ कटोरा लेकर माँगने वाला ही भिखारी नहीं है अपितु संग्रह करने वाला ही सबसे बड़ा भिखारी है।

२५४४. मनुष्य की इच्छापूर्ति तो ईश्वर भी नहीं कर सकता है।

२५४५. महत्त्वाकांक्षाओं का ज्वर ही जीवन को विषाक्त करता है।

२५४६. जिस वस्तु को प्राप्त करने में सन्ताप होता है उसे दूर से ही छोड़ देना चाहिए।

२५४७. भीतर में लोभ न हो तो आवश्यक वस्तु अपने-आप प्राप्त होती है; क्योंकि वस्तु का लोभ ही वस्तु की प्राप्ति में बाधक है।

२५४८. जिस प्रकार काठ अपने ही अंदर से प्रकट हुई अग्नि द्वारा भस्म होकर खत्म हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य अपने ही भीतर रहने वाली तृष्णा से नाश को प्राप्त होता है।

२५४९. लोभी उपकारी नहीं हो सकता है।

२५५०. हिंसा और परिग्रह विश्व अशान्ति के दो मूल कारण हैं इसलिए अहिंसा और अपरिग्रह से ही विश्व में सर्वत्र शान्ति सम्भव है।

२५५१. संतोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं उन्हें जो शान्ति व सुख की प्राप्ति होती है, वह धन के लोभियों को जो इधर-से-उधर दौड़ते हैं, उन्हें प्राप्त नहीं होती है।

२५५२. शान्ति ठीक वहाँ से आरंभ होती है, जहाँ महात्वाकांक्षाओं का अंत हो जाता है।

२५५३. जब आपको किसी मामले में भलाई-बुराई न सूझ पड़े, तब उस समय अपनी इच्छा पर संयम रखें।

२५५४. दासता का कारण स्थूल पदार्थों तथा सांसारिक वस्तुओं की इच्छा करना ही है।
२५५५. सत्य तो निकट है लेकिन अपनी अशान्ति उसे सदा अपने पास नहीं रहने देती है।
२५५६. सन्त नहीं बन सकते तो सन्तोषी बन जाओ।
२५५७. सर्वोत्कृष्ट मानव वह है जिसे सर्वोत्तम सन्तोष है।
२५५८. दुनिया में कोई भी सन्तुष्ट नहीं है—गरीब अमीर होना चाहता है, अमीर सुन्दर दिखना चाहता है, कुँवारे शादी करना चाहते हैं और शादीशुदा मरना चाहते हैं।
२५५९. वे ही सम्पदाशाली हैं जिनको कोई आवश्यकता ही नहीं है।
२५६०. सुख का मूल संतोष है, एक आदमी जल और स्थल के सारे रत्न पाकर गरीब रह सकता है और एक आदमी फटे वस्त्रों और रूखी रोटियों में भी धनी हो सकता है।
२५६१. अनासक्ति और सन्तोष के बिना सुख की कल्पना करना व्यर्थ है।
२५६२. सच्चा सुख तो इस जगत् के सत्य को समझकर सन्तोष प्राप्त करने में हैं।
२५६३. संतोषी सदा सुखी और लालची सदा दुःखी रहता है।
२५६४. वस्तु के अभाव से दुःख नहीं होता, प्रत्युत वस्तु मिल जाए–इस इच्छा से दुःख होता है।
२५६५. सुनना चाहते हैं इसीलिए न सुनने का दुःख होता है। देखना चाहते हैं इसीलिए न दिखने का दुःख होता है। बल चाहते हैं इसीलिए निर्बलता का दुःख होता है। जवानी चाहते हैं इसीलिए वृद्धावस्था का दुःख होता है। तात्पर्य है कि वस्तु के अभाव में दुःख नहीं होता, वस्तु की चाहत से, उसके अभाव का अनुभव करने से दुःख होता है।
२५६६. लोग व्यक्ति विशेष के आदर में भी धर्म का ही आदर करते हैं। यदि कोई व्यक्ति माने कि मेरा आदर है तो वही ठगाया गया, पतित हुआ, दुःखी हुआ, दुःखों का बीज बो चुका, लोगों की कोई हानि नहीं हुई, उन्होंने शुभोपयोग का लाभ ही उठाया है, घात तो उसी का हुआ जिसने भ्रम किया।
२५६७. आज के युग में उपहार देने में स्वार्थ ज्यादा परमार्थ कम नजर आता है।
२५६८. अजीब चाहत होती है इंसान की जो प्राप्त है उसका आनंद नहीं उठाता क्योंकि इंतजार है थोड़ा और प्राप्त हो जाए और यह थोड़ा कभी खत्म ही नहीं होता है।
२५६९. इस जगत् के पथ में विविध प्रलोभन के गर्त हैं उनसे बचकर रहो अन्यथा सांसारिक यातनाओं के सहने में ही समय बिताना होगा।
२५७०. दीन वह है जो सांसारिक सुख का लोभी है।
२५७१. बाह्य पदार्थ तो छूटा ही है लोभ कषाय छोड़ना है।
२५७२. बाह्य परिकर (भोग-उपभोग की सामग्री एवं नौकर चाकर) से भी शान्ति नहीं मिलती है इसके उदाहरण देखने हो तो सम्राट्, मन्त्री, श्रीमन्तों के समीप जाकर देखो।
२५७३. सम्पत्तिशाली व लोकमान्य तिलक बनने में शान्ति नहीं मिलेगी।

२५७४. तीनों लोकों में जो दोष हैं वे लोभ से उत्पन्न हुए हैं व गुण लोभ के त्याग से प्राप्त हुए हैं।

२५७५. धन से धर्म और काम पुरुषार्थ करना चाहिए परन्तु स्त्रियाँ धर्म और काम से धन खरीदती हैं अतः उनकी इस बढ़ी हुई लोलुपता को धिक्कार है।

२५७६. इस जीव ने स्वाद के चक्कर में पूरा जीवन स्वाहा कर दिया है।

२५७७. लोभ से ही क्रोध उत्पन्न होता है, लोभ से ही काम की प्रवृत्ति होती है और लोभ से माया, मोह, अभिमान, उद्दण्डता तथा पराधीनता आदि दोष प्रकट होते हैं।

२५७८. जिस व्यक्ति में लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की क्या आवश्यकता है?

२५७९. यदि लोभ को हटाना चाहते हो तो तुम्हें पहले उसकी माँ विलासिता को हटाना होगा।

२५८०. जो किसी बात की लालसा नहीं रखता, उसको कोई दुःख नहीं होता परन्तु जो वस्तुओं के लिए मारा-मारा फिरता है, उस पर निरन्तर आपत्तियाँ आती रहती हैं।

२५८१. जुआ मत खेलो, भले ही उसमें जीत क्यों न होती हो; क्योंकि तुम्हारी जीत उस काँटे के मांस के समान है, जिसे मछली निगल जाती है।

२५८२. मनुष्य को जितना अधम जुआ बनाता है उतना और कोई नहीं क्योंकि इससे उसकी कीर्ति, विद्वत्ता और सम्पत्ति; ये सब उसका साथ छोड़ देते हैं, उसका हृदय कुकर्म करने की प्रेरणा पाता है यहाँ तक कि खाने और कपड़े तक के लिए भीख माँगनी पड़ती है।

३२. कंजूस

२५८३. कंजूस का गढ़ा हुआ धन जमीन से तभी बाहर निकलता है जब वह स्वयं जमीन में गढ़ जाता है।

२५८४. कंजूस व्यक्ति के पास पूरी दुनिया की दौलत हो तब भी वह किस काम की है?

२५८५. कृपणता मनुष्य के मन व संकल्प को मलिन कर देती है।

२५८६. जिस तरह दानशीलता मनुष्य के दुर्गुणों को छिपा लेती है, उसी तरह कृपणता उसके सद्गुणों पर पर्दा डाल देती है।

२५८७. कंजूस आदमी के दुश्मन सब होते हैं, दोस्त कोई नहीं होता, हर व्यक्ति को उससे नफरत होती है।

२५८८. कृपण मनुष्य को उस वस्तु का वैसा ही अभाव है जो उसके पास है जैसा उस वस्तु का जो उसके पास नहीं है।

२५८९. दुःखी की तरह जीवन बिताना ताकि धनी रूप में मर सके यह निरा पागलपन है।

२५९०. कृपण व्यक्ति स्वयं को निर्धन दिखाते रहने से धनी हो जाता है और फिजूल खर्च मनुष्य स्वयं को धनी दिखाते रहने से निर्धन हो जाता है।

२५९१. मैंने कुछ ऐसे भी गरीब देखे हैं जिनके पास पैसे के सिवा कुछ भी नहीं है।
२५९२. कंजूस की दुनिया धन की रखवाली में बसी होती है।
२५९३. कंजूस अर्थात् कम-जूस जिसमें होता है, वह कंजूस है।
२५९४. कंजूस का उद्देश्य–रिश्ता भाई भाई का, हिसाब पाई पाई का।
२५९५. कंजूस परमात्मा से नहीं, पैसे से प्यार करता है।
२५९६. कंजूस दान कोड़ियों का करता है, संग्रह करोड़ो का करता है।
२५९७. कंजूस को राम से नहीं, दाम से प्रयोजन है क्योंकि उसने सुन रखा है–
दाम करे सब काम, ये सोचे आठों याम।
२५९८. कंजूस धन का रक्षक होता है उसका जीवन गाय चराने वाले चरवाहा की तरह होता है, जो दिन भर गाय चराता है रात भर मच्छर उड़ाता है।
२५९९. कंजूस व्यक्ति प्याले का आकार देखता है, रसिक व्यक्ति प्याले का पदार्थ देखता है।

३३. दारिद्र्य विजयी-लक्ष्मी

२६००. सूर्योदय के पहले सभी को सोकर उठ जाना चाहिए यदि पति न भी उठ पाये तो पत्नि को तो उठ ही जाना चाहिए क्योंकि यदि गृहलक्ष्मी सूर्योदय के बाद तक सोती रहती है तो उसके यहाँ की धनलक्ष्मी भाग जाती है।
२६०१. जो दुःख से पीड़ित, प्रमादी, नास्तिक, आलसी, अजितेन्द्रिय और उत्साह रहित है, उनके यहाँ लक्ष्मी का वास नहीं होता है।
२६०२. ऐश्वर्य पाप का बीज है, दरिद्रता पाप का फल है।
२६०३. परमेश्वर पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को ऐसा कोई व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे किसी को असुविधा हो।
२६०४. आर्थिक पराधीनता ही संसार में दुःख का कारण है, मनुष्य को उससे मुक्ति पानी चाहिए।
२६०५. नंगे (भिखारी) के पास कुछ भी न हो लेकिन मूर्च्छा (ममत्व) हो तो परिग्रह है ऐसा समझना चाहिए।
२६०६. यदि नदी में नहाते हो तो सैंकड़ों टन पानी सिर पर होने पर भी वजन मालूम नहीं होता किन्तु जब उस पानी को घड़े में भरकर सिर पर रखते हो तो पानी भार लगता है, कारण पानी को अपना मान लिया, ठीक उसी प्रकार संसार में, परिवार में, पदार्थों में रहना परिग्रह नहीं है किन्तु उन्हें अपना मानना परिग्रह है।
२६०७. अधिक मिलने पर भी संग्रह न करें, परिग्रह वृत्ति से अपने को दूर रखें।
२६०८. दुनिया में सबसे बड़ा ग्रह परिग्रह है, जिसके पास परिग्रह है उसे ही नवग्रह परेशान करते हैं। आश्चर्य है, लोग जीने के लिए धन कमाते हैं और धन की सेवा करते-करते मर जाते हैं। भोजन को पचाना आसान है, पर दूसरों के धन को पचाना आसान नहीं है।

२६०९. जिसके पास धन है वह धन्य नहीं बल्कि जिसके पास धर्म रूपी धन है वही व्यक्ति जगत् में धन्य है।

२६१०. दूसरे का धन तुम्हारा हो सकता है किन्तु दूसरे का धर्म कदापि तुम्हारा नहीं हो सकता है। पैसे कमायें मगर कमाते वक्त यह भी सोचें कि हमारा लक्ष्य क्या है?

२६११. पैसे से भले ही खुशियाँ न खरीदी जा सकें, लेकिन तकलीफें जरूर कम की जा सकती हैं।

२६१२. जिसकी जेब में पैसा नहीं, उसकी जुबान में अच्छे शब्द होना चाहिए।

२६१३. रुपया छठी इन्द्रिय है, बिना इसके अन्य पाँच इन्द्रियों का पूरा उपयोग नहीं हो सकता है।

२६१४. पैसा बहुत जरूरी है, लेकिन इतना जरूरी भी नहीं कि उसे पाने के लिए कुछ भी किया जाए।

२६१५. धन यदि अच्छे मार्ग से आता है तो वह अच्छे कार्यों में ही खर्च होगा और यदि अन्यायपूर्वक कमाया गया होगा तो उसके व्यय के रास्ते भी पाप के ही होंगे।

२६१६. वृद्ध पुरुषों में भी जिनके पास धन है, वे तरुण हैं और जो धनहीन हैं, वे युवावस्था में ही वृद्ध हो जाते हैं।

२६१७. पैसे से भोजन खरीदा जा सकता है, लेकिन भूख नहीं, पैसे से हँसी खरीदी जा सकती है मगर खुशी नहीं, पैसे से बिस्तर मिल सकते हैं नींद नहीं, किताबें मिल सकती है मगर ज्ञान नहीं, घड़ी मिल सकती है मगर समय नहीं, साथी मिल सकता है मगर दोस्त नहीं, चमक-दमक मिल सकती है मगर खूबसूरती नहीं, मकान मिल सकता है मगर घर नहीं, दवा मिल सकती है मगर सेहत नहीं, अँगूठी मिल सकती है मगर जीवन साथी नहीं, इसलिए पैसों को ज्यादा महत्त्व न दें, उसका अहंकार न करें, पर स्वाध्याय से आप जो चाहे वह सब मिल सकता है।

२६१८. जिस व्यक्ति को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है।

२६१९. समय और धन की बचत जीवन के कठिन समय को बर्दाश्त करने की वह कुंजी है जिससे बहुत सी मुश्किलें आसान हो जाती हैं।

२६२०. मनुष्य जो कमाता है वो नहीं, बल्कि जो बचाता है वह उसे धनी बनाता है।

२६२१. इस दुनिया में परमात्मा सभी को नब्बे रुपये देकर भेजता है किन्तु लोग पूरे सौ करने के चक्कर में नब्बे का सुख नहीं भोग पाते, लेकिन हाँ, जो दस कम है उसका दुःख जरुर भोगते हैं और सौ कभी होते नहीं हैं, किसी के इंक्यानवे, बानवे, तेरानवे हो जाते हैं तो किसी के चौरानवे, पंचानवे, छयानवे हो जाते हैं और किसी-किसी के तो निन्यानवे तक हो जाते हैं किन्तु सौ किसी के भी नहीं हो पाते और वे सब यहीं छोड़कर चले जाते हैं।

२६२२. दुनिया में वे लोग अभागे नहीं जिनके पास दुकान-मकान, कार-बंगला, धन-दौलत,

पुत्र-सम्पदा नहीं, बल्कि सच्चे अभागे तो वे हैं जिनके पास प्रभु भक्ति के लिए और सत्संग के लिए समय नहीं है अर्थात् जिनके ऊपर प्रभु की छत्रछाया व गुरु की कृपा नहीं है।

२६२३. कर्जे में डूबा कोई भी व्यक्ति मानसिक शान्ति का दावा नहीं कर सकता है। आप एक बार कर्ज लेंगे, परन्तु कर्ज बार-बार आपकी चेतना पर हावी हो जाएगा और आप महसूस करेंगे कि आप अपने ही मालिक नहीं रहे हैं।

२६२४. जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य संन्यास है।

२६२५. लक्ष्मी के पाते ही मनुष्य कठोर हो जाता है।

२६२६. संसार में रत्नत्रय से बढ़ा कोई वैभव नहीं है, अतः उसकी रक्षा करनी चाहिए मनुष्य वस्त्रों के बिना शोभित हो सकता परन्तु लज्जा व धैर्य के बिना नहीं।

२६२७. धन-धान्य के प्रयोग में, विद्या के ग्रहण करने में, आहार और व्यवहार में जो लज्जा का त्याग कर देता है वह सुखी होता है।

२६२८. जो मैला वस्त्र रखने वाला, दाँतों का मैल साफ न करने वाला, अधिक भोजन करने वाला, कटुवादी, सूर्य उदय तक सोने वाला है उसे लक्ष्मी छोड़ देती है चाहे वह भगवान् ही क्यों न हो?

२६२९. भवितव्यता जिस पदार्थ को नहीं चाहती, उसे तुम अत्यन्त चेष्टा करने पर भी नहीं रख सकते और जो वस्तुएँ तुम्हारी हैं, तुम्हारे भाग्य में हैं, उन्हें तुम इधर उधर फेंक भी दो, फिर भी वे तुम्हारे पास से नहीं जावेंगी।

३४. मित्रता

२६३०. मित्रता का सम्बन्ध आँख और हाथ के रिश्ते जैसा है, हाथ को चोट लगती है तो आँख आँसू बहाती है और आँख रोती है तो हाथ आँसू, पोंछते हैं।

२६३१. दूर से ही आगे बढ़कर मिलना, हृदय के अनुकूल स्पष्ट अर्थ वाली वाणी और सत्कारपूर्वक कुछ देना-इन तीन बातों से मित्र बनते हैं।

२६३२. मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला यदि जगत् में कोई असली चुम्बक है तो वह केवल प्रेम है।

२६३३. किसी को अपना दुश्मन मत बनाइये, नहीं तो उसके बीस रिश्तेदार भी आपके दुश्मन बन जाएँगे।

२६३४. जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते हैं।

२६३५. जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका पराग।

२६३६. जीवन के फूल प्रेम की धूप का स्पर्श पाकर ही खिलते हैं।

२६३७. यदि आप लोगों का दिल जीतना चाहते हैं तो उनसे उत्साह से मिलें।

२६३८. दोषी को दोषी मत समझो अन्यथा सद्भावना का नाश हो जायेगा।

२६३९. दोस्ती खुशी को दुगना करके और दुःख को बाँटकर प्रसन्नता बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है।

२६४०. द्वेष बुद्धि को हम द्वेष से नहीं मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।

२६४१. वह मित्र निन्द्य है जो अपने मित्र के धन धान्य और कलत्र (स्त्री) की रक्षा करने में विश्वास घात करता है।

२६४२. पड़ोसी से दोस्ती रखें, रिश्तेदारी नहीं।

२६४३. प्रशंसा वह हथियार है जिससे शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है।

२६४४. तप, दान, व्रत, शील, संयम आदि के धारण करने की ओर जो प्रेरित करे वही तीनों लोकों में परम मित्र है और जो इन कार्यों में विघ्न करता है तथा हिंसा, असंयम और प्रमाद आदि को प्रेरित करता वह परम शत्रु है।

२६४५. मूर्ख छोटा सा काम करते हैं और उसी में बेचैन हो जाते हैं, बुद्धिमान बड़े से बड़ा कार्य आरम्भ करते हैं और निश्चिंत बने रहते हैं।

२६४६. मित्र को भूलना आसान है किन्तु शत्रु को भूलना कठिन है।

२६४७. सच्चे मित्र के सामने दुःख आधा और हर्ष दोगुना प्रतीत होता है।

२६४८. मित्र उन्हें बनाओ जो उम्र, धन, धर्म, विचार और व्यवहार में समान हों।

२६४९. सबके साथ हिल-मिलकर रहिए, पता नहीं इस दुनिया में कब, कौन, किसके काम आ जाए।

२६५०. मित्रों को पारितोषिक देने से भी अच्छा, शीघ्रता के साथ बैरियों को शांत कर लेना चाहिए।

२६५१. मित्र वही है, जो आपत्ति ग्रस्त की सहायता करता है और बंधु वह है जो पथ भ्रष्ट की सहायता करता है।

२६५२. आलसी, बकवादी, अहंकारी, लोभी, व्यसनी, मूर्ख एवं असन्तोषी से मित्रता न करें।

२६५३. उत्सव में, कष्ट आने पर, अकाल में, शत्रु संकट में, राज्यद्वार पर और श्मशान तक जो साथ देता है वहीं बंधु है।

२६५४. मित्र के तीन लक्षण हैं—अहित से हटाना, हित में लगाना और मुसीबत में साथ न छोड़ना।

२६५५. सच्चा मित्र वह है जो दर्पण के समान तुम्हारे दोषों को तुम्हें दर्शाए। जो तुम्हारे दोषों को गुण बताए वह तो चापलूस है।

२६५६. मित्रों के बिना कोई भी जीना पसंद नहीं करेगा, चाहे उसके पास शेष सब अच्छी वस्तुएँ क्यों न हों।

२६५७. दोस्ती न करो तो चलेगा लेकिन दुश्मनी भूलकर भी न करना।
२६५८. मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र उसका विवेक और सत् (अच्छे) कार्य है।
२६५९. मित्रों की संख्या नहीं गुणवत्ता देखो।
२६६०. बुरे मित्रों से बचना ठीक है किन्तु अच्छे मित्रों के संग रहना उससे अच्छा है।
२६६१. बनाना ही है तो पुल बनाइए, दीवारें खड़ी करेंगे तो अकेले ही रह जायेंगे।
२६६२. अगर आप किसी व्यक्ति की उसके सबसे खराब दिनों में मदद करेंगे तो वह जीवन भर के लिए आपका मित्र बन जाएगा।
२६६३. मित्रों को एकान्त में ही बुरा कहो, सबके सामने उनकी प्रशंसा करो।
२६६४. आपका अपना व्यवहार ही शत्रु-मित्र बनाने का उत्तरदायी है।
२६६५. मित्र सैकड़ों भी कम हैं और शत्रु एक भी अधिक है।
२६६६. विदेश में विद्या और घर में पत्नी मित्र होती है रोगी का मित्र औषधि और मृतक का पर लोक में मित्र धर्म ही है।
२६६७. मिलने पर मित्र का सम्मान करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो और आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करो।
२६६८. यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो तो मित्र से बहस न करो, उससे उधार लेना-देना व उसकी स्त्री से बात करना छोड़ दो।
२६६९. जो मित्रता में से आदर निकाल देता है, वह मित्रता का सबसे बड़ा आभूषण उतार देता है।
२६७०. विवेकी मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है।
२६७१. मित्र पाने का एक ही मार्ग है—स्वयं किसी का मित्र बन जाना।
२६७२. दोस्त बनाने का 'रॉ' मटीरियल है मुस्कान, बिना कुछ खर्च किए केवल प्रसन्नता देकर आप ढेर सारे दोस्त पा लेते हैं जो आपकी जीत के लिए आपको प्रोत्साहन रूपी रसायन देते हैं।
२६७३. स्वाभाविक मित्र भाग्य से ही मिलता है इसलिए सच्चे मित्र को कभी नहीं खोना चाहिए, सच्चा मित्र सबसे बड़ा जीवन रक्षक है।
२६७४. जिसके दुर्व्यवहार से मन फट गया हो, उसके साथ मैत्री नहीं करनी चाहिए।
२६७५. सच्ची मित्रता का अर्थ प्रेम व्यवहार नहीं, अपितु आपसी हितैषी भाव हैं।
२६७६. मूर्ख, दुर्जन, चण्डाल और पतित पुरुषों के साथ मैत्री न करें।
२६७७. जीवन में मित्रता से बढ़कर कोई बहुमूल्य वस्तु संचित करने योग्य नहीं है।
२६७८. यदि संसार बन्धन से मुक्त होना हो तो प्राप्त वस्तुओं में ममता का और अप्राप्त वस्तुओं की कामना का त्याग कर दो।

२६७९. विपत्ति के समय विलाप करने से दुःख कम नहीं होता बल्कि बढ़ता ही है।

२६८०. जो कहना न माने, वह अपना कैसा? और जो सच हो जाए, वह सपना कैसा ?

२६८१. धन हो या न हो किन्तु अच्छे मित्र सदा होना चाहिए।

२६८२. शैक्ष्य काल और बाल्यकाल में माता-पिता, दीक्षा में गुरु, पर लोक में धर्म काम आता है किन्तु मित्र सदा सहायक होते हैं।

२६८३. सूर्य कहाँ और कमल कहाँ, मेघ कहाँ और प्रमुदित मयूर कहाँ, चन्द्रमा कहाँ और समुद्र वृद्धि कहाँ? ठीक है दूरी के कारण सत्पुरुषों की मित्रता टूटती नहीं है।

२६८४. संसार में कोई किसी का शत्रु-मित्र नहीं, जीव के अशुभ भाव शत्रु और शुभ भाव मित्र हैं।

२६८५. मधुर वाणी और मधुर व्यवहार से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

२६८६. रिश्ता दिल से होना चाहिए शब्दों से नहीं और नाराजगी शब्दों में होना चाहिए, दिल में नहीं।

२६८७. खुश नसीब वो नहीं जिसका नसीब अच्छा है, खुश नसीब वो हैं जो अपने नसीब से खुश हैं।

२६८८. वर्तमान की परिणति से भविष्य की गति बनती है।

२६८९. घर वह है जहाँ माँ है। आगन्तुक का मुस्कुराकर स्वागत करें।

२६९०. तुम दुनिया में सबसे जीत सकते हो सिवाय उस इंसान के जो आपकी खुशी के लिए जानबूझकर हार जाता है।

२६९१. जब दोस्त प्रगति करे तो गर्व से कहना वो मेरा दोस्त है और जब दोस्त मुसीबत में हो तब कहना मैं उसका दोस्त हूँ।

२६९२. दीपक मिट्टी का है या सोने का यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वह रोशनी कितनी दे रहा है यह महत्त्वपूर्ण है, इसी तरह दोस्त अमीर है या गरीब यह महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि मुसीबत में वह हमारे साथ रहा या नहीं ये महत्त्वपूर्ण है।

२६९३. स्वार्थ दोस्त को दुश्मन बना देता है, दोस्ती समर्पण व त्याग माँगती है।

२६९४. राजा, ब्राह्मण, वैद्य, मूर्ख, मित्र, गुरु और प्रियजनों के साथ कभी विवाद नहीं करना चाहिए। लोग इहलोक-परलोक में मित्र को कभी दुःखी नहीं देखना चाहते हैं।

२६९५. जो बात माता-पिता, गुरु अथवा भाई से नहीं कही जा सकती वह गुप्त बात मित्र से कही जा सकती है।

२६९६. पवित्रता, त्यागशीलता, शूरवीरता, सुख-दुःख में समानता, सरलता, अनुराग और सत्य व्यवहार ये मित्र के गुण हैं।

२६९७. मत भिन्नताएँ अनेक हो सकती हैं, पर मन भिन्नताएँ नहीं होना चाहिए।

२६९८. सारे साथी काम के सबका अपना मोल।
जो संकट में साथ दे वो सबसे अनमोल॥

२६९९. शत्रु की दुर्बलता जानने तक उसे मित्र बनाये रखना चाहिए।

२७००. दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं–पहले जो मौका आने पर साथ छोड़ देते हैं? दूसरे वो जो साथ देने के लिए मौका ढूढ़ते हैं।

२७०१. प्यार से विष भी पिला सकते हैं, लेकिन बल पूर्वक दूध पिलाना भी मुश्किल है।

२७०२. शुद्ध कमाई का धन और सत्य शिक्षक मित्र संसार में दुर्लभ हैं।

२७०३. जिसका कोई साथी होता है, वह बलवान होता है।

२७०४. मित्र दुःख में हो या सुख में वह अपने मित्र की सदा सहायता करता है।

२७०५. साथ में यात्रा करने वाला साथी ही प्रवासी के मित्र हैं, पत्नी गृह-वासी का मित्र है, वैद्य रोगी का मित्र है और दान मरते हुए मनुष्य का मित्र है।

२७०६. विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य ये मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं।

२७०७. शोक और भय से रक्षा करने वाला तथा प्रीति और विश्वास का पात्र ऐसे दो अक्षर वाले मित्र रूपी रत्न को किसने बनाया है?

२७०८. सन्तों ने कहा है कि अच्छे मित्र का यही लक्षण है कि वह पाप से रोकता है, हितकारी कार्यों में लगाता है, उसकी गुप्त बात अन्य से छिपाता है, उसके गुणों को प्रकट करता है, विपत्ति काल में उसका साथ नहीं छोड़ता और समय आने पर धन देता है। उसी प्रकार मित्र को प्रिय व्यवहार करना चाहिए, जिस प्रकार हाथ शरीर का हित करते हैं, पलकें आँखों को प्रिय लगे वैसा करती हैं।

२७०९. मित्र के शत्रु बन जाने पर भी पहले कही गयी बातों को तथा उसके दोषों को जानकर भी कहीं भी कभी भी प्रकट नहीं करना चाहिए।

२७१०. वे ही वंदनीय हैं, वे ही पुण्यात्मा हैं और उन्हीं का इस संसार में जन्म लेना प्रशंसनीय है जो अपना काम छोड़कर अपने मित्रों का कार्य सिद्ध करते हैं।

२७११. विवाद करना, लेन-देन करना, माँगना, मित्र के घर की स्त्रियों से मिलना-जुलना, हर काम में स्वयं आगे रहना; इन सबसे मित्रता टूट जाती है।

२७१२. सत्पुरुष से जो मित्रता होती है, उस मित्रता से बढ़कर श्रेष्ठ कुछ नहीं है।

२७१३. कुलीन व्यक्तियों के साथ संपर्क, विद्वानों के साथ मित्रता और जाति-बंधुओं के साथ मेल करने वाला मनुष्य नष्ट नहीं होता है।

२७१४. प्रेम की शक्ति दंड की शक्ति से हजार गुनी प्रभावशाली और स्थायी होती है।

२७१५. किसी के साथ अत्यन्त प्रेम न करो और प्रेम का सर्वथा अभाव भी न होने दो क्योंकि ये दोनों ही महान् दोष हैं, अतः मध्यम स्थिति पर ही दृष्टि करो।

२७१६. घृणा लड़ाई-झगड़ों को जन्म देती है, पर प्रेम सब अपराधों को क्षमा कर देता है।

२७१७. जो प्रेम से नहीं सुधर सकता वह कभी नहीं सुधर सकता।

२७१८. प्रेम और वासना में उतना ही अंतर है, जितना कंचन और काँच में।

२७१९. प्रेम कभी दावा नहीं करता वह सदा देता है, प्रेम तकलीफ उठाता है, न क्रोध करता है, न बदला लेता है।

२७२०. जो व्यक्ति अकेले में तुम्हें तुम्हारा दोष बताए, उसे अपना मित्र समझो।

२७२१. तुम जिन कठिनाइयों में फँसे हुए हो, उनको जो लोग दूर कर सकते हैं और आने वाली बुराइयों से जो लोग तुम्हें बचा सकते हैं, तुम उत्साहपूर्वक उनके साथ मित्रता करने की चेष्टा करो। जिस आदमी को ऐसे लोगों की मित्रता का गौरव प्राप्त है जो उसे डाँट फटकार सकते हैं तो उसे हानि पहुँचाने वाला कौन है?

२७२२. बहुत से लोगों को शत्रु बना लेना मूर्खता है किन्तु सज्जन पुरुषों की मित्रता को छोड़ना उससे भी कहीं अधिक मूर्खता है।

२७२३. जगत् में ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसको प्राप्त करना इतना कठिन है जितना कि मित्रता को और शत्रुओं से रक्षा करने के लिए मित्रता के समान अन्य कौन-सा कवच है?

२७२४. मित्रता का उद्देश्य हँसी-विनोद करना नहीं है, बल्कि जब कोई बहक कर कुमार्ग में जाने लगे तो उसे रोकना और उसकी भर्त्सना करना ही मित्रता का लक्ष्य है।

२७२५. उस आदमी का हाथ देखो जिसके कपड़े हवा में उड़ गये हैं, कितनी तेजी के साथ फिर से अपने अंग को ढकने के लिए फुर्ती करता है? यही सच्चे मित्र का आदर्श है, जो विपत्ति में पड़े हुए मित्र की सहायता के लिए दौड़कर आता है।

२७२६. जिस मित्रता में हिसाब लगाया जाता है, उसमें एक प्रकार का कंगलापन होता है, वह चाहे कितने ही गर्वपूर्वक कहें कि ''मैं उसको इतना प्यार करता हूँ और वह मुझे इतना चाहता है।''

२७२७. जिस मनुष्य को तुम अपना मित्र बनाना चाहते हो, उसके कुल का उसके गुण-दोषों का, कौन-कौन लोग उसके साथी हैं और किन-किनके साथ उसका सम्बन्ध है, इन बातों का अच्छी तरह से विचार कर लो और इसके पश्चात् यदि वह योग्य है तो मित्र बना लो।

२७२८. आपत्ति में एक गुण है, वह एक मापदण्ड है, जिससे तुम अपने मित्रों को नाप सकते हो।

२७२९. निःसन्देह मनुष्य की बुद्धिमानी इसी में है कि मूर्खों से मित्रता न करें।

२७३०. जो लोग संकट के समय धोखा दे सकते हैं, उनकी मित्रता की स्मृति मृत्यु के समय भी हृदय में दाह पैदा करती है।

२७३१. पवित्र लोगों के साथ बड़े चाव से मित्रता करो; लेकिन जो अयोग्य हैं उनका साथ छोड़ दो, इसके लिए चाहे तुम्हें कुछ भेंट भी देना पड़े।

२७३२. वही मैत्री घनिष्ठ है, जिसमें अपने प्रीति–पात्र की इच्छा के अनुकूल व्यक्ति अपने को समर्पित कर दे।

२७३३. सच्ची मित्रता वही है, जिसमें मित्र आपस में स्वतंत्र रहें और एक–दूसरे पर दबाव न डालें। विज्ञजन ऐसी मित्रता का कभी भी विरोध नहीं करते हैं।

२७३४. जो व्यक्ति यह सोचते हैं कि हमें उस मित्र से कितना मिलेगा, वे उस श्रेणी के लोग हैं, जिन की चोरों और बाजारू औरतों में गिनती होती है।

२७३५. जिस समय तुम कोई ऐसा काम करने में लगे हो, जिसे तुम पूरा कर सकते हो; उस समय यदि कोई तुम्हारे मार्ग में रोड़े अटकाता है तो उससे तुम एक शब्द भी न कहो, बल्कि धीरे–धीरे उससे सम्बन्ध छोड़ दो।

२७३६. मित्र सिर्फ साथी ही नहीं सारथी भी होता है।

३५. मौन रखता कौन

२७३७. मौन प्रार्थनाएँ परमात्मा तक जल्दी पहुँचती हैं क्योंकि वह मुक्त होती हैं, शब्दों के बोझ से।

२७३८. मधुर बोलना कला है मौन रहना महाकला है।

२७३९. आदमी बोलकर ज्यादा फँसता है।

२७४०. मौन आगमन सम्बन्धी विघ्नों को हरने वाला है, मित्रता को करने वाला है, रत्नत्रय का सम्मान करने वाला है, समय पर अज्ञान हरने वाला है।

२७४१. राजा, अधिक विद्वान्, अधिक तपस्वी, बहु संख्या में उपस्थित मूर्ख, शत्रु तथा गुरुओं को उत्तर नहीं देना चाहिए, उनकी भर्त्सना को चुपचाप सुन लेना चाहिए।

२७४२. मौन बुद्धिमान और मित्र बनाता है।

२७४३. मौन आत्मशक्ति के विकास का अच्छा निमित्त है, दूसरों से बोलने में समय बिताने से मुझ एकाकी को क्या मिलेगा?

२७४४. मनुष्य जितना बोलकर अपना काम बिगाड़ता है उतना मौन से कभी नहीं।

२७४५. मौन के वृक्ष पर शान्ति के फल लगते हैं।

२७४६. क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक होता है, उतनी अन्य कोई भी वस्तु नहीं।

२७४७. वाणी का वर्चस्व चाँदी है किन्तु मौन सोना है।

२७४८. ज्ञानियों की सभा में मौन अज्ञानियों का आभूषण है।

२७४९. जो सही जीवन जीता है और सही है; उसके मौन में दूसरे के शब्दों से अधिक शक्ति होती है।

२७५०. मौन समस्त विवादों को समाप्त कर देता है।

२७५१. मौन रहने वाला ही मौज में रह पाता है।
२७५२. यदि आप चुप रहेंगे तो आपको पछताना नहीं पड़ेगा।
२७५३. मौन के द्वारा इन्द्रियों पर नियंत्रण आसान हो जाता है।
२७५४. व्यक्ति भाषा के द्वारा दूसरों से और मौन के माध्यम से स्वयं से संपर्क स्थापित करता है।
२७५५. हमारे पवित्रतम विचारों का मंदिर मौन है।
२७५६. शब्द दूसरों से जोड़ते हैं और मौन स्वयं से जोड़ता है।
२७५७. शब्द संवाद-विसंवाद उत्पन्न करते हैं किन्तु मौन स्वयं का स्वाद उत्पन्न करता है।
२७५८. शब्द हीरे-मोती से भी ज्यादा अमूल्य हैं, आवश्यकता पड़ने पर ही बोलें अन्यथा मौन रहें।
२७५९. मौन रहने से सत्य मृत नहीं हो जाता है।
२७६०. जब तुम्हें कषाय की तीव्रता हो, तब तुम मौन ले लो क्योंकि उस समय निकले वचन दूसरों के अहित और क्लेश करने वाले होंगे जिससे तुम्हें पछताना होगा।
२७६१. बोलना आकुलता की जननी है किन्तु मौन परमार्थ का मित्र है।
२७६२. यह तो सुनिश्चित है कि बोलने के काल में बोलने वाला स्वलक्ष्य का श्रद्धानी चाहे बना रहे, परन्तु स्वलक्ष्योपयोगी नहीं रहता अतः अधिक मौन रहो, मौन मुमुक्षु का सर्वोपरि कार्य है।
२७६३. स्वाधीन कार्य है लेखन व स्वाध्याय।
२७६४. अपने राज दूसरों को बताने से आप बर्बाद हो जायेंगे।
२७६५. अनुभव कहता है खामोशियाँ बेहतर हैं क्योंकि लोग शब्दों से रूठते बहुत हैं।
२७६६. मौन रहने से अथवा सत्यवचन बोलने से वचन सिद्धि होती है।
२७६७. जहाँ विचारों का सम्मान न हो और सत्य अप्रिय लगे वहाँ मौन रहना अच्छा है।
२७६८. मौन से वृद्धावस्था में आनंद एवं सम्मान का जीवन बीतता है।
२७६९. मौखर्य के कारण नूपुर पैरों में रखा जाता है और चुप रहने के कारण हार हृदय पर सुशोभित होता है।
२७७०. मौन के फल से इस जन्म में सुखी परभव में नर मोक्ष पाता है नारी पुरुषत्व पाती है। यदि वृद्धों को सुखपूर्वक जीना है अथवा शान्तिपूर्वक मरना है तो मौन रहना चाहिए। मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।
२७७१. तिरस्कार दिखाने का सबसे अच्छा ढंग है-मौन।
२७७२. मौन निद्रा के सदृश है, यह ज्ञान में नई स्फूर्ति पैदा करता है।

३६. देवप्रिय

२७७३. काम करने से पूर्व सोचना बुद्धिमत्ता है, कर्म करते समय सोचना सतर्कता है, काम कर चुकने पर सोचना मूर्खता है।

२७७४. संसार में बुद्धि-बल बहुत बड़ा बल है, जिसमें बुद्धि नहीं उसमें बल नहीं होता है।

२७७५. बुद्धि के बिना मनुष्य अपंग के समान है।

२७७६. बुद्धिमान व्यक्ति मूर्खों से जितनी शिक्षा लेता है, मूर्ख बुद्धिमानों से उतनी शिक्षा नहीं लेता है।

२७७७. दूसरों का बुरा करने वाले का स्वयं बुरा होता है।

२७७८. हर बुराई का अन्त बुरा होता है।

२७७९. संसार में मूर्ख मनुष्य को छोड़कर दूसरा कोई पशु नहीं है।

२७८०. मूर्ख की बुद्धि दूसरे के ज्ञान से ही प्रभावित रहती है।

२७८१. जो यह जानता है कि इस संसार में सुख है, वह महामूर्ख है।

२७८२. मूर्ख का हृदय उसके मुख में रहता है जबकि ज्ञानी की जिह्वा उसके हृदय में होती है।

२७८३. एक ही पत्थर से दो बार टकराना मूर्खता है।

२७८४. अधिक बोलना मूर्खों का गुण होता है।

२७८५. दूसरों में सुख खोजना ही सबसे बड़ी मूर्खता है।

२७८६. यदि आप अच्छे अवसर गँवा देते हैं तो समझना आप महान् मूर्ख हैं।

२७८७. मूर्ख कभी भी प्रिय नहीं बोलता और स्पष्ट वक्ता कभी धूर्त नहीं होता है।

२७८८. वह व्यक्ति संसार का सबसे बड़ा मूर्ख है जो किसी की देह से प्यार करता है।

२७८९. मूर्खों से बहस करके कोई भी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता है मूर्ख पर विजय पाने का एकमात्र उपाय यही है कि उसका अहसास न करें।

२७९०. मूर्ख लोग सुख में हँसते और दुःख में बिलखते हैं, ज्ञानी दोनों दशाओं में समभाव धारण करते हैं।

२७९१. सौ मूर्खों का गुरु बनने कि अपेक्षा एक ज्ञानी का शिष्य बनना श्रेष्ठ होता है।

२७९२. वे मूर्ख हैं जो शठता से धर्म उपार्जन, कपट से मित्र प्राप्ति, दूसरों को पीड़ा पहुँचाकर स्थायी धन संग्रह, आलसी बने रहकर विद्या तथा क्रूर व्यवहार से जो स्त्री को वश में करना चाहते हैं।

२७९३. मूर्ख अपनी गलतियों से भी सबक नहीं लेते हैं, जबकि बुद्धिमान दूसरों की गलतियों से भी सीख ले लेते हैं।

२७९४. मूर्ख से पाला पड़ जाए तो बुद्धिमान मनुष्य को चुप रहना चाहिए।

२७९५. जो न चाहने वालों को चाहता है और चाहने वालों को त्याग देता है तथा जो अपने से बलवान वालों के साथ वैर बांधता है, उसे मूर्ख कहते हैं।
२७९६. विज्ञापन मूर्ख बनाने का सबसे अच्छा और सरल उपाय है।
२७९७. आज के बुद्धिमान व्यक्ति 'श्रद्धा-विश्वास' को मूर्खता की श्रेणी में रखते हैं।
२७९८. भ्रम ही भ्रमण का कारण है।
२७९९. बड़े समूह में मूर्खों की शक्ति को कभी कम नहीं आँकना चाहिए।
२८००. अगर सेवक सुख चाहें, भिखारी मान चाहें, व्यसनी धन की इच्छा करें, व्यभिचारी शुभ गति चाहें, लोभी यश चाहें तो समझो कि ये लोग आकाश से दूध दुहना चाह रहे हैं।
२८०१. नाशवान में अपनापन अशान्ति और बन्धन देने वाला है।
२८०२. लोग साधुओं को छोड़ने पैदल नहीं जाते पर कर्मोदय में या डॉक्टर के कहने पर सब पैदल चलने को मजबूर होते हैं।
२८०३. पैसा कमाने के लिए स्वास्थ्य खोता है और पैसा खोकर स्वास्थ्य प्राप्त करना चाहता है पर खोया स्वास्थ्य प्राप्त नहीं होता है।
२८०४. जो हर पल हर घड़ी किसी न किसी छोटी बात से परेशान रहते हैं और सुन्दर जिन्दगी को शान्ति और आनंद में नहीं जीते हैं वे सिर्फ शिकायत करते हैं।
२८०५. अधिकांश समय हम नकारात्मक भावनाओं से ग्रसित रहते हैं, गुस्सा, चिड़चिड़ाहट, भय, खौफ आदि।
२८०६. संसार में रुचि रखना और सुख चाहना विष खाकर जीने की कल्पना है।
२८०७. पर का विचार करना और सत्य शान्ति पाना खून से वस्त्र धोकर स्वच्छ करने का व्यामोह है।
२८०८. अपनी पर्याय पर भी दृष्टि रखकर निर्विकल्पता के स्वप्न देखना बबूल और नीम के बीज बोकर आम और सेव खाने की प्रतीक्षा करने जैसा है।
२८०९. परिग्रह की मूर्छा रखकर अपनी यात्रा सफल करने का संतोष लाना सर्प आदि जन्तुओं को पालकर सुरक्षित रहने की कल्पना है।
२८१०. पर पदार्थ से अपने को सशरण मानना, अपने को अशरण करना है।
२८११. वाद-विवाद में हठ और गर्मी ये मूर्खता के पक्के प्रमाण हैं।
२८१२. जो आगम को जानकर पाप, दुराचार और दुर्मार्ग का आचरण नहीं करते, वे विद्वान् हैं जो जानकर भी विषयासक्ति नहीं छोड़ते वे मूर्ख हैं।
२८१३. परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है।
२८१४. गरीब मंदिर के बाहर अमीर मंदिर के भीतर भीख माँगता है।
२८१५. कोई मुझे एक बार धोखा दे तो उसे धिक्कार है कोई मुझे दो बार धोखा दे तो मुझे धिक्कार

है क्योंकि मैं सचेत नहीं हुआ।

२८१६. मनुष्य से ये ही भूलें होती हैं कि वह दुनिया को सुधारना चाहता है, पर स्वयं सुधरना नहीं चाहता है।

२८१७. मूर्ख आदमी बिना बुलाए भीतर घुस आता है और बिना पूछे बोलने लगता है, जिस पर विश्वास नहीं करना चाहिए उसका विश्वास करता है।

२८१८. मूर्ख व्यक्ति परस्पर बातचीत करने वाले दूसरे लोगों की भली बुरी बातें सुनकर उनसे बुरी बातों को ही ग्रहण करता है, ठीक वैसे ही जैसे सुअर अन्य अच्छी खाद्य वस्तुओं को छोड़कर विष्ठा को ही अपना भोजन बनाता है।

२८१९. मूर्ख लोग जो कुछ पढ़ते हैं, उससे वे अपना अहित करते हैं और जो कुछ वे लिखते हैं, उससे दूसरों का अहित करते हैं।

२८२०. यदि निर्धनता सभी अपराधों की माता है तो बुद्धि हीनता (मूर्खता) सभी अपराधों का पिता है।

२८२१. विद्वानों का समय काव्य और शास्त्रों के अध्ययन में व्यतीत होता है और मूर्खों का व्यसनों में, निद्रा में तथा लड़ाई-झगड़े में बीतता है।

२८२२. विद्वत्ता, विद्या और विद्वान् की कद्र विद्वान् ही करते हैं, मूर्खों के बीच विद्वान् की दशा वैसी ही होती है जैसे अंधों के बीच किसी सुन्दरी की और नास्तिकों के बीच में धर्म ग्रन्थ की होती है।

२८२३. मूर्ख मनुष्य को सम्मान देना मानों सुअर के आगे मोती डालना है।

२८२४. जो व्यक्ति स्वयं अयोग्य है और अपने पुरखों के पराक्रम और सम्मान पर गर्व करता है, वह उस चोर के समान है, जो बचाव के लिए मंदिर में छिप जाता है।

२८२५. मूर्खों की संगति में रहने वाला मनुष्य चिरकाल तक शोक निमग्न रहता है, मूर्खों की संगति शत्रुओं की तरह सदा ही दुःखदायक होती है और धीर पुरुषों का सहवास अपने बंधु-बांधवों के समागम के समान सुखदाई होता है।

२८२६. अनपढ़ व्यक्ति चाहे जितना बुद्धिमान हो, विज्ञजन उसकी सलाह को कोई महत्त्व नहीं देते हैं। अज्ञानी आदमी स्वयं अपने सिर पर जैसी आपत्तियाँ लाता है, वैसी आपत्ति शत्रु भी नहीं पहुँचा सकते हैं।

२८२७. क्या तुम जानना चाहते हो कि बुद्धि का उथलापन किसे कहते हैं? बस उसी अहंकार को जिससे मनुष्य मन में समझता है कि ''मैं बड़ा सयाना हूँ''।

२८२८. जो मूढ़ अज्ञात विषयों के ज्ञान का दिखावा करता है वह ज्ञात विषयों के प्रति भी सन्देह उत्पन्न कर देता है।

२८२९. मूढ़ आदमी यदि अपने नंगे बदन को ढँकता है, तो इससे क्या लाभ जबकि उसके मन के अवगुण ढँके ही नहीं हैं।

२८३०. जो आदमी न तो स्वयं भला बुरा पहचानता है और न ही दूसरों की सलाह मानता है वह जीवन भर अपने बन्धुओं के लिए दु:खदायी बना रहता है।

२८३१. उज्जड़पन से दूसरों की हँसी उड़ाना ऐसा दुर्गुण है, जिससे सभी व्यक्तियों के भीतर घृणा पैदा होती है।

२८३२. यह तो असीम मूर्खता और अपात्रता है कि मदिरा में अपना धन खर्च करें और बदले में विस्मृति और विभ्रम मोल लेवें तथा धर्म व यश नष्ट करें।

३७. कुटिल नीति पर नहीं, धर्म नीति पर चलें

२८३३. मक्खियाँ घाव चाहती हैं, राजा धन चाहता है, नीच कलह चाहते हैं, पत्नि प्रेम चाहती है, पति काम चाहता है, माता-पिता सेवा चाहते हैं, स्त्रियाँ प्रशंसा चाहती हैं, संतान स्नेह चाहती है, मित्र प्रेम चाहते हैं, श्रावक सम्पत्ति चाहते हैं और साधु शान्ति चाहते हैं।

२८३४. जन्मदाता, दीक्षादाता, विद्यादाता, अन्नदाता और भयत्राता ये पाँच पिता माने गये हैं।

२८३५. राजपत्नी, गुरु पत्नी, मित्र पत्नी, पत्नी की माता और अपनी माता ये पाँच माताएँ मानी गई हैं।

२८३६. प्रत्येक मनुष्य प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर अग्रसर होता है जैसे राग के बाद विराग, लोभ के बाद शौच, संग्रह के बाद त्याग, काम के बाद निष्काम, श्रम के बाद विश्राम, भोग के बाद योग।

२८३७. आदमी अपराध तीन कारणों से करता है–पेट, समाज और संगति के कारण।

२८३८. जरा (बुढ़ापा) रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राण को, क्रोध कान्ति (श्री) को, काम लज्जा को नष्ट कर देता है किन्तु अभिमान अकेला ही सब गुणों को एक साथ नष्ट कर देता है।

२८३९. आप यदि अपनी उन्नति चाहते हो तो कभी चार के कच्चे नहीं होना श्रद्धा, कर्त्तव्य, विचार और कान।

२८४०. आपका पहला गुण सत्यवादी, दूसरा समझदारी, तीसरा खुशमिजाजी और चौथा हाजिर जवाबी हो।

२८४१. जो आमदनी से अधिक खर्च करता है, शक्ति रहित होकर कलह करता है, रोगी होकर सब कुछ खाता है, पुत्र रहित होकर धन संग्रह करता है, खोटी संगति करता है वह मनुष्य शीघ्र नष्ट होता है।

२८४२. स्त्री विषयक आसक्ति, जुआ, शिकार, मद्यपान, वचन की कठोरता, अत्यन्त कठोर दण्ड

देना और धन का दुरुपयोग करना; ये सात दुःखदायी कार्य लोगों को सदा के लिए त्याग देने चाहिए क्योंकि इनसे प्रतापी राजा भी प्रायः नष्ट हो जाते हैं।

२८४३. जो किसी दुर्बल का अपमान नहीं करता, सदा सावधान रहकर शत्रु के साथ बुद्धिपूर्वक व्यवहार करता है, बलवानों के साथ युद्ध पसन्द नहीं करता तथा समय आने पर पराक्रम दिखाता है वही वीर है।

२८४४. जो क्रोध या उतावली के साथ धर्म, अर्थ तथा काम का आरंभ नहीं करता, पूछने पर यथार्थ बात ही बतलाता है, मित्रों के साथ झगड़ा नहीं करता, आदर न पाने पर क्रुद्ध नहीं होता, विवेक नहीं खोता, दूसरों के दोष नहीं देखता, सब पर दया करता है, बढ़ चढ़कर नहीं बोलता, विवाद नहीं करता तथा दुःखों को समता से सह लेता है, ऐसा मनुष्य सब जगह प्रशंसा पाता है।

२८४५. जो मनुष्य शत्रु से मिले हुए मित्र को, कुल्टा स्त्री को, कुल को ध्वस्त करने वाले पुत्र को, मूर्ख मंत्री को, उतावली करने वाले राजा को, प्रमादी वैद्य को, रागी देव को, विषयी गुरु को और दया रहित धर्म को मोह वश नहीं छोड़ता वह कल्याण के द्वारा छोड़ दिया जाता है अर्थात् उसका कल्याण नहीं होता है।

२८४६. प्रेम से बढ़कर दूसरा बन्धन नहीं, विषय से बढ़कर दूसरा विष नहीं, क्रोध से बढ़कर दूसरा शत्रु नहीं, विवेक से बढ़कर दूसरा मित्र नहीं, जन्म से बढ़कर दूसरा दुःख नहीं, सन्तोष से बढ़कर सुख नहीं, लोभ से बढ़कर पाप नहीं, सेवा से बढ़कर पुण्य नहीं और दया-अहिंसा से बढ़कर धर्म नहीं है।

२८४७. लोभी मनुष्य को धन से, अहंकारी को हाथ जोड़कर, मूर्ख को उसके इच्छानुकूल कार्य से, पंडित को भोजन से या यथार्थता से, शूद्र को शक्ति से, क्षत्रिय को सम्मान से, बच्चों को प्रेम-स्नेह से, स्त्री को उसकी प्रशंसा करके वश में करना चाहिए।

२८४८. सत्य से धर्म की रक्षा होती है, योग से विद्या सुरक्षित होती है, सफाई से सुन्दर रूप की रक्षा होती है और सदाचार से कुल की रक्षा होती है।

२८४९. लालची को धन देकर, मूर्ख को उपदेश देकर और विद्वान् को सत्य का ज्ञान कराकर वश में करना चाहिए।

२८५०. मीठे वचन से-मित्रता, विनय से-पात्रता, दान से-यश, अभ्यास से-विद्या, उदारता से-प्रभुता, सदाचार से विश्वास, श्रृंगार से-अनुराग, उद्यम से-लक्ष्मी, न्याय से-राज्य, क्षमा से-तप और लोभ से पाप बढ़ता है।

२८५१. कीचड़ से कंचन उठा लेना सज्जनों की नीति है।

२८५२. 'नेता' मंच, माला, माइक और नोट-वोट-सपोर्ट चाहते हैं परन्तु नैतिकता सेवा चाहती है।

२८५३. पागल हाथी से, क्रुद्ध सर्प से, भूखे सिंह से, मूर्ख नौकर से, व्याभिचारिणी स्त्री से, अहंकारी से, शरारती से, वैरी से, वैद्य से सदा सावधान रहें।

२८५४. धनवान आदमी, कुत्ता, सांड और शराबी इनसे सदा सावधान रहें।

२८५५. बहुत खाने वाले, सब लोगों से वैर रखने वाले, अधिक मायावी, क्रूर, देश काल का ज्ञान न रखने वाले और निन्दित वेष धारण करने वाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दें।

२८५६. मनुष्य को कदापि समुद्र में स्नान नहीं करना चाहिए चाहे समुद्र में तरंगों का उठना युगों-युगों से बंद हो गया हो।

२८५७. सीधे आदेश देने की बजाय प्रश्न पूछिये।

२८५८. जो जितने ऐश-ओ-आराम में जीते हैं, वे उतने ही आलसी और देह प्रेमी होते हैं।

२८५९. आलस्य सबसे अधिक विघ्नकारक है, आलस्य से देह और मन दोनों ही कमजोर होते हैं।

२८६०. असली हीरे के विरोधी, कंकर-पत्थर नहीं, नकली हीरे होते हैं।

२८६१. अकेले कभी किसी पथ पर नहीं चलना चाहिए यदि कोई गंभीर और पराक्रमी न भी हो तो किसी डरपोक या तुच्छ का ही साथ कर लेना चाहिए।

२८६२. भूत को भूलना ही श्रेयस्कर है।

२८६३. दूसरों को गिराकर आगे बढ़ने वाले को आखिर एक दिन गिरना ही पड़ता है।

२८६४. सोने को कसौटी पर कसने से और व्यक्ति के पास में रहने से मालूम पड़ता है कि वह कैसा है?

२८६५. किसी से कुछ पाना हो तो भिखारी बनकर जाओ, सम्राट् बनकर नहीं।

२८६६. शास्त्रों को साधुओं के लिए और मूर्तियों को पुजारियों के लिए सौंप दिया इसलिए मंदिर खाली हो गये हैं।

२८६७. आदमी कान का कच्चा होता है और स्त्री सन्देह की पुतली होती है।

२८६८. प्रेम सबसे कीजिए विश्वास कुछ पर और बुरा किसी का भी मत कीजिए।

२८६९. न्याय में देरी करना, अन्याय को बढ़ावा देना है।

२८७०. जहाँ पर सम्मान नहीं, जीविका नहीं, बंधु नहीं और विद्या का लाभ भी नहीं वहाँ नहीं रहना चाहिए।

२८७१. अपने सुख के दिनों का स्मरण करने से बड़ा दुःख कोई नहीं है।

२८७२. शराब, सैक्स और संगीत मूर्च्छा में ले जाते हैं।

२८७३. विरोध प्रचार की कुँजी है।

२८७४. पीड़ा पाप का परिणाम है।

२८७५. बच्चों को पढ़ा-लिखा कर इतने लायक भी मत बना देना कि कल वह आपको ही नालायक समझने लगे।
२८७६. उत्तम जीवन जीने के लिए नकारात्मक सोचना छोड़ दें।
२८७७. किसी का चहेता बनने के लिए उसके नाम को न भूलें।
२८७८. सभी के लिए अपना नाम सबसे महत्त्वपूर्ण और मधुरतम शब्द होता है।
२८७९. हर साधु उपदेशक हो सकता है, पर हर उपदेशक साधु नहीं हो सकता।
२८८०. एक पुण्य ही महाबन्धु है, एक पाप ही महाशत्रु है, असंतोष ही बड़ा रोग है और धैर्य ही सब प्रयोजन सिद्ध करने वाला है।
२८८१. दूसरों के दोषों पर ध्यान रखने वाला अपने पापों के प्रति अंधा हो जाता है।
२८८२. अतिथि सत्कार से इंकार सबसे बड़ी दरिद्रता है।
२८८३. बहुत अधिकार मिल जाने पर मनुष्य का विचार दूषित हो जाता है।
२८८४. किसी के अस्तित्व को मिटाने का अधिकार किसी को नहीं है।
२८८५. धन से भी बड़ा पाप है अधिकार का लोभ, इसी के कारण मनुष्य स्वयं को खो बैठता है।
२८८६. विपत्ति से बढ़कर अनुभव देने वाला विद्यालय आज तक नहीं खुला है।
२८८७. विनय से पढ़ा हुआ शास्त्र यदि प्रमाद से विस्मृत भी हो जाता है तो वह भवान्तर में नियम से प्राप्त होता है और केवलज्ञान प्राप्त करा देता है।
२८८८. अनुभव सिर्फ ज्ञान नहीं देता, अपितु अनुभव वासनाओं से भी मुक्ति दिला देता है।
२८८९. अनुभव के बिना बोलना विनाश का कारण होता है।
२८९०. अनुभव मनुष्य का सबसे अच्छा अध्यापक होता है, पर मूर्ख लोग इससे कुछ नहीं सीख पाते हैं।
२८९१. अत्यधिक अनुशासन से व्यक्ति विद्रोही बन जाता है।
२८९२. अन्याय में सहयोग करना अन्याय करने के ही समान है।
२८९३. अपराध को दण्ड से नहीं, विवेक से रोको।
२८९४. दूसरों की गलती पर स्वयं को सजा देना और स्वयं की गलती पर दूसरों को सजा देना सबसे बड़ा अपराध है।
२८९५. अभिप्राय समझे बिना बे-मतलब किसी बात पर टीका-टिप्पणी करना वैसा ही है जैसे एक गधा दूसरे गधे की आवाज सुनकर रेंकने लगता है।
२८९६. अच्छाई का अभिमान बुराई की जड़ है।
२८९७. स्वार्थ और अभिमान का त्याग करने से साधुता आती है।
२८९८. अमीर लोगों की सिर्फ सुविधाएँ मत देखें उनके अन्दर की दुविधाएँ समझें, जिन्हें वे

छिपाए बैठे हैं।

२८९९. आँखों से गिरा आँसू और नजरों से गिरा इंसान कभी नहीं उठ सकता है।

२९००. आँसुओं को देखकर कठोर पत्थर हृदय भी पिघल जाता है।

२९०१. अनुशासन हीनता और आचरण हीनता ही देश की गरीबी का सबसे बड़ा कारण है।

२९०२. जैसे व्यवहार की तुम दूसरों से अपेक्षा रखते हो वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के प्रति भी करो। यदि अपनी दुर्दशा से बचना हो तो दुराचरण मत करो।

२९०३. कामयाबी के लिए जरूरी है–जो सलाह आप दूसरों को देते हैं, उस पर पहले खुद अमल करें।

२९०४. विश्व में व्यक्ति को जाति भाई ही तैराते हैं और जाति भाई ही डुबोते भी हैं, जो सदाचारी हैं, वे तैराते हैं और जो दुराचारी हैं, वे डुबो देते हैं।

२९०५. सच्चा बोल (एक दाम) और सच्चा तोल 'व्यापार उन्नति' का मार्ग है।

२९०६. जो जैसा होता है उसे दूसरे भी वैसे ही नजर आते हैं।

२९०७. बिना आत्मविश्वास का आदमी उस बूँद के समान है जो समुद्र से दूर हो चुकी है और जिसका नष्ट होना निश्चित है।

२९०८. आत्मविश्वास के अभाव में परमात्मा भी आपकी मदद नहीं कर सकते हैं।

२९०९. बुरी आदतों से क्षुद्रता का आभास होता है।

२९१०. क्रोधाग्नि, कामाग्नि, जठराग्नि और दावाग्नि को जीतने वाला ही आनंद को प्राप्त करता है। सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति कोमलता के भाव, गुणों में दोष न देखना, क्षमा, धैर्य और मित्रों का अपमान न करना तथा संयमपूर्वक रहना ये सब गुण आयु को बढ़ाने वाले हैं।

२९११. प्रभु का भूषण क्षमा, स्त्री का आभूषण लज्जा, सैनिक का भूषण शौर्य तथा तपस्वियों का आभूषण वैराग्य है।

२९१२. जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के दोषों पर अँगुली उठाता है तो उसे ध्यान रखना चाहिए कि उसकी शेष तीन अँगुलियाँ उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं।

२९१३. इज्जत जब चली जाती है तो लाखों प्रशंसाओं से भी वापस नहीं आती है।

२९१४. ईमानदारी की जड़ें बहुत गहरी होती हैं।

२९१५. घृणा से घृणा को नष्ट नहीं किया जा सकता। घृणा को दूर करने के लिए स्नेह की आवश्यकता है।

२९१६. प्रेम कहता है आगे बढ़ो और प्रतिस्पर्धा कहती है कि मेरे पीछे रहो।

२९१७. घृणा व द्वेष से ग्रसित व्यक्ति दूसरों को सुख नहीं पहुँचा सकता है।

२९१८. ईर्ष्या अपनी हीनता के बोध से जन्म लेती है और वह उस हीनता को दूर नहीं करती, सिर्फ दबाती है। ईर्ष्या रखने वाले मनुष्य को इतना दुःख अपनी असफलता पर नहीं होता

जितना दु:ख दूसरे की सफलता देखकर होता है।

२९१९. जिस आदमी के भीतर घृणा है, उसके लिए सारा जगत् शत्रु हो जाता है और जिस आदमी के भीतर प्रेम होता है, उसके लिए सारा जगत् मित्र हो जाता है।

२९२०. स्त्रियाँ सिर्फ ईर्ष्या से दु:खी होती हैं।

२९२१. टकराव टालिए क्योंकि टकराव ही बिखराव का कारण है।

२९२२. ईर्ष्या की आग को बुझा दीजिए नहीं तो यह आपको जलाकर राख कर देगी।

२९२३. दूसरे के गुण देखना–दोष न ढूँढ़ना उन्नति का मार्ग है।

२९२४. अति क्रोध, कटुवाणी, दरिद्रता, बंधु से वैर, नीच की संगत और अकुलीन की सेवा नरक में रहने वाले के चिह्न हैं।

२९२५. मनुष्य के जीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले, उसके उपकार से भी बढ़कर उसका उपकार कर दे।

२९२६. सबके मन की तो वह तीन लोक के नाथ भी नहीं कर सकते हैं।

२९२७. धर्मात्माओं के उपदेश एक दृढ़ लाठी के समान हैं क्योंकि वह पतन से बचाते हैं।

२९२८. गुण के बिना रूप व्यर्थ, होश न हो तो जोश व्यर्थ, भूख न हो तो भोजन व्यर्थ और सदुपयोग न हो तो धन व्यर्थ ही समझें।

२९२९. उपसर्ग करने वाला नहीं उपसर्ग सहने वाला सदा याद किया जाता है।

२९३०. कर्ज लेना कष्ट लेना है।

२९३१. उधार लेकर खाना उस प्रकार है जैसे घास जलाकर ठंडी दूर करना, किंचित् दु:ख दूर करता है बाद में दु:ख का ही कारण है।

२९३२. कर्ज लेने की आदत गरीबी को निमंत्रण देती है।

२९३३. कर्ज लेने की आदत से बचो, यदि लेना ही पड़े तो समय पर चुकाओ। कर्ज लेना भी भिक्षावृत्ति के समान है।

२९३४. ऋण पत्थर की चट्टान से भी भारी होता है।

२९३५. कर्ज को दोस्ती की कैंची कहते हैं।

२९३६. अपना कार्य इस तरह कीजिए कि वह आपकी पहचान बन जाए।

२९३७. अपने कर्त्तव्य में प्रयत्नशील रहना और चुप रहना बदनामी से बचने का सबसे अच्छा तरीका है।

२९३८. व्यक्ति को अपने घर की दुरावस्था आगन्तुकों के समक्ष प्रकट नहीं करना चाहिए।

२९३९. जो काम घड़ों जल से नहीं होता, उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं।

२९४०. योजना धैर्य से बनाइये और काम पूरी गति से कीजिए।

२९४१. यदि पहली बार में सही काम करेंगे तो सीखेंगे कैसे?

२९४२. चालाकी द्वारा कभी कोई बड़ा काम नहीं होता है।
२९४३. जो छोटे-छोटे कामों के पीछे बहुत ज्यादा पड़े रहते हैं, वे अक्सर बड़े कामों के लिए नाकाबिल बन जाते हैं।
२९४४. हमेशा अपने काम से काम रखें, व्यर्थ के विवाद में न पड़े।
२९४५. आत्मा जिस कार्य से सहमत नहीं, उस कार्य को करने में शीघ्रता मत करो।
२९४६. उसी कार्य को करना ठीक है जिसे करके पछताना न पड़े।
२९४७. जो काम वचन से नहीं हो पाता वह युक्ति से शीघ्र हो जाता है।
२९४८. जिसके भीतर कोई भी इच्छा नहीं होती, उसकी आवश्यकता की पूर्ति प्रकृति स्वतः करती है।
२९४९. जो सदा हमारे साथ नहीं रहेगा और हम सदा जिसके साथ नहीं रहेंगे, उसको प्राप्त करने की इच्छा करना अथवा उससे सुख लेना मूर्खता है, पतन का कारण है।
२९५०. जो दूसरों की आजादी छीनता है, वही वास्तव में कायर है।
२९५१. शुरूआत किसी भी कार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है।
२९५२. क्रोध, पानी और मन सदा नीचे की ओर बहता है।
२९५३ कठोरता एक कमजोर आदमी की झूठी ताकत है।
२९५४. कुदरत ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख सकते और उसे दूसरे ही देख पाते हैं इसलिए दूसरा जो कुछ देखता है, उससे हमें फायदा उठाना चाहिए।
२९५५. लोगों को उनकी गलतियाँ सीधे तरीके से न बतायें।
२९५६. मनुष्य को अपनी गलती निःसंकोच स्वीकार कर लेनी चाहिए।
२९५७. हमारी जिंदगी इतनी लंबी नहीं है कि हम सिर्फ अपनी ही गलतियों से सीखें, अतः बुद्धिमानी इसी में है कि दूसरों की गलतियों से भी सीख लें।
२९५८. देशकाल परिस्थिति के अनुसार चिन्तन को नया स्वरूप देते रहना चाहिए न कि पुरानी प्रशंसाओं में डूबना चाहिए।
२९५९. जो धर्म के पीछे दौड़ता है, धन उसके पीछे दौड़ता है।
२९६०. नैतिक मूल्यों का पतन ही आज की राजनैतिक और सामाजिक अव्यवस्था का मूल कारण है।
२९६१. अन्याय की भूमि पर न्याय की फसल पैदा होना असंभव है।
२९६२. न्याय पुस्तकों को पढ़कर नहीं, अपराधी के हालातों को देखकर करना चाहिए।
२९६३. मनुष्य में आधे गुण तो तभी विदा हो जाते हैं, जब वह दासता ग्रहण करता है।
२९६४. दुःखी व्यक्ति ही दूसरे को दुःख देता है। पराधीन व्यक्ति ही दूसरे को अपने अधीन करता है।

२९६५. मधुर वाणी से सबको सींचना सीखो।
मधुर व्यवहार से सबको खींचना सीखो ॥
क्रोध की जीत से हर हार अच्छी है।
अगर किसी का दिल जीतना है तो प्रेम करना सीखो॥

२९६६. बड़ों के कहने का नहीं, व्यवहार का असर पड़ता है।
माँ की शिक्षाओं का नहीं, दुलार का असर पड़ता है ॥
तुमने तो चाबी उल्टी पकड़ ली है, ताला कैसे खुले।
आदमी पर फटकार का नहीं, प्यार का असर पड़ता है ॥

२९६७. जब गंध अधिक बढ़ती है, तब बाग उजड़ जाते हैं।
जब आवाज अधिक बढ़ती है, तब राग बिगड़ जाते हैं ॥
क्योंकि हर चीज की एक सीमा होती है बन्धुओं!
जब स्वार्थ अधिक बढ़ता है, तब व्यवहार बिगड़ जाते हैं ॥

२९६८. मानव को क्रोध से नहीं प्रेम से जीतो।
क्रोध को क्रोध से नहीं क्षमा से जीतो ॥
आप यदि किसी का दिल जीतना चाहते हो।
तो अधिकार से नहीं, समर्पण व प्रेम से जीतो ॥

२९६९. किसी की तरफ न देखना या मुँह से न बोलना, यह उसका सबसे बड़ा तिरस्कार है।

२९७०. निरोग रहना, ऋणी न होना, परदेश में न रहना, अच्छे लोगों के साथ मेल होना, अपनी वृत्ति से जीविका चलाना और निडर होकर रहना; ये छह मनुष्य लोक के सुख हैं।

२९७१. ईर्ष्या करने वाला, घृणा करने वाला, असन्तोषी, क्रोधी, सदा शंकित रहने वाला और दूसरे के भाग्य पर जीवन निर्वाह करने वाला; ये छह सदा दुःखी रहते हैं।

२९७२. जो व्यक्ति नास्ता लिए बिना लम्बे मार्ग पर चल देता है वह चलता हुआ भूख-प्यास से पीड़ित होकर दुःखी होता है, इसी प्रकार जो व्यक्ति धर्म किए बिना परभव में जाता है वह व्याधि रोग से पीड़ित एवं दुःखी होता है।

२९७३. साहस, कायरता और हँसी छूत की बीमारी के समान हैं।

२९७४. बुद्धि यह है कि अपने कानों की अपेक्षा अपनी आँखों पर भरोसा करो।

२९७५. निरर्थक कलह करना मूर्खों का काम है, बुद्धिमानों को इसका त्याग करना चाहिए, ऐसा करने से लोक में यश मिलता है और अनर्थ का सामना नहीं करना पड़ता।

२९७६. अभिप्राय समझने वाला व्यक्ति ही बुद्धिमान होता है।

२९७७. बुद्धिमान मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है किन्तु और महान् दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है।

२९७८. पृथ्वी पर अत्यन्त बुद्धिमान मनुष्य तीन में से एक को अवश्य प्राप्त होता है, इसमें संशय नहीं–अल्प आयु वाला या दरिद्र अथवा सन्तान हीन होता है।

२९७९. यदि आप अच्छा बनना चाहते हो तो अपने आपको सबसे बुरा समझो।

२९८०. जो दूसरों में डर का संचार करता है, वह स्वयं सदैव डर से आतंकित रहता है।

२९८१. बीती बातों को भुला देने में ही आपकी भलाई है।

२९८२. अपने अन्दर की शान्ति व शक्ति को पहचानिए इसी में भलाई है, जो बात अच्छी न लगे उस पर प्रतिक्रिया मत कीजिए, क्षण भर के लिए चुप रहिए।

२९८३. भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन करना आवश्यक है क्योंकि हमें वही गलतियों से बचाता है।

२९८४. जो मनुष्य अपना भेद अपने सेवक को बताता है, वह सेवक को अपना स्वामी बना लेता है।

२९८५. वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसी से न कहो, चाहे वह तुम्हारा परम विश्वासी क्यों न हो, गुप्त बात को जितनी अच्छी तरह आप स्वयं छिपा सकते हैं, दूसरा न छिपा सकेगा।

२९८६. युद्ध मानव–जाति का विनाशक है, अतः उससे बचने के सभी उपाय काम में लिए जाने चाहिए।

२९८७. आपका घर उतना ही बड़ा होना चाहिए जिसकी आप स्वयं देखभाल कर सकें, स्वच्छ साफ–सुथरा रख सकें।

२९८८. रहस्य उसी पर प्रकट हो सकता है जिसे तीव्र अंतर्दृष्टि प्राप्त है और जो एक मिनट भी व्यर्थ नहीं खोता है।

२९८९. तौलने से अनाज की रक्षा होती है, फेरने से पान की रक्षा होती है, बारम्बार देखभाल करने से गौओं की रक्षा होती है, मैले वस्त्रों से स्त्रियों की रक्षा होती है, संयम से आत्मा की रक्षा होती है, बाड़ी से खेत की रक्षा होती है और अच्छे संस्कारों से परिवार की रक्षा होती है।

२९९०. आपत्ति के लिए धन की रक्षा करें, धन के द्वारा स्त्री की रक्षा करें और स्त्री एवं धन दोनों के द्वारा सदा अपनी रक्षा करें।

२९९१. राजनीति कहती है–हाथ आए दुश्मन को छोड़ना और अपनी हार खरीदना एक ही चीज के दो नाम हैं। यदि जनता की पहुँच नेता तक हो और नेता हित, मित, प्रिय वचन बोलता हो तो वह नेता नेताओं का शिरोमणि बन जाता है।

२९९२. प्रजातंत्र का अर्थ है कि उसमें निम्न से निम्न और उच्च से उच्च मानव को प्रगति का समान अवसर मिले।

२९९३. अच्छी बातों को ग्रहण कीजिए फिर चाहे वे किसी की भी क्यों न हो।

२९९४. आपका विचार तभी तक आपका है जब तक आप दूसरों के सामने प्रकट न करो।

२९९५. न इतने नरम बनो कि निचोड़े जाओ और न इतने सख्त बनो कि तोड़े जाओ।

२९९६. विपत्ति के आने पर अपनी रक्षा के लिए व्यक्ति को अपने पड़ोसी शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए।

२९९७. स्त्री, धूर्त, आलसी, डरपोक, क्रोधी, पुरुषत्व के अभिमानी, चोर, कृतघ्न और नास्तिक का विश्वास नहीं करना चाहिए।

२९९८. व्यक्ति नीति के पथ पर जितना आगे बढ़ेगा आत्मा का उतना ही विकास होगा।

२९९९. ऋण, अग्नि, शत्रु और द्वेष को कभी बढ़ने नहीं देना चाहिए।

३०००. शान्ति कायम रखने का सर्वाधिक प्रभावशाली तरीका युद्ध के लिए तैयार रहना है।

३००१. खून का दाग खून से नहीं धुलता, उत्तेजना-उत्तेजना से शांत नहीं होती, हमें स्वयं शांत होना होगा।

३००२. जो सद्गुरु से प्राप्त हो जाता है, वह शास्त्रों से प्राप्त नहीं हो सकता।

३००३. जब सब तरकीबें असफल हो जाएँ, तो सच बोल दीजिए।

३००४. वही समाज सदैव सुखी रह सकता है जिसने नैतिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया है।

३००५. अत्यधिक संसर्ग से किसका अनादर नहीं होता? 'अतिपरिचयादवज्ञाः'।

३००६. किसी के सम्मान को भरी सभा में नष्ट करना मृत्यु के समान कष्टकारी है।

३००७. धर्म, काम और अर्थ सम्बन्धी कार्यों को करने से पहले न बताएँ, करके ही दिखाएँ, ऐसा करने से अपनी मंत्रणा दूसरों पर प्रकट नहीं होती है।

३००८. जिस प्रकार दवा चाहे वह कड़वी क्यों न हो रोग दूर कर देती है, उसी प्रकार सहृदयतापूर्ण सलाह चाहे वह कितनी ही कटु क्यों न हो, हमें सही रास्ता दिखाती है।

३००९. बड़ों की उस हर बात को मान लीजिए जिससे आपका अहित न होता हो।

३०१०. सहनशील होना अच्छी बात है, परन्तु अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है।

३०११. किसी का सहारा लिए बिना कोई ऊँचा नहीं चढ़ सकता, अतः सबको किसी प्रधान आश्रय का सहारा लेना चाहिए।

३०१२. मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है क्योंकि वह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है।

३०१३. सुख भाग्यशाली को परखता है और संकट महान् व्यक्ति को।

३०१४. जो दूसरों से (अपने लिए) सुख चाहता है, उसको भयंकर दुःख भोगना ही पड़ेगा।

३०१५. यदि आप अपने को तुच्छ, निर्धन क्षुद्र कीट मान बैठते हैं, तब आप वही हो जाएँगे।
३०१६. सौजन्य वह आवरण है जिससे कई पापों को ढँका जा सकता है।
३०१७. सौजन्य से आत्मीयता पैदा होती है।
३०१८. धार्मिक कर्तव्यों का अनुष्ठान, उत्साहपूर्वक धनोपार्जन, प्रसन्नतापूर्वक कामपुरुषार्थ में प्रवृत्ति, शरीर शुद्धि तथा दुष्टजनों के स्पर्श से उत्पन्न हुए दोषों को दूर करने के लिए स्नान किया जाता है।
३०१९. स्वाधीन होकर जियो, स्वाभिमान बढ़ेगा।
३०२०. स्वाधीन की कुटिया अच्छी किन्तु पराधीनता का स्वर्ग भी अच्छा नहीं है।
३०२१. दूसरों के लिए गड्ढा खोदने से पहले स्वयं उसमें उतरना पड़ता है।
३०२२. स्वयं को बदलने वाला ही संतोषी तथा सदाचारी हो सकता है।
३०२३. बिना परिचय के किसी के साथ मजाक नहीं करना चाहिए।

३८. सुभाषित

३०२४. स्नान तन को, ध्यान मन को, दान धन को, योग जीवन को, प्रार्थना आत्मा को, व्रत स्वास्थ्य को, क्षमा रिश्तों को और परोपकार किस्मत को शुद्ध करता है।
३०२५. डूबता है तो पानी को दोष देता है, गिरता है तो पत्थर को दोष देता है, इंसान भी बड़ा अजीब है कुछ नहीं कर पाता तो किस्मत को दोष देता है।
३०२६. अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, समाज के तीन सदस्य सक्षम हैं–माता-पिता और गुरु।
३०२७. ये आठ कभी दूसरों का दुःख नहीं समझते–१. राजा, २. वेश्या, ३. यमराज, ४. अग्नि, ५. छोटा बच्चा, ६. चोर, ७. भिखारी, ८. कर वसूल करने वाला।
३०२८. लक्ष्मी उद्योग के अनुसार, कीर्ति दानानुसार, विद्या अभ्यास अनुसार, बुद्धि कर्मानुसार होती है।
३०२९. अपने दुश्मन को हजार मौके दो कि वो आपका दोस्त बन जाये, लेकिन अपने दोस्त को एक भी ऐसा मौका न दो कि वो आपका दुश्मन बन जायें।
३०३०. जिसने व्याकरण नहीं पढ़ा वह जन्मान्ध है, जो न्यायशास्त्र से रहित है वह गूँगा है, जो साहित्य से रहित है वह लँगड़ा है और जो कोष से रहित है, वह निर्धन है।
३०३१. प्रार्थना से आन्तरिक शक्ति बढ़ती है।
३०३२. जिसकी वाणी व्याकरण से शुद्ध नहीं है और जिसकी बुद्धि नयों से शुद्ध नहीं है वह पुरुष दूसरों के भरोसे क्लेश उठाते हुए अन्धे के समान है।
३०३३. खेती से दुर्भिक्ष नहीं होता, जाप से पाप नहीं होता, मौन से कलह नहीं होती और जागने

से भय नहीं होता है।

३०३४. रोग उत्पत्ति के चार कारण–अधिक खाना, अधिक सोना, अधिक विषय सेवन, मलमूत्र का निरोध।

३०३५. अच्छे नेता और नेता बनाने की चेष्टा करते हैं, बुरे नेता अनुयायी बनाने की चेष्टा करते हैं।

३०३६. जो व्यक्ति एक पाठशाला खोलता है वह एक जेल खाना बंद कर देता है।

३०३७. अच्छी जिंदगी जीने के दो तरीके हैं, जिसे पसंद करते हैं उसे हासिल कीजिए या फिर जो हासिल है उसी को पसंद करना शुरू कर लीजिए।

३०३८. शीशा पत्थर साथ रहें तो बात नहीं घबराने की।
बस इतना सा ध्यान रहें कि जिद न हो टकराने की ॥

३०३९. धरम रहे अरु धन बचे, रोग समूल नशाय।
ऐसे लाभ उठाइए, देसी औषध खाय ॥

३०४०. जो जितनी अधिक खुशामद चाहेगा या करावेगा उसे उतना ही परेशान होना पड़ेगा।

३०४१. प्रशंसा मुक्ति नहीं बंधन है।

३०४२. किसी से कुछ नहीं चाहना ही सुख और दूसरे से आशा करना ही दु:ख है।

३०४३. बदमाशी, चालाकी, कूटनीति आदि का ज्ञान तो ठीक है परन्तु उस ज्ञान का उपयोग ढाल की तरह स्वयं की रक्षा के लिए करना चाहिए तलवार की तरह दूसरों के घात के लिए नहीं।

३०४४. ख्याति की चाह न करने वाला ही सच्चा अध्यात्म योगी व सुखी होता है।

३०४५. व्यक्ति का स्वभाव समझकर अनुकूल व्यवहार करने से किसी को संक्लेश नहीं होता है।

३०४६. नियत दान देने वालों के आवश्यक खर्चों में कभी कमी नहीं आती है।

३०४७. तुम्हारे द्वारा यदि दूसरों को लाभ होता हो, उसमें उनका भविष्य व सौभाग्य अन्तरंग कारण समझो, एहसान का भाव मत रखो।

३०४८. सम्पत्ति होने पर तृष्णा से, व्यवस्था से, भय से सदैव आकुलित होता है और विपत्ति आने पर घबड़ाकर दु:खी होता है।

३०४९. प्रशंसा में अपने आपके स्वरूप को भूलकर व प्रशंसा करने वालों के अनुकूल चर्या बनाकर और कष्ट उठाकर व्याकुल बनना पड़ता है।

३०५०. कायर पुरुष शस्त्रधारी होने पर भी वैरी का घात नहीं कर सकता, उसी प्रकार विषय-कषायी व्यक्ति बहुत ज्ञान होने पर भी दुर्गति के दु:ख नष्ट नहीं कर सकता है।

३०५१. इनका मुझ पर बड़ा स्नेह है, यह सोचना भ्रम है यदि परीक्षा करनी हो तो उनके प्रतिकूल

होकर देख लीजिए।

३०५२. अपने दु:खी होने में जो अपना अपराध सोचते हैं? वे व्याकुल नहीं होते और जो पर का अपराध सोचते हैं वे बिना विपदा दु:खी बने रहते हैं।

३०५३. दोष ही दिखाई दें तो 'अपने' और गुण दिखें तो 'पर के' तभी कल्याण हो सकता है।

३०५४. बाह्य चरणानुयोग के विषय में किसी समूह में बैठकर चर्चा करना झगड़ा मोल लेना है।

३०५५. नि:स्वार्थ सेवा में तत्पर रहने से लोक प्रियता आती है।

३०५६. जब हम दूसरों का अपमान करते है तो स्वयं का सम्मान खोते हैं।

३०५७. लोक व्यवहार निभाते समय सबके हित का ध्यान रखना मनुष्य जीवन में ऊँचे उठने का यह एक मन्त्र है।

३०५८. धन, शक्ति और दक्षता केवल जीवन के साधन है खुद जीवन नहीं।

३०५९. बिना हथोड़े की चोट के पत्थर भी भगवान् नहीं बनता है।

३०६०. प्रत्येक लक्ष्य का अंतिम लक्ष्य सुख-शान्ति प्राप्त करना है।

३०६१. हर सफल व्यक्ति खुश और सुखी हो जरूरी नहीं है।

३०६२. जिस क्षण आप उन चीजों को करना छोड़ देते हैं जो आपको पर्वत के शिखर तक ले गयी उसी क्षण आप नीचे घाटी में गिरना शुरू कर देते हैं।

३०६३. अगर कार्यक्षेत्र अपनी पसंद और रुचि का है तो आप जीवन में सफल होंगे।

३०६४. अगर आप जीवन में योजना बनाने में विफल रहे तो आपने विफल होने की योजना बना ली है।

३०६५. तैयारी करने में फैल होना फैल होने की तैयारी करना है।

३०६६. आप सही का चुनाव कर अमीर नहीं बन सकते लेकिन आप अमीर है तो लोग आपको सही अवश्य कहेंगे।

३०६७. डरपोक अपनी मृत्यु से पहले कई बार मरते हैं, बहादुर मौत का स्वाद बस एक बार चखते हैं।

३०६९. आप किसी व्यक्ति की गहराई का अंदाजा उसके परिवेश से असानी से लगा सकते हैं निवास का पता बताते ही व्यक्ति का मूल्य समझ में आता है।

३०७०. प्रसंग के अनुसार परिधान का चयन आवश्यक है।

३०७१. अगर आपका घर अमीरों के बीच है तो आपकी सोच अमीरों जैसी होगी।

३०७२. अच्छी लोकेशन में घर होने से बच्चों को संस्कार भी अच्छे मिलेंगे क्योंकि बच्चे काफी वक्त घर के बाहर कालोनी में बिताते हैं।

३०७३. हमारी वाणी, विचार और व्यवहार पर हमारे जीवन की सफलता निर्भर करती है।

३०७४. सृष्टि ने हर इंसान को सब कुछ समान दिया है लेकिन जिसने अपनी सोच को बड़ा रखा

वह बहुत आगे निकल गया है।

३०७५. जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की है।

३०७६. कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण या सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता है।

३०७७. अगर हम समाधान का हिस्सा नहीं है तो हम समस्या है।

३०७८. आदत कभी भी अच्छी या बुरी नहीं होती, आदत सर्व बुद्धिमान इंसान को वश में कर लेती है। किसी चीज को पकड़ के बैठे रहना अपनी साँस रोकने के समान है।

३०७९. बीस वर्ष की उम्र में इंसान अपनी इच्छा से चलता है, तीस में बुद्धि से और चालीस में अपने अनुभव से।

३०८०. परिवर्तन को स्वीकार करने में भी सकारात्मक सोच और थोड़ा जोखिम लेने की क्षमता होना आवश्यक है।

३०८१. परिवर्तन के साथ, परिवर्तन की सही रफ्तार के साथ अपना कदम ताल जरूरी है।

३०८२. श्रेष्ठ परिणाम के लिए–सकारात्मक रवैया, आत्म विश्वास और कार्य योजना आवश्यक है।

३०८३. कोई काम शुरू करने से पहले स्वयं से तीन प्रश्न करें–मैं ये काम क्यों कर रहा हूँ, इसके परिणाम क्या होंगे और क्या मैं सफल होऊँगा? जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोष जनक उत्तर मिल जायें तभी आगे बढ़ें।

३०८४. यदि आप सच कहते हैं तो आपको कुछ याद रखने की जरूरत नहीं है।

३०८५. आप बच्चों को २० साल तक संस्कार दीजिए, वो आपको ८० साल तक सुख देंगे।

३०८६. इंसान चाहे तो जिंदगी के अंतिम पल तक अपने आपको व्यस्त रखकर कई प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोगों से बच सकता है।

३०८७. वियोग संयोग का फल है अतः दुःख का मूल संयोग ही है इसलिए वियोग में दुःख न चाहने वाले संयोग में सुख न मानें।

३०८८. यदि तुम्हें स्वाधीनता पसंद है तो दूसरों को भी अपने आधीन मत रखो।

३०८९. लोग गहरी नींद में सोये हों तो दहाड़ और चिंघाड़ आवश्यक है।

३०९०. यदि मन का हो जाए तो अच्छा और मन का न भी हो तो भी अच्छा ऐसी जिसकी मनःस्थिति है उसे कोई घटना दुःखी नहीं कर सकती है।

३०९१. सुबह मन में अशुभ विचारों की नो एन्ट्री २४ मिनट के लिए कर दो, वे २४ मिनट आपको २४ घंटे संभाल लेंगे।

३०९२. आज के बच्चे सिखाने से नहीं करके दिखाने से सीखते हैं।

३०९३. जगत् और भगत क्रमशः साधनों और साधना में जीते हैं, एक को मौत दूसरे को मोक्ष

मिलता है।

३०९४. अपने मन को जीतने वाले समस्त संसार को जीतने वाले से अधिक बलवान हैं।

३०९५. संसार की ऐसी कोई समस्या नहीं जो आपके मन की शक्ति से अधिक शक्ति शाली हो।

३०९६. एकाग्र मन मित्र है चंचल मन शत्रु है।

३०९७. अधिकांश बड़े लक्ष्य हासिल न हो पाने का कारण यह है कि हम छोटे कामों को करने में पहले अपना समय बिता देते हैं।

३०९८. यदि दुःखी रहना चाहते हो तो कोई व्यवस्था सम्भाल लो, बस उसी क्षण से दुःख अशान्ति प्रारम्भ हो जायेगी।

३०९९. शुद्ध विचारों की शक्ति वचन से बहुत अधिक है। अच्छा विचार खुशबू जैसा है।

३१००. जो आपकी बात सुनते हुए इधर-उधर देखे उस पर विश्वास न करो।

३१०१. सुख देने वाले को स्वार्थ का त्याग करने पर ही पुण्य की प्राप्ति होती है।

३१०२. जो दूसरों की समाधि करवाता है उसकी नियम से समाधि होती है।

३१०३. जिन्दगी में जब मुसीबत आए, तो हो सके तो किसी से मदद मत माँगना क्योंकि मुसीबत चार दिन की और एहसान जिन्दगी भर का हो जाता है।

३१०४. ज्यादा घनिष्ठता दुःखदायी होती है। विवेकी चिंतन करता है और अविवेकी चिंता करता है।

३१०५. जो प्राप्त करना चाहते हो वह देना शुरू करो।

३१०६. जहाँ हिम्मत समाप्त होती है वहाँ हार की शुरूआत होती है।

३१०७. जिसकी नीति अच्छी होगी उसकी 'उन्नति' हमेशा होगी।

३१०८. कमाएँ नीति से, दान करें प्रीति से, खर्च करें रीति से।

३१०९. छोटों की रक्षा करो क्योंकि छोटों के होने पर ही आप बड़े कहलायेंगे।

३११०. जो व्यक्ति अपना हित चाहता है, उससे यदि भूल से भी भूल हो जाय तो वह भूल को भूल से भी भूलता नहीं है।

३१११. आदमी को बादाम खाने से नहीं, जीवन में ठोकर खाने से अक्ल आती है।

३११२. ईमानदार होने का अर्थ है, हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।

३११३. अपने रहस्य गुप्त रखें अन्यथा ये एक दिन बर्बादी के कारण बनते हैं।

३११४. हर कार्य समय पर करने वाला अपने लक्ष्य को पाता है।

३११५. जो हमारी तारीफ करते हैं उन्हें हम हमेशा पसंद करते हैं, पर जिनकी हम तारीफ करते हैं, उन्हें हम हमेशा पसंद नहीं करते हैं।

३११६. पुण्य छप्पर फाड़कर देता है, पाप थप्पड़ मार कर लेता है।

३११७. किसी के गुजर जाने से किसी का गुजारा नहीं रुकता है।

३११८. मंत्र-मंत्रणा-औषधि जितनी गुप्त होगी उतनी प्रभावशाली होती है।

३११९. अंदाजा लगाकर फैसला करना ना-इन्साफी है।

३१२०. पुण्य-पाप को छुपा के कर सकते हैं किन्तु छुपा के रख नहीं सकते हैं।

३१२१. कामना को सन्तुष्ट नहीं करना ही अच्छा है। उपेक्षा सबसे बड़ा दण्ड है।

३१२२. सच और झूठ ज्यादा समय तक नहीं छुपता है। लायक वर्षों में बनता है नालायक एक क्षण में।

३१२३. दूसरों को नालायक कहने वाला कभी लायक नहीं हो सकता है।

३१२४. स्त्री शक्ति पर और पुरुष सौन्दर्य पर विश्वास करता है।

३१२५. शीतकाल में अग्नि, दूध का भोजन, राजा से सम्मान, इष्ट का दर्शन अमृत है।

३१२६. सर्वप्रथम माँ ही पूर्ण गुरु हैं, तत्पश्चात् गुरु ही पूर्ण माँ होते हैं।

३१२७. कामी, क्रोधी, लोभी, अहंकारी, मद्यपायी, व्यसनी सूर्योदय में भी नहीं देख पाते हैं।

३१२८. लोहे को उसकी जंग नष्ट करती है, आदमी को उसकी सोच और घमण्ड नष्ट करता है। किसी से अपेक्षा नहीं रखना ही मेहनत का मूल्य है।

३१२९. आवश्यक समय पर ही शोभता है जैसे मुकुट सिंहासन पर ही शोभता है।

३१३०. राग में अवगुण दिखाई नहीं देते हैं, द्वेष में गुण दिखाई नहीं देते हैं।

३१३०. ईमानदारी की जड़ें बहुत गहरी होती हैं। पुण्यात्मा सफल, पापात्मा असफल होता है।

३१३१. काम, अर्थ और यश में किया गया यत्न निष्फल भी हो सकता है पर धर्म कार्य के प्रारम्भ का संकल्प निष्फल नहीं होता क्योंकि मन में भाव आते ही पुण्य बंध प्रारम्भ हो जाता है।

३१३२. बदला लेना अपनी उन्नति में बाधाएँ खड़ी करना है।

३१३३. जिसकी भवितव्यता निकट है उस पर ही जिनवाणी का प्रभाव पड़ता है।

३१३४. कार्य की सिद्धि पुरुषार्थ से होती है परन्तु होगी तभी जब भाग्य साथ देगा।

३१३५. स्वयं की गलतियों को स्वीकार करना स्वयं की उम्र बढ़ाना है।

३१३६. जिस घर में कार्य करने के पहले बड़ों से सलाह नहीं ली जाती उन्हें बाद में वकीलों से सलाह लेना पड़ती है।

३१३७. चिन्ता करोगे तो भटक जाओगे, चिंतन करोगे तो भटके हुए को रास्ता दिखाओगे।

३१३८. कार्य की सिद्धि चिंता से नहीं पुण्य एवं पुरुषार्थ से होती है।

३१३९. यदि दुःख नहि चाहते तो संसार से सुख मत चाहो।

३१४०. जो दूसरों के दुःख से दुःखी होता है, उसको अपने दुःख से दुःखी नहीं होना पड़ता है।

३१४१. दुर्जन निंदा के बिना नहीं रहता, जैसे कुत्ता सब रसों को खाकर भी विष्ठा के बिना संतुष्ट नहीं होता है।

३१४२. मेरे लिए पर के दोष अहितकारी नहीं हैं अपितु पर के गुण हितकारी हैं किन्तु मेरे स्वयं के दोष मेरे लिए अहितकारी हैं।

३१४३. कोई व्यक्ति इतना अमीर नहीं होता की अपना गुजरा समय खरीद सके और न कोई इतना गरीब होता है कि अपना आने वाला कल न बदल सके।

३१४४. प्रमाद से त्याग रूप धन नष्ट हो जाता है।

३१४५. जो पूर्वापर विचार कर निर्णय लेता है सफलता उसके चरण चूमती है।

३१४६. जो अनुभव विहीन होता है, रीति-नीति से शून्य होता है, वह अवसर और साधन मिलने पर भी इष्ट कार्य की सिद्धि नहीं कर पाता है।

३१४७. एक सच्चा नेता लोगों के विचारों के पीछे नहीं चलता बल्कि वह लोगों के विचारों को बदल देता है।

३१४८. परधन, परस्त्री त्रिजगत् निन्द्य हैं।

३१४९. प्रज्ञावान वही व्यक्ति है, जो सुनता अधिक और बोलता कम है।

३१५०. प्रज्ञाशील लोग सर्वप्रथम सामने वाले की बात को पूर्ण सुनते हैं, तदुपरांत ही अपना मौन खोलते हैं, निज प्रज्ञा का परिचय प्रज्ञापूर्वक ही देना शोभनीय है।

३१५१. पराधीनता नरक के समान दुःखदायी होती है।

३१५२. वीर का परिचय वीरता से, ज्ञानी का परिचय वाणी से, साधु का साधना से परिचय होता है।

३१५३. जो पाप में तैरता है, वह दुःख में अवश्य डूबता है।

३१५४. जिस व्यक्ति का पुण्य क्षीण हो जाता है, उसके पवित्र विचार भी नष्ट हो जाते हैं।

३१५५. मन के जुड़े बिना मन्त्र प्रभाव हीन हो जाते हैं।

३१५६. यदि मन वश में हो गया तो इन्द्रियों से कभी पाप नहीं हो सकता है।

३१५७. जीवन में यदि बुरा वक्त नहीं आता है तो अपने में छिपे गैर और गैरों में छिपे हुए अपने नजर नहीं आते हैं।

३१५८. अपनी प्रशंसा, पर की निंदा, महापुरुषों से ईर्ष्या और असम्बद्ध अप्रासंगिक एवं बहुत बोलना, ये कार्य अपने आपको नीचे गिरा देते हैं।

३१५९. वाचालता अल्पज्ञता की पहचान है।

३१६०. विचार बीज की तरह होते हैं, जैसा बीज बोओगे वैसा-वैसा फल पाओगे।

३१६१. विरोध गुणी और प्रसिद्धि का मापदण्ड है।

३१६२. स्त्री का चाम नहीं काम प्यारा होता है, इसलिए स्त्री परिवार में सेवा करके घर को स्वर्ग बना देती है।

३१६३. स्नेह रहित मनुष्य सुखी होता है और स्नेह सहित दुःखी होता है क्योंकि जैसे बालू को कोई

नहीं पेलता परन्तु तेल सहित तिल को घानी में पेला जाता है।

३१६४. स्वर्ग-नरक स्वयं के भीतर है जैसा सोचोगे वैसा पाओगे। जिस घर में बड़े-छोटे की मर्यादा है, वह घर स्वर्ग है।

३१६५. व्यक्ति को परखने की कसौटी उसके आचार-विचार हैं।

३१६६. अगर आज आप समय को बर्बाद करोगे तो कल समय आपको बर्बाद कर देगा।

३१६७. उथला पानी, उथला ज्ञान, उथला संयम समय पाकर ये सभी जल्दी सूख जाते हैं।

३१६८. सम्मान से जीने का महान् तरीका है कि हम वो बनें जो हम होने का दिखावा करते हैं।

३१६९. संकल्प से रहित व्यक्ति शून्य है पूर्ण नहीं, संकल्प के दृढ़ होने पर 'शक्ति' स्वयं आती है।

३१७०. असत्य बोलने से मनुष्य विकृत जीभ वाले गधा, ऊँट, बिलाव, काग, विवेक रहित, मूर्ख तथा गूँगे होते हैं।

३१७१. झूठे दिलासे से स्पष्ट इंकार बेहतर है।

३१७२. सत्य शान्त होता असत्य शोर मचाता है।

३१७३. हठ प्रारम्भ में प्रभावी लगता है, सत्य अन्त में विजय पाता है।

३१७४. सत्य पर नहीं चलना शरीर या मन की कमजोरी है पर स्वीकार नहीं करना यह श्रद्धा की कमी है।

३१७५. सत्य वाणी संयम पर आधारित है।

३१७६. संसार में जितने जीव दुःखी हैं, हो रहे हैं, होंगे, वे सब संयोग का फल भोग रहे हैं।

३१७७. संसार में अपमान सबसे बड़ा दण्ड है।

३१७८. संसार असत्य हो या सत्य पर उससे हमारा सम्बन्ध निःसंदेह असत्य है।

३१७९. ध्यान रखना सुख वस्तु से नहीं संतुष्टि से मिलता है, जिसे जिसमें संतुष्टि है उसे उसमें सुख है।

३१८०. आहार, भय, मैथुन, परिग्रह ये संज्ञायें सम्यग्ज्ञान को नष्ट कर डालती हैं।

३१८१. धैर्य के बिना लक्ष्मी नहीं मिलती, शूरता के बिना विजय नहीं मिलती, दान के बिना यश नहीं मिलता, ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं मिलता है।

३१८२. कोई भी चीज अपने न्याय नीति से कमाये पैसों से खरीदो तो शौक अपने आप कम होंगे।

३१८३. सुन्दरता की तलाश में चाहे आप सारी दुनिया का चक्कर लगा आयें लेकिन सुन्दरता अगर आपके अन्दर नहीं तो कहीं नहीं मिलेगी।

३१८४. जिन्होंने दूसरों की राहों में अन्धेरे बिछाये हैं, उन्हें कभी उजाले नहीं मिल पाये हैं।

३१८५. सुख ही शान्ति है यह भ्रम है, शान्ति ही सुख है यह सच है।

३१८६. इंसानी स्वभाव-एक बार सहायता न करने पर पहले की गयी सहायताओं को भूल जाता है या पहले के उपकारों को नहीं मानता है।

३१८७. आप इतने मधुर न हों कि लोग आपको निगल लें और इतने कटु भी न हों कि लोग आपको उगल दें।

३१८८. कमाने में पाप मत करो क्योंकि इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।

३१८९. जो व्यक्ति निश्चित को छोड़कर अनिश्चित के पीछे भागता है उसका निश्चित कार्य नष्ट हो जाता है और अनिश्चित कार्य तो नष्ट है ही।

३१९०. बड़े से बड़े नुकसान होने पर जो पीड़ा नहीं होती, उससे अधिक पीड़ा अधीनस्थ के द्वारा आज्ञा उल्लंघन करने पर होती है।

३१९१. जो आहार दान करके भोजन करता है उसको भूख की बीमारी कभी नहीं होती है।

३१९२. बहुतों के साथ विरोध करना ठीक नहीं क्योंकि चींटियों का समुदाय विशाल हाथी को भी खा जाता है।

३१९३. लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समर्पण आवश्यक है।

३१९४. समय और अवसर को खोना, अपने जीवन के साथ खिलवाड़ करना और सफलता खोना है। जो समय की कीमत करता है, समय उसकी कीमत करता है।

३१९५. सफलता समय के पाबंद व्यक्ति के ही चरण पखारती है।

३१९६. जो सफलता बिना धोखे या बेईमानी से प्राप्त होती है, वही सच्ची सफलता है।

३१९७. संसार में भटकने के लिए बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है किन्तु मोक्ष जाने के लिए कुछ नहीं करना पड़ता मात्र शान्त बैठना पड़ता है।

३१९८. वक्त और टीचर दोनों सिखाते हैं फर्क इतना है टीचर सिखाकर परीक्षा लेता वक्त परीक्षा लेकर सिखाता है।

३१९९. जो वर्तमान में जीते है वे सुखी होते हैं, जो भविष्य के बारे में सोचते हैं वे दुःखी रहते हैं।

३२००. जीव दूसरों को सुधारने के चक्कर में स्वयं को बिगाड़ लेता है।

३२०१. सरस्वती की सिद्धि उसे ही होती है जो श्री और श्रीमती से दूर रहता है।

३२०२. विकारी और भिखारी से कभी जिनशासन नहीं चल सकता है।

३९.नीति वाक्यामृत

३२०३. कारण रहित मित्रता, अहंकार रहित स्वामित्व, लोकापवाद रहित सतीत्व, सबको प्रिय उचित कथन शीलता, वैभव युक्त विद्वत्ता, चंचलता रहित यौवन तथा अंत तक कलंक रहित राजत्व संसार में दुर्लभ हैं।

३२०४. इस पर बार-बार चिन्तन करना चाहिए कि कौन-सा समय है? कौन-कौन मित्र है?

कौन-सा देश है? आय कितनी और व्यय कितना है? मैं कौन हूँ और मेरी आत्मा में कितनी शक्तियाँ हैं?

३२०५. हमें जिन पर प्रहार करना चाहिए, वे शत्रु केवल ये हैं दरिद्रता, रोग, अज्ञान और भय।

३२०६. यदि गुणी व्यक्ति लज्जाशील हो तो दुष्ट कहते हैं कि यह मूर्ख है, व्रतादि में रूचि रखता तो दंभी है, शुद्धता के लिए ढोंग, शूर हो तो निर्दय, प्रिय भाषी हो तो दीन, तेजस्वी हो तो गर्व युक्त, वक्ता हो तो बकवासी, स्थिर हो तो शक्तिहीन इस प्रकार गुणी व्यक्तियों का वह कौन सा गुण है जिसमें दुष्ट कुछ दोष नहीं निकालते हैं।

३२०७. दूसरों पर दोषारोपण नहीं करोगे तो तुम पर भी दोषारोपण नहीं किया जायेगा। दूसरों को दोषी नहीं ठहराओगे तो तुम्हें भी दोषी नहीं ठहराया जायेगा। दूसरों को क्षमा करोगे तो तुम्हें भी क्षमा किया जायेगा।

३२०८. वंश परम्परा, भाग्य, पुरुषार्थ और मित्र का सहयोग इन चार कारणों से धन की प्राप्ति होती है।

३२०९. निष्परिग्रहत्व अधन ही जीव का धन है, धन आधा धन है, धान्य महद् धन है तथा विद्या, तप और कीर्ति अति धन है।

३२१०. राजा दुर्मन्त्र से नष्ट हो जाता है, साधु परिग्रह से, पुत्र अधिक लालन से, व्रती अध्ययन न करने से, कुल कुपुत्र से, शील दुष्टों के संसर्ग से, मित्रता प्रेम के अभाव से, समृद्धि अनीति से, स्नेह प्रवास में रहने से, स्त्री गर्व से, कृषि छोड़ देने से तथा धन प्रमाद से नष्ट हो जाता है।

३२११. संसार में सुदृढ़भूषण क्या है? यश न कि रत्न। कर्त्तव्य क्या है? सज्जनों की भाँति पुण्याचरण न कि दुष्कर्म। अप्रतिहत चक्षु क्या है? बुद्धि न कि नेत्र।

३२१२. सरल स्वभाव वाले विद्वान् के पास जाते-आते रहना चाहिए। सरल स्वभाव वाले मूर्ख पर अनुग्रह करना चाहिए। दुष्ट स्वभाव वाले विद्वान् से सदा सावधान रहना चाहिए।

३२१३. वही मनुष्य नेता बनने योग्य होता है, जो अपने सहायकों की मूर्खता की, अपने अनुगामियों के विश्वास घात की, मानव जाति की कृतघ्नता की और जनता की गुण-ग्रहण हीनता की, कभी शिकायत नहीं करता है।

३२१४. दूर स्थित भाई से समीप स्थित पड़ोसी अधिक अच्छा है।

३२१५. थोड़ा भोजन करने वाले को ये गुण प्राप्त होते हैं स्थिर आरोग्य, आयु बल और सुख की प्राप्ति होती है, उसकी सन्तान उत्तम होती है और लोग उस पर यह बहुत खाने वाला है ऐसा आक्षेप भी नहीं करते हैं।

३२१६. आकार, गति, चेष्टा, वचन, नेत्र और मुख के विकारों से छिपे हुए 'मन' का ज्ञान हो जाता है।

३२१७. मना करने की छह विधियाँ हैं– १.मौन, २.समय का विलंब करना, ३.चले जाना, ४. जमीन की ओर देखना, ५.भृकुटी चढ़ाना, ६.अन्य प्रकार से बात करना है।

३२१८. ये पाँच जीते हुए भी मरे के समान हैं– १. दरिद्र, २. रोगी, ३. मूर्ख, ४. प्रवासी तथा ५. पराई नौकरी करने वाला।

३२१९. अतिरूपवती होने से सीता का अपहरण हुआ, अतिगर्वी होने से रावण मारा गया, मधुर पदार्थ भी अधिक खा लेने से अजीर्ण कर देता है अतः अति सर्वत्र त्यागना चाहिए।

३२२०. जिसके कुल और शील का ज्ञान न हो, ऐसे किसी व्यक्ति को आश्रय नहीं देना चाहिए।

३२२१. मुख से मीठा बोलते हैं पर हृदय से बुराई करते रहते हैं, ऐसे लोगों से कभी संपर्क नहीं रखना चाहिए।

३२२२. यदि मनुष्य के पास क्षमा है तो कवच की क्या आवश्यकता ?
यदि क्रोध है तो शत्रुओं की क्या आवश्यकता ?
यदि मित्र हैं तो दिव्य औषधियों की क्या आवश्यकता ?
यदि दुर्जन है तो सर्पों की क्या आवश्यकता ?
यदि निर्दोष विद्या है तो धन की क्या आवश्यकता ?
यदि लज्जा है तो आभूषण की क्या आवश्यकता ?
यदि काव्य शक्ति है तो राज्य की क्या आवश्यकता ?
यदि लोभ है तो और अवगुणों की क्या आवश्यकता ?
यदि चुगलखोरी है तो अन्य पापों की क्या आवश्यकता ?
यदि सत्य है तो तपस्या की क्या आवश्यकता ?
यदि मन शुद्ध हैं तो तीर्थों की क्या आवश्यकता ?
यदि सज्जनता है तो और गुणों की क्या आवश्यकता ?
यदि यश है तो आभूषणों की क्या आवश्यकता ?
यदि अपयश है तो मृत्यु की क्या आवश्यकता ?
यदि दया है तो रिश्तेदार की क्या आवश्यकता ?
यदि संतोष है तो स्वर्ग की क्या आवश्यकता ?
दुःख है तो नरक की क्या आवश्यकता ?

३२२३. आयु, धन, घर का भेद, मंत्र, मैथुन, औषधि, अपमान, तपस्या और दान इन नौ को प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिए।

३२२४. 'कुछ दीजिए' यह वचन मुख से निकलते ही मनुष्य के शरीर की ये पाँच देवियाँ–बुद्धि, श्री, लज्जा, शान्ति और कीर्ति तत्काल निकलकर चली जाती हैं। याचकता सैकड़ों गुणों को हर लेती है।

३२२५. नीचे की ओर (अपने से छोटों की ओर) देखने से किसकी महिमा नहीं बढ़ जाती? ऊपर (अपने से बड़ों की ओर) देखने पर सभी दरिद्र हो जाते हैं।

३२२६. पैसा आपका सेवक है यदि आप उसका उपयोग जानते हैं किन्तु वह आपका स्वामी है यदि आप उसका उपयोग करना नहीं जानते हैं।

३२२७. जिसके जेब में पैसा न हो उसकी जुबान में मिठास होना चाहिए।

३२२८. एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उसकी अनुपस्थिति में कीजिए किन्तु स्त्री की प्रशंसा उसके मुख पर कीजिए।

३२२९. मूर्ख शिष्य को पढ़ाने से, दुष्ट स्त्री के पालन-पोषण से अथवा दीन-दुखियों के संपर्क में रहने से बुद्धिमान भी दुःख पाते हैं।

३२३०. धन के नाश को, मन के संताप को, घर की बुराइयों को, किसी ठग द्वारा ठगे जाने को और नीचों द्वारा अपमान को बुद्धिमान कभी किसी से न कहे।

३२३१. विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य; ये पाँच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र बताए गए हैं। विद्वान् पुरुष इनके द्वारा ही जगत् के कार्य करते हैं।

३२३२. मूर्ख अधभरे घड़े की तरह शोर मचाते हैं, पर प्रज्ञावान गंभीर मनुष्य सरोवर की भाँति सदा शांत रहते हैं।

३२३३. शास्त्र को जानने वाला भी जो पुरुष लोक व्यवहार में पटु नहीं होता वह मूर्ख के समान है। जिस घर में मूर्खों की पूजा नहीं होती, जहाँ अन्न का संचित भंडार है तथा जिस घर में स्त्री पुरुष में कलह नहीं होता, उस घर में लक्ष्मी अपने आप सर्वदा विद्यमान रहती है।

३२३४. धैर्य, मनोनिग्रह, इन्द्रियसंयम, पवित्रता, दया, कोमलवाणी और क्रोध एवं मित्र से द्रोह न करना; ये सात बातें लक्ष्मी को बढ़ाने वाली हैं।

३२३५. लोभ से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होने से लज्जा नष्ट होती है लज्जा नष्ट होने से धर्म तथा धर्म नष्ट होने से धन और सुख नष्ट हो जाता है।

३२३६. यदि आपके विचार शुष्क, नीरस एवं अनाकर्षक हैं, तो आप किसी का मनोरंजन नहीं कर सकते, किसी को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते हैं।

३२३७. अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना ये तीन शिक्षा प्राप्त करने के आधार स्तंभ हैं।

३२३८. उत्साह, सामर्थ्य और मन से हिम्मत न हारना; ये किसी भी कार्य की सिद्धि कराने वाले गुण कहे गये हैं।

३२३९. ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा-सा भी कार्य बहुत उपकारी होता है और समय बीतने पर किया हुआ महान् उपकार भी व्यर्थ जाता है।

३२४०. बड़प्पन अमीरी में नहीं ईमानदारी और सज्जनता में रहता है।
३२४१. जो जल्दी सोता है और जल्दी उठता है, वह स्वस्थ सम्पन्न और मेधावी होता है।
३२४२. सावधानी बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी पहचान है।
३२४३. निरोगी रहना, ऋणी न होना, परदेश में न रहना, अच्छे लोगों के साथ मेल होना, अपनी वृत्ति से जीविका चलाना और निर्भय होकर रहना; ये छह मनुष्य लोक के सुख हैं।
३२४४. किसी आदमी की आकृति से ही घृणा नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे आदमी भी हैं जो भरी गाड़ी में धुरा की कील के समान हैं।
३२४५. जो मनुष्य दूसरे के मुख से निकलने के पहले ही उसके मन की बात को जान लेता है, वह जगत् का अलंकार स्वरूप है।
३२४६. जो लोग किसी व्यक्ति की आकृति देखकर ही उसके अभिप्राय को ताड़ जाते हैं, ऐसे लोगों को चाहे जैसे बने वैसे अपना सलाहकार बनाओ।
३२४७. श्रोताओं के सामने आने पर भयभीत होने वाले व्यक्ति का ज्ञान उसी प्रकार है, जैसे युद्ध क्षेत्र में नपुंसक के हाथ में तलवार।
३२४८. जो लोग ज्ञानी हैं, लेकिन विज्ञजनों के सामने आने से डरते हैं, वे अज्ञानियों से भी गये बीते हैं।
३२४९. जो आदमी अपनी भलाई चाहता है, उसे सबसे अधिक सावधानी इस बात की रखनी चाहिए कि वह महान् पुरुषों का अपमान करने से अपने को बचावे।
३२५०. अत्यन्त लोभी का अर्थ और अधिक आसक्ति रखने वालों का काम ये दोनों ही धर्म को हानि पहुँचाते हैं, जो मनुष्य काम से धर्म और अर्थ को, अर्थ से धर्म और काम को तथा धर्म से अर्थ और काम को हानि न पहुँचा कर धर्म, अर्थ और काम तीनों का यथोचित रूप से सेवन करता है, वह अत्यन्त सुख प्राप्त करता है।
३२५१. तुम सब लोगों को कुछ समय के लिए तथा कुछ लोगों को सदा के लिए मूर्ख बना सकते हो किन्तु तुम सबको सदा के लिए मूर्ख नहीं बना सकते हो।
३२५२. गुरुओं की कठोर अक्षरों वाली वाणी से तिरस्कृत मनुष्य महत्त्व प्राप्त करते हैं, कसौटी पर घिसे बिना मणि राजाओं के सिर पर स्थान नहीं पाती है।
३२५३. चरित्र हीन धनी भी विपत्ति में पड़ता है।
३२५४. सज्जन पुरुष पच जाने पर अन्न की, निष्कलंक जवानी बीत जाने पर स्त्री की, संग्राम जीत लेने पर शूर की और तत्त्व ज्ञान प्राप्त हो जाने पर तपस्वी की प्रशंसा करते हैं।
३२५५. जगत् में जो धूर्त अथवा भद्र लोग हैं, उनका माप और कुछ नहीं केवल उनकी आँखें ही हैं।
३२५६. उपदेश की अपेक्षा उदाहरण सदैव अधिक प्रभावोत्पादक होता है।

३२५७. जिस व्यक्ति में अभय, मृदुता, सत्य, सरलता, करुणा, धैर्य, अनासक्ति, स्वावलम्बन, स्वशासन, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा, व्यक्तिगत संग्रह का संयम और प्रामाणिकता होती है, वह नीतिमान कहलाता है।

३२५८. आचार से बढ़कर और कोई प्रचार हो ही नहीं सकता, जो काम मनुष्य दूसरे से कराना चाहता है, उसे वह स्वयं करे, उसका यह सबसे बढ़कर प्रचार होगा।

३२५९. योग्य पुरुषों की सभा में किसी मूर्ख मनुष्य का जाना ठीक वैसा है जैसा कि साफ-सुथरे पलंग के ऊपर मैला पैर रख देना है।

३२६०. अपने वश किए शत्रु से दूसरे शत्रु को नष्ट करा दें, पैर में लगे काँटे को हाथ में स्थित काँटे से ही निकालते हैं।

३२६१. राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो क्योंकि नीति का विश्व मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है।

३२६२. जिस राष्ट्र में विद्वान् सताये जाते हैं, वह राष्ट्र विपत्तिग्रस्त होकर वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे टूटी नौका जल में डूब कर नष्ट हो जाती है।

३२६३. लक्ष्य प्राप्ति के लिए सहज प्रवृत्तियों को भी होम कर देना होता है।

३२६४. खाली होने पर सब कुछ छोटा होता है और पूर्णता गौरव के लिए होती है।

३२६५. लोकोक्तियों को विद्वत्ता का सूत्र कहा जा सकता है।

३२६६. समता में प्रतिष्ठित चित्त वाले लोगों का भी विशेष व्यक्तियों के प्रति अति गौरवमय व्यवहार होता है।

३२६७. जब तक तुम्हें अपना सम्मान और दूसरे का अपमान सुख देता है तब तक तुम अपमानित ही होते रहोगे।

३२६८. जब तक तुम्हें अपने लिए सुख की और दूसरे के लिए दुःख की चाह है तब तक तुम सदा दुःखी ही रहोगे।

३२६९. उदार रहो, कृपा करो, सबके साथ समानता निभाओ, पर सस्ते न बनो, अपना भेद न दो जिससे कि दूसरे लोग अनुचित लाभ उठाने लगे।

३२७०. व्रत रहित जीवन उस जहाज की तरह है जिसके नाविक ने अपने गन्तव्य स्थान का निश्चय न किया हो।

३२७१. जो सभी का शुभ चाहता है, किसी के अशुभ की कामना नहीं करता सत्यवादी है, कोमल है, जितेन्द्रिय है वही उत्तम पुरुष है।

३२७२. श्रेष्ठ पुरुषों के मनोरथों को पूर्ण करने में श्रेष्ठ पुरुष ही समर्थ होते हैं।

३२७३. संकट ही चरित्र को निखार कर नैतिक बल प्रदान करते हैं।

३२७४. एक ओर एक व्यक्ति हो और दूसरी ओर एक समूह हो तो समूह को छोड़कर एक व्यक्ति

का ग्रहण करने की इच्छा न करें परन्तु जो एक मनुष्य बहुत मनुष्यों की अपेक्षा गुणों में श्रेष्ठ है और इन दोनों में से एक को ही ग्रहण करना पड़े तो ऐसी स्थिति में कल्याण चाहने वाले पुरुष को उस एक के लिए समूह को त्याग देना चाहिए।

३२७५. किसी महान् कार्य को करने के प्रसंग में शत्रुओं से भी सन्धि कर लेना चाहिए।

३२७६. ईर्ष्या नहीं करना, क्षमा, शान्ति, सन्तोष, प्रियवाणी होना तथा काम क्रोध का त्याग ये श्रेष्ठ आचरण के लक्षण हैं।

३२७७. जो आलसी हैं, कायर हैं, अभिमानी हैं, लोक चर्चा से डरने वाले और सदा समय की प्रतीक्षा में बैठे रहने वाले हैं, ऐसे लोगों को अपने अभीष्ठ की प्राप्ति नहीं होती है।

३२७८. जहाँ अपूज्यों की पूजा होती है तथा पूज्यों का अपमान होता है, वहाँ दुर्भिक्ष, मरण तथा भय तीन कार्य होते हैं।

३२७९. सर्वनाश के उपस्थित होने पर पण्डित आधे को छोड़ देता है, आधे से कार्य करता है, सर्वनाश असहनीय होता है।

३२८०. जो मनुष्य अपने को बुद्धिमान मान कर निर्भय विचरता है, उसे कभी कोई सलाह नहीं देनी चाहिए क्योंकि वह दूसरे की सलाह नहीं सुनता है।

३२८१. सलाह का कदाचित् ही स्वागत होता है, जिन्हें इसकी अधिकतम आवश्यकता होती है, वे ही इसे सबसे कम पसन्द करते हैं।

३२८२. मूर्ख मनुष्य कुछ भी कह दे, विद्वान् पुरुष को वह सब सह लेना चाहिए।

३२८३. ऊँचाई पर पहुँचे हुए मनुष्यों को यत्नपूर्वक आत्मा की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि दूर तक चढ़ जाने के बाद नीचे गिरना दुःसह होता है।

३२८४. सैकड़ों दलीलें एक तरफ और एक तरफ सुभाषित जो प्रतिद्वन्दी को निरुत्तर कर देता है, उसके जवाब में सामने वाले की जुबान नहीं खुलती, उसका पक्ष कितना भी प्रबल हो पर सुभाषितों में कुछ ऐसा जादू होता है कि मानो वह एक फूँक से दलीलों को उड़ा देता है।

३२८५. अनुभवहीन व्यक्ति के लिए सूक्ति ग्रन्थ का अध्ययन अच्छी बात है।

३२८६. प्रत्येक व्यक्ति एवं वस्तु का अपने स्थान पर महत्त्व है एवं कार्य के योग्य स्थान पर ही कार्य की सिद्धि होती है।

३२८७. स्वाधीनता सद्‌गुणों को जगाती है, पराधीनता दुर्गुणों को जगाती है।

३२८८. व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है जहाँ तक दूसरों की स्वतंत्रता में बाधा न पड़े।

३२८९. विचार और कार्य की स्वतंत्रता ही जीवन उन्नति और कुशल क्षेम का एक मात्र साधन है।

३२९०. गरम स्वभाव सब सिद्धियों का प्रथम विघ्न है।
३२९१. ओखली–मूसल को स्वर्ग भी ले जाओ तो वहाँ भी वे धान ही कूटेंगे।
३२९२. प्रायः स्वामियों का अपने आश्रितों के प्रति आदरभाव अपने प्रयोजन के लिए और अस्थिर होता है।
३२९३. लज्जा से रहित व्यक्ति ही स्वार्थ के साधक होते हैं।
३२९४. सब्र के बिना कब्र ही शरण होती है।
३२९५. इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना सबसे बड़ी हानि है
३२९६. काँच का टुकड़ा टूट कर तेज धार वाला छुरा बन जाता है, वही हालत इंसान के टूटे हुए दिल की होती है।
३२९७. जब मनुष्य पदासीन होता है तब बहुत से अपरिचित उसके सहायक तथा सभी उसके अधीन हो जाते हैं, पदच्युत एवं धन रहित होने पर स्वजन भी शत्रु हो जाते हैं, अतः पाप से डरना चाहिए।
३२९८. श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान करके उन्हें अपना बना लेना दुर्लभ पदार्थों से भी अधिक दुर्लभ है।
३२९९. थोड़े भी उपकार को मानना सज्जनता है नहीं मानना दुर्जनता है।
३३००. उत्तम विचार और महान् चरित्रबल ही परम धन है।
३३०१. स्नेह को खोकर वस्तु को पा लेना, पाना नहीं गँवाना है।
३३०२. उधार धर्म कहने कि लिए नगद धर्म करने के लिए होता है।
३३०३. किसी धर्म–सम्प्रदाय को इसलिए ग्रहण न करो कि उसके प्रवर्तक राजा या राजकुमार हैं क्योंकि राजा–महाराजा प्रायः आध्यात्मिकता में दरिद्र होते हैं।
३३०४. राग, लोभ, भय, द्वेष और एकान्त वादियों की बातें सुनना निर्णायक को इन पाँच दोषों से बचना चाहिए।
३३०५. गुण–दोष का विचार किए बिना किसी को ग्रहण करना या त्यागना मानो अपना नाश करने के लिए सर्प के मुख में हाथ डालना है।
३३०६. कलह से मनुष्य के घर, कुवाक्य बोलने से मित्रता, कुकर्म से मनुष्य का यश नष्ट हो जाता है, प्रमाद से पढ़ा सुना हुआ श्रुत नष्ट हो जाता है।
३३०७. लोग प्रायः कहा करते हैं कि अपना मन शुद्ध है तो संसार के कहने से क्या होता है? यह बात केवल साधना की एकान्तिक दृष्टि से ठीक है, लोक, संग्रह की दृष्टि से नहीं।
३३०८. जिसकी लाखों मूर्ख प्रशंसा करें और दूसरी ओर एक सदाचारी धर्मात्मा का ज्ञान उसके आचार को दूषित समझें तो तत्त्वज्ञानी धर्मात्मा की सम्मति ही ठीक है।
३३०९. समय–समय पर अवसरानुकूल कभी कोमल–कभी तीक्ष्ण स्वभाव वाला बन जाना

चाहिए। अचल निष्ठा ही महान् कार्य की जननी है।

३३१०. बुद्धिमान झगड़े में न पड़े, व्यर्थ वैर से अलग रहे, थोड़ी हानि सह ले, वैर से धन की प्राप्ति हो, तो भी उसे छोड़े।

३३११. आत्म विश्वास, दृढ़ता तथा वैराग्य ये तीन बातें जो अपने में धारण करता है, वही समस्त श्रेष्ठ गुणों का आश्रय लेने से सम्पूर्ण प्रजा का नेता होता है।

३३१२. जब नेता उन कर्त्तव्यों को छोड़ देते हैं जो उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए निर्दिष्ट किए हैं तब सबसे अधिक शक्तिशाली संघटन भी विघटित हो जाते हैं।

३३१३. देर तक सूर्य को न देखें। सिर से बोझा नहीं उठाना चाहिए। निरन्तर सूक्ष्म, अत्यन्त दीप्त, अपवित्र या अप्रिय वस्तुओं को देर तक नहीं देखना चाहिए।

३३१४. घृणा और द्वेष जब बढ़ता है तब वह शीघ्र ही पतन के गड्ढे में गिराता है।

३३१५. मनुष्य पराक्रम के द्वारा दुःखों से पार होता है और प्रज्ञा से परिशुद्ध होता है।

३३१६. जो परिहास का उत्तर नहीं दे सकता, वह हँसता हुआ कम से कम रस तो ले सकता है।

३३१७. हम ऐसा मानने की गलती कभी न करें, कि गुनाह में छोटा-बड़ा होता है।

३३१८. गुप्त पाप करने वाले व्यक्ति शंका मात्र से प्रकाश में आ जाते हैं।

३३१९. उस पुत्र को धिक्कार है, जो समर्थ होते हुए भी पिता के मनोरथ को पूर्ण नहीं करता जो पिता की चिन्ता को दूर नहीं कर सकता उस पुत्र के जन्म लेने से क्या प्रयोजन है?

३३२०. विद्वान्, शूरवीर, धनी, धर्म निष्ठ, स्वामी, तपस्वी, सत्यवादी तथा बुद्धिमान मनुष्य ही प्रजा की रक्षा करते हैं।

३३२१. जो अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं करता वह असभ्य है, प्रतिज्ञा का पालन ही महानता का लक्षण है।

३३२२. प्रिय व्यक्ति का दर्शन अमृत है।

३३२३. परस्पर फूट वाले लोगों का शीघ्र ही नाश हो जाता है।

३३२४. बंधु के अपरिचित होने पर भी उसके मिलने पर चित्त प्रसन्न होता है।

३३२५. अपनी बुद्धि से साधु होना अच्छा है परन्तु पराई बुद्धि से राजा होना अच्छा नहीं है।

३३२६. प्रतिभा अविष्कार करती है, बुद्धि केवल अन्वेषण करती है।

३३२७. संदिग्ध कार्यों में प्रवृत्त होना बुद्धिमानी का काम नहीं है।

३३२८. बुद्धिमान पुरुष को अल्प सुख एवं अधिक क्लेश वाला कार्य न ही करना चाहिए, बुद्धिमानी इसी में है कि थोड़ा व्यय करके बहुत की रक्षा करें।

३३२९. बुद्धिमान को चाहिए कि वह अपना काम बनाने के लिए शत्रुओं को भी कन्धे पर बिठाकर ढोये।

३३३०. कार्यों को प्रारम्भ न करना बुद्धि का पहला लक्षण है और प्रारम्भ किए हुए कार्य को पूरा

करना दूसरा लक्षण है।

३३३१. बुद्धिमान व्यक्ति अपने शत्रुओं से बहुत बातें सीखते हैं।

३३३२. मूर्खों की सफलताओं की अपेक्षा बुद्धिमानों की गलतियाँ अधिक मार्ग दर्शक होती हैं।

३३३३. बुराई से हारों नहीं भलाई से बुराई को जीत लो।

३३३४. भय से डरने वाले विवेकहीन हुआ करते हैं।

३३३५. मंत्रणा छह कान में पड़ते ही रहस्य खुल जाता है तथा चार कान में स्थिर रहता है इसलिए सभी प्रयत्नों से बुद्धिमान मंत्रणा में छह कान न होने दें।

३३३६. भोजन मसाले से मनुष्य गुणों से अच्छा लगता है।

३३३७. मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता अपितु विश्वास, प्रशंसा व सहानुभूति भी आवश्यक है।

३३३८. मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर अपने समान अन्यों के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल हो तो भी डरता रहे।

३३३९. महत्त्वाकांक्षा की प्रेरणा मनुष्य को साहस, लगन और दृढ़ता प्रदान करती है, इन गुणों के अभाव में मानव निर्जीव हो जाता है।

३३४०. बुद्धिमानों को चाहिए कि नियमों की रक्षा करते हुए लोक व्यवहार का निर्वाह करें क्योंकि नियमों के द्वारा निश्चय किए गए धर्म-मार्ग पर सर्व साधारण भी चलते हैं।

३३४१. सीमित खर्च को बुद्धिमत्ता की पुत्री, संयम की बहन और स्वतंत्रता की माता कहा जा सकता है। खर्चीला व्यक्ति शीघ्र ही निर्धन हो जाता है और निर्धनता परावलम्बन के लिए बाध्य करती है तथा भ्रष्टाचार को निमंत्रित करती है अतः जो भी आपके पास है उससे कम व्यय करो।

३३४२. विद्वान् शत्रु भी हो तो भी श्रेष्ठ होता है, मूर्ख हितकारी भी हो तो भी श्रेष्ठ नहीं होता है।

३३४३. अनुचित बातों का आग्रह करने वाला प्रायः मूर्ख होता है विद्वान् नहीं।

३३४४. मूर्ख के चिह्न-अहंकारी, हठी, अप्रियवादी।

३३४५. अधर्म में धर्म बुद्धि, धर्म में अधर्म बुद्धि रखने वाला मूर्ख होता है।

३३४६. विशाखा नक्षत्र के उपरांत वर्षा काल, प्रसव के उपरांत नारी का यौवन, प्रणाम करने के उपरान्त सत्पुरुषों का क्रोध और याचना करने के बाद मनुष्य का गौरव समाप्त हो जाता है।

३३४७. अत्यन्त चमकता हुआ भी जुगनू अग्नि नहीं होता है।

३३४८. अकेले स्वादिष्ट भोजन न करें, अकेले किसी विषय का निश्चय न करें, अकेले रास्ता न चलें और बहुत से लोग सोये हों तो अकेले जागते न रहें।

३३४९. कोई भी वस्तु इतनी अच्छी नहीं होती जितनी पहले प्रतीत होती है।

३३५०. जब बुरे व्यक्ति संगठित हो जाते हैं, तब अच्छे लोगों को भी मिल जाना चाहिए, अन्यथा एक-एक करके पराजित हो जायेंगे।

३३५१. धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सब प्राणी अतृप्त होकर गये, जा रहे हैं और जायेंगे।

३३५२. धर्म, अर्थ, काम, कीर्ति और जीवन इनके विषय में सब प्राणी सदा अतृप्त रहकर मरे हैं, मरेंगे और मर रहे हैं।

३३५३. अपकीर्ति माननीय पुरुष के लिए मरण से भी अधिक बुरी होती है।

३३५४. यश की प्राप्ति भले ही न हो किन्तु अपयश होना उचित नहीं है।

३३५५. हानि क्या है? अवसर चूक जाना।

३३५६. असमय में किया हुआ कार्य न किया हुआ जैसा ही होता है।

३३५७. शत्रु में दोष देखकर बुद्धिमान झट वहीं क्रोध को व्यक्त नहीं करते हैं, अपितु समय को देखकर उस ज्वाला को मन में ही समाये रखते हैं।

३३५८. अपना अवसर पहचानो, योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को पहचानो।

३३५९. नीतिज्ञ व्यक्ति अशुभ का समय मुहूर्त भर भी टालना बहुत मानते हैं।

३३६०. गुरुजनों की आज्ञा पर तर्क वितर्क नहीं करना चाहिए।

३३६१. ज्ञानियों का मूल मंत्र है कि जहाँ जो कुछ अच्छा मिले सीखना चाहिए।

३३६२. पुराने आघातों का स्मरण करना मानसिक अन्धकार है और आघात कर्ताओं से बदला लेने का विचार करना मानसिक आत्मघात है।

३३६३. आधुनिकता के विषय में बिना घृणा के बोलना और प्राचीनता के विषय में बिना अन्ध श्रद्धा के बोलना चाहिए।

३३६४. जिस आपदा में अच्छी क्रिया से किसी प्रकार आत्मा की रक्षा न हो सके उसमें निषिद्ध कर्म भी करना चाहिए क्योंकि जब सड़क पर वर्षा से कीचड़ हो जाती है तब पंडित लोग भी कभी-कभी कुमार्ग से जाते हैं, उनका कुमार्ग में जाने का लक्ष्य नहीं होता बल्कि सड़क के कीचड़ से बचने का लक्ष्य होता है।

३३६५. सदाचारी, श्रद्धावान और ईर्ष्या रहित मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित रहता है चाहे वह सब प्रकार के शुभ लक्षणों से हीन ही क्यों न हो?

३३६६. विद्वान् लोग भी आवेग से अन्धे होने पर कुपथ में पैर धर ही देते हैं।

३३६७. किसी बात से रोकने पर मनुष्य की आकांक्षा उसके लिए और भी अधिक बढ़ती है क्योंकि निषेध में आकर्षण होता है।

३३६८. जिसका स्थान लिया जाता है उसका उत्तरदायित्व भी लिया जाता है।

३३६९. द्वेष से किसमें दोष नहीं आ जाता ? प्रेम से किसकी उन्नति नहीं होती ?
३३७०. सर्वत्र उदारता से काम नहीं करना चाहिए।
३३७१. मानव का विद्यालय 'उदाहरण' है और वे अन्यत्र कुछ नहीं सीखते हैं।
३३७२. किसी लेखक का उच्चतम सम्मान उसे उद्धृत करना है।
३३७३. उद्धरणों के द्वारा बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता तथा युग-युग के अनुभवों को संजोया जा सकता है।
३३७४. बहुत लोगों की अपेक्षा थोड़े से ईमानदार लोग अधिक अच्छे हैं।
३३७५. उपहार का मूल्य नहीं, उसके पीछे की दृष्टि ही तौली जाती है।
३३७६. तुम किसी से उपहार मत लो क्योंकि उपहार विद्वान् को अंधा कर देता है और सदाचारी के शब्दों को भी दूषित कर देता है।
३३७७. जो काम उपाय से हो सकता है, वह पराक्रम से नहीं हो पाता है।
३३७८. अत्यधिक परिचय से अवज्ञा उत्पन्न होती है और किसी के पास लगातार जाने से निरादर होता है।
३३७९. ऐश्वर्य मूर्खों को नष्ट कर देता है और बुद्धिमानों को संकटग्रस्त कर देता है।
३३८०. एक मात्र अमोघ नियम—जो मनुष्य सदैव सज्जन होने की बात करता रहता है, वह कभी भी सज्जन नहीं होता है।
३३८१. जो छल से धन प्राप्त करता है, वह धर्म से भ्रष्ट हो जाता है।
३३८२. लेने-देने और करने योग्य कार्य यदि तुरन्त नहीं कर लिए जाते तो समय उसका रस पी जाता है।
३३८३. लज्जाशील पुरुष को कलंक लगने पर उसके गुण भी सुख नहीं दे पाते हैं।
३३८४. जैसे छोटा अंकुश भी हाथियों पर गिरकर उन्हें कष्ट देता है, वैसे ही बड़ों के ऊपर थोड़ा क्लेश पड़ना भी बहुत कष्टकर होता है।
३३८५. संसार में रम्यता तो सुलभ है किन्तु गुणों की प्राप्ति दुर्लभ है।
३३८६. गुणियों के गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, लिंग अथवा उम्र नहीं।
३३८७. जिस गुण से मनुष्य की जीविका चलती हो और प्रशंसा होती हो, गुणी को चाहिए कि उस गुण की रक्षा करे और उसे बढ़ाये।
३३८८. जो शत्रुओं को भी प्रसन्न कर दें, वही गुणों की असाधारणता होती है।
३३८९. सद्गुण रूप अमृत का आस्वाद लेने में प्रायः सत्पुरुष ही कुशल होते हैं, गुणों से सम्पन्न पुरुष में थोड़े भी गुण अधिक हो जाते हैं।
३३९०. स्त्रियों के अंगों के समान जब अपने गुण छिपाये जाते हैं, तो वे स्पृहणीय तथा दुर्लभ हो जाते हैं। बड़े गुणों और सत्कर्मों के करने वाले लोग संसार में सर्वदा सुलभ हुआ करते

हैं किन्तु उनके ज्ञाता दुर्लभ हैं।

३३९१. किसी गुणवान मनुष्य में कोई दोष भी देखकर गुणानुरागी व्यक्ति खिन्न नहीं होते क्योंकि चन्द्रमा में पड़े कलंक को भी लोग प्रेम से ही देखते हैं।

३३९२. कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जिसमें दोष ही दोष या गुण ही गुण होते हों।

३३९३. बन्धुओं के गुण और दोष में गुणों पर दृष्टि डालनी चाहिए, दोषों पर नहीं।

३३९४. गुणहीन धनिकों से गुणी दरिद्र श्रेष्ठ होता है।

३३९५. मनुष्यों को गुणों की प्राप्ति में प्रयत्नशील होना चाहिए क्योंकि गुणी व्यक्तियों के लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है, गुणों की अधिकता से ही चन्द्रमा शिव जी के मस्तक पर विराजमान है, जहाँ दूसरे लोग पहुँच भी नहीं सकते हैं।

३३९६. धर्म, अर्थ, काम सम्बन्धी कार्यों को करने से पहले न बतायें, करके ही दिखायें, ऐसा करने से अपनी मंत्रणा दूसरों पर प्रकट नहीं होती है।

३३९७. यदि गुरु अयोग्य शिष्य चुनें तो उसकी बुद्धि हीनता ही प्रकट होती है।

३३९८. प्रत्यक्ष घटना विचार से कई अधिक प्रभावशालिनी होती है।

३३९९. जो कुछ आँखों से नहीं दिखता उसे चरित्र द्वारा देखना पड़ता है।

३४००. मनुष्य के बाहर का रूप देखकर उसके चरित्र के बारे में निर्णय कर लेना अनुचित है।

३४०१. जिन्हें खुशामद प्रिय होती है, उन्हें सच्ची बात मीठी भाषा में कही जाये तो भी कड़वी लगती है।

३४०२. निर्धनों को धन न दिए जाने से दरिद्रता बहुत बढ़ गई है और दरिद्रता के बहुत बढ़ जाने से चोरी बहुत बढ़ गई है।

३४०३. चित्र मूक कविता है और कविता मुखर चित्र है।

३४०४. मृदु कामों से भी स्वार्थ सिद्धियाँ की जा सकती हैं।

३४०५. अपमान से उत्पन्न लड़ाई को मान से शांत कर दें, अपमान से उद्भूत युद्ध के लिए सामनीति अथवा प्रणाम उपाय है।

३४०६. जीवन सदैव समझौते के लिए विवश करता है।

३४०७. जो जीवन लक्ष्य हीन होता है, वह साथ ही सुख हीन भी होता है।

३४०८. लक्ष्य भ्रष्ट जीवन केवल दयनीय ही नहीं होता, वह समाज के लिए हानिकारक भी होता है। जो मन को नहीं मार सकता है, जिसे झुकना और छोटा बनना नहीं आता है, जिसे दूसरों की सुविधा और दूसरों को निभाने की दृष्टि से झुकना और राह छोड़ना नहीं आता है वह जिन्दगी में कभी कुछ नहीं कमा पाता है उसे जिन्दगी में संतोष भी नहीं मिलता है।

३४०९. जहाँ-कहीं भी जो कुछ खाकर, जैसा-तैसा वस्त्र पहन कर जहाँ-कहीं भी रहकर जो

आत्म संतुष्ट रहता है, निर्जन स्थान में रहता है और दूसरों के संसर्ग को त्यागता है अर्थात् हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहने वाला सुखी होता है।

३४१०. मित्रों के झगड़े शत्रुओं के सुअवसर होते हैं।

३४११. जब दो लोग झगड़ते हैं तब दोनों गलती पर होते हैं।

३४१२. टूटने की अपेक्षा झुकना अच्छा है।

३४१३. जो कार्य किसी समय किए जाने की बात है, वह कभी भी नहीं किया जाएगा।

३४१४. स्वार्थी व्यक्ति सबसे अधिक ठगा हुआ है।

३४१५. धूर्त होने से मूर्ख होना अधिक अच्छा है।

३४१६. दुर्जन, शिल्पी, दास, दुष्ट, ढोल तथा स्त्रियाँ ताड़ित होने पर मृदु होते हैं, ये सत्कार योग्य नहीं है, ये ज्यादा सम्मान करने पर सिर पर चढ़ते हैं।

३४१७. जो व्यक्ति जितना अशिक्षित है, वह उतना गरीब है।

३४१८. अहंकार ही पराजय का द्वार है।

३४१९. किसी की आलोचना न करो जिससे तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे।

३४२०. एक शेर को भी मक्खियों से अपनी रक्षा करनी पड़ती है।

३४२१. उन्नति वही कर सकता है, जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।

३४२२. उदाहरण प्रस्तुत करना उपदेश देने से अच्छा है।

३४२३. सफल और असफल होने वालों के बीच कोई अंतर नहीं होता, केवल यह अंतर होता है कि एक केवल शारीरिक परिश्रम करता है और दूसरा कार्य को बुद्धि और ध्यान को एकाग्र करके करता है।

३४२४. प्रशंसा विवेकी को नम्र बनाती है और मूर्ख को अहंकारी बनाकर उसके दुर्बल मन को मदहोश कर देती है।

३४२५. एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म देती है।

३४२६. जो मनुष्य भलाई के बदले में बुराई करता है, उसके मन में बुराई सदा निवास करती है।

३४२७. स्वयं की बुराई को छिपाने से वह पनपती और बढ़ती है।

३४२८. बुराई नौका में छिद्र में समान है, वह छोटी हो या बड़ी, एक दिन नौका को डुबो देती है।

३४२९. बुद्धिमान दूसरों की हानि से शिक्षा ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख अपनी हानि से भी कुछ नहीं सीख पाते हैं।

३४३०. बुद्धिमान मनुष्य के दिल में एक आईने की तरह सभी चीजों का बिम्ब पड़ना चाहिए पर उनमें से किसी की वजह से मैल नहीं आना चाहिए।

३४३१. भलाई करने वाला पराया भी भाई के समान होता है और भाई भी यदि अहित चाहे तो वह शत्रु ही है।

३४३२. बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ के द्वारा निर्मित होता है।
३४३३. यदि तुम्हारे भाग्य में डूबकर मरना है, तो तुम चम्मच भर पानी में भी डूब मरोगे।
३४३४. जिस क्षण हमें अपनी भूल मालूम हो, उसी क्षण हमारा पुनर्जन्म हुआ मानो।
३४३५. शिक्षा, उपदेश, सत्संग किसी से भी हमारे ऊपर उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जितना अपनी भूलों के कुपरिणाम को देखकर पड़ता है।
३४३६. अपने मन की गुप्त बातें किसी को न बतावें, मन के भेद दूसरे को देने वाले लोग सदा ही धोखा खाते हैं।
३४३९. अपने मन को जीतना कठिन है, लेकिन जब मन को जीत लिया तो सब कुछ जीत लिया, जो कि अभ्यास और वैराग्य से जीता जाता है।
३४४०. जैसे लाडले बच्चे का मन हमेशा अतृप्त रहता है, अतः मन को लाड़ कम करके उसे दबाकर रखना चाहिए।
३४४१. जिसको रहस्य गोपनीय रखना नहीं आता वह सफलता का मुँह नहीं देख सकता है।
३४४२. जो व्यक्ति अपना रहस्य अपने सेवक को बताता है वह सेवक को अपना स्वामी बना लेता है।
३४४३. एक साथ ही लक्ष्मी और विवेक का वरदान प्रायः मनुष्यों को कम ही मिलता है।
३४४४. एक व्यवहार बुद्धि सौ अव्यवहार बुद्धियों से अच्छी है।
३४४५. विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला है।
३४४६. क्रोध से वैसे काम नहीं बनते जैसे शान्ति से बनते हैं।
३४४७. जिसमें शान्ति का निवास नहीं है, उसके सारे सद्‌गुण व्यर्थ हैं।
३४४८. अगर तुम एक समय में बहुत से काम करना चाहोगे तो तुम किसी भी काम में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकोगे।
३४४९. मनुष्य जितने सम्मान के लायक हो, उतना ही उसका सम्मान करना चाहिए, उससे अधिक नहीं अन्यथा उसके गिरने का डर रहता है
३४५०. जहाँ अपूज्यों की पूजा होती है तथा पूज्यों का अपमान होता है, वहाँ दुर्भिक्ष, मरण तथा भय ये तीनों होते हैं।
३४५१. किसी प्रकार की हानि से रहित बोलने को सत्य बोलना कहते हैं।
३४५२. ज्ञानी पुरुष विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से शिक्षित होता है।
३४५३. दूसरों के दुर्भाग्य से सावधानी सीखना ही अधिक उचित है।
३४५४. काँटों पर चलने वाले नंगे पाँव नहीं चला करते हैं।
३४५५. लँगड़े की संगति में रहोगे तो तुम भी लगड़ा कर चलने लगोगे।

३४५६. जरूरी नहीं कि जो रूप में ठीक हो वह सद्गुण सम्पन्न भी हो।

३४५७. अच्छा स्वभाव सदा सौन्दर्य के अभाव को पूरा कर देगा किन्तु सौन्दर्य अच्छे स्वभाव के अभाव की पूर्ति नहीं कर सकता है।

३४५८. बिना सद्गुण के सुंदरता अभिशाप है।

३४५९. सर्वोत्तम मनुष्य त्रुटियों से ढलकर ही निकलते हैं।

३४६०. जो गलती करता है वह मनुष्य है। जिसे गलती पर दुःख है वह संत है, जिसे गलती का घमंड है, वह शैतान है।

३४६१. दूसरों की त्रुटियाँ सुनकर प्रसन्न होने वाला अपनी बुराईयाँ सुनकर क्षुब्ध होगा।

३४६२. विवेकशील पुरुष दूसरों की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।

३४६३. जब तुम्हारा मन सत्य से विमुख होकर असत्य की ओर झुकने लगे तो समझ लो कि तुम्हारा सर्वनाश निकट ही है।

३४६४. संसार धर्मात्मा और न्याय परायण पुरुष की निर्धनता को हेय (हीन) दृष्टि से नहीं देखता है।

३४६५. यदि तुम मांस खाओगे तो नरक का द्वार तुम्हारे बाहर निकलने के लिए कभी नहीं खुलेगा।

३४६६. जिसका मन सत्यशीलता में निमग्न है, वह पुरुष तपस्वी से भी महान् और दानी से भी श्रेष्ठ है।

३४६७. तुम जिन बातों के रसिक हो, उनका पता यदि तुम शत्रुओं को न चलने दोगे; तो तुम्हारे शत्रुओं की योजनायें निष्फल सिद्ध होंगी।

३४६८. यदि समुचित रणभूमि को चुन लें और सावधानी के साथ युद्ध करें, तो दुर्बल भी अपनी रक्षा करके शक्तिशाली शत्रु को जीत सकते हैं।

३४६९. वैभव असावधान लोगों के लिए नहीं है ऐसा संसार के सभी विज्ञजनों का अभिमत है।

३४७०. पूर्ण विचार करो और किसी की ओर मत झुको, निष्पक्ष होकर नीतिज्ञजनों की सम्मति लो, न्याय की यही रीति है।

३४७१. दुष्टों को मृत्यु दण्ड देना अनाज के खेत से घास को बाहर निकालने के समान है।

३४७२. छल-छिद्र द्वारा संचित किया हुआ धन ऐसा ही है जैसे कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भरकर रखना है।

३४७३. अधूरा काम और पराजित शत्रु–ये दो बुझी चिंगारियों के समान हैं, वे समय पाकर बढ़ जाते हैं और असावधान आदमी को आ दबोचते हैं।

३४७४. लोग एक हाथी को दूसरे हाथी का माध्यम बनाकर पकड़ते हैं, ठीक इसी प्रकार एक काम को दूसरे काम का साधन बना लेना चाहिए।

३४७५. दुर्बलों को सदा संकट की स्थिति में नहीं रहना चाहिए, बल्कि जब अवसर मिले, तब उन्हें बलवान् के साथ संधि कर लेना चाहिए।

३४७६. जो व्यक्ति ज्ञानी मनुष्यों के समुदाय में अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रह सकता है, वही विद्वानों में विद्वान् माना जाता है।

३४७७. जो व्यक्ति मानव समुदाय के सामने आने में डरते हैं और अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में असमर्थ हैं, वे जीवित होकर भी मृतकों से भी गये बीते हैं।

३४७८. तुम उन लोगों को भले ही शत्रु बनाओ, जिनका हथियार धनुष बाण है परन्तु उन लोगों को कभी मत छेड़ो जिनका हथियार जिह्वा है।

३४७९. यदि तुमको बिना किसी सहायक के अकेले दो शत्रुओं से लड़ने का अवसर आए तो उनमें से किसी एक को अपनी ओर मिला लेने की चेष्टा करो।

३४८०. अपनी कठिनाइयों का हाल उन लोगों में प्रकट न करो, जो अभी तक उनसे अनजान हैं और अपनी दुर्बलताएँ बेटियों को ज्ञात न होने दो।

३४८१. जो लोग अपना अपमान करने वालों का गर्व चूर्ण नहीं करते, वे वास्तव में बहुत समय तक नहीं टिकेंगे।

३४८२. यदि कोई मनुष्य महात्माओं का अनादर करेगा तो उनकी शक्ति से उसके सिर पर अनन्त आपत्तियाँ आ टूटेगी।

३४८३. उच्च कुल में उत्पन्न होने पर भी यदि कोई सच्चरित्र नहीं है तो वह उच्च नहीं हो सकता और हीनवंश में जन्म लेने मात्र से ही कोई पवित्र आचार वाला नीच नहीं हो सकता है।

३४८४. बड़प्पन सदैव ही दूसरों के दोषों को ढँकने के यत्न में रहता है, पर ओछापन दूसरों के दोषों को खोजने के सिवाय और कुछ करना ही नहीं जानता है

निंदा जिन्दा की होती है, मृतक की सब प्रशंसा करते हैं

३४८५. संसार, शरीर, भोगों से उदासीनता ही संन्यास कहलाता है।

३४८६. बुद्धिमान का यह कर्त्तव्य है कि अपने से बड़ी बुद्धि वाले को प्रणाम करें।

३४८७. जहाँ गुरु निन्दा चल रही हो वहाँ कान ढक लेना चाहिए या अन्यत्र चले जाना चाहिए क्योंकि जो दूसरों के द्वारा की गई गुरु अथवा स्वामी की निन्दा को सुनता है तथा सुनकर कुपित नहीं होता वह पुरुष कृतघ्न कहलाता है।

३४८८. यहाँ पर प्रायः नीच कुल में उत्पन्न हुए लोग कुलीन की, सौभाग्य हीन स्त्री पति की, कंजूस दानी की, अपवित्र पवित्रों की, निर्धन धनवानों की, कुरूप सुन्दर शरीर वालों की, पापी धर्मात्मा की, मूर्ख शास्त्रों के ज्ञाता-विद्वानों की और मिथ्यादृष्टि संतों की निन्दा करते हैं। गुरु का उपहास करने से व्यक्ति मरने पर गधा, निन्दा करने से कुत्ता उनकी सम्पत्ति का भोग करने से कृमि और ईर्ष्या करने से कीड़ा होता है।

३४८९. किसी मनुष्य की बुराई पर विश्वास मत करो, जब तक आप स्वयं उसे देख न लो और बुराई सचमुच देखने में आए भी तो उसे भूल जाओ, किसी पर प्रकट न करने लगो।

३४९०. वीरता भलाई करने में नहीं है, प्रत्युत किसी की भी बुराई न करने में है।

३४९१. अपने से अधिक शक्तिशाली के साथ वैर करना परिणाम में दुःखद होता है।

३४९२. सज्जन पुरुष दूसरे के दोष सुनने के समय बहरे बन जाते हैं।

३४९३. शीलवान, चरित्रवान सन्तों का उपहास उड़ाने से चरित्र हीन सन्तान उत्पन्न होती है।

३४९४. माँ को सबसे ज्यादा दुःख तब होता है जब बेटा पत्नि के सामने माँ को डाँटता है।

३४९५. जुआ के साथ विषाद (खेद), कलह, झगड़ा (बंधन), क्रोध, मान, मायाचारी (बुद्धिभ्रम), चुगली, मत्सर और शोक ये नौ अवगुण रहते हैं।

३४९६. जुआ से धर्म, लक्ष्मी, सुबुद्धि, सुख, सत्य, प्रतिष्ठा, शौच, श्रद्धा, विश्वास और सदगति ये दसों नष्ट हो जाते हैं। जुआ अनेक अनर्थों को करने वाला है।

३४९७. लोगों की विचित्रता देखो–परमात्मा की पूजा के लिए बहाने बनाते हैं कि समय नहीं है और कुर्सी के राग में कम्बल पैसों को बाँटने घर-घर घूमते हैं, लौकिक पद की लोलुपता में पैसा बाँट कर समय बर्बाद कर रहे हैं और परम पद के लिए समय नहीं है।

३४९८. गुरु के सामने झूठ बोलने से आत्मा का पतन होता है और डॉक्टर के सामने झूठ बोलने से शरीर का पतन होता है।

३४९९. छह तीखी तलवारें–अत्यधिक अभिमान, अधिक बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, अपना ही पेट पालने की चिन्ता और मित्र द्रोह ये मनुष्य की आयु को घटाती हैं।

३५००. माता-पिता हाथ से मल-मूत्र धोते हैं, निंदक जीभ से, अतः माता-पिता से निंदक श्रेष्ठ हैं।

३५०१. आत्मप्रशंसा और परनिन्दा करने वाला नीचगति में जन्म लेता है।

३५०२. जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है।

३५०३. झूठ हमेशा सुख देने का ही आश्वासन देता है पर देता कभी नहीं हैं।

३५०४. झूठ बोलना कायरता की निशानी है।

३५०५. सन्तों का धर्म है अहिंसा और योग्य पुरुषों का धर्म है पर निंदा से परहेज करना।

३५०६. निंदा एक ऐसा अवगुण है जो दुहरी मार मारता है यह निंदक तथा निंदित दोनों को घायल करता है।

३५०७. निन्दा अनेक पापों की जननी है।

३५०८. स्वयं की निन्दा करना व सुनना श्रेष्ठता के लक्षण हैं।

३५०९. कामुक, चुगलखोर तथा दूसरों की बातों को छुपकर सुनने वाला व्यक्ति अपनी पोल अपने आप खोल देता है।

३५१०. अपने को श्रेष्ठ दूसरों को अश्रेष्ठ समझने वालों के लिए निन्दा का रस सब रसों में उत्तम होता है।

३५११. दूसरों पर कीचड़ न फेंको, हो सकता है कि आप निशाना चूक जाओ, फिर उसका बुरा हो या न हो किन्तु आपके हाथ तो खराब हो ही जाएँगे।

३५१२. निंदक आलोचक से घबराना नहीं चाहिए क्योंकि हर नायक की पहचान खलनायक से ही होती है।

३५१३. दूसरों की निन्दा करके हम अपने बुरे होने का प्रमाण देते हैं।

३५१४. किसी के मुख से कोई बात अपने विरुद्ध सुनकर उसे अपना विरोधी मत मानों बल्कि विरोध का कारण ढूँढ़ों और उसे मिटाने की सच्चे हृदय से चेष्टा करो।

३५१५. कभी-कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है।

३५१६. जिसके पीछे खलनायक लग जाता है उस नायक का नाम अपने आप ऊँचा हो जाता है।

३५१७. विरोध प्रचार की कुँजी है, इसलिए विरोधी प्रचारक सिद्ध होते हैं।

३५१८. हाथी को देखकर कुत्ते भौंकते हैं, पर कुत्ते को देखकर हाथी कभी नहीं भौंकता है।

३५१९. निन्दा से निष्प्रभावी रहने के लिए प्रशंसा से अप्रभावित रहिए।

३५२०. दूसरों की निन्दा करके अपने उभय लोक के दुश्मन मत बढ़ाइये।

३५२१. किसी पर कीचड़ उछालने से पहले इतना अवश्य सोच लें कि हम भी दूध के धुले नहीं हैं।

३५२२. सिंह के साथ वन में रहना, हाथ में बिच्छू को लेना, कान में कनखजूरे को डालना, साँप के मुख में अँगुली डालना, विष पीना अच्छा है किन्तु धर्म व धर्मात्मा की निन्दा करना व दुष्ट के संग रहना अच्छा नहीं है, कारण कि इनकी संगति से एक ही भव बिगड़ता है किन्तु सन्त निन्दा से तो अनन्तों जन्म बिगड़ जाते हैं।

३५२३. किसी की निंदा मत करो क्योंकि जिसे आपने मार्ग का पत्थर समझा है वह पत्थर प्रतिमा भी बन सकता है, आपने जिस मार्ग के पत्थर को बेकार समझा है वही मंजिल की सीढ़ी बन सकता है।

३५२४. मुनियों के दोषों का चिन्तन करने वाला मनुष्य भाग्यहीन, विकलांग, मूर्ख, विवेक रहित, नपुंसक और नीच कार्य करने वाला नीच होता है।

३५२५. उन्हें स्वामिभक्त न समझें, जो आपकी हर कथनी व करनी की प्रशंसा करते हैं अपितु उन्हें स्वामिभक्त समझें जो आपके दोषों की मृदुल आलोचना करते हैं।

३५२६. ना समझ लोगों द्वारा की गयी तारीफ की अपेक्षा समझदार की आलोचना अच्छी होती है।

३५२७. जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता

है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा लेता है, उसी का प्रायश्चित्त शुद्धतम है।

३५२८. अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्ट साहस है।

३५२९. सुनने वाले लाखों है, सुनाने वाले हजारों हैं, समझने वाले सैकड़ों हैं परन्तु सत्कार्य करने वाले कोई विरले ही हैं, सच्चे पुरुष वे ही हैं और सच्चा लाभ भी उन्हीं को प्राप्त होता है जो सत्कर्म करते हैं।

३५३०. मनुष्य की अच्छी बात तो दब जाती है और बुराई तथा बदनामी की बात लू की तरह (भाँति) शीघ्र चारों ओर फैल जाती है।

३५३१. अपने कर्तव्य में प्रयत्नशील रहना और चुप रहना बदनामी का सबसे अच्छा उत्तर है।

३५३२. यदि आपकी बुराई की जाये और वह सच हो तो स्वयं को सुधार लो और यदि वह असत्य हो, तो उस पर मुस्करा दो।

३५३३. जो अपना कल्याण चाहता है, उसे किसी के भी प्रति बुरी भावना नहीं करनी चाहिए।

३५३४. दूसरों के प्रति हमारी बुरी भावना होने से उनका बुरा होगा या नहीं होगा यह तो निश्चित नहीं है, पर हमारा अन्तःकरण तो मैला हो ही जायेगा।

३५३५. भला बनने के लिए हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है, केवल बुराई सर्वथा छोड़ दें तो हम भले हो जायेंगे।

३५३६. वही सुखी होता है जो अपने किए पापों का सदा पश्चाताप करता रहता है।

३५३७. यह मत सोचो की लोग क्या कहेंगे? क्योंकि उनको जो कहना है वे तो कहेंगे ही। एक बार चंदू दादा जी अपने पप्पू को घोड़े पर बिठाकर जा रहे थे, तो कुछ लोगों ने देखकर कहा–बेटा आपको शर्म नहीं आती दादाजी पैदल चल रहे और आप घोड़े पर बैठे हो। तो पप्पू घोड़े से उतरकर चलने लगा और दादाजी को घोड़े पर बिठा दिया, आगे कुछ लोगों ने कहा–अरे दादाजी जरा विचार करो छोटा-सा बच्चा पैदल चल रहा और आप घोड़े पर बैठे हो तो अब वे दोनों घोड़े पर बैठकर आगे बढ़े परन्तु पुनः किसी ने कहा–क्या आपके पास दया नाम की कोई चीज नहीं है, जो एक घोड़े पर दोनों बैठे हो, अतः अब वे दोनों पैदल घोड़े को लेकर चलने लगे लेकिन एक व्यक्ति ने कहा–दुनिया में बहुत मूर्ख देखे हैं पर आप जैसे नहीं, जो घोड़े को साथ लिए हो और फिर भी पैदल चल रहे हो।

३५३८. रावण जैसे महाज्ञानी भी स्त्री के रूप आदि से मोहित होकर अपना विवेक खो गये थे।

३५३९. जिस बाप ने दुकान को खड़ा किया, बकरे की पर्याय में वह वहाँ खड़े होने लायक नहीं रहता है।

३५४०. संसारी प्राणी निंदा में अपनी हानि समझकर लोकलाज से संक्लिष्ट बना रहता है।

३५४१. निंदक स्वयं नरक का भार लेता है और दूसरों को नरक से बचाता है।

३५४२. उद्यापन में समाज को भोजन कराने की इस विकृत परम्परा के कारण असमर्थ लोग व्रत करने से डरने लगे हैं।

३५४३. मंदिर की द्रव्य से पूजा करके होटल की कचौरी बराबर भी पैसा दान नहीं देते हैं।

३५४४. जिसने ९ माह पेट में रखा, दूध पिलाया, बड़ा किया उसी माँ के आँसू बहाये तब दूसरे के साथ क्या करोगे?

३५४५. नौकर की जरूरत पड़ती है तब बाप की याद आती है दरअसल बाप से ज्यादा भरोसेमंद नौकर कहाँ मिलेगा?

३५४६. व्यक्ति जितना कर्मबंध भोग-भोगकर नहीं करता, उससे अधिक नयनों से निहारकर करता है।

३५४७. गलती निकालने के लिए बुद्धि चाहिए, गलती स्वीकारने के लिए 'कलेजा' चाहिए, गलती करना पाप है, पर उसे छुपाना महापाप है।

३५४८. हर व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं, लेकिन कुछ लोगों को गलतियाँ करने का शौक होता है जो एकदम बुरी बात है।

३५४९. एक माँ बेटे को जन्म देने के लिए सुन्दरता को त्याग देती है और वही बेटा एक सुन्दर पत्नि को पाने के लिए माँ को त्याग देता है।

३५५०. जुआ सगे बाप का न हुआ। जुआ के कारण ही युधिष्ठिर आदि पाँच पाण्डवों को १२ वर्ष तक वनवास हुआ था, जिससे द्रौपदी आदि को एवं समस्त परिवार को दुःखी होना पड़ा था।

३५५१. शराब पीने से प्राणी की स्मरण शक्ति क्षीण होती है, शराब से व्यक्ति की कामाग्नि अति तीव्र होती है, जिससे व्यक्ति स्वस्त्री से संतुष्ट न होकर परस्त्री एवं वेश्या सेवन करता है। शिकारी सदा भिखारीवत् होता है।

३५५२. जैसे कौआ जल से पूर्ण तालाब के रहते हुए भी घड़े का पानी पीता है, वैसे ही नीच मनुष्य स्त्री के अपने अधीन रहते हुए भी पर स्त्री लम्पट होता है।

३५५३. समीचीन मार्ग से स्खलन होना, विवेक का नष्ट होना, बुद्धि रूपी लता का उखाड़ा जाना, अपने शरीर का दमन, नीचत्व की प्राप्ति, सम्यग्ज्ञान का आवरण, अपने धन का हरण, पाप की वृद्धि ये सब दोष पर स्त्री सेवन से होते हैं, परस्त्री सेवन की बात ही क्या कहे दर्शन ही क्लेश दायक होता है।

३५५४. कभी किसी का विरोध नहीं करना चाहिए क्योंकि विरोध करने से अपना ही नाश होता है, अन्य का कुछ नहीं बिगड़ता है।

३५५५. वो बुलन्दियाँ व्यर्थ हैं जहाँ पहुँचने के लिए अपनों को ही रौंदा जाता है।

३५५६. रात्रि भोजन से यह मनुष्य इस लोक में कुष्ठ तथा पित्त के प्रकोप आदि समस्त रोगों के

समूह को और परलोक में नरकादि गतियों को पाता है।

३५५७. निर्माल्य को (देव-शास्त्र-गुरु के द्रव्य को) जो स्वीकृत करता है वह वंशच्छेद को प्राप्त कर बाद में दुर्गति को प्राप्त करता है।

३५५८. प्राणों का परित्याग करना अच्छा है परन्तु व्रतादि का भंग करना श्रेष्ठ नहीं है, गुरु तथा देव की आज्ञा का लोप करने से यह जीव नरक एवं तिर्यञ्च गति को प्राप्त होता है।

३५५९. धर्म-धर्मात्मा का सदा पक्ष लेना चाहिए।

३५६०. जो पुरुष मनुष्य भव में समीचीन धर्म को छोड़कर संसार में उत्पन्न सुख को भोगता है वह अमृत को छोड़कर महाविष को ग्रहण करता है।

३५६१. जो मनुष्य सहधर्मी भाई के साथ राग-द्वेष करते हैं, उन्हें दुष्ट अभिप्राय वाले महा निन्द्यनीय, मिथ्यादृष्टि अधम जानना चाहिए।

३५६२. निंदा करना और सुनना दोनों पाप हैं।

३५६३. अपनी निंदा सहने वाला व्यक्ति मानों विश्व पर विजय प्राप्त कर लेता है।

३५६४. प्रत्येक कि निंदा सुनो किन्तु अपना फैसला गुप्त रखो।

३५६५. उपहास मृत्यु से अधिक कटु है।

४१. दाम करे सब काम

३५६६. तुम चाहे गाय के लिए पानी ही क्यों न माँगो, फिर भी जिह्वा के लिए याचना सूचक शब्दों को उच्चारण करने से बढ़कर अपमान जनक बात और कोई नहीं है।

३५६७. पहले कपड़ों में गरीबी, आचरण में अमीरी होती थी, आज आचरण में गरीबी है, कपड़ों में अमीरी है।

३५६८. मनुष्य तभी तक वास्तविक गुणों का घर है, बुद्धिमान, सज्जन, प्रिय, शूरवीर, चरित्रवान, कलंकरहित, स्वाभिमानी, कृतज्ञ, पंडित, चतुर, धर्मरत, शील गुण सहित और प्रतिष्ठा से युक्त रहता है जब तक निष्ठुर वज्रपात के समान 'देहि' याचना का वचन नहीं कहता है।

३५६९. भीख माँगने से नहीं, लाभान्तराय के क्षयोपशम से मिलती है।

३५७०. संसार में मनुष्य की दरिद्रता ही मृत्यु है और धन ही आयु है।

३५७१. निर्धनता मनुष्य में चिंता उत्पन्न करती है, दूसरों से अपमान कराती है शत्रुता उत्पन्न करती है, मित्रों से घृणा का पात्र बनाती है और आत्मीय जनों से विरोध कराती है, निर्धन व्यक्ति की घर छोड़कर वन जाने की इच्छा होती है, उसे स्त्री से भी अपमान सहना पड़ता है, हृदय स्थित शोकाग्नि एक बार ही जला नहीं डालती अपितु संतप्त करती रहती है।

३५७२. गरीब वह नहीं है, जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है।

३५७३. सत्यानाशनी दरिद्रता इस जन्म के सुखों की तो शत्रु है ही, पर साथ ही साथ दूसरे जन्म

के सुखोपभोग की भी घातक है।

३५७४. उस एक अभिशाप के नीचे, जिसे लोग 'दरिद्रता' कहते हैं, हजार तरह की आपत्तियाँ और उपद्रव छिपे हुए हैं।

३५७५. जो लोग माँगते हैं उनसे आचार्य एक भिक्षा माँगते हैं कि यदि तुम्हें माँगना ही है, तो उन लोगों से माँगो जो देने में हीला-हवाली नहीं करते हैं।

४२. घड़ी घड़ी सजगता

३५७६. जिन्दगी में दो लोगों का ख्याल रखना बहुत जरूरी है एक पिता जिसने आपकी जीत के लिए सब कुछ हारा है और दूसरी 'माँ' जिसको तुमने हर दुःख में पुकारा है।

३५७७. समय मूल्यवान है पर सत्य समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान है।

३५७८. जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ धन कमाये हुए धन के बराबर है। इसलिए जिन्हें समय का मूल्य नहीं, वे दुनिया का कितना धन खो देते होंगे इसका हिसाब कौन लगा सकता है?

३५७९. समय रूपी अमृत बहता जा रहा है, संभव है तुम्हें प्यास बुझाने का अवसर फिर न मिले।

३५८०. जो समय चिंता में गया, समझो कूड़ेदान में गया, जो समय चिंतन में गया, समझो तिजोरी में जमा हो गया।

३५८१. चक्रवर्ती की सम्पूर्ण सम्पदा से भी मनुष्य भव का एक समय कीमती है।

३५८२. जो समय को नष्ट करता है, उसे समय नष्ट कर देता है।

३५८३. समय को नहीं कर्मों को काटो।

३५८४. समय का सदुपयोग करने वाला ही समयसार (आत्मा के सार) को उपलब्ध कर पाता है।

३५८५. समय हाथ से निकल जाने पर केवल पश्चाताप ही हाथ लगता है।

३५८६. समय एवं सम्पत्ति का सदुपयोग करो, स्वस्थ जीवन का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

३५८७. यदि आपको जीवन प्यारा है तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ।

३५८८. जो समय की कीमत नहीं करता वह कोई महान् कार्य नहीं कर सकता है।

३५८६. विश्व में दरिद्रता के समान कोई कष्ट नहीं है।

३५८७. दिन में मत सोओ, पुरुषार्थ करो दरिद्रता दूर हो जायेगी।

३५८८. माता-पिता और शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को घर से ही नियमितता का पाठ पढ़ायें।

३५८९. यदि कोई मनुष्य अपना कार्य नियमित रूप से नहीं करता है, तो उसे सफलता कदापि नहीं मिल सकती है।

३५९०. गहरी नींद सुखजनक एवं अनिद्रा आलस्य व अशक्ति की सूचक होती है।

३५९१. अव्यवस्थित दिनचर्या सदैव हानिकारक होती है, इससे आप पराधीन हो जाते हैं और आपके गुणों को अवगुणों की चादर ढँक लेती है, फिर शुरू होता है समस्याओं का अंतहीन सिलसिला। अपनी आवश्यकताएँ कम करके आप वास्तविक शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

३५९२. एक क्षण भी स्वाध्याय, सत्समागम और ध्यान छोड़ना आपत्ति में पड़ना है अतः उन सब उपायों से अपने आपके आचरण को शुद्ध रखो।

३५९३. ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास और विनय विद्यार्थी की उन्नति का मूल है, यही सच्चा जीवन बनाने की त्रिपुटी है।

३५९४. सत्संग व निरन्तर ज्ञानोपयोग के बिना कल्याण पथ पर अविचल चलना अत्यन्त दुष्कर है।

३५९५. घड़ी घंटा की टक्कर मनुष्यों के आगे यही कहती है कि हितकारी धर्म का संचय कर लो क्योंकि गयी हुई घड़ी वापस नहीं आती है।

३५९६. घड़ी, घड़ी-घड़ी सचेत करती है कि समय को सार्थक करो।

३५९७. अपनी स्त्री, भोजन और धन इन्हीं तीनों में संतोष करना चाहिए, विद्या पढ़ना, जाप करना-कराना और दान देने में संतोष नहीं करना चाहिए।

४३. पुरुष हो, पुरुषार्थ करो

३५९८. हिरणों के भय से क्या खेती नहीं की जाती? अजीर्ण के भय से क्या भोजन छोड़ दिया जाता है? खटमलों के भय से क्या बिस्तर छोड़ दिये जाते हैं? अर्थात् नहीं, तो उसी प्रकार विघ्नों के भय से सज्जन पुरुष संयम (कर्त्तव्य) पथ को नहीं छोड़ते हैं।

३५९९. भविष्य की कल्पना छोड़ो, अतीत की चिंता छोड़ो, वर्तमान में जीना सीखो।

३६००. हर साल एक बुरी आदत को जड़ से खोदकर फेंका जाए तो कुछ ही साल में एक बुरे से बुरा आदमी भी भला इंसान बन सकता है।

३६०१. आदमी पहले नेक और ईमानदार बने फिर बाद में धर्मात्मा कहलाने का हकदार बने।

३६०२. संत आदेश-उपदेश नहीं सिर्फ सन्देश देते हैं, आदेश अहंकारी देता है, उपदेश अरहंत देते हैं और सन्देश संत देते हैं।

३६०३. वर्तमान समय में घरों में और समाज में जो अशान्ति, कलह, संघर्ष, देखने में आ रहा है, उसमें मूल कारण यही है कि लोग अपने अधिकार की माँग तो करते हैं, पर अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते हैं।

३६०४. पुत्र के प्रति पिता का कर्त्तव्य यही है कि उसे सभा में प्रथम पंक्ति में बैठने योग्य बना दें।

३६०५. शीघ्र करने योग्य कार्य को विलंब से किए जाने पर उसका महत्त्व (फल) नष्ट हो जाता है।

३६०६. काम करने से जीवन को शक्ति मिलती है और संयम से जीवन को सुन्दरता प्राप्त होती है।

३६०७. काम करने से पूर्व सोचना बुद्धिमत्ता है, काम करते समय सोचना सतर्कता है, काम कर चुकने के बाद सोचना मूर्खता है।

३६०८. साठ साल के व्यक्ति को और आठ साल के बच्चे को घर छोड़ देना चाहिए, बच्चे को शिक्षा के लिए और व्यक्ति को दीक्षा के लिए।

३६०९. करना चाहते हो तो सेवा करो, जानना चाहते हो तो अपने आप को जानो और मानना चाहते हो तो प्रभु को मानो तीनों का परिणाम एक ही होगा।

३६१०. शरीर को श्रमी, मन को संयमी, बुद्धि को विवेकशील, हृदय को अनुरागी (प्रेमी) और अपने आपको अहंकार शून्य बनाकर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बनो।

३६११. पुरुषार्थ हीन भाग्य अथवा भाग्यहीन पुरुषार्थ इन दो ही कारणों से मनुष्य का उद्योग निष्फल होता है। अतः पुण्य कमाओ साथ में पुरुषार्थ करो।

३६१२. जो पुरुषार्थ को छोड़कर भाग्य भरोसे बैठते हैं वे अपने ही शत्रु हैं और धर्म अर्थ काम व मोक्ष का नाश करते हैं।

३६१३. जो श्रेष्ठ बनने का पुरुषार्थ करता है वह स्वमेव ज्येष्ठ बन जाता है।

३६१४. भाग्य पर नहीं पुरुषार्थ और चारित्र पर निर्भर रहो।

३६१५. कार्य की सिद्धि समय पर किए गये सम्यक् पुरुषार्थ से होती है।

३६१६. वही जीवित है जिसका मस्तिष्क ठंडा, रक्त गरम, हृदय कोमल और पुरुषार्थ प्रखर है।

३६१७. हमें किसी खास समय का इन्तजार नहीं करना चाहिए बल्कि हर समय को खास बनाने की पूरी कोशिश करना चाहिए।

३६१८. भोजन मिलता भाग्य से है पर पेट भरता पुरुषार्थ से ही है।

३६१९. भगवान् की पूजा ही न करें अपितु भगवान् बनने का पुरुषार्थ भी करें।

३६२०. त्याग वेष की ओर तुम्हारा प्रयास शान्ति के लिए था। इस समय कहाँ हो? विचार करो और सर्व पुरुषार्थ से अपने उद्देश्य पर पहुँचो।

३६२१. जिसमें आत्मा का हित हो वह पुरुषार्थ है, लौकिक कार्यों का प्रयोग यथार्थ पुरुषार्थ नहीं है। ''सदाचार से आगे बढ़ना पुरुषार्थ है।''

३६२२. पुरुषार्थ बिना कोई जीव एक क्षण नहीं रहता, चाहे सीधा पुरुषार्थ करे या उल्टा क्योंकि पुरुषार्थ यानि वीर्य गुण है गुण का अभाव होने पर गुणी का अभाव हो जाता है।

३६२३. पुरुषार्थ कर्माधीन नहीं क्योंकि वह आत्मा का गुण है, कर्म के उदय में वह गुण विकृत रूप परिणमता है और कर्म के अभाव में स्वभाव के अनुकूल परिणमन करता है।

३६२४. लोग कहते हैं कि कुछ न करना प्रमाद है, कार्य करते रहना पुरुषार्थ है, तत्त्व कहता है कार्य करना प्रमाद है त्रियोग से कुछ न करना पुरुषार्थ है।

३६२५. पुरुषार्थ हीन भाग्य भरोसे चलने वाले व्यक्ति का विनाश अवश्यंभावी है।

३६२६. पुरुषार्थ की युक्ति से मिलती बंधनों से मुक्ति।

३६२७. भाग्य भी मनुष्य के पुरुषार्थ से बदलता है, अतः पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

३६२८. कामयाबी के दरवाजे उन्हीं के लिए खुलते हैं जो सम्यक् पुरुषार्थ करते हैं।

३६२९. जो बेवक्त पर काम करते हैं वह नियम से असफल होते हैं।

३६३०. व्यर्थ में समय बर्बाद मत करो यदि किसी प्रश्न का उत्तर एक शब्द में होता है तो एक शब्द बोलकर बात खत्म कर दो।

३६३१. पर के दोष कहने में मौन हो जाना चाहिए।

३६३२. बुद्धिमान को ऋण, घाव, अग्नि और शत्रु की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये समय पाकर असाध्य हो जाते हैं।

३६३३. सम्यग्दृष्टि के पास समता का कवच होता है।

३६३४. जैसे कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिन्तामणि रत्न, रसायन और पारसमणि को पाने वाला मनुष्य यथेच्छ सुख भोगता है उसी प्रकार सम्यक्त्व को पाने वाला जानो।

३६३५. कान से जल्दी आँख ग्रहण करती है और कान की बात तो भूल सकते हैं परन्तु आँखों की देखी बात भूलते नहीं है इसलिए अच्छे निमित्तों का देखना और बुरे निमित्तों को नहीं देखना महत्त्वपूर्ण है।

३६३६. मुमुक्षु विषयों की अभिलाषा को दावानल से भी अधिक कष्टप्रद मानता है।

३६३७. यदि आप में किसी को प्रभावित करने की क्षमता नहीं है तो अप्रभावित भी नहीं करना चाहिए।

३६३८. जिसने अपमान से जीना नहीं सीखा, वो सम्मान को कभी पचा नहीं पायेगा और वह जगत् सम्मानी भी नहीं बन पायेगा।

३६३९. यदि ज्ञानवान चारित्रवान का और चारित्रवान ज्ञानवान का अपमान करें तो दोनों को ही सम्यक्त्व रहित समझना चाहिए।

३६४०. 'विकल्प' बहुत हैं बिखरने के लिए 'संकल्प' एक ही काफी है सँवरने के लिए।

३६४१. जो लोग पुरुषार्थ का महत्त्व स्वीकार नहीं करते हैं, उन्हें सांसारिक कार्यों में भी पुरुषार्थ छोड़ देना चाहिए, यदि नहीं छोड़ते हैं, तब उन्हें मोक्षमार्ग में भी पुरुषार्थ करना चाहिए अन्यथा लोमड़ी जैसे खट्टे अंगूर हैं।

३६४२. जो लोग भवितव्य पर विश्वास कर पुरुषार्थ करना छोड़ देते हैं, उन्हें भवितव्य पर विश्वास नहीं हैं क्योंकि भवितव्य में भाग्य और पुरुषार्थ दोनों गर्भित हैं, दोनों का

विश्वासी ही भवितव्यता का विश्वासी माना जाता है।

३६४३. जहाँ पूज्यजनों का निरादर हो और अपूज्यजनों का आदर हो वहाँ दुर्भिक्ष, मरण और भय ये तीनों उपद्रव होते हैं।

३६४४. मानवीय गुणों और अवगुणों की ठीक-ठीक जाँच सदा उसके सत्कार्य से ही नहीं होती है, अपितु एक छोटा-सा कार्य, एक छोटी-सी बात, या एक छोटे-से परिहास से भी मानव के असली चरित्र पर काफी प्रकाश पड़ता है।

३६४५. जीवन सभी जीते हैं किन्तु जीने के दौरान होने वाले अनुभवों का इत्र बहुत अल्प लोग ही निकाल पाते हैं।

३६४६. यदि कोई वस्तु प्राप्त करनी है तो अपने को उसके योग्य बनाना चाहिए।

३६४७. जो अपने वर्तमान को सार्थक करता है, उसका भविष्य भी सार्थक होता है।

३६४८. राम के योग्य काम किए बिना राम नाम लेना पूर्ण सार्थक नहीं है।

३६४९. जो देता है वह छीन भी सकता है इसलिए प्रतिपल सावधान रहें।

३६५०. बेहतर बनने के किसी भी अवसर को हाथ से न जाने दो।

३६५१. अपने कल्याण के इच्छुक व्यक्ति को कभी स्वेच्छाचारी नहीं होना चाहिए।

३६५२. इतना ऊँचा उड़ने की कोशिश मत करो कि अंत में थककर पाताल में गिरना पड़े, उतना ही उड़ो, जितनी तुम्हारे अंदर शक्ति है।

३६५३. व्यस्त होना ही पर्याप्त नहीं है सवाल यह है कि हम किस चीज में व्यस्त हैं।

३६५४. गुलाब की तरह महकना है, तो पहले चिराग की तरह जलना पड़ेगा।

३६५५. प्रतिकूलता में क्रोध और अनुकूलता में मान उत्पन्न होता है।

३६५६. दूसरों के सहारे (बैसाखियों से) चलने वाला मंजिल नहीं पा सकता है।

३६५७. आवेश शान्त होने पर जो काम किया जाता है, वही फलदायी होता है।

३६५८. प्रतिमा को देखकर अपनी प्रतिभा को जगाएँ।

३६५९. गुणों से ही मनुष्य गौरव को प्राप्त होता है।

३६६०. हमें अपने आपको नहीं, अपने उत्तरदायित्वों को गंभीरता से लेना चाहिए।

३६६१. असफलताओं के अनुभव के बिना सफलता का लाभ नहीं उठाया जा सकता है।

३६६२. मनुष्य का जीवन अनुभवों का शास्त्र है जिसका प्रत्येक अध्याय मार्गदर्शक है। अनुभव अमूल्य कसौटी है।

३६६३. कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है।

३६६४. अपने कार्य को इतनी लगन से कीजिए कि असफलता असम्भव हो जाए।

३६६५. एक बार की असफलता आधी विजय है क्योंकि अभ्यास आदमी को पूर्ण बनाता है।

३६६६. असफलता से मत घबराइये, आखिर बिना गिरे क्या कोई चलना सीख लेता है ?

३६६७. कटुता, अपमान और दण्डों की मार की अपेक्षा प्रेम, स्नेह वात्सल्य से किया गया हृदय परिवर्तन स्थाई होता है।

३६६८. जिन कार्यों के करने में आकुलता होती है वे कभी मत करो चाहे वे शुभ हो या अशुभ।

३६६९. आचरण ही हमें साधु और शैतान में अन्तर बोध कराता है।

३६७०. कितना चले ये महत्त्वपूर्ण नहीं, कहाँ पहुँचे यह महत्त्वपूर्ण है। कितना सुना यह महत्त्वपूर्ण नहीं, कितना आचरण में उतरा यह महत्त्वपूर्ण है।

३६७१. प्रमाद की स्थिति सोने (शयन) के बराबर है।

३६७२. आचरणवान कुरूप व्यक्ति सुन्दर व्यक्ति से श्रेष्ठ है।

३६७३. तप एवं सदाचार के प्रभाव से निम्नस्तर व्यक्ति भी उच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

३६७४. आपको बातों के बादशाह नहीं, आचरण के आचार्य बनना चाहिए।

३६७५. आज राम की जय जयकार तो सभी करते हैं, लेकिन राम के आचरण को कोई नहीं पालना चाहते हैं।

३६७६. सदाचरण ही सुख शान्ति-समृद्धि-सम्पत्ति के बीज बोता है।

३६७७. आचारहीन ज्ञान नष्ट हो जाता है और ज्ञानहीन आचार जैसे वन में अग्नि लगने पर पंगु उसे देखता हुआ और अंधा दौड़ता हुआ भी आग से बच नहीं पाता, जलकर नष्ट हो जाता है।

३६७८. शब्दों में अतिशयोक्ति व न्यूनता हो सकती है, आचरण में नहीं होना चाहिए।

३६७९. कठिनाइयों से घबराकर कभी अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए।

३६८०. असंभव को संभव कर दिखाने और पर्वतों को भी हिला देने की शक्ति सिर्फ दृढ़ संकल्प व आत्म विश्वास से ही आती है।

३६८१. उम्मीदों को मत छोड़िये यही जीने का सबसे बड़ा सहारा है।

३६८२. आपत्तियों पर विजय पाना जीवन का सबसे बड़ा आनंद है।

३६८३. पवित्रता की राह ही आनंद की राह है।

३६८४. तू विशाल संसार-सागर तैर चुका अब किनारे आकर क्यों अटक रहा है, उस पार पहुँचने के लिए पूरी शक्ति से शीघ्रता कर। हे साधक! क्षण-मात्र भी प्रमाद न कर।

३६८५. आशावादी से पूछो तो वह कहता है—दो दिनों के बीच में एक रात होती है और निराशावादी कहता है दो रातों के बीच में एक दिन होता है।

३६८६. आशावादी हर कठिनाई में अवसर देखता है पर निराशावादी प्रत्येक अवसर में कठिनाइयाँ ही खोजता है।

३६८७. आशा को अपनी सहेली और उत्साह को अपना मित्र बनाइये क्योंकि यही सफलता के साथी हैं।

३६८८. क्षुधा से बढ़कर कोई रोग नहीं है और अन्न से बढ़कर कोई दूसरी औषधि नहीं है।
३६८९. जो अपने प्रति वफादार नहीं है, वह दूसरों के प्रति क्या वफादार होगा ?
३६९०. ईमानदार होना अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी लाभदायक होता है।
३६९१. ईमानदार होना इस तरह गर्व करने की बात है जैसे हजारों की भीड़ में से आपको चुन लिया हो।
३६९२. बड़प्पन अमीरी में नहीं किन्तु ईमानदारी और सज्जनता में है।
३६९३. यदि आप ईमानदार हैं तो चिन्ता न करें, सोना आग में जलकर ही कुंदन बनता है।
३६९४. ईमानदारी इज्जत से बड़ी है।
३६९५. सच्चाई और ईमानदारी से प्रेरित संघर्ष ही स्थाई प्रगति का आधार है।
३६९६. सच्चा इंसान वही है जो किसी से ईर्ष्या नहीं रखता है।
३६९७. सच्चा पुरुषार्थी वही है जो बार-बार असफल रहने पर भी अपने प्रयत्न में शिथिलता नहीं आने देता और असफलता के बाद नए उत्साह से सफलता के लिए उद्यम करने लगता है।
३६९८. यह मानना कि वर्तमान समय खराब है, जीवन का बहुत बड़ा भ्रम है, अरे! अपने हृदय पर अंकित करो कि प्रत्येक समय वर्ष का सर्वोत्तम दिन है।
३६९९. मानव जीवन में लगन बड़ी महत्त्व की वस्तु है जिसमें लगन है, वह बूढ़ा भी जवान है जिसमें लगन नहीं, वह जवान भी मृतक है।
३७००. उदासीन और उत्साहहीन व्यक्ति कभी उन्नति नहीं कर पाता है।
३७०१. उत्साहहीनता एक ऐसा भयानक रोग है, जिससे आपका मस्तिष्क विषमय होकर अपनी योग्यता का नाश कर बैठता है।
३७०२. उदारता पापों को ऐसे बदल देती है, जैसे पारस पत्थर लोहे को छूते ही बदल देता है।
३७०३. वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं को उपदेश देता है।
३७०४. यह मानना कि हम कुछ नहीं कर सकते, सबसे बड़ी कायरता है, इसे त्यागो और पुरुषार्थ को जागृत करो, फिर देखोगे कि तुम्हारी उन्नति तुम्हारे हाथ में है।
३७०५. अपने दिमाग का उपयोग करते रहिए वरना आप मानसिक तौर पर आलसी हो जायेंगे।
३७०६. एक बुद्धिमान आदमी अपने दुश्मन का भी बेहतर उपयोग कर सकता है, जबकि मूर्ख अपने मित्र तक का भी उपयोग नहीं कर पाता है।
३७०७. कर्त्तव्य शील को सदा प्रसन्नता रहती है, कर्त्तव्य हीन को सदा खिन्नता रहती है।
३७०८. प्रत्येक मनुष्य का वास्तविक जीवन-संरक्षक तो उसका कर्त्तव्य ही है।
३७०९. आपका कोई क्षण ऐसा न निकले, जो कर्त्तव्य से रिक्त हो।
३७१०. अधिकारों का सच्चा स्रोत कर्तव्य है, अगर हम अपने कर्त्तव्य पूरे करें तो अधिकारों को

ढूँढ़ने कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा।

३७११. कर्ता मत बनो कर्त्तव्य का पालन करो।

३७१२. कार्यकुशल व्यक्ति के लिए यश और धन की कमी नहीं है।

३७१३. बालकों की कर्त्तव्यशीलता ही सब गुणों की नींव है।

३७१४. अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।

३७१५. कर्त्तव्य और धर्म एक सिक्के के दो पहलू हैं इसलिए कर्तव्य के बिना धर्म नहीं हो सकता है और न ही धर्म के बिना कर्त्तव्य हो सकता है।

३७१६. अब कलम नहीं, कदम उठाना है, कदम बढ़ाओ मंजिल पाओ।

३७१७. चिंताएँ, परेशानियाँ, दुःख और तकलीफें परिस्थितियों से लड़ने से दूर नहीं हो सकतीं, वे दूर होंगी अपनी भीतरी दुर्बलता दूर करने से, जिसके कारण वे पैदा हुई हैं।

३७१८. मानव के कर्म ही उसके विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या हैं।

३७१९. प्रत्येक कर्म करने से पहले यह अवश्य देखना चाहिए कि हमारा कर्म व्यर्थ तो नहीं, जिसमें समय नष्ट हो रहा हो।

३७२०. कर्मों को दोष मत दो, करनी को दोष दो।

३७२१. कला वही है जो नयनाभिराम और कर्णतृप्ति ही न दे बल्कि आत्मा को भी ऊपर उठाये।

३७२२. एक समय में एक ही काम कीजिए ताकि वह पूरी एकाग्रता से सम्पन्न हो सके।

३७२३. इससे पहले कि आप कल पर काम का अतिरिक्त बोझ डालें, उसे आज ही करना शुरू का दीजिए।

३७२४. कार्य की अधिकता से उकताने वाला व्यक्ति कभी कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता है।

३७२५. अच्छे कार्य करने हेतु किसी शुभावसर की राह मत देखो अपितु छोटे-छोटे अवसरों से ही लाभ उठाओ।

३७२६. साधारण कामों को असाधारण तरीके से करके ही आप दुनिया का ध्यान खींच सकते हैं।

३७२७. काम के बोझ से कोई मर नहीं जाता है, मौत तो भय के कारण आती है।

३७२८. जो व्यक्ति काम करने में प्रसन्नता अनुभव करता है वह बेकारी के दलदल में नहीं फँसता है।

३७२९. प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है।

३७३०. यह संसार कायर पुरुषों के लिए नहीं है, पलायन करने का प्रयास मत करो।

३७३१. कायरता से शत्रु के बल की वृद्धि होती है और अपनी शक्ति का ह्रास होता है अतः जहाँ तक बने कायरता को अपने पास न भटकने दो।

३७३२. कमजोर आदमी हर काम को असंभव समझता है और वीर हर असंभव कार्य को

साधारण समझता है।

३७३३. केकड़ों की तरह टाँग खिंचाई मत कीजिए मछली की तरह स्वयं को दूसरों से आगे ले जाइये।

३७३४. हमारी कोशिशों का फूल उपलब्धि के रूप में खिलता है।

३७३५. ऋषि बनो या कृषि करो, भगवान् आदिनाथ का मुख्य संदेश है।

३७३६. अपनी भूल अपने ही हाथों सुधर जाएँ तो यह इससे कहीं अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे।

३७३७. आत्म विश्वास को ही अपना सच्चा मित्र बनाइये।

३७३८. हर मंजिल के रास्ते होते हैं और हर रास्ते पर मुश्किलें होती हैं पर मन में यदि उमंग-उत्साह आत्म विश्वास हो तो जीत निश्चित होती है।

३७३९. भूल करके आदमी सीखता तो है, पर इसका यह मतलब नहीं कि जीवन भर भूल करता जाए और कहे कि हम सीख रहे हैं।

३७४०. त्रुटियाँ तो केवल उसी से नहीं होंगी जो कभी कोई काम करे ही नहीं।

३७४१. जिन गलतियों पर हम शर्मिंदा नहीं होते, वे ही आगे चलकर अपराध बन जाती है।

३७४२. भूल को छिपाने का नहीं, मिटाने का उपाय करो।

३७४३. चढ़ना कठिन होता है किन्तु फिसलना सरल होता है इसीलिए गुण ग्रहण कर उस पर चलना कठिन होता है।

३७४४. यदि तुम गुणों का विकास करना चाहते हो तो गुणानुराग का विकास करो, गुणी व्यक्ति को सामने रखो, उसके गुणों के बारे में सोचो, अनुमोदन करो, बाहर का यह कार्य भीतर एक शक्ति पैदा करेगा और तुम गुणी बन जाओगे।

३७४५. अपने गुणों से आगे बढ़ना चाहिए, दूसरों की कृपा से नहीं।

३७४६. नारकियों में क्रोध, तिर्यंचों में माया, देवों में लोभ और मनुष्यों में मान की अधिकता होती है।

३७४७. इतिहास केवल देखना नहीं, चिन्तन भी है और चिन्तन सदैव रचनात्मक होता है।

३७४८. खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है, जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।

३७४९. महत्त्व इसका नहीं है कि हम कब तक जीते हैं, महत्त्व तो इस बात का है कि हम जीते कैसे हैं?

३७५०. जीवन में आई चुनौतियों को स्वीकार करने वाले ही सफल व सही जीवन जी पाते हैं।

३७५१. भूतकाल में जीना मोह का परिणाम है, भविष्य में जीना लोभ का परिणाम है, वर्तमान में जीना कर्मयोग है।

३७५२. जीवन में ऐसे जियें कि आपत्ति के समय चेहरे से मुस्कान न जाए और सम्पत्ति के समय चेहरे पर गुमान न आए।

३७५३. जिन्दगी उसकी नहीं जो जिन्दगी से घबराते हैं, बल्कि जिन्दगी उसकी है, जो जिन्दगी से टकराते हैं।

३७५४. जीवन को तोड़ना नहीं सिर्फ मोड़ना है।

३७५५. जीवन का आनंद, गौरव–सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीने में हैं।

३७५६. अंत तक सक्रिय रहने में ही जीवन की सार्थकता है।

३७५७. जो हर परिस्थिति में ढलना जानता है उसे ही जीने की कला आती है।

३७५८. दास होना बुरा नहीं परन्तु दास रहकर ही मर जाना अवश्य बुरा है।

३७५९. हम दुनिया को नहीं बदल सकते, मगर दुनिया के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल सकते हैं।

३७६०. जीवन में घटने वाली दुर्घटनाओं को हमेशा याद करते रहना चाहिए जिससे नई दुर्घटनाएँ न होने पाएँ।

३७६१. मौके का लाभ नहीं उठाना ही प्राणी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

३७६२. दूसरों के दोष जानना आसान है, स्वयं के दोषों को जानना कठिन है।

३७६३. पहाड़ से गिरकर मनुष्य उठ सकता है परन्तु नजरों से गिरा हुआ कभी नहीं उठ सकता है।

४४. धर्म धुरी मजबूत हो

३७६४. याद रखें, महान् विजेता वही होते हैं, जो किसी एक उद्देश्य को लेकर काम करते हैं और जिनकी दृढ़ता, जिनका संकल्प अविभाज्य है।

३७६५. गाय दूध देती नहीं निकालना पड़ता है, ऐसे ही जीवन में महान् कार्य स्वतः ही सम्पन्न नहीं होते, उनके लिए प्रयत्न व प्रयास करना पड़ता है।

३७६६. दिमाग को ठंडा, जेब को गरम, जुबान को नरम और दिल में रहम व आँखों में शरम रखने वाला हर जगह आदर पाता है।

३७६७. यदि गुण न हों तो रूप व्यर्थ है, विनम्रता न हो तो ज्ञान व्यर्थ है, उपयोग न आये तो धन व्यर्थ है, साहस न हो तो शस्त्र व्यर्थ हैं और यदि परोपकार न हो तो जीवन ही व्यर्थ है।

३७६८. पुण्य का परिवार–पिता–ज्ञान, माता–दया, भाई–सत्य, बहन–सुबुद्धि, पुत्र–सन्तोष, पुत्री–ममता, मूल बाबा–क्षमा।

३७६९. प्रत्येक व्यक्ति के अभिप्राय को सुनो परन्तु सुनकर एकदम से बहक न जाओ उस पर विचार करो, जिससे आत्मा सहमत हो वही करो, बातें सुनने में जितनी कर्णप्रिय होती हैं; उनके अंदर उतना रहस्य नहीं होता, रहस्य वस्तु की प्राप्ति में है, दर्शन में नहीं, मिश्री

का स्वाद चखने से आता है, देखने से नहीं।
३७७०. एक अच्छा इंसान बनें और प्रतिज्ञा करें कि छोटों के साथ नरमी से, बड़ों के साथ करुणा से, संघर्ष करने वालों के साथ हमदर्दी से और कमजोर व गलती करने वालों के साथ सहनशीलता से पेश आयें क्योंकि हम अपने जीवन में कभी न कभी इनमें से किसी न किसी स्थिति से गुजरते हैं।
३७७१. अधम पुरुषों को जीविका न होने से भय लगता है, मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को मृत्यु से भय होता है परन्तु उत्तम पुरुषों को अपमान से ही महान् भय होता है।
३७७२. धन, साधन, समय, कर्म तथा स्थान; इन पाँचों का स्पष्ट विचार करके ही किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।
३७७३. पुरुषत्व तो परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में है।
३७७४. अपनी मानसिक स्थिति को सदा सहज व स्वस्थ रखिये, नहीं तो क्रिया-प्रतिक्रिया से जगत् में जीना दूभर हो जाएगा।
३७७५. जो पुरुष धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समयानुसार सेवन करता है, वह इस जन्म और पर-जन्म में धर्म, अर्थ, काम के संयोग को प्राप्त होता है।
३७७६. अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए उस साध्य के सिद्ध होने तक दूसरी किसी बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए दिन-रात सपने तक में उसी की धुन रहे तभी सफलता मिलती है। स्मरण रखो! सत्कर्मों से, समय से पहले व भाग्य से अधिक भी मिल सकता है।
३७७७. पड़ोसी की सौ भूल सुधारने की अपेक्षा अपनी एक भूल सुधारना कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है।
३७७८. बुद्धि और विवेक उसी का साथ देता है जो कामेन्द्रिय को वश में करना जानता है।
३७७९. शान्ति की विजय युद्ध की विजय से श्रेष्ठ है।
३७८०. दूसरे का भला करने के समान कोई धर्म नहीं है दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है।
३७८१. धर्म में राजनीति नहीं होती अपितु राजनीति में धर्म आवश्यक है।
३७८२. धर्म को समझने के लिए मंदिर जाना अनिवार्य नहीं, अपितु दूसरों के दुःखों को समझना सबसे पहले अनिवार्य है क्योंकि प्राणी सेवा ही सर्वोच्च धर्म है।
३७८३. निराशावाद भयंकर राक्षस है, जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है, निराशा से ही जीवन के बहुमूल्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं, इससे विजय के अनेक अवसर लुप्त हो जाते हैं।
३७८४. निराशा उत्पन्न करने वाले लोगों, विचारों और सम्पर्कों से सदा दूर रहिए, आशा एक ज्योति है, जो घोर अंधकार में भी हमें प्रकाश के होने का संदेश देती है।

३७८५. पद से व्यक्ति की गरिमा नहीं किन्तु व्यक्ति से पद की गरिमा बढ़नी चाहिए।

३७८६. अपने बहुमूल्य समय का एक-एक क्षण परिश्रम में व्यतीत करना चाहिए, ऐसा करने से कोई क्षण ऐसा नहीं बचता जब हमें पछतावा हो।

३७८७. पुण्य और पाप सदैव चार हाथ आगे चलता है, जो अनुकूलता प्रतिकूलता करता जाता है।

३७८८. वह पाप अग्नि का कुंड है जो आदर, मान, साहस और धैर्य को क्षणभर में जलाकर भस्म कर देता है।

३७८९. पुरुष का जीवन संघर्ष से आरंभ होता है और स्त्री का आत्मसमर्पण से

३७९०. उत्तम पुरुषों की यह रीति है कि वे किसी कार्य को अधूरा नहीं छोड़ते हैं।

३७९१. उन्नति प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय स्वयं का परिश्रम होता है।

३७९२. परिश्रम वह चाबी है जो किस्मत का दरवाजा खोल देती है।

३७९३. श्रम और उद्योग चुंबक के समान हैं जो सब अच्छे-अच्छे पदार्थों को पास खींच लेते हैं। जो अवसरों का उपयोग करना जानते हैं, वे उन्हें पैदा भी कर सकते हैं।

३७९४. सतत् परिश्रम तथा साहस ही सफलता की कुंजी है।

३७९५. भाग्य के भरोसे जीने वाला कभी भी भाग्यवान नहीं बन सकता किन्तु पुरुषार्थ करने वाला जरूर परमात्मा बन जाता है।

३७९६. ज्येष्ठ बनने के लिए नहीं अपितु श्रेष्ठ बनने के लिए श्रम करना पड़ता है क्योंकि जो श्रेष्ठ बन जाता है, वह ज्येष्ठ भी बन जाता है।

३७९७. बिन पुरुषार्थ किए भाग्य को दोष देना ज्ञानियों का नहीं आलसियों का काम है।

३७९८. भाग्य (दैव) के अनुकूल होने पर भी यदि मानव उद्योगहीन (आलसी) है तो उसका कल्याण नहीं हो सकता है।

३७९९. स्वयं के प्रयत्न के बिना मानव की उन्नति असम्भव है इसलिए मानव को अपना मित्र बनकर परिश्रम से अपनी उन्नति करनी चाहिए।

३८००. जो व्यक्ति अपने सत्कर्तव्यों के अनुष्ठान द्वारा पारलौकिक हित में प्रयत्नशील नहीं है वह जन्मान्ध हैं।

३८०१. जो सिर्फ बहाने बनाने में माहिर होते हैं, वे किसी और चीज में माहिर नहीं होते हैं। यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हैं तो सीधे अपने ध्येय की ओर चलो, लेकिन यदि परिस्थितियाँ अनुकूल न हों तो उस मार्ग का अनुसरण करो, जिसमें सबसे कम बाधा आने की सम्भावना हो।

३८०२. संसार की सारी वस्तुएँ ठोकर लगने से टूटती हैं, पर एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो ठोकर लगने से बनता है। ठोकरों से घबराओ मत, इनसे शिक्षा लो, बोध लो, ज्ञान लो,

ठोकरें मनुष्य को अनुभवी बनाती हैं और ठोकर खाकर ही व्यक्ति ठाकुर बनता है।

३८०३. तुम अपने जीवन का निरीक्षण, विश्लेषण कर देखो! यदि तुम्हारे जीवन में शान्ति बढ़ रही है, संतोष बढ़ रहा है, आनंद बढ़ रहा है तो तुम्हारा जीवन सही है, यदि अशान्ति बढ़ रही है, तनाव बढ़ रहा है और जीवन बोझिल हो रहा है तो गलत है, यह बात स्वयं सोचो, स्वयं विचारो किसी दूसरे से पूछने की जरूरत नहीं जीवन की दिशा बदलो, जीवन का मार्ग बदलो।

३८०४. मनुष्य को कर्म का अधिकार इसलिए दिया गया है कि वह प्रत्येक वांछित वस्तु अपने पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त करे किन्तु मनुष्य हर वस्तु परमात्मा से माँगता है यह कर्म और परमात्मा दोनों का अपमान है।

३८०५. अधिकार प्राप्त कर न्याय न भूलें, धन प्राप्त कर धर्म न भूलें, पति-पत्नी पाकर परमात्मा को न भूलें, सम्पत्ति पाकर संतों को न भूलें, साधन पाकर साधना को न भूलें, गुमान में आकर ग्रन्थों को न भूलें, पदार्थ को पाकर परमार्थ को न भूलें, सब कुछ पाकर सज्जनता -सदाचरण को न भूलें अन्यथा भविष्य बिगड़ जाएगा।

३८०६. भागने वाले के पीछे भय रहता है, दौड़ने वाले के आगे एक उपलब्धि होती है, अतः भागो मत दौड़ना सीखो लक्ष्य मिलेगा।

३८०७. यदि आप अपने को तनावपूर्ण और विलाप करता देख रहे हैं तो उसके जिम्मेदार आप स्वयं हैं, जो आपने-अपने-आपको ऐसा बनाने की स्वीकृति दे दी।

३८०८. सरलता, विनयशीलता, दयालुता, सहिष्णुता इन्हीं चार स्तम्भों पर मनुष्यता का महल टिका है, जिस मनुष्य में इन चार गुणों में से किसी एक गुण की भी कमी आती है, तो समझ लो उसकी मनुष्यता तीन पाये की कुर्सी की तरह है।

३८०९. भविष्य की कल्पना छोड़ो, अतीत की चिंता छोड़ो, वर्तमान में जीना सीखो।

३८१०. भूत को भूल जाओ, वर्तमान को संभालों, भविष्य अपने आप सँभल जायेगा।

३८११. पीछे के अनुभवों से जो लाभ नहीं उठाते, वे भविष्य को नहीं बना सकते, जो भविष्य को दूर तक नहीं देखता, वह ठोकर खाकर गिर पड़ता है।

३८१२. सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं, मैं तो पुरुषार्थ को ही सबका नियामक समझता हूँ, पुरुषार्थ ही सौभाग्य को खींच लाता है।

३८१३. संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके जीवन में भाग्योदय का अवसर न आया हो लेकिन जब मनुष्य उसका स्वागत करने को तैयार नहीं होता तब अवसर उलटे पैर लौट जाता है।

३८१४. मौके का लाभ न उठाना ही प्राणी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

३८१५. आपका भाग्य आपके हाथ है, जो शक्ति और सहायता आप चाहते हो वह सब आपके

भीतर मौजूद है इसलिए अपना भाग्य आप ही बनाओ।

३८१६. भूल कुछ नया सीखने का अवसर होती है, बशर्ते हम उस अवसर का अर्थ और महत्त्व समझें।

३८१७. भूल का अर्थ अज्ञानता या अपराध नहीं, भूल हो जाना एक सहज प्रक्रिया है, पर उस भूल को सुधार कर बेहतर बनने की भावना मन में होना चाहिए।

३८१८. जो भूल को भूल नहीं मानता उसकी भूल जीवन में शूल बन जाती है।

३८१९. जब तक मनुष्य उद्योग करता है उससे भूल होना संभव है।

३८२०. जो करें स्वयं के बल पर करें, दूसरों का सहारा लेकर नहीं क्योंकि परायी नींव पर खड़ा भवन अधिक समय तक नहीं टिक सकता है।

३८२१. दूसरों के सहारे जीवन जीने वाला कभी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता है, जैसे बैसाखी के सहारे चलने वाला पर्वत पर नहीं पहुँच पाता है।

३८२२. मंजिल कागज पर लिखने से नहीं कदम बढ़ाने से मिलती है।

३८२३. जिसमें तुम्हारा कोई बस नहीं, उसके लिए दु:ख करना बन्द कर दो।

३८२४. आपके मन की अशान्ति बताती है कि आपका व्यक्तित्व गलत है।

३८२५. संसार में परमात्मा भी सबके मन की नहीं कर सकता है।

३८२६. अपमान होने पर भी मन को छोटा नहीं करना चाहिए।

३८२७. मनुष्य में अगर मनुष्यता नहीं है तो मनुष्य पशु से भी नीचा है क्योंकि पशु तो अपने पूर्वकृत पापकर्मों का फल भोगकर मनुष्यता की तैयारी कर रहा है, पर मनुष्य नये पाप-कर्म करके नरकों की, पशुता की तैयारी कर रहा है।

३८२८. चौरासी लाख योनियों और चतुरगतियों में मनुष्य भव ही एक ऐसी सीढ़ी है, जो ऊपर व नीचे की पूर्ण यात्रा कराने में समर्थ है।

३८२९. धैर्यवान, बुद्धिमान महापुरुष के लिए शोक और रुदन विषम परिस्थिति में सर्वथा त्याज्य है।

३८३०. सबसे मुश्किल है कोई काम बगैर त्रुटि के करना और सबसे आसान है उसी काम में दूसरों की गलतियाँ निकालना।

३८३१. अपनी बुराइयों को अपने मरने से पहले ही मर जाने दो।

३८३२. जल एक स्थान पर ठहरे रहने से बदबूदार हो जाता है और दूज का चन्द्रमा यात्रा के कारण पूर्णचन्द्र बन जाता है।

३८३३. कई युद्ध ऐसे भी होते हैं जिनमें हारना ही विजय है।

३८३४. देश के युवक चाहें तो वे बड़े-बड़े सत्कार्य आसानी से सम्पन्न कर सकते हैं।

३८३५. युवकों को अपने जोश का उपयोग करना चाहिए पर होश के साथ।

३८३६. किसी भी कार्य को योजना बनाकर करने वाला व्यक्ति सफल होता है।

३८३७. मेहनत से मत कतराइये क्योंकि विकास के शिखरों तक पहुँचने का रास्ता मेहनत ही है।

३८३८. अपना रास्ता स्वयं बनाकर चलने वाला शेर के समान शक्तिशाली होता है।

३८३९. शिखर की ओर जाने वाले रास्ते पर बहुत अधिक भीड़ नहीं रहती है।

३८४०. लक्ष्य पाना है तो पूरी ताकत से काम करो।

३८४१. अनुकूलता हो या प्रतिकूलता महापुरुष लक्ष्य की धुन में बढ़ते जाते हैं, यही कारण है कि सफलता पग-पग पर उनके कदम चूमती है।

३८४२. अपने लक्ष्य को न भूलो, अन्यथा जो कुछ भी मिलेगा उसी में संतोष करने लगोगे।

३८४३. भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान में उज्ज्वल भविष्य की तैयारी करनी चाहिए।

३८४४. महानता की आकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है।

३८४५. कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पहले उसके अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं पर विचार कर लेना चाहिए।

३८४६. सबसे शानदार विजय है—अपने पर विजय प्राप्त करना और शर्मनाक बात है—अपने से परास्त हो जाना।

३८४७. व्यक्ति सद्भावनाओं के द्वारा अपने भाग्य को भी बदल सकता है।

३८४८. विचारवान व्यक्तियों का मुट्ठी भर समूह ही सारी दुनिया को उलट-पुलट कर सकता है।

३८४९. वीरता मारने में नहीं, मरने में है। किसी की प्रतिष्ठा बचाने में है, प्रतिष्ठा गँवाने में नहीं।

३८५०. मानव की महिमा इस बात में नहीं है कि वह कभी गिरे नहीं, बल्कि इस बात में है कि हर बार गिरने पर उठ खड़ा हो।

३८५१. मनुष्य कहीं भी जन्म ले, वह अपने कर्मों से श्रेष्ठ अथवा निकृष्ट बनता है।

४५. चुनौतियाँ चलना सिखलाती हैं

३८५२. आत्मविश्वास को ही अपना सच्चा और अच्छा मित्र बनाइये।

३८५३. हर मंजिल के रास्ते होते हैं और हर रास्ते पर मुश्किलें होती हैं, पर मन में यदि उमंग-उत्साह-आत्मविश्वास हो तो जीत निश्चित होती है।

३८५४. अवकाश के दिन पुण्य कार्य कीजिए, ताकी बीते दिनों के पाप धुल सकें और आने वाले दिनों को नई दिशा व ऊर्जा मिल सके।

३८५५. किसी सत्यकार्य को करने के लिए जो यह कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है, वे

वास्तव में आलसी हैं, समय हर मनुष्य के पास है पर उसका उपयोग करने के लिए हमें आलस्य त्यागना होगा।

३८५६. समय निकल जाने के उपरांत किया गया श्रेष्ठ कर्तव्य भी निष्फल ही होता है।

३८५७. चुनौतियाँ मनुष्य को अपनी अज्ञात, अपरिमित शक्तियों के प्रति जागरुक बनाती हैं।

३८५८. दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति आधा कार्य तो शुरू होने से पहले ही कर लिया करते हैं।

३८५९. जो अपनी जरूरत के समय पर मदद माँगने में नहीं हिचके वास्तव में वही सबसे मजबूत है।

३८६०. लड़ने से ज्यादा लड़ाई से बचने के लिए बहादुरी की जरूरत होती है।

३८६१. संकटों से कभी घबराना नहीं चाहिए क्योंकि काँटों में फूल खिलते हैं।

३८६२. यदि आपके कार्य की नींव आपका आत्मविश्वास है तो आपके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

३८६३. अनिश्चित मन वाला पुरुष भी जब मन को एकाग्र करके सामना करने के लिए खड़ा होता है तो आपत्तियों का लहराता हुआ समुद्र भी शांत होकर बैठ जाता है।

३८६४. शरीर और वैभव अनित्य है और मृत्यु निकट है अतः सिर्फ धर्म का ही संग्रह करना चाहिए।

३८६५. संसार में सबसे बड़ा वही शस्त्र है जो वक्त पर काम आवे।

३८६६. आप अपनी सफलता का अनुमान इस बात से भी लगा सकते हैं कि अन्य व्यक्ति आपका कितना विश्वास करते हैं और आपको निर्बल अथवा भीरु तो नहीं समझते हैं।

३८६७. आपके परिवार में कब, कौन, किस पीढ़ी में सन्त बना यह महत्त्वपूर्ण नहीं, महत्त्वपूर्ण तो यह है कि आप कब सन्त बनेंगे।

३८६८. सफलता साहस से मिलती है, फिर भले ही वह बुद्धिहीन हो या बुद्धिमान धर्मात्मा हो या अधर्मात्मा।

३८६९. विश्वास कार्य सिद्धि का पिता (जनक) है, इससे योग्यता को बल मिलता है जिससे शक्ति दुगुनी हो जाती है, मानसिक शक्तियों को सहारा मिलता है, वे पुष्ट हो जाती हैं जिससे कार्य में सफलता मिलती है।

३८७०. 'जीत' उपेक्षा, उलाहना और संघर्ष की सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ही हासिल होती है।

३८७१. कठिनाइयाँ सफलता की पूर्व प्रवेश परीक्षा होती है।

३८७२. सवाल करना मानव की तरक्की को जाहिर करता है।

३८७३. असफलताओं से न घबराकर लगातार प्रयास करने वाले लोगों की गोद में सफलता खुद आ जाती है।

३८७४. अच्छे अवसर को खो देना सफलता को खो देना है।

३८७५. निर्बल होने पर भी अपना आत्मबल नहीं खोना चाहिए, आत्मबली अपने आत्मबल से सफलता प्राप्त कर लेता है।

३८७६. सभ्यता की एकमात्र कसौटी है–सहनशीलता।

३८७७. सफलता के कदम पर चलने के लिए उन कदमों द्वारा मत चलिए जिन्हें दूसरे शब्दों में गुस्सा, बेईमानी और अनादर कहते हैं।

३८७८. ब्रह्ममुहूर्त में उठने का संकल्प लेना जीवन सफलता के लिए उपयोगी एवं आवश्यक मंत्र है।

३८७९. सफलता उन्हीं के चरण चूमती है जो किसी भी समस्या या कार्य के दोनों पक्षों को देखते हैं और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं करते हैं।

३८८०. सफलता के लिए जो त्यागना है उसे त्यागें और जिसे अपनाना है उसे अपनाएँ, तभी आपकी सफलता निश्चित है।

३८८१. तीन और तीन छह तो सभी करते हैं, पर आप कुछ ऐसा कीजिये जिससे वह तैंतीस बन सकें।

३८८२. मजदूर का पसीना सूखे, उससे पहले उसे उसका मेहनताना दे दीजिए।

३८८३ यदि आप समझदार हैं तो अपनी गलतियों को मत दुहराइये।

३८८४. खोये का रोना क्या ? जो पाया नहीं है उसका सोचना क्या ? जो है उसे कर्म की व्यवस्था मानकर सुख शान्ति से जिएं।

३८८५. समय का उल्लंघन करने से सरलता से किया जाने वाला कार्य भी अत्यन्त कठिन हो जाता है।

३८८६. ''मुझे किसी के सहयोग की अपेक्षा नहीं,'' यह दावा करना उतना ही असंगत है जितनी कि अमावस की काली निशा में सूरज उगने की बात है अर्थात् सहयोग की सभी को आवश्यकता पड़ती है।

३८८७. साहस दो प्रकार का होता है–एक तोप के सामने अड़ जाना और दूसरा आध्यात्मिक विश्वासों पर डँटे रहना।

३८८८. संसार में आधे से अधिक लोग तो इसलिए असफल हो जाते हैं क्योंकि समय पर उनमें साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो जाते हैं।

३८८९. जितनी जरूरत हो उतना रखो, जितनी शक्ति हो उतना करो, यही सुखी होने का उपाय है।

३८९०. हर किसी को खुश रखने की कोशिश विफलता का रास्ता है।

४६. सोलह सुख

३८९१. स्वतंत्रता जन्मसिद्ध अधिकार हो सकती है पर सफलता तो कर्मसिद्ध अधिकार ही है।

३८९२. पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में हो माया,
तीसरा सुख सुत आज्ञाकारी, चौथा सुख मृदुभाषी पतिव्रता नारी,
पाँचवा सुख-सदन हो घर का, छठवाँ सुख कर्ज न हो पर का,
सातवाँ सुख चले व्यापार, आठवाँ सुख सबको हो प्यार,
नौवाँ सुख निराकुलता हो मन में, दसवाँ सुख न हो वैर-विरोध जीवन में,
ग्यारहवाँ सुख मन लगे धर्म में, बारहवाँ सुख न फँसे कुकर्म में,
तेरहवाँ सुख हो साधु समागम, चौदहवाँ सुख मर्मज्ञ जिनागम,
पन्द्रहवाँ सुख जैन शील व्रतधारी, सोलहवाँ सुख हो अरिहंत पुजारी,
ये सब पाय बने गृह त्यागी धन्य-धन्य वे नर अवतारी
इस भव साधु संत कहलावे, परभव सुरग मुक्ति पद पावे,
नर भव सुकुल सफल जिनवाणी, बार-बार नहीं पावें प्राणी,
करते 'प्रार्थना' धर्म कमावो, बार-बार नहीं नर तन पावो।

३८९३. सुख भोगने के लिए स्वर्ग है तथा दुःख भोगने के लिए नरक है और सुख-दुःख दोनों से ऊँचे उठकर महान् आनन्द प्राप्त करने के लिए यह मनुष्य लोक है।

३८९४. जो सूर्योदय के बाद भी सोये रहते हैं—उनका भाग्य भी सो जाता है और जो सूर्योदय के पूर्व उठते हैं, वे सूरज से चमकते हैं।

३८९५. प्रतिभा स्वतंत्रता के वातावरण में ही मुक्त सांस ले सकती है।

३८९६. जवाबदारियाँ अवश्य निभाइये पर अपने मन को स्वतंत्र रखिये।

३८९७. आदमी अपना विनाश और विकास करने में स्वतंत्र है।

३८९८. स्वयं की भूल को स्वीकार करना ही अज्ञान से परदा उठाना है।

३८९९. अपने कार्य व कर्त्तव्यों को इतने आनंदपूर्वक कीजिए कि वे स्वर्ग के द्वार बन जाएँ।

३९००. स्वावलम्बन द्वारा सम्पादित कार्य से सुख उपजता है।

३९०१. स्वावलम्बन परमार्थ के लिए जरूरी है।

३९०२. हाथ की रेखाएँ टेढ़ी देखकर निराश मत होइए, अपने नजरिये को बेहतर बनाकर मेहनत कीजिए हस्तरेखाएँ स्वतः बदल जाएगी।

३९०३. श्रम से डरने वाला विश्राम नहीं पा सकता है

३९०४. जो जवानी में श्रम नहीं करता उसे बुढ़ापे में विश्राम नहीं मिलता है।

४७. समय, समझ, शक्ति का होना दुर्लभ है

३९०५. गृहस्थ साधना नहीं कर पाता इसलिए साधकों की उपासना करता हैं।

३९०६. चींटी से मेहनत सीखिये, बगुले से तरकीब और मकड़ी से कारीगरी, अपने विकास के लिए अंतिम समय तक संघर्ष कीजिए।

३९०७. यदि असंज्ञी भव का निर्माण हो गया, तब और बात की तो कथा ही क्या, पछताने तक की बुद्धि नहीं रहेगी।

३९०८. सुखी रहने का मूल मंत्र - C.A.R.

(1) Change the changable

(2) Accept the unchangable

(3) Remove yourself from unchangable

बदलने लायक है, बदलना आवश्यक है, बदल सकते हो तो बदल दो।

जिसे बदल नहीं सकते हो उसे स्वीकार कर लो।

जिसे बदल नहीं सकते एवं स्वीकार भी नहीं कर सकते, उससे दूर हो जाओ।

उपरोक्त तीनों बिन्दुओं को अगर ठीक से आत्मसात कर लिया जाये तो जीवन में कुछ भी समस्या नहीं बचेगी।

३९०९. भगवती प्रज्ञा के प्रसाद से आत्म विजय प्राप्त करना है।

३९१०. गुरु के क्लीनिक में पहुँचने मात्र से नहीं साधना से आत्म स्वस्थता प्राप्त होती है।

३९११. प्राणी को अंगों का महत्त्व ज्ञात है अतः उसे सभी अंग प्रिय हैं और एक भी अंग खराब नहीं चाहता, एक अंग खराब होने पर लाखों करोड़ों रुपये खर्च कर देता है, इसी प्रकार सम्यग्दर्शन के सभी अंगों का पालन करना चाहिए।

३९१२. तुम किसी भी जगह होओ, किसी भी स्थिति में होओ, सदा अपना अकेलापन दृष्टि में रखो, इससे बड़ा बल प्रकट होगा।

३९१३. एक अवगुण छुपाने के लिए अनेक आडम्बर का क्लेश करने की अपेक्षा छोटा परिश्रम तो यह है कि उस एक अवगुण को ही मिटा दिया जाय।

३९१४. जो पुरुष अपने पद के विरुद्ध कार्य न करेगा, वह निःशल्य और प्रसन्न रहेगा।

३९१५. अगर आपका कोई उद्देश्य नहीं है तो आप हमेशा दूसरों के उद्देश्य को पूरा करने के लिए कार्य करते रहेंगे।

३९१६. सफलता की खुशी मनाना अच्छा है, पर उससे ज्यादा जरूरी है, अपनी असफलता से सीख लेना।

३९१७. जब आप किसी काम की शुरूआत करें तो सफलता-असफलता से न डरें और काम को न छोड़ें। जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं, वे सबसे ज्यादा प्रसन्न रहते हैं।

३९१८. सुख की खोज में मनुष्य अपना जीवन असंतुलित कर लेता है, जबकि असली सुख तो संतुलित जीवन में छुपा है।

३९१९. 'तीव्र इच्छा', 'लक्ष्य निर्धारण', आदर्श सामने हो, उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रतिदिन प्रयत्न करते रहो, उठो जाओ और तब तक न रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।

३९२०. अपने कार्य के अभिप्राय को देखो, आप प्रायः उसके लिए प्रयत्न नहीं करते हैं जो सच में आपको चाहिए हैं। सभी लक्ष्य आसानी से प्राप्त नहीं होते हैं

३९२१. सिर्फ एक कार्य पर निर्भर होकर आजीविका चलाना आपकी संकीर्ण मानसिकता का परिचायक है। बिना सही योजना के सफलता अधूरी है।

३९२२. किसी वृक्ष को काटने के लिए आप मुझे छह घंटे दीजिए तो मैं पहले चार घंटे कुल्हाड़ी की धार तेज करने में लगाऊँगा।

३९२३. सप्ताह में अवकाश के दिन आने वाले महीने, वर्ष के कार्यों की योजना बना लेना चाहिए। ये राहें ले जायेगी मंजिल तक हौंसला रखो। कभी सुना अँधेरे ने सबेरा नहीं होने दिया।

३९२४. कर्त्तव्य करके जीवन चलाना ही कर्म योग है।

३९२५. आपका भाग्य निश्चित नहीं, आप अपने कर्मों से निश्चित करते हैं।

३९२६. सफलता पाने का कोई छोटा रास्ता नहीं है, पूरी मेहनत, निष्ठा, ईमानदारी, लगन, विश्वास के साथ किए गये कार्यों में विफलता की कोई जगह भी नहीं है।

३९२७. अतिरिक्त प्रयास करने को अपनी दैनिक आदत का हिस्सा बना लें।

३९२८. १६ वर्ष का भूखा बच्चा होटल पर गया, २५% कमीशन पर लगा, एक मिनी बस में गया बोला इमारत पुरानी है लेकिन स्वाद अच्छा है और सेवा भी अच्छी मिलेगी। धीरे-धीरे उस होटल का मैनेजर बना, आगे चाय बगान किराये पर लिए और पूरे देश में अपना चाय का साम्राज्य फैला दिया, उस बालक का नाम था Lipton यह था उसका कर्मयोग।

३९२९. अमेरिका में एक युवक का विवाह २२वर्ष में हुआ, २४ वर्ष में तलाक, २७ वर्ष की उम्र में नगर अध्यक्ष का चुनाव हार गया फिर विधानसभा का चुनाव लड़ा, हार गया, कांग्रेस सीनेट का चुनाव लड़ा हार गया, ४६ वर्ष में उपराष्ट्रपति का चुनाव लड़ा हार गया लेकिन उस व्यक्ति ने हार नहीं मानी और ५२ वर्ष की उम्र में राष्ट्रपति का चुनाव जीता वह था अब्राहम लिंकन।

३९३०. हम अपने विचारों को किसी दायरे में सीमित कर अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर रहे हैं। ''सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग''

३९३१. मंजिल उन्हीं को मिली है, जिनके सपनों में जान होती है।

पंखों से कुछ नहीं होता हौंसलों में उड़ान होती है ॥

३९३२. अपनी कमियों को पहचाने और स्वयं सुधारें, आपका सुधार देखकर अन्य खुद को सुधारने की कोशिश करेंगे।

३९३३. इस बात को स्वीकार करने तैयार रहे कि हम कुछ चीजें नहीं बदल सकते हैं। विपरीत परिस्थितियों में कुछ लोग टूट जाते हैं, कुछ रिकार्ड तोड़ते हैं।

३९३४. लोग क्या सोचेंगे इस बात की चिंता करने के बजाय क्यों न कुछ ऐसा करने में समय लगाये जिसे प्राप्त करने पर लोग आपकी प्रशंसा करें।

३९३५. जब भी आप कुछ अच्छा या अलग कार्य करना चाहेंगे, लोग हँसेंगे मजाक उड़ायेंगे, आप अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें, आपकी सफलता ही उन्हें जवाब देगी, जैसे ही आप सफल होंगे वही लोग पलट जायेंगे और कहेंगे कि आप सही थे, वे आपका गुणगान करेंगे।

३९३६. हमारा जीवन स्वयं के सिद्धान्तों पर है, लोगों के कहने पर नहीं।

३९३७. किसी भी कार्य को करने में हमारी प्राथमिकता स्वयं की जागरुकता, उपयोगिता, आवश्यकता होनी चाहिए यह नहीं सोचना चाहिए कि लोग क्या कहेंगे, जैसे ही भय आपके करीब आये उस पर आक्रमण कर नष्ट करें।

३९३८. लोग आपके खिलाफ बात कर रहे हैं, मतलब आप आगे बढ़ रहे हैं।

३९३९. काम ऐसा करो कि नाम हो जाये या फिर नाम ऐसा करो कि सुनते ही काम हो जाये।

३९४०. जो हो चुका है वह बदला नहीं जा सकता है।

३९४१. हमारी प्रेरणा में बदलाव भय की जगह स्वप्रेरणा ही हमारी जिंदगी की अधिकतर समस्याओं का समाधान है।

३९४२. निर्णय लेने में विफलता का भय नहीं बल्कि इतिहास बनाने का साहस हो।

३९४३. एक दो बार किसी कारणवश नकारात्मक परिणाम आने पर रुकना नहीं है, उसका विवेचन कर उस गलती को सुधारकर आगे बढ़ना होगा।

३९४४. किसी कठिन कार्य के प्रति भी अगर शुरू से नजरिया सकारात्मक रहेगा तो आत्म विश्वास भी ऊँचा होगा फल स्वरूप कार्य योजना भी बेहतर होगी और निश्चित ही परिणाम भी सर्वश्रेष्ठ होंगे।

३९४५. सोचना आस्रव (कर्म बंध का कारण) है, यदि सोचना पड़े तो निज शुद्धात्मा या परमात्मा का चिन्तन करो। इसी प्रकार बोलना पड़े तो ज्ञान-वैराग्य का विकास हो, ऐसा बोलो। तथा करना पड़े तो संयमित चेष्टा करो।

३९४६. किसी भी विकार का ताँता लगने पर उस उपयोग को बदल देना वीरता है।

३९४७. एकान्त निवास के अभिलाषियों को दृढ़ भेदविज्ञानी होना चाहिए अन्यथा एकान्त में

पतित भी हो सकते हैं।

३९४८. सम्यक् प्रवृत्ति करने में यदि लोक हास्य का भय है, तब वह सम्यक्त्व का अतिचार है, अतः लोक हास्य का भय मत करो, जो उचित हो, उसे करें।

३९४९. स्वभावदृष्टि, परमात्म स्मरण, शास्त्राभ्यास, दोषवाद में मौन, सद्वृत्त कथा, प्रियहित वचनालाप और सत्संग, इस प्रकार के क्रम से पुरुषार्थ करो अर्थात् पूर्व-पूर्व की और बढ़ो। यदि पूर्व में शिथिल हो जाओ या थक जाओ, तब उत्तर का आश्रय लो। सर्वप्रथम स्वात्म दृष्टि इसलिए है कि इससे भी चूक जाने पर कल्याण की आशा नहीं है।

३९५०. अपने विचार के विपरीत दूसरों की परिणति देखकर संक्लेश मत करो तुम्हारी परिणति ही तुम्हारे अधीन है।

३९५१. व्याधि और मृत्यु कभी भी आ सकती है अतः शीघ्र ही आत्म शान्ति पाने का उद्यम करो।

३९५२. पुरुषार्थी मनुष्य मात्र जो बोलने वाले हैं, उन पर अपना स्वामित्व जमा लेता है, मात्र वक्ता पुरुष पुरुषार्थियों का मनोरंजन करते हुए उपासना (प्रशंसा) करता है।

४८. स्वयं स्वयं पर बनो कृपालु

३९५३. अरे आत्मन्! तुझ पर तू ही कृपा कर सकता है, अतः अपनी ही दृष्टि में भला बनने का प्रयत्न करके अपने में प्रसन्नता प्राप्त करना चाहिए।

३९५४. इक ले रहो तो निर्जन वन में, ग्राम रहो तो धर्मी गण में।
मन न लगे तो लगो लिखन में, निर्मल मन हो तो लगो पठन में।
कुमति रहे, चल गुरु चरणन में, हो विकल्प लग देव भजन में।
काम समय लग मल (अशुचिभावना) वर्णन में, क्रोध करो तो निज कुमतिन में।
मान करो निजशुचि गुण गान में, माया हो छुप शुद्धातम में।
लोभ करो निर्मल निज गुण में, हो प्रसन्न निर्मल चिन्तन में।
प्रेम करो केवल ज्ञानि में, कर विरोध मिथ्याभावन में।
शोक करो कुत्सित कृत्यन में डर नित डरनित पाप करन में।
घृणा करो तो पापीमन में, रह निःशंक नित आत्म मनन में।
तन मन धन दो ज्ञान मिलन में, प्रिय हित वचन कहो सब जन में।

३९५५. नीच विघ्न भय से कार्य प्रारम्भ नहीं करते हैं, मध्यम विघ्न आने पर छोड़ देते हैं उत्तम पुरुष बार-बार विघ्न आने पर भी प्रारम्भ किए कार्य को छोड़ते नहीं हैं।

३९५६. विपरीत परिस्थितियों में भी जो ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सके वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर है।

३९५७. कठिन परिस्थितियाँ एक वाशिंग मशीन की तरह होती हैं, जो हमें ठोकर मारती, घुमाती हैं और निचोड़ती भी है पर आखिर में जब हम इनसे बाहर आते हैं, तो हमारा व्यक्तित्व

पहले की अपेक्षा अधिक साफ चमकीला और बेहतर होता है।

३९५८. लोग क्या कहते हैं इस पर ध्यान मत दो, सिर्फ यह देखो कि जो करने योग्य था वह बन पड़ा या नहीं। नेक बनने के लिए ऐसी कोशिश करो जैसी खूबसूरत दिखने के लिए करते हो।

३९५९. पढ़े लिखे लोग परिस्थितियों के हिसाब से खुद को बदल लेते हैं, अनुभवी लोग अपने हिसाब से परिस्थितियों को बदल लेते हैं।

३९६०. हर परिस्थिति में शान्त रहें तो जीवन में अपने आप को बहुत मजबूत पायेंगे क्योंकि लोहा ठंडा रहने पर ही, मजबूत होता है गर्म रहने पर लोहे को मनचाहे आकार में ढाल दिया जाता है। ''पुरुषत्व तो परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में है।''

३९६१. शरीर कभी भी पूरा पवित्र नहीं हो सकता है फिर भी सभी लोग इसको पवित्र करने की कोशिश करते हैं, जबकि मन पवित्र हो सकता है पर लोग कोशिश नहीं करते हैं।

३९६२. जो व्यक्ति जितनी अपने स्वार्थ की आहुति करता है, उसकी शक्ति उतनी ही बढ़ती है।

३९६३. जो कुछ हमारे पास है उसमें संतोष करना उचित है लेकिन हम जो हैं उससे संतुष्ट कभी नहीं रहना चाहिए।

३९६४. भाव परावर्तन ही पञ्च परावर्तन कराता है, अतः अपने भावों को सुधारो अर्थात् पाँच पापों को तजो और पञ्च परमेष्ठी को भजो। भाव सुधरने से भव सुधरता है।

३९६५. अगर आप आलसी हो तो अकेले मत रहो, अकेले हो तो आलसी मत बनो।

३९६६. जीवन का अंत समय सुधारना है तो प्रतिक्षण सुधारो।

३९६७. अपना आदर्श उपस्थित करके ही दूसरों को सच्ची शिक्षा दी जा सकती है।

३९६८. कर्म से ही पहचान होती इंसान की दुनिया में, अच्छे कपड़े तो बे-जान पुतलों को भी पहनाये जाते हैं दुकानों में।

३९६९. दीपक बोलता नहीं उसका प्रकाश परिचय देता है, ठीक उसी प्रकार आप अपने अच्छे कर्म करते रहें वही आपका परिचय देंगे।

३९७०. कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए, साधन सब जुट जाऐंगे, संकल्प का धन चाहिए।

३९७१. शुरू में वह कीजिए जो आवश्यक है, फिर वह कीजिए जो संभव है और अचानक आप पायेंगे कि आप तो वह भी करने लग गये हैं जो असंभव था।

३९७२. आसक्ति से किए हुए शुद्ध काम में भी दाँव-पेंच आते ही हैं।

३९७३. १०० काम छोड़कर स्नान, १००० काम छोड़कर भोजन, लाख काम छोड़कर प्रभु दर्शन और करोड़ काम छोड़कर सत्संग करना चाहिए।

३९७४. जब सड़क का पत्थर मन्दिर का देवता बन जाता है तो हम इंसान क्यों नहीं बन सकते हैं।

३९७५. आप अपने भविष्य को नहीं बदल सकते हैं परन्तु अपनी आदतें अवश्य बदल सकते हैं, आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।

३९७६. भोजन मिलता भाग्य से है पर पेट भरता पुरुषार्थ से ही है।

३९७७. अरे आत्मन्! शान्ति की परीक्षा अनिष्ट समागम में होती है।

३९७८. जिस पद्धति में अब तक रहते आए उस पद्धति में शान्त तो हो नहीं सके, फिर इन संस्कारों को छोड़ो अलौकिक वृत्ति धारण करो, दुनिया से अपरिचित रहो, अकेलापन अनुभव करने वाला शान्त और सुखी रहता है।

३९७९. सिगरेट मौत के लिए लाभदायक है उसको जितना खीचों जिन्दगी उतनी छोटी होती है।

३९८०. जिन्हें कुछ करना है उनके शब्दकोश में असंभव शब्द नहीं होना चाहिए बल्कि लक्ष्य के अनुरूप समय और श्रम अधिक होना चाहिए।

३९८१. अंतिम समय में वासना, कामना नहीं सताती है, रसना इन्द्रिय सताती है अतः नियंत्रण रखो।

३९८२. आपने जगत् के सारे जीवों के साथ रहकर जी लिया फिर भी भगवान् नहीं बन पाये, अब एक बार स्वयं के साथ रहना सीख लो तो सदा के लिए सिद्धों में वास हो जायेगा।

३९८३. जो स्वयं भीतर की निर्बलता से लड़े वह साहसी है।

३९८४. किसी के गुणों की प्रशंसा करने के साथ उन गुणों को अपनाने का प्रयत्न भी करें।

३९८५. मौत और भगवान् को न भूलो, हो सकता है जीवन का आखिरी दिन आज ही हो।

३९८६. किस्मत भी तब रोती है जब मेहनत नहीं होती है।

३९८७. अपनी कमजोरियों का जिक्र न करना जमाने से क्योंकि लोग कटी पतंग को लूटते हैं।

३९८८. कुछ अलग करना है तो जरा भीड़ से हटकर चलो क्योंकि भीड़ साहस तो देती है लेकिन पहचान छीन लेती है।

३९८९. संस्थापक बनना सरल है, पर व्यवस्थापक बनना कठिन है।

३९९०. यदि आत्मोन्नति चाहते हो तो खाली मत बैठो, अपने कार्य में व्यस्त रहो।

३९९१. वचन चाहे कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हो किन्तु दुनिया हमारे कर्मों से ही पहचानती है।

३९९२. कर्मों से लड़ना नहीं, खोटे कर्मों से बचना साधना है।

३९९३. जो जिम्मेदारी मिले उसे सम्मानपूर्वक निभाना मनुष्य का सर्वोत्तम कर्त्तव्य है।

३९९४. दुनिया में कोई '**Impossible**' काम नहीं बस होसला और मेहनत की जरूरत है '**I**' '**M**' '**Possible**' को गौर से देखो वो खुद कहता है, मैं संभव हूँ।

३९९५. धन, साधन, समय, कर्म और स्थान इन पाँचों का स्पष्ट विचार करके किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

३९९६. किसी भी काम को लेकर ज्यादा संकोच और डर न रखें क्योंकि जिन्दगी एक प्रयोग है आप जितने ज्यादा प्रयोग करेंगे उतने बेहतर होते जायेंगे।

३९९७. आपकी जिस काम में पहले से महारत है और उससे आगे बढ़कर अगर आपने कुछ अलग करने के प्रयास नहीं किए तो आप कभी आगे नहीं बढ़ पायेंगे।

३९९८. जब आप पैदा हुए थे तब आप रोये थे और दुनिया हँसी थी किन्तु जिन्दगी में ऐसे काम करो कि जाते वक्त आप हँसो और दुनिया रोये।

३९९९. तूफान का सामना करने के बाद ही कोई अच्छा कप्तान बनता है अतः आगे बढ़ने के लिए समस्याओं का सामना करना आवश्यक है।

४०००. कोई बड़ा काम करना है तो पहले थोड़ा गलत काम करें।

४००१. स्तोत्र, मंत्र, व्रत, पूजा, ध्यान, ज्ञान, उत्तम विचार, दान, शील, सहयोगीजन और गुरुजनों की सेवा के द्वारा मनुष्य जिससे संभव हो प्रयोजन सिद्ध करें।

४००२. अज्ञान, प्रमाद या उपेक्षा से यदि कार्य नष्ट हो गया तो पुरुष का समस्त प्रयास निष्फल है।

४००३. छोटे बनकर बड़े काम करना श्रेष्ठ है, बड़े बनकर छोटे काम करना अच्छा नहीं है।

४००४. गलत कार्य करने के पश्चाताप का एक मात्र उपाय है पंचपरमेष्ठी की आराधना करना।

४००५. पुण्य के प्रभाव से हर जगह सहायता करने वाले मिल जाते है, राम को लंका में विभीषण मिल सकता है तो फिर आपको कोई क्यों नहीं मिल सकता है ''पुण्य कमाओ''।

४००६. जो यौवन में स्थिर होकर भी स्त्री लक्ष्मी आदि को तृण के समान छोड़ देते है वे धन्य है।

४००७. सम्पूर्ण अनर्थों की जड़ प्रमाद वृत्ति है ''दीपक की तरह प्रकाश से अपना परिचय दो।''

४००८. शक्ति या बुद्धिमत्ता से नहीं, सतत् प्रयासों से ही हमारी क्षमताएँ सामने आती हैं।

४००९. प्रेम के बिना जीवन उस वृक्ष की तरह है जिसमें फल कभी नहीं लगते हैं।

४०१०. पर्याय का विनाश सुनिश्चत है, अतः इसका सदुपयोग कर लो।

४०११. मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रण कर्ता, स्वामी है।

४०१२. प्रबल पुण्यात्मा जीव के ही परिणाम निर्मल होते हैं।

४०१३. कठिनाइयों से, प्रतिकूलताओं से घिरे होने पर भी जीवन का वास्तविक प्रयोजन समझने वाले व्यक्ति कभी निराश नहीं होते हैं, वे हर प्रकार की परिस्थितियों में अपने लक्ष्य के लिए प्रेरणा प्राप्त करते हैं तथा श्रेष्ठ पथ पर क्रमशः आगे बढ़ते हैं।

४०१४. जब दिमाग कमजोर होता तब परिस्थितियाँ समस्या बन जाती हैं, जब दिमाग स्थिर होता है तब परिस्थितियाँ चुनौती बन जाती हैं, जब दिमाग मजबूत होता है तब परिस्थितियाँ अवसर बन जाती है।

४०१५. पुण्य कमाओ पैसा नहीं पैसा तो अपने आप आयेगा।
४०१६. मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।
४०१७. बुद्धिमान व्यक्ति कभी अपनी हानि पर शोक नहीं करते बल्कि प्रसन्नतापूर्वक क्षति को पूरा करने का उपाय करते हैं।
४०१८. मेहनत सीढ़ियों की तरह होती है और भाग्य लिफ्ट की तरह किसी समय लिफ्ट तो बंद हो सकती है लेकिन सीढ़ियाँ हमेशा ऊँचाई की तरफ ले जाती हैं।
४०१९. दूसरों को मारने गिराने के भाव नर में नहीं नारकी में होते हैं।
४०२०. भगवान् तो मात्र मन्दिर में मिलते हैं पर भगवान् बनने की भावना तो लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश में हो सकती है।
४०२१. वैराग्य भावनाएँ माँ के समान जीव की रक्षा करती हैं।
४०२२. सौभाग्य को यदि ढूँढ़ो तो वह 'परिश्रम' के साथ खड़ा नजर आता है।
४०२३. जो मन अज्ञान के कारण रात्रि है वही मन ज्ञान के प्रकाश से दिवस बन जाता है।
४०२४. मन की निर्मलता, सरलता एवं सहनशीलता ही साधुता है।
४०२५. मन को वश में करने का उपाय है रचनात्मक कार्य करें।
४०२६. मौके का लाभ न उठाना सबसे बड़ा दुर्भाग्य है मगर किसी के हालात व मजबूरी का लाभ नहीं उठाना चाहिए।
४०२७. आपके ऊपर तब-तक कोई सवार नहीं हो सकता जब तक कि आपकी कमर झुकी न हो, इसलिए अपनी कमर सीधी करें और लक्ष्य के लिए काम करने में जुट जाएँ।
४०२८. भगवान् की पूजा ही न करें अपितु भगवान् बनने का पुरुषार्थ भी करें।
४०२९. त्याग वेष की ओर तुम्हारा पुरुषार्थ शान्ति के लिए था। इस समय कहाँ हो? विचार करो और सर्व पुरुषार्थ से अपने उद्देश्य पर पहुँचो।

४९. सोना बना लो या सोने में गुजार दो

४०३०. बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त को बदलना सीखो, मजबूरियों को मत कोसो हर हाल में चलना सीखो।
४०३१. जो वक्त पर पसीना नहीं बहाते वे बाद में आँसू बहाते हैं।
४०३२. जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया तो फिर पीछे मुड़कर मत देखो क्योंकि पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते हैं।
४०३३. आप यह मत सोचो कि अकेले क्या कर सकते हैं, जरा देखो उस सूरज को जो अकेला चमकता है।
४०३४. कुशल व्यक्ति के तप होता है, निपुण व्यक्ति के संयम होता है, समता भावी के वैराग्य होता है और श्रुत के अभ्यास से ये तीनों होते हैं।

४०३५. संसार में कोई ऐसी समस्या नहीं जो आपके मन की शक्ति से अधिक शक्तिशाली हो।
४०३६. लक्ष्य पर आधे रास्ते तक जाकर कभी वापस न लौटें क्योंकि वापस लौटने पर भी आधा रास्ता पार करना पड़ता है।
४०३७. अपना व्यवहार मर्यादा और गरिमानुरूप होना चाहिए।
४०३८. वक्त आपका है चाहे सोना बना लो या सोने में गुजार दो।
४०३९. दूसरों को नहीं स्वयं को वश में करने वाला वीर होता है।
४०४०. यदि वर्तमान में भाव निर्मल हैं तो भविष्य का भव निर्मल होगा।
४०४१. विचारों की पवित्रता चारित्र की रक्षा करती है।
४०४२. जिसको अपने काम पर भरोसा होता है वो 'नौकरी' करते हैं, जिनको अपने आप पर भरोसा होता है वो 'व्यापार' करते हैं।
४०४३. मानव स्वभाव एक उपार्जित गुण है, शिक्षा, सत्संग और प्रेम से बदला जा सकता है।
४०४४. देने में उदारता, वचनों में मधुरता, आचरण में विवेक होना ही चाहिए।
४०४५. आप किस-किस को हटाओगे? किस-किस को घर से निकालोगे? इसलिए स्वयं निकल जाओ।
४०४६. स्वयं हटना बहुत सरल है इसलिए साधु संसार को नहीं हटाता स्वयं हट जाता है।
४०४७. समय की कीमत ही जीवन का मूल्य है।
४०४८. जिन्हें सपने देखना अच्छा लगता है उन्हें रात छोटी लगती है और जिन्हें सपने पूरे करना अच्छा लगता है उन्हें दिन छोटा लगता है।
४०४९. दोषग्राही मिथ्यादृष्टि गुणग्राही सम्यग्दृष्टि होता है।
४०५०. मेरे लिए वर्तमान ही सब कुछ है, भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है।
४०५१. हारना तब आवश्यक हो जाता है जब लड़ाई अपनों से हो और जीतना तब आवश्यक हो जाता है जब लड़ाई अपने आप से हो।
४०५२. कभी भी लोग आपके बारे में टीका-टिप्पणी करें तो घबराना मत, बस यह बात याद रखना हर एक खेल में दर्शक ही शोर मचाते हैं, खिलाड़ी नहीं।
४०५३. अपने आपको अच्छा बना लीजिए दुनिया से एक बुरा इंसान कम हो जायेगा।
४०५४. समय और धन अमूल्य है, मौत करीब है अतः समय और धन को अच्छे कार्य में लगा लो।
४०५५. व्यक्ति महान् इसलिए नहीं कि उसके पास पाँचों इन्द्रियों के भोग हैं, बल्कि वो व्यक्ति महान् होता है जो पाँचों को छोड़ देता है।
४०५६. किसी मकसद के लिए खड़े हो तो पेड़ की तरह, गिरो तो बीज की तरह जिससे दुबारा

उठकर उसी मकसद के लिए पुरुषार्थ कर सको।

४०५७. जिन्दगी जीना आसान नहीं होता, बिना संघर्ष कोई महान् नहीं होता, जब तक न पड़े हथौड़ी की चोट तब तक पत्थर भी भगवान् नहीं होता।

४०५८. अगर हम चाहते हैं कि हमें पछताना न पड़े तो हमें समय के महत्त्व को पहचानना होगा, समय की पाबंदी को आत्मसात् करना होगा।

४०५९. हमें समय नहीं काटना, सोचो नर देह को काटने की बात कर रहे हो, कसाई छुरी से मूक प्राणियों को काटता है, आप नर देह को गप्पों में, टी.व्ही. देखकर, तास खेल कर, पेपर पढ़कर काट रहे हो, जिन्हें भविष्य की चिंता नहीं वे ही समय काटने की सोचते हैं, वे कभी श्मशान घाट या अस्पताल में जाकर नारकी हालात को देख आये होते तो फिर समय नहीं कर्म काटने की सोचते।

४०६०. सपने वो नहीं होते जो नींद में आते हैं, सपने वो होते हैं जिनके पूरे होने तक नींद नहीं आती है। सफलता न मिलने के पीछे कोई वजह हो सकती हैं ? किन्तु सफलता के पीछे वजह होगी सिर्फ कोशिश और आत्म विश्वास।

४०६१. सफलता तुम्हारा परिचय दुनिया से कराती है असफलता तुम्हें दुनिया का परिचय कराती है। कई विफलताएँ इसलिए होती हैं कि लोग सफलता के नजदीक पहुँचते ही प्रयास बंद कर देते हैं और लोगों को ये आभास नहीं होता कि जब उन्होंने प्रयास बंद कर दिये थे उस वक्त वे सफलता के कितने नजदीक थे।

४०६२. सफल व्यक्ति और दूसरों के बीच में अन्तर ताकत का नहीं, ज्ञान का नहीं, बल्कि इच्छा शक्ति का होता है।

४०६३. आप अपने जीवन में विशुद्धि और उत्साह शक्ति को भंग मत करना क्योंकि इसी से लौकिक और पारमार्थिक दोनों कार्यों में सफलता मिलती है।

४०६४. जैसे नेत्र विहीन व्यक्ति किसी भी गड्ढे में गिर सकता है वैसे ही ज्ञान विहीन साधक कभी भी असंयम के गड्ढे में गिर सकता है।

४०६५. साधना का अर्थ अपने समय, श्रम और साधनों का कण-कण उपयोग करना है।

४०६६. कठोर पाप कठोर साधना से ही कटेंगे, हीरे की कटिंग हीरे से ही होती है लोहे से नहीं।

४०६७. साधना एक पराक्रम है, संघर्ष है, जो अपनी ही दुष्प्रवृत्तियों से करना होता है।

४०६८. प्रमुदित, उत्साहित मन से जो साधना व आराधना की जाती है, वह प्रबल फल को प्रदान कराती है।

४०६९. चित्त की निर्मलता से साधना निर्मल होती है।

४०७०. तोते की तरह बंधन में बैठने को साधना नहीं संयम के साथ बैठना साधना है।

४०७१. भगवान् से मिलने नहीं भगवान् बनने साधना की जाती है।

४०७२. विभूति चंचल है, यौवन क्षणभंगुर है और जीवन यमराज के दाँतों के बीच विद्यमान है अतः पर लोक की साधना में उपेक्षा करना ठीक नहीं है।

४०७३. एकान्त में रहकर निवास कर लेना किन्तु ऐसी भीड़ में मत जाना जहाँ निज भगवान् से विछोह हो जाये मंदिर के भगवान् तो पुनः मिल सकते हैं पर परिणामों के भगवान् पुनः नहीं मिलते हैं।

४०७४. साहस भय पर विजय प्राप्त करने का नाम है।

४०७५. संसार में साहस ही सब कुछ है, साहस गया तो सब कुछ गया।

४०७६. यदि आप किसी को सुधारना चाहते हो तो पहले स्वयं को सुधारना होगा।

४०७७. श्रम करने वालों के जीवन में उदासी और निराशा का कोई स्थान नहीं रहता है और वे ही समाज में स्वतंत्रता, समता, बन्धुता विकसित करते हैं।

४०७८. श्रम से ही कृषि से लेकर उद्योगों तक उन्नति हुई और समुद्र की गहराइयों से लेकर अन्तरिक्ष की ऊँचाईयों तक व्यक्ति पहुँचा है।

४०७९. श्रम से पराधीनता कम हो जाती है और आत्म विश्वास जागता है।

४०८०. श्रम से व्यक्तिगत जीवन में उन्नति होती है एवं जीवन स्तर ऊँचा उठता है।

४०८१. अपनी शक्ति को छोटा न समझें, एक छोटी-सी चिंगारी भी विशाल वन को जलाकर राख कर सकती है। आत्मशक्ति भोग से नहीं योग से प्राप्त होती है।

४०८२. मणि मंत्र और औषधि का प्रभाव अचिन्त्य होता है।''

४०८३. उपदेशक बनने से पहले स्वयं आस्थावान होना आवश्यक है।

४०८४. विनीत व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता है।

४०८५. आत्मानुशासक, अनुशासन प्रिय ही दूसरों पर अनुशासन कर सकता है।

४०८६. हार और जीत हमारी सोच पर निर्भर है, मान लिया तो हार ठान लिया तो जीत।

४०८७. मुकाम वो चाहिए कि जिस दिन हार भी जाऊँ तो उस दिन जीतने वाले से ज्यादा मेरे चर्चे हों। हार तो कभी होती नहीं या तो जीत मिलती या सीख मिलती।

४०८८. जीत निश्चित हो तो कायर भी लड़ सकता है, बहादुर तो वो कहलाता है, जो हार निश्चित होने पर भी मैदान नहीं छोड़ता है।

४०८९. इंसान होकर हम हार क्यों मानें जब बहती नदी ने आज तक नहीं पूछा कि समुद्र कितनी दूर है।

४०९०. पराजय तब नहीं होती जब आप गिर जाते हैं, पराजय तब होती है जब आप उठने से इंकार कर देते हैं। जो झिझकता है वह हारता है।

४०९१. जो मनुष्य रोग, क्लेश, मद, उन्माद तथा समस्त दुःखदायक परीषहों से पीड़ित होने पर भी स्वीकृत चारित्र को नहीं छोड़ते हैं वे स्तुत्य हैं।

४०९२. इन्द्र, मनुष्य, विद्याधर, चक्रवर्ती और धरणेन्द्रों ने भूत भविष्य और वर्तमान में जो सुख भोगा है उस सबको इकट्ठा किया जाये उस सुख से अनन्त गुणित सुख सिद्ध परमेष्ठी एक समय में भोगते हैं इसलिए हे भाई! यदि तुझे इष्ट हो तो एकाग्रचित्त होकर उस समीचीन सुख का उपाय कर।

५०. परोपकारी स्तुत्य

४०९३. नदी, वृक्ष, बादल, समुद्र, विन्ध्याचल, मलयाचल, गाय, सूर्य, सज्जन सभी निःस्वार्थ परोपकार करते हैं।

४०९४. जिनका मुख प्रसन्नता का घर है, हृदय दया से परिपूर्ण हैं, वाणी अमृत की वर्षा करती है और कार्य परोपकार हैं, वे किसके द्वारा वंदनीय नहीं होते हैं?

४०९५. जो नेत्र, मन, वाणी और कर्म इन चारों से संसार को प्रसन्न करता है, उसी से संसार प्रसन्न रहता है।

४०९६. उपकार करने का साहसी स्वभाव होने के कारण गुणी लोग अपनी हानि की भी चिन्ता नहीं करते हैं, दीपक की लौ अपना अंग जलाकर ही प्रकाश उत्पन्न करती है।

४०९७. जो अपनी नम्रता से ही उन्नत होते जाते हैं, दूसरों के गुणों की प्रशंसा करते-करते ही अपने गुणों को विख्यात करते हैं, दूसरों के कामों को सिद्ध करने के लिए निरन्तर महान् उद्योग भी करते हुए ही अपने प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं और अपनी क्षमा के द्वारा ही निंदा के नीरस अक्षरों से मुखरित मुख वाले दुर्मुखों को दुःखित कर देते हैं- ऐसे अद्भुत आचरण वाले किसके वंदनीय नहीं होते हैं?

४०९८. ''मुझे लोग चाहे'', यह मैं कितना चाहता हूँ परन्तु ''लोग मुझे पसंद करे'', इसके लिए मैं करता क्या हूँ। दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द वर्ग में उत्साह का है।

४०९९. मनुष्य धन के द्वारा अधिक जीता है। विद्या से सुख पूर्वक जीता है। शिल्प से थोड़ा जीता है। बिना कर्म के मनुष्य जीवित ही नहीं रहता है

४१००. काम करने वाला मरने से कुछ घंटे पूर्व ही बूढ़ा होता है।

४१०१. सज्जन अपनी उपयोगिता कार्य से बताते हैं, कंठ से नहीं बताते हैं।

४१०२. आचार्य कहते हैं तृष्णा को नष्ट कर, क्षमा को धारण कर, पाप में अनुराग मत कर, सत्य बोल, सत्पुरुषों के पीछे चल, विद्वानों की सेवा कर, माननीयों का आदर कर, शत्रुओं से भी प्रेम कर, पीड़ितों को प्रश्रय दे, कीर्ति बढ़ा और दुःखित पर दया कर ये ही सब कार्य सत् पुरुषों के होते हैं।

४१०३. संघर्ष की भावना को प्रश्रय न देकर मनुष्य के उदान्त गुणों को जगाना ही समाज के कल्याण का मार्ग है।

४१०४. हँसी बाँट लेने से अनन्त हो जाती है। दुःख बँटता है तो हल्का हो जाता है और सुख बँटता है तो कई गुना हो जाता है।

४१०५. यदि तुम सच्चे सुधारक बनना चाहते हो, तो तीन बातों की आवश्यकता है प्रथम तो यह कि तुम्हारी हृदय भावना शील हो, दूसरी बात यह कि इन सबके लिए क्या तुमने कोई उपाय ढूँढ़ निकाला है या नहीं? तीसरा अटल अध्यवसाय यदि ये तीनों गुण आप में हैं तो वास्तव में आप एक सच्चे सुधारक मार्ग प्रदर्शक गुरु एवं मनुष्य जाति के लिए वरदान स्वरूप हैं।

४१०६. सामने वाले आदमी में जिस गुण की कमी है, उस सद्‌गुण के प्रत्यक्ष दर्शन उसे अपने व्यवहार द्वारा करा देना ही उसकी बड़ी से बड़ी सेवा है।

४१०७. ऐसा स्वभाव हो कि सामने वाला कहे कि तेरी याद में जो आनंद मुझे प्राप्त होता है, उसने सारे संसार के आनंद को अपने पैरों से रौंद डाला है।

४१०८. जो जिस कार्य में निपुण हो, उसे ही उस कार्य में लगायें, शास्त्रों का ज्ञाता मनुष्य भी यदि अनजाने काम में हाथ डाले तो धोखा खा जायेगा।

४१०९. प्रत्येक व्यक्ति सब बातों में निपुण नहीं हो सकता है, पर प्रत्येक व्यक्ति की कोई विशिष्ट, उत्कृष्टता होती है।

४११०. उद्योग से दरिद्रता नहीं रहती है। आत्म चिन्तन से पाप नहीं रहता है।

४१११. मौन रहने से झगड़ा नहीं होता है। सावधान रहने से भय नहीं होता है।

४११२. परिश्रम हर सफलता की कुंजी है और परिश्रम ही प्रतिभा का पिता है।

४११३. राम ने सुग्रीव से पूछा कि लंका कितनी दूर है ? सुग्रीव ने उत्तर दिया स्वामी! आलसियों के लिए बहुत दूर है, पर उद्यमशील के हाथ के पास ही है।

४११४. दुःखियों का दुःख शान्त करना ही उत्तम लोगों की सम्पत्ति का एकमात्र फल है।

४११५. बिना किसी के गुण-दोष की ओर ध्यान दिये परोपकार करना सज्जनों का एक व्यसन ही होता है। सत्पुरुष प्रत्युपकार की अपेक्षा नहीं करते हैं।

४११६. अमूल्य हीरे के कण से दूसरे के लिए गिराया गया रक्त कण ज्यादा कीमती है।

४११७. जब-तक अन्तःकरण दिव्य और उज्ज्वल न हो तब तक, वह व्यक्ति प्रकाश का प्रतिबिम्ब दूसरों पर नहीं डाल सकता है।

४११८. सज्जनों का लेना भी देने के लिए होता है जैसे-बादलों का जल लेना देने के लिए होता है।

४११९. हम अपने विषय में धारणा इस आधार पर बनाते हैं कि हम क्या करने के योग्य हैं, दूसरे लोग हमारा मूल्यांकन हमने जो कुछ किया है उससे करते हैं।

४१२०. अनुभव और दण्ड ऐसी सीख देते हैं जो अन्य उपायों से सम्प्रेषित नहीं होती है।

४१२१. कर्त्तव्य निष्ठ पुरुष कभी निराश नहीं होता है।

४१२२. मुझे राज्य की कामना नहीं है, न स्वर्ग की न मोक्ष की, मैं दुःखों से पीड़ित प्राणियों के कष्टों के निवारण की कामना करता हूँ।

४१२३. बुद्धिमान आपत्ति और कष्ट में भी उत्साह नहीं छोड़ते हैं।

४१२४. उत्साह बलवान होता है, उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं है।

४१२५. भ्रातृत्व, मानवता तथा आध्यात्मिकता को स्थान दो, अद्वैत भावना की मलिन दृष्टि को त्याग दो, तुम भी रहो, मैं भी रहूँ इस प्रकार की भावना हो।

४१२६. आलस्य सुख रूप प्रतीत होता है परन्तु उसका अन्त दुःख है तथा कार्य दक्षता दुःख रूप प्रतीत होती है परन्तु उससे सुख का उदय होता है।

४१२७. ऐश्वर्य, लक्ष्मी, लज्जा, धृति और कीर्ति ये कार्य दक्ष पुरुष में ही निवास करते हैं, आलसी में नहीं।

४१२८. आलसी और अनुद्योगी के सौ वर्ष के जीवन से दृढ़ उद्योग करने वाले के जीवन का एक दिन श्रेष्ठ है।

४१२९. उद्योगी के घर में ऋद्धि-सिद्धि पानी भरती हैं।

४१३०. उचित उपाय से न किया हुआ प्रयास अन्य अनेक व्यक्तियों का आश्रय प्राप्त होने पर भी व्यर्थ ही जाता है।

४१३१. सौभाग्य न होना किसी के लिए दोष नहीं है, समझकर सत्प्रयत्न न करना ही दोष है।

४१३२. जिसके जीवन में प्रयत्नशीलता नहीं है, वह या तो पशु है या मुक्त है।

४१३३. हमारा महान् गौरव कभी भी न गिरने में नहीं है, अपितु जब भी गिरें तो हर बार उठने में है।

४१३४. शब्दों की अपेक्षा कर्म अधिक पुकार-पुकार कर उपदेश देते हैं।

४१३५. यह जगत् का निजी अनुभव है कि आधी छटाँक भर आचरण का जितना फल होता है उतना मन भर भाषणों अथवा लेखों का नहीं होता है।

४१३६. जिसे करना उचित नहीं है उसे प्राणों के कंठ में आ जाने पर भी नहीं करना चाहिए और जो करणीय है उसे प्राण संकट उपस्थित होने पर भी करना चाहिए।

४१३७. प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षेत्र में महान् है, परन्तु एक का कर्त्तव्य दूसरे का कर्त्तव्य नहीं हो सकता है।

४१३८. कर्म वही है जो बंध कारक न हो। विद्या वही है जो मुक्ति कारक हो। इसके अतिरिक्त अन्य कर्म प्रयास मात्र है और अन्य विद्या शिल्प निपुणता मात्र है।

४१३९. गुणशीलता, तात्कालिक परिस्थिति तथा भविष्य का विचार करके शीघ्रता तथा दीर्घ सूत्रता दोनों दोषों को छोड़कर देश-काल के अनुकूल अपना कार्य करना चाहिए।

४१४०. कोई काम चाहे अच्छा हो या बुरा, बुद्धिमान को पहले उसके परिणाम का विचार करना चाहिए बाद में काम में हाथ लगाना चाहिए।

४१४१. जिससे अपयश और कुमति हो तथा जिससे पुण्य नष्ट हो जाए, ऐसा कर्म कभी न करें।

४१४२. उसी काम का करना ठीक है जिसे करके पश्चाताप न करना पड़े और जिसके फल का प्रसन्न मन से भोग कर सकें।

४१४३. यह कहना कि 'जब सब करेंगे तब हम करेंगे', न करने का बहाना है, हमें ठीक लगता है यह इसलिए हम करें, जब दूसरों को ठीक लगेगा तब वे करेंगे।

४१४४. वह कर्म सबसे उत्तम है जो अधिकतम लोगों को अधिकतम प्रसन्नता प्रदान करता है।

४१४५. कार्य करने वाले में थोड़ा कट्टरपन हुए बिना तेजस्वी कार्य नहीं हो सकता है।

४१४६. सदा दक्ष, उद्योग परायण और स्वयं काम करने वाला बनें। अपने सभी कर्त्तव्यों के पालन करने में दूसरे को अवकाश नहीं देना चाहिए।

४१४७. सुनने वाले लाखों है, सुनाने वाले हजारों हैं, समझने वाले सैकड़ों हैं परन्तु करने वाले कोई विरले ही हैं, सच्चे पुरुष वे ही हैं और सच्चा लाभ भी उन्हीं को प्राप्त होता है, जो करते हैं।

४१४८. जैसे लेकर न चुकाया हुआ ऋण यहाँ-वहाँ बन्धनकारी होता है, वैसे ही किया हुआ पाप भी इस लोक या परलोक में फल भोगे बिना या प्रायश्चित्त आदि किए बिना नष्ट नहीं होता है।

४१४९. निष्काम कर्मयोगी तभी सिद्ध होता है जब हमारे बाह्य कर्म के साथ अन्दर से चित्तशुद्धि रूपी कर्म का संयोग होता है।

४१५०. विघ्न के भय से कोई काम न करना कायरता का लक्षण है।

४१५१. यदि तुम्हारा लक्ष्य महान् हो और तुम्हारा साधन सामान्य हो तो भी कार्य करो क्योंकि केवल कार्य के द्वारा ही तुम्हारे साधनों में वृद्धि हो सकती है।

४१५२. बड़े क्षेत्रों पर आधिपत्य करो, लेकिन छोटे क्षेत्रों को भी विकसित करो।

५१. पित्त, चित्त और चारित्र शुद्धि करो

४१५३. जो स्वजनों पर उदारता, सेवकों पर दया, दुर्जन के साथ माध्यस्थता, सज्जन के साथ प्रीति, राजा के साथ नीति, विद्वानों के साथ सरलता, शत्रुजनों के साथ शौर्य, गुरुजनों के साथ क्षमा और स्त्रियों के साथ चतुरता का व्यवहार करते हैं और कला कुशल है, उन्हीं पुरुषों पर यह जगत् स्थित है।

४१५४. शील, ज्ञान वृद्धों का उपदेश, बहुश्रुतता, धर्मानुकूल आचरण और अनाशक्ति ये उन्नति के द्वार हैं।

४१५५. प्रेम, लज्जा, सहयोग, दयार्द्रता तथा सत्यवचन ये पाँच शान्ति के स्तम्भ हैं।

४१५६. अपने भीतर छुपे इन गुणों को प्रकट करो–ईमानदारी, गंभीरता, परिश्रम, भोग से अरुचि, सन्तुष्टि, उदारता, स्पष्टवादिता और चरित्रबल।

४१५७. विष से भी अमृत को, बालक से भी सुभाषित को, शत्रु से भी सदाचार को और अपवित्र स्थान से भी सुवर्ण को ग्रहण करना चाहिए।

४१५८. शत्रु के भी गुण ग्रहण करने चाहिए और गुरु के भी दोष बताने में संकोच नहीं करना चाहिए।

४१५९. योग्य पुरुषों के लिए कोई भी कार्य अत्यन्त कठिन नहीं होता है, उद्योगी मनुष्यों के लिए कोई स्थान दूर नहीं होता है, विद्वानों के लिए कोई देश विदेश नहीं होता है, प्रिय वचन बोलने वाले के लिए कोई व्यक्ति पराया नहीं होता है।

४१६०. कृतघ्न, दुराचारी, अत्यन्त क्रोधी और कपटी–चाण्डालों के ये चार प्रकार हैं, पाँचवें प्रकार का चाण्डाल जन्म से होता है।

४१६१. स्पर्शन इन्द्रिय डेढ़ प्रतिशत, रसना एक प्रतिशत, घ्राण साढ़े तीन प्रतिशत, चक्षु तिरासी प्रतिशत, कर्ण ग्यारह प्रतिशत, अच्छे या बुरे पदार्थों से आत्मा को प्रभावित करते हैं।

४१६२. जो उद्योगी, सचेत, शुचि कर्म वाला, सोचकर काम करने वाला, संयत, धर्मानुसार जीविका वाला और अप्रमादी है उसका यश बढ़ता है।

४१६३. मंगलवार को पूर्व दिशा में गमन लाभकारी है। सोमवार व शनिवार को दक्षिण दिशा में गमन से अर्थ लाभ होता है। बुधवार व बृहस्पतिवार को पश्चिम दिशा में गमन से कार्य सिद्धि होती है, रवि व शुक्रवार को उत्तर दिशा में जाने से अर्थ लाभ होता है।

४१६४. व्यवहार की छोटी–छोटी बातें ही व्यक्ति के चरित्र का दर्पण होती हैं, न कि लम्बी चौड़ी बातें। मनुष्यों के कार्य उनके विचारों के सर्वोत्तम व्याख्याता हैं।

४१६५. काम में देरी न होना कार्य–सिद्धि का ही लक्षण है।

४१६६. समय का नियमित विभाग न करके किए जाने वाले कार्य अस्त–व्यस्त हो जाते हैं।

४१६७. कुलीनता पूर्व जन्म के कर्मों का फल है, चारित्र इस जन्म के कर्मों का प्रकाशक है।

४१६८. मैं नहीं जानता कि मेरे बाबा कौन थे, मुझे यह जानने की चिंता अधिक है कि उनका पौत्र क्या बनेगा?

४१६९. मनुष्य प्रायः क्षोभ से अपने पराक्रम को प्राप्त होता है।

४१७०. बुद्धिमत्ता के साथ तथा धीमे चलो, जो तेज भागते हैं, उन्हें ठोकर लगती हैं।

४१७१. एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना लज्जा जनक है।

४१७२. गलती करना मनुष्य का काम है पर जान–बूझकर गलती पर जमे रहना शैतान का काम है।

४१७३. त्रुटियाँ तो केवल उसी से नहीं होगी जो कभी कोई काम करे ही नहीं, सर्वोत्तम मनुष्य त्रुटियों से ढलकर ही निकलते हैं।
४१७४. वह मनुष्य जो गलतियाँ नहीं करता है, प्रायः कुछ नहीं कर पाता है।
४१७५. कोई भी व्यक्ति अनेक और बड़ी गलतियाँ किए बिना कभी महान् नहीं बना है।
४१७६. सज्जन लोग ही सत्पुरुषों के गुण समूह को विख्यात करते हैं।
४१७७. सद्गुणों की साधना का कार्य भुजाओं से सागर तैरने जैसा है।
४१७८. बहुश्रुत होना, शिल्प सीखना, विनयी होना, सुशिक्षित होना और सुभाषित वाणी बोलना, यह उत्तम मंगल है।
४१७९. कोई भी दुःखी आदमी घृणा के योग्य नहीं हो सकता है।
४१८०. जैसे मैले वस्त्रों वाला जहाँ-कहीं भी बैठ जाता है, उसी प्रकार बिगड़े चरित्र वाला व्यक्ति भी अपने शेष चरित्र की रक्षा नहीं करता है।
४१८१. नीतिज्ञ के लिए अपना लक्ष्य ही सब कुछ है, गौरव सम्पन्न प्राणियों के लिए अपना चरित्र बल ही सर्व प्रधान है।
४१८२. आत्म त्याग, प्रेम तथा कर्त्तव्य से प्रेरित होकर किए गए छोटे-बड़े कार्यों से ही चरित्र का निर्माण होता है।
४१८३. भली-भाँति विचार करने से और सत्य के अभ्यास से वासनाओं का नाश हो जाता है, वासनाओं के विलय से चित्त उसी प्रकार विलय हो जाता है जैसे तेल समाप्त हो जाने पर दीपक बुझ जाता है।
४१८४. देखने, बोलने, सोचने और करने के विषय में पहले सोचिए कि क्या देखना, क्या बोलना, क्या सोचना और क्या करना क्या नहीं करना।
४१८५. मनुष्य अपनी कम से कम जरूरत से ज्यादा जितना भी लेता है, वह चोरी करता है।
४१८६. जनता कभी अचेत नहीं होती, उसके नायक अचेत या भ्रम मय हो सकते हैं।
४१८७. उसी का जन्म सफल है जिसके जन्म लेने से वंश की उन्नति होती है, नहीं तो परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मरता है और कौन जन्म नहीं लेता है?
४१८८. महान् सुयश के अतिरिक्त अन्य कोई स्थायी सम्पत्ति संसार में नहीं है।
४१८९. यथायोग्य आहार-विहार करने वाले, कर्मों को यथायोग्य करने वाले, यथायोग्य शयन करने वाले तथा जानने वाले का योग दुःख दूर करने वाला होता है।
४१९०. सामने आया हुआ मनुष्य अनुरक्त हो जाए, परोक्ष में गुणों की प्रशंसा करने लगे और कोई भी प्राणी भयभीत न हो यह योग की सिद्धि का सूचक लक्षण है।
४१९१. यश की अपेक्षा योग्यता अधिक महत्त्वपूर्ण है।
४१९२. जीव की बाल्यावस्था को ज्ञान हीन होने के कारण पशुता-सी और वृद्धावस्था को मृत्यु

तुल्य ही समझना चाहिए। यदि विवेक सम्पन्न हो तो युवावस्था ही उसका जीवन है।

४१९३. जल्दबाजी में न कोई काम स्वयं करें, न दूसरे से करवाएँ, जल्दीबाजी में काम लेने से मूर्ख आदमी को पछताना पड़ता है।

४१९४. जो आदमी बिना विचारे जल्दबाजी में काम करता है, उसके वे काम ही उसे तपाते हैं, जैसे मुँह में डाला हुआ गर्म भोजन।

४१९५. जिसे हम नहीं समझ सकते वह गलत ही है, यह मानने की जल्दबाजी करना भूल है, कितनी ही बातें पहले समझ में नहीं आती थीं, वे आज दीपक की तरह दिखाई देती हैं।

५२. अनुभव खुली, किताब पढ़ो

४१९६. जब पड़ाव दूर हो तो रुक-रुक कर चलना चाहिए।

४१९७. श्रद्धा, शील, लज्जा, संकोच, श्रुत (ज्ञान), त्याग और बुद्धि ये सात धन जिस स्त्री या पुरुष के पास है वही वास्तविक धनी है उसी का जीवन सफल है।

४१९८. जो ईश्वर की आराधना के साथ-साथ पुरुषार्थ करते हैं उनके दुःख और दारिद्रय दूर होते हैं और ऐश्वर्य बढ़ता है।

४१९९. जो मनुष्य अपनी उन्नति चाहता है, उसे चाहिए कि वह दूसरों के गुण देखने की आदत डाले।

४२००. जो मानव अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखता है, वही महान् बन सकता है।

४२०१. आप दूसरों को तभी ऊपर उठा सकते हो, जब आप स्वयं ऊपर उठ चुके हो।

४२०२. अच्छा स्वास्थ्य और अच्छी समझ जीवन में दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

४२०३. जिनके भाग्य में विनाश लिखा है, उनकी टालमटोल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा-ये चार निकृष्ट नौकायें हैं।

४२०४. महापुरुषों का सर्वश्रेष्ठ सम्मान हम उनका अनुकरण करके ही करते हैं।

४२०५. जो लोग हल के सहारे जीते हैं, वास्तव में वे ही जीते हैं और सब लोग तो दूसरे की कमाई हुई रोटी खाते हैं।

४२०६. जो लोग खेती करके जीविका चलाते हैं, वे केवल यही नहीं कि स्वयं कभी भीख न मागेंगे, बल्कि दूसरे भीख माँगने वालों को कभी इंकार किए बिना दान भी दे सकेंगे।

४२०७. जीवन का सच्चा पथ यह नहीं कि-जो हमें प्राप्त नहीं है उसके लिए हम रोते रहें बल्कि जो है उसमें संतोष का सच्चा सुख प्राप्त करें।

४२०८. आपका जीवन एक ऐसी खुली पुस्तक होना चाहिए, जिसका प्रत्येक पृष्ठ खुला हुआ हो, जिसकी प्रत्येक पंक्ति स्पष्ट हो और पढ़ी जा सके।

४२०९. जो गुणवान है वही जीवित है। जो धार्मिक है, वही जीवित है। जो गुण व धर्म से रहित है, उसका जीवन निष्फल है।

४२१०. जीवन वही है जो परतंत्र न हो।

४२११. जिसका वृत्तान्त सुनकर तथा जिसका स्मरण करने पर प्राणियों को आनन्द होता है, उसी का जीवन शोभा देता है।

४२१२. तरह-तरह की अभिलाषाएँ करते-करते ही सारी आयु बीत गई पर हाय! अब तक वह कुछ नहीं कर सका जो सत्पुरुषों के द्वारा स्मरण करने योग्य शेष रहता।

४२१३. जिन मूल्यों के लिए जान दी जा सकती है, उन्हीं के लिए जीना सार्थक है।

४२१४. धीरे-धीरे जियो का अर्थ इतना ही तो है कि जीवन की शक्ति संभाल कर खर्च करो।

४२१५. निष्कलंक का ही जीवन है, यश हीन का जीवन मरण तुल्य है।

४२१६. इस अज्ञानी लोक को जिस आचरण से तत्त्वबोध हो वह आचरण ज्ञानी करता है क्योंकि ज्ञानी का अज्ञानी को बोध देने के अतिरिक्त और कुछ कर्त्तव्य नहीं है।

४२१७. देर करना सदैव खतरनाक है और किसी भव्य योजना को टालते रहना प्रायः उसे नष्ट करना होता है।

४२१८. जिस समय जो कार्य करना उचित हो, उसे उसी समय शंका रहित होकर शीघ्र करना चाहिए क्योंकि समय पर हुई वर्षा फसल की पोषक होती है असमय की वर्षा फसल विनाशिनी होती है।

४२१९. सैकड़ों आज्ञाओं से मनुष्य उतनी तत्परता से प्रवृत्त नहीं होता जितना लोभ से कार्य करता है।

४२२०. युवा लोग किसी कार्य की समाप्ति पर थक जाते हैं और वृद्ध कार्य के प्रारम्भ में ही थक जाते हैं।

४२२१. असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ है।

४२२२. असफलताएँ कभी-कभी सफलता का आधार होती हैं, यदि हम अनेक बार भी असफल होते हैं तो कोई बात नहीं, प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।

४२२३. मनुष्य सफलता से कम असफलता से ज्यादा सीखता है।

४२२४. जिसके पास उम्मीद है, वह लाख बार हार कर भी नहीं हारता है।

४२२५. जो व्यक्ति अपने सामने कोई बड़ा उद्देश्य नहीं रखता है, वह जीवन भर केंचुए की ही चाल में रेंगता रह जाता है।

४२२६. अपना ही दोष ढूँढ़ निकालना ज्ञानवीरों का काम है।

४२२७. बुद्धिमानों की परीक्षा संकट काल में होती है और शूरों की संग्राम में होती है।

४२२८. संकट उपस्थित होने पर भी जिसकी बुद्धि विचलित नहीं होती है वह कार्य में सफल हो जाता है।

४२२९. मनुष्य के पास बुद्धि बल से बढ़कर श्रेष्ठ कोई दूसरी वस्तु नहीं है।

४२३०. जिसके पास बुद्धि है उसके पास सबकुछ है किन्तु मूर्ख के पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है।

४२३१. बुद्धि के बिना मनुष्य अपंग के समान है।

४२३२. थोड़ा पढ़ना और अधिक सोचना, कम बोलना अधिक सुनना, यही बुद्धिमान बनने का उपाय है।

४२३३. बुद्धिमान के पास थोड़ा सा भी धन हो तो वह बढ़ता रहता है और वह दक्षतापूर्वक काम करते हुए संयम के द्वारा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

४२३४. बुद्धिमान मूर्खों से जितनी शिक्षा प्राप्त करते हैं, उतनी सीख मूर्ख बुद्धिमानों से नहीं ले पाते हैं। बुद्धिमान लोग सदैव पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य को बदल देते हैं।

४२३५. कोई दूसरा हमारी भूल को सुधारे उससे कहीं अच्छा है कि अपनी भूल अपने ही हाथों सुधार ली जाये।

४२३६. अपने लक्ष्य को न भूलो अन्यथा जो कुछ मिलेगा, उसी में संतोष मानने लगोगे।

४२३७. जिसका उद्देश्य ऊँचा है उसे आराम तलवी और लोकप्रियता से बचना चाहिए।

४२३८. लक्ष्य हीन जीवन भटकाव भरा होता है अतः लक्ष्य अवश्य बनायें।

४२३९. जो मिट्टी से भी सोना बनाते हैं, वही व्यवहार कुशल है।

४२४०. किसी वस्तु के दोष का ध्यान न करते हुए विद्वान् उनके गुणों को ग्रहण कर लेते हैं, भौंरा जैसे काँटो वाले फूलों की गंध और पराग का उपयोग कर लेता है।

४२४१. शिक्षाएँ उनकी ग्रहण करें जो विद्वान् हों, श्रेष्ठ कर्म करते हों, खोटे स्वभाव के व्यक्तियों को सदैव दूर ही रखना चाहिए इसी में मनुष्य का कल्याण निहित है।

४२४२. सफलता एक ऐसी सीढ़ी है, जिस पर तुम अपने हाथ जेब में डालकर नहीं चढ़ सकते हो।

४२४३. यदि तुम जीवन में सफलता पाना चाहते हो तो धैर्य को अपना घनिष्ठ मित्र, अनुभव को अपना परामर्श दाता, सावधानी को अपना बड़ा भाई और आशा को अपनी संरक्षक प्रतिभा बना लो।

४२४४. मैंने समय नष्ट किया और समय अब मुझे नष्ट कर रहा है।

४२४५. क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है? तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ क्योंकि जीवन समय से बना है। आनन्द और कर्म से घंटे छोटे प्रतीत होते हैं।

४२४६. सद्गुणों को पाने के लिए प्रयत्न करो बाहरी आडम्बरों से क्या लाभ, ठांठ गाय केवल गले में घंटी बाँधने से ही नहीं बिकती है।

४२४७. उत्तम कार्य चाहते हो तो स्वयं करो।

४२४८. छोटी-छोटी बातों के लिए दूसरों का मुँह ताँकना, समर्थ होने पर भी अपना काम स्वयं न करना गर्व की बात नहीं है, बल्कि स्वावलम्बी होना निश्चय ही गर्व की बात है।

४२४९. काम करके कुछ उपार्जन करना शर्म की बात नहीं, दूसरों का मुँह ताकना शर्म की बात है।

४२५०. प्रतिष्ठा, आलसियों और अपाहिजों की तरह दूसरों के बल पर जीने में नहीं है, वह है अपना काम स्वयं करने में और सच्चाई-ईमानदारी से अपना पसीना बहाकर रोटी कमाने में।

४२५१. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

४२५२. वही सच्चा साहसी है, जो कभी निराश नहीं होता है।

४२५३. साहस गया कि मनुष्य की आधी समझदारी उसके साथ गई।

४२५४. साहस का टॉनिक बेहतरीन मानसिक औषधि है।

४२५५. जितने महान् कार्य साहस के बल पर किए जाते हैं, उतने केवल बुद्धिमत्ता के बल पर नहीं किए जाते हैं।

४२५६. बदला लेना साहस नहीं, दुर्व्यवहार का सहना साहस है।

४२५७. शिक्षित बनना प्रत्येक मनुष्य के अपने हाथ की बात है, केवल सच्ची लगन तथा इच्छा शक्ति की दृढ़ता की ही आवश्यकता है।

४२५८. जैसे मनुष्य कुदाल से पृथ्वी को खोदकर उसके तल से जल प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार गुरु की सेवा से शिष्य गुरु के पास विद्यमान विद्या को प्राप्त कर लेता है।

४२५९. यह मत सोचो कि मैं धीरे-धीरे धर्म मार्ग का अवलम्बन करूँगा, वह अभी बिना विलम्ब के शुरू करना प्रारम्भ कर दो क्योंकि धर्म ही वह वस्तु है, जो मृत्यु के समय भी तुम्हारा साथ देने वाला अमर मित्र है।

४२६०. किसी से मत पूछो कि धर्म करने से क्या लाभ है? बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारो की ओर देख लो और फिर उस आदमी को देखो जो उसमें सवार है।

४२६१. यदि तुम एक भी दिन व्यर्थ नष्ट किए बिना समस्त जीवन सत्कर्म करने में बिताते हो, तो तुम आगामी जन्म-मरण का मार्ग बन्द किए देते हो।

४२६२. साहसी पुरुष पराजित होने पर भी निरुत्साहित नहीं होते है हाथी तीखे बाणों के गहरे आघात होने पर भी अपने पैरों को और भी दृढ़ता से जमा देता है।

४२६३. यह काम अशक्य हैं, ऐसा कहकर किसी भी काम से पीछे न हटो; क्योंकि पुरुषार्थ प्रत्येक काम में सिद्धि देने की शक्ति रखता है।

४२६४. किसी काम को अधूरा मत छोड़ो क्योंकि अधूरा काम करने वालों को जगत् में कोई नहीं चाहता है।

४२६५. जो सुख की चाह न कर कार्य को चाहता है; वह मित्रों का ऐसा आधार स्तम्भ है, जो मित्रों के दु:ख के आँसुओं को पोछेगा।

४२६६. आपत्तियों को जो 'आपत्ति' नहीं समझते, वे आपत्तियों को ही आपत्ति में डालकर वापस भेज देते हैं।

४२६७. जब आपने अपनी सारी बुद्धिमत्ता से एक काम करने की ठान ली है, तो डगमगाना नहीं चाहिए, बल्कि लक्ष्य को शक्ति से प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

४२६८. ऐसे कार्यों के करने में जुट जाओ, जो अन्त में प्रसन्नता बढ़ाते है, चाहे तुम्हें ऐसा करने में अनेक कठोर दु:खों की पीड़ा उठानी पढ़े, अपने हृदय को कड़ा करो और अन्त तक दृढ़ रहो।

४२६९. किसी निश्चय पर पहुँचना यही विचार का उद्देश्य है और जब किसी बात का निश्चय हो गया है, तब उसको कार्य रूप में परिणत करने में विलम्ब करना भूल है।

४२७०. यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो सीधे अपने लक्ष्य की ओर चलो किन्तु जब परिस्थिति अनुकूल न हो तो उस मार्ग से चलो जिसमें सबसे कम बाधाएँ आने की सम्भावना हो।

४२७१. किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने का यही मार्ग है कि जो मनुष्य उस काम में दक्ष है, उससे उस काम का रहस्य मालूम कर लेना चाहिए।

४२७२. श्रम से भरा हुआ पुरुषार्थ और कार्य कुशल सद्बुद्धि, इन दोनों की परिपक्वता ही परिवार को ऊँचा उठाती है।

४२७३. पुरुष का सच्चा पुरुषत्व तो इसी में है कि जिसमें उसने जन्म लिया है उस वंश को धन में, बल में, ज्ञान में ऊँचा बना दे।

५३. कार्बन पेपर बनो, रेत पेपर नहीं

४२७४. किसी भी दिल में आग नहीं बाग लगाओ जिससे उसकी खुशबू आपको भी मिल सके।

४२७५. अपना जीवन उस फूल के समान बनाओ जो अपने मसलने वाले हाथों को भी सुगंधी से भर देता है।

४२७६. दु:ख में साथ देने वाला भगवान् होता है, सुख में साथ देने वाला इंसान, लेकिन आप क्या हैं?

४२७७. अमीर वह नहीं जिसके पास विपुल सम्पत्ति है, बल्कि अमीर वह है जिसके पास बूढ़े माँ बाप के लिए समय है।

४२७८. माना कि आपके पास वो आँखें नहीं है, जो आकाश में बैठे भगवान् को पहचान सकें, पर आपके पास वो आँखें तो हैं, जो पड़ोस में बैठे इंसान को पहचान सकें क्योंकि जो पड़ोस में बैठे इंसान को पहचान लेता है वो भगवान् को पहचान लेता है और फिर आज का इंसान ही भविष्य का भगवान् होता है।

४२७९. स्वार्थ की कीचड़ गंदगी फैलाती है और निःस्वार्थ की गंगा गंदगी को मिटाती है।

४२८०. शिक्षा का फल दीक्षा है। विद्या का फल विनय है। स्वाध्याय का फल सन्त सेवा है।

४२८१. पौष्टिकता के बिना भोजन व्यर्थ है, सुपात्र के बिना दिया गया दान व्यर्थ है, पुत्र की सच्ची शिक्षा के बिना मातृत्व व्यर्थ है उसी प्रकार परोपकार में खर्च किए बिना अपार धन सम्पत्ति व्यर्थ है।

४२८२. जब हम नेकी करके उसका एहसान जताने लगते हैं, तो वहीं जिसके साथ हमने नेकी की थी वह हमारा शत्रु हो जाता है और अगर वही नेकी करने वालों के दिल में रहे तो नेकी है, बाहर निकल आए तो बदी है।

४२८६. अपने साथ उपकार करने वालों के साथ जो साधुता बरतता है उसकी कोई तारीफ नहीं है। महात्मा तो वह है, जो अपने साथ बुराई करने वालों के साथ भी भलाई करे।

४२८७. दूध का सार मलाई है और जीवन का सार भलाई है।

४२८८. सच है, धनवान मरता है तो सिर्फ घर वाले रोते हैं मगर इंसान जब मरता है तो दुनिया वाले रोते हैं।

४२८९. सज्जन पुरुष बिना कहे दूसरों की आशा पूर्ण कर देते हैं, जैसे सूर्य स्वयं ही घर-घर प्रकाश फैला देता है।

४२९०. अपने सुख के लिए उद्योग करना दुःख को निमन्त्रण देना है और दूसरों के सुख के लिए उद्योग करना आनन्द को निमन्त्रण देना है।

४२९१. ज्यों-ज्यों परोपकार के लिए रुपयों की थैली खाली होती है, त्यों-त्यों हमारा हृदय पुण्य से भरता जाता है।

४२९२. जो नित्य गुरुजनों को प्रणाम करता है और वृद्ध पुरुषों की सेवा में लगा रहता है, उसकी कीर्ति, आयु, यश और बल चारों बढ़ते हैं।

४२९३. यदि मनुष्य परोपकारी नहीं है तो उसमें और दीवार पर लगे चित्र में क्या फर्क है।

४२९४. परस्पर उपकार करते हुए जीना ही वास्तविक जीना है।

४२९५. आप रक्तदान भले ही न कर पायें पर आप से किसी का रक्त शोषण न हो यह जरूर सोचिए।

४२९६. सबसे उत्तम दानी वे हैं, जो अपने संपर्क में आए हुए व्यक्तियों को इस योग्य बना दें कि उन्हें जीवन में कभी दान-दक्षिणा लेने की आवश्यकता न पड़े।

४२९७. जब आप किसी को भौतिक पदार्थ देने में असमर्थ हों तो भी अपनी सद्‌भावनाएँ और शुभकामनाएँ दूसरों को देते रहिए।

४२९८. अपने लिए सुख चाहने से नाशवान् सुख मिलता है और दूसरों को सुख पहुँचाने से अविनाशी सुख मिलता है।

४२९९. अपनी पीड़ा तो पशु-पक्षी भी अनुभव करते हैं, मनुष्य तो वही है जो दूसरों की वेदना को महसूस करें।

४३००. नेचरोपैथी, एलोपैथी और होम्योपैथी जहाँ काम नहीं करती वहाँ सिम्पैथी काम करती है।

४३०१. कार्बन पेपर बनो कि अपनी छाप दूसरों पर छोड़ दो।

४३०२. बड़ों से आगे बढ़ने की प्रेरणा लेना चाहिए क्योंकि महापुरुष पैर पूजने के लिए ही नहीं प्रेरणा लेने के लिए भी होते हैं।

४३०३. भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है।

४३०४. नेकी का उपहार नेकी है। दूसरों का भला करने से अपना ही भला होता है।

४३०५. विषयों की उम्र होती है कषायों की उम्र नहीं होती है अर्थात् विषय थोड़ी देर भोगे जाते, कषाय लम्बे समय तक माँगती रहती।

४३०६. संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है।

४३०७. दु:ख में आँसू बहाकर मन हल्का करना अच्छा है, लेकिन दूसरों के आँसू पोंछकर उन्हें हल्का करना बहुत अच्छा है।

४३०८. संसार में सबसे कठिन कार्य व्यक्ति में आत्मविश्वास के भावों को जागृत करना है। भोजन करते समय भूखे प्राणी को न भूलना भव्य जीव की पहचान है।

४३०९. दो प्रकार के इंसान होते हैं, एक वह जो साधु की दृष्टि से गिर जाते हैं, दूसरे वह जो साधु की दृष्टि में छा जाते हैं।

४३१०. उपकार करने वाले के सभी अपराध माफ कर दिये जाते हैं।

४३११. दूसरों को सुख पहुँचाने और भलाई करने से ही पुण्य का सृजन होता है इसीलिए परोपकार ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है।

४३१२. यदि मनुष्य निरंतर सुखी रहना चाहता है तो उसे परोपकार के लिए जीवित रहना चाहिए।

४३१३. उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता है।

४३१४. उपकार करने वाले में स्वार्थ की भावना नहीं होनी चाहिए।

४३१५. सन्त सुख का मोक्षमार्ग का उपदेश ही नहीं देते हैं, उपाय भी बताते हैं।

४३१६. उपदेश देना सरल है लेकिन उपाय बताना कठिन है।

४३१७. हमें तख्त पर ही नहीं वक्त पर भी एक होना चाहिए।

४३१८. जीवन में वे कार्य अवश्य कीजिए जिन्हें आप मृत्यु के बाद भी याद रखवाना चाहते हैं।

४३१९. क्रांति तो युगों के बाद आती है और वह मनुष्य को सजग कराने सुधारने के लिए आती है।

४३२०. गरीब लोग प्रेम और सहानुभूति के भूखे होते हैं।

४३२१. सुन्दरता व गुणों की ओर सभी आकर्षित होते हैं, पर कुरूप व अयोग्य को अपनाना दुर्लभ गुण है। दुर्गुणों को सद्‌गुण की सेवा में लगा दें तो सारे दुर्गुण सद्‌गुण हो जाएँगे।

४३२२. जीते जी आप जिनके न हो पाये तो कम से कम मरते वक्त तो उनके हो जाइये।

४३२३. दवा से तन स्वस्थ होता है किन्तु दुआ से मन स्वस्थ होता है।

४३२४. दवा के लिए धन चाहिए, जबकि दुआ के लिए सच्चा सहज सरल मन चाहिए।

४३२५. सच्ची नम्रता हमसे तमाम जीवों की सेवा के लिए, सब कुछ न्यौछावर करने की आशा रखती हैं।

४३२६. वह निन्द्य बन्धु है जो आपत्तिकाल में अपने भाई की सहायता नहीं करता है।

४३२७. अपने कुटुम्ब के लोग गुण हीन हों तो भी उनकी रक्षा करनी चाहिए फिर जो आपके कृपाभिलाषी एवं गुणवान हैं उनकी तो बात ही क्या है?

४३२८. किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता एक पूरे जीवन काल के परिश्रम के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है, इससे कम मूल्य पर उत्कृष्टता को नहीं खरीदा जा सकता है।

४३२९. सुधार की दृष्टि से गुरु के पास किसी की भी शिकायत करना चुगली नहीं परोपकार है।

४३३०. जिनके हृदय में सदैव परोपकार की भावना होती है, उनकी आपदाएँ समाप्त हो जाती हैं और पग-पग पर धन की प्राप्ति होती है।

४३३१. उदारता में चुम्बक जैसा आकर्षण होता है।

४३३२. यदि किसी के बीच में खुशबू बनकर नहीं महक सकते तो काँटे भी मत बनो।

४३३३. परोपकार न कर सको तो कोई बात नहीं, पर किसी का अपकार हरगिज न सोचो, न करो।

४३३४. जब कोई दूसरों की जिंदगी को खुशहाल बनाता है, तब उसकी जिंदगी अपने आप खुशहाल बन जाती है।

४३३५. पेट तो एक है और हाथ दो, यदि आप चाहें तो दोनों हाथों का उपयोग करके अपने साथ दूसरों का भी पेट भर सकते हैं।

४३३६. सच्चा प्रेम स्तुति से प्रकट नहीं होता सेवा से प्रकट होता है।

४३३७. जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयाँ मनुष्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती है।

४३४४. जो मेरे साथ भलाई करता है वह मुझे भला होना सिखा देता है।

४३४५. अपनी भलाई चाहते हो तो दूसरों का भी भला करो।

४३४६. कुलीन सत्पुरुष किसी का उपकार करके उसका दिग्दर्शन न करते हुए मौन रहते हैं।

४३४७. राष्ट्र को आतंकवाद की नहीं अहिंसावाद व संत आशीर्वाद की आवश्यकता है।

४३४८. जब मनुष्य पर विपत्ति आवे तब उसे अत्यधिक उपदेश के स्थान पर सहानुभूति और

सहायता की आवश्यकता होती है।

४३४९. आप भविष्य में भी गरीबों का ख्याल रखते रहें भगवान् आपका ख्याल रखेगा।

४३५०. महान् पुरुष जो उपकार करते हैं उसका बदला नहीं चाहते हैं।

४३५१. जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही सच्चा मानव कहलाता है।

४३५२. दुष्ट लोग शारीरिक बल का उपयोग दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए करते हैं और सज्जन लोग हानि व कष्ट से बचाने के लिए करते हैं।

४३५३. प्रतिभाशाली तथा पावन हृदय वाले व्यक्ति जिन विचारों को संसार में फैलाते हैं, उनसे संसार में परिवर्तन आता है।

४३५४. संस्कृति का संवर्द्धन देश को समृद्धशाली बनाता है।

४३५५. सहयोग के बिना समाज की श्रृंखला टूट जाती है।

४३५६. सज्जन पुरुष की सम्पत्ति दूसरों के कल्याणार्थ होती है।

४३५७. सहयोग से कठिन से कठिन कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाता है।

४३५८. सहयोगी व्यक्ति का कभी कोई शत्रु नहीं बनता है।

४३५९. सहयोग मित्रता की ओर बढ़ाया हाथ है जो हमेशा साथ देता है।

४३६०. सहमति से ज्यादा सहयोग से एक-दूसरे के दिल में आत्मीयता का संचार होता है।

४३६१. सहयोग का परस्पर आदान व प्रदान प्रगति के लिए दोनों अपेक्षित होते हैं, जो औरों की प्रगति में सहयोगी बनना जानता है, वह औरों को भी अपनी प्रगति में सहयोगी बनाना जानता है।

४३६२. आप बेसहारों का सहारा बनिये आपको सहारा अपने आप मिल जाएगा।

४३६३. आप राजमार्ग न बन सकें तो पगडंडी ही बनिए। सूरज न बन सकें तो तारा ही बनिए। ज्यादा सहयोग न कर सकें तो कुछ ही करें।

४३६४. इस दुनिया में किसी दुःखी व्यक्ति के लिए थोड़ी-सी भी सहायता ढेरों उपदेशों से कहीं अधिक अच्छी हैं।

४३६५. साधक की साधना में सहायक होना ही सच्ची वैय्यावृत्ति है।

४३६६. रात-दिन भगवान् के भजन-ध्यान में तल्लीन रहने वाले व्यक्ति से संसार का जो हित होता है, वह रात-दिन कर्म करने वालों से नहीं होता है।

४३६७. सेवा करने वाले के हाथ स्तुति करने वाले के मुँह से अधिक पवित्र होते हैं।

४३६८. सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से अनुभव प्राप्त होता है और यही जीवन का लक्ष्य है।

४३६९. सेवा तो मूक होनी चाहिए, जिसने अपनी सेवा का ढिंढोरा पीटा वह मानो अपने-आपको समाप्त कर चुका है।

४३७०. सेवा मानव-वृत्तियों में सबसे ऊँची और महान् वृत्ति है।

४३७१. सेवा से बढ़कर व्यक्ति को द्रवित करने वाली और कोई चीज संसार में नहीं हैं।

४३७२. संसार में ऐसी कौन सी दुर्लभ वस्तु है जो सेवा से प्राप्त न हो सके।

४३७३ जो स्त्री देश को तेजस्वी, नीरोग और सुशिक्षित सन्तान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है।

४३७४. मानव, मानव के साथ केवल उपकार करके ही अपने को देवतुल्य बनाते हैं।

४३७५. निःस्वार्थ भाव से किया गया सत्कर्म निश्चिततः शुभ फलप्रदाता होता है।

४३७६. स्वाध्याय और सेवा दोनों के अवसर एक साथ आ जाएँ तो सेवा श्रेष्ठ है।

४३७७. अगर पुण्योदय से आपको सम्पत्ति मिले तो स्वयं की सेवा के लिए भले ही नौकर रख लेना किन्तु माँ, महात्मा और परमात्मा की सेवा के लिए नौकर न रखें। प्रभु की प्रार्थना और माँ-बाप की सेवा स्वयं करना चाहिए।

४३७८. विधवा, विकलांग और अनाथ सेवा के प्रथम अधिकारी हैं।

४३७९. दूसरों का अहित करने से अपना अहित और दूसरों का हित करने से अपना हित होता है।

४३८०. जैसे माँ का दूध उसके अपने लिए न होकर बच्चे के लिए ही है, ऐसे ही मनुष्य के पास जो भी सामग्री है, वह उसके अपने लिए न होकर दूसरों के लिए ही है।

४३८१. कभी सेवा का मौका मिल जाय तो आनन्द मनाना चाहिए कि भाग्य खुल गया।

४३८२. सेवा से शत्रु भी मित्र बन जाता है।

४३८३. बिना प्रदर्शन के जो सेवा करता है, वह शीघ्र ऊँचाई पर पहुँच जाता है।

४३८४. बंधुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है।

४३८५. सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की।

४३८६. केवल वही व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है, जो पूर्णतया निःस्वार्थी है, जिसे न तो धन की लालसा है, न कीर्ति की और न किसी अन्य वस्तु की।

४३८७. वृद्ध, बच्चे, बीमार व कमजोर पशुओं की सेवा अपने बन्धुओं की तरह करना चाहिए।

४३८८. तीव्र तप करता हुआ भी तथा शास्त्र रूपी समुद्र का अवगाहन करता हुआ भी यदि वृद्ध सेवा नहीं करता अर्थात् सत्पुरुषों की आज्ञा में नहीं रहता है तो उसका कदापि कल्याण नहीं हो सकता है।

४३८९. मैं हर काम आऊँ यह जरूरी नहीं, पर मैं हर किसी के काम आऊँ यह जरूर सोचता हूँ।

४३९०. जो अपने घर को ही आदर्श न बना सका वह समाज, देश, राष्ट्र को क्या आदर्श बना सकेगा?

४३९१. जिनका भोजन पात्र के लिए है, धन का उपार्जन दान के लिए है और जीवन धर्म के लिए है, वे मनुष्य स्वर्गगामी देव होते हैं।

४३९२. स्वार्थ ही नर्क बनाता है।

४३९३. वृक्ष अपने काटने वाले को भी छाया देता है।

५४. सज्जनों का काम ट्रेफिक पुलिसवत्

४३९४. उपकार करके प्रत्युपकार न चाहना सज्जनता है।

४३९५. उपकार करना सबसे बड़ा धर्म है, कार्य निपुणता सबसे बड़ा अर्थ है, सुपात्र को दान देना सबसे बड़ी तृप्ति है तथा वैराग्य सबसे बड़ी मुक्ति है।

४३९६. सेवा करने से हृदय शुद्ध होता है अहंकार दूर होता है और बहुत शान्ति मिलती है भारतीय आदर्श भी है सेवा और त्याग।

४३९७. दूसरों में महानता देख पाना और उन्मुक्त हृदय से उन्हें उसका गौरव देना मनुष्य की महानता की कसौटी है।

४३९८. हाथ में श्रेष्ठ संयमोपकरण, शिर से गुरु चरणों में प्रणाम, मुख में सत्यवाणी, विजयी भुजाओं में अतुल बल, हृदय में पवित्रता, ईश्वर के ध्यान में तत्पर करा देने वाला शास्त्र अध्ययन; ये सब ऐश्वर्य के बिना ही स्वभावतः महापुरुषों के आभूषण हैं।

४३९९. यदि झुर्रियाँ हमारे माथे पर पड़नी ही हैं तो भी उन्हें हृदय में मत पड़ने दो। उत्साह को कभी वृद्ध नहीं होना चाहिए।

४४००. अपकार करने वालों को यदि बदला देना चाहते हो तो उपकार दो, इसमें तुम्हारी विलक्षण विजय होगी। वर्तमान परिणमन पर ध्यान दो।

४४०१. जो लोग गर्भपात करते हैं वे जन्म देकर सन्तान हीनों को देकर तीनों का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं।

४४०२. भगवन् मुझे सम्पत्ति के साथ सद्‌बुद्धि भी देना जिससे मैं कुँए के पानी की भाँति उसका सदुपयोग कर सकूँ।

४४०३. संतों का काम ट्रेफिक पुलिस के समान है, जो समाज के गतिरोधों को दूर करता है।

४४०४. किए गये उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाते, कभी इस भव में तो कभी अगले भव में फल अवश्य देते हैं।

४४०५. बिना कारण ही जो उपकार किए जाते है उनका फल अवश्य मिलता है।

४४०६. किसी को कुछ देने की इच्छा हो तो आत्म विश्वास जगाने वाला प्रोत्साहन सर्वोत्तम उपहार रूप में दें। ''उपहार का आदान-प्रदान मैत्री को मजबूत करता है।''

४४०७. कभी-कभी उपहार हमारी पसंद के विपरीत भी हो सकता है किन्तु हमे उपहार धैर्य व

प्रसन्नता से स्वीकार करना चाहिए।

४४०८. अच्छा काम करते रहो कोई सम्मान करे या न करे, सूर्य का उदय तब भी होता है जब करोड़ों लोग सोये होते हैं।

४४०९. सद्व्यवहार में शक्ति है, जो सोचता है कि मैं दूसरों के काम आ सकने के लिए कुछ करूँ, वही आत्मोन्नति का सच्चा पथिक है। ''दृढ़ इच्छा शक्ति ही व्यक्ति को महान् बनाती है।''

४४१०. कदाचित् भाग्य की प्रतिकूलता से माता भी विकार को प्राप्त हो जावे परन्तु अच्छी तरह की गई वृद्ध सेवा किसी भी देश व किसी भी काल में विकार को प्राप्त नहीं होती है।

४४११. परोपकारी, सदाचारी दूसरे के हितार्थ अपनी आपत्ति की भी परवाह नहीं करता है।

४४१२. जब किसी जरूरतमंद की आवाज आप तक पहुँचे तो परमात्मा को धन्यवाद देना कि उसने अपने भक्त की मदद के लिए आपको चुना, वरना वो तो सबके लिए अकेला ही काफी है।

४४१३. मदद करने के लिए सिर्फ धन की ही नहीं एक अच्छे मन की भी जरूरत होती है। ''जो सादगी में महत्त्व है, भलाई है, वह दौलत में नहीं'' जो हम प्राप्त करते हैं उससे हमारा जीवन बनता है तथा जो हम देते हैं उससे दूसरों का जीवन बनता है अतः अपने साथ-साथ दूसरों का जीवन भी बनाएँ।

४४१४. साधु दयालु और पवित्र होते हैं, वे अपकार होने पर भी उपकार करते हैं।

४४१५. दिल से दूसरों की सेवा करो तो दुआओं का दरवाजा खुल जायेगा।

४४१६. जो व्यक्ति रोगी, दुःखी, गुरु, माता-पिता और वृद्धजनों की सेवा करता है वह नियम से मुक्ति लक्ष्मी को प्राप्त करता है। कहा भी है ''सेवा करो मेवा पाओ''

४४१७. जब हम एक दूसरे की मदद करने या उन्हें समझाने मुड़ते हैं तो हम अपने दुश्मनों की संख्या कम कर देते हैं।

४४१८. जिन्दगी, धन और सत्ता के संचय का नाम नहीं है, बल्कि आशीर्वादों के मोती एकत्रित करने का नाम है, जहाँ धन और सत्ता की प्राप्ति के लिए शोषण और जुल्म अनिवार्य है वहाँ आशीर्वादों के मोती बटोरने के लिए किसी को पीड़ित करने की नहीं बल्कि दूसरों की पीड़ा हरने की जरूरत है।

४४१९. गुण रहित शरीर प्रतिक्षण नष्ट हो रहा है, इसका एक ही महान् गुण है कि यह परोपकार का साधन है।

४४२०. करुणा से आर्द्र सज्जन सभी के निःस्वार्थ बन्धु होते हैं।

४४२१. अपने विनाश की ओर जाने वाले शत्रुओं को भी सज्जन दयालुता वश उपदेश देते हैं।

४४२२. ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा सा भी कार्य बहुत उपकारी होता है और समय बीतने

पर किया हुआ महान् उपकार भी व्यर्थ हो जाता है।

४४२३. सरकार का उचित कार्य लोगों के लिए अच्छे कार्य कर सकना सरल बनाना और बुराई कर सकना कठिन बनाना है।

४४२४. मनुष्य को चाहिए कि वह जिसकी पराजय नहीं चाहता, उसको बिना पूछे भी अच्छी अथवा बुरी, कल्याण करने वाली या अनिष्ट करने वाली, जो भी बात हो बता दें।

४४२५. कठिनाइयों वाले लक्ष्य को सहायकों वाला व्यक्ति ही प्राप्त कर सकता है।

४४२६. अपने कल्याण के साधन के इच्छुक सुयोग्य व्यक्ति भी सहायक के बिना उसे सिद्ध करने में कुशल नहीं हो पाते हैं।

४४२७. साहस और धैर्य ऐसे गुण हैं जिनकी कठिन परिस्थितियों में बड़ी आवश्यकता होती है। संकट में साहस का होना आधी मंजिल तय कर लेना है।

४४२८. अगर मेरे पास बहुतेरे साधन होते तो मैं कितनी ज्यादा सेवा कर सका होता, इस उधेड़बुन में पड़ने की अपेक्षा जो साधन आज तुम्हारे पास मौजूद हैं उनके द्वारा की गयी जरा सी मदद भी कहीं कीमती है।

४४२९. माँगने पर देना अच्छा है लेकिन आवश्यकता अनुभव करके, बिना माँगें देना और भी अच्छा है।

४४३०. संतों के द्वारा दिया गया संताप भी भला होता है और दुष्टों के द्वारा दिया गया सम्मान भी बुरा होता है। सूर्य तपता है तो जल की वर्षा भी करता है परन्तु दुष्टों के द्वारा दिया गया भक्ष्य भी मछली के प्राण ले लेता है।

४४३१. न तो कोई इतना धनाढ्य है कि उसे दूसरे की सहायता की आवश्यकता न हो और न ही कोई इतना दरिद्र है कि किसी भी रूप में अपने साथियों के लिए उपयोगी सिद्ध न हो सके।

४४३२. निश्चिन्त हो जाने का अर्थ है असावधान हो जाना।

४४३३. व्यक्ति बहुत प्रत्युपकार करने पर भी पूर्व उपकारी के समान शोभा नहीं पाता है क्योंकि एक तो उपकृत होने पर उपकार करता है जबकि अन्य तो निष्कारण उपकार करता है।

४४३४. अपने उपाय से ही उपकारी का उपकार करना चाहिए उपकार बड़ा है या छोटा-इस प्रकार का विद्वानों का विशेष आग्रह नहीं होता है।

४४३५. प्रवीणता एवं आत्म विश्वास अविजित सेनाएं हैं।

४४३६. जिस धनी पुरुष का जन्म याचक जन की इच्छा को पूर्ण करने के लिए नहीं है, उस पुरुष से ही यह पृथ्वी अत्यन्त भार वाली है न कि पेड़ों, पर्वतों या समुद्रों से।

४४३७. जब महान् व्यक्ति संघर्ष में अकेले होते हैं तब वे सशक्ततम होते हैं।

४४३८. यह महापुरुषों का स्वभाव है कि वे आपत्ति में पड़े हुए लोगों से सहानुभूति रखते हैं।

४४३९. साधु पुरुष की सम्पत्ति थोड़ी भी हो तो भी दूसरों के काम आती है किन्तु दुष्ट की विपुल सम्पत्ति भी किसी के काम नहीं आती है।

४४४०. भविष्य चाहे जितना भी सुखद हो, उस पर विश्वास न करो, भूतकाल की भी चिंता न करो, हृदय में उत्साह भर कर और ईश्वर में विश्वास कर वर्तमान में कर्मशील रहो।

४४४१. अभ्यास की शक्ति तो देखो—निरन्तर अभ्यास से किसी विषय का अज्ञ उस विषय का ज्ञाता हो जाता है, पर्वत भी धीरे-धीरे घिसकर चूर्ण बन जाता है और बाण भी अपने सूक्ष्म लक्ष्य तक पहुँच जाता है। मनुष्य जिस-जिस वस्तु का लगातार चिन्तन करता है, अभ्यास वश उसी-उसी की ओर मन का झुकाव हो जाता है।

४४४२. बुरे स्वभाव से अपने लिए नरक न बनाए। अपने स्वभाव से दूसरों के लिए स्वर्ग बनाए।

४४४३. मूर्ति की तरह अपने आप को सुन्दर बनाओ रुको मत।

४४४४. आयु का एक क्षण भी संसार के सब रत्नों के बदले भी नहीं पाया जा सकता है, उस आयु को यदि कोई व्यर्थ में खोता है, तो अहो! बड़ा भारी प्रमाद है।

४४४५. आलोचना की उपेक्षा कर पूर्ण शक्ति से उत्तम कार्य करो।

४४४६. जो व्यक्ति छोटे कामों को ईमानदारी से करता है, वही बड़े कामों को ईमानदारी से कर सकता है।

४४४७. हमें अपने आपको नहीं, अपने उत्तर दायित्वों को गंभीरता से लेना चाहिए।

४४४८. जिनके हृदय में उत्साह होता है, वे पुरुष कठिन से कठिन कार्य आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते हैं।

४४४९. उत्साह ही प्राणियों को सब कामों में सदा प्रवृत्त करता है।

५५. उन्नति का मूल मंत्र—सेवा और प्रेम

४४५०. अपने को प्रकट किए बिना उपकार करना, छोटों को क्षमा कर देना, बिना माँगे देना, गुणों से प्रेम करना, बहुतों में से कुछ ही लोग जानते हैं।

४४५१. जैसे चन्द्रमा चाण्डाल को भी चाँदनी देता है वैसे ही सज्जन पुरुष गुणहीन प्राणियों पर भी दया करते हैं।

४४५२. दीन दु:खी एवं पीड़ित बंधुओं की सेवा करने में जो गौरव युक्त आनंद मिलता है, वह सभ्य समाज की दावतों में नहीं प्राप्त होता है।

४४५३. बिना उत्साह के कोई महान् उपलब्धि कभी नहीं हुई है।

४४५४. उन्नति का मूल मंत्र, सेवा और प्रेम है न कि आज्ञा और बल प्रयोग।

४४५५. महापुरुषों के प्रति सद्भाव पूर्ण उपकार शीघ्र ही फल देता है।

४४५६. तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार।

४४५७. पुत्र को सभा में अग्रिम स्थान में बैठने योग्य बनाना पिता का सबसे बड़ा उपकार होगा।

४४५८. तृण तुल्य भी उपकार क्यों न हो, उसके फल को समझने वाले उसे ताड़ के समान मानेंगे।

४४५९. उपदेश करो अपने लिए, तभी तुम्हारा उपदेश सार्थक होगा। जो दूसरों से करवाना चाहते हो, उसे पहले स्वयं करो; नहीं तो तुम्हारा उपदेश नाटक के अभिनय के सिवा और कुछ भी नहीं है।

४४६०. कोई भी अक्षर अमंत्र नहीं है। कोई भी वृक्ष मूल अनौषध नहीं है। कोई भी पुरुष अयोग्य नहीं है। केवल उनके जानने वाले मनुष्य दुर्लभ होते हैं।

४४६१. लोक की हँसी सहने वाले ही लोक का निर्माण करते हैं।

४४६२. अच्छे लोग दूसरों के सन्ताप से सन्तप्त रहते हैं, यही उनके लिए परमात्मा की सर्वोच्च आराधना है।

४४६३. करुणा से आर्द्र हृदय वाले व्यक्ति सभी के अकारण बंधु होते हैं।

४४६५. हमारी उन्नति का एक मात्र उपाय यह है कि हम पहले वह कर्त्तव्य करें जो हमारे हाथ में है और इस प्रकार धीरे-धीरे शक्ति संचय करते हुए क्रमशः हम सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

४४६६. मानव की वाणी की अपेक्षा उसका कर्म अधिक अच्छा नेतृत्व कर सकता है।

४४६७. यह एक बात है कि किसी व्यक्ति को यह दिखाया जाये कि वह गलती पर है और यह दूसरी बात है कि उसे सत्य प्राप्त करा दिया जाये।

४४६८. धन, यश कमाने वाला नहीं, प्राणिमात्र के प्रति करुणा के भाव से जो चिकित्सा करता है, वह महान् है।

४४६९. धर्म और देश के लिए जीवित रहना ही यथार्थ जीवन है।

४४७०. वे जिनके हृदय में सदैव परोपकार की भावना रहती है उनकी आपदाएँ समाप्त हो जाती हैं और पग-पग पर धन की प्राप्ति होती है।

४४७१. करुणा करने वालों का शरीर परोपकारों से शोभा पाता है, चन्दन से नहीं।

४४७२. परोपकार के लिए मरने का सौभाग्य तो संस्कार वालो को ही प्राप्त होता है।

४४७३. जो दूसरों की भलाई करना चाहता है, उसने अपना भला तो कर ही लिया है।

४४७४. भलाई करना कर्त्तव्य नहीं आनन्द है क्योंकि वह तुम्हारें स्वास्थ्य और सुख में वृद्धि करती है।

४४७५. जो मेरे साथ भलाई करता है, वह मुझे भला होना सिखा देता है।

४४७६. जो मनुष्य दुष्ट से धन लेकर सज्जन को देता है, वह स्वयं को नाव बना कर दोनों को पार लगा देता है।

४४७७. डूबने वाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ बल्कि तैरकर

उसे बचाने का प्रयास करो।

४४७८. मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है क्योंकि वह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है।

४४७९. जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, दूसरों को लूटने में नहीं है।

४४८०. सुख बाँटने से बढ़ता है दुःख बाँटने से घटता है।

४४८१. जो सच्ची सेवा करने वाला है उसका प्रचार तो अपने आप होने वाला है।

४४८२. हम अतिथि सेवा के माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकते कि उसमें कितना पुण्य है क्योंकि अतिथि सेवा का महत्त्व तो अतिथि की योग्यता पर निर्भर है।

४४८३. सेवा भाव को प्रदर्शित करने वाला विनम्र वचन बोलता है, मित्र बनाता है तथा बहुतों को लाभ पहुँचाता है।

४४८४. अवसर पर जो उपकार किया जाता है, वह देखने में छोटा भले ही हो परन्तु जगत् में सबसे महान् है।

४४८५. उस सद्व्यवहारी पुरुष को देखो जो दूसरे के कामों को भी अपने विशेष कार्यों के समान ही देखता-भालता है, उसके उद्योग-धन्धे अवश्य उन्नति करेंगे।

४४८६. हार्दिक उपकार से बढ़कर न कोई चीज इस भूतल पर मिल सकती है और न स्वर्ग में।

४४८७. जिन लोगों को उचित और योग्य बातों का ज्ञान है, वे बुरे दिन आने पर भी दूसरों का उपकार करने से नहीं चूकते हैं।

४४८८. परोपकारी जीव उसी समय अपने को गरीब समझता है जबकि वह सहायता माँगने वालों की इच्छा पूर्ण करने में असमर्थ होता है।

४४८९. याचक के ओठों पर संतोषजनित हँसी की रेखा देखे बिना दानी का मन प्रसन्न नहीं होता है।

४४९०. आत्मजयी की विजयों में श्रेष्ठजय है 'भूख को जीतना' पर उससे भी बढ़कर उस मनुष्य की विजय है जो दूसरों की क्षुधा को शान्त करता है।

५६. कामना की भावना, रोकती प्रभावना

४४९१. मंदिर जी में देव दर्शन को जाएँ तो हाथ भरा एवं मन खाली करके जायें।

४४९२. परिचय, परिणय और परिग्रह परमात्मा प्राप्ति में सबसे अधिक बाधक हैं।

४४९३. किसी रोते हुए को हँसाना और मरते हुए को बचाना ईश्वर की सबसे बड़ी प्रार्थना है।

४४९४. स्त्री का फल पुत्र है, शास्त्र का फल शान्ति है, सम्पत्ति का फल दान है, लक्ष्मी का फल कीर्ति है, श्रम का फल धन है, वैराग्य का फल दीक्षा है, दीक्षा का फल तपस्या है, तपस्या का फल कर्म नष्ट कर मोक्ष प्राप्त करना है और सद्गृहस्थ होने का फल प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र देव के चरण कमल की भाव सहित पूजा करना तथा सत्पात्र को दान देना है।

४४९५. बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान् की भक्ति से बढ़कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया है।

४४९६. भक्ति में एक अद्भुत शक्ति है, भक्ति से शक्ति, शक्ति से युक्ति और युक्ति से मुक्ति प्राप्त होती है अतः जीवन की नैया को भक्ति रूपी डोरी से जोड़ दो क्योंकि भक्ति ही भगवान् बनने की सच्ची राह है।

४४९७. भगवान् से रागी और विषयों से वीतरागी बनो।

४४९८. मंदिर बनता है धन से, लेकिन पूजा होती है मन से।

४४९८. जो जिन प्रतिमा, जिन मन्दिर तथा सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण कराते हैं उनको अपने परिणामों में विशुद्धि के कारण अविनाशी फल प्राप्त होता है।

४४९९. जो भी परिस्थिति सामने आ जाये, उसी में प्रसन्न रहना 'भजन' है।

४५००. भगवान् का भजन करते समय संसार को याद नहीं करना चाहिए और संसार का काम करते समय भगवान् को भूलना नहीं चाहिए।

४५०१. जो व्यक्ति देव, गुरु और धर्म की उपासना के उद्देश्य से स्नान नहीं करता उसका स्नान मत्स्य, मगर आदि जलचर जीवों के स्नान की तरह व्यर्थ है।

४५०२. शास्त्र के अनुसार मन्दिर समवसरण का प्रतीक है लेकिन व्यवहार से मन्दिर एक विद्यालय, न्यायालय, चिकित्सालय, जलाशय, उद्यान का प्रतीक भी है।

४५०३. जिस प्रकार समवसरण में नरकगति के जीव नहीं जाते, उसी प्रकार मन्दिर जी में भावी नारकी जीव भी नहीं जाते हैं।

४५०४. जिन-जिन वस्तुओं को हम अपनी मानते हैं, उन-उन वस्तुओं के हम पराधीन हो जाते हैं, पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता है-''पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।''

४५०५. संसार का आश्रय लेने से पराधीनता और भगवान् का आश्रय लेने से स्वाधीनता प्राप्त होती है।

४५०६. जब तक मनुष्य भगवान् का सहारा नहीं लेगा, तब तक कोई भी सहारा टिकेगा नहीं, अतः जन प्रिय नहीं जिनेन्द्र प्रिय बनो।

४५०७. स्वच्छ हृदय में ही प्रभु का वास होता है।

४५०८. भगवान् से विमुख होते ही जीव अनाथ हो जाता है।

४५०९. आत्म समर्पण के बिना प्रभु अनुभूति संभव नहीं है।

४५१०. परमात्मा को देखने के लिए चर्म चक्षु नहीं, श्रद्धा की आँख चाहिए।

४५११. दूरदर्शन से नहीं देवदर्शन से आत्मरंजन होता है।

४५१२. हमारे कर्म ही हमें प्रभु की कृपा के योग्य बनाते हैं, न कि हमारे वचन।

४५१३. कामना की धूल भक्ति के दर्पण को गन्दा कर देती है।

४५१४. प्रभु का चिन्तन करो, तुम्हारी चिन्ता प्रभु स्वयं करेंगे।
४५१५. तीर्थ हमारी साधना और उपासना के केन्द्र हैं, तीर्थ हमारी आस्था और भक्ति के केन्द्र हैं।
४५१६. तीर्थयात्रा वही सार्थक या सफल है, जिसमें मानव दुष्कृत्य का परित्याग कर देवे।
४५१७. दूसरों का आदर-सत्कार करना ही सज्जनों की सम्पत्ति होती है।
४५१८. भौतिक धन तो किसका नश्वर नहीं है? अर्थात् सभी का नश्वर होता है।
४५१९. जो व्यक्ति दूसरों का आदर सत्कार नहीं जानता है वह क्या पूजा के महत्त्व को कभी जान सकता है?
४५२०. मानसिक उद्वेग पर प्रभु नाम वही काम करता है, जो आग पर पानी करता है।
४५२१. निराधारों के लिए परमात्मा का सबसे बड़ा आधार है।
४५२२. जैसे मन्दिर के बाहर अपने पदत्राण उतार देते हो वैसे ही अपनी मान्यताओं, परम्पराओं को बाहर छोड़ देना चाहिए।
४५२३. जो जिनपूजा अनेक जन्म सम्बन्धी पापों को नष्ट कर देती है वह क्या प्राणियों के पूजा सम्बन्धी विधि से होने वाले पाप को नष्ट नहीं करेगी?
४५२४. पवित्र मन से पूजा करने वाला आज का पुजारी ही कल का परमात्मा है।
४५२५. प्रार्थना वाणी से नहीं हृदय से करने की चीज है।
४५२६. प्रार्थना पश्चाताप का एक चिन्ह है तथा प्रार्थना में असीम शक्ति है।
४५२७. प्रार्थना पदार्थ के लिए नहीं अपितु परमार्थ के लिए होना चाहिए।
४५२८. असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।
४५२९. सच्चे दिल से की गयी प्रार्थना प्रभु स्वीकार करता है।
४५३०. प्रार्थना और उपवास आत्मशुद्धि की एक अत्यन्त शक्तिशाली प्रक्रिया है।
४५३१. यदि आपकी प्रभु-प्रार्थना, याचना से युक्त हो तो कर्ममुक्त नहीं कर सकती है।
४५३२. प्रार्थना के साथ कामना और साधना के साथ वासना हो तो साधक का पतन हो जाता है।
४५३३. जो बिना प्रार्थना किए सोता है, वह हर दिवस को दो रात बनाता है।
४५३४. हृदय की सच्ची प्रार्थना से हमें सच्चे कर्त्तव्य का पता चलता है, अन्त में तो कर्त्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है।
४५३५. प्रार्थना जीभ से नहीं हृदय से होती है इसी से गूँगे, तोतले और मूढ़ भी प्रार्थना कर सकते हैं।
४५३६. प्रार्थना चिन्ता को ठण्डा और पत्थर को मोम कर सकती है।
४५३७. प्रार्थना तूफान को रोक सकती है और डूबती नैया को किनारे लगा सकती है।
४५३८. जैसे आप बीमारी में साँस लेना नहीं छोड़ते वैसे ही कष्टों में भजन करना नहीं छोड़ना चाहिए।

४५३९. मनुष्य का शरीर भारत की लोकसभा जैसा है, इस शरीर में सभी मंत्रालय हैं-प्राण प्रधानमंत्री है, सिर शिक्षामंत्री है, कान दूरसंचार मंत्री, जुबान सूचना व प्रसारण मंत्री है, पेट खाद्य मंत्री है, हाथ श्रम मंत्री है, पैर यातायात मंत्री, नाक स्वास्थ्य मंत्री है, आँख कानून मंत्री, दिल वित्तमंत्री है, फेफड़े गृह मंत्री और आत्मा राष्ट्रपति है। इतना सब कुछ तो आपके पास है फिर क्यों आप लाल-पीली बत्ती माँगते-फिरते हो? अरे! प्रभु के नाम लगाने को सिर्फ समय माँगों बस।

४५४०. मंदिर में सिर्फ कपड़े बदलकर न जायें बल्कि अपना मन बदलकर जायें क्योंकि भगवान् आपके शुद्ध कपड़े नहीं देखता वह तो आपके मन को देखता है कि मन शुद्ध है या नहीं।

४५४१. बुराई में रस लेना बुरी बात है किन्तु अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और बुरी बात है।

४५४२. आप भगवान् के दास बन जाओं तो भगवान् आपको मालिक बना देंगे।

४५४३. भगवान् का भक्त कितनी ही नीची जाति का क्यों न हो, वह भक्ति हीन विद्वान् से श्रेष्ठ है।

४५४४. जो भगवान् का भक्त नहीं, वह करोड़पति होने पर भी कंगाल है।

४५४५. भक्त की परीक्षा वक्त पर होती है।

४५४६. जैसे वृक्ष के नीचे ताली बजाने से उस पर बैठे पक्षी भाग जाते हैं, वैसे प्रभु की भक्ति (भजन) स्मरण से आत्मा के पाप कर्म उड़ जाते है।

४५४७. संसार में भगवद्भक्ति के समान मूल्यवान कोई चीज नहीं है।

४५४८. जैसे थोड़ी सी औषधि भयंकर रोग को शांत कर देती है और जैसे थोड़ा सा अमृत मृत्यु के भय को दूर कर देता है, उसी प्रकार ईश्वर की थोड़ी-सी स्तुति बहुत से पापों को नष्ट कर देती है।

४५४९. भक्ति में भय नहीं होता और भय से भक्ति नहीं होती।

४५५०. भक्ति के मार्ग में सिद्धान्त नहीं श्रद्धा काम आती है।

४५५१. जैसे आप संकट में साँस लेना और भोजन करना नहीं छोड़ते, उसी प्रकार कष्टों में भक्ति करना न छोड़े। क्योंकि यदि आप भोजन छोड़ देंगे तो जिंदा न रह सकेंगे और भजन छोड़ देंगे तो ठीक से मर भी नहीं पायेंगे।

४५५२. भक्ति ने संगीत को और संगीत ने भक्ति को बहुत आगे बढ़ाया है।

४५५३. भक्त और भगवान् में मात्र इतना अन्तर है कि भक्त खदान में उस हीरे के समान है जो अभी सान पर नहीं चढ़ा है, जबकि भगवान् उस हीरे की भाँति है जो सान पर चढ़कर विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर चुका है।

४५५४. भोगों की प्राप्ति सदा के लिए नहीं होती और सबके लिए नहीं होती। परन्तु भगवान् की

प्राप्ति सदा के लिए होती है और सबके लिए होती है।

४५५५. परमात्मा प्राप्ति की उत्कृष्ट अभिलाषा न होने में खास कारण है–सांसारिक सुख की इच्छा, आशा और भोग।

४५५६. भगवान् को मनाने में नहीं अपितु भगवान् को मानने में कल्याण होता है।

४५५७. भोजन शरीर की खुराक है और भजन आत्मा की खुराक है।

४५५८. भगवान् तक आवाज तभी पहुँचती हैं, जब हृदय पवित्र हो और हृदय पवित्र करने का उपाय पवित्र भोजन करना है। मांस-मछली, अण्डे, शराब आदि गलत वस्तुओं का सेवन करते हो, तो आपकी आवाज प्रभु के पास तक नहीं पहुँच पाएगी।

४५५९. जैसे श्रद्धा के बिना वैद्य की औषधि काम नहीं करती, उसी प्रकार आस्था के बिना मन्त्र भी काम नहीं करता है।

४५६०. केवल ईश्वर का चिन्तन करने वाला मन, केवल मधु ही पीने वाले भ्रमर के समान है।

४५६१. मनुष्य के द्वारा चमत्कार और देवों के द्वारा अतिशय होता है।

४५६२. आज व्यक्ति परमात्मा से अपने लिए स्वर्ग माँगने की जगह दूसरों के लिए नरक माँग रहे हैं।

४५६३. संसार का संपूर्ण विस्मरण और परमात्मा का सतत् स्मरण ही मुक्ति है।

४५६४. संसार की तरफ चलने वाले का कोई भी साथी नहीं होता, पर भगवान् की तरफ चलने वाले के सब साथी हो जाते हैं।

४५६५. पुण्य के सृजन और पाप के विसर्जन में ही इहलोक व परलोक में सुख मिलता है।

४५६६. सुख के लिए परमात्मा की प्रार्थना होना चाहिए, याचना नहीं।

४५६७. संसार से सम्बन्ध जोड़ें तो दुःखों का अन्त नहीं है और भगवान् से सम्बन्ध जोड़ें तो सुखों का (आनन्द का) अन्त नहीं है।

४५६८. जिसकी बुद्धि में जड़ता (सांसारिक भोग और संग्रह) का ही महत्त्व है, ऐसा मनुष्य कितना ही विद्वान् क्यों न हो, उसका पतन अवश्यम्भावी है, परन्तु जिसकी बुद्धि में जड़ता का महत्त्व नहीं है और भगवत्प्राप्ति ही जिसका उद्देश्य है, ऐसा मनुष्य विद्वान् न भी हो तो भी उसका उत्थान अवश्यम्भावी है।

४५६९. मनुष्यों के रूप में परमात्मा सदा आपके सामने है, अतः उनकी सेवा करो।

५७. पुजारी बने, भिखारी नहीं

४५७०. विचारों का सम्मान होता है पर आचरण की पूजा होती है।

४५७१. पूजा करने वाला पूजा करने में अपने उत्तम गुणों को बाहर लाता है।

४५७२. भगवान् की पूजा के लिए सबसे अच्छे पुष्प हैं–श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, दया, मैत्री, सरलता, साधुता, समता, सत्य, क्षमा आदि दिव्य गुण।

४५७३. हे भगवन्! मेरा बोलना आपकी जाप हो, मेरी चेष्टाएँ आपकी उपासना से सम्बद्ध मुद्राओं की रचना हो, चलना आदि प्रदक्षिणा लगाना हो, भोजन करना आपको विधिवत् दी गयी आहुतियाँ हो, भूमि में लेटना आपके लिए प्रणाम हों, इस प्रकार जितना भी मेरा विलास और चेष्टाएँ हैं, वे सब आत्मार्पण की विधि से की गई आपकी पूजा के पर्यायवाची हो जाएँ।

४५७४. उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओं का शोक और आनन्द ये दोनों ही नहीं होते हैं।

४५७५. सच्चा यज्ञ अपने भीतर की कषायों की आहूति देना है।

४५७६. पूज्य पुरुषों की पूजा पूर्वक किए हुए कार्य अवश्य ही सफल होते हैं।

४५७७. भगवान् के भक्त बनना भिखारी नहीं क्योंकि भक्त को बिन माँगे मिलता है जबकि भिखारी द्वार-द्वार पर माँगता फिरता है।

४५७८. अन्य क्षेत्र में हुआ पाप धर्म क्षेत्र में नष्ट हो जाता है, धर्म क्षेत्र में किया पाप वज्र लेप के सदृश हो जाता है अतः धर्म क्षेत्र में निवास करते समय थोड़ा-सा भी पाप न करें।

४५७९. यदि तुम सर्वज्ञ परमेश्वर के श्री चरणों की पूजा नहीं करते हो तो तुम्हारी सारी विद्वत्ता किस काम की है?

४५८०. जो मनुष्य प्रभु के गुणों का उत्साहपूर्वक गान करते हैं, उन्हें अपने-बुरे कर्मों का दुःखद फल नहीं भोगना पड़ता है।

४५८१. संसार भर के धर्म ग्रन्थ, सत्य वक्ता महात्माओं की महिमा का घोष करते है।

५८. संस्कारों का शंखनाद

४५८२. रूप तो सिर्फ आँखों तक ही पहुँचता है जबकि गुण सीधे आत्मा तक पहुँचते हैं।

४५८३. मस्तिष्क इस शरीर का सबसे बड़ा कारखाना है, उसे कबाड़खाना मत बनाइये।

४५८४. गुण का जानकार ही गुणी मनुष्य से प्रेम करता है, गुणरहित मनुष्य को गुणी मनुष्य में सन्तोष नहीं होता हैं। भ्रमर वन से कमल के पास आता है, परन्तु मेंढक एक तालाब में निवास करने पर भी कमल के पास नहीं जाता है।

४५८५. जिस परिवार में तीन पीढ़ियाँ एक साथ मिलकर भोजन और भजन करते हैं वह घर धरती पर साक्षात् स्वर्ग है।

४५८६. अच्छा स्वभाव सदा सौन्दर्य के अभाव को पूरा कर देता है किन्तु सौन्दर्य अच्छे स्वभाव के अभाव की पूर्ति नहीं कर सकता है।

४५८७. जब घर में अतिथि हो तब चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं पीना चाहिए।

४५८८. जो बचपन और जवानी में भजन-साधना नहीं करते, वे प्रायः बुढ़ापे में भी भजन-साधना नहीं कर सकते हैं।

४५८९. यदि माँ-बाप बच्चे का बचपन सम्हाल देते हैं तो बालक माँ-बाप का बुढ़ापा सम्भाल देता है।

४५९०. संस्कार बिना सुविधाएँ पतन का कारण हैं।

४५९१. शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसकी जड़ें तो कड़वी होती हैं, परन्तु फल हमेशा बहुत ही मीठे होते हैं।

४५९२. नैतिक व्यक्ति धार्मिक हो जरूरी नहीं किन्तु हर धार्मिक व्यक्ति नैतिक होता है।

४५९३. दुर्जन और सज्जन सुई की नोक और पीछे के भाग के समान आचरण करते हैं। एक तो छेद करता है और दूसरा (पीछे का भाग) गुणवान् (धागे वाला) होने से छेद को बंद कर देता है।

४५९४. पहले के लोग घर में कोई कुत्ता न घुस आये इसके लिए एक आदमी रख लेते थे, आज घर में कोई आदमी न आये इसके लिए एक कुत्ता रख लेते हैं।

४५९५. सत्ता बुरी नहीं सत्ता का नशा बुरा है।

४५९६. दो ही चीजें मनुष्य को दुःखी करती हैं—एक वस्तु का अभाव और दूसरा बुरा स्वभाव।

४५९७. तर्क खोपड़ी की खुजलाहट है और श्रद्धा आत्मा की सजावट।

४५९८. तर्क पाप से जोड़ता है और श्रद्धा परमात्मा से जोड़ती है।

४५९९. बुद्धिजीवी तर्क करते हैं और हृदय जीवी समर्पण करते हैं।

४६००. भूल होना स्वाभाविक है पर सबके सामने उसे मानने की हिम्मत करना महापुरुषों का ही काम है।

४६०१. अच्छी बात चाहे किसी धर्म, किसी आदमी की ही क्यों न हो उसे अवश्य ही ग्रहण करो।

४६०२. प्रेम ईमानदारी व स्वार्थ बेईमानी सिखाता है।

४६०३. जो सन्तों की नहीं मानते हैं, सन्तान उनकी भी नहीं मानती हैं।

४६०४. आज का आदमी घर में टीवी सेट, सोफा सेट, डायमण्ड सेट, डिनरसेट आदि रखने के कारण इनके मेनेजमेन्ट में स्वयं अपसेट हो गया है।

४६०५. जीवन का आनंद, गौरव, सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीने में है।

४६०६. सिंहनी एक ही सुपुत्र से निर्भय होकर सोती है, गधी दसों पुत्रों के साथ भार ढोती है।

४६०७. संतोषी सदा सुखी रहता है और लोभी सदा दुःखी रहता है।

४६०८. पुत्र बड़ा स्वार्थी होता है, जब सेवा करवाता है तो पिता के साथ रहता है और जब सेवा करने का समय आता है तो पिता को छोड़ पत्नि के साथ हो जाता है।

४६०९. संसार में संतोष ही उत्कृष्ट सुख का खजाना है।

४६१०. प्रातः काल माता-पिता को प्रणाम करने से दीर्घायु, काम करने से पहले प्रणाम करने से सफलता अवश्य मिलती है, माता-पिता का आशीष सबसे बड़ा होता है।

४६११. माँ-बाप को बेइज्जत करने वाला बेटा अपने भाग्य का दीपक स्वयं बुझाता है।

४६१२. हम व्यक्ति को अपने व्यवहार से पानी-पानी भी कर सकते हैं और वक्त पर तूफानी भी कर सकते हैं।

४६१३. मैं जीतकर हराना नहीं बल्कि हारकर जीतना चाहता हूँ।

४६१४. अपने अवगुण अपने को ही तकलीफ देते हैं।

४६१५. किसी की गलती तो कोई मूर्ख भी बता सकता है पर उसकी अच्छाई को पहचानने के लिए खुद का अच्छा होना जरूरी है।

४६१६. हर व्यक्ति को स्वावलम्बी और स्वतंत्र होना चाहिए।

४६१७. यदि आप दूसरों के बारे में बुरा सोचते है तो स्वयं बुरे फल भोगने के लिए तैयार रहें।

४६१८. जो पुरुष अतिथियों की सेवा करता है वह देवताओं का सुप्रिय अतिथि बनता है।

४६१९. अहंकारी व्यक्ति कभी संस्कारित नहीं हो सकता है क्योंकि संस्कार अहंकार से नहीं समर्पण से प्राप्त होते हैं।

४६२०. सुसंस्कारों से ही लघुता आती है जिससे प्रभुता प्रकट होती है।

४६२१. अपने बच्चों को सुसंस्कार न देने वाले माता-पिता, उनके हितैषी नहीं अपितु शत्रु हैं।

४६२२. महानता सन्तान को जन्म देने में नहीं, अपितु उसे सुसंस्कारवान बनाने में है।

४६२३. जो बच्चों को सिखाते हैं, उसका पालन स्वयं बड़े करने लगे तो धरती स्वर्ग बन जाये।

४६२४. संस्कारित माँ ही संस्कार दे सकती है।

४६२५. बच्चों को बदलना हो तो स्वयं को बदलना जरूरी है।

४६२६. बच्चों को धनवान नहीं संस्कारवान बनायें क्योंकि संस्कार से ही संस्कृति का रक्षण हो सकता है।

४६२७. यदि आप अपनी सन्तान को महावीर या राम बनाना चाहते हैं, तो पहले आपको भी सिद्धार्थ और दशरथ बनना होगा।

४६२८. शास्त्रों (पुस्तकों) से ज्ञान मिल सकता है संस्कार नहीं।

४६२९. सुसंस्कारों से उत्थान हो सकता है तो कुसंस्कारों से पतन भी हो सकता है।

४६३०. सुसंस्कारों से ही शिल्पी पत्थर में परमात्मा की प्रतिमा प्रकट कर देता है और मंत्र संस्कारों से गुरु उस पत्थर की प्रतिमा को पूज्य बना देते हैं।

४६३१. संस्कार हीन सौ कौरवों से एक संस्कारवान युधिष्ठिर अच्छा है।

४६३२. संसार के सारे विवादों को 'जियो और जीने दो' का सूत्र मिटा सकता है।

४६३३. बच्चों की शिक्षा माँ के पेट से ही शुरू होती है।

४६३४. रूढ़िवादी लोग धार्मिक शिक्षा के अभाव में अपना अज्ञान, अपना अंधविश्वास, अपने रोग और अपनी शत्रुताएँ सन्तान को दे रहे हैं।

४६३५. संस्कारित शिक्षा ही संस्कृति की रक्षा कर सकती है।
४६३६. कभी-कभी उन लोगों से शिक्षा मिलती है, जिन्हें आप अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं।
४६३७. हम प्रायः दूसरों के गुणों की अपेक्षा उनकी गलतियों से अधिक सीख लेते हैं।
४६३८. संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, उनमें शिक्षा सबसे बढ़कर है।
४६३९. कर्त्तव्य-ज्ञान से शून्य पुरुष के लिए शिक्षा देना अन्धे के सामने नाँचने के समान है।
४६४०. दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाते हैं।
४६४१. यदि आप अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली बनाना चाहते हैं, अपने व्यक्तित्व में चुम्बकीय गुण लाना चाहते हैं तो आपको आज और इसी समय से अपने विचारों एवं भावनाओं को सकारात्मक बनाना होगा।
४६४२. यदि आपके विचार शुष्क, नीरस व अनाकर्षक है तो आप किसी को भी अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते हैं।
४६४३. माँ सिर्फ जन्मदाता ही नहीं बल्कि जीवनदाता भी होती है क्योंकि जन्म तो जंगली गधे भी देते हैं पर वे सुसंस्कारित जीवन नहीं दे पाते हैं।
४६४४. स्वच्छ मन वाला व्यक्ति दूसरों की अच्छाईयों को देखता है जबकि दूषित मन वाला बुराई ही ढूँढ़ता है।
४६४५. बच्चों का भविष्य माता-पिता के हाथ में होता है।
४६४६. वस्तु का महत्त्व नहीं है, प्रत्युत उसके सदुपयोग का महत्त्व है
४६४७. इन्तजार ईमानदारी की पहचान है।
४६४८. जो जितने ऊँचे पद पर होता है, वह उतनी ही हीन भावना से भरा होता है।
४६४९. जिन्दगी में दिया गया गुलाब का एक फूल, मरने के बाद दिए गए गुलदस्ते से बेहतर है।
४६५०. त्यौहार में पदार्थ ग्रहण किए जाते हैं तथा पर्व में समस्त पदार्थों का विषय वासनाओं का त्याग किया जाता है।
४६५१. जैन दर्शन संस्कृति, समन्वय व सामंजस्य प्रधान है।
४६५२. जब तक दुष्टता का अवसर नहीं मिलता तब तक सभी सज्जन दिखते हैं।
४६५३. जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को क्षति पहुँचाये, वह दुष्ट है।
४६५४. विनय से पूर्ण, ज्ञान युक्त तर्क ही सफलता की कुंजी है।
४६५५. श्रेष्ठ जीवन के लिए बड़े झूठ की अपेक्षा छोटा सत्य अधिक मूल्यवान होता है।
४६५६. मूर्ति की तरह जिन्दगी भी सब तरफ से सुन्दर होनी चाहिए।
४६५७. अत्यन्त सुखी बचपन कई अच्छे कैरियर खराब कर देता है।
४६५८. गरीब वह नहीं जिसके पास थोड़ा धन है, अपितु सच्चे गरीब तो वे हैं जो बहुत के पीछे भाग रहे हैं।

४६५९. अपराध करने के पश्चात् भय पैदा होता है और यही उसका दंड है। अपने दोष को स्वीकारना कोई अपमान नहीं है।

४६६०. गलती कबूल कर लेने वाले को शर्मिन्दा नहीं होना पड़ता है।

४६६१. दूसरों के गुणों और अपने अवगुणों का सदैव ध्यान रखो।

४६६२. जो मनुष्य अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखता है वही महान् पुरुष बनता है।

४६६३. हर बुरी घटना के साथ कुछ अच्छाईयाँ भी छिपी होती हैं।

४६६४. हर आदमी किसी न किसी गुण में हम से बेहतर होता है, अतः उससे वह गुण ग्रहण करना चाहिए।

४६६५. असली रूप तो अपने गुणों से ही झलकता है। अपनी छाप गुणवान होकर डालना चाहिए, रूपवान होकर नहीं।

४६६६. ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाईयों पर पड़ती है; जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण देखते हैं।

४६६७. घर में प्रेम होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

४६६८. गृहस्थ का घर भी एक तपोभूमि है। सहनशीलता और संयम को खोकर कोई गृहस्थी में सुखी नहीं रह सकता हैं।

४६६९. जीवन का नियम स्पर्धा नहीं, सामंजस्य है।

४६७०. डरने वाला मौके पर ऐसे बुरे कार्य कर जाता है कि बाद में उसको ही आश्चर्य होने लगता है।

४६७१. आपके खान-पान से पता लग जाएगा कि आप किस तरह के इंसान है।

४६७२. इंसान को ईमानदार मजबूरी में नहीं मजबूती से बनना चाहिए।

४६७३. जो केवल उल्लास के क्षण याद रखते हैं, वे कभी उदास नहीं रहते हैं।

४६७४. यदि आप किसी के उपकार का बदला उपकार से नहीं चुका सकते तो कम से कम अपकार से तो न चुकाये।

४६७५. किसी व्यक्ति ने हमारी आपत्ति में सहायता की हो ऐसे व्यक्ति की आपत्ति में हम भी सहायता कर दें तो यह कोई बड़ी बात नहीं है उपकारी पर उपकार करना यह तो सज्जनता का लक्षण है परन्तु है अपकारी पर भी उपकार करना यह तो महापुरुष का लक्षण है।

४६७६. जंगली आदमी शिक्षित आदमी से बेहतर है क्योंकि उसके पास मस्तिष्क कम हृदय ज्यादा है।

४६७७. आनन्द अनुभूति के स्थान पर हम आनन्द के प्रदर्शन में अधिक रुचि रखते हैं जो अनुचित है।

४६७८. विद्याविहीन का उच्च कुल में जन्म लेना व्यर्थ है और विद्वान् चाहे नीचकुल में जन्म ले

तो भी सम्माननीय है।

४६७९. बिना अनुभव के कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है।

४६८०. अनुशासनहीन बालक आसानी से बिगड़ जाते हैं।

४६८१. अज्ञान की सबसे बड़ी सम्पत्ति है मौन, इस रहस्य का ज्ञान होने पर अज्ञानी को अपमानित नहीं होना पड़ता है।

४६८२. अज्ञानी का झुकाव सत्य व तथ्य पर नहीं अपितु आश्चर्य पर होता है।

४६८३. अज्ञानी अपने आपको ज्ञानी और ज्ञानी अपने आपको अज्ञानी मानता है।

४६८४. जो भी अधर्म के पथ पर चलेगा उसका पतन अवश्य होगा चाहे वह श्रावक हो या साधु।

४६८५. विद्या का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए।

४६८६. यद्यपि तुम्हें गुरु या शिक्षक के सामने उतना ही अपमानित होना और नीचा बनना पड़े जितना कि भिक्षुक को धनवान् के समक्ष बनना पड़ता है, फिर भी तुम विद्या सीखो, मनुष्यों में अधम वे ही लोग हैं जो विद्या सीखने से विमुख होते हैं।

४६८७. अंधा वह नहीं जिसकी आँखें नहीं, अंधा तो वह है जो अपने दोषों को ढँकता है।

४६८८. इस लोक में अन्धे वे ही मनुष्य हैं जिन्होंने गुरु के समीप सभी तत्वों को प्रकाशित करने वाला कल्याणदायक नेत्र प्राप्त नहीं किया है।

४६८९. ढोंग से नहीं ढंग से जिओ।

४६९०. आज काम थोड़ा, शोर ज्यादा हो रहा है, होंठ हँसते हैं, मन बेचारा रो रहा है।

४६९१. अन्धकार को भगाने के लिए दीपक को लड़ना नहीं पड़ता बस जलना पड़ता है।

४६९२. जो बच्चों को सिखाते हैं उस पर स्वयं अमल करें तो यह संसार स्वर्ग बन जाये।

४६९३. बच्चे वह ज्यादा सीखते हैं जो आप करते हैं बजाय उसके जो आप सिखाते हैं।

४६९४. गुरु और राजा के सामने ऊँचे आसन पर न बैठे और न ही उनके वचनों का तर्क द्वारा खंडन करें।

४६९५. जो श्रावक मुनि बनने के अतितीव्र भाव रखता है वही मुनि बन पाता है।

४६९६. जो वीतरागी होते हैं उन्हें शरीर और जो रागी होते हैं उन्हें आत्मा नहीं दिखती है।

४६९७. जैसे आप अपनी सम्पत्ति अपने पुत्रों को सौंपते हो वैसे ही जिनशासन की सम्पत्ति सदाचरण द्वारा सौंपना चाहिए।

४६९८. शालीनता ऊँचे अध्ययन से नहीं अच्छे संस्कारों से आती है, हमारी शालीनता दूसरों के लिए आदर्श बन जाती है।

४६९९. आज गुरु को छोड़कर शिष्य, माता-पिता को छोड़कर बेटा-बेटी क्यों भाग रहे हैं? क्योंकि जन्म तो दिया पर संस्कार नहीं दिये हैं।

४७००. संस्कार के बिना कोई महान् नहीं बन सकता है।

४७०१. किसी व्यक्ति की संस्कृति का पता इस बात से चलता है कि वह झगड़े के समय कैसा आचरण करता है।

४७०२. स्व-पर कल्याण की भावना से संत बनना बहुत कठिन हैं।

४७०३. इंसान की जिन्दगी के हार जीत का फैसला उसकी सन्तान करती है, अगर संस्कारित और कमाऊ संतान है तो जीत है अगर आवारा बेकार है तो करोड़ों की कमाई हुई पूँजी होते हुए भी हार है। आने वाली पीढ़ी को महावीर के चित्र ही नहीं चारित्र भी सौंपने होंगे क्योंकि चित्र से चित्त और चारित्र से जीवन पवित्र होता है।

४७०४. शादी के बाद बेटे की बुद्धि बिगड़ जाती है अतः भविष्य की सोचकर अपने बुढ़ापे के लिए कुछ बचाकर रखिए।

४७०५. संतोषी कभी प्रश्न नहीं उठाता है।

४७०६. पाप कर्म की ओर व्यक्ति पहले देखता है, फिर सोचता है, फिर बढ़ता है और फिर उसमें लिप्त हो जाता है।

४७०७. अपनी संतानों में माँ ही संस्कार के बीज डालती है और पिता उन संस्कारों का संरक्षण व संवर्द्धन करते हैं।

४७०८. संस्कृति की सुरक्षा संस्कारित संतानों पर ही निर्भर है।

४७०९. अच्छे संस्कार वे रीतियाँ हैं, जो योग्यता प्रदान करती है।

४७१०. बचपन के संस्कार जीवन में वृद्धावस्था तक निरंतर मार्गदर्शन करते हैं।

५९. संस्कृति की रक्षा संस्कारों से

४७११. माँ रोती थी जब रोटी नहीं खाता था बेटा, माँ आज भी रोती है जब रोटी नहीं खिलाता है बेटा।

४७१२. बूढ़े माँ-बाप दौलत नहीं कमाते पर दौलत व सन्तान की रक्षा अवश्य करते हैं।

४७१३. पात्र और कुपात्र में बहुत अन्तर है गाय सूखी घास खाकर भी दूध देती है और साँप मीठा दूध पीकर भी जहर उगलता है।

४७१४. जो माँ बाप को स्वर्ग ले जाता है वो बेटा होता है, जो स्वर्ग को घर ले आए वो बेटी होती है और घर को ही स्वर्ग बना दे वो बहु होती है।

४७१५. रिश्ते चाहे कितने ही बुरे हों मगर उन्हें तोड़ना मत क्योंकि पानी चाहे कितना भी गंदा हो अगर प्यास नहीं बुझा सकता तो आग तो बुझा सकता है।

४७१६. हम शिक्षा से पैसा कमा सकते हैं लेकिन जीवन में नैतिक मूल्य सिद्धान्त, आचरण केवल संस्कारों से ही पा सकते हैं।

४७१७. हमारे संस्कार हमारी नींव हैं, हमारी धरोहर है इसलिए देश का हर बच्चा संस्कारित हो यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

४७१८. परमार्थतः बड़े लोगों का अलंकार विनयातिशय है, रत्नादिक तो शिलाभार है।

४७१९. बुद्धिमान को चाहिए कि किसी का वेष देखकर विश्वास न करें क्योंकि वेष तो दोष के लिए भी ग्रहणकर लिया जाता है।

४७२०. वैर पाँच कारणों से होता है–स्त्री के लिए, घर और जमीन के लिए, कठोर वाणी के कारण जातिगत द्वेष के कारण और किसी समय किए हुए अपराध के कारण।

४७२१. संसार में उपकारी और कृतज्ञ व्यक्ति दुर्लभ हैं।

४७२२. जो विद्या और सदाचार से सम्पन्न है वह सब देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है।

४७२३. मार्ग में जीव बचाकर पाँव रखना चाहिए, वस्त्र से छान कर पानी पीना चाहिए, शास्त्रानुसार हितकारी थोड़ी वाणी बोलना चाहिए, पवित्र मन से सदाचार का पालन करना चाहिए।

४७२४. 'समम् अजन्ति जनाः अस्मिन् इति समाज'' यह समाज शब्द का अर्थ है। जिसमें लोग मिलकर, एक साथ एक गति से, एक से चलें वही समाज है।

४७२५. सुन्दर वह जो सुन्दर कार्य करें।

४७२६. मुस्कुराते हो तो एक दम बच्चे लगते हो, हँसते हो तो एक दम अच्छे लगते हो।

४७२७. जो अपने नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे उत्तम, जो पिता के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे मध्यम, जो मामा के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे अधम और जो श्वसुर के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे अधमाधम मनुष्य हैं।

४७२८. महान् पुरुष अपने कामों में काल का अतिक्रमण नहीं होने देते हैं।

४७२९. अंत समय सुधारना हो तो प्रतिक्षण सुधारो।

४७३०. कुलीन व्यक्ति में प्रसन्न मुख, दान, मधुर बोल तथा दूसरों की निंदा न करना ये चारों गुण स्वाभाविक होते हैं।

४७३१. गुणियों में गुणों के रहते हुए भी चुगलखोर उनके दोष मात्र को ही ग्रहण करता है, जैसे ऊँट वृक्ष के पुष्प और फल से विरक्त होकर काँटों के ढेर को ही ग्रहण करता है।

४७३२. आज पूरे विश्व में हमारी संस्कृति की अलग ही पहचान है तो संस्कारों से, हमारी शिक्षा पर तो पाश्चात्य संस्कृति ने कब्जा कर लिया है लेकिन हमारे संस्कारों को हमें जीवित रखना होगा।

४७३३. जो स्वयं को हर परिस्थिति के अनुसार ढालना जानता है, उसे जीवन जीने की कला आ जाती है।

४७३४. कई बार हम सोचते हैं कि परिवर्तन के लिए समय लगता है, लेकिन परिवर्तन तो उसी क्षण से संभव है जिस क्षण आपने सोच लिया कि बदलना है।

४७३५. अभिभावक अपने बच्चों को बहुमूल्य समय दें। पैसों से सब खुशियां खरीदना संभव नहीं है। बड़ी खुशियाँपाने के लिए छोटे-छोटे बलिदान आवश्यक हैं।

४७३६. बच्चों के मित्र बनकर उन्हें मार्गदर्शन देवें उनसे दूरी बनाकर न रखें।
४७३७. बच्चा ८वीं कक्षा में आये तो कुछ वर्षों के लिए आप गरीब बन जायें।
४७३८. जब तक बच्चे स्वयं नहीं कमाते उन्हें पेट्रोल या मोबाइल पर खर्च करने का कोई अधिकार नहीं है।
४७३९. जब बच्चे मित्र बनाते हैं तो इस पर नजर रखें और समझाये कि ये रिश्ते अच्छी मित्रता तक ही सीमित रहें, जीवनसाथी का चयन जाति के अन्तर्गत ही हो।
४७४०. पिता पुत्र में मित्रता का माहौल बच्चों को अपने भविष्य निर्माण में अहम् भूमिका निभाता है। 'लक्ष्य को गुप्त रखकर दृढ़ रहिये।'
४७४१. मरणासन्न की जिस स्तुति पाठादि में रुचि है वही सुनाना चाहिए यदि जीवन में धर्म नहीं किया हो तो संसार का स्वरूप समझाते हुए विषय-कषाय का त्याग कराकर दानादि की प्रेरणा करना चाहिए।
४७४२. बड़ों की यही रीति है कि मुख से बिना बोले ही व्यवहार से छोटों को विनय सिखा देते हैं।
४७४३. अविनयी लोगों की सम्पत्तियों का अंत विपत्ति में हो जाता है।
४७४४. बलवान का बल उसकी विनय शीलता में है शत्रुओं को परिवर्तित करने के लिए बुद्धिमान का शस्त्र यही है।
४७४५. विवेक से रहित लोगों का सैकड़ों प्रकार से पतन होता है।
४७४६. संकट पहले अज्ञान और दुर्बलता से उत्पन्न होते हैं और फिर ज्ञान और शक्ति की प्राप्ति कराते हैं।
४७४७. वास्तविक एकता उन्हीं लोगों की हो सकती है जो कि समान आचार-विचार वाले, समान परम्परा वाले, समान संस्कृति वाले और समान ध्येय युक्त होते हैं।
४७४८. संगठन शक्ति है और उसका रहस्य आज्ञा पालन है।
४७४९. संगीत का गुण यही है कि वह वन में विचरण करने वाले हिरण को भी मन्त्र मुग्ध कर लेता है।
४७५०. संगीत किस मनोवेग को जगा और शांत नहीं कर सकता है?
४७५१. फालतू सम्पत्ति केवल फालतू वस्तुएँ ही खरीद सकती है।
४७५२. विश्व एक विशाल ग्रन्थ है और जो कभी घर के बाहर नहीं जाते वे केवल उसका एक ही पृष्ठ पढ़ पाते हैं।
४७५३. सज्जन प्रत्यक्ष और परोक्ष में समान व्यवहार करते हैं।
४७५४. जो बुरा भला कहे जाने पर भी क्रोधित नहीं होता है, न हि अनुचित बोलता है धैर्य शौर्य आदि धर्मो से युक्त होने पर भी जो घमंड नहीं करता है, निरंतर विपत्तियाँ आने पर भी

जो कातर नहीं होता है वह सज्जन कहलाता है।

४७५५. सदाचार से हीन मनुष्य का केवल ऊँचा कुल मान्य नहीं हो सकता है क्योंकि नीच कुल में उत्पन्न मनुष्य का भी सदाचार श्रेष्ठ माना जाता है।

४७५६. आचारवान पुरुष ही आयु, धन, पुत्र, शौर्य, धर्म तथा शाश्वत भगवद् धाम एवं यहाँ पर विद्वत् समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

४७५७. विश्व के साथ अविरोध प्राप्त करने की पद्धति समन्वय है।

४७५८. अनेक तपस्या तथा साधना के फल से ही मनुष्य सरल तथा उदार बनता है। सरल हुए बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है सरल और विश्वासी के समीप ही प्रभु अपना स्वरूप प्रकट किया करते हैं।

४७५९. यदि तुम छोटे बालकों के समान सरल नहीं बनोंगे तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे।

४७६०. ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है।

४७६१. किसी से ऐसा मत कहो कि तुम बुरे हो वरन् उससे यह कहो, तुम अच्छे हो और भी अच्छे बनों।

४७६२. संसार रूपी कटु वृक्ष के ये दो फल अमृत के समान हैं—एक तो सुभाषित का रसास्वादन और दूसरा सज्जनों का समागम।

४७६३. वह लकड़ी की बात करता है तो बढ़ई ही होगा।

४७६४. अच्छा पुत्र वह नहीं जो माँ-बाप को अपने पास रखता है, बल्कि वह है जो खुद माँ-बाप के पास रहता है।

४७६५. हम परिवार में सिर्फ एक-दूसरे की कमियाँ ही न देखें वरन् उनकी खूबियाँ भी स्वीकार करें। परिवार का हर सदस्य मुखिया न बने बल्कि बुजुर्ग को ही मुखिया रहने दें लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि मुखिया को हिटलर नहीं होना चाहिए।

४७६६. एक भी बड़ा दोष समस्त गुण समूह को दूषित कर देता है।

४७६७. संसार में जो लोग बड़े काम करते हैं, उनका व्यवहार हमारे समान साधारण लोगों के साथ यदि अक्षर-अक्षर न मिले, तो उन्हें दोष देना असंगत है, यहाँ तक कि अन्याय है।

४७६८. जैसे उत्साह स्त्रियों का गुण है उसी तरह गंभीरता पुरुषों का गुण है।

४७६९. सर्वोत्तम पुरुष स्वर्ग, निकृष्टतम पुरुष धरती, सर्वोत्तम नारी स्वर्ग, निकृष्टतम नारी नरक जैसी होती है।

४७७०. पुरुष स्त्रियों को जितना समझ पाते हैं, उससे अधिक स्त्रियाँ पुरुषों को समझ लेती हैं।

४७७१. भिन्न-भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए प्रायः नाटक ही एक ऐसा उत्सव है, जिसमें सबको एक-सा आनन्द मिलता है।

४७७२. युद्ध जीतने से ही नहीं इन्द्रियों को जीतने से सच्चा शूरवीर होता है। वाक्पटुता से ही नहीं जो हितकर वचन बोले वही सच्चा वक्ता है और केवल धन का दान करने से ही नहीं जो दूसरों का मान सम्मान करे वही सच्चा दाता है।

४७७३. पतंगों की तरह कुमारियाँ सदा चमक में फँस जाती हैं।

४७७४. छिपकर किया गया पाप जीवनभर कांटे की तरह चुभता है।

४७७५. पिता के प्रति पुत्र का प्रत्युपकार लोगों से यह कहलाना ही है कि न मालूम इसके पिता ने ऐसे पुत्र की प्राप्ति के लिए कैसा तप किया था?

४७७६. प्रतिभा को बढ़ाने के लिए अभ्यास से संस्कार को ताजा करने के अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं है।

४७७७. अपूर्व वस्तु के निर्माण में समर्थ प्रज्ञा को प्रतिभा कहते हैं।

४७७८. प्रतिभा तो स्वतंत्रता के वातावरण में ही मुक्त साँस ले सकती है।

४७७९. किसी व्यक्ति की सभा में बैठकर तो उससे ईर्ष्या रखने वाले भी उच्च स्वर में उसकी प्रशंसा कर देते हैं परन्तु विद्वान् मनुष्य को उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। सच्चा सौहार्द वह होता है जब पीठ पीछे प्रशंसा की जाये।

४७८०. वह मुख जो शीघ्र न खिले वह देखने योग्य ही नहीं है। वह अक्षर जिसमें कोई तात्पर्य नहीं वह सुनने योग्य नहीं है।

४७८१. यह सत्य है कि सब ऐसे भाग्यशाली नहीं होते कि उन्हें कोई प्यार करे, पर यह तो हो सकता है कि वह स्वयं किसी के सुख-दु:ख में हाथ बँटा कर अपना जन्म सार्थक कर ले।

४७८२. अहो! छोटे लोगों का हृदय सुकुमार होता है क्योंकि वे हृदय में आये हुए अप्रिय को सहसा बक डालते हैं और उसे ही 'मनीषी' लोग पेट में पचा डालते हैं।

४७८३. सरस और कोमल स्वभाव के लोग नीरस और निष्ठुर मन वालों को भी उस प्रकार खींच लेते हैं जैसे चुम्बक लोहे को खींच लेता है।

४७८४. महापुरुष धनी होने पर भी उन्मत्त नहीं होते हैं युवक होने पर भी चंचल नहीं होते हैं और शक्तिशाली होने पर भी प्रमत्त नहीं होते हैं।

४७८५. शास्त्र को जानने वाला भी जो पुरुष लोक व्यवहार में पटु नहीं होता है, वह मूर्ख के समान है।

४७८६. दिव्य मृत्यु दिव्य जीवन से कहीं उत्तम है।

४७८७. सबसे अंतिम शत्रु जिसका विनाश किया जायेगा, वह है मृत्यु।

४७८८. शांत अन्त:करण वज्रपात में भी सो लेता है।

४७८९. किसी महान् व्यक्ति के अनुयायी प्राय: अपनी आँखें बन्द रखते हैं ताकि वे उनका गुणगान

अधिक अच्छी रीति से कर सकें।

४७९०. सज्जन आत्मीयता से देखते हैं तो सब दु:ख हर लेते हैं और आत्मीयता से बोलते है तो सब सुख प्रदान करते हैं।

४७९१. जीवन स्वयं में न तो अच्छा होता है, न बुरा, जैसा तुम इसे बना दो, यह तो वैसा ही अच्छा या बुरा बन जाता है।

४७९२. अनेक विद्याओं का अध्ययन करके भी जो समाज के साथ मिलकर आचरण युक्त जीवन व्यतीत करना नहीं जानते हैं, वे अज्ञानी ही समझे जायेंगे।

४७९३. अत्याचारी, सबसे अधिक स्वयं के प्रति अत्याचारी होता है।

४७९४. फल रहित वृक्ष की छाया भी शीतल होती है, भाई गुण हीन भी अच्छा होता है, जो पराया है, वह तो पराया ही है।

४७९५. अहिंसापूर्वक सत्य का आचरण करके आप संसार को अपने चरणों में झुका सकते हैं।

४७९६. सत्कारपूर्वक स्वीकार किया गया सत्कार ही संतोष उत्पन्न करता है।

४७९७. खान से निकले हुए सर्वोत्तम रत्न को भी सोने में जड़ने की आवश्यकता तो पड़ती ही है। उत्तेजना में विचार मन्द हो जाता है।

४७९८. आशा जल-पान के रूप में अच्छी है, भोजन के रूप में खराब।

४७९९. जिस प्रकार अन्न की उत्पत्ति के लिए आदर्श बीज भंडारों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानव विकास के लिए श्रद्धालु, संतोषी एवं दृढ़व्रती व्यक्तियों के आश्रमों की आवश्यकता होती है।

४८००. गुरुजनों के शासन से शून्य किस के बाल्यकाल में उद्दण्डता नहीं आती है ?

४८०१. मनुष्य उत्सव प्रेमी होते हैं।

४८०२. किसी देश की उन्नति छोटे विचार के बड़े आदमियों पर नहीं किन्तु बड़े विचार के छोटे आदमियों पर निर्भर है।

४८०३. स्फटिक मणि के समान मन के निर्मल होने पर गुरु के उपदेश या गुण चन्द्र किरणों की भाँति सरलता से प्रवेश करते हैं।

४८०४. अपना हित करने वाली बातें पहले सुनने में कड़वी लगती हैं, परखने से अंत में वे ही बातें अत्यन्त प्रिय होती हैं।

४८०५. अन्य किसी वस्तु को हम इतनी अनिच्छा से नहीं स्वीकारते जितना उपदेश को।

४८०६. बिना माँगा परामर्श ही सबसे सस्ती वस्तु हैं क्योंकि आपूर्ति अधिक है माँग कम है।

४८०७. थोड़ा-सा ऐश्वर्य पाकर भी दुष्ट व्यक्ति प्राय: अभिमानी हो जाता है, परन्तु बहुत ऐश्वर्य पाकर भी सज्जन शांत ही रहता है।

४८०८. अकेला औचित्य गुण ही गुणों की बड़ी राशि के समान महत्त्वपूर्ण है, औचित्य गुण के

बिना तो गुणों का समूह भी विषाक्त हो जाता है।

४८०९. अच्छा कार्य, तभी सरल हो पाता है जब इच्छा आत्मानुशासन सीख लेती है।

४८१०. अकुलीन हो या कुलीन जो मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, धर्म में तत्पर रहता है, मृदु है, जितेन्द्रिय है, वह सैकड़ों कुलीनों से बढ़कर है।

४८११. गर्भपात, शराबी, चोर तथा व्रत तोड़ने वाले के लिए शास्त्र में प्रायश्चित्त का विधान है परन्तु कृतघ्न के उद्धार का कोई उपाय नहीं बताया गया है।

४८१२. उपकारों को भूलना मनुष्य का स्वभाव है, अतः यदि हम दूसरों से कृतज्ञता की आशा करेंगे तो हमें व्यर्थ ही सरदर्द मोल लेना पड़ेगा।

४८१३. सुसंस्कृत स्वभाव इस बात को जानकर परेशान होता है कि कोई उसके प्रति आभार मानता है किन्तु विकृत स्वभाव यह जानकर परेशान होता है कि वह स्वयं किसी के प्रति आभारी है।

४८१४. कृत्रिमता को हमने इतना अधिक अपना लिया है कि अब वह स्वयं ही प्राकृतिक हो गयी है।

४८१५. 'उग्रता' के साथ 'निष्ठुरता' या 'निर्दयता' के मेल से 'क्रूरता' का आविर्भाव होता है।

४८१६. आयु का एक क्षण भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से प्राप्त नहीं किया जा सकता है, उसे यदि निरर्थक बिता दिया तो उससे बड़ी हानि क्या है?

४८१७. गुणज्ञों को शत्रुओं के भी गुणों से आनन्द होता है।

४८१८. अपने श्रेष्ठ गुणों से अलंकृत होकर कुरुप मनुष्य भी दर्शनीय हो जाता है, जैसे अष्टावक्र किन्तु गंदे दोषों से व्याप्त होकर रूपवान भी कुरूप हो जाता है जैसे रावण।

४८१९. तुम्हारा घर जहाज का लंगर न बने, बल्कि मस्तूल बने।

४८२०. अपने द्वारा की गयी अनियंत्रित चंचलता दुःख देती है।

४८२१. छोटी अवस्था में यात्रा शिक्षा का एक अंग है, बड़ी अवस्था में यात्रा अनुभव प्राप्त करने का विषय हैं।

४८२२. मुझसे कोई पूछे कि जीवन किसे कहते हैं तो मैं उसकी व्याख्या करूँगा, संस्कार संचय को। जीवन की छोटी अवधि हमें लम्बी-चौड़ी आशाएँ करने से मना करती है।

६०. शिष्य और शीशी को डाँट चाहिए

४८२३. परमात्मा को हृदय और जीभ की कठोरता पसंद नहीं है इसलिए हृदय और जीभ में हड्डी नहीं रखी गयी है इसके बाद भी लोग जीभ के द्वारा दूसरों के हृदय तोड़ते हैं यह आश्चर्य है।

४८२४. लोग सारभूत पदार्थ की अपेक्षा छिलके पर ज्यादा झगड़ते हैं यह अविवेक है।

४८२५. झगड़ा होने पर जो पहले चुप हो जाये, वह उत्तम वंश में जन्मा व्यक्ति है।

४८२६. जीवन में शुद्ध दृष्टिकोण का अभाव ही हमारी प्रमुख समस्या है, जिसके रहते शेष समस्यायें लाख यत्न करने पर भी नहीं सुलझ पाती हैं।

४८२७. विद्वान् अज्ञानी पुरुषों से निन्दा या स्तुति पाकर भी स्वयं न तो निंदा करता है, न ही स्तुति अपितु उनको जैसे ज्ञान प्राप्त हो वैसा ही आचरण करता है।

४८२८. जो अपूर्ण है वह आवाज करता है और जो पूर्ण है वह शांत रहता है मूर्ख अधभरे जल घट के समान है और पंडित लबालब भरे तालाब के समान है।

४८२९. किसी के कहे बिना हृदय की बात को समझ लेने वाले से दूसरे व्यक्ति सम्पत्ति में समान होने पर भी, बुद्धि के कारण भिन्न होते हैं।

४८३०. बालकों को लाड़ करने में दोष हैं और ताड़ना करने में बहुत गुण हैं अतः पुत्र और शिष्य की ताड़ना करते रहना चाहिए।

४८३१. दुष्ट लोग भय दिखाकर वश में किए जाते हैं, क्षमा दिखाकर नहीं।

४८३२. दुष्ट व्यक्ति का साथ किसी भी हालत में अच्छा नहीं होता है, दुष्ट व्यक्ति और साँप इन दोनों में साँप फिर भी अच्छा है क्योंकि साँप तो काल वश सिर्फ एक बार ही काटता है पर दुष्ट तो पग-पग पर हानि पहुँचाता है।

४८३३. जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को क्षति पहुँचाये, वह दुष्ट है।

४८३४. दूसरों के दुर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें पाप से बचना चाहिए।

४८३५. बुरी पुस्तकें पढ़ना जहर पीने के समान है।

४८३६. लज्जा का आकर्षण सौन्दर्य से भी बढ़कर है।

४८३७. लज्जा शीलता मानव का अलंकार है, बुद्धिमान में यह न हो तो मान सहित चलना भी एक व्याधि है।

४८३८. महान् पुरुष अपनी महानता का परिचय छोटे मनुष्यों के साथ किए अपने व्यवहार से देते हैं।

४८३९. पाँच वर्ष तक पुत्र को प्यार करना चाहिए, उसके बाद दस वर्ष तक पुत्र को दंड आदि देकर अच्छे मार्ग पर चलने को प्रेरित करना चाहिए और सोलह वर्ष के बाद पुत्र को मित्र की भाँति व्यवहार करना चाहिए।

४८४०. महापुरुष घोर विपत्ति के समय भी धैर्य नहीं छोड़ते हैं, अधिक उन्नति होने पर क्षमाशील बने रहते हैं, सभा में बोलते हुए वाक पटु दिखते हैं, युद्ध के समय पराक्रम धारण किए रहते हैं, यश प्राप्त करने में अभिरुचि होती है, शास्त्रों के अध्ययन का उन्हें बड़ा चस्का होता है ये सभी गुण सज्जन पुरुषों में स्वभाव से ही पाए जाते हैं।

४८४१. स्वार्थ जितना सांसारिक होगा, उतना ही वह दुःख, संताप, शोक, विषाद तथा भय उत्पन्न करेगा।

४८४२. पुष्प भले ही अपने वृक्ष का नामोल्लेख न करें किन्तु उसकी सुगन्ध उसके उत्पादक वृक्ष का नामोल्लेख कर देती है उसी प्रकार व्यक्ति का व्यवहार उसके कुल का परिचय दे देता है। भले और बुरे का पता उसकी सन्तान से चलता है।

४८४३. श्रवण शक्ति होने पर भी वे कान बहरे हैं, जिनको उपदेश सुनने का अभ्यास नहीं है।

४८४४. उन बातों से सदा दूर रहो जो तुम्हें नीचे गिरा देंगी, चाहे वे प्राण रक्षा के लिए अनिवार्य रूप से ही आवश्यक क्यों न हों।

६१. सच्चा जीवन साथी ज्ञान है

४८४५. ग्रन्थ ऐसे अध्यापक हैं जो बिना बेंत मारे, बिना कटु शब्द बोले, बिना क्रोध किए, बिना वस्त्र व धन के हमें शिक्षा प्रदान करते हैं।

४८४६. धर्म, विद्या और धन का प्रतिदिन लेशमात्र भी संग्रह करते रहने से वे समुद्र से भी अधिक हो जाते हैं।

४८४७. दान से भोग प्राप्त होते हैं, तप से परम इन्द्रत्व तथा ज्ञान से जन्म-जरा-मरण से रहित मोक्ष पद प्राप्त होता है।

४८४८. बोध का आगमन ही वासना का विसर्जन बन जाता है।

४८४९. अज्ञान और अभिमान का मतलब इधर कुँआ तो उधर खाई।

४८५०. शिष्य में तीन चीजें जरूर होनी चाहिए–आदर, आज्ञा और अनुशासन पालन।

४८५१. पुस्तक का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल बनाती हैं।

४८५२. पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी हैं।

४८५३ देव पूजा नौकरों से करवाने वाला नहीं स्वयं पूजा करने वाला देव बनता है।

४८५४. जिसने व्याकरण नहीं पढ़ा वह जन्मान्ध है क्योंकि वह जैसे श्वजन (कुक्कुर समूह) स्वजन (आत्मीजन), सकृत (एकबार), शकृत (विष्टा), सकल (सम्पूर्ण) शकल (खण्ड) आदि को नहीं समझ पाएगा। जो न्यायशास्त्र से रहित है वह गूंगा है, जो साहित्य से रहित है वह लंगड़ा है और जो कोष रहित है वह निर्धन है।

४८५५. थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना-यह बुद्धिमान बनने के उपाय है।

४८५६. विद्यारूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, राजा दण्ड के रूप में वसूल नहीं कर सकता, भाई हिस्से में बाँट नहीं सकता, विद्या का कोई बोझ नहीं होता, दान करने से वह बढ़ती है, विद्या सब धनों में श्रेष्ठ है।

४८५७. सत्य, ज्ञान, तप, अहिंसा, विद्वान् के प्रति नम्रभाव और सुशीलता को जो धारण करता है वह विद्वान् है न कि जो पढ़ता-पढ़ाता है, वह विद्वान् है।

४८५८. विवेक और बुद्धि विद्या की सन्तान है।

४८५९. व्यक्ति की कीमत शक्ल से नहीं उसकी अक्ल से होती है।

४८६०. ज्ञानी शस्त्र का नहीं शास्त्र का प्रयोग करता है।

४८६१. दया, करुणा व अहिंसा से विहीन शास्त्र नहीं शस्त्र हैं।

४८६२. जो शास्त्र का अर्थ अपनी स्वार्थ बुद्धि से निकालता है, वह शास्त्र को शस्त्र बना लेता है।

४८६३. सच्चा शास्त्र (ग्रन्थ) वह है जो आत्मा की ग्रन्थियों को खोलकर निर्ग्रन्थ पद प्राप्त कराता है।

४८६४. शिक्षा एक दूध देने वाली गाय के समान है जो हमेशा मनुष्य को ज्ञान देती रहती है।

४८६५. शिक्षा एक गुप्त धन के समान है इसलिए शिक्षा को अवश्य प्राप्त करो।

४८६६. जिस आदमी को पढ़ने का शौक होता है वह मूर्ख नहीं रहता है।

४८६७. जिनकी बुद्धि शास्त्र के अनुसार चलती है वे सम्यग्दृष्टि हैं और जो अपनी बुद्धि के अनुसार शास्त्र को चलाते हैं वे मिथ्यादृष्टि है।

४८६८. स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है, ज्ञानवृद्धि होने से वैराग्य बढ़ता है, वैराग्य बढ़ने से संसार का त्याग होता है और संसार त्याग से जीव मोक्ष (सिद्धि) प्राप्त करता है।

४८६९. काम से अधिक बुरा कोई रोग नहीं है और ज्ञान के समान कोई विश्वसनीय मित्र नहीं है।

४८७०. धन की रक्षा तुम्हें करना पड़ती है, मगर ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है।

४८७१. जीवन के कुरुक्षेत्र को जीतने के लिए पुस्तकों से बेहतर कोई अस्त्र नहीं है।

४८७२. अज्ञान के अतिरिक्त आत्मा के और किसी रोग का मुझे पता नहीं है।

४८७३. अनुकरण से मुक्ति नहीं मिलती, मुक्ति मिलती है ज्ञान से।

४८७४. विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है।

४८७५. अज्ञान विष वृक्ष है अज्ञानी पर ही विपत्ती आती है और वही दुःख पाता है।

४८७६. अज्ञान की सन्तान मोह और मोह की सन्तान दुःख है।

४८७७. अज्ञानी मनुष्य का तो जीवन ही व्यर्थ है।

४८७८. विद्या के सामने दूसरी तरह की दौलत कुछ भी नहीं है।

४८७९. जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है वह अंधे के समान हैं।

४८८०. मानव का सच्चा जीवन साथी विद्या है, जिसके कारण वह विद्वान् कहलाता है।

४८८१. ज्ञान मुक्त करता है, पर ज्ञान का अभिमान नरकों में ले जाता है।

४८८२. विद्या और धन का महत्त्व सदुपयोग करने में है, संचय करने में उतना नहीं।

४८८३. काव्य का ध्येय मनोरंजन न होकर संवर्धन और राष्ट्र निर्माण होना चाहिए।

४८८४. काव्य वही है जो मानव हृदय को काबू में कर ले।

४८८५. वही काव्य और वही साहित्य चिरंजीवी रहेगा, जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे, जिसे लोग आसानी से पचा सकेंगे।

४८८६. 'पुस्तकें' ज्ञान-प्रसार के लिए अमूल्य और सुगम साधन हैं।

४८८७. जीवन की सार्थकता भोग में नहीं है, उसकी सार्थकता अनुभव के द्वारा ज्ञान हासिल करने में है।

४८८८. सुनने की इच्छा का अभाव, सेवा का अभाव, उतावलापन और आत्म-प्रशंसा; ये चार विद्या के शत्रु हैं।

४८८९. विद्या से अलंकृत होने पर भी दुष्ट त्याज्य है, जैसे मणि से भूषित भयंकर सर्प।

४८९०. किसी भी दोष का ज्ञान न होना ही सबसे बड़ा दोष है।

४८९१. उस मानव का ज्ञान निन्द्य है, जिसकी चित्तवृत्ति विद्या के गर्व से दूषित है।

४८९२. अतीत के महापुरुषों के जीवन से अपरिचित रहना जीवनभर निरंतर बाल्यावस्था में रहना है।

४८९३. जिन वचन महापुण्य के उदय से मिलते हैं व उनके रहस्य का ज्ञान महापुरुषार्थ से होता है।

४८९४. अच्छी पुस्तकें सदैव अच्छे मित्र हैं।

४८९५. विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।

४८९६. पुस्तकें मन के लिए साबुन का कार्य करती हैं।

४८९७. गंदी पुस्तकों का पढ़ना विष पीने के समान है।

४८९८. मैं नरक में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूँगा क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ होंगी वहीं स्वर्ग बन जाएगा।

४८९९. विकृत भोजन से जैसे शरीर रुग्ण हो जाता है, उसी तरह विकृत साहित्य से मस्तिष्क भी विकारग्रस्त होकर रुग्ण हो जाता है।

४९००. वचन से बढ़कर लेख को प्रमाण माना जाता है क्योंकि लेख की प्रमाणिकता होती है, वचन तो भले ही बृहस्पति के द्वारा ही क्यों न कहे गये हो फिर भी प्रतिष्ठा नहीं होती है। ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।

४९०१. जिस प्रकार शरीर का खाद्य भोजनीय पदार्थ है, उसी प्रकार मस्तिष्क का खाद्य साहित्य है।

४९०२. पुस्तकें विश्वस्त दर्पण हैं, जो विद्वानों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं।

४९०३. जो पुस्तकें हमें सबसे अधिक सोचने के लिए विवश करती हैं वे हमारी सबसे बड़ी सहायक हैं।

४९०४. जिसे शास्त्र (पुस्तक) पढ़ने का शौक है वह सब जगह सुखी रह सकता है।

४९०५. शास्त्र (पुस्तक) समय के विशाल समुद्र में प्रकाश स्तंभ के समान हैं।

४९०६. आज के लिए और सदा के लिए पुस्तक सबसे बड़ी मित्र है।

४९०७. पुस्तक का एक सद्विचार आपको युगपत गुणों का, सुगंध का, ज्ञान का और आत्मा का अमरत्व प्रदान करता है।

४९१०. अपनी ही पूजा कराने में खोए हुए लोग मन के अंधे और हृदय के बहरे होते हैं।

४९११. संसार में लाखों ईसा, मुहम्मद, बुद्ध, महावीर या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं कर सकते, जब तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिबद्ध नहीं होते, तब तक तुम्हारा कोई उद्धार नहीं कर सकता इसलिए दूसरों का भरोसा मत करो।

४९१२. जैसे अंधे प्राणी के लिए संसार अंधकारमय है और आँखों वाले के लिए प्रकाशमय वैसे ही अज्ञानी के लिए यह संसार दुःखों का समूह है और ज्ञानी के लिए आनंदमय है।

४९१३. एक-एक क्षण का सदुपयोग कर विद्या का और एक-एक कण की सुरक्षा कर धन का संचय करना चाहिए क्योंकि क्षण का त्याग करने से विद्या कैसे प्राप्त हो सकती है और कण का त्याग करने पर धन कैसे प्राप्त हो सकता है ?

४९१४. अज्ञानी का वैराग्य धारण करना, तपस्वी का काम सेवन करना, दरिद्र का शृंगार करना, नौकर का आज्ञाकारी न होना ये किसके लिए सिर दर्द नहीं होता अर्थात् सभी को दुःख जनक होता है।

४९१५. जिसमें बुद्धि नहीं है, उसको बिना सींग का पशु समझना चाहिए।

४९१६. आप जितने बुद्धिमान होंगे उतनी ही आपको अधिक सन्तुष्टि मिलेगी।

४९१७. ज्ञानी पुरुषों को ही इस संसार में भय नहीं होता है।

४९१८. जिसका मन धर्मशास्त्र सुनने में सदा लालसायुक्त रहता है, वही इस जगत् में परमार्थ को अच्छी तरह जानता है, अन्य नहीं।

४९१९. मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की।

४९२०. चाहे सैकड़ों सूर्य उदित हों, चाहे सैकड़ों चंद्रमा अंतःकरण का अंधकार विद्वानों के वचनों के बिना नष्ट नहीं होता है।

४९२१. विद्वान् अकल का थोक विक्रेता होता है।

४९२२. सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ? विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ? सुख की चाह हो तो विद्या छोड़ दे और विद्या की चाह हो तो सुख का त्याग करें।

४९२३. विद्यावान व्यक्ति का सम्मान धनवान और चरित्रवान भी करते हैं।

४९२४. विद्या से युक्त व्यक्ति को कोई मूर्ख नहीं बना सकता है।
४९२५. विद्या विधाता से मिलन का सर्वश्रेष्ठ विधान है।
४९२६. जिसके पास विद्या है उसके पास कुछ न होकर भी सब कुछ है।
४९२७. जिस नई बात या ज्ञान का पता विद्यार्थियों को चले, तो उसे वह अपनी मातृभाषा में लिख लें और भविष्य में यथा समय और यथा अवसर पर उसका उपयोग करें।
४९२८. विद्यार्थी को तो आलस्य छूना ही नहीं चाहिए।
४९२९. विद्वान् होकर शांत रहना, कल्याण कारी है।
४९३०. वह सभा वनस्थली है जिसमें विद्वान् नहीं हैं।
४९३१. समाचारपत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं।
४९३२. सम्यग्ज्ञान से बढ़कर प्रकाश और अज्ञान से बढ़कर अंधकार कोई नहीं है।
४९३३. सुख के लिए सामग्री नहीं संतोष चाहिए और संतोष भी तत्त्व ज्ञान बिना संभव नहीं है।
४९३४. सम्यग्ज्ञान की अंतिम मंजिल मोक्ष है।
४९३५. आध्यात्मिक जीवन जीने की कला है शास्त्र स्वाध्याय।
४९३६. स्वाध्याय ही प्रगति का द्वार है।
४९३७. शास्त्र स्वाध्याय शिवपुर पहुँचाने वाला वायुयान है।
४९३८. स्वाध्याय के बिना मानसिक विकास नहीं हो सकता है।
४९३९. स्वाध्याय से बढ़कर सज्जनों के लिए कोई अच्छी आदत नहीं हो सकती है।
४९४०. सिर्फ शास्त्र को पढ़ लेने से आत्मा पवित्र नहीं होती है, जैसे सन्दूक में साबुन बन्द रखने से कपड़ा साफ नहीं होता है, अतः जैसे साबुन का प्रयोग करना अनिवार्य है वैसे ही शास्त्रों के सूत्रों को आचरण में उतारना अनिवार्य होता है।
४९४१. नीति और सिद्धान्तों का अनुग्रहण और अनुपालन शास्त्रों के स्वाध्याय बिना असम्भव है।
४९४२. ज्ञान का मूल्य बहुमूल्य रत्न से भी अधिक है ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है।
४९४३. सच्चे ज्ञान की एकमात्र पहचान है सिखाने की शक्ति।
४९४४. सच्चा ज्ञान वही है, जो आपको अहित से रोके और कष्टों में भी मुस्कुराहट पैदा करा दे। ज्ञान का मद ही अज्ञान का प्रदर्शन है।
४९४५. ज्ञान के साथ चरित्र अमृत का पान है और ज्ञान के साथ भोग विष के सामन हैं।
४९४६. कोरा चरित्र खतरनाक नहीं होता है, कोरा ज्ञान खतरनाक होता है।
४९४७. ज्ञान से वैराग्य की रक्षा करो तथा ध्यान से आत्मा की शुद्धि करो।
४९४८. सच्चा ज्ञान त्याग कराता है और सत्संग की प्यास जगाता है।
४९४९. सम्यग्ज्ञान पदार्थों को छोड़ने की बात करता है।

४९५०. जिससे तत्त्व का बोध होता है, जिससे मन का निरोध होता है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है, जिनशासन में उसका नाम है ज्ञान।

४९५१. मेघ चाहे उपाधियाँ व जागीरें बरसा दें, धन चाहे हमें खोजे किन्तु ज्ञान को तो हमें ही खोजना पड़ेगा।

४९५२. ज्ञान के बिना उज्ज्वल भविष्य का और कोई मार्ग नहीं है।

४९५३. पालने से लेकर श्मशान तक ज्ञान प्राप्त करते रहो।

६२. सबका हित साहित्य से है

४९५४. आयु कर्म की उदीरणा किसी भी नशे से हो सकती है अतः नशा आत्महत्या के कारण हैं।

४९५५. अनाकुलता का मूल प्रसिद्धि नहीं आत्म विशुद्धि है, मंदिर की द्रव्य थाली भर चढ़ाते हैं, पुण्य झोली भर चाहते हैं और दान एक रुपया नहीं देना चाहते, जो ऐसा करते हैं वे मंदिर से लोन लेते जाते हैं किन्तु जमा कुछ नहीं करते हैं।

४९५६. सत्साधना में बढ़ते हुए योगी को यदि गिरने का कोई निमित्त है तो प्रतिष्ठा।

४९५७. मैं बड़ों की इज्जत इसलिए करता हूँ कि उन्होंने हमसे ज्यादा आराधना की है, मैं छोटों की इज्जत इसलिए करता हूँ कि उन्होंने हमसे कम अपराध किए हैं।

४९५८. सत्य की खोज में किए गए प्रयास का नाम विज्ञान है लेकिन सत्य का प्रतिपादन करने वाले ज्ञान का नाम वीतराग विज्ञान हैं।

४९५९. प्रथम प्रहर में दुनिया, द्वितीय प्रहर में भोगी, तृतीय प्रहर में चोर, अंतिम प्रहर में योगी जागता है, देर से सोना, देर तक सोये रहना दरिद्रता का कारण है, जल्दी सोना, जल्दी उठना अच्छी हेल्थ और वेल्थ का कारण हैं, जो हर रोज उगते सूरज को देखते हैं, उनका पूरा दिन उगा हुआ रहता है, जो सूर्योदय के बाद भी सोये पड़े रहते हैं उनका भाग्य भी सो जाता है।

४९६०. आपके व्यक्तित्व का आइना होती है, आपकी वेशभूषा।

४९६१. पर के निमित्त अपनी निराकुलता क्यों खोते हो?

४९६२. यातायात नियम–ट्रेफिक के नियम और उन्हें क्यों पालन करना है, उससे हमारा और सभी का क्या फायदा है? १८ वर्ष के पहले वाहन क्यों नहीं चलाना ? लायसेंस बनाने के पश्चात् ही चलाना आदि की शिक्षा आवश्यक है।

४९६३. वैसे तो सभी इन्द्रियज्ञान प्रायः समता के बाधक हैं किन्तु आँख द्वारा अवलोकन अधिक बाधक है अतः नेत्रोपयोग निजचर्या में ही करो यथा लिखने में, पढ़ने में, चलने में, उठने–बैठने में, चीज उठाने रखने में, दर्शन में, पूजन में, वंदन में, वैय्यावृत्य में, भोजन में, धर्मात्माओं से वार्तालाप में, दुखियों को समझाने में और नित्य क्रिया में।

४९६४. हजार वर्ष पहले स्थिति बड़ी दयनीय थी। आताताई राजाओं ने भारत के विभिन्न भागों पर कब्जा कर लिया और बौद्धों ने उन राजाओं को प्रभावित कर लिया।

४९६५. साम्प्रदायिक द्वेष वशात् जैनों की पाठशालाओं, गुरुकुलों और मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया इसलिए अकलंक-निकलंक को बाहर से बौद्ध बनकर नालंदा के बौद्ध विश्वविद्यालय में जाना पड़ा।

४९६६. पश्चाताप कोई भी कर सकता, प्रायश्चित्त तप धर्मात्मा ही ग्रहण करते हैं।

४९६७. मंदिर जी के गर्भगृह का वही महत्त्व है, जो हमारे शरीर में पेट का है, गर्भगृह में ऊर्जा संग्रहीत होती है, बिजली पानी को पहले संगृहीत किया जाता है फिर प्रवाहित किया जाता है उसी प्रकार मंदिरों और शिखरों में मंत्रादि से ऊर्जा संग्रहीत होती हैं अतः उन्हें पवित्र रखना चाहिए।

४९६८. बरसात न अच्छी होती न खराब जरूरत पर निर्भर है, उसी प्रकार दान जहाँ, जितना, जो आवश्यक है वहाँ उतना, वही महत्त्वपूर्ण हैं।

४९६९. व्यवहार में किसी के बल पर कोई कार्य मत करो अन्यथा शल्य व संक्लेश मिलेगा।

४९७०. जो उपदेश का लक्ष्य केवल पर को ही बनाते है, वे मूर्ख हैं।

४९७१. दिशाओं के सम्बन्ध में विचार करना गलत नहीं पर दिशायें ही सब-कुछ नहीं हैं।

४९७२. जैनदर्शन में वीतरागता और अहिंसा के विषय में कभी दो प्रमाण नहीं मिलेंगे।

४९७३. जैसे किसी कैदी को न्यायालय से बरी होने का आदेश प्राप्त हो लेकिन अभी वह जेल में है और ड्रेस भी जेल की पहने है उस समय वह जेल की नहीं बल्कि जेल से मुक्ति की अनुभूति करता है, उसी प्रकार अरहंत भगवान् को भाव मोक्ष होने से अनंत सुख है।

४९७४. कल्की धर्म का नाश करता उपकल्की धर्म को बढ़ाता है। (ति.प.)

४९७५. देव-शास्त्र-गुरु समान होते हुए भी भगवान् के समान जिनवाणी की स्थापना नहीं होती गुरु को बिना नहाये भी छू लेते है पर स्त्रियाँ नहीं छूती हैं।

४९७६. एक व्यक्ति के पास सौ का नोट है वह न पुण्य रूप है न पापरूप, उस नोट को दान में दिया जा रहा है तो पुण्य रूप है, शराब खरीदी जा रही है तो पापरूप, उसी प्रकार वर्गणाएँ होती हैं, पाप भाव से पाप रूप पुण्य भाव से पुण्य रूप परिणमन कर जाती हैं।

४९७७. पंचक में मरण होने पर श्मशान में ५ श्रीफल रखें जलाये नहीं एवं ५ बार णमोकार मंत्र पढ़े नैमित्तिक दोष दूर हो जायेगा।

४९७८. जिन्दगी की आवश्यक वस्तु की कामना से यदि भक्ति की जाती है तो वह न तो नियम है, न मिथ्यात्व है, न सकाम भाव है, वह एक मजबूरी है यदि कोई घर में बीमार हो गया णमोकार नहीं पढ़े तो क्या करें? भक्तामर नहीं पढ़े तो क्या करें? भगवान् से भोग विलास की याचना करना निदान है।

४९७९. सामान्य व्यक्ति की दृष्टि नकारात्मक ऊर्जा वाली एवं आचार्य भगवन् मंत्र में सकारात्मक ऊर्जा देते हैं इसलिए परदे के पीछे से देते हैं।

४९८०. बेटे को शेर पकड़े तो बचाते हैं, उसी प्रकार दूसरे जीवों की रक्षा करना चाहिए।

४९८१. दो के बीच बात हो रही हो और आवश्यक हो तो कहे 'क्षमा करें' आपको दखल देना पड़ रहा है यह कहकर ही बात करें, किसी के कमरे में संकेत देकर ही जाये।

४९८२. जो कार्य अचानक कभी हो वह दोष है लेकिन जिसे सुधारा जा सकता है उस कर्त्तव्य में उदासीनता करना प्रमाद है।

४९८३. आताताई झुककर प्रवेश नहीं करते थे इसलिए पहले मंदिर जी के दरवाजे छोटे बनाये जाते थे।

४९८४. देवों के पास जो विभूति है मनुष्यों के पास नहीं अतः विशेष रूप से देव पञ्चकल्याणक मनाते हैं, क्षीरसागर से देव ही जल ला सकते हैं।

४९८५. रसना का सम्बन्ध मन से है, मन चंचल होता है अतः रसना को जीतना कठिन है।

४९८६. प्रतिष्ठा पाठ में कहा है–केसर से रंगे चावल पुष्प संज्ञा को प्राप्त हैं।

४९८७. जैसे धनी पुरुष पास में रखे हुए स्वर्ण में बढ़ा भाव सुनने के बाद घटता भाव सुनने पर, कुछ खर्च खराबी न होने पर भी दुःखी होता है, इसी प्रकार वास्तविक वैराग्य शून्य, ज्ञानी व त्यागी पुरुष प्राप्त ज्ञान व त्याग में बढ़े सम्मान की स्वीकारता कर चुकने के बाद सम्मान न होने पर, किसी के द्वारा कुछ हानि वा क्लेश नहीं दिये जाने पर भी दुःखी होता है अस्तु, उसके दुःख में उसकी ही तो मूल में भूल है।

४९८८. कषाय करते समय यह तो विचार करो कि द्रव्य लिङ्गी साधु के अव्यक्त मिथ्याभाव मिथ्यात्व गुणस्थान सम्बन्धी सभी प्रकृतियों तक का बंध करा देता है तो क्या तेरे इस समय बंध नहीं हो रहा है? क्या इसका कुफल नहीं भोगना होगा ?

४९८९. शारीरिक कष्ट से आत्मा की हानि नहीं और शरीर की भी विशेष हानि नहीं पर मानसिक व्यथा से आत्मा और शरीर दोनों की हानि है।

४९९०. दूसरे की मान कषाय पसंद न होना भी मान कषाय का फल है।

४९९१. जिस प्रकार एक सूखे पेड़ को आग लगा दी जाये तो वह पूरा जंगल जला देता है, इसी प्रकार एक पापी पुत्र पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है।

४९९२. कुछ पुस्तकें चखने के लिए, कुछ चबाने के लिए कुछ घोलकर पी जाने के लिए होती हैं।

४९९३. लक्ष्य भौतिक, सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक होना चाहिए।

४९९४. एक से अधिक कार्य करने के लिए शारीरिक क्षमता की आवश्यकता नहीं है, उसके लिए मानसिक क्षमता की आवश्यकता है जितनी चादर उतने पैर पसारो, सदा एक नाव

में सवार होओ, जितना सँभाल सको उतना ही करो, ज्यादा करोगे तो दूसरों के लिए, पैसा ज्यादा हो तो बुरी आदतें लग जाती हैं।

४९९५. जीवन ऐसा कुछ नहीं है जिसके प्रति गंभीर रहा जाए जीवन तुम्हारे हाथों में खेलने के लिए एक गेंद है। गेंद पकड़े मत रहें।

४९९६. छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहिये एक छोटा-सा छेद बड़े जहाज को डुबा सकता है।

४९९७. मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता हैं।

४९९८. अनेक महागुरुओं से हम साक्षात् नहीं मिल सकते लेकिन उनकी पुस्तकें हमारा सही मार्ग दर्शन कर सकती हैं।

४९९९. जूतों पर पॉलिश करने वाला अपाहिज पॉलिश कराने वालों को पहले पढ़ने पुस्तक देता था ताकि उतनी देर वह समय का सदुपयोग करें कुछ गुण ग्रहण करें और मेरी दयनीय दशा देखकर सहयोग न करें मैं कर्मयोग करूँ।

५०००. किसी भी कार्य में सामने वाले व्यक्ति की जरूरत को समझकर उसका समाधान किया जाये तो बहुत समय और ऊर्जा की बचत होगी।

५००१. माँ, महात्मा, परमात्मा की तिजोरी की भाँति स्वयं रक्षा करना चाहिए अपनी तथा घर की रक्षा चौकीदार कर सकता है।

५००३. शिक्षक, चिकित्सक, संत और शासक पथभ्रष्ट नहीं होना चाहिए संत की इच्छा शक्ति और शासक की कार्यशक्ति एक हो तो देश की तस्वीर बदल सकती है।

५००४. शिक्षा बुढ़ापे के लिए सबसे अच्छा प्रावधान है।

५००५. पैसा ही सबकुछ नहीं अन्यथा तीर्थंकर क्यों त्याग करते, वे जानते थे कि पैसे से भोजन खरीद सकते है भूख नहीं, पुस्तक खरीद सकते ज्ञान नहीं, सुविधाएँ खरीद सकते हैं सुख नहीं, मंदिर बना सकते भगवत्ता नहीं खरीद सकते हैं।

५००६. जरूरत समझे बिना किए गये कार्य के परिणाम ही व्यथित करते हैं।

५००७. शिक्षा प्रणाली में १. शारीरिक शिक्षा—योगासन प्राणायाम, पौष्टिक आहार—विटामिन मिनरल प्रोटीन की उपलब्धता शरीर की आवश्यकता, सात्विक खाने के फायदे और गुण, फास्ट फूड के अवगुण/नुकसान और खाने का समय बताना चाहिए।

५००८. **जल संरक्षण**—पानी की कितनी कमी है और इसका महत्त्व पानी को कम से कम उपयोग करना। किस तरह पानी बचाना, एक ही पानी को दो-तीन बार कैसे उपयोग किया जाए और भविष्य के लिए पानी कैसे बचाया जाय इसकी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

५००९. **नैतिक शिक्षा**—समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, हमें नैतिक मूल्यों की,

संस्कारों की रक्षा करना, सकारात्मक सोच रखकर दूसरों की मदद करना चाहिए।

६३. सोच बदलो, सितारे बदल जायेंगे

५०१०. शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है, शिक्षा सौन्दर्य और यौवन को भी परास्त कर देती है।

५०११. सोच बदलो सितारे बदल जायेंगे,
नजर बदलो नजारे बदल जायेंगे।
किश्तियाँ बदलने से क्या होता है दोस्तों,
दिशा बदलो, किनारे बदल जायेंगे ॥

५०१२. मन पर क्या हावी है? कार्य करने का दृढ़ निश्चय या विफलता का भय ?

५०१३. किसी व्यक्ति के जीवन की ऊँचाई मापने के तीन पैमाने हैं, हृदय की मधुरता, उदारता और विनम्रता।

५०१४. विभीषण रावण के राज्य में रहता था फिर भी नहीं बिगड़ा और कैकयी राम के राज्य में रहती थी फिर भी नहीं सुधरी, तात्पर्य सुधरना एवं बिगड़ना केवल मनुष्य के सोच और स्वभाव पर निर्भर है सिर्फ माहौल पर नहीं है।

५०१५. सिक्के हमेशा आवाज करते हैं, पर नोट हमेशा शान्त रहते हैं इसलिए जब आपकी कीमत बढ़े तो शान्त रहिए, आपकी हैसियत का शोर मचाने का जिम्मा आपसे कम हैसियत वालों का है।

५०१६. जब तक आप रुकते नहीं हैं तब-तक सफलता आपके पीछे चलती है, वह ये मायने नहीं रखती कि आप कितनी धीमी गति से आगे बढ़ रहें हैं।

५०१७. कल का दिन किसने देखा है, आज का दिन भी खोये क्यों,
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं, उन घड़ियों में रोये क्यों?

५०१८. ज्ञानवान ही विनयवान और विवेकवान होता है।

५०१९. हम किताबी ज्ञान अर्जित करते हैं लेकिन वास्तविक परिस्थितियों से दूर रहते हैं, प्रेक्टीकल शिक्षा नहीं दी जाती है, जीवन भर काम आने वाले आवश्यक विषयों को स्कूल या कॉलेज में कभी नहीं पढ़ाया जाता है।

५०२०. हमारे विचारों में क्रांति लाने वाले विषयों और लेखकों को शिक्षा प्रणाली में शामिल नहीं किया जाता है।

५०२१. सफलता और अमीरी का निर्णय अगर अंकों के आधार पर होता तो बिल गेट्स सबसे अमीर और तेंदुलकर सबसे सफल खिलाड़ी न होते।

५०२२. किसी गरीब को सिर्फ दौलत देकर अमीर नहीं बना सकते उसे जीवन जीने की कला सिखानी होगी। घर देखकर लोग क्या कहेंगे यह न सोचें?

५०२३. आपका घर बहुत बड़ा हो आवश्यक नहीं, लेकिन उस घर में आपके जरूरत की प्रत्येक चीज उपलब्ध हो और हर चीज सही जगह पर रखी हो यह आवश्यक है और सर्व सुविधा युक्त जगह में हो जो शान्ति सुकून दे सके।

५०२४. कर्ज इंसान की सोच पर पर्दा डाल देता है और जब तक पर्दा हट पाता है, बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध मूर्खों की छाती में ही बसता है।

५०२५. सभी महान् विचारकों का प्रारम्भ में उपहास बाद में पूजा होती है।

५०२६. अपनी सोच को ले जाओ शिखर तक कि उसके आगे सारे सितारे झुक जायें।
न बनाओ अपने सफर को किसी किश्ती का मोहताज
चलो इस शान से कि तूफान भी झुक जाये।

५०२७. हमारे जीवन में किसी भी बात की शुरूआत हमारे विचारों से होती है।

५०२८. आज दुनिया की ९६ प्रतिशत दौलत सिर्फ १ प्रतिशत लोगों के पास है, इसका मूल फर्क है उन १ प्रतिशत लोगों की सोच का।

५०२९. लोगों को समझाने में समय नष्ट न करें लोग वही सुनेंगे जो वे सुनना चाहते हैं।

५०३०. मेरे पास वक्त नहीं उन लोगों से नफरत करने का जो मुझे पसंद नहीं करते क्योंकि मैं व्यस्त हूँ उन लोगों से प्यार करने में जो मुझे पसंद करते हैं।

५०३१. हम किसी की सराहना करने की अपेक्षा उसकी खामियाँ ढूँढ़ने में ज्यादा समय और ऊर्जा खर्च करते हैं।

५०३२. मंजिल तो मिल ही जायेगी, भटकने से ही सही।
गुमराह तो वे लोग हैं जो घरों से निकलते ही नहीं ॥

५०३३. जिन्होंने भय को जीवन में आने नहीं दिया और स्वप्रेरणा को प्रबल रखा उन सबने इतिहास रचा जैसे अब्दुल कलाम, सचिन, नरेन्द्र मोदी, गाँधी आदि।

५०३४. यदि तुम भला करते हो तो अपने स्वभाव की वजह से तो फिर अहंकार क्यों?

५०३५. शादियों में उपहार देना मानों खाने का मूल्य अदा करना है।

५०३६. परिवर्तन, बदलाव समयानुसार आवश्यक है, इसके लिए कुछ साहसिक निर्णय आवश्यक है।

५०३७. जिस अच्छे काम का शुरू में विरोध होगा, उसकी समय पर सराहना होगी।

५०३८. ईश्वर से प्रार्थना का उद्देश्य माँगना होता है, अभी जो कुछ मिला है उसके लिए धन्यवाद देंगे तो शायद बिना माँगे ज्यादा पा सकेंगे।

५०३९. जिंदगी की भाग दौड़ में हम बनावटी जीवन जीने में व्यस्त हैं हम स्वाभाविक जीवन जीना भूल गये हैं।

५०४०. अधिकतर सरकारी अफसर कार्य प्रणाली को उलझन भरा बनाना चाहते हैं ताकि रिश्वत

के लिए रास्ता निकले।

५०४१. एक छोटी सी अच्छाई भी आत्मा को ऊर्जा से भर देती है।

५०४२. हम जीवन भर में यह तय नहीं कर पाते कि हमारी जरूरत कितनी है कितना हमारे सुखी जीवन के लिए पर्याप्त है।

५०४३. मनुष्य कितना मूर्ख है। प्रार्थना करते समय समझता है कि भगवान् सब कुछ सुन रहा है, पर निंदा करते समय यह भूल जाता है। पुण्य करते समय यह समझता है कि भगवान् देख रहा है, पर पाप के समय यह भूल जाता है। दान करते समय समझता है कि भगवान् सब में बसता है, पर चोर चोरी करते समय ये भूल जाता है। प्रेम करते समय यह समझता है कि पूरी दुनिया भगवान् ने बनाई है, पर नफरत करते हुए ये भूल जाता है और हम कहते हैं कि मनुष्य सबसे बुद्धिमान प्राणी है।

५०४४. द्वन्द, दुःख संताप, विभाव, विपदा आदि सभी अनिष्ट बातें संयोग में है, अकेले रहने से तो उन सब अनिष्टों का सर्वथा अभाव हो जाता है, परन्तु मोही जीव संयोग को इष्ट मानता है।

५०४५. कषाय नहीं होने देना बड़ी तपस्या है।

५०४६. संयोग आत्महित का नियत साधक नहीं है क्योंकि कर्म के संयोग से संसार के दुःख मिलते हैं, शरीर के संयोग से भूख-प्यास आदि के दुःख मिलते हैं, परिवार के संयोग से चिन्ता परिश्रम के दुःख मिलते हैं। संयोग सुख की चीज नहीं है, बल्कि क्लेशों का पिता है।

५०४७. पशुओं का चाम तो मरने पर भी काम आता है, तेरे चाम का क्या होगा? अरे! जब तक आरोग्य है तब तक दीन दुःखियों की सेवा और महापुरुषों की वैय्यावृत्ति कर ले। तेरा शान्ति पथ प्रशस्त होगा। आगामी काल की चिंता सम्यक्त्व का अतिचार है। अतः क्या होगा? यह भय मत करो और न अतिभविष्य के प्रोग्राम बनाओ, वर्तमान परिणमन पर ध्यान दो। त्याग तृप्ति का और पर सम्पर्क असंतोष का कारण है।

५०४८. कोई मुझे सम्पदा ऐश्वर्य का स्वामी समझे तो मुझे इससे क्या है? विपक्ष मलीन समझे तो मुझे क्या? मैं तो जैसा होऊँगा, वैसा ही फल पाऊँगा। किसी के जानने समझने आदि से क्या होता है ?

५०४९. केवल उन्हीं का कार्य धन्य है, जो अहंकार-ममकार से दूर हैं बाकी सब समय बिता रहे हैं।

५०५०. जहाँ अपवाद का बादल छा रहा हो, वहाँ घबराना मूर्खता है, वह वातावरण तो तुम्हारा उपकारक है धीर बनाने वाला है, अपने आत्म तत्त्व को देखो और प्रसन्न रहो।

५०५१. रागादि की हीनता से ही कल्याण है।

५०५२. मान लो तुम्हें दुनिया का कोई मनुष्य नहीं जानता, तुम अकेले एक जगह पड़े हो, कोई चर्चा करने वाला नहीं है तो ऐसी हालत क्या तुम्हें पसंद है? बुरी तो नहीं लगती? यदि विषाद नहीं है तो कल्याण के पात्र हो।

५०५३. स्वयं करने योग्य कार्य को स्वयं न करने से तन-मन-धन तीनों की बर्बादी होती है।

५०५४. सदा किसी के साथ रहने या किसी को साथ रखने का नियमबद्ध वचन नहीं देना क्योंकि परिणाम परिवर्तनशील होते हैं।

५०५५. कार में पेट्रोल न हो तो बेकार, णमोकार के प्रति श्रद्धा न हो तो बेकार श्रद्धा होने पर भी कार धोका दे सकती है णमोकार नहीं।

५०५६. संत और सूर्य अंधकार मिटाते रोशनी फैलाते, पानी हवा फूल की तरह होते हैं।

५०५७. पैसा जेब में हो दिमाग में नहीं, दिमाग में पैसा रखोगे तो दिमाग होगा सातवें आसमान पर और तुम होंगे, सातवें नरक में और पैसा जेब में होगा तो दुनिया होगी तुम्हारी जेब में और तुम होंगे दुनिया की जेब में।

५०५८. परिवार व्यक्तियों के समूह से नहीं प्यार की अभिव्यक्तियों से बनता है, मीठा खाने को न मिले तब भी मीठा बोलें, जो मन में आये वह न बोलें अपितु जो औरों को भाये वह बोलें, मनचाहा बोलोगे तो अनचाहा सुनना पड़ेगा।

५०५९. जब तक मनुष्य या पशु की आँख में आँसू है तब तक अहिंसा और सत्य का सिद्धान्त अधूरा है। श्रावक की बंधी मुट्ठी लाख की साधु की खुली मुट्ठी आशीर्वाद की।

५०६०. जैसे पेट में छना हुआ जल डालते हैं वैसे मन में भी छने विचार डालें क्योंकि तन, मन नगरपालिका के कचरे का घर नहीं है प्रतिफल का विचार अवश्य करें। एक भी कड़वा फल नहीं आये तो मीठे फल की पहचान नहीं होगी।

५०६१. भगवान् महावीर ने जीने के साथ मरना भी सिखाया है बच्चा जन्म लेता है तो कई बातों में संदेह रहता है पर मृत्यु में कोई संदेह नहीं होता है।

५०६२. टकराव में बिखराव होगा, खम्भे की तरह सिर बचाकर निकल जाइये।

५०६३. दर्जी को कपड़ा, नाई को सिर, ड्राइवर को जीवन सौंपते उससे ज्यादा श्रद्धा धर्म के प्रति होना चाहिए।

५०६४. श्रीफल में तीन आँखें होती हैं, तीसरी आँख प्राप्त करने श्रीफल चढ़ाते, दोनों आँखें बंद करते तब तीसरी आँख (केवलज्ञान) प्राप्त होती है।

५०६५. गरीबी का शान्ति मय जीवन श्रेष्ठ है लेकिन धनाढ्य की अशान्ति ठीक नहीं मानी जाती है।

५०६६. जो भोगी होता है उसी की दृष्टि में परिस्थिति सुखदायी और दुःखदायी होती है, योगी की दृष्टि में परिस्थिति दो तरह की नहीं होती है।

५०६७. रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हो तो भी एक अच्छा जूता पहनकर उस पर चला जा सकता है लेकिन यदि एक अच्छे जूते के अन्दर एक भी कंकड़ हो तो एक अच्छी सड़क पर भी कुछ कदम चलना मुश्किल होता है अर्थात् बाहर की चुनौतियों से नहीं हम अपनी अन्दर की कमजोरियों से हारते हैं।

५०६८. चक्रवर्ती के दशाङ्ग भोग–१. चौदह रत्न, २. नौ निधि, ३. सुन्दर स्त्रियाँ ४. नगर, ५ आसन, ६. शय्या, ७. सेना, ८. भोजन, ९. पात्र, १०. नाट्यशाला।

५०६९. मन शान्त रखने के दस सूत्र–१. किसी के काम में तब तक दखल न दें जब तक की आपसे पूछा न जाये। २. उतना ही काम हाथ में लें जितना पूरा करने की क्षमता हो। ३. किसी भी काम को टाले नहीं और ऐसा कोई काम न करें, जिससे बाद में आपको पछताना पड़े। ४. दिमाग को खाली न रहने दें। ५. जो कभी बदल नहीं सकता उसे सहना सीखें। ६. स्वयं को माहौल में ढालने की चेष्टा करें। ७. जलन की भावना से बचें। ८. पहचान पाने की लालसा न रखें। ९. माफ करना और कुछ बातों को भूलना सीखें। १०. प्रतिदिन ध्यान करना सीखें।

५०७०. विशेष शुद्ध मन सबसे अच्छा और बड़ा तीर्थ है।

५०७१. मदारी बन्दर को शिक्षित कर जैसा चाहे वैसा नचा लेता है, वैसे ही मन को शिक्षित करके अपना दास बना लें फिर जैसा आदेश देंगे मन वही करेगा।

५०७२. जीवन में मन की शान्ति का मूल्य सम्पत्ति और स्वास्थ्य से कही ज्यादा है।

५०७३. किसी ने पूजा की और किसी ने उपवास रखा, हमने कुछ नहीं किया बस माँ–बाप को अपने पास रखा है।

५०७४. समीचीन विचारों की पगडंडी से सिंहासन का रास्ता भी दूर नहीं होता है।

५०७५. खुद पर विजय सबसे बड़ी जीत, खुद से हार जाना शर्मनाक हार है।

५०७६. जो समय चिन्ता करते बीता वह समझो कूड़े दान में डाल दिया और जो समय चिन्तन में लगा समझो कि वह ब्याज सहित लौटाने वाली बैंक में जमा हो गया है।

५०७७. तुम बोलो या न बोलो इस बात का गम नहीं है, तुम मुस्कुराकर देख लो यह भी बोलने से कम नहीं है।

५०७८. दुनिया के सभी देवी–देवता की प्रतिमा खिले कमल पर विराजमान है बन्द कमल पर नहीं अतः आप भी अपने हृदय कमल को प्रसन्न रखो जिससे परमात्मा विराजमान हो सकें।

५०७९. सौ गुना बढ़ जाती है खूबसूरती सहज ही मुस्कुराने से।
फिर भी बाज नहीं आते लोग बुरा मुँह बनाने से ॥

५०८०. यदि जीवन में निर्दोष हो तो कभी सफाई मत देना।

५०८१. सम्पत्ति समाज की समस्त शक्तियों की उपज है।

५०८२. लोगों से काम ले पाना अपने में एक अच्छा गुण माना जाता है।

५०८३. समय के अच्छे उपयोग के लिए अच्छी नींद लेना आवश्यक है।

५०८४. आदमी कितना जिया यह मत देखो, आदमी कैसे जिया यह देखो।

५०८५. किसी के सहारे की अपेक्षा मत रखो, शरीर ही सहारा नहीं देगा तब दुनिया क्या सहारा देगी।

५०८६. चिता में जलने से पहले दूसरों से जलना छोड़ देना।

५०८७. लीक-लीक गाड़ी चले, लीक ही चले कपूत।
दूसरों से लीक छोड़ तीनों चले सायर संत, सपूत!!
अतः आप अपना रास्ता स्वयं बनायें।

५०८८. मेहनत से दरिद्रता, धर्म करने से पाप, मौन से कलह और जागने से भय नहीं रहता है।

५०८९. हम समझते कम, समझाते ज्यादा है अतः सुलझते कम, उलझते ज्यादा है।

५०९०. गैरों की बेटी पर जान देते हो, अपनी बेटी गर्भ में आती है तो जान लेते हो।

५०९१. समुद्र मंथन में जिसने अमृत पिया उसे देव, जिसने जहर पिया उसे महादेव कहते हैं।

५०९२. नजदीकी भावनात्मक अशान्ति पैदा करती है और अनादर को जन्म देती है।

६४. संत सायर सपूत, से जीना सीखो

५०९३. कंडेक्टर बेचारा गाँव नगर के नाम चिल्लाता-चिल्लाता जीवन निकाल देता है। कुंजड़ा भटा-भाजी, आम-पपीता चिल्लाता है, अगर इतनी प्रीति से भगवान् का नाम लेता तो कल्याण हो जाता।

५०९४. जन्म दूसरे ने दिया, नाम, शिक्षा, काम करने का तरीका दूसरे ने सिखाया, अन्त में श्मशान भी दूसरे ले जायेंगे, तुम्हारा अपना क्या है जो घमंड करते हो?

५०९५. आपके कारण किसी की आँखों में आँसू आये तो आपका जीवन निष्फल है और आपके लिए किसी की आँख में आँसू आये तो आपका जीवन सफल है।

५०९६. इंसान एक दुकान है और जुबान उसका ताला है, ताला जब खुलता है तब मालूम होता है कि दुकान सोने की है या कोयले की ?

५०९७. कितने ही सवाल हल हो जाएँ गर मैं और तुम 'हम' हो जाएँ।

५०९८. पेड़ की हर डाल हिलने पर भी पक्षी नहीं घबराता है क्योंकि उसे अपने पंखों पर विश्वास है।

५०९९. दुनिया का सबसे मुश्किल काम, अपने काम से काम रखना है।

५१००. मदन का दमन मन से होता है।

५१०१. वक्त, दोस्त और रिश्ते मुफ्त में मिलते हैं पर खो जाने पर इनकी कीमत पता चलती है।

५१०२. कल एक इंसान रोटी माँगकर ले गया और करोड़ों कि दुआयें दे गया, पता नहीं चला कि गरीब वो था कि मैं।

५१०३. नौ गोपनीय–१. आयु, २. धन, ३. घर का भेद, ४. मंत्र, ५. मैथुन, ६. औषधि, ७. तप, ८. दान, ९. अपमान।

५१०४. बोलते हैं तो बरस जाते, चुप रहते हैं तो तरस जाते हैं लोग।

५१०५. ज्ञानी वही होता है जो शत्रु में भी गुण देखता है।

५१०६. अपनी वृद्धि और विनाश जीभ के अधीन है।

५१०७. खिल सको तो फूल की तरह, बिखर सको तो खुशबू की तरह, जल सको तो दीप की तरह, ढल सको तो धातु की तरह, मिल सको तो दूध में पानी की तरह मिलना।

५१०८. अज्ञानी मनुष्यों का जीवन शून्य है, बन्धुहीन की दिशाएँ शून्य हैं, पुत्र रहित का घर शून्य है और दरिद्र का सर्व शून्य है।

५१०९. दिल में आने का रास्ता तो होता है लेकिन जाने का नहीं होता है, इसलिए आदमी दिल से जब भी जाता है तो, दिल तोड़कर ही जाता है।

५११०. राष्ट्र धर्म, राज धर्म, समाज धर्म की अपेक्षा आत्मधर्म श्रेष्ठ होता है।

५१११. इज्जतदार लोग ही इज्जत करते हैं क्योंकि जिसके पास जो होता है वही देता है।

५११२. क्रोध का एक कदम जीवन को बहुत पीछे धकेल देता है।

५११३. मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके उतना नहीं थकता जितना क्रोध और चिंता से एक क्षण में थक जाता है।

५११४. क्रोध और आँधी शांत होने के बाद पता चलता है कि कितना नुकसान हुआ है।

५११५. हम समझौता चाहते हैं जब हम गलत होते हैं परन्तु हम न्याय चाहते हैं जब दूसरे गलत कर रहे होते हैं, कितना अजीब है हमारे मन का तर्क।

५११६. साहस भय पर विजय प्राप्त करने का नाम है।

५११७. आप दुनिया के लिए एक व्यक्ति हैं पर परिवार के लिए पूरी दुनिया आप ही हैं, अतः परिवार का ख्याल रखें।

५११८. मोतियों को बिखर जाने की आदत होती है, धागे की जिद पिरोये रखने की होती है।

५११९. शख्सियत अच्छी होगी तभी दुश्मन बनेंगे, वरना बुरे की तरफ देखता कौन है।

५१२०. कुछ पाने के लिए कुछ खोना नहीं, बोना पड़ता है।

५१२१. अकेले बोलने से सच्ची, अच्छी और उपयोगी बातें अहंकार के कीचड़ में सनकर अग्राह्य हो जाती है।

५१२२. खुद को बिखरने मत देना कभी किसी हाल में, गिरे मकान की ईंटें तक ले जाते हैं लोग तेरे गिरने में तेरी हार नहीं क्योंकि तू आदमी है अवतार नहीं।

५१२३. णमोकार मन्त्र के प्रभाव से सर्प ने नागेन्द्र पद, अञ्जन चोर ने मोक्ष पद और सुभग ग्वाला ने अभीष्ट फल प्राप्त किया था। (ज्ञानार्णव)
५१२४. बैठना भाईयों के बीच चाहे वैर हो, खाना माँ से चाहे जहर हो।
५१२५. वैभव से सुख शान्ति नहीं मिलती अपितु दुःख अशान्ति मिलती है, सुख शान्ति तो संतोष और समता से मिलती है।
५१२६. चमत्कार को नहीं चारित्र को नमस्कार करो, क्योंकि विषय वासना से बचने वाला ही वीर होता है।
५१२७. जहाँ नदी गहरी होती है वहाँ जल प्रवाह शान्त और गम्भीर होता है उसी प्रकार महान् लोग भी शांत व गम्भीर होते हैं ।
५१२८. दो किनारों के बीच बहने वाला जल ही सागर तक पहुँचता है।
५१२९. अतीत से सीखो, वर्तमान का सदुपयोग करो, भविष्य के प्रति आशावान रहो।
५१३०. किसी के मन की बात निकालना हो तो उत्तर मत देना, पहले पूरी सुनना बीच में टोकना नहीं क्योंकि समूह में अनुभव मिलता है एकान्त में आनंद मिलता है।
५१३१. अज्ञान दूर होने से मनोविकार दूर होता है।
५१३२. बुरा करने वाले का भी भला करना परमार्थ की वृत्ति है।
५१३३. अध्यात्म शास्त्र चित्त को चारित्र में स्थिर करा देता है।
५१३४. श्रुतज्ञान का अभ्यास किए बिना तपश्चरण करने वाला अज्ञानी संसार के सुखों में अनुरक्त रहता है।
५१३५. आकांक्षा अन्तरंग आनन्द को समाप्त कर देती है।
५१३६. यदि कम पुण्य में अधिक आकांक्षा करोगे तो विषय-कषाय के मच्छर और हीन भावना की ठंड लगेगी, जीवन नरक न हो इसलिए जितनी चादर उतने पैर फैलाओ।
५१३७. निराशावादी को हर अवसर कठिनाई दिखाई देता है, आशावादी को हर कठिनाई अवसर दिखाई देता है।
५१३८. निराकुल होने के लिए आशा का त्याग आवश्यक है।
५१३९. जो आशा के दास होते हैं वे संसार के दास होते हैं, आशा जिनकी दासी होती है, संसार उनका दास होता है।
५१४०. रास्ते आसान हों तो समझना किसी का आशीर्वाद मेरे साथ है।
५१४१. किसी गरीब की झोली में १ रुपया डाला तब पता चला कि मँहगाई के इस दौर में आज भी 'दुआएँ' कितनी सस्ती हैं और दुआएँ असंभव को संभव बनाती हैं।
५१४२. माता-पिता के मुख से निकला आशीर्वाद जन्म-जन्मान्तर तक रक्षा करता है।
५१४३. आप किसी को सुधार पाओ या नहीं पर अपनी आँखों को अवश्य सुधार लेना।

५१४४. सूर्य की तपन से नदी का नीर और स्वार्थ की तपन से आँखों का नीर सूख जाता है।

५१४५. अगर इंसान शिक्षा के पहले संस्कार, व्यापार के पहले व्यवहार, भगवान् से पहले माता-पिता को पहचान ले तो जिन्दगी में कोई कठिनाई न आये।

५१४६. जलना छोड़ो प्रकाशित होना सीखो, प्रकाश में दुनिया प्रसन्न होती है, जलने वाला तो राख होने से पहले ही खोटी स्मृति रूपी दुर्गन्ध छोड़ जाता है। इतिहास कहता है उधार और वरदान नहीं देना चाहिए।

५१४७. उपकार करना पर स्वयं कष्टमय मत होना और पापी का उपकार करना सर्प को दूध पिलाना है।

५१४८. उपकार भूलने वाला पापी और उपकारी का भी अपकार करने वाला महापापी होता है।

५१४९. तात्कालिक लाभ की पूर्ति में जीना कलियुग के लोगों की सोच है।

५१५०. कामी को माँ से नहीं स्त्री से और मिथ्यादृष्टि को धर्म से नहीं धन से प्रेम होता है।

५१५१. उत्साह सफलता का अमोघ अस्त्र है इसके बिना कुछ भी हासिल नहीं होता है।

५१५२. कार्य के बिना कारण न होने का मतलब बिना बीज के फल का नहीं मिलना है।

५१५३. तीव्र कषाय में मरीचि समवसरण छोड़कर भाग गया था मन्द कषाय में शेर की पर्याय में श्रावक बन गया था।

५१५४. कषायोदय में चारित्र नहीं होता है, चारित्र के सद्‌भाव में निराकुल सुख शान्ति की शक्तियाँ प्रकट होती है।

५१५५. खुशी से सहन किया कष्ट, कष्ट मालूम नहीं पड़ता है।

५१५६. सबको खुश करके आप मुनि नहीं बन सकते हैं और मुनि बनकर आप सबको खुश नहीं कर सकते।

५१५७. मति सुधारने से गति सुधर जाती है और भ्रष्ट मति से भ्रष्ट गति होती है।

५१५८. आप अपनी गलतियों पर अच्छे वकील हैं और दूसरों की गलतियों पर बहुत अच्छे न्यायाधीश बन जाते हैं पर स्वयं पर सत्य न्याय करने की कृपा करें।

५१५९. गन्दगी तो पैसे वालों ने फैलाई वरना गरीब तो सड़कों से फटी थैलियाँ तक उठा ले जाते हैं।

५१६०. गुण सर्वत्र पूजे जाते हैं, जन्म में क्या रखा है? रेशमी वस्त्र कीड़ों से उत्पन्न होता है, कमल कीचड़ में जन्म लेता है, नीलकमल गोबर से उद्भूत होता है, अग्नि काष्ठ से उत्पन्न होती है, मणि सर्प के फण से उपलब्ध होती है और गोरोचन गाय के पित्त से प्रकट होता है फिर भी गुणों के कारण मान्य हैं।

५१६१. जिस गुणस्थान का भेष है तदनुरूपभाव भी होना चाहिए।

५१६२. घर तो मधुमक्खियों का स्थान है, यदि छत्ते से एक मक्खी टूटी तो फिर सब गिरती हैं।

५१६३. चाह रहित मनुष्य का हृदय कोमल होता है, चाह वाले का कठोर होता है।

५१६४. जिस घर में उल्लू या कबूतर आने लगें, तो वह घर रहने के लायक नहीं रहता है क्योंकि उन उल्लू कबूतर जैसे परिणाम घर वालों के होने लगते हैं।

५१६५. कितनी भी विपरीतता आये, पर आप विचलित मत होना क्योंकि लोगों का काम ही इतना है कि आपको निर्बल कर दें, संकट आते ही इसलिए हैं कि आप निर्बल हो जाओ, लोग आलोचना भी करेंगे कि आप निर्बल हो जाओ, पर आप निर्बल मत होना आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।

५१६६. जोक खून को और चिंता बुद्धि को चूस लेती है।

५१६७. चेहरा आपके अन्तःकरण के भावों को बता देता है। वैरागी का चेहरा अलग, कामी का अलग और रागी का चेहरा अलग दिखता है जन्म लेना और देना पशु भी जानते हैं, पर इनके चक्र से छूटना केवल मनुष्य ही जानता है।

५१६८. साबुन शारीरिक मैल व ज्ञान मानसिक मैल दूर करता है अतः स्नान की भाँति प्रतिदिन ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

५१६९. ज्ञानी अपने से बड़े ज्ञानी के समक्ष अपना ज्ञान लुटाता नहीं उनका ज्ञान लूटना चाहता है।

५१७०. ज्ञान शून्य वैराग्य अन्दर राग को जन्म देता है।

५१७१. जिस ज्ञान का असर हमारे चारित्र पर नहीं होता है, वह ज्ञान हमारे कुछ काम का नहीं है।

५१७२. पानी कीचड़ भी करता है और उसको साफ भी करता है उसी प्रकार ज्ञान जब अहंकार की धूल के साथ होता है तो कीचड़ करता है और चारित्र के साथ होता है तो भगवान् बनाता है।

५१७३. आज समय विपरीत है, तपस्वी की भी ज्ञान के बिना कोई कीमत नहीं होती है।

५१७४. संसार में ज्ञान से बड़ा सुख नहीं है और अज्ञान से बड़ा कोई दुःख नहीं है।

५१७५. ज्ञानी छुपके बैठता है लेकिन ज्ञान का प्रकाश उसे जाज्वल्यमान कर देता है।

५१७६. ज्ञानी सुनता समझता अधिक है, बोलता कम है। जिन्दगी जीने मिली मात्र सोचने नहीं।

५१७७. जिन्दगी तेरे ख्वाब भी कमाल के हैं, तू गरीबों को उन महलों के स्वप्न दिखाती है, जिसमें अमीरों को नींद नहीं आती है।

५१७८. जिन्दगी में कई मुश्किलें आती हैं और आदमी जरा सी बात में घबराता है।
न जाने हजारों काँटों के बीच रहकर भी एक फूल रोज कैसे मुस्कुराता है ॥

५१७९. दिन की शुरूआत में हमें लगता है कि जिन्दगी में पैसा बहुत जरूरी है, पर दिन ढलने पर हमें पता चलता है कि जिन्दगी में शान्ति सुकून जरूरी है।

५१८०. जरूरत के अनुसार जिंदगी जियो अपेक्षाओं के अनुसार नहीं क्योंकि जरूरत तो भिखारियों की भी पूरी हो जाती है और अपेक्षायें बादशाहों की भी अधूरी रहती हैं।

५१८२. मैं जिन्दगी में हर किसी को अहमियत देता हूँ क्योंकि जो अच्छे होंगे वो साथ देंगे और जो बुरे होंगे वो सबक देंगे।

५१८३. जीवन एक पुष्प है और सबसे प्रेम करना उसका रस है 'योगी न बनो पर उपयोगी अवश्य बनो'।

५१८४. जीवन कितना ही बड़ा हो पर समय की बर्बादी से बहुत छोटा हो जाता है।

५१८५. आपके जीवन में आजादी नहीं है तो आप उस शरीर की तरह हैं जिसमें से आत्मा गायब है।

५१८६. ऐसे जियो कि दूसरे आपसे जीना सीखें।

५१८७. दूसरों के अधिकारों की सुरक्षा करना मनुष्य के जीवन का सबसे अच्छा अंत है।

५१८८. जीवन वही श्रेष्ठ है, जहाँ जीना भारभूत न हो, जीने में प्रसन्नता हो।

५१८९. जीवन में हानि-लाभ का पैमाना दुःखी-सुखी होना है। यदि दुःखी हुए तो हानि हुई, दुःखी नहीं हुए तो हानि नहीं हुई समझना चाहिए।

५१९०. जिसे तनाव में डालना हो, उसे जिम्मेदारियाँ सौंप दो। खाली गाड़ी आवाज ज्यादा करती है व भरी शान्त निकल जाती है, ऐसे ही कोई ज्यादा बोले तो उसे समझाओ मत, जिम्मेदारी सौंप दो वह अपने आप शान्त हो जायेगा।

५१९१. खरीद सकते उन्हें तो अपनी जिन्दगी देकर भी खरीद लेते।
मगर कुछ लोग कीमत से नहीं किस्मत से मिलते हैं ॥

५१९२. कितनों की तकदीर बदलनी है तुम्हें,
कितनों को रास्ते पर लाना है तुम्हें।
अपने हाथों की लकीरों को मत देखो,
इन लकीरों से भी आगे जाना है तुम्हें ॥

५१९३. अजीब है न हमारे देश का संविधान, गीता पर हाथ रखकर कसम खिलाई जाती है सच बोलने के लिए, मगर गीता पढ़ाई नहीं जाती सच का ज्ञान कराने के लिए।

५१९४. अगर दुनिया में मेहनत की कदर होती तो गधा ज्यादा इज्जतदार होता।

५१९५. भोजन की अपेक्षा कषाय और वासना का उपवास कठिन है।

५१९६. दुःखी रहने के दस कारण-१. देरी से सोना-देरी से उठना, २. लेन-देन का हिसाब न रखना, ३. किसी के लिए कुछ न करना। ४. स्वयं की बात को ही सत्य मानना। ५. किसी का भी विश्वास न करना। ६.कोई भी कार्य समय पर न करना, ७. बिना कारण झूठ बोलना, ८. बिना माँगे सलाह देना ९. बीते हुए सुख को बार-बार याद करना। १०. हमेशा अपने लिए सोचना।

५१९७. अपने दुःख दूर हो सकते हैं, यदि दूसरे के दुःखों से तुलना कर लें तो।

५१९८. किसी इंसान को दुःख देना इतना आसान है जितना समुद्र में पत्थर फेंकना, पर कोई यह नहीं जानता कि वो कितनी गहराई तक गया होगा?

५१९९. दुःख भोगने वाला तो भविष्य में सुखी हो सकता है लेकिन दुःख देने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता हैं।

५२००. जो किसी को दुःख नहीं देता है उसके दर्शन मात्र से भी पुण्य होता है।

५२०१. मुसीबत की बेला में आँसू मत ढुलकाइए अपनी श्रेष्ठ बुद्धि का उपयोग कीजिए भाग्य के ९९ द्वार बंद होने के बावजूद भी आपके लिए कोई न कोई द्वार अवश्य खुला होगा।

५२०२. ज्ञानी बनना दुःख का कारण नहीं अभिमानी बनना दुःख का कारण है।

५२०३. अंधा वह नहीं जिसकी आँख फूट गयी अपितु अंधा वह है जो अपने दोष ढकता है।

५२०४. विदेशों में विद्या धन है, संकटों में बुद्धि धन है, पर लोक में धर्म धन है और शील सर्वत्र धन है।

५२०५. ज्ञान से बड़ा धन और चारित्र से बड़ा धर्म कोई नहीं है।

५२०६ धर्म कामधेनु है, धर्म चिन्तामणि है, धर्म स्थिर रहने वाला कल्पवृक्ष है और धर्म अविनाशी निधि है।

५२०७. धर्म श्रवण से पापों का नाश, पुण्य, बुद्धि, स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

५२०८. भय, उदारता, कीर्ति, आशा और लज्जा से पंचमकाल में धर्म की प्रवृत्ति होती है।

५२०९. कोई भी कठिनाई क्यों न हो, अगर हम सचमुच में शान्त रहें तो समाधान मिल जायेगा।

५२१०. निद्रा के समय मुख से ताम्बूल, शय्या से स्त्री, ललाट से तिलक और सिर से पगड़ी का त्याग कर देना चाहिए।

५२११. बड़ी गहरी आती है नींद जब पता हो कि कोई समय से जगा देने वाला है।

५२१२. असाता के उदय में नींद नहीं आती है, साता के उदय में नींद आती है, मुनि तो निद्रा जय के लिए तपस्या करते हैं। सहज निद्रा आ रही है तो आपका पुण्य है और निद्रा न आये तो स्वाध्याय करो, मंत्र जाप करो पर चिंता न करो। पाप के उदय में नींद न आये तो पुण्य तो किया जा सकता है।

५२१३. अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों का ध्यान रखना चाहिए।

६५. प्रशंसकों से निज को ना आँको

५२१४. पूर्व की ओर मुख करके भोजन करें, दक्षिण की ओर मुख करके मल त्याग करें, उत्तर की ओर मुख करके मूत्र विसर्जन करें, पश्चिम की ओर मुख करके पैर धोयें।

५२१५. सूर्य की धूप से सन्तप्त व्यक्ति यदि तुरन्त स्नान करता है तो उसकी दृष्टि मन्द पड़ जाती है और सिर में पीड़ा होती है।

५२१६. घर में फूटे बर्तन और टूटी खाट रहने से धन की हानि होती है।

५२१७. जो व्याकरण शास्त्र के अध्ययन बिना पदार्थों का विवेचन करता है वह चन्द्रमा का चुम्बन करना चाहता है, सूर्य को ग्रहण करना चाहता है, समुद्र को भुजाओं से तैरना चाहता है।

५२१८. प्रेम से बढ़कर प्रार्थना नहीं है।

५२१९. जो व्याकरण के अध्ययन बिना सभा के बीच बोलना चाहता है वह वन में मदोन्मत्त हाथी को मृणाल सूत्र से बाँधना चाहता है।

५२२०. प्रार्थना और ध्यान इंसान के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि प्रार्थना में भगवान् भक्त की बात सुनता है और ध्यान में भक्त भगवान् की बात सुनता है। प्रार्थना प्राणों से होती है और ध्यान भावों से होता है। प्रार्थना प्रभु के साकार रूप की होती है और ध्यान प्रभु के निराकार रूप का होता है। प्रार्थना में भक्त भगवान् से जुड़ जाता है और ध्यान से भक्त भगवान् बन जाता है। गृहस्थ जीवन जीने वालों के लिए प्रार्थना और साधु जीवन जीने वालों के लिए ध्यान परमात्मा को पाने का सरल उपाय है।

५२२१. छोटे से भी पाप का यदि प्रायश्चित्त नहीं किया तो वह एक दिन पहाड़ जैसे विशाल चारित्र को भी नष्ट कर देता है, जैसे छोटा सा बट का बीज यदि मुख से भी फूँक दें तो उड़ जायेगा लेकिन यदि वह अंकुरित होकर वृक्ष बना तो पहाड़ को भी फोड़ देता है।

५२२२. भेषधारी साधु को, गुरु को, ब्राह्मण को, राजा को, स्त्री को, मूर्ख को, बालक को और सर्प को पंडितजन कुपित नहीं करते हैं। समाधि निष्परिग्रही की होती है।

५२२३. यदि आपने ख्याति चाही तो नामकर्म की प्रकृति को ही माँगा अतः आप मुमुक्षु नहीं हैं।

५२२४. ब्रह्मचर्य के बिना मोह नष्ट नहीं होता, मित्र के बिना दुःख, सूर्य के बिना अन्धकार, सन्तोष के बिना लोभ, पथ्य के बिना रोग, पुण्य के बिना दुःख नष्ट नहीं होता है पुण्य हीन को वस्तु मिलने पर भी सुख प्राप्त नहीं होता किन्तु जो पुण्यवान होता है उसे जंगल में भी सुख/सम्मान प्राप्त होता है।

५२२५. बुद्धि का फल तत्त्व विचार, शरीर का फल व्रत धारण, धन का फल पात्र दान और वाणी का फल मनुष्यों में प्रीति उत्पन्न करना है।

५२२६. जैसे शादी का फल पुत्र है, शास्त्र का फल शान्ति है, सम्पत्ति का फल दान है, लक्ष्मी का फल कीर्ति है, श्रम का फल धन है वैसे ही ज्ञान का फल वैराग्य है, वैराग्य का फल दीक्षा और दीक्षा का फल मुक्ति है।

५२२७. बड़ा वह होता है जो छोटों को मिला लेता है, बड़ा वह नहीं होता जो छोटों को छोड़ देता है, समुद्र वह होता है जो अनेक छोटी नदियों को अपने में समा लेता है।

५२२८. मीठे वचन से मित्रता, विनय से गुण, दान से यश, अभ्यास से विद्या, उदारता से विश्वास, श्रृंगार से अनुराग, संसर्ग से प्रेम, उद्यम से लक्ष्मी, न्याय से राज्य, लोभ से मोह, क्रोध

से अपराध और सेवा से सम्मान बढ़ता है।

५२२९. डोर लम्बी हो तो मतलब यह नहीं कि पतंग ऊपर तक जायेगी उड़ाने का तरीका आना चाहिए, दौलत ज्यादा होने का मतलब सफल जीवन नहीं, जीने का तरीका आना चाहिए।

५२३०. इस तरह न कमाओ की पाप हो जाये, इस तरह न गमाओं की कर्ज हो जाये, इस तरह न खाओ की मर्ज हो जाये, इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाये, इस तरह न चलो कि देर हो जाये, इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाये।

५२३१. छोटे लोग पैसों की बात करते हैं, बड़े लोग समय की बात करते हैं, महान् लोग बात ही नहीं करते वो सिर्फ लिखते हैं।

५२३२. ढाईद्वीप सिद्धक्षेत्र है यहाँ पाप न करें।

५२३३. दूसरों को भी सुनेंगे तो कुछ नया सीखने मिलेगा।

५२३४. लोगों के लिए आप तब तक अच्छे हो जब तक आप उनकी उम्मीदों को पूरा करते हो और आपके लिए लोग तब-तक अच्छे हैं जब तक आप उनसे कोई उम्मीद न रखें।

५२३५. क्षुद्र बातें क्षुद्र मस्तिष्क को प्रभावित करती है।

५२३६. बुराई कितनी भी बड़ी क्यों न हो अच्छाई के सामने छोटी लगती है।

५२३७. जिस दिन आपको यह पता चलेगा कि नेकी करने से शान्ति मिलती है तो आप बुरा काम करना छोड़ देंगे।

५२३८. अकल कितनी भी तेज हो नसीब से जीत नहीं सकती बीरबल कितना भी अकलमन्द क्यों न था कभी बादशाह नहीं बन पाया था।

५२३९. विनयपूर्वक किया हुआ श्रुत का अध्ययन, यदि प्रमादवश भूल जाता है तो भी भविष्य में केवलज्ञान प्राप्त कराता है।

५२४०. ज्ञान का भूषण क्षमा है।

५२४१. जो विकारी होते हैं वे भिखारी होते हैं और जो निर्विकारी होते हैं वे भिक्षु होते हैं।

५२४२. जो खाने में विवेक नहीं रखते वे मरने के बाद चींटी बनते हैं क्योंकि चींटी दुनिया में सर्वभक्षी हैं, जो मिश्री से लेकर मांस तक सब खाती है, उसकी कषाय इतनी तीव्र होती है कि यदि वह चिपक जाये तो प्राण दे देंगी पर छोड़ती नहीं है।

५२४३. चन्द्रनाड़ी में भोजन करने से बीमारी बढ़ती है, अतः सूर्य नाड़ी में भोजन और चन्द्र नाड़ी में भजन करना चाहिए।

५२४४. जो काँसे के बर्तन में भोजन करता है उसकी आयु, बुद्धि, यश और बल की वृद्धि होती है।

५२४५. पश्चिम दिशा में मुख कर भोजन करने से रोग होते हैं, पूर्व या उत्तर में मुखकर भोजन

करें, दक्षिण दिशा में मुख करके भोजन करने से शीघ्रमरण होता है।

५२४६. जैसे मधुर दूध को नींबू की बूँद खराब कर देती है, वैसे ही भगवान् आत्मा को भोगों की बूँद विकृत कर देती है।

५२४७. मल-मूत्र वमन आदि के समान निन्दनीय मधु सेवन, जब भोजन में पड़ी हुई मक्खी को देखकर व्यक्ति उस भोजन को सेवन नहीं करता तो फिर मधुमक्खियों के घृणित वमन को कैसे खा सकता है?

५२४८. महान् स्थान पर बैठकर आदमी महान् नहीं होता बल्कि महान् आदमी जहाँ बैठ जाता है वह स्थान महान् बन जाता है।

५२४९. हर व्यक्ति को भगवान् सुबह से दो रास्ते दिखाता है-१. उठिये और मनचाहे सपने पूरे कीजिए, २. सोते रहिये और मन चाहे सपने देखते रहिए।

५२५०. भगवान् सबके घर जाकर प्रेम नहीं दे सकता इसलिए उसने माँ बनाई, इसी तरह सबके घर जाकर सजा नहीं दे सकता इसलिए पत्नि बनाई है।

५२५१. मोक्ष जाना है तो मुनि बनकर मौन रहो, जैसे तीर्थंकर मुनि बनकर मौन हो जाते हैं। भोजन जल्दी वही पकता है जिस पर ढक्कन रखा होता है, जितना ढक्कन बंद रखोगे उतनी वाष्प बनेगी, उतनी ऊर्जा संचित होगी, उतने जल्दी मोक्ष में गमन होगा। मौन से धर्म और यश की वृद्धि होती है।''

५२५२. जहाँ न सम्मान हो, न आजीविका हो, न बन्धुजन हो, न अपने धर्म की रक्षा हो, न धर्मात्मा, न दानी, न परोपकारी, न गुणवान हों और न विद्या प्राप्ति का साधन हो, न राजा हो अथवा बहुत राजा हों, जहाँ स्त्री राजा हो या बालक राजा हो या मूर्ख राजा हो वहाँ नहीं रहना चाहिए।

५२५३. रिश्ते खून के नहीं एहसास के होते हैं, अगर अहसास हो तो अजनबी भी अपने और अगर अहसास न हो तो अपने भी अजनबी होते हैं।

५२५४. इंसान इसलिए मायूस होता है क्योंकि वह परमात्मा को राजी करने के बजाय लोगों को राजी करने में लगा रहता है।

५२५५. भगवान् की नजरों में वो इंसान बड़ा नहीं जो करोड़ों रुपये कमाता है बल्कि वो इंसान बड़ा है जो करोड़ों के दिलों पर राज करता है।

५२५६. इंसान सुखी होने के लिए घर बदलता है, कपड़े बदलता है, गाड़ी, मोबाइल नम्बर, पता और पता नहीं क्या-क्या बदलता है फिर भी वो सुखी नहीं हो पाता क्योंकि वो अपना स्वभाव नहीं बदलता है। खुद की नजरों में ईमानदार बनो।

५२५७. पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है तो भगवान् बन जाता है और इंसान प्रतिदिन मंदिर जाता है फिर भी पत्थर दिल बना रहता है।

५२५८. जो दारिद्र से पीड़ित होकर भी कभी विषयासक्ति को छोड़ने में समर्थ नहीं हैं, वे अधम हैं।

५२५९. पापों का प्रायश्चित और हितकारी धर्म करने में बिल्कुल भी विलम्ब न करें।

५२६०. विषय वासना, बुरे विचार शत्रु हैं तथा दया, दान, दीक्षा, धर्म कार्य का निषेध करने वाले लोग शत्रु हैं।

५२६१. प्रमाद आलस अनुत्साह ने आपको आगे नहीं बढ़ने दिया है अतः इन्हें छोड़े।

५२६२. सर्वाधिक धारा प्रवाही वक्ता अथवा सर्वाधिक उपयुक्त तार्किक सदैव न्याय पूर्ण विचारक नहीं होते हैं।

५२६३. प्रसिद्धि चाहने वाले की आत्मसिद्धि नहीं हो सकती है।

५२६४. प्रशंसा का रस परमात्मा के रसपान में साधक नहीं बाधक है।

५२६५. प्रशंसा से ज्ञानी का विकास होता है और अज्ञानी का विनाश होता है।

५२६६. प्रशंसा की भट्टी में अच्छे-अच्छे पिघल जाते हैं।

५२६७. मनुष्य की सबसे बड़ी विडम्बना उसे झूठी तारीफ सुनकर बर्बाद होना तो पसंद है, पर सच्ची आलोचना सुनकर सम्भलना पसंद नहीं होता है।

५२६८. सच्ची प्रशंसा वही है जो पीठ पीछे होती है।

५२६९. उन्हीं चीजों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें खुद हासिल नहीं कर सकते हैं।

५२७०. प्रशंसा भी कभी-कभी व्यक्ति को महान् बना देती है।

५२७१. निर्बल के बल राम, जो किसी की गुलामी नहीं करना चाहता, उसे ईश्वर की गुलामी करनी चाहिए।

५२७२. पर के निर्णय पर चलना पराधीनता है।

५२७३. हे भगवान् यदि मुझे कुछ बनाना ही है तो शून्य बना दे ताकि जिससे भी जुड़ जाऊँ वो दस गुना बढ़ जाये।

५२७४. कभी आप दूसरों के लिए भगवान् से कुछ माँग कर देखे, तुम्हें अपने लिए कुछ माँगने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

५२७५. गुरु आशीर्वाद देने में तब गूँगे रहते हैं, जब हमारा हृदय उनकी वाणी सुनने में बहरा रहता है।

५२७६. हजार मूर्खों की अपेक्षा एक पंडित श्रेष्ठ होता है।

५२७७. इतिहास साक्षी है कि आज तक जितने महापुरुष उपहास को प्राप्त हुए हैं, वे सब धन, धरती और स्त्री के कारण पवित्र यश पताका को नष्ट करके गये हैं।

५२७८. पिता की मौजूदगी सूरज की तरह होती है, सूरज गर्म जरूर होता है अगर न हो तो अँधेरा छा जाता है।

५२७९. ब्रह्मचर्य के बिना आत्मशुद्धि असंभव है।

५२८०. बुराई नौका में छिद्र के समान है वह छोटी हो या बड़ी एक दिन नौका को डुबो देती है। हमारा व्यवहार और शब्द शत्रु और मित्र बनाते हैं।

५२८१. आलसी, अज्ञानी, अविवेकी व्यक्ति ही कहते हैं कि भाग्य से अधिक और समय से पहले नहीं मिलता, जबकि वैज्ञानिक युग में जीने वाले पुरुषार्थी पुरुष कहते हैं समय से पहले भाग्य से अधिक मिलता है, आज किसान समय से पहले भाग्य से अधिक फसल पैदा करते हैं, बांझ स्त्री भी संतान सुख प्राप्त कर सकती हैं, यहाँ तक पुरुष स्त्री और स्त्री पुरुष बन सकते हैं।

५२८२. दूसरों के बारे में भाव बिगाड़ने से स्वयं का भव बिगड़ता है।

५२८३. भाग्य देखो! कुछ पढ़े लिखे नौकरी कर रहे हैं और कुछ अनपढ़ राजा बनकर राज्य कर रहे हैं।

५२८४. वैराग्य तपस्वी का आभूषण है।

५२८५. हर अक्षर मंत्र है गीत भी मंत्र है और गाली भी मंत्र है, मंत्र का तात्पर्य प्रभावित कर देना है, यदि आपने किसी मुस्कुराते व्यक्ति को गाली दी तो वह भी रोने लगता है और यदि रोते व्यक्ति की प्रशंसा की तो वह प्रसन्न हो जाता है, मंत्र अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषीकरण, मारण आदि।

५२८६. मन को वश में करने का अर्थ है आकांक्षाओं को भौतिक प्रवृत्तियों से मोड़कर आत्मिक उद्देश्यों में नियोजित करना।

५२८७. तीर्थंकर भगवान् ने अपनी माँ के १६ स्वप्न साकार कर दिये तो आप माँ-बाप का एक स्वप्न पूरा करो बुढ़ापे में उनकी सेवाकर उनके ऋण से मुक्त हो जाओ।

५२८८. मध्यस्थ मनुष्य सभी को प्यारा होता है।

५२८९. व्रतों में प्रशम गुण प्रधान है।

५२९०. समुद्र खारा, चन्द्रमा कलंकित, सूर्य तीक्ष्ण, मेघ चपल, आकाश शून्य, कामधेनु पशु, कल्पवृक्ष काष्ठ, चिन्तामणि पाषाण है अतः सज्जनों की समानता किससे हो? अर्थात् सज्जन इन सबसे भी श्रेष्ठ होते हैं।

५२९१. विकल्प मिलेंगे बहुत मार्ग भटकाने के लिए, संकल्प एक ही काफी है मंजिल तक जाने के लिए। अगर निगाहें हों मंजिल पर और कदम हों राहों पर तो ऐसी कोई राह नहीं जो मंजिल तक न ही जाती है।

५२९२. अनुचित कार्यारंभ, आत्मीय जन से विरोध, बलिष्ठों से ईर्ष्या, स्त्रियों पर विश्वास ये ४ मृत्यु के द्वार हैं।

५२९३. जिसकी होनहार बिगड़ चुकी है, मरण नजदीक है उसे वीतराग भगवान् के चरण दिखाई

नहीं देते, स्वयं की नासिका भी नहीं दिखती है।

५२९४. मंजिल मिल ही जायेगी भटकते हुए ही सही, गुमराह तो वो होते हैं जो घर से निकलते ही नहीं हैं। आज रोटी के पीछे भागता हूँ तो याद आता है कि मुझे एक रोटी खिलाने के लिए माँ मेरे पीछे भागती थी।

५२९५. बूढ़े माँ-बाप की आँखें घर का वैभव नहीं पारिवारिक एकता देखकर खुश होती हैं।

५२९६. यदि आपने नरक के दुःखों को नहीं देखा है, तो तिर्यंच गति के दुःखों को देख लो, तन पर छुरी चल रही है, तन को छीला जा रहा है, फिर भी मुख से आवाज नहीं निकाल पा रहा है, अपने आपको बचा भी नहीं सकता है, ये सब मायाचारी का परिणाम है।

५२९७. मुनि शापानुग्रह में समर्थ होते हैं अतः उनका अपमान दोनों लोको में दुःखदायी होता है।

५२९८. मौत को छोड़कर शेष के लिए 'कल' का ख्याल अवश्य आता है कि 'कल' क्या होगा, परीक्षा चार दिन की पर पाठ्यक्रम तो १२ महीने का, जज का फैसला आधा घंटे का पर १२ साल लड़ना पड़ता है, मंजिल छोटी पर रास्ता लम्बा होता है इसी तरह मौत चाहे एक पल की घटना है पर उसे सुधारने के लिए जिन्दगी भर सावधानी रखनी पड़ती है, संभव है, बिना पढ़े सिर्फ नकल करके कोई विद्यार्थी परीक्षा में पास हो जाए, रिश्वत देकर अदालत के चक्कर से बच जाए किन्तु बिना जागे मौत नहीं सुधर सकती, अतः जीवन में याद रखो शुभ कार्य आज अभी इसी समय और अशुभ कार्य फिर कभी किसी समय।

५२९९. मौत से बचने का शानदार तरीका है दूसरों के दिलों में जिन्दा रहना सीख लो वरना मर तो इंसान तभी जाता है जब याद करने वाला कोई न हो।

५३००. डॉक्टर मुख पर पट्टी बाँधकर शल्यक्रिया करता है उसी प्रकार आप भी दूसरों की रक्षा करो अपनी सुरक्षापूर्वक।

५३०१. आप अपनी दो चीजों से रक्षा करो-एक कामना दूसरी कामिनी।

५३०२. नीति से रहित नेता, विनय से रहित शिष्य, शील रहित साधु, शान्ति से रहित साधक, पुण्य रहित आत्मा और धन रहित गृहस्थ कुछ भी नहीं है।

५३०३. संसार में धन, गुणों से उदार, सुन्दर, दीर्घायु, सम्यक् ज्ञान से सहित और प्रधान पद आदि दिन में भोजन करने वाले प्राप्त करते हैं।

५३०४. रास्ते कहाँ खत्म होते हैं जिन्दगी के इस सफर में, मंजिल तो वही है जहाँ इच्छाएँ रुक जायें।

५३०५. राजनैतिक उन्नति के लिए पहले सामाजिक उन्नति आवश्यक है।

५३०६. जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं, पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना जरूरी है। 'याद करने से रिश्ते मजबूत हो जाते हैं।'

५३०७. पात्रता के बिना न संसार में कोई रिश्ता है और न इसके बिना अध्यात्म क्षेत्र में कोई रास्ता है।

६६. हम बिना रोये, गम भुलाना जानते हैं

५३०८. कभी उसको नजर अन्दाज ना करो, जो आपकी बहुत परवाह करता हो, वरना आपको किसी दिन एहसास होगा कि पत्थर जमा करते-करते आपने हीरे को गँवा दिया है।

५३०९. आपकी सोच देखो—बेटी ससुराल में खुश है तो आप खुश होते हैं और बहु ससुराल में खुश है तो आपको खराब लगता है, दामाद बेटी की मदद करें तो आपको अच्छा लगता है और बेटा बहू की मदद करें तो जोरू का गुलाम कहा जाता है, बेटी जींस पहने तो खुश होते हैं कि मॉडर्न फैमिली है और बहु जींस पहने तो उसे बेशर्म कहते हैं, बेटी के ससुराल में अकेले काम करना पड़े तो सास खराब है कि मेरी बेटी थक जायेगी और बहू सारा दिन अकेले काम करे फिर भी कामचोर है, बेटी की सास और ननद काम न करे तो गुस्सा आता है और सब अपने घर में बहू की मदद न करे तो सही लगता है, बेटी की ससुराल वाले ताना मारे तो अच्छा नहीं लगता, स्वयं बहू को ताना मारो तो सही लगता है, बेटी को रानी बनाकर रखने वाली ससुराल चाहिए और स्वयं को बहू काम वाली चाहिए, लोग यह क्यों भूल जाते है कि बहू भी किसी के घर की बेटी है, वो भी तो अपने माता-पिता भाई-बहन दोस्तों को छोड़कर आयी है आपके साथ नया जीवन शुरू कर रही है।

५३१०. क्षत्रिय को सम्मान से, ब्राह्मण को भोजन से, वैश्य को द्रव्य देकर और शूद्र को डाँट कर वश में किया जाता है।

५३११. जो काम वासना के वश में नहीं है, उसे कामिनी की कीमत नहीं होती है।

५३१२. गुरु को विनय, प्रशंसा और सेवा से, प्रभु को भक्ति अथवा ध्यान से, लोभी को धन से, बच्चों को प्रेम से, बड़ों को विनय और सम्मान से, पत्नि को प्रशंसा से, पति को समर्पण से, माँ-बाप को सेवा से वश में किया जाता है।

५३१३. मित्र को निष्कपट व्यवहार से, शत्रु को नीति बल से, राजा को कार्य से, ठाकुर को आदर से, स्त्री को अत्यधिक प्रशंसा से, रसिक को रस से, सबको शील से वश करें।

५३१४. जमीन, स्त्री, स्वर्ण, सम्पत्ति आदि के लोभ रूपी सर्प को ज्ञान वैराग्य रूपी औषधि और मंत्र से वश में किया जा सकता है।

५३१५. अस्त्र-शस्त्र तो अंग में लगता है पर वचन सर्वांग में लगता है।

५३१६. दिमाग में विचारों का ट्राफिक जितना कम होगा, जिन्दगी का सफर उतना ही आसान होगा।

५३१७. एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियाँ बनती हैं, लेकिन एक तीली लाखों पेड़ों को जला देती है, इसी प्रकार एक नकारात्मक विचार या शक आपके लाखों सपनों को जला सकता है इसलिए सकारात्मक ही सोचें।

५३१८. विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता के समान हित में नियुक्त करती है, स्त्री के समान हर्षित करती है, भाई का समस्त कार्य करती है, आजीविका चलाती है, अनुपम कीर्ति फैलाती है और लोक में प्रियता उत्पन्न करती है।

५३१९. प्यार और विश्वास कभी मत खोना क्योंकि प्यार हर किसी से नहीं होता और विश्वास हर किसी पे नहीं होता है।

५३२०. डरपोक स्वभाव वालों का, क्रोधी का, धूर्त का, आलसी का कृतघ्न का, दूतों का, नास्तिक का और पुरुषत्व के अभिमान का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।

५३२१. उनका विश्वास मत करो जिनकी भावनाएँ वक्त के साथ बदल जाएँ, विश्वास उनका करो, जिनकी भावनाएँ वैसी ही रहें, जब आपका वक्त बदल जाये तब भी।

५३२२. आज की औरत आश्रय देने पर सिर चढ़ जाती है, आदर करने पर खुशामद समझती है, विश्वास करने पर हानि पहुँचाती है, प्यार करने पर आघात करती है, उपदेश देने पर मुड़कर बैठती है, उपकार करने पर अस्वीकार करती है और क्षमा करने पर दुर्बल समझती है।

५३२३. यह सच है कि किस्मत और पत्नी भले ही परेशान करती है लेकिन जब साथ देती है तो जिन्दगी बदल देती है।

५३२४. वक्त और दौलत में इतना अन्तर है कि आपको पता होता है कि दौलत कितनी है पर यह पता नहीं होता है कि वक्त कितना बाकी है।

५३२५. जहाँ बात-बात पर सफाई देनी पढ़े वे रिश्ते कभी गहरे नहीं होते हैं।

५३२६. मत फेंक पत्थर पानी में उसे भी कोई पीता है, मत रहो यूँ उदास जिन्दगी में तुम्हें देखकर भी कोई जीता है।

५३२७. एक दिन हम सब एक दूसरे को सिर्फ यही सोचकर खों देंगे कि वो हमें याद नहीं करते तब हम उन्हें याद क्यों करें।

५३२८. हम फूल तो नहीं पर महकना जानते हैं, बिना रोये गम भुलाना जानते हैं, लोग खुश रहते हैं हमसे क्योंकि हम बिना मिले ही रिश्ते निभाना जानते हैं।

५३२९. जो जैसा है उसे वैसा ही अपना लो रिश्ते निभाना आसान हो जायेगा।

५३३०. गलत फहमियों के सिलसिले आज इतने हैं कि हर ईंट सोचती है दीवार मुझ पर टिकी है।

५३३१. रिश्ते भी अब हो गये ज्यों दैनिक अखबार, आज पढ़ लिया प्रेम से कल फिर बेकार।

५३३२. हर रिश्ते की हकीकत दिखाकर खुदा बन्दे से पूछता है बता मेरे सिवा कौन है तेरा।

५३३३. रिश्ते, आज रोटी की तरह हो गये जरा सी आँच तेज क्या हुई कि जल भुनकर खाक हो जाते हैं।

५३३४. जितना बड़ा लक्ष्य उतना बड़ा कष्ट मार्ग आपको चुनना है।

५३३५. मांसाहार उनके लिए है जो लड़ेंगे और मरेंगे, शाकाहार उनके लिए है जो सुखमय जीवन जियेंगे एवं विचारशील बनेंगे। खून से कपड़ा व मन दोनों गंदे होते हैं। जरा विचार करो जब आपका अपना सगा सम्बन्धी समय पर घर नहीं आता, तो आप सिर पीट-पीट कर रोते हो, तो फिर दूसरे जीवों को मार कर उनका मांस कैसे खाते हो? क्योंकि कहीं पर उनके बच्चे अपने माँ-बाप का अथवा माँ-बाप अपने बच्चों का इन्तजार करते होंगे, अरे! जब आपको जरा सा काँटा चुभता है तो आप उसके दर्द में चीखते हो, तो फिर आपका हृदय दूसरे प्राणी के प्राण लेते समय क्यों नहीं चीखता है?

५३३६. वक्त कब क्या रंग दिखायें हम नहीं जानते वरना जिस 'राम' को राज्य मिलना था वनवास न मिलता।

५३३७. अनादर के अत्यधिक स्थानभूत पुरुषों के बालों की सफेदी को देखकर तरुण स्त्रियाँ शीघ्र ही दूर चली जाती हैं।

५३३८. कामी-क्रोधी जल्दी बूढ़े होते हैं।

५३३९. लोभी को धन से, अभिमानी को विनम्रता से, मूर्ख को मनोरथ पूरा करके और पंडित को सच बोलकर वश में किया जाता है।

५३४०. जो निज को वश में कर लेता है वो परवश नहीं होता है।

५३४१. जो अपने को वश में कर लेता है दुनिया उसके वश में हो जाती है।

५३४२. वर्तमान परिणति हमारे भूत और भविष्य को बता देती है।

५३४३. भूत को याद कर भविष्य को खराब मत करो सिर्फ वर्तमान में जियो।

५३४४. जैसे सुबह गाय को खिलाई गयी घास शाम को दूध में वृद्धि कर देती है, वैसे ही वर्तमान में किया गया पुण्य भविष्य में सुखों की वृद्धि कर देता है।

५३४५. जो मनुष्य प्रायश्चित्त, आयुर्वेद, ज्योतिष और धर्म निर्णय की बात शास्त्र के बिना कहता है, उसे ब्रह्म घाती कहते हैं।

५३४६. समझदार लोग पहले सामने वाले की बात सुनते हैं फिर अपना मौन खोलते हैं।

५३४७. आपके सामने चींटी भी पानी में गिर जाये तो आप अँजुली बनाकर निकालते हैं, फिर आप अपने को वासना के गड्ढे में क्यों गिराते हैं, आपकी दया कहाँ सो गयी है?

५३४८. वासना का भूत साधक के दुर्भाग्य को करने वाला होता है।

५३४९. विषयी जीव पहले प्राप्ति की आकांक्षा में दुःखी होता है फिर सेवन करने के बाद तृप्ति

न होने से दुःखी फिर विषयों के अन्तरंग से छूट न पाने से दुःखी, फिर विषयों के सेवन के पाप के पश्चाताप में दुःखी होता है।

५३५०. विषमता मानवता की खोज करा देती है।

५३५१. जब एक के विरोध से भी मनुष्य विपत्ति को प्राप्त होता है तो बहुतों के साथ विरोध होने पर क्या कहना? देखो चीटियाँ बड़े बलशाली सर्प को खा जाती है। निर्बल लोगों का समुदाय भी शक्ति शाली होता है, जैसे सार हीन तृणों से बनाई गयी रस्सी से हाथी भी बाँधा जाता है।

५३५२. मनुष्य की वास्तविक पूँजी धन नहीं विचार हैं।

५३५३. पवित्र विचार मानव जीवन की श्रेष्ठ शक्ति है।

५३५४. विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।

५३५५. विचार का दीपक बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है।

५३५६. विचार में जो अनेकान्त है वही वाणी में स्याद्वाद है।

५३५७. आचरण रहित विचार कितने ही अच्छे क्यों न हो उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए, अच्छे विचार समय, श्रम व धन की बचत करते हैं।

५३५८. पत्थर से भी भारी होता है खोटा विचार जो हमें ले डूबता है।

५३५९. शुद्ध विचारों से शुद्ध और सत्य कार्य उत्पन्न होते हैं, सत्य कार्यों से शुद्ध जीवन प्राप्त होता है और शुद्ध जीवन से परमानन्द प्राप्त होता है।

५३६०. चाहे कोई बुरा करे या अच्छा पर आप किसी के प्रति बुरे विचार नहीं लाना यही आपकी अच्छाई है।

५३६१. एक बार अशुभ विचार आने पर पूरा शरीर विषैला हो जाता है।

५३६२. जो योग्यता के अभाव में पद प्राप्त कर लेते हैं, वे धर्म और राज्य का विनाश करते हैं क्योंकि दूसरों की बात सुनकर मानता है, दूसरे के अनुसार चलता है उसका विनाश निश्चित है।

५३६३. जो विद्या आपको आलस, अनीति, असंयम की ओर धकेले उसे प्राप्त करने की अपेक्षा अशिक्षित रहना अच्छा है।

५३६४. विश्वास तर्क से ज्यादा अच्छा मार्गदर्शक है, तर्क तो बस कुछ ही दूर जा सकता है किन्तु विश्वास की कोई सीमा नहीं होती हैं।

५३६५. खोई हुई चीजें तो अक्सर वहाँ मिल जाती हैं जहाँ वे खोई हों, पर विश्वास वहाँ कभी नहीं मिलता जहाँ खोया हो।

५३६६. भरोसा खुद या खुदा पर हो तो ताकत बन जाता है, दूसरों पर या भाग्य पर हो तो कमजोरी बन जाता है।

५३६७. विशुद्ध परिणामी नियम से संयम धारण करता है।
५३६८. दुर्जनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि अग्नि मलयगिरि चन्दन को भी जलाती है।
५३६९. दूसरों की बातें सुनकर अपनी विशुद्धि को मत खोओ।
५३७०. ये अत्यन्त स्नेही है, ऐसा समझकर क्षुद्र मनुष्यों में विश्वास मत करो क्योंकि सरसों का स्नेह तेल भी आँसू गिरा देता है।
५३७१. स्त्रियों का, नदियों का, राजकुल का, सर्प का, सींग वाले प्राणियों का, बड़े-बड़े नख वाले जीवों का, शस्त्र धारण करने वाले का, समान बल वाले का और शत्रु का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।
५३७२. यह आयु 'वायु' के समान है, भोग मेघ के समान हैं, इष्टजनों का संयोग नष्ट हो जाने वाला है, शरीर पापों का घर है और विभूतियाँ बिजलीवत् चंचल हैं।
५३७३. स्त्री का चारित्र और पुरुष का भाग्य किसी के द्वारा नहीं जाना जाता है।
५३७४. जीव तब तक ही सुखी रहता है जब तक स्नेह नहीं करता, स्नेह रूपी बंधन से बद्ध जीव को तो पद-पद पर दुःख ही होता है।
५३७५. जहाँ स्नेह है वहाँ दुःख है, जीव मन को प्रिय लगने वाले जितने सम्बन्ध बनाता है उसके हृदय में उतनी ही शोक रूपी कीले गड़ जाती है।
५३७६. विकास के लिए स्वतंत्रता प्रथम सोपान है।
५३७७. हम मरने के बाद स्वर्ग जाएँ, यह महत्त्वपूर्ण नहीं, पर मरने के पहले स्वर्ग बना जाएँ यह महत्त्वपूर्ण है।
५३७८. किसी का सरल स्वभाव उसकी कमजोरी नहीं होता संसार में पानी से सरल कुछ भी नहीं होता किन्तु उसका तेज बहाव बड़ी-बड़ी चट्टान के टुकड़े कर देता है।
५३७९. जो मिठास गन्ने और शक्कर में नहीं होती वह स्वभाव में होती है।
५३८०. अच्छा महसूस करो क्योंकि क्षमता का स्रोत स्वयं में है।

६७. मैं जो बंधन में पड़ा, इसका दोषी कौन?

५३८१. यदि भाव अच्छे हैं तो सदैव भाव मंगल आपके पास है और यदि भाव बुरे हैं तो मांगलिक द्रव्य, क्षेत्र, काल कुछ नहीं कर लेंगे। राजा श्रेणिक के भाव बुरे हुए तो यशोधर मुनिराज के गले में मरा सर्प डाला और नरक गति का बंध किया और जब भाव मंगल हुए तो उन्हीं से क्षमा माँगने लगा, मन में सोचने लगा अपनी गर्दन काटकर इनके चरणों में चढ़ा दूँ तब प्रायश्चित्त होगा, लेकिन उन्हीं मुनिराज के समझाने से मोक्षपुरी का रास्ता मिल गया, वही मुनिराज मंगल भूत हो गये, भाव परिवर्तन से भव परिवर्तन रुक गया।
५३८२. अविवेकी प्राणी धन के कमाने में तन को खराब कर लेता है फिर तन को सही करने के

लिए धन को नष्ट कर देता है और मरते दम तक धन का सुख नहीं ले पाता है कभी अस्पताल में जाकर मरीज को देखना जो डॉक्टर से कहता है जितना पैसा चाहिए हो ले लो पर कुछ क्षण का जीवन बचा लो जबकि उसने पूरी पर्याय की कीमत ही नहीं की, अधिकतर समय गप्पों में, पेपर पढ़ने में, टी.व्ही. देखने में, बोलने में खो दिया, पूछा तो कहा समय पास कर रहे हैं।

५३८३. काँच को आइना बनाने के लिए उसके पीछे 'पारा' चढ़ाया जाता है, तभी तो जिसको आइना दिखाओ उसी का पारा चढ़ जाता है।

५३८४. जैसे नदी बांधों से बँध जाती है तो सागर से नहीं मिल पाती है, वैसे ही नर किसी नारी से बंध जाता है तो सिद्धों से नहीं मिल पाता है। संयोग बाँध देता है और बँधा जीव परतंत्र होता है और परतंत्रता ही सबसे बड़ा दुःख है, अतः निर्बन्ध हो, स्वतंत्र हो, समुद्र बनो, सिद्धों से मिलो।

५३८५. संसार स्वारथ का है। जब तक पुण्य है, तब तक सब आपके साथ हैं, जैसे ही पुण्य क्षीण हुआ कि क्षणभर में सब छोड़कर चले जायेंगे। नारायण श्रीकृष्ण के वंश को देखो, जिसके यहाँ एक भाई तीर्थंकर हो, एक भाई बलभद्र हो, कामदेव हो, क्या वैभव होगा? क्या आनंद होगा? फिर भी उस क्षण को देखो जब द्वारिका जल रही होगी, वह क्षण कैसा होगा? कौन किसे बचा पाया?

५३८६. इस संसार में मोह के समान कोई शत्रु नहीं, क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं, ज्ञान के समान कोई सुख नहीं और काम के समान कोई व्याधि नहीं है।

५३८७. संसार रूपी कटु वृक्ष के केवल दो फल ही अमृत के समान हैं, पहला सुभाषितों का रसास्वाद और दूसरा अच्छे लोगों की संगति।

५३८८. इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएँ हैं, एक दुःख और दूसरा श्रम। दुःख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता है।

५३८९. इन चार संज्ञाओं की तो सीमा है ये तो शरीर के कमजोर होने पर शान्त हो जायेंगी, पर नाम की संज्ञा इतनी खोटी है कि अंतिम श्वासों तक सताती है कि मेरा नाम हो जाये। इस जीव ने नाम के लिए जितना किया, उसका सौवाँ अंश भी धर्म के लिए किया होता तो नाम हो ही जाता और कर्मातीत हो जाता।

५३९०. जिन्दगी के पाँच सच–१. माँ के सिवा कोई वफादार नहीं। २. गरीब का कोई मित्र नहीं। ३. लोग अच्छी सीरत (स्वास्थ्य) को नहीं अच्छी सूरत को महत्त्व देते हैं। ४. इज्जत सिर्फ पैसे की है इंसान की नहीं। ५. इंसान जिस व्यक्ति को दिल से चाहता है वो ही व्यक्ति दुःख देता है।

५३९१. जिन्दगी का सच एक ये भी है–एक गरीब रोज सुबह जल्दी निकलता है पेट भरने के लिए और एक अमीर आदमी रोज सुबह घर से जल्दी निकलता है पेट कम करने के लिए।

५३९२. पहले का रावण बोल रहा है–क्या मेरे बाद किसी ने कोई घोर अपराध नहीं किया इस सारी पृथ्वी पर? हजारों रावण खुलेआम घूम रहें हैं फिर बार–बार कब तक मेरा पुतला जलाते रहोगे?

५३९३. दूसरों को जानना बुद्धिमानी है स्वयं को जानना सच्ची बुद्धिमानी है। दूसरों पर राज करना ताकत है, स्वयं पर राज करना सच्ची ताकत हैं।

५३९४. दान गरीबी को खत्म करता है, अच्छा आचरण दुःख को मिटाता है, विवेक अज्ञान को मिटाता है, जानकारी डर खत्म करती है।

५३९५. इंसान और बकरे की आदत एक जैसी होती है, दोनों ही मरते दम तक, मैं–मैं करने से नहीं हटते हैं।

५३९६. कभी भी सफलताओं को दिमाग में और असफलता को दिल में जगह नहीं देना चाहिए, क्योंकि सफलता दिमाग में घमंड और असफलता दिल में हीनता पैदा करती है।

५३९७. आपका सम्मान उन शब्दों में नहीं जो आपकी उपस्थिति में कहे गये बल्कि उन शब्दों में है जो आपकी अनुपस्थिति में कहे गये हैं।

५३९८. इंसान जीवन में दो चेहरे कभी नहीं भूलता–१. जो कष्ट के समय साथ दे, २. जो कष्ट के समय पर साथ छोड़ दे।

५३९९. मुख का आभूषण प्रियवचन, वक्षस्थल का प्रेम, नेत्रों का जिनदर्शन, हाथों का पात्रदान, पैरों का आभूषण तीर्थ वंदना हैं, साधु का आभूषण समता है।

५४००. जो विनम्र है और नित्य ही ज्ञान, तप आदि से वृद्धों की सेवा करता है। उसके चार चीजों की वृद्धि होती है आयु, विद्या, यश और बल।

५४०१. संसार में वीतराग जैसा देव नहीं, निर्ग्रन्थ जैसा गुरु नहीं, अहिंसा जैसा धर्म नहीं, णमोकार जैसा मंत्र नहीं, अभय जैसा दान नहीं, सत्य जैस तप नहीं, ब्रह्मचर्य जैसा व्रत नहीं और संतोष जैसा सुख नहीं है।

५४०२. गरीबी को दान से हटाएँ, पुराने कपड़े स्वच्छ रखें, कुरूपता अच्छे व्यवहार से हटायें।

५४०३. आपको यदि देने में खुशी होती है तो आपको कोई उदास नहीं कर सकता है और यदि आपको सिर्फ लेने में खुशी होती है तो आपको कोई हमेशा खुश नहीं रख सकता है।

५४०४. सुखी जीवन की तीन बातें–अतीत की चिंता मत करो, भविष्य पर विश्वास मत करो और वर्तमान को व्यर्थ मत जाने दो।

५४०५. तीन को कभी नहीं भूलना–१. मुसीबत में मदद करने वाले को २. मुसीबत में साथ

छोड़ने वाले को, ३. मुसीबत में डालने वाले को।

५४०६. चार का गौरव न करो–ज्ञान देकर, दान देकर, सम्मान देकर, अपने को बेदाग रखकर।

५४०७. देशाटन, पण्डित जनों के साथ मित्रता, उत्तम स्त्री, राज सभा में प्रवेश और अनुकूल अनेक शास्त्रों का अवलोकन ये पाँच चतुराई प्राप्त करने के मूल कारण हैं।

५४०८. सुखी रहने के ६ सूत्र–यदि पूजा कर रहे हो तो विश्वास करना सीखो, बोलने से पहले सुनना सीखों, खर्च करना है तो कमाना सीखो, अगर लिखना है तो सोचना सीखो, हार मानने से पहले फिर से कोशिश करना सीखों, मरने से पहले खुलकर जीना सीखों।

५४०९. विद्या के समान नेत्र नहीं, सत्य के समान तप नहीं, राग के समान दुःख नहीं, त्याग के समान सुख नहीं, चिन्ता के समान संताप नहीं, शान्ति के समान आनंद नहीं, तृष्णा के समान रोग नहीं, संतोष के समान सुख नहीं।

५४१०. सफलता के तीन मंत्र–दूसरों से ज्यादा जानकारी प्राप्त करें, दूसरों से ज्यादा मेहनत करें, दूसरों की अपेक्षा कई गुना कम उम्मीद करें।

५४११. दुनिया की हर वस्तु ठोकर लगने से टूट जाती है परन्तु एक 'सफलता' ही है जो ठोकरें खाकर मिलती है।

५४१२. असफलता के कारण–योजना का अभाव, अनुभव का अभाव, अनुशासन का अभाव, उत्साह की कमी, आत्म विश्वास की हीनता, नकारात्मक सोच, अनुत्साह प्रवृत्ति, विपरीत संगति, अनेकों से शत्रुता, अपनों के प्रति द्रोह, अवसर पर चूक, ईर्ष्यालु स्वभाव, पुरुषार्थ और भाग्य की हीनता, रीति–नीति की अनभिज्ञता, समय सूचकता का अभाव, दूसरों को दोष देने की आदत इत्यादि।

५४१३. सफलता के सूत्र–व्यवहार कुशलता, मिलनसार प्रवृत्ति, मधुरवाणी, विनयशीलता, प्रसन्न मुद्रा, समय की पकड़, क्षमाशीलता, लक्ष्य निर्धारण, आशावादी सोच, स्वयं को प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति, उपकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें, प्रशंसकों को पूँजी की तरह आदर दें, किसी की निंदा न करें, सबका सहयोग लेने की कला, प्रबल पुरुषार्थ करें, सही योजना बनायें, धैर्य रखें, बुद्धि का सही उपयोग करें, रीति–नीति से काम लें, आत्म विश्वास से भर जायें, अशुभ विचारों की उपेक्षा करें इत्यादि।

५४१४. यात्रा पर निकला हूँ लोग बार–बार पूछते हैं, कितना चलोगे, कहाँ तक जाना है? मैं मुस्कुराकर आगे बढ़ जाता हूँ किससे कहूँ मुझे इस बार जाना नहीं, अपितु अपने तक आना है।

५४१५. साधु के नाम में भी सागर जुड़ा है अतः कभी अपनी मर्यादा नहीं खोना, जैसे सागर अपने अंदर के कचरे को किनारे पर फेंक देता है किन्तु अपने अन्दर के मोती को पास में रखता है वैसे ही आप भी अपने अंदर के विषय–कषाय को किनारे कर देना पर अपनी

विशेषताओं को अपने मुँह से कहकर बाहर मत फेंकना।

५४१६. जितने ऊँचे पद पर पहुँच जाओ, उतना सँभल कर रहना पढ़ता है, ऊँचे भवनों पर सँभल कर चढ़ना क्योंकि जितने ऊँचे से गिरोगे उतनी ज्यादा चोट आयेगी, ऐसे ही जब प्रसिद्धि बढ़ने लग जाये तो सावधानी का जीवन जीना प्रारम्भ कर देना क्योंकि फिसलने के अवसर बढ़ जाते हैं।

५४१७. इतिहास कहता है कि कल सुख था, विज्ञान कहता है कि कल सुख होगा, लेकिन धर्म कहता है कि अगर मन सच्चा और दिल अच्छा है तो हर रोज सुख है।

५४१८. 'सुख' आपको उतना मिलेगा जितना आपने पुण्य किया है, लेकिन शान्ति उतनी मिलेगी जितनी आप की घर वाली चाहेगी।

५४१९. सपेरे के शब्द सुन कालिया नाग निर्विष हो नाचने लगता है तब गुरु/प्रभु के शब्द सुन मिथ्यात्व क्यों दूर नहीं हो सकता है।

५४२०. संसार में रहना चाहते हो तो माँ बनकर रहना और संसार से दूर होना चाहते हो तो महात्मा बनकर रहना सीख लो, बस क्षमा आपके रोम-रोम में बस जायेगी, जिससे जीवन स्वर्ग बन जायेगा, मन में कुछ भी आये उसे वचन से बोलना मत तो सारी दूरियाँ समाप्त हो जायेगी।

५४२१. कोई भी क्षेत्र मंगल अमंगल नहीं होता, अतः किसी भी क्षेत्र को दोष मत दो जिस क्षेत्र में किसी को मंगल होता है उसी क्षेत्र में किसी को अमंगल होता है, हस्तिनापुर में पाण्डवों को विजयश्री मिली उन्हें मंगलभूमि रही और कौरवों के लिए अमंगल रही, पुण्यात्मा के लिए प्रत्येक क्षेत्र मंगल है।

५४२२. कोई भी काल अमंगल नहीं होता, जिस काल कहीं मंगलाचरण होता है उसी काल में कहीं शोक छाया होता है इसलिए यदि आपका पुण्य है तो प्रति क्षण मंगल है और पुण्यहीन को प्रतिक्षण अमंगल है।

५४२३. मृत्यु और मोक्ष में अन्तर–सांस खत्म हो जाये और तमन्ना बाकी रह जाये तो 'मृत्यु' और सांस बाकी रहे और तमन्ना समाप्त हो जाये तो 'मोक्ष'।

५४२४. कुछ वृक्षों में काँटे होते हैं, जो कहते हैं संभलकर चलो, तो कुछ घड़ियों में भी कांटे होते है जो कहते हैं समय पर चलो।

५४२५. कोई अच्छा 'इंजीनियर' मिले तो बताना मुझे इंसान को इंसान से जोड़ने वाला पुल बनवाना है, बहते आँसुओं को रोकने वाला बांध बनवाना है और सच्चे सम्बन्धों में पड़ती दरारों को भरवाना है।

५४२६. मुस्कुराकर देखो तो सारा संसार रंगीन नजर आता है वर्ना भींगी पलकों से तो आइना भी धुँधला नजर आता है।

५४२७. भीड़ में समाधि नहीं होती, समाधि में भीड़ हो सकती है।

५४२८. समाधि के समय कोई साधक से पूछता है कि किसी से मिलना है क्या? वह कहता है सबको जाने दो मुझे जिससे मिलना था वो मिल चुका है। ''सम्बन्धों में ही बंध है सम्बन्धों में ही कष्ट है।''

५४२९. सम्बन्ध व्यक्ति को छोटा बना देते हैं, जबकि स्वभाव विराट बनाता है।

५४३०. लोग अब व्यवहारिक नहीं व्यवसायिक हो गये हैं अतः सम्बन्ध उनसे ही मधुर होते हैं जिनसे 'मुनाफा' ज्यादा मिलता है।

५४३१. 'मैं' में आनंद है 'मेरे' में दुःख और तनाव है।

५४३२. एक सिक्का हो तो आवाज नहीं आती जैसे ही दो हुए कि ऐसे ही घर में दो हुए कि महाभारत शुरू हो जाती है।

५४३३. संयोग के वियोग में आँसू गिराने पड़ते हैं।

५४३४. खोटे भाव रखने वाले का मरण बिगड़ जाता है, जिससे भविष्य में दुःख ही दुःख भोगना पड़ता है, अतः हमेशा अच्छे भाव रखने से अच्छे भव मिलते हैं।

५४३५. संसार में सभी जीवों को शरीर की अपेक्षा मानसिक संताप अधिक होता है जो सही ज्ञान प्राप्त करने से खत्म हो जाता है।

५४३६. जो संसार पर राज्य करता है वह संसार में भटकता है और जो स्वयं पर राज्य करता है वह सिद्धालय में बसता है।

५४३७. संसार में कोई भी द्रव्य नया नहीं है, प्रत्येक को अनंतों बार अपना शरीर बनाया है, प्रत्येक का अनंतों बार भोग उपभोग किया है।

५४३८. जो जीते जी छोड़ देते हैं वे साधु और जो जोड़-जोड़ कर मर जाते हैं, वे संसारी होते हैं।

५४३९. जगत् के लोग कहते हैं कि शत्रु को शत्रु की भाँति देखो, पर जैन संस्कृति कहती है कि शत्रु को भी मित्र की भाँति देखो।

५४४०. सभ्यता का स्वरूप-सादगी, अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता।

५४४१. भूल होना 'प्रकृति' है मान लेना 'संस्कृति' है सुधार लेना 'प्रगति' है।

५४४२. अगर आप यह मान लेते हैं कि आपके पास पर्याप्त है तो आप सच्चे धनवान हैं।

५४४३. जो संन्यासी नहीं होते हुए भी संन्यासी का वेश धारण कर अपनी आजीविका चलाता है, वह वास्तविक संन्यासी के पाप को प्राप्त होता है और मरकर तिर्यंच योनि में जन्म लेता है।

५४४४. चारों गतियों में भ्रमण कराने वाली आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चारों संज्ञाएँ हैं।

५४४५. यह सच है कि अनाथाश्रम में बच्चे गरीबों के मिलते हैं और वृद्धाश्रम में बुजुर्ग अमीरों के मिलते हैं।

५४४६. पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है, फिर विरोध होता है और फिर उसे स्वीकार कर लिया जाता है।

५४४७. एक बनो, नेक बनो, जुड़ गये तो शेर भी घबरायेगा, टूट गये तो गीदड़ भी डरायेगा।

५४४८. बचपन में घड़ी नहीं थी पर समय था, आज घड़ी है पर समय नहीं है।

५४४९. माता-पिता, गुरु, अधिकारी और मूर्ख से विवाद न करें।

५४५०. ईमानदारी से पेट भर सकता है पेटी नहीं, शुद्ध छने जल से बर्तन भर सकता है समुद्र नहीं।

५४५१. जीवन में छोटी-छोटी बातों से आनंद लेना चाहिए क्योंकि बड़ी-बड़ी बातें तो कुछ ही होती हैं।

५४५२. जो शरीर की अनुकूलता-प्रतिकूलता में राजी नाराज होता है, वह हड्डी-मांस का भक्त है भगवान् का नहीं।

५४५३. उत्तम विद्या से युक्त के लिए विदेश क्या है? मधुरभाषी को पराया कौन है ?

५४५४. जिस जीव के अशुभ दिन आने होते हैं उसके अशुभ विचार और आचरण में हीनता हो जाती है।

५४५५. शांत, सरल स्वभावी का सब अनुशरण करते हैं।

५४५६. पानी का रस शीतलता है, भोजन का रस आदर पूर्वक भोजन कराने में है, बन्धु का रस अनुकूलता है और मित्र का रस निश्छल प्रवृत्ति करना है।

५४५७. धैर्य ही सब प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला है।

५४५८. जहाँ व्यक्ति की आहार, मैथुन, परिग्रह संज्ञा की पूर्ति होती है वह स्थान व्यक्ति को प्रिय लगता है।

५४५९. जंगल में रहकर महलों की चाह की अपेक्षा महलों में रहकर जंगल का चिंतन भी अच्छा है।

५४६०. उतनी विषयों के सेवन में सुखानुभूति नहीं होती, जितनी विषयों की कल्पना करने में सुखानुभूति होती है।

५४६१. सँभल के रहना पाप का उदय आते देर नहीं लगती, बुझते दीपक की लौ भी अंत समय तेज हो जाती है, यदि कोई गलत काम करने के बाद भी बढ़ता नजर आता है तो समझ लेना कि बुझने के दिन आ रहे हैं जैसे मरने के कुछ समय पहले प्राणी स्वस्थ हो जाता है।

५४६२. धर्म में बुद्धि रहे अधिक पढ़ने से क्या? जीवों पर दया रहे अधिक दानों से क्या ? मन शान्त रहे असंतुष्ट रहने वाले कुपुरुषों से क्या प्रयोजन है?

५४६३. कार्य को सफल करने के लिए संकल्प आवश्यक है।

५४६४. तीन चीजें जीवन के सबसे बड़े खजाने हैं—१. जीवन में सरलता, २. संघर्ष और कठिन

समय में धैर्य, ३. दूसरों के प्रति सहानुभूति।

५४६५. स्वार्थ, निद्रा और बुरी संगत से बचो।

५४६६. तीन सबसे बड़ी उपाधि–१. शहीद, २. वीर, ३. संत।

५४६७. चार अंधे कामांध, क्रोधान्ध, लोभान्ध, मदान्ध।

५४६८. अधिक हँसना मूर्खता है।

५४६९. सदाचारी व्यक्ति सर्वत्र विश्वास का पात्र होता है।

५४७०. सम्पत्ति छल-कपट से नहीं लाभान्तराय के क्षयोपशम से मिलती है।

५४७१. समझदार की जुबान रक्षक और नासमझ की जुबान फाँसी बन जाती है।

५४७२. सफलता के लिए बड़ों का सम्मान करो, छोटो को स्नेह करो, ईश्वर के प्रति पूर्ण कृतज्ञ रहो और मेहनत व ईमानदारी से काम करो।

५४७३. जीवन में असली सफलता हम तभी हासिल कर सकते हैं जब हम दूसरों को सफल होने में मदद करना सीख लेते हैं।

५४७४. योग, उपयोग, संयोग तीनों निर्मल होना चाहिए।

५४७५. मौन लेकर पेपर पढ़ना, टी.व्ही. देखना या कुछ अन्य सांसारिक कार्य करना सामायिक नहीं है।

५४७६. साधक को स्त्री सबसे बड़ी बाधा है।

५४७७. जनसंपर्क साधु का शत्रु है।

५४७८. जो मोही मुनि राग के कारण मुनीम का कार्य करने लगता है उसे कभी मोक्ष नहीं मिलता है। मुनीम गिनता तो बहुत है पर उसे मिलता बहुत कम है। यश के पीछे अरहंत मुद्रा का अपयश करना माँ को वेश्या बनाने जैसा है।

५४७९. तन और वस्त्र की तरह भावों को भी साफ रखो।

५४८०. पराधीनता दुःख का स्वाधीनता सुख का कारण है।

५४८१. जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, जिसकी पत्नी उसकी इच्छा के अनुरूप व्यवहार करती हो और जिसे अपने धन पर सन्तोष हो, वह व्यक्ति सबसे सुखी है। सुखी होना है तो पर का कर्त्तापन छोड़ दें।

५४८२. भगवान् किसी का भला-बुरा नहीं करते, यदि भगवान् भला करते तो मन्दिर के द्वार पर बैठा भिखारी जीवन भर क्यों हाथ फैलाता? रोज पूजा करने वाला पुजारी क्यों निर्धन रहता ? और बुरा करते तो मंदिर मूर्ति को तोड़ने वाले क्यों महलों में सुख से रहते ? अतः सत्य यह है सुख-दुःख स्वयं के भावों से किए कर्माधीन हैं।

५४८३. वर्तमान की पर्याय के सुख दुःख मत देखो क्योंकि वह पर्याय बहुत छोटी है भविष्य के बारे में सोचो क्योंकि वह बहुत बड़ा है।

५४८४. 'सोचो साथ क्या जायेगा' सभी असफलताओं और बीमारियों का कारण नकारात्मक सोच है।

५४८५. सुन्दर वस्तु का होना भी सुन्दर शत्रु को जन्म देना है, नारायण प्रति नारायण का झगड़ा प्रारम्भ सुन्दर वस्तु से ही होता है।

५४८६. पढ़ते रहने से दिमाग को नॉलेज बढ़ाने के लिए सामग्री मिलती है, लेकिन जो पढ़ा है उसके बारे में सोचने से ही जानकारियों को अपनाया जा सकता है।

५४८७. जीवन में संकटों को सहन कर लेना, पर किसी को कठोर शब्द मत कहना क्योंकि आपके द्वारा कहा हुआ कठोर शब्द संकटों का पहाड़ खड़ा कर सकता है।

५४८८. अपने शत्रु की बातों पर सदैव ध्यान दीजिए क्योंकि आपकी कमजोरियों को उनसे अधिक कोई नहीं जानता है।

५४८९. दुश्मनों के बीच दाँतों के बीच जीभवत् रहिये।

६८. दुश्मनी मिटाने का फार्मूला

५४९०. शत्रु कौन होता है? आप जो चाहते है वो मिलता रहे तब तो ठीक, आपने जो चाहा नहीं हुआ, जिससे चाहा नहीं किया, जैसा चाहा नहीं किया, बस वही शत्रु बन गया, शत्रु कोई वस्तु नहीं सिर्फ कल्पना है। 'शरीर की रक्षा करना पर अशरीरी होने के लिए'।

५४९१. आप अपने घर ग्रन्थ जरूर रखना, यह मत सोचना की कोई पढ़ने वाला नहीं है क्योंकि हो सकता है आपके घर कोई ऐसा महापुरुष जन्म ले जो इस ग्रन्थ को पढ़कर निर्ग्रन्थ बन जाये और यदि संस्कृति पर उपसर्ग आया और जिनालय व जिनवाणी नष्ट हो गयी तो आपके घरों की जिनवाणी से जैन धर्म जयवंत हो सकेगा। क्योंकि पहले भी हमारे ग्रन्थों की छह माह तक होलियाँ जली हैं, जिनमंदिर व जिनबिम्ब तोड़े गये हैं।

५४९२. उस ग्रन्थ के पढ़ने से क्या प्रयोजन जो हृदय को कंपित न करें।

५४९३. जो शिक्षण कराने का सामर्थ्य रखता है उसे कभी सीखना नहीं छोड़ना चाहिए।

५४९४. श्रद्धाहीन का गुरु उद्धार नहीं कर सकते, जैसे श्रद्धाहीन मारीचि का परमगुरु आदिनाथ उद्धार नहीं कर पाये थे।

५४९५. हमारी ओर से सबको दस उपहार सुख, शान्ति, समृद्धि, संस्कार, स्वास्थ्य, संकल्प, सरलता, सहजता, सफलता और संयम प्राप्त हों।

५४९६. जो मनुष्य नित्य ही पूजा करने के योग्य, अनेक जीवों के द्वारा अर्जित किए जाने वाले पुण्य के कारणभूत, अंगुष्ठ प्रमाण जिनेन्द्र प्रतिमा को बनाता है वह नित्य ही बहुत भारी पुण्य को प्राप्त होता है।

५४९७. शास्त्रों में निरन्तर लगी हुई बुद्धि मुक्ति स्त्री को प्राप्त करने के लिए दूती के समान है अतः संसार से भयभीत भव्य जन शास्त्र में बुद्धि लगावें।

५४९८. कमजोर व्यक्ति से दुश्मनी ज्यादा खतरनाक है क्योंकि वह उस समय वार करता है, जब हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।
५४९९. आपके अशुभ भाव ही आपके शत्रु हैं।
५५००. दुश्मनों की मदद दिल से कीजिए क्योंकि कहते हैं बदला लेना बुजदिलों का काम है।
५५०१. शान्ति चाहिए तो अपने काम से काम रखें एवं लोक प्रियता से बचें।
५५०२. शास्त्र वही श्रेष्ठ है जो संसार सागर से पार होने की शिक्षा दे, ग्रन्थ वही नेक है जो निर्ग्रन्थ बनने की प्रेरणा दे, बाकी जो संसार से बांधे वह शास्त्र नहीं शस्त्र हैं।
५५०३. जिनवाणी बदला लेना नहीं बदल जाना सिखाती है।
५५०४. जो पुस्तकें हमें सबसे अधिक सोचने के लिए विवश करती हैं, वे हमारी सबसे अधिक सहायक होती हैं।
५५०५. कुमार्गगामी गुरु का त्याग करना चाहिए।
५५०६. वह स्थान मन्दिर है जहाँ पुस्तकों के रूप में मूक किन्तु चेतना युक्त देवता निवास करते हैं। सच्ची शिक्षा का लक्ष्य बुद्धिमत्ता के साथ चरित्र का विकास करना है।
५५०७. चाहता तो है हर रोज सुबह आपको अनमोल खजाना भेजूँ पर मेरे दामन में दुआओं के अलावा कुछ भी नहीं है, सलामत रहें आप और आपकी मुस्कुराहट, खुशी से बीतें दिन हर सुहानी रात हो, जहाँ बढ़ें कदम खुशियों की वर्षात हो।
५५०८. समस्त जीवों का उपकारी होने से तथा समीचीन धर्म की खान की वृद्धि का कारण होने से गृहस्थों के लिए जिनालय की प्रतिष्ठा के समान कोई पुण्य नहीं है।
५५०९. जहाँ चैत्यालय होता है वहाँ कितने ही गुणवान मनुष्य पूजा के द्वारा प्रतिदिन पुण्य उपार्जन करते हैं, कितने ही स्तुति करते हैं कितने ही बुद्धि मान उत्तम चंदोबा, दीप, धूप, कलश, झारी तथा घंटा आदि देकर दर्शन करते हैं तथा मुनिराजों का श्रेष्ठ आश्रय भी जिनालय होता है।
५५१०. परीषह, कषायादि के जीतने में इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने में मनुष्य की शूरवीरता है परन्तु कर्म सन्तति को बढ़ाने वाले काम के युद्ध में कोई शूरवीरता नहीं है।
५५११. दूसरों की आँखों में आँसू भरने वाले क्यों भूल जाते हैं कि उनकी भी दो आँखें हैं।

६९. साहित्य साधना का सदन है

५५१२. ज्ञान के लिए किया जाने वाला कर्म, सभी कर्मों में श्रेष्ठतम है।
५५१३. जिस व्यक्ति में कल्पना है पर विद्वत्ता नहीं, उसके पंख हैं परन्तु पैर नहीं हैं।
५५१४. शास्त्रों से विहीन घर खिड़कियों से विहीन भवन के समान है।
५५१५. जो देशों में भ्रमण करता है और जो विद्वानों के सान्निध्य में रहता है, उसकी बुद्धि जल पर पड़े तेल के समान विस्तृत हो जाती है नहीं तो जल में पड़े जमे घी के समान संकुचित रहती है।

५५१६. आयु बढ़ने से, यश फैलने से, बार-बार प्रश्नों को पूछने से, गुरु के साथ रहने से, स्वयं ही अच्छी तरह विचार करने से, अच्छे लोगों के साथ वार्तालाप करने से, मन में प्रेम भाव बढ़ाने से और अनुकूल स्थान में वास करने से मनुष्य की बुद्धि परिपक्व हो जाती है।

५५१७. अध्ययन आनन्द, अलंकरण तथा योग्यता के लिए उपयोगी है।

५५१८. अक्षरों का उच्चारण ऐसे ढंग से करना चाहिए जैसे व्याघ्री कोमल बच्चों को दाँतों से पकड़े हुए भी उन्हें गिराने और कटने से बचाती हैं।

५५१९. सौ वर्ष जीने के लिए अपने चारों ओर जवान और हँसमुख मित्र रखो।

५५२०. बिना सोचे समझे खर्च करने वाला, असहाय रहते हुए झगड़ा करने वाला एवं सब जगह व्याकुल रहने वाला पुरुष शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

५५२१. जब तक शरीर स्वस्थ और नीरोग है, जब तक बुढ़ापा दूर है, जब तक सभी इन्द्रियों में भरपूर शक्ति है, जब तक प्राण शक्ति क्षीण नहीं हुई है, तभी तक अपने आत्म कल्याण और उत्थान का प्रयत्न करते रहना बुद्धिमानी है, अन्यथा घर में आग लग जाने पर कुंआ खोदने से क्या लाभ?

५५२२. अच्छा स्वभाव शहद की मक्खी की तरह है, जो प्रत्येक झाड़ी से शहद ही निकालती है।

५५२३. मधुर स्वभाव वास्तव में एक जादू है, धन की अपेक्षा इसकी शक्ति अधिक है हीरे मणियों से बढ़कर इसका मूल्य है। मधुर स्वभाव एक सुगन्ध है, जिसका सौरभ धरती को स्वर्गीय सुरभि से भर देता है।

५५२४. चंदन घिसे जाने पर अधिक सुन्दर गंध छोड़ता है, गन्ना चूसने पर स्वादिष्ट लगता है, सोना जलाने पर सुंदर वर्ण ही रहता है, वैसे ही प्राणान्त होने पर भी उत्तम व्यक्तियों का स्वभाव विकृत नहीं होता है।

५५२५. अतिथि सत्कार से विमुख होना ही बड़ी दरिद्रता है और मूर्खो की असभ्यता को सह लेना ही बड़ी वीरता है।

५५२६. भले ही भुजाओं में बल न हो पर मस्तिष्क में ज्ञान तो होना ही चाहिए।

५५२७. बुद्धिमान पुरुष ज्ञानवान होने पर भी बिना पूछे या अन्यायपूर्वक पूछने पर किसी को कोई उपदेश न करें जड़ की भाँति चुप-चाप बैठे रहें।

५५२८. ईमानदार होना, 'दस' हजार में 'एक' के बराबर होना है।

५५२९. बड़ी से बड़ी सम्पत्ति ईमानदारी के सामने तुच्छ है।

५५३०. प्रसिद्ध होने के बजाय ईमानदार होना अधिक अच्छा है।

५५३१. दया दो तरफी कृपा है, इसकी कृपा दाता पर भी होती है और पात्र पर भी।

५५३२. शिक्षित मनुष्य अशिक्षित मनुष्यों से उतने ही श्रेष्ठ हैं, जितने जीवित मनुष्य मृतकों से श्रेष्ठ है।

५५३३. स्वभाव एक उपार्जित गुण है उसमें शिक्षा और सत्संग से सुधार हो सकता है।

५५३४. मनुष्य ने जगत् में जो कुछ सत्य और सुंदर पाया है और पा रहा है उसी को साहित्य कहते हैं।

५५३५. साहित्य, संगीत और कला में जिनकी रुचि नहीं होती ऐसे मनुष्य बिना सींग-पूँछ वाले निरे पशु होते हैं।

५५३६. जिस किसी को गम्भीर और ठोस साहित्य सेवा करनी है, उसे अपने समय की बचत करनी पड़ेगी, चाहे आगंतुकों के साथ उसे अशिष्टता का बर्ताव ही करना पड़े।

५५३७. केश श्वेत होने से कोई वृद्ध नहीं होता, जो युवा होते हुए भी अध्ययन शील है, देवगण उसी को वृद्ध श्रेष्ठ मानते हैं।

५५३८. अहंकार, क्रोध, भोग, रोग और आलस इन पाँच कारणों से व्यक्ति शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता है।

५५३९. सच्ची शिक्षा तो वह है जिसके द्वारा हम अपने को, आत्मा को, ईश्वर को और सत्य को पहचान सकें।

५५४०. जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं, हमारी सही डिग्री है–हमारा सेवाभाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता, अगर यह डिग्री नहीं मिली और हमारी आत्मा जाग्रत नहीं हुई, तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।

५५४१. शिक्षित के लिए सभी देश और सभी नगर अपने बन जाते हैं।

५५४२. साहित्य का लक्षण मनुष्यता ही है, जिस पुस्तक से यह उद्देश्य सिद्ध नहीं होता, जिससे मनुष्य का अज्ञान कुसंस्कार और अविवेक दूर नहीं होता, जिससे मनुष्य शोषण और अत्याचार के विरुद्ध सिर उठाकर खड़ा नहीं हो पाता, जिससे वह छीना-झपटी, स्वार्थ परता और हिंसा के दल-दल से उबर नहीं पाता वह पुस्तक किसी काम की नहीं है।

५५४३. ज्ञानी पुरुषों को संसार का भय नहीं होता है।

५५४४. पुस्तकालय ऐसा मंदिर है जहाँ प्राचीन संतों के सद्‌गुणों से परिपूर्ण तथा निर्भ्रान्त पाखण्ड रहित अवशेष सुरक्षित रखे जाते हैं।

५५४५. जो व्यक्ति पढ़ता है, लिखता है, सूक्ष्म निरीक्षण करता है, प्रश्न पूछता है और विद्वानों का आश्रय लेता है, उसकी बुद्धि सूर्य से कमलनियों के समान विकसित हो जाती है।

५५४६. विद्वान् पुरुष सर्वत्र आनन्द में रहता है और सर्वत्र उसकी शोभा होती है, उसे कोई डराता नहीं है और किसी के डराने पर वह डरता भी नहीं है।

५५४७. पतित अथवा पथभ्रष्ट होकर भी बुद्धिमान पुरुष पुनः उठ जाता है किन्तु मूर्ख नहीं उठ पाता है।

५५४८. आपत्ति उपस्थित होने पर जो उसका प्रतिकार कर लेता है वह बुद्धिमान है।

५५४९. कभी कोई प्रज्ञा से पार नहीं पा सकता है।

५५५०. महामति मनुष्य उच्चाभिलाषा रखकर ऊँचे से ऊँचे चढ़ता चला जाता है, जबकि नीच व्यक्ति गिरने के भय से नीचे ही नीचे चला जाता है।

५५५१. जो कायर हैं, जिसमें पराक्रम का नाम नहीं है, वही भाग्य का भरोसा करता है, बुद्धिमान लोग तो पुरुषार्थ से उत्कृष्ट पद प्राप्त करते हैं।

५५५२. मनुष्य अध्ययन से पूर्ण, वार्तालाप से तत्पर और लेखन से सटीक बनता है।

५५५३. अकेला विद्वान् लाखों मूर्खों को जीत सकता है।

५५५४. द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अधिक कल्याणकारी है।

५५५५. यदि जगत् में आलस्य रूपी अनर्थ न होता तो संसार में कौन धनी मनुष्य या विद्वान् न होता? आलस्य के कारण ही यह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी नर-पशुओं से भरी हुई है।

५५५६. जो उपदेश नहीं सुनते, वे भर्त्सना सुनने के लिए मजबूर होते हैं।

५५५७. जिस उपन्यास को समाप्त करने के बाद पाठक अपने अंदर उत्कर्ष का अनुभव करें, उसमें सद्भाव जाग उठे, वही सफल उपन्यास है।

५५५८. अज्ञानी को कर्म लिप्त करते हैं, ज्ञानी को कर्म लिप्त नहीं करते हैं, जैसे घी हथेली को लिप्त करता जिह्वा को नहीं।

५५५९. पढ़कर आनन्द के अतिरेक से आँखें यदि गीली न हो जायें तो वह कहानी कैसी?

५५६०. शास्त्र कटु औषधि के समान अविद्या रूप व्याधि का नाश करता है, काव्य आनन्ददायक अमृत के समान अज्ञान रूप रोग का नाश करता है।

५५६१. सब कुछ नष्ट करने वाला काल भी कवियों की सूक्तियों को नष्ट नहीं करता है।

५५६२. विद्वानों का उपदेश जिन्हें न तो शब्द ज्ञान है और न अर्थ ज्ञान, उनके लिए भी कर्ण प्रिय होता है।

५५६३. क्रमशः एक-एक बूँद गिरने पर कलश भर जाता है, यही रहस्य सभी विद्याओं धर्म और धन के सम्बन्ध में है।

५५६४. गुरु के मुख में स्थित विद्या गुरु की भक्ति से प्राप्त होती है।

५५६५. गुरु शिष्य को यदि एक अक्षर भी पढ़ा देता है, तो दुनिया में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जिसको देकर शिष्य ऋण रहित हो सकता है।

५५६६. अध्ययन करने वाले का मूर्खत्व और जप करने वाले का पाप नहीं रहता है।

५५६७. सभी लोग स्वभाव से ही ज्ञान चाहते हैं।

५५६८. जिस प्रकार सदा माँजा जाने वाला दर्पण निर्मल रहता है, उसी प्रकार ज्ञान अभ्यास से पुरुषों की बुद्धि निर्मल रहती है।

५५६९. इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसन्देह कुछ भी नहीं है।
५५७०. मन रूपी हाथी को वश में करने के लिए ज्ञान अंकुश के समान है।
५५७१. बुद्धिमान बनने के लिए आगामी कल तक टाल-मटोल न करें, हो सकता है कि तुम्हारे लिए कल का सूर्य कभी उदित ही न हो।
५५७२. प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन के द्वारा अधिक मनुष्य महान् बने हैं और अध्ययन केवल एकान्त में किया जाता है।
५५७३. आज पढ़ना सब जानते हैं, पर क्या पढ़ना चाहिए, यह कोई नहीं जानता है।
५५७४. जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रह सकता है।
५५७५. पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई खुशी उतनी स्थायी है।
५५७६. जो पुस्तकें तुम्हें सबसे अधिक सोचने के लिए विवश करती हैं, वे पुस्तकें तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक हैं।
५५७७. ईमानदार मनुष्य स्वभावतः स्पष्ट भाषी होता है, उसे अपनी बातों में नमक मिर्च लगाने की जरूरत नहीं होती है।
५५७८. हम संसार को गलत पढ़ते हैं और कहते हैं कि वह हमें धोखा देता है।
५५७९. पुस्तकों की कीमत रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।
५५८०. अगर आपके पास दो रुपये हैं तो एक रुपये से भोजन और एक रुपये से अच्छी पुस्तक खरीदें, भोजन जीवन देगा, अच्छी भोजन जीवन जीने की कला देगी।
५५८१. पुस्तक पास में हो तो मित्रों की कमी नहीं खटकती है।
५५८२. पुस्तकें विचारों के युद्ध में अस्त्र का काम करती है।
५५८३. यदि कोई पुस्तक पढ़ने के योग्य है तो वह खरीदने के योग्य भी है।
५५८४. सिर्फ पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता, जब तक कि उन पर मनन न किया जाये।
५५८५. पुस्तक से रहित कमरा आत्मा से रहित शरीर के समान है।
५५८६. आज के लिए और सदा के लिए सबसे बड़ा मित्र हैं अच्छी पुस्तकें।
५५८७. रात-रात भर प्रार्थना करने कि अपेक्षा एक घंटा दूसरों को ज्ञान देने में खर्च करना अधिक अच्छा है।
५५८८. वह व्यक्ति बुद्धिमान है, जो उन वस्तुओं के लिए दुःखी नहीं होता, जो उसके पास नहीं है, बल्कि उनसे प्रसन्न होता है जो उसके पास है।
५५८९. जब भाग्य अनुकूल होता है तब जिनके बारे में कुछ सोचा नहीं गया है, ऐसी सब सम्पत्तियाँ अपने आप आ जाती हैं।

५५९०. जहाँ नदी गहरी होती है, वहाँ जल प्रवाह अत्यन्त शांत व गंभीर होता है उसी प्रकार गुणवान पुरुष शांत व गंभीर होता है।

५५९१. वह लेखक सबसे अच्छा लिखता है, जो अपने पाठकों का सबसे कम समय लेकर उन्हें सबसे अधिक ज्ञान देता है।

५५९२. लेखनी तलवार से अधिक शक्तिशाली होती है।

५५९३. जिस मनुष्य का व्यवहार मधुर होता है, उसका कोई विरोध नहीं करता जो किसी से द्वेष नहीं करता, उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता है ऐसे मनुष्यों को अनेकों सुख स्वयमेव मिलते रहते हैं।

५५९४. मैले बर्तन में डाला साफ पानी भी मैला हो जाता है, वैसे ही मैले मन में अच्छे विचार भी मैले हो जाते हैं।

५५९५. संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु है, तुम्हारा अपना विचार ही शत्रु और मित्र बनाने के लिए उत्तरदायी है।

५५९६. कटा हुआ वृक्ष भी बढ़ने लगता है, क्षीण हुआ चन्द्रमा भी पुनः बढ़कर पूरा हो जाता है इस बात को समझकर संत पुरुष अपनी विपत्ति से नहीं घबराते हैं।

५५९७. विपत्ति में भी जिस हृदय में सद्ज्ञान उत्पन्न न हो, वह एक ऐसा सूखा वृक्ष है जो पानी पाकर पनपता नहीं बल्कि सड़ जाता है।

५५९८. विद्वान् की संसार में प्रशंसा होती है, विद्वान् सारे भूमंडल का गौरव है, विद्या से सभी कुछ मिल जाता है और विद्या की सभी जगह पूजा होती हैं।

५५९९. विद्वान् कभी अपशब्द का प्रयोग नहीं करता है।

५६००. ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रद्धावान होना आवश्यक है उसके साथ इन्द्रिय संयम भी, तब शीघ्र ही शान्ति की प्राप्ति होती है।

५६०१. आजकल शिक्षा तो रोटी कमाने का एक धंधा सा हो गया है, यह शिक्षा नहीं, मजदूरी है, उससे राष्ट्र की उन्नति नहीं, उलटे अवनति ही होगी।

५६०२. ऐसे माता-पिता शत्रु के समान हैं, जो अपनी संतान को पढ़ाते नहीं, उनको शिक्षित व संस्कारित नहीं करते।

५६०३. अशिक्षित बालक किसी सभा में जाने पर उपेक्षित रहता है, जैसे हंसों के बीच बगुला।

५६०४. शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास कर आत्म निर्भर बनना है।

५६०५. संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, उनमें शिक्षा सबसे बढ़कर है।

५६०६. विदेशी माध्यम के द्वारा वास्तविक शिक्षा असंभव है।

५६०७. जो अहंकारी को शिक्षा देता है उसे स्वयं शिक्षा की आवश्यकता है।

५६०८. सज्जन चाहे फटे हाल ही हो, बड़प्पन के पूरे ठाठ वाले दुर्जन से अधिक शक्तिशाली होता है।

५६०९. सच्चे आदमी को हम धोखा नहीं दे सकते क्योंकि उसकी सच्चाई हमारे हृदय में उच्च भावों को जागृत कर देती है।

५६१०. जिसका शरीर बलवान और हृष्ट पुष्ट है परन्तु जिसके मन में बुरी वासना, काम, क्रोध, लोभ, घृणा, द्वेष, वैर, हिंसा, अभिमान, कपट, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि दुर्गुण और दुष्ट विचार निवास करते हैं, वह कदापि नीरोग नहीं है, उसकी शारीरिक नीरोगता बहुत ही जल्द नष्ट हो जाती है।

५६११. स्वाभिमानी मनुष्य मर मिटता है, पर किसी के सामने दीन नहीं बनता है आग बुझ भले ही जाये, पर जीवित रहते वह ठंडी नहीं होती है।

५६१२. दिनों के फेर से तु खट्टा होकर मत बैठ क्योंकि संतोष रूपी अमृत से संतुष्ट मनुष्य के लिए सतत् सुख और शान्ति के द्वार खुले रहते हैं एवं सतोष स्वर्ग प्राप्ति से बढ़कर है।

५६१३. स्वाध्याय ज्ञान, संयम और आत्म विकास का सर्वोत्तम साधन है।

५६१४. चाहे राजा हो या किसान, जो अपने घर में शान्ति पाता है वही सबसे सुखी है।

५६१५. सुख संतोष में मिलता है विलासता में कभी नहीं मिल सकता है।

५६१६. कोयल का सौन्दर्य उसके स्वर में है, स्त्री का सौन्दर्य उसके पतिव्रत धर्म में है, कुरूपों का सौन्दर्य विद्या में है और तपस्वियों का सौन्दर्य क्षमा में है।

५६१७. सुंदरता मनोभावों पर निर्भर करती है, माता अपने कुरूप बालक को भी सुन्दर समझती है।

५६१८. जिस सौन्दर्य में भोलेपन की झलक नहीं, वह बनावटी सौन्दर्य है।

५६१९. दूसरों में त्रुटियाँ ढूँढ़ते रहना खतरनाक आदत है इससे मन की प्रसन्नता उसी तरह नष्ट हो जाती है जैसे किसी फूल पर चलता हुआ कीड़ा उसकी पाँखुड़ियों को कुतरता चलता है।

५६२०. त्रुटियाँ तो केवल उसी से नहीं होगी जो कभी कोई काम ही न करें।

५६२१. संसार का सर्वश्रेष्ठ दान ज्ञान है क्योंकि इसे चोर चुरा नहीं सकते न कोई इसे नष्ट कर सकता है, यह निरंतर बढ़ता रहता है और लोगों को स्थाई सुख देता है।

५६२२. बलवान से बुद्धिमान और शक्तिमान से ज्ञानवान अधिक शक्तिशाली होता है।

५६२३. विनम्रता, जिज्ञासा और सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान के समान पवित्र करने वाली और कोई चीज नहीं है।

५६२४. तुम तपस्वी लोगों की महिमा को नहीं नाप सकते, यह काम उतना ही कठिन है, जितना कि दिवंगत आत्माओं की गणना करना है।

५६२५. गृहस्थाश्रम में रहने वाला मनुष्य ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम का प्रमुख आश्रय हैं।

५६२६. वह बाह्य सौन्दर्य किस काम का, जिसके हृदय में भूषण के समान प्रेम न हो।
५६२७. प्रेम मनुष्य का प्राण है। जिसमें प्रेम नहीं, वह केवल मांस में लिपटी हुई हड्डियों का ढेर है।
५६२८. आभारी बनाने की इच्छा से रहित होकर जो दया की जाती है, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मिलकर भी उसका बदला नहीं चुका सकते हैं।
५६२९. किसी से प्राप्त किया हुआ लाभ राई की तरह छोटा ही क्यों न हो किन्तु समझदार आदमी की दृष्टि में वह ताड़वृक्ष के बराबर हैं।
५६३०. भलाई और बुराई का प्रसंग तो सभी को आता है, पर एक 'न्याय निष्ठ मन' बुद्धिमानों के लिए गर्व की वस्तु है।

७०. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते

५६३१. यह जिनवचन इन्द्रिय सुख का विरेचन करने वाली अमृतरूप औषध है, जन्म-मरण की व्याधि को हरने वाली है तथा सब दुःखों का क्षय करने वाली है।
५६३२. और तो और, स्वयं देवेन्द्र भी अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाये और आपना प्रभुत्व गँवा बैठे, यदि पवित्र प्रतिज्ञा वाले सन्त लोग क्रोध भरी दृष्टि से इन्द्र की ओर देख लेवें।
५६३३. शिक्षित लोग ही आँख वाले कहलाते हैं अशिक्षितों के शिर में तो केवल दो गड्ढे होते हैं।
५६३४. विद्वान् जहाँ कही भी जाता है, ज्ञान और मधुर व्यवहार की वजह से अपने साथ आनन्द ले जाता है, लेकिन वहाँ से विदा होता है तो पीछे दुःख छोड़ जाता है विद्वान् का वियोग लोगों को खटकता है।
५६३५. विद्वान् के लिए सभी जगह उसका घर है और सभी जगह उसके स्वजन हैं फिर लोग मरने के दिन तक विद्या प्राप्त करते रहने में असावधानी क्यों करते हैं?
५६३६. मनुष्य ने एक जन्म में जो विद्या प्राप्त कर ली है, वह उसे समस्त आगामी जन्मों में भी उच्च और उन्नत बनायेगी।
५६३७. विद्वान् का दरिद्र होना निःसन्देह बुरा है किन्तु मूर्ख के अधिकार सम्पत्ति का होना तो और भी बुरा है।
५६३८. सूक्ष्म तथा शुभ तत्त्वों में जिसकी बुद्धि का प्रवेश नहीं है, उसकी सुन्दर देह मिट्टी की अलंकृत मूर्ति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।
५६३९. यदि कोई मनुष्य विद्वान् न हो, तो भी उसे उपदेश सुनने दो क्योंकि जब उसके ऊपर संकट पड़ेगा, तब उन उपदेशों से ही उसे कुछ सान्त्वना मिलेगी।
५६४०. धर्मात्माओं के उपदेश एक सुदृढ़ लाठी के समान हैं क्योंकि जो उनके अनुसार काम करते हैं, उन्हें वे गिरने से बचाते हैं।
५६४१. यदि तुम सावधानी से हर समय और प्रत्येक प्रकार के आदमियों से रक्षा करने में सुस्ती

नहीं करते तो इसके बराबर अच्छी और क्या बात है?

५६४२. जो पुस्तकों के ज्ञान द्वारा अपनी सहजबुद्धि की अभिवृद्धि कर लेते हैं, उनके लिए कौन-सी बात इतनी कठिन है, जो उनकी समझ में न आ सके।

५६४३. जो लोग अपने प्राप्त किए हुए ज्ञान को समझाकर दूसरों को नहीं बता सकते हैं, वे उस फूल के समान हैं, जो खिलते तो हैं पर सुगन्धि नहीं देते हैं।

५६४४. धर्म शास्त्र में जो काम हेय बताये गये हैं, उनको भी जो नहीं छोड़ सकते ऐसे मनुष्यों को देखो; उनके चाहे मनोरथ सफल भी हो गये हों, तो भी उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी।

५६४५. ऐसे सभी कामों से बचाव रखना जो निश्चय से असफल होंगे तथा अपने उद्देश्य से बाधाओं के कारण विचलित न होना ये दोनों सिद्धान्त विद्वान् के पथ प्रदर्शक है।

५६४६. बुद्धिमान लोगों के सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्म मार्ग से पतित हो जाने के समान है।

५६४७. विद्वानों की विद्वत्ता अपने पूर्ण तेज के साथ सुसम्पन्न गुणियों की सभा में ही चमकती है। सर्व जनहिताय की बुद्धि से उपदेश देना किन्तु मूर्खों की बातों पर ध्यान न देना।

५६४८. अपने से मतभेद रखने वाले व्यक्तियों के समक्ष भाषण करना उसी प्रकार है, जिस प्रकार अमृत को मलिन स्थान पर डाल देना है।

५६४९. रणक्षेत्र में खड़े होकर वीरता के साथ मृत्यु का सामना करने वाले लोग तो बहुत हैं; परन्तु ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं, जो बिना काँपे श्रोताओं के समक्ष सभा मंच पर खड़े रह सकें।

५६५०. तुमने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसको विद्वानों के सामने खोलना सीखो और जो बात तुम्हें मालूम नहीं है, वह उन लोगों से सीख लो, जो उसमें दक्ष है।

५६५१. वह देश महान् है, जो फसल की पैदावार में कभी नहीं चूकता और जहाँ ऋषि-मुनियों तथा धार्मिक-धनिकों का निवास स्थान हैं।

५६५२. जो धन पाप रहित निष्कलंक रूप से प्राप्त किया जाता है, उससे धर्म, काम और आनन्द का स्रोत बह निकलता है।

५६५३. क्या तुम अपना सर्वनाश करना चाहते हो? तो ज्ञानियों के सदुपदेश पर ध्यान न दो और जाकर उन लोगों के साथ छेड़खानी करो, जो जब चाहें तुम्हारा सर्वनाश करने की शक्ति रखते हैं जो दुर्बल मनुष्य बलवान् और सत्ताधारी पुरुषों का अपमान करता है, वह मानों यमराज को अपने पास आने के लिए संकेत करता है।

५६५४. यदि आत्म बलशाली ऋषि गण तुम पर नाराज है तो विविध प्रकार के आनन्द से उल्लसित भाग्यशाली जीवन और समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण तुम्हारा धन फिर कहाँ होगा ?

५६५५. महत्ता सर्वथा विनयशील और आडम्बर रहित होती है; पर क्षुद्रता सारे संसार में अपने गुणों का ढिंढोरा पीटती फिरती है।

५६५६. महत्ता सदैव अपने से छोटों के प्रति भी सदय और नम्र व्यवहार ही करती है; परन्तु क्षुद्रता को तो घमण्ड की मूर्ति ही समझो।

५६५७. जिस आदमी ने अपने पास ढेर सारी सम्पत्ति जमा कर रखी है, पर उपयोग में नहीं लाता, उसमें और मुर्दे में कोई अंतर नहीं है क्योंकि वह लक्ष्मी से कोई परोपकार नहीं करना।

७१. सत्संगति से सुगति गमन

५६५८. संयोग में जितना सुख होता है वियोग में उससे सौ गुना ज्यादा दुःख होता है, अतः संयोग को शाश्वत मानकर अति राग मत करो क्योंकि राग ही आग है।

५६५९. एक सम्राट् की संगति से एक संत की संगति अच्छी है पता नहीं सम्राट् कब रुला दे और संत कब हँसना सिखा कर मुक्ति दिला दे।

५६६०. झूठे की संगति करोगे तो ठगे जाओगे, मूर्ख हित का इच्छुक होने पर भी अहितकर ही होगा, कृपण अपने स्वार्थ के लिए दूसरे को अवश्य हानि पहुँचाएगा, नीच आपत्ति के समय दूसरे का नाश करेगा अतः कुसंगति छोड़कर सुसंगति करना चाहिए।

५६६१. गंगा पाप को, चन्द्रमा संताप को और कल्पवृक्ष दीनता को नष्ट करता है परन्तु साधु समागम पाप, संताप और दीनता तीनों को नष्ट करता है।

५६६२. यदि सत्समागम न मिले तब एकान्त में रहना ही श्रेष्ठ है, परन्तु असभ्य पुरुषों का समागम ठीक नहीं है।

५६६३. वयोवृद्ध, संयम वृद्ध, ज्ञान वृद्ध का समागम गुण विकास का कारण है।

५६६४. रावण राम से उम्र में, बुद्धि में, बल में, कुटुम्ब में, राज्य में, सेना में, बड़ा था फिर भी हार गया क्योंकि राम का भाई राम के साथ था और रावण का भाई रावण के खिलाफ था।

५६६५. पहले रसदार चीजें खायें, बीच में गरिष्ठ चीजें और अन्त में तरल पदार्थ ग्रहण करें, इससे बल और आरोग्य लाभ होता है।

५६६६. क्यों इतना वक्त गुजारते हो देखते हुए खुद को 'आइने' में कुछ वक्त बैठो प्रभु के सामने खूबसूरत हो जाओगे सही 'माइने' में।

५६६७. दीन, हीन, दुर्बल, अंधे, बहरे, पंगु, विकलांग और वृद्धों का उपहास नहीं करना चाहिए।

५६६८. जितने अपरिचित रहोगे, उतने सुखी रहोगे। जब शादी नहीं हुई थी, तब मात्र आपको अपने घर का कष्ट समझ में आता था, शादी के बाद अब दस जगह के दुःखों में सम्मिलित होना पड़ता है। विषयों की मिठास में जिनमुद्रा धारण नहीं कर पाये, एक क्षण के सुख के पीछे भव-भव की शान्ति चली गयी।

५६६९. समय, सत्ता, सम्पत्ति और शरीर सदा साथ नहीं देते, परन्तु स्वभाव, समझदारी, सत्संग और सच्चे सम्बन्ध सदा साथ देते हैं।

५६७०. भोजन पुत्रों के साथ, बैठक मित्रों के साथ, आत्मा शास्त्रों के साथ और घर बन्धुजनों के साथ हो तो उत्तम है।

५६७१. ध्यान एक से ही होता है, अध्ययन दो से होता है, गायन तीन से होता है, यात्रा चार से होती है, खेती पाँच से होती है और युद्ध बहुत से लोगों में होता है।

५६७२. चार जगह अवश्य जायें–धर्मसभा, राजसभा, स्वजनों के बीच और तत्त्वचर्चा में।

५६७३. चार चीजें मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलती हैं–प्रभु नाम की लगन, संतों की संगति, चरित्र की निर्मलता और उदारता।

५६७४. सत्य, संतोष, सौजन्य, समता, साधु संगति सद्‌गति कराते हैं।

५६७५. काँच भी कंचन का संग पा जाने से मरकत मणि की शोभा प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार सज्जनों का साथ करने से मूर्ख भी विद्वान् बन जाता है।

५६७६. वार्तालाप से, शरीर के स्पर्श से, संसर्ग से, साथ भोजन करने से, आसन से, शयन से और यान से मनुष्यों के पाप संक्रमित होते हैं अतः कुसंगति से बचें।

५६७७. जब मैं अल्पज्ञ था तो हाथी के समान मदांध था। तब मेरा मन अपने को सर्वज्ञ समझकर दंभ से भर गया, लेकिन जब मुझे पंडितों के संपर्क से कुछ ज्ञान हुआ तो पता चला कि मैं मूर्ख हूँ और मेरा दंभ, ज्वर की तरह उतर गया।

५६७८. सज्जनों के सम्पर्क से आधी अविद्या नष्ट हो जाती है, उस का चतुर्थांश शास्त्र के विचार से नष्ट हो जाता है और शेष चतुर्थांश अपने यत्न से नष्ट होता है।

५६७९. गंगा के जल का प्रवाह भी समुद्र को प्राप्त कर खारा हो जाता है, इसलिए विद्वान् को अशुभ मन वाले व्यक्तियों का साथ नहीं करना चाहिए।

५६८०. दुष्ट की संगति कीर्ति नष्ट कर देती है, क्लेश उत्पन्न करती है, अशुभ गति प्रदान करती है, मनुष्यों में उद्वेग और खिन्नता उत्पन्न करती है, उपहास का पात्र बनाती है, बुद्धि को भ्रम में डाल देती है, प्रतिष्ठा का नाश कर देती है, प्राण शक्ति क्षीण कर देती है, इस प्रकार कुसंगति सकल मंगलों को नष्ट कर देती है।

५६८१. अगर तुम जानना चाहते हो कि नरक क्या है तो जान लो कि अज्ञानी की संगति ही नरक है।

५६८२. जो व्यक्ति उच्च विचारों की सुखद संगति में रहते हैं, वे कभी भी एकाकी नहीं हो सकते हैं।

५६८३. स्वाध्याय से बढ़कर सज्जनों के लिए कोई अच्छी आदत नहीं हो सकती है।

५६८४. मन की पवित्रता और कर्मों की पवित्रता, आदमी की संगति की पवित्रता पर निर्भर है।

५६८५. पवित्र हृदय वालों की संगति उत्तम होगी और जिनकी संगति अच्छी है, वे हर प्रकार से फलते फूलते हैं।

५६८६. संसार में चन्दन शीतल होता है, चन्दन से ज्यादा शीतल चन्द्रमा है, चन्दन और चन्द्रमा से शीतल साधु-सज्जनों की संगति है, चन्दन व चन्द्रमा तो बाहरी त्वचा को शीतल कर सकते हैं परन्तु सन्तों की संगति मन और आत्मा को शान्ति प्रदान करती है।

५६८७. एक प्रभु हैं, जो बेहिसाब देते हैं, एक हम हैं, जो नाम भी गिन-गिन कर लेते हैं।

५६८८. आलसी के साथ रहने वाला मानव भी बर्बाद हो जाता है।

५६८९. जेल होने के तीन कारण—भूख, मजबूरी व संगति।

५६९०. परम्पराओं की अदृश्य जंजीरें व्यक्ति को ही नहीं, उसकी चेतना को भी मिटाती हैं।

५६९१. जैसे ही लगे कि आप जहाँ हैं वहाँ का वातावरण उत्तेजित या दूषित हो रहा है आप वहाँ से हट जाइये।

५६९२. सत्संग करने से भीतर का शैतान भाग जाता है।

५६९३. सत्संग आत्म जागरण के लिए है, साम्प्रदायिक संगठन और प्रदर्शन के लिए नहीं।

५६९४. सत्संग का फल उसे ही मिलता है, जो व्यसनों और कुव्यक्तियों का त्याग करता है।

५६९५. सत्संग के लिए शास्त्र को छोड़ना पड़े तो कोई बात नहीं क्योंकि सत्संग से अज्ञान पलभर में समाप्त हो जाता है।

५६९६. खराब संगति में रहने से तो अच्छा है कि आप अकेले ही रहें।

५६९७. दुर्जन के संग से बढ़कर और कोई दुःख नहीं है।

५६९८. मुझे बताइये आपके संगी-साथी कौन हैं? मैं बता दूँगा, आप कौन हैं?

५६९९. जो व्यक्ति उच्च विचारों की सुखद संगति में रहते हैं, वे कभी अकेले नहीं रहते हैं।

५७००. कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो अन्धों की तरह उसके पीछे मत चलो।

५७०१. बच्चा जितना सिखाने से नहीं सीख पाता उतना आस-पास के परिवेश से स्वयं सीख लेता है, अतः परिवेश अच्छा होना चाहिए।

५७०२. सन्त का क्रोध भी कल्याणकारी होता है, जबकि दुष्ट का प्यार भी दुःख देने वाला होता है, सन्त अगर गुस्सा करके डाँट भी दें तो समझ लेना चाहिए कि इसमें भी भला है, दुष्ट आदमी प्यार की बात भी करे तो उसके प्यार में कुछ न कुछ मुसीबत छुपी होगी।

५७०३. जिस प्रकार स्वभाव से शीतल जल अग्नि की संगति से उष्ण हो जाता है उसी प्रकार कायर पुरुष भी वीर पुरुष के आश्रय (संगति) से वीर हो जाता है और वीर पुरुष भी कायर की संगति (आश्रय) से कायर हो जाता है।

५७०४. बगैर सत्संग के आत्मा में बसा अमृत सूख जाता है।

५७०५. दुर्जन की संगति करने से सज्जन का भी महत्त्व गिर जाता है, जैसे कि मूल्यवान माला मुर्दे पर डाल देने से निकम्मी हो जाती है।

५७०६. जो नीच पुरुषों के संग रहते हैं ज्ञानी जनों का सत्संग नहीं करते, वे कृष्णपक्ष के चंद्रमा

के समान निरंतर हीन होते जाते हैं।

५७०७. सत्संग में बिना कुछ किए उन्नति होती है और कुसंग में बिना कुछ किए पतन होता है। भगवान् में प्रेम होना भी सत्संग है और नाशवान का प्रेम (मोह) छूटना भी सत्संग है। हर हाल में खुश रहने की विद्या सत्संग से ही मिलती है।

५७०८. सच्ची बात को मान लेना, यह सत्संग है।

५७०९. जैसे भीतर अग्नि कमजोर हो तो भोजन पचता नहीं, ऐसे ही भीतर लगन न हो तो सत्संग की बातें पचती नहीं।

५७१०. व्यापार में तो लाभ और नुकसान दोनों होते हैं, पर सत्संग में लाभ-ही-लाभ होता है, नुकसान होता ही नहीं।

५७११. अज्ञानी से दूर व ज्ञानी के निकट रहने से मंगल होता है।

५७१२. सत्पुरुषों के दर्शन व समागम का लाभ लेना ही ज्ञानी पुरुष का लक्षण है।

५७१३. जिन्दगी अपने दम पर ही जी जाती है औरों के कंधों पे जनाजे ही निकाले जाते हैं।

५७१४. सफल लोगों की संगति आपकी सफलता का अहम् हिस्सा है।

५७१५. जिन पुरुषों के यश और मान का लोभ अधिक हो, उनके साथ मुमुक्षु पुरुष को कभी नहीं रहना चाहिए क्योंकि उसके साथ में या तो उल्लू बनकर रहना होगा या अपमान सहना होगा और उसे भी यश का पिशाच लग जावेगा तथा प्रशंसा का आसक्त निर्दय चित्त होता है।

५७१६. अनेक त्यागियों और धर्मात्माओं के बीच रहकर अपने को अकेला देखता हुआ प्रसन्न रह करके जीवन बिता, आज के युग में बाह्य में अकेला मत रह अन्तरङ्ग में अकेला रह, बहुत पुरुषों के समागम में कषाय वृद्धि और समाधिहीनता का भय है तो समागम छूटने में संयम हीनता का भय है, इस काल में समागम बहुत सहायक है।

५७१७. मुमुक्षु पुरुष जब-जब अपने से विशेष पुरुष से मिले, उसके समागम और आज्ञा में रहे।

५७१८. स्वाध्याय, ध्यान, भक्ति, पठन-पाठन आदि कार्यों में समय बिताते ही रहो, बेकार बैठे रहने में दुष्कल्पना का उद्भव होने लगता है।

५७१९. दुर्जन की संगति से सज्जन को भी दोष लगता है और आपत्ति भोगनी पड़ती है।

५७२०. बलवान मनुष्य को अनुकूल बनाये रखना चाहिए क्योंकि बड़े पुरुषों के विषय में बेंत के समान नम्र वृत्ति ही दुःख दूर करने वाली होती है।

५७२१. हम सत्संग ढूँढ़ते हैं क्योंकि आत्मा की वही खुराक है।

५७२२. संयम के साथ एक क्षण जीना श्रेष्ठ है, अमृत तुल्य है, परन्तु असंयम के साथ कोटि वर्ष भी जीना अच्छा नहीं है। संयमी निजभावों की प्रतिक्षण तौल करें।

५७२३. सम्बन्ध स्वभाव के लिए घातक हैं, एक भक्त बढ़ जाये तो भी विकल्प बढ़ जाता है।

५७२४. शरीर के विनाश होते ही सब सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं, फिर क्यों पर सम्बन्ध के पीछे आत्म शान्ति को खो रहे हो?

५७२५. सम्बन्धों से साधना का ह्रास होता है।

५७२६. संसार से पीछा छुड़ाना है तो पीछी पकड़ो या पीछी वालों को पकड़ो इससे ही आप पतित से पावन बन सकते हो।

५७२७. धन घर तक साथ चलेगा, परिवार श्मशान तक साथ चलेगा पर धर्म और सेवाभाव तो दूसरे जन्म तक भी आपके साथ चलेगा

५७२८. धर्म के द्वार क्षमा, नम्रता, सरलता, संतोष।

५७२९. दया, दान, इन्द्रिय-दमन, देवदर्शन, पूजन और गुरु की दासता जिसके पास है वह दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है।

५७३०. सुखमय जीवन जीने के १७ सूत्र-१. आनंद के लिए संगीत, २. खाने के लिए गम, ३. पीने के लिए क्रोध, ४. निगलने के लिए अपमान, ५. व्यवहार के लिए नीति, ६. लेने के लिए ज्ञान, ७. देने के लिए दान, ८. दूसरों को जीतने के लिए प्रेम हो, ९. धारण करने के लिए धैर्य, १०. तृप्ति के लिए संतोष, ११. त्याग के लिए लोभ, १२. करने के लिए सेवा, १३. फैलाने के लिए स्व-पर का यश, १४. फेंकने के लिए ईर्ष्या, १५. छोड़ने के लिए मोह, १६. रखने के लिए इज्जत, १७. बोलने के लिए सत्य।

५७३१. कल्पवृक्ष संकल्पित वस्तु को देता है, प्रसिद्ध कामधेनु इच्छित वस्तु को ही पूर्ण करती है और चिन्तामणि चिन्तित वस्तु को ही देता है परन्तु सत्संगति समस्त वस्तुओं को देती है। ऐसी संगति करना जिससे वैभव बढ़े या ना बढ़े पर भव अवश्य घटे और वीतराग शासन पर श्रद्धा बढ़े।

५७३२. संत समागम पाने वाला भले ही सन्त बने या न बने पर संतोषी अवश्य बनता है।

५७३३. गुणीजनों के संसर्ग से सद्गुणों में वृद्धि होती है शील संयम का पालन होता है, मन की चंचल वृत्ति का निरोध होता है, कुभाषण, कुकर्म, कुचिन्तन नहीं होता है।

५७३४. सम्यग्दर्शन से रहित, मार्ग से च्युत, व्यसनी एवं दुष्टजनों का संग छोड़ देना चाहिए, दुर्जनों, मूर्खों की संगति पद-पद पर दुःखदायी होती है।

५७३५. जिस प्रकार कामवासना व्यक्ति की बुद्धि का नाश कर देती है, उसी प्रकार कुसंगति व्यक्ति का जीवन नष्ट कर देती है।

५७३६. दुर्जनों की संगति की अपेक्षा अकेले जीवन व्यतीत करना अच्छा है।

५७३७. अच्छी संगति अच्छा सोचने की पक्की गारंटी है।

५७३८. जो तप करें या न करें किन्तु वृद्धजनों की उपासना करते हैं वे मनुष्य संकटरूपी जंगल को पार कर पवित्र गति को प्राप्त होते हैं।

५७३९. शील की रक्षा के लिए वृद्धजनों (गुणी जनों) की संगति करना चाहिए, वृद्ध सेवा पाप नष्ट करती है, हृदय को पवित्र करती है, क्रोध का नाश करती है, विनय को बढ़ाती है, सभी इष्ट की सिद्धि कराती है।

५७४०. आपका सलाहकार कौन है ये बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि दुर्योधन शकुनि से सलाह लेता था और अर्जुन श्रीकृष्ण से।

५७४१. परिचितों के साथ रहने से राग बढ़ता है और अपरिचित रहने से विशुद्धि बढ़ती है, इसलिए मुनि लोग परिचय नहीं बढ़ाते, वे अपरिचित रहते हैं।

५७४२. साधु संसर्ग दोष से विकार को प्राप्त नहीं होते हैं जैसे चंदन सर्पों द्वारा वेष्टित होने पर भी विष रूप नहीं होता हैं।

५७४३. साधु का दर्शन पुण्य के लिए होता है क्योंकि साधु तीर्थरूप होता है, तीर्थ तो समय पाकर फल देता है परन्तु साधु समागम शीघ्र ही फल देता है।

५७४४. पानी अपने में रहता है तो स्वच्छ और शीतल होता है किन्तु पर के संपर्क से स्वच्छता शीतलता दोनों नष्ट होती हैं।

५७४५. अग्नि और दर्पणवत् दूरी बनाकर गुरु का लाभ लो।

५७४६. साधु की सेवा संसार से पार लगाती है।

५७४७. जैसे सीप में प्रवेश करने वाली पानी की बूँद मोती बनकर चमकती है, वैसे गुरु आज्ञानुवर्ती शिष्य सौभाग्य से समाहित होकर संसार में शोभित होता है।

५७४८. गुरु का शिष्य बन जाना कठिन नहीं, अपितु गुरु के हृदय में स्थान प्राप्त करना कठिन है, जो मात्र गुरु भक्ति एवं समर्पण से ही संभव है।

५७४९. भिन्न-भिन्न देश में जाति, कुल में उत्पन्न जो मनुष्य जिनशासन के भक्त हैं वे विद्वानों के द्वारा परस्पर भाई माने गये हैं।

५७५०. कुछ व्यक्तियों से भेंट अच्छी होती है किन्तु सहवास अच्छा नहीं होता, कुछ का सहवास अच्छा रहता हैं, भेंट नहीं, कुछ से भेंट भी अच्छी होती है और सहवास भी, कुछ का न सहवास अच्छा होता और न ही भेंट अच्छी होती हैं।

५७५१. अज्ञानी व्यक्ति की संगति नरक के समान है।

५७५२. धनिकों के लिए दूसरी निधियाँ है परन्तु सज्जनों के लिए गुणी मनुष्यों की समीपता ही श्रेष्ठ निधि है। श्रेष्ठ की संगति किसका बल नहीं बढ़ाती है ?

५७५३. सत्संग से उत्पन्न मरण भी मनुष्यों का उद्धार कर देता है।

५७५४. महान् पुरुषों की संगति निश्चय ही महान् फल देती है।

५७५५. सत्संगति बुद्धि की जड़ता को हटाती है, वाणी में सत्य का संचार करती है, सम्मान की वृद्धि करती है, पापों को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है और दसों दिशाओं में

कीर्ति फैलाती है, बताओ सत्संगति मनुष्य के लिए क्या नहीं करती है ? सज्जनों का संग स्वर्ग में वास के समान है।

५७५६. प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले भाई से अच्छा है।

५७५७. सत्संगति का बड़ा प्रभाव पड़ता है, जो लोग साथ-साथ उठते बैठते हैं उनकी नैतिकता तथा चारित्र का स्तर भी समान हो जाया करता है, किसी व्यक्ति का चारित्र इतना सबल नहीं होता कि वह अपने आसपास की स्थितियों से प्रभावित न हो।

५७५८. जो लोग धर्म करते-करते वृद्ध हो गये हैं, उनकी तुम भक्ति करो तथा मित्रता प्राप्त करने का यत्न करो क्योंकि यह महान् सौभाग्य की बात है।

५७५९. आदमी की बुद्धि का सम्बन्ध तो उसके मस्तिष्क से है परन्तु उसकी प्रतिष्ठा तो उन लोगों पर पूर्ण अवलम्बित है, जिनकी संगति में वह रहता है।

५७६०. बुद्धिमान यद्यपि स्वयमेव सर्वगुण सम्पन्न होते हैं, फिर भी वे पवित्र पुरुषों के सुसंग को 'शक्ति का स्तम्भ' समझते हैं।

५७६१. अच्छी संगति से बढ़कर आदमी का सहायक और कोई नहीं है और कोई वस्तु इतनी हानि नहीं पहुँचाती, जितनी की दुर्जन की संगति।

७२. पुरुषार्थों का मूल कारण - आरोग्य

५७६२. आनंद का पहला स्त्रोत है स्वास्थ्य।

५७६३. आहार सन्तुलित और विवेकपूर्ण हो तो शरीर में कोई रोग नहीं हो सकता है।

५७६४. रात्रि में जल्दी सोना, प्रातः जल्दी उठना, मनुष्य को स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाता है।

५७६५. आनंद का मुख्य सिद्धान्त है तंदुरुस्ती और तंदुरुस्ती का मुख्य सिद्धान्त है कसरत।

५७६६. भूख लगने पर भोजन करना प्रकृति है, छीनकर खाना विकृति है और मिल बाँटकर खाना भारतीय संस्कृति है।

५७६७. बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असंभव है।

५७६८. सुख का पहला चरण स्वास्थ्य है और समृद्धि का पहला चरण शान्ति है।

५७६९. सूर्य की गर्मी से संतप्त व्यक्ति यदि बिना विश्राम किए तत्काल स्नान करता है तो उसकी दृष्टि मन्द पड़ जाती है और सिर में पीड़ा होती है।

५७७०. स्वस्थ शरीर आत्मा का भवन है और अस्वस्थ शरीर आत्मा का कारागार है।

५७७१. ढलती उम्र में वजन बढ़ाना, आत्महत्या है।

५७७२. मोटापा और मधुमेह मौत को आमंत्रण है।

५७७३. मोटापा ही समस्त मुसीबतों की महामारी है।

५७७४. जितनी मोटी कमर, उतनी छोटी उमर।

५७७५. खुराक घटाओ, परिश्रम बढ़ाओ, बुढ़ापे को दूर भगाओ।

५७७६. हवा, हरियाली, हलचल हमें हिरण सदृश चुस्त बनाती है।

५७७७. पुरुषों का ७० किलो, स्त्रियों का ६० किलो वजन स्वस्थ जीवन की लक्ष्मण रेखा है।

५७७८. स्वस्थ पुरुष की दो पहचान हैं, भरपेट भूख और भरपूर नींद।

५७७९. शरीर की नीरोगता पर उपेक्षा रखना आत्म सिद्धि की अवहेलना है।

५७८०. पीता थोड़ी छाछ जो, करके भोजन रोज।
नहीं जरूरत वैद्य की, चेहरे पर भी ओज ॥

५७८१. उन्नति के ३ सूत्र–स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, सम्यक् साधना।
सेहत सबसे बड़ी सम्पत्ति है, संतोष सबसे बड़ा धन है, आत्म विश्वास सबसे बड़ा खजाना व दोस्त है, अस्तित्व में न होना सबसे बड़ा आनन्द है।

५७८२. मट्ठा सेवन करने वाला कभी पीड़ित नहीं होता, मट्ठे द्वारा शान्त किए गये रोग पुनः उत्पन्न नहीं होते, जिस प्रकार देवताओं को अमृत हितकर है, उसी प्रकार पृथ्वी पर मनुष्यों को मट्ठा हितकारी है।

५७८३ व्यायाम से शारीरिक हल्कापन, कर्म सामर्थ्य, दृढ़ता, कष्ट सहिष्णुता, दोषों की क्षीणता तथा जठराग्नि की वृद्धि होती है।

५७८४. अति व्यायाम से थकावट, क्लांति, क्षीणता, प्यास, रक्तपित्त, सांस चढ़ना, खाँसी तथा वमन, ये उपद्रव होते हैं।

५७८५. दिन के अंत में दूध पीना चाहिए, रात्रि के अंत में जल, भोजन के अंत में मट्ठा पीना चाहिए, ऐसे व्यक्ति को वैद्य की जरूरत नहीं होती है।

५७८६. यदि अधिक भोजन किया जाए तो वह प्राण वायु और अपान वायु में बाधक होता है, आलस्य और नींद लाता है तथा पराक्रम को नष्ट करता है।

५७८७. जब शराब अन्दर होती है तब बुद्धि बाहर हो जाती है।

५७८८. तनाव व चिन्ता पैन क्रियाज को हानि पहुँचाते हैं।

५७८९. शरीर स्वास्थ्य के इच्छुक व्यक्ति को समय पर मलमूत्र का क्षेपण करना चाहिए, मलमूत्रादि का वेग नहीं रोकना चाहिए, व्यायाम, शयन, स्नान, भोजन और ताजी हवा में घूमना आदि की यथासमय प्रवृत्ति नहीं रोकना चाहिए क्योंकि जो व्यक्ति अपने वीर्य, मल, मूत्र और अपान वायु के वेगों को रोकता है उसे पथरी, भगन्दर, गुल्म और बवासीर आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

५७९०. निरन्तर बैठे रहने से मनुष्य की जठराग्नि मन्द पड़ जाती है और शरीर स्थूल, आवाज मोटी एवं मानसिक विचार शक्ति स्थूल हो जाती है।

५७९१. ध्यान समस्त रोगों की रामबाण औषधि है।

५७९२. ताजा दुहा हुआ दूध जिस प्रकार शीघ्र नहीं बिगड़ता उसी प्रकार कुकर्मी का फल भी शीघ्र नहीं मालूम होता किन्तु वह राख में दबी हुई अग्नि की तरह विद्यमान रहता है।

५७९३. जो मनुष्य शोक से आतुर हो, ईर्ष्या से भरा हुआ हो, नाना प्रकार के कार्यों की चिंता कर रहा हो या किसी कामना में आसक्त हो, उसे नींद कैसे आ सकती है?

५७९४. नींद में राजा और रंक, मूर्ख और विद्वान् समान हो जाते हैं।

५७९५. जागृत अवस्था की नींद सबसे ज्यादा हानि का कारण है।

५७९६. ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतुओं में दिन में सोना शरीर में छिपे रोगरूपी सर्पों को जगाना है और समस्त कार्य सिद्धि में बाधक है।

५७९७. प्रातःकाल उठकर अपना मुख घृत अथवा दर्पण में देखना चाहिए तथा परमात्मा का नाम लेकर पलंग (शय्या) से उठना चाहिए।

५७९८. व्यायाम के बिना दिमाग वैसे ही कमजोर पड़ जाता है जैसे शरीर।

५७९९. व्यायाम भी शरीर के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि हवा, पानी और भोजन।

५८००. प्रातःकाल स्वच्छ, सुगंधित, स्फूर्तिदायक हवा में टहलना अच्छा व्यायाम कहलाता है।

५८०१. निश्चिन्त वनों में स्वेच्छापूर्वक ताजी वायु में विहार करने वाले हाथी आदि व्याधियों से पीड़ित नहीं होते हैं।

५८०२. बीमारी की चिकित्सा के बजाय बचाव रखना श्रेष्ठ है।

५८०३. बहुत बार भोजन करने से पुष्टि, कांति, उत्साह और बल में कमी आती है।

५८०४. भोजन ऐसा करो जिससे शरीर स्वस्थ और मन शुद्ध रहे।

५८०५. मात्र पेट भरना ही महत्त्वपूर्ण नहीं है किन्तु कब, कैसे, कितना और किससे भरना यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

५८०६. भोजन स्वाद के लिए नहीं स्वास्थ्य लाभ के लिए होना चाहिए।

५८०७. जो व्यक्ति अपनी जठराग्नि को वज्राग्नि अर्थात् कठोर से कठोर वस्तु को पचाने वाली करना चाहे उसे सदा भोजन से पूर्व मुद्गर आदि घुमाना चाहिए।

५८०८. घृत पान के पश्चात् भोजन करने से मनुष्य की जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा नेत्र की ज्योति बढ़ती है।

५८०९. जो एक बार में अत्यधिक पानी पीता है उसकी जठराग्नि मन्द पड़ती जाती है।

५८१०. परिश्रम से थके व्यक्ति द्वारा बिना विश्राम किए तत्काल पिया हुआ पानी और भक्षण किया हुआ भोजन ज्वर या वमन पैदा कर देता है।

५८११. नीरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है।

५८१२. मन की बीमारी में तन का इलाज कराने से क्या लाभ? बल्कि इससे बीमारी और बढ़ती है।

५८१३. मन को हर्ष व आनन्दमय बनाओ, इससे हजारों प्रकार की क्षतियों से बचोगे और दीर्घजीवी बनोगे।
५८१४. भविष्य की चिन्ता से आँखों के रोग तथा ब्लडप्रेशर रोग तैयार होते हैं।
५८१५. अपनी जिद पर अड़े रहने की आदत से पेट के रोग उत्पन्न होते हैं।
५८१६. भय से गुर्दे और मूत्राशय को हानि पहुँचती है।
५८१७. दुःख दबाने से फेफड़ों और बड़ी आँत की कार्य क्षमता कम होती है।
५८१८. अधीरता व क्षणिक आवेश से हृदय व छोटी आँत को हानि पहुँचती है।
५८१९. रोग उपचार की बजाय पथ्य पालन ज्यादा हितकर है।
५८२०. नकारात्मक विचार बीमारियों को आमंत्रण देते हैं।
५८२१. मन में जिस प्रकार के विचार होते हैं शरीर पर उनका वैसा ही प्रभाव होता है।
५८२२. युद्ध की अपेक्षा नशे ने मानव जाति को अधिक नुकसान पहुँचाया है।
५८२३. व्यसन और फैशन व्यक्ति के पतन का कारण है।
५८२४. कुदरत ने आपको हर चीज से निपटने की शक्ति दी है।
५८२५. शरीर को रोगी या दुर्बल रखने के समान कोई पाप नहीं है।
५८२६. शरीर भले ही कमजोर हो पर मन को कमजोर मत बनाइये।
५८२७. शाकाहार मनुष्य को निरोग और दीर्घ जीवी बनाता है।
५८२८. जिसके अंतरंग में शान्ति है उसे बाह्य वेदना कभी कष्ट नहीं दे सकती है।
५८२९. सदाचारी, श्रद्धावान् और ईर्ष्या रहित मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित रहता है चाहे वह सब प्रकार के शुभ लक्षणों से हीन हो।
५८३०. कमजोर होना दुःखी होना है।
५८३१. तन के स्वस्थ ही नहीं मन के स्वस्थ भी बनो।
५८३२. स्वास्थ्य लाभ का इच्छुक कम खाये, कम पीये और कम बोले।
५८३३. तमाम शारीरिक तथा मानसिक कार्य व्यायाम में सम्मिलित है।
५८३४. तन्दुरुस्ती ठीक न हुई तो दुनिया के सारे सुख बेकार है।
५८३५. शरीर के स्वस्थ होने का मतलब है कि मनुष्य का मन भी स्वस्थ है।
५८३६. शारीरिक और मानसिक दोनों व्यायाम सीमा के अन्दर ही रहकर करना चाहिए।
५८३७. स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन बहुत ही जरूरी है।
५८३८. भोजन की मात्रा से नहीं गुणवत्ता से स्वास्थ्य ठीक रहता है।
५८३९. स्वस्थ व्यक्ति की पहिचान पैर गरम, पेट नरम, सिर ठंडा।
५८४०. सुन्दर स्वास्थ्य परिश्रम के पसीने से प्राप्त होता है।
५८४१. व्यक्ति जितना व्यस्त उतना स्वस्थ।

५८४२. स्वास्थ्य है तो सब कुछ है, स्वास्थ्य न हो तो कुछ भी नहीं अतः स्वस्थ रहें।
५८४३. भोजन के ४० मिनट पहले और एक घंटे बाद पानी पियें, पानी चाय की चुस्की की तरह घूंट- घूंट कर पियें, कभी भी ठंडा पानी न पियें, सुबह उठते ही २-३ गिलास पानी पियें, पानी का सही उपयोग अमृत है गलत उपयोग विष के समान है।
५८४४. अन्न नष्ट न हो इसलिए हम इस मानव शरीर का उपयोग कूड़े दान या कचरा पेटी की तरह करते हैं, संतुलित आहार लेना आवश्यक है।
५८४५. जितनी कैलोरी शरीर में बन रही है वह प्रतिदिन खर्च होना जरूरी है अन्यथा बची कैलोरी मोटापा बढ़ाती है।
५८४६. मानव शरीर का सब बीमारियों से बचने का एक ही सर्वश्रेष्ठ उपचार है आहार पर नियंत्रण। शरीर से ज्यादा चिंता ढाई इंच की जिह्वा की क्यों? हमें खाने की जरूरत है जीने के लिए, लेकिन हम जीते हैं खाने के लिए।
५८४७. दिन प्रतिदिन बढ़ रहे रासायनिक खाद कीटनाशक, कलर के जहर से हमें बचना चाहिए।
५८४८. अगर हम चाहते हैं कि हमारा शरीर पूरी ईमानदारी से २४ घंटे हमारा साथ दे तो एक घंटा व्यायाम के माध्यम से उसका ख्याल रखना चाहिए।
५८४९. योग भारत की सबसे प्राचीन कला है।
५८५०. हमारा शरीर जन्म से मृत्यु तक लगातार कार्य करता है और हम मशीन से बढ़कर इसका उपयोग करते हैं।
५८५१. हमें शरीर का पूरा ख्याल रखना होगा क्योंकि हमारे शरीर की उपयोगिता बहुत अधिक है।
५८५२. शरीर व मन को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार व नियमित व्यायाम जरूरी है।
५८५३. जाग्रत मन को पूरे शरीर से तालमेल हेतु प्रत्येक डेढ़ घंटे पश्चात् लगातार कार्य करने पर मस्तिष्क की ग्रहण क्षमता क्षीण हो जाती है इसलिए बीच में विषय बदलना आवश्यक है।
५८५४. शरीर का मशीन की तरह लगातार उपयोग न करें।
५८५५. मस्तिष्क का सीधा रिश्ता आपके मानसिक संतुलन, कार्य कुशलता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य से है।
५८५६. गुलाम बनाने का सरल तरीका कर्ज से लाद दो।
५८५७. जीवन को सफल और सरल बनाने हेतु प्रत्येक तरह के अन्तराल का उचित समय पर उपयोग होना अत्यन्त आवश्यक है।
५८५८. ब्रेन हेमरेज, माइग्रेन जैसी बीमारियों से बचने के लिए आधा घंटे विचारों/चिंताओं पर काबू पाकर स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करें।

५८५९. शरीर के आरोग्य होने पर ही रत्नत्रय की प्राप्ति संभव है।
५८६०. जो श्वास को मंद कर लेता है उसके कामादि के वेग कम हो जाते हैं।
५८६१. स्वास्थ्य ही जीवन की खुशियों को जीवंत बनाता है, अच्छे स्वास्थ्य के बिना हर खुशी नीरस होती है।
५८६२. जब एक अंगुल शरीर में ९६ रोग हो सकते हैं तो आप शरीर से स्वस्थ कैसे रह सकते हैं, हाँ शरीर के अस्वस्थ होने पर चित्त को स्वस्थ रख सकते हो, शरीर अस्वस्थ हो जाये तो मोक्षमार्ग में कोई बाधा नहीं आती है, लेकिन यदि चित्त अस्वस्थ हो गया तो फिर शरीर भले ही स्वस्थ बना रहे तो भी मोक्षमार्ग में नियम से बाधा आती है।
५८६३. थकने से पूर्व ही विश्राम कर लीजिए, इससे आप अधिक काम कर सकेंगे।
५८६४. बुढ़ापा शरीर का उतना धर्म नहीं है जितना मन का धर्म है।
५८६५. नशे का जोश ताकत नहीं है, ताकत वह है जो अपने बदन में हो।
५८६६. हरड़ मनुष्य के लिए माता के समान हितकारी होती है माता तो कभी कुपित भी हो जाती है पर उदरस्थ हरड़ कभी कुपित नहीं होती है।
५८६७. तन्दुरुस्ती के बराबर आनन्द किसी में नहीं है, संतोष के बराबर कोई ऐश्वर्य नहीं है।
५८६८. प्राणायाम से चित्त शुद्ध हो जाता है और विशुद्ध चित्त में अन्तः प्रकाश स्वरूप शुद्ध आत्म तत्त्व का साक्षात्कार होने लगता है।
५८६९. गीले पाँव रखकर भोजन करने वाला दीर्घायु होता है।
५८७०. बहुत बार भोजन करने से शरीर की पुष्टि, कान्ति, उत्साह, प्रयोग और बल में कमी आती है। अतः अपनी शक्ति को देखते हुए भोजन करना चाहिए मान के वश होकर न बहुत अधिक और न बहुत कम ही भोजन करना चाहिए।
५८७१. गौमांस रोग है, उसका दूध आरोग्य है और औषधि भी है।
५८७२. जल सब रोगों की एक मात्र दवा है। जल अन्न की अपेक्षा उत्कृष्ट है।
५८७३. प्यास बहुत भयंकर व तुरन्त प्राण विनाशनी होती है अतः जीवन धारण करने के लिए आवश्यक जल प्यासे को देना चाहिए।
५८७४. अजीर्ण में जल औषधि है और जीर्ण में जल बल प्रदान करने वाला है। आधे भोजन के बीच जल अमृत है और भोजन के पश्चात् जल विष है।
५८७५. सभी रोगों के विनाश के लिए रात्रि के अंत अर्थात् प्रातःकाल जल पीना चाहिए।
५८७६. अपनी उन्नति चाहने वाले पुरुषों को वही वस्तु खानी चाहिए, जो खाने योग्य हो, पच सके और पच जाने पर हितकारी हो।
५८७७. शरीर के लिए औषधि की कोई आवश्यकता न हो, यदि खाया हुआ भोजन पच जाने के बाद ही दुबारा भोजन किया जाये एवं शान्ति पूर्वक किया हुआ भोजन ही दीर्घायु का

सर्वोत्तम उपाय है।

५८७८. जो व्यक्ति मूर्खता से अपनी प्रकृति के प्रतिकूल एवं जठराग्नि से ज्यादा ठूस-ठूस कर खाता है उसे अनगिनत रोग घेरे ही रहते हैं।

७३. पाणिग्रहण प्राण ग्रहण ना हो

५८७९. सास को बहू की जवानी और बहू को सास का बुढ़ापा नहीं दिखता इसलिए विवाद होता है।

५८८०. संसार में किसी मनुष्य के तो स्त्री नहीं है, किसी के यदि है तो पुत्र नहीं है, किसी के पुत्र है तो शरीर रोगी है, यदि किसी के शरीर निरोग भी है तो धन धान्य नहीं है, यदि धन-धान्य भी है तो किसी की स्त्री दुराचारिणी है, किसी का पति जुआ आदि दुर्व्यसनों में रत है, किसी के दुर्योधन के समान कलह करने वाले भाई हैं, किसी की पुत्री दुराचारिणी है, किसी के पति का जवानी में शीघ्र ही मरण हो जाता है, अतः कह सकते हैं कि संसार में कोई भी व्यक्ति पूर्ण सुखी नहीं है।

५८८१. एक माँ अपने बेटे को मनुष्य बनाने में २० साल लगा देती हैं, लेकिन उसी बेटे को मूर्ख बनाने के लिए पत्नी को २० मिनट भी नहीं लगते है।

५८८२. भागकर माँ-बाप की मर्जी के बिना शादी करने वालों के दिल से भगवान् भी भाग जाते हैं, जिससे उसके भाग्य फूट जाते हैं क्योंकि जिसने जन्म देने वाले अपने माँ-बाप की बात नहीं मानी उसकी फिर परमात्मा भी बात नहीं मानता है।

५८८३. कन्या का पैदा होते ही मर जाना उत्तम है परन्तु उसका नीच कुल वाले वर के साथ विवाह करना अच्छा नहीं है।

५८८४. गृह के कार्यों में लगाए रखना, सीमित धन देना, अधिक स्वच्छन्द न होने देना, नीति व सदाचार की शिक्षा देते रहना और बड़ी वृद्ध स्त्रियों के मध्य रोके रहना अर्थात् अन्यत्र न जाने देना आदि ये सब कुल वधुओं की सुरक्षा के उपाय हैं।

५८८५. आप घर में बहु लाना बहुरानी नहीं क्योंकि यदि बहु आयेगी तो घर को स्वर्ग बनाएगी और यदि बहुरानी आएगी तो सासू को नौकरानी और ससुर को स्वर्गीय बनाएगी।

५८८६. यदि लड़का कहना न माने तो परेशान मत होना बस उससे अपनापन छोड़ देना, सब चिन्ताएँ खत्म हो जायेंगी जैसे शरीर में जूँ पैदा हो जाती है तो उसे आप अपना नहीं मानते, इसी प्रकार बेटा पैदा हो गया है क्योंकि जो कहना न माने वह अपना कैसा?

५८८७. नारी की उन्नति और अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति और अवनति निर्भर है।

५८८८. जिस व्यक्ति के घर में सुशील, सुन्दर, स्वस्थ, शिक्षित स्त्री होती है वह घर निश्चित ही सौधर्म इन्द्र के भवन से ज्यादा सुखकर माना जाता है।

५८८९. वही स्त्री उत्तम सहधर्मिणी है, जिसमें सुपत्नीत्व के सब गुण विद्यमान हो और जो अपने

पति की सामर्थ्य से अधिक व्यय नहीं करती है।

५८९०. विवाहित होना 'पार्ट ऑफ लाइफ' है और विवाहित होकर भी मुस्कुराकर शान्ति से जीना 'आर्ट आफ लाइफ' हैं।

५८९१. शादी वो जख्म है जिसमें चोट से पहले हल्दी लगाई जाती है।

५८९२. लाइफ को सुखी रखने के लिए वाइफ को सुखी रखें।

५८९३. अच्छी स्त्री से विवाह जीवन रूपी तूफान में बन्दरगाह के समान है और बुरी स्त्री से विवाह बन्दरगाह में तूफान के समान हैं।

५८९४. अपनी स्त्री की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करते हुए मनुष्य अपनी सन्तान, चरित्र, कुल, स्वयं को और धर्म को सुरक्षित कर लेता है।

५८९५. नारी विवाह के दिन ही रोती है और पुरुष विवाह के बाद जीवन भर रोता है।

५८९६. जो स्त्री लोकमान्य और विद्वान् पुत्र को जन्म देती है, स्वर्गलोक के देवता भी उसकी स्तुति करते हैं।

५८९७. सोलह वर्ष की होने पर शूकरी जैसी स्त्री भी अप्सरा जैसी लगने लगती है।

५८९८. जिस घर में पति-पत्नी में झगड़ा नहीं होता वहाँ लक्ष्मी निवास करती है।

५८९९. घर बनाने वालों के लिए मेरा यह सूत्र है कि स्वामी से घर की शोभा हो, घर से स्वामी की नहीं।

५९००. बालक अथवा कामिनी स्त्री के किसी कारण से मन में कुपित होने पर उनको मोदकादि भोज्य पदार्थ और अलंकारादि के देने से उनका शरीर प्रफुल्लित रोमांचित हो जाता है और अनेक इष्ट क्रियाओं को करते हुए वे अपने स्वामी के बारे में मधुर भाषण करती हैं।

५९०१. शादी होते ही बेटों की बुद्धि बिगड़ जाती है इसलिए भविष्य के बारे में सोचकर बुढ़ापे के लिए थोड़ा धन बचाकर रखिए।

५९०२. मनुष्य को गुलाम बनाने वाला प्रबल नशा है—काम।

५९०३. परिग्रह, परिचय और परिणय से ही मोक्ष में बाधा है।

५९०४. जो अपने भुजबल से कमाकर अपनी पत्नी को नहीं पाल सकते वे विवाह करने का विचार त्याग दें क्योंकि ससुराल की दौलत पर नजरें रखने वाले विवाह के योग्य नहीं होते हैं।

५९०५. आत्मनिर्भर होने से पहले शादी मत कीजिए, वरना पछताना पड़ेगा।

५९०६. बलात्कार पूर्वक (जबरदस्ती) कन्या का अपहरण करना 'राक्षस विवाह' है।

५९०७. वर के लिए योग्य पदार्थ देकर कन्या देना 'आर्ष विवाह' है।

५९०८. अपनी कमाई का भरोसा रखो, औलाद का नहीं।

५९०९. सहनशीलता और संयम ही गृहस्थ जीवन की गाड़ी के पहिए हैं।

५९१०. सफलता की सड़क पर चलने के लिए अपनी अर्द्धांगिनी का सहयोग लीजिए उसका कंधा आपके कंधे को मजबूत करेगा।

५९११. सास-ससुर के चेहरे में माता-पिता का चेहरा देखिये वे माता-पिता बन जायेंगे।

५९१२. वही सबसे सुखी है, चाहे वह राजा हो या किसान, जो अपने घर में शान्ति पाता है।

५९१३. स्त्री में भला-बुरा दोनों करने की अटूट शक्ति है।

५९१४. स्त्री पुरुष की गुलाम नहीं–सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी और मित्र है।

५९१५. हर पुरुष की तरक्की के पीछे किसी स्त्री का हाथ अवश्य होता है।

५९१६. सच्ची पत्नी पति पर अंकुश नहीं लगाती और पति को अपने हाथों की कठपुतली नहीं बनाती है।

५९१७. यौवनावस्था में नारी गृहदेवी, प्रौढ़ावस्था में सच्ची मित्र, वृद्धावस्था में परिचारिका होती है।

५९१८. नारी प्रेम, त्याग, सेवा और उत्सर्ग भावना द्वारा ही पुरुष पर शासन करती है।

५९१९. नारी की आँखों में कानून से भी अधिक शक्ति होती है और किसी भी तर्क से अधिक प्रभावशाली उसके आँसू होते हैं।

५९२०. एक स्त्री हजारों पुरुषों को सन्मार्ग पर ला सकती है।

५९२१. एक धर्मपत्नी अपने पति को परमेश्वर बना देती है, जैसे चेलना ने श्रेणिक को कल्याण मार्ग पर लगा दिया था।

५९२३. जो नारी अपने पति या पुत्रों को सदैव प्रसन्न रखती है, उसके समक्ष संसार की महारानी का वैभव भी तुच्छ है।

५९२४. यह निर्भ्रांत सत्य है कि बालकों की मानसिक शक्तियाँ स्त्री के स्नेह की छाया में जितनी पुष्ट और विकसित हो सकती हैं, उतनी किसी अन्य उपाय से नहीं।

५९२५. पति अगर गिरता हो, तो उसको संभालना स्त्री का काम है।

५९२६. मनुष्य को विवाह न करना श्रेष्ठ है किन्तु विवाहित स्त्री की उपेक्षा करना उचित नहीं है।

५९२७. **स्त्री की स्वतंत्रता के स्थान–**सन्तान का परिपालन, गृहस्थी के दैनिक कार्यकलाप, शारीरिक श्रृंगार और पति के साथ शयन इन चार कार्यों में ही स्त्रियों को स्वतंत्रता देना चाहिए, अन्य में नहीं। जैसे–अच्छी तरह स्वादिष्ट भोजन कराया हुआ कुत्ता अपवित्र हड्डियों को चबाना नहीं छोड़ सकता, सैकड़ों शिक्षाओं से समझाया गया बन्दर भी अपनी चंचलता नहीं छोड़ता, गन्ने के रस से सींचा गया नीम का वृक्ष अपना कड़वापन नहीं छोड़ता, सर्प मीठा दूध पीने पर भी अपनी विष प्रकृति नहीं छोड़ता ठीक उसी तरह वेश्याएँ भी धन के लोभ से अपनी व्यभिचार कराने की प्रकृति नहीं छोड़ सकती, स्त्रियाँ

अपनी चंचलता नहीं छोड़ सकतीं अतः इनसे सदा दूर रहना चाहिए। (श्री सोमदेव सूरि- 'नीतिवाक्य')

५९२८. जो मनुष्य भूख, प्यास और मलमूत्रादि के वेग को रोककर स्त्री सेवन करता है उससे रोगी संतान उत्पन्न होती है।

५९२९. अमावस्या, पूर्णिमा, अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व के दिन प्रातः सायंकाल की संधि बेला और चन्द्रग्रहण आदि से दूषित दिन में अपनी विवाहित स्त्री के साथ भी विषय सेवन न करें।

५९३०. कामासक्त होकर भी रजस्वला से समागम न करें और न ही उसके साथ एक शय्या पर शयन करें क्योंकि रजस्वला से समागम करने वाले पुरुष की प्रज्ञा, तेज, बल, दृष्टि और आयु भी क्षीण हो जाती है किन्तु रजस्वला से दूर रहने वाले की प्रज्ञा, तेज, बल, दृष्टि व आयु बढ़ती है।

५९३१. स्त्रियों में स्वभाव से ही मायाचारी पायी जाती है।

५९३२. गायक-वादक में तालमेल न हो तो संगीत शोर गुल बन जायेगा उसी प्रकार पति-पत्नि में तालमेल न हो तो गृहस्थी महाभारत बन जायेगी।

५९३३. पुण्य संचय करने वाली स्त्रियों में पति का अति प्रेम रहता है।

५९३४. बाला स्त्री खेलने के समय दिये फल और भोजन से प्रसन्न होती है, जवान स्त्री वस्त्र और आभूषणादि से हर्षित होती है, प्रौढ़ स्त्री रति क्रीड़ा की कुशलता से प्रमुदित होती है और वृद्ध स्त्री मधुर भाषण तथा आदर सत्कार से अनुरक्त होती है।

५९३५. स्त्री संसर्ग संयम रूपी जीवन का विनाशक होने से विष के समान है।

५९३६. जो स्त्री आज्ञाकारिणी हो, संतुष्ट हो, दक्ष हो, साध्वी हो, पतिव्रता हो तथा विदुषी हो वह श्रेष्ठ लक्ष्मी होती है, इसमें संशय नहीं है।

५९३७. स्त्री रूपी अग्नि के संयोग से पुरुषों का धैर्य, वीर्य के छल से घी के समान द्रवीभूत हो जाता है, पिघल कर बहने लगता है और विवेक पारे के समान कहीं चला जाता है।

५९३८. संसार में स्त्री अविश्वास की पात्र होती है।

५९३९. जिन्होंने शास्त्र ज्ञान में अपना उपयोग लगाया है, जिनका समय प्रशम, यम, तप और ध्यान में व्यतीत होता है, जिन्होंने सदा के लिए परिग्रह का त्याग किया है, जो निर्मल गुणों के समूह हैं, ऐसे मुनि भी स्त्रियों के स्तन, जघन और मुख के देखने से भग्न हो मोहरूपी सागर में निमग्न होते हुए सुने जाते हैं।

५९४०. स्त्रियाँ मायाचारी से देवों के गुरु को भी ठग लेती हैं।

५९४१. जब स्त्रियों का लेश मात्र संकल्प भी मन में मदन ज्वर को बढ़ा देता है, तो उनकी निकटता क्या चारित्र रूपी लक्ष्मी से नष्ट भ्रष्ट नहीं करेगी?

५९४२. याद रखिये जिन्दगी में वह सुखी नहीं हुआ, जिन्हें श्रेष्ठ जीवन साथी मिला, सुखी तो वे हैं जिन्होंने अपने साथी को श्रेष्ठ बना लिया है।

५९४३. कभी सोचा है कि पत्नी को बेगम क्यों कहते हैं? क्योंकि शादी के बाद सारे गम पति के हिस्से में आ जाते हैं अतः पत्नि बेगम हो जाती है।

५९४४. विवाह को एक पिजँड़े के सदृश कहा जा सकता है, इसके बाहर के पक्षी प्रवेश न कर पाने से परेशान रहते है और अंदर के पक्षी बाहर न हो पाने से परेशान रहते हैं।

५९४५. शीघ्रता में विवाह करने पर लोग फुरसत से पश्चाताप करते हैं।

५९४६. देखने की अपेक्षा दूसरे से उसके बारे में सुनकर पत्नी का चुनाव करना चाहिए।

५९४७. जिस घर में पति-पत्नि एक दूसरे के प्रति समभाव नहीं रखते, वहीं दरिद्रता का निवास होता है, वहाँ उन दोनों का जीवन निष्फल होता है।

५९४८. वही भार्या उपयुक्त है जो पवित्र और कार्य कुशल है, पतिव्रता है, पति से प्रेम करने वाली है और सदा सत्य बोलती है।

५९४९. काम से पीड़ित लोग जड़ और चेतन पदार्थों के सम्बन्ध में स्वभावतः विवेक-शून्य हो जाया करते हैं।

५९५०. स्त्री यदि प्रसन्न रहे तो सारा कुल प्रसन्न रहता है और यदि स्त्री दुःखी रहती है तो सब कुछ बुरा लगता है।

५९५१. गृहस्थी के संचय में और स्वार्थ की उपासना में तो सारी दुनिया मरती है।

५९५२. जो पत्नि अपने पति का अपमान करती है, उसे लोक परलोक में कहीं शान्ति नहीं मिल सकती है।

५९५३. जो घर के काम-धन्धे में निपुण है, जो संतानवती है, जो मात्र पति को ही सब कुछ समझती है और जो पतिव्रता है, वही सच्ची भार्या है।

५९५४. जिसकी पत्नी अनुकूल है, उसका स्वर्ग यहीं है और जिसकी पत्नी प्रतिकूल है उसका नरक यहीं है।

५९५५. पति और पत्नी का एक दूसरे पर मृत्यु पर्यन्त पूर्ण विश्वास हो, संक्षेप में यही उनके लिए श्रेष्ठ धर्म है।

५९५६. अनुराग के बिना विवाह का कोई अर्थ नहीं होता है।

५९५७. विवाह एक जुआ के समान है, जिसमें पुरुष को अपनी स्वतंत्रता एवं स्त्री को अपनी प्रसन्नता दाँव पर लगाना पड़ती है।

५९५८. पूर्वजों की कीर्ति की रक्षा, देवपूजन, अतिथि सत्कार, बन्धु बान्धवों की सहायता और आत्मोन्नति ये गृहस्थ के पाँच कर्म हैं।

५९५९. जो लोग अपनी स्त्री के चरणों की अर्चना में ही लगे रहते हैं, वे कभी भी महत्त्व को प्राप्त

नहीं कर सकते हैं और जो महान् कार्यों के करने की अभिलाषा रखते हैं, वे ऐसे निकृष्ट प्रेम के पाश में नहीं फँसते हैं।

५९६०. जिन लोगों के विचार महत्त्वपूर्ण कार्यों में रत हैं और जो सौभाग्य लक्ष्मी के कृपा पात्र हैं, वे अपनी स्त्री के मोहजाल में फँसने की कुबुद्धि नहीं करते हैं।

५९६१. विषयों में स्वाद कम है, बन्धन अधिक है, केवल अतृप्ति है, सज्जनों द्वारा निन्दा होती है और पाप निश्चित है, ऐसा समझकर कौन व्यक्ति काम नामक विष को ग्रहण करेगा?

५९६२. बुराई का त्याग करना, भलाई को स्वीकार कर पालन करना ही श्रेष्ठ चक्रवर्ती व्रत है क्योंकि व्रत बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता का द्वार है।

७४. सराहना से भी प्रभावना

५९६३. योग्यताएँ आलोचना के तुषार से कुम्हला जाती हैं परन्तु प्रोत्साहन की खाद से वे योग्यताएँ फलने-फूलने लगती हैं।

५९६४. भोजन छोड़ दोगे तो जिंदा नहीं रहोगे, भजन छोड़ दोगे तो कहीं के नहीं रहोगे।

५९६५. जो लोगों की प्रशंसा करता है वह लोगों को अपने वश में कर लेता है, फिर लोग उससे इतना प्रेम करने लगते हैं कि उसके दुःख को अपना दुःख समझने लगते हैं।

५९६६. प्रतिद्वंदी द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है।

५९६७. यदि तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी प्रशंसा करे तो पहले तुम उसकी प्रशंसा करो।

५९६८. मानव प्रकृति में सबसे कठिन त्याग प्रशंसा प्राप्त करने की लालसा का त्याग करना है।

५९६९. किसी के गुणों की प्रशंसा के साथ उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

५९७०. मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशंसा और प्रोत्साहन द्वारा किया जा सकता है।

५९७१. अपने मित्रों को एकान्त में बुरा-भला कहो, परन्तु उनकी प्रशंसा सबके सम्मुख करो।

५९७२. अपनी प्रशंसा सुनकर जो वास्तविकता को भूल जाते हैं, वे महामूर्ख हैं। अपनी निन्दा सुनकर मनुष्य अपने आपको सम्भालता है और प्रशंसा सुनकर स्वयं को खो देता है। प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होना एक बड़ा अवगुण है।

५९७३. आप आम आदमी को आसानी से प्रेरित कर सकते हैं, यदि आप उसे यह बतायें कि आप उसकी किसी खास योग्यता के लिए उसका सम्मान करते हैं।

५९७४. लोग आपका कहा काम तभी करेंगे जब आप उसकी तारीफ (प्रशंसा) से बात शुरू करें।

५९७५. प्रत्येक व्यक्ति के दिल की गहराई में यह लालसा छुपी होती है कि उसे सराहा जाये, उसकी तारीफ की जाये।

५९७६. आलोचक भी अपनी प्रशंसा से ज्यादा खुश होते हैं।

५९७७. प्रशंसा की ठण्डी आग वज्र को भी पिघला देती है।

५९७८. प्रशंसा का ठण्डा जल महाक्रोध की आग को भी बुझा देता है।

५९७९. प्रशंसा का भूखा व्यक्ति कभी अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा सकता है, अकारण प्रशंसा उसे कमजोर बना देती है।

५९८०. प्रोत्साहित करना मृत में भी जीवन का संचार करना है, हतोत्साहित करना मरे को भी मारना है।

५९८१. भोगभूमि से कर्मभूमि के आने पर जीवों को षट्कर्म का उपदेश देकर कर्मयुग का प्रवर्तन कर विचलित प्राणियों को स्थिरता देने के कारण आदिनाथ प्रथम वंदनीय हैं।

५९८२. सुखार्थी का प्राण भक्ति है, प्रार्थना करें प्रभो कलुषता से बचाओ।

५९८३. प्रभु का स्मरण मोह सागर में डूबते हुए को सफल जहाज है।

५९८४. भगवान् के गुणों में अनुराग करो, व्यवहार के काम तुम्हें शान्ति नहीं पहुँचायेंगे।

५९८५. हे प्रभो! आप देना चाहते हैं तो मुझे कोई चाह उत्पन्न न हो क्योंकि स्वरूप से बढ़कर कुछ नहीं है।

५९८६. जिसकी कुण्डली में मंगल हो, वह हमेशा नमः सिद्धेभ्यः का जाप करें।

५९८७. जिनेन्द्र भगवान् के स्मरण मात्र से शोक, क्लेश, भय, शाकिनी, दरिद्रता, रोगादि नष्ट हो जाते हैं।

५९८८. जो जीव णमोकार का पाठ प्रतिक्षण करता रहता है, उसका नियम से समाधिमरण होता है।

५९८९. जो जन्म-मरण का भाजन न होने दे वह है भजन।

५९९०. जैसे थोड़ी सी भी औषधि भयंकर रोग को शांत कर देती है और जैसे थोड़ा सा अमृत भी मृत्यु के भय को दूर कर देता है वैसे ही थोड़ी सी भी ईश्वर की स्तुति बहुत से पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देती है।

५९९७. उसकी जय कभी नहीं हो सकती जिसका दिल पवित्र नहीं है।

७५. संघे शक्तिः कलौ युगे

५९९८. अनुशासन मात्र अपने जीवन को नहीं अपितु परिवार, समाज, देश व सम्पूर्ण विश्व को उज्ज्वल करता है।

५९९९. अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है, न संस्था, न राष्ट्र, वास्तव में अनुशासन ही संगठन की कुंजी है और प्रगति की सीढ़ी है।

६०००. एकता से हमारा अस्तित्व कायम रहता है और विभाजन से हमारा पतन होता है।

६००१. आपको यदि संसार में सुखी रहना है तो समझौता करना सीख लो।

६००२. एकता रहित समाज बिना शक्कर की चाय के समान है।

६००३. शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धि से अपना सम्बन्ध न रखना ही सच्चा एकान्त है।

६००४. दुनिया परिकल्पनाओं और विचारों से नहीं अपितु जनमत से चलती है।

६००५. जलती हुई लकड़ियाँ अलग होने पर धुँआ फेंकती हैं और एक साथ रहने पर प्रज्वलित हो उठती हैं ठीक इसी प्रकार जातिबंधु से फूट होने पर दुःख और एकता रहने पर सुख प्राप्त होता है।

६००६. यदि नौकर के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए तो बदले में वे भी मालिक को आत्मीय प्यार दे सकते हैं।

६००७. अपने विचारों को अपना कारावास मत बनाओ।

६००८. शान्ति को डंडे के बल पर स्थिर नहीं किया जा सकता, वह तो केवल पारस्परिक समझौते से ही लाई जा सकती है।

६००९. संगठन आधुनिक युग का एक कारगर हथियार है।

६०१०. संगठन के द्वारा छोटे-से-छोटे लोग भी बड़े से बड़ों को मात दे सकते हैं।

६०११. निर्बलों को बलवान बनाना हो तो संगठन का मन्त्र फूँक दो।

६०१२. यद्यपि शहद की मक्खियाँ कमजोर होती हैं, फिर भी वे सब मिलकर मधु निकालने वाले का प्राण तक ले लेती है, वैसे ही निर्बल पुरुष भी इकट्ठे होकर बलवान् शत्रु का नाश कर सकते हैं।

६०१३. यदि कोई हजार रुपये का नोट दे तो सभी लेने को तैयार हो जाते हैं किन्तु यदि वह उस नोट के टुकड़े-टुकड़े कर दे और फिर दे तो कोई लेने को तैयार नहीं होता इसका अर्थ अखंड की कीमत है, अखंड में शक्ति है, अतः हम सभी को एक होकर रहना चाहिए।

६०१४. तख्त पर नहीं, वक्त पर एकता की और संगठन की सक्त जरूरत होती है।

६०१५. संगठन में शक्ति है, अतः अपने सच्चे साथी बनाइये।

६०१६. संगठन, एकता वह शक्ति है, जिसके माध्यम से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।

६०१७. इस युग में संघ में ही शक्ति निहित है और संघ-निर्माण संस्थाओं को बनाकर ही किया जा सकता है।

६०१८. दिल से दिल न मिले पर हाथ से हाथ मिलाते रहे तो समर्पण का मार्ग खुल सकता है।

६०१९. उस जाति की स्थिति कितनी दयनीय है जो परस्पर वैमनस्य के कारण कई सम्प्रदायों में बँट चुकी है और हर सम्प्रदाय स्वयं को एक जाति मानने लगा है।

६०२०. सम्प्रदाय और संगठन स्वयं को स्वयं से बाहर कर देते हैं।

६०२१. सम्प्रदाय को मानने वाला कोई अपनी मान्यता नहीं बदलता है।

६०२२. सामंजस्य कीजिए इसी से सुखों का स्वर्ग बनेगा।

६०२३. जिस घर परिवार में सभी लोग प्रसन्न रहते हैं वह घर पृथ्वी पर स्वर्ग है और जहाँ सभी आपस में संघर्ष करते हैं, झगड़ते हैं वह घर नरक है।

६०२४. जब नाखून बड़े होते हैं तब नाखून ही काटे जाते हैं अंगुलियाँ नहीं, इसी प्रकार अगर रिश्तों में दरार आ जाये तो दरार मिटाइये रिश्तों को नहीं।

६०२५. बहुमत सदैव सर्वोत्तम सटीक प्रत्युत्तर है।

६०२६. जो कानून के साथ है वह बहुमत में है।

६०२७. व्यक्ति और परमात्मा मिलकर बहुमत हो जाता है।

७६. त्याग करो मन से करो

६०२८. जो हाथ से छूटे वह त्याग और जो हृदय से छूटे वह वैराग्य, त्याग और वैराग्य में यही अंतर है।

६०२९. कुल की रक्षा के लिए एक मनुष्य का, ग्राम की रक्षा के लिए कुल का, देश की रक्षा के लिए गाँव का और आत्म कल्याण के लिए सारी पृथ्वी का त्याग कर देना चाहिए।

६०३०. अच्छी समाधि होना साधु की सच्ची त्याग तपस्या का फल है।

६०३१. खोटी सलाह से राजा, परिग्रह से साधु, लाड़-प्यार से पुत्र, बिना अध्ययन से ब्रह्मण, कुपुत्र से कुल, दुर्जन की सेवा से शील, स्नेह न करने से मित्रता, अनीति से समृद्धि, अधिकतर प्रवास से स्नेह, मदिरापान से लज्जा, देखभाल न करने से खेती और प्रमाद करने से त्याग रूपी धन नष्ट हो जाता है।

६०३२. समस्त शास्त्रों में पाँच प्राणी जीवित रहते हुए भी मृत कहे हैं- दरिद्र, बीमार, मूर्ख, परदेश में रहने वाला और नित्य सेवा करने वाला।

६०३३. जिसका स्वतः वियोग हो रहा है, उसके संयोग की इच्छा का त्याग कर दें-इसका नाम 'योग' है।

६०३४. मुझको मिल जाये, यह भोग है और दूसरों को मिल जाये, यह योग है।

६०३५. रात्रि भोजी सदा कुरूप, विकलांग, अल्पायु, रोग पीड़ित, भाग्यहीन और धरमहीन होता है तथा मरकर उल्लू, काक, बिलाव, गीध, सांवर, साँप बिच्छू तथा गोह होते हैं।

६०३६. रात्रि भोजन के लोभी मनुष्य परभव में तिर्यंच तथा नरकादि गतियों में अन्धे बौने, विकलांग, अल्पायु, शोक, क्लेश, विषाद तथा दुःखों से परिपूर्ण कोढ़ आदि रोगों से सहित, दरिद्रता पीड़ित, अत्यन्त चंचल, अल्प आदर वाले होते हैं।

६०३७. मांस खाने वाला जीव भव-भव में अल्पायु, विकलांग, रोगी, बहरा, दुर्जन, बौना, कोड़ी और नपुंसक होता है।

६०३८. भोजन, भजन और प्रवचन के पहले संक्लेश उत्पन्न होने वाली बात नहीं सुनना चाहिए।

६०३९. देश बदला, भेष बदला, नाम बदला, निवास बदला पर जिन भावों को बदलने के लिए ये सब बदला वे नहीं बदले तो कुछ नहीं बदला।
६०४०. रात्रि में जीवादि के न दिखने से पानी को पीना भी योग्य नहीं है और फिर पान सुपारी तथा फलादि का भोजन भक्ष्य कैसे हो सकता है ?
६०४१. रात्रि में चारों प्रकार के आहारों का त्याग करने से आधे उपवास का फल जिनेन्द्र भगवान् ने कहा है–एक साल में १८३ उपवास का फल मिलता है।
६०४२. हम साधु के सामने इसलिए सिर झुकाते हैं कि उनमें त्याग का बल है।
६०४३. जिसके घर में माता अथवा प्रिय बोलने वाली पत्नि नहीं है, उसे वन में चले जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए जैसा वन वैसा घर।
६०४४. तपस्या में क्षय पहले है और अक्षय बाद में प्राप्त होता है।
६०४५. त्याग और उपलब्धि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
६०४६. दूसरों से झगड़ा करने की आदत एवं उद्दण्डपने की भावना को दूर करदो तो तुम्हें सर्वोत्तम आनन्द और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।
६०४७. धन बुरा नहीं, धन की आकांक्षा बुरी होती है।
६०४८. अधिकांश लोगों को सन्त चरणों में आकांक्षा ही झुकाती है।
६०४९. आकांक्षा की अग्नि में सुख की आहूति देना मूर्खता है।
६०५०. आकांक्षा अशान्ति का कारण है।
६०५१. आकांक्षा ही पाप की जननी है। अहंकार पाप का जनक है।
६०५२. आवश्यकताएँ सीमित किन्तु आकांक्षाएँ असीमित होती हैं।
६०५३. तीव्र आकांक्षा में उचित-अनुचित के विचारने की क्षमता खो जाती है।
६०५४. संसार में खुश रहने के लिए एक ही उपाय है अपनी आवश्यकताओं को कम रखें।
६०५५. आदमी की आवश्यकताओं की पूर्ति तो हो सकती है, परन्तु आकांक्षाओं की नहीं।
६०५६. गरीब वह है जिसका खर्च आमदनी से ज्यादा है।
६०५७. यदि गलती को छिपाया तो वह विष के समान अपना प्रभाव बढ़ाती जाएगी।
६०५८. तुम्हारा अन्तिम ध्येय शान्ति है, उसे प्राप्त करने का उपाय त्याग और तप है।
६०५९. जिस क्षण हम पापों का त्याग अंतरंग से कर देते हैं, उसी क्षण हमें धर्म की प्राप्ति हो जाती है।
६०६०. मनुष्य खुद तो भोगी बनता है, पर दूसरों को त्यागी देखना चाहता है, यह अन्याय है। यदि उसे त्यागी अच्छा लगता है तो वह खुद त्यागी क्यों नहीं बनता ?
६०६१. यदि आप कुछ पाना चाहते हैं तो आपको कुछ-न-कुछ त्याग करना ही पड़ेगा।
६०६२. सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए सम्पत्ति की जरूरत नहीं, उसके लिए त्याग व सेवा

ही काफी है।

६०६३. त्याग के सिवा संसार में कोई दूसरी शक्ति नहीं है।

६०६४. माया को छोड़ने वाला व्यक्ति समस्त सिद्धियों का स्वामी बन जाता है।

६०६५. सच तो यह है कि त्याग मार्ग से दूर रहकर सुख पाने की परिकल्पना मात्र बन्ध्या के पुत्र सी निरर्थक है।

६०६६. पैसे का त्याग आसान है सुविधा का त्याग करना कठिन है।

६०६७. विराट को पाने के लिए क्षुद्र को छोड़ना पड़ता है जैसे महल को बनाने के लिए झोपड़ों को मिटाना ही पड़ता है।

६०६८. त्याग से अनेक प्रकार के सुख उत्पन्न होते हैं, इसलिए अगर तुम उन्हें अधिक समय तक भोगना चाहो तो शीघ्र त्याग करो।

६०६९. त्याग का मतलब यह नहीं कि मोटे और तंग वस्त्र धारण कर लिए जाएँ त्याग तो यह है कि अपनी प्रतिष्ठा, इच्छाओं को जीता जाए।

६०७०. कोई भी त्याग बदले की भावना से नहीं करना चाहिए।

६०७१. दानी को राजा और त्यागी को महाराज कहा जाता है।

६०७२. त्याग के बिना स्वाधीनता की प्राप्ति नहीं होती है।

६०७३. जितना भी भीतर से त्यागोगे, उतना ही सुख पाओगे।

६०७४. त्याग का स्वभाव दयालु है तो दान का स्वभाव ममतामय है।

६०७५. परमात्मा की मंजिल वैभव की सीढ़ियों से नहीं तप-त्याग-संयम की पावन सीढ़ियों से प्राप्त होती है।

६०७६. अगर इन्द्रिय सुख की इच्छा है तो पाप करना न चाहते हुए भी पाप होगा, इन्द्रिय सुख की इच्छा ही पाप करना सिखाती है, अतः पापों से छूटना हो तो इन्द्रिय सुख की इच्छा का त्याग करो।

६०७७. राग इंसान को शैतान बना देता है।
वैराग्य इंसान को महान् बना देता है ॥
त्याग से डरने वालों को शायद पता नहीं है।
त्याग इंसान को भगवान् बना देता है ॥

६०७८. इस जगत् में मेघ के बिना वृष्टि नहीं होती, बीज के बिना अंकुर नहीं होता, तप के बिना कर्म क्षय नहीं होता और रत्नत्रय के बिना मोक्ष नहीं होता है।

६०७९. मिलने से नहीं त्यागने से माँगना (याचना) मिटता है।

६०८०. मोही मुनि से निर्मोही गृहस्थ और मोही गृहस्थ से निर्मोही जानवर मोक्षमार्गी हैं।

६०८१. जो संत के कहने पर त्याग नहीं करते उन्हें फिर डॉक्टरों के कहने पर त्यागना पड़ता है।

६०८२. इच्छा से पहले संतोष नहीं है अन्यथा इच्छा ही क्यों होती है ? इच्छा के समय भी संतोष नहीं अन्यथा संतप्त क्यों होता? इच्छा के बाद भी संतोष नहीं अन्यथा चेष्टा करके व्याकुल नहीं होता, इच्छा के पूर्व, वर्तमान व भावी तीनों रूप दुःखदायी है, अतः इच्छा त्यागो।

६०८३. ख्याति के त्याग के उपदेश में यदि ख्याति का उद्देश्य रहा, तब व्रती का वेश निरर्थक है।

६०८४. त्याग वही उत्तम है जिसमें पर की प्रतीक्षा व आशा न करनी पड़े।

६०८५. आत्म शान्ति के लिए परिचय, उपकार, कषाय व विषयाभिलाषा छोड़ना होगी।

६०८६. सर्व का त्याग ही सुख है सर्व संग्रह करने वाले सुखी नहीं हो सकते हैं।

६०८७. राग-द्वेष का त्याग ही सच्चा त्याग है, केवल भेष तो दम्भ है और परवस्तु के त्याग से ही संतुष्ट हो जाना मिथ्या अन्धकार है।

६०८८. परद्रव्य के संसर्ग के त्याग में शान्ति और सुख है।

६०८९. पर द्रव्य के भोग, संयोग में नहीं तत्सम्बन्धी इच्छा के अभाव से सुख होता है।

६०९०. भोजन सिर्फ आहार नहीं सेहत भी है, सिर्फ भोजन नहीं अमृत भी है, खाने के लिए नहीं किन्तु जीने के लिए खाए, जीभ जो माँगे वह न दें, पेट जो माँगे वह दें।

६०९१. जिसको त्याग के संस्कार हैं, उसे त्याग में सुख मिलता है।

६०९२. अन्तःकरण की पवित्रता दुर्गुणों के त्याग करने से होती है।

६०९३. छोड़ने में आनंद आता है और छूटने में कष्ट होता है, अतः सब छूटे उसके पहले ही सब छोड़ देना चाहिए।

६०९४. यदि कामना और वासना का त्याग न हो तो सब व्यर्थ है।

६०९५. जीवन के अंतिम समय में जो कार्य हम नहीं करना चाहते उन्हें आज ही स्थगित कर दें... और जो कार्य करने जैसा लगे उसे आज से ही करना प्रारम्भ कर दें, अन्त में नहीं।

६०९६. जो मनुष्य को ठगने में चतुर, दूसरों से प्रेम करने वाली, पाप युक्त तथा कपट आदि सैकड़ों दुर्गुणों की खान ऐसी वेश्या नरक का घर होती है।

६०९६. वेश्या त्यागी व्यक्ति को निज हित के लिए नृत्य, गायन, वादन में आसक्ति, कुसंगति, निष्प्रयोजन भ्रमण आदि को छोड़ देना चाहिए।

६०९७. पराई वस्तु लेना ही चोरी नहीं अपितु कर न चुकाना, रिश्वत लेना, मिलावट करना आदि भी चोरी है। 'कर' चोरी करने वाला भारत के १४० करोड़ लोगों की चोरी करता है।

६०९८. मुक्ति के इच्छुक को विषयों को विष के समान छोड़ देना चाहिए।

६०९९. झूठी प्रशंसा से प्रसन्न होना अपने पतन के द्वार खोलना है।

६१००. रागी जीव कभी मरना नहीं चाहता यहाँ तक कि नाली का कीड़ा भी, इसलिए निर्ग्रन्थ साधु सबसे पहले राग छोड़ते हैं।

६१०१. समाधि में सबसे बड़ी बाधा वैर और आशा है।

६१०२. संसार में तो सुख के लिए बहुत कुछ जुटाना पड़ता, कमाना पड़ता, संग्रह करना पड़ता, परन्तु आत्मिक सुख के लिए सब कुछ छोड़ना पड़ता है।

६१०३. चारण, बन्दी, नीच, नाई, माली और भिक्षुओं के साथ बुद्धिमान मनुष्यों को मन्त्रणा नहीं करना चाहिए।

६१०४. जैसे श्लेष्म में पड़ी मक्खी मर जाती है, वैसे ही परिग्रह में पड़ा साधु भी मर जाता है

६१०५. पुद्गल के टुकड़ों का राग जिनमुद्रा को बदनाम व बर्बाद करता है।

६१०६. जैसे सोने से भी कठोर वज्र को भी अग्नि पिघला देती है वैसे ही स्त्री भी अपनी शक्ति से सभी को पिघला सकती है।

६१०७. लोगों की जितनी बुद्धियाँ भ्रष्ट हुई हैं, हो रही हैं और भविष्य में होगीं, वे सब श्री (लक्ष्मी) और श्रीमती के कारण हुई हैं।

६१०८. जो कुबुद्धि जन पर्व के दिन उपवासादि चारित्र को छोड़कर कामादि सेवन करता है वह निश्चय ही नरक का स्वामी होता है।

६१०९. मैंने अब जाना कि त्याग से बड़ा सुख नहीं है, विद्या के समान नेत्र नहीं है तथा समीचीन दृष्टि के समान बल नहीं है।

६११०. मनुष्य जब एक नियम तोड़ता है तो दूसरे नियम अपने आप टूट जाते हैं।

६१११. निराहार रहने के समान कोई तपस्या नहीं, ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं।

६११२. संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं।

६११३. उपवास करने से चित्त अन्तर्मुखी होता है, दृष्टि निर्मल होती है और देह हल्की बनी रहती है, पाप का नाश और पुण्य का बंध होता है।

६११४. कर्म यदि अभिमान पूर्वक किया जाए तो सफल नहीं होता हैं, त्यागपूर्वक किया हुआ कर्म महान् फलदायक होता है।

६११५. त्याग और तपस्या तुम्हारे मुख मण्डल पर अंकित हो और तत्परता और क्रियाशीलता तुम्हारे कामों पर हो।

६११६. पापजाल से विमुक्त ही ब्राह्मण है, शान्त गुणों से भूषित व्यक्ति श्रमण है, आशाओं को छोड़ने वाला ही संन्यासी है, सत्य रूपी भूषण से भूषित व्यक्ति ही साधु है।

६११७. दो ही अपने विपरीत कर्म के कारण शोभा नहीं पाते, अकर्मण्य गृहस्थ तथा प्रपंच में लगा हुआ संन्यासी।

६११८. गृहस्थ जीवन स्नेह एवं धर्म युक्त हो तो वही उसका सौन्दर्य एवं फल होता है।

६११९. भले ही सब इन्द्रियों को वश में कर लिया हो परन्तु जब तक रसना को अपने वश में नहीं किया तब तक मनुष्य जितेन्द्रिय नहीं हो सकता, एक जिह्वा को जीत लिया तो सभी

को जीत लिया।

६१२०. जो मन, वाणी और कर्म से पाप नहीं करते हैं, वे ही महात्मा तपस्वी हैं मात्र शरीर सुखा देना ही तपस्या नहीं है।

६१२१. अर्थ संचय की अपेक्षा तप संचय श्रेष्ठ है क्योंकि तप से कुछ भी असंभव नहीं है।

६१२२. जहाँ तप है वहाँ नियम से संयम है और जहाँ संयम है वहाँ नियम से तप है

६१२३. तप से होगा क्या लाभ, जब दुष्कर्म में ही लीन हो।

६१२४. तपस्या में उमंग सहित लीन व्यक्ति के लिए यम पर विजय प्राप्त करना भी संभव है।

६१२५. उदार मनुष्य के लिए धन तृण के समान है, शूरवीर के लिए मरना तृण के समान है, विरक्त के लिए पत्नि तृण के समान है और निस्पृह व्यक्ति के लिए सारा जगत् ही तृण के समान है।

६१२६. कोई मनुष्य त्याग किए बिना सुख नहीं पाता, त्याग किए बिना परमात्मा नहीं बनता, त्याग किए बिना निर्भय सो नहीं सकता, इसलिए तुम भी सब कुछ त्याग कर सुखी हो जाओ।

६१२७. अच्छे व्यवहार छोटे-छोटे त्याग से बनते हैं।

६१२८. प्राणियों की हिंसा व मांस भक्षण से विरक्त होना सैकड़ों यज्ञों में आहुति देने से बढ़कर है।

६१२९. मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है।

६१३०. अपने पास कुछ भी न रखना यही व्रती का नियम है एक वस्तु को भी अपने पास रखना मानो उन बन्धनों में फिर आ फँसना है जिन्हें मनुष्य एक बार छोड़ चुका है।

६१३१. यहाँ भी मनुष्य को स्थिर सुख प्राप्त हो सकता है, यदि वह अपनी इच्छा का ध्वंस कर डाले, क्योंकि इच्छा ही सबसे बड़ी विपत्ति है।

७७. तन मिला तुम तप करो

६१३२. ध्यान के द्वारा जो परिणामों की विशुद्धि होती है, वही शास्त्र स्वाध्याय से होती है।

६१३३. सच्चे तप की पुत्री है समर्पण, भक्ति उसका शृंगार है और चारित्र उसका गहना है।

६१३४. ज्ञान से ज्यादा ताकत ध्यान में लगती है, एक हजार उपवास और एक मुहूर्त का ध्यान बराबर है। प्रीति बहुत सारे लोग दे सकते हैं प्रसन्नता नहीं।

६१३५. ज्ञान से ध्यान की सिद्धि होती है, ध्यान से कर्मों की निर्जरा और निर्जरा से मोक्ष होता है। अतः ज्ञानाभ्यास करते रहना चाहिए।

६१३६. जो वचन द्वारा मुनियों का अनादर करते हैं, वे दूसरे भव में गूंगे होते हैं जो मन से अनादर करते हैं उनकी स्मरण शक्ति नष्ट हो जाती है, जो शरीर से तिरस्कार करते, उन्हें ऐसे कौन से दुःख हैं, जो प्राप्त नहीं होते हैं?

६१३७. धैर्य धारण करना, क्षमा धारण करना, ध्यान करने में सदा तत्पर रहना और परीषह आने पर मार्ग से च्युत नहीं होना ये व्रतों की भावनाएँ हैं।

६१३८. जैसे तिल का सार तैल है, दूध का सार घृत है, फूल का सार इत्र है, वैसे ही द्वादशाङ्ग का सार णमोकार है, यह अनादि अनिधन मन्त्रराज समस्त अंगों, पूर्वों तथा जिनशासन का श्रेष्ठ सार है। (पार्श्वनाथ चरित)

६१३९. जिस उत्साह से संयम लिया था, उस उत्साह से पालन नहीं किया, अतः समाधि में कठिनाई आ रही है या समाधि बिगड़ रही है।

६१४०. आपने जीवन में क्या-क्या किया, कितने धर्मात्मा थे, इसका निर्णय अंतिम समय में होता है।

६१४१. तन के साधु बहुत हैं पर विषयों से रिक्त मन वाले साधु विरले होते हैं।

६१४२. साधक एकान्त में बनता भी है और चार संज्ञाओं से बिगड़ता भी है।

६१४३. जैसे सर्प के पास मणि, हाथी के पास मोती, श्रावक के पास सम्पत्ति न हो तो उसकी कीमत नहीं, वैसे ही साधु के पास समता नहीं तो कुछ नहीं है।

६१४४. वस्त्र उतरा वासना नहीं उतरी, कमाना छोड़ा कामनाएँ नहीं छूटी, भाइयों को छोड़ा भक्तों से दूर नहीं हुए तो भी आत्मानुभूति का आनंद नहीं आयेगा।

६१४५. समता, सहजता, सरलता, वैराग्य, संयम ही साधुता की पहचान है।

६१४६. देह के लिए अनंत भव दे दिये, अब निज आत्मा के लिए एक वर्तमान की देह ही दे दो।

६१४७. जैसे किसान घर के घूरे के गोबर को मिट्टी में मिलाकर श्रेष्ठ फसल को उगाता है, वैसे आप भी घूरे रूपी इस शरीर के माध्यम से रत्नत्रय की खेती करके सिद्धि रतन को प्राप्त करो।

६१४८. गुरुओं के दर्शन न करने से सम्यक्त्व की हानि होती है, गुरुओं की आज्ञा भंग करने से आराधना की हानि होती है, समय पर प्रतिक्रमण न करने से व्रत की हानि होती है, साधर्मी की परस्पर वैय्यावृत्ति न करने से धर्म तीर्थ की हानि होती है, तप न करने से निर्जरा की हानि होती है, क्रोध-क्लेश करने से स्नेह की हानि होती है, मान करने से पुण्य की हानि होती है, मायाचार करने से पुण्य और यश की हानि होती है, लोभ से शान्ति की एवं स्त्री की आकांक्षा से ब्रह्मचर्य की हानि होती है।

६१४९. सच्चा धर्म दिखावे और आडम्बर का नाम नहीं है बल्कि मानव सेवा और त्याग भावना द्वारा दीन-दुखियों के आँसू पोंछने और प्यार बाँटने का नाम है।

६१५०. जो पुरुष समझबूझ कर अपनी इच्छाओं का दमन करता है उसे सभी सुखद वरदान प्राप्त होते हैं।

६१५१. घमंड में चूर होकर जिन्होंने तुम्हें हानि पहुँचाई है, उन्हें अपने उच्च व्यवहार से जीत लो।

६१५२. ज्ञानाभ्यासी जीव तीन गुप्ति का धारक जितेन्द्रिय और एकाग्रचित्त होता है इसलिए सम्यग्ज्ञान उत्कृष्ट तप है।

६१५३. समस्त परद्रव्यों की इच्छा को रोकना ही निश्चय से उत्कृष्ट तप करना है।

६१५४. तप-त्याग की औषधि से जन्म-मरण के रोग दूर हो जाते हैं।

६१५५. ब्राह्मण का तप ज्ञान है और क्षत्रिय का तप कमजोर की रक्षा करना है।

६१५६. तप से संसार की बड़ी से बड़ी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

६१५७. तपस्या से असाध्य कार्य भी साध्य हो जाता है।

६१५८. मौन से बढ़कर कोई तप नहीं है।

६१५९. अपनी पीड़ा को शांति से सह लेना और दूसरों को पीड़ा न पहुँचाना ही तपस्या का स्वरूप है।

६१६०. जो विनय से सहित है, गुण शील से युक्त है तथा जिनका चित्त तप में संलग्न है वे मनुष्य निःसन्देह स्वर्गगामी होते हैं।

६१६१. प्रशंसा के समय अध्यात्म दृष्टि रखने वाला प्रशंसा के अभाव में दुःख न पावेगा, अपनी प्रशंसा में रुचि होना पुण्य विनाश करना है और पाप को बुलाना है व संसार में भटकने के लिए अमंगल करना है।

६१६२. जैनदर्शन के व्रत जीने के लिए है मरने के लिए नहीं/यदि जीवन का अंत निश्चित है तो व्रत नहीं तोड़ना चाहिए।

६१६३. जिसे आगे स्वप्नवत् मालूम करना पड़ेगा उसे वर्तमान में स्वप्नवत् समझो तो महती शान्ति प्राप्त होगी, इष्ट समागम में हर्षाभाव की तपस्या करने वालों के अनिष्ट समागम में विषादाभाव की तपस्या करना सरल है।

६१६४. सुखी रहने के लिए हमें अपनी जरूरतों को रेखांकित करना होगा और जो है उसमें संतोष करना होगा।

६१६५. शारीरिक कष्ट सह लेने से आत्मा की हानि नहीं पर मानसिक व्यथा से आत्मा और शरीर दोनों की हानि है।

६१६६. प्रतिकूल कारण मिलने पर भी जो चारित्र व समता से च्युत नहीं होते वे दृढ़ प्रतिज्ञ धर्मवीर कहलाते हैं।

६१६७. इन्द्रिय संयम सब व्रतों का मूल है, जिसकी इन्द्रियाँ वश में नहीं उसका बाह्य व्रत सब निष्फल है तथा वह शान्ति भी नहीं पा सकता है।

६१६८. जिसने मन को वश नहीं किया व इन्द्रियों की दासता की, वह इस भव में दुःखी रहता है एवं उसने मनुष्य जन्म का एक दुर्लभ अवसर खो दिया है।

६१६९. पंचमकाल के मुनि की एक वर्ष की तपस्या और चतुर्थकाल के मुनि की एक हजार वर्ष की तपस्या बराबर होती है।

६१७०. अकेलेपन में जो लाभ है वह अनुभव से ही सिद्ध हो सकता है।

६१७१. जो इन्द्रियों को वश नहीं करता वह अतीन्द्रिय नहीं बन पाता है।

६१७२. जिह्वा को जीते बिना, कामादिक का जीतना असंभव है एवं दीक्षा लेना व्यर्थ है।

६१७३. आचरण से प्रस्तुत उपदेश प्रभावी होता है।

६१७४. एकान्त में जीवन बनता भी बिगड़ता भी, सबके बीच रहते हुए भी एकान्त में रहना साधना है।

६१७५. कर्मों से छूटने के लिए फूट-फूट कर रोने की नहीं, सम्यक् साधना की जरूरत है।

६१७६. जो शक्ति ध्यान में है वह शक्ति संसार में कहीं नहीं है, ध्यानी को तीर्थों में मंदिरों में जाने की आवश्यकता नहीं है।

६१७७. पैसा कमाने में पाप है और पैसा गमाने में भी पाप होता है।

६१७८. ध्यान से जो भी च्युत हुए वे शब्दों के कारण हुए और जो भी ध्यान में गये वह सब शान्ति से गये। अतः कोलाहल रहित स्थान में सामायिक करें।

६१७९. मुनि जो बात हँसी-हँसी में भी कह देते हैं, वह सत्य निकलती है।

६१८०. मुनि कष्ट सहने में वीर किसी बात को सुनने में धीर व निर्णय लेने में गम्भीर होते हैं।

६१८१. मुनि क्रिया करते हैं, प्रतिक्रिया नहीं करते हैं।

६१८२. मौन रहने से साधु के व्रतों की रक्षा होती है।

६१८३. यदि किसी ने धक्का मार दिया या उपसर्ग कर दिया तो हजारों लोग आ जायेंगे किन्तु परिणाम कलुषित हुए, जो विचारों का उपसर्ग अन्दर चल रहा है उससे सगा भाई भी नहीं बचा सकता है, आपको निज भावों की रक्षा स्वयं करनी है।

६१८४. रागी मनुष्यों को वन में भी दोष उत्पन्न होते हैं और पंचेन्द्रिय निग्रह वाले को घर ही तपोवन होता है वैरागी के निष्पाप क्रिया करने से घर भी तपोवन जैसा होता है।

६१८५. रिश्ता दिल में हो शब्दों में नहीं, नाराजी शब्दों में हो दिल में नहीं।

६१८६. समाधि के समय सबसे अशुद्ध विकल्प करने वाली आहार संज्ञा है।

६१८७. अंतिम समय में काम-भोग नहीं सताते हैं, राग और रसना इन्द्रिय सताती है, अतः यदि समाधि करना है तो किसी से राग न करें और रसना पर नियंत्रण रखना चाहिए।

६१८८. स्व कल्याण की भावना से रिक्त, पर-कल्याण की भावना रखने वाला संत कैसे हो सकता है?

६१८९. संतों की तपस्या का एकमात्र लक्ष्य कर्मक्षय होता है।

६१९०. अनुकूलता प्रतिकूलता में राजी-नाराज होना साधक के लिए खास बाधक है, राग-द्वेष

ही हमारे असली शत्रु हैं, राग ठंडक है, द्वेष गर्मी है, दोनों से ही खेती जल जाती है।

६१९१. अनुकूलता-प्रतिकूलता विचलित करने नहीं अपितु अचल बनाने आती है।

६१९२. निर्ग्रन्थ योगी को एकान्त स्थान अच्छा लगता है क्योंकि एकान्त में साधना अच्छी होती है।

६१९३. साधु शरीर की साधना को गौण कर भावों की साधना को प्रधान करता है।

६१९४. साधक को हर समय सावधान रहना चाहिए, सावधान रहने का तात्पर्य किसी से कभी कुछ मत चाहना एवं बुरे कर्मों से बचना है।

६१९५. कोई भी चालक गाड़ी को गड्ढे में गिराना नहीं चाहता है, खराब होने पर सुधार कर आगे बढ़ाता है उसी प्रकार साधक व्रत में दोष लगाना नहीं चाहता है लग जाये तो प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त लेकर मोक्षमार्ग में आगे बढ़ता है।

६१९६. गृहस्थ के द्वारा मरण पर्यन्त जो पाप संचित किया जाता है उन सब पाप को एक रात्रि का दीक्षित साधु नियम से भस्म कर देता है।

६१९७. साधु चलते फिरते तीर्थ और धरती के मूर्तिधारी देवता होते हैं।

६१९८. सिंह भले ही भूख से दुर्बल हो, प्यास से पीड़ित हो, शरीर से शिथिल हो, कष्टमय अवस्था में हो, प्राण नष्ट हो रहे हों फिर भी जीर्ण तृण को नहीं खाता है, उसी प्रकार सच्चा साधु कितना ही कष्टमय जीवन व्यतीत करे किन्तु अपने व्रतों में दोष नहीं लगाता है।

६१९९. जितना परिचय बढ़ेगा उतना विकल्प बढ़ेगा।

६२००. अपने जीवन को अपने में व्यस्त रखना सीख गये तो साधु बन गये।

६२०१. साधु जीवन में जितना पुरुषार्थ अपरिचित रहकर साधना में नहीं करना पड़ता, उतना परिचित को छोड़ने में करना पड़ता है।

६२०२. श्वासें उन्हीं की लम्बी चलती हैं, जिनके भाव विकृत होते हैं, जिनके भाव शान्त होते हैं उनकी श्वासें स्वयमेव ही शान्त हो जाती हैं और यही ध्यान है।

६२०३. तन की अशुचिता मुक्ति में बाधक नहीं मन की अशुचिता मोक्ष के लिए बाधक है।

६२०४. यदि शान्ति चाहते हो तो दूसरों को सुख शान्ति दो, न किसी का दोष देखो और न किसी की निन्दा करो और हरक्षण प्रभु के ध्यान में मग्न रहो।

६२०५. सुविधाओं में हर क्षण सुख मिल सकता पर शान्ति नहीं शान्ति तो धर्म से मिलती है।

६२०६. जो चार ज्ञान से युक्त हैं देवार्चित हैं, निश्चित ही मुक्ति के स्वामी हैं, ऐसे तीर्थंकर भी जब तप करते हैं तब अन्य लोगों को भी तप करना ही चाहिए।

६२०७. जिन्होंने काम भोगों से वैराग्य धारण कर तप और चारित्र की सिद्धि के लिए शरीर को कृश किया है उन्होंने इस शरीर को सफल किया है।

६२०८. देव-शास्त्र-गुरु के दर्शन से नेत्र सफल होते हैं अन्यत्र देखने से नेत्र पाप देने वाले होते हैं।

६२०९. शास्त्र रूपी अमृत का पान करने से कान सफल होते हैं कुशास्त्र सुनने से पाप देने वाले होते हैं।

६२१०. ज्ञानामृत तथा दश धर्म का उपदेश देने की लालसा रखने वाली जिह्वा सार्थक है।

६२११. जिनदेव गुरु पूजक हाथ सफल हैं हिंसा में प्रवृत्त हाथ निष्फल हैं।

६२१२. देव-शास्त्र-गुरु के समक्ष नम्रीभूत मस्तक सफल है अन्यत्र नम्रीभूत मस्तक निष्फल है।

६२१३. देव-शास्त्र-गुरु तथा यात्रादि महातीर्थ के प्रति गमन करने वाले चरण सफल हैं।

६२१४. विवेक, श्रुत से सहित हृदय जिन धर्म में तत्पर प्रशंसनीय है अन्य नहीं।

६२१५. मैं उस शरीर को शरीर मानता हूँ जो चारित्र तथा तप करने में समर्थ है परीषह सहन करने वाला है धीर है अन्य शरीर पाप करने वाला है।

६२१६. हे मित्र! मुक्ति रूपी लक्ष्मी के चित्त को प्रसन्न करने वाली जिनदीक्षा को धारण कर यौवन में समीचीन कठोर तप को करो।

६२१७. पूजा-दान, तप, धर्म, ज्ञान, चारित्र आदि का पालन युवावस्था में भलीभाँति हो सकता है वृद्धावस्था में नहीं।

६२१८. गृह व्यापार से उत्पन्न हुआ पाप जिनेन्द्र भगवान् के पास छूट जाता है, परन्तु जिनेन्द्र भगवान् के पास किये पाप को मूर्ख प्राणी कहाँ छोड़ेगा।

६२१९. तप धर्म आदिक में सम्यग्ज्ञान के अध्यापन दान-पूजा और सद्‌गुरुओं की सेवा में कभी संतोष नहीं करना चाहिए।

६२२०. शरीर दुर्बल होने पर भी जो बुद्धिमान मनुष्य अपने आत्मबल को प्रकट कर तप करते हैं, वे उत्तम पुरुष प्रशंसनीय हैं।

६२२१. जो हिंसादि घर व्यापार को छोड़कर एक भी उपवास करता हैं वह शुद्ध बुद्धि वाला पुरुष चिरकाल के संचित पापों को नष्ट करता है।

६२२२. रात्रि के समय पर्व में अथवा अन्य अवधि तक या जीवनपर्यन्त के लिए इन्द्रियों को वश में करने के लिए व स्वर्ग-मोक्ष सुख हेतु भोजन विषयक नियम अवश्य करें।

६२२३. मुक्ति स्त्री वरने योग्य है क्योंकि वह मरण को प्राप्त नहीं होती है।

६२२४. चारित्र तथा दान करने वाले सम्यग्दृष्टि जीव मुक्ति की इच्छा करते हैं अन्य सुख की नहीं जिस प्रकार गृहस्थ बीज बोता है तो उससे बहुत फल की इच्छा करता है तृणादिक की नहीं। ''इन्द्र, चक्रवर्ती पद विनश्वर है।''

६२२५. अन्तरंग और बहिरंग में अन्तरंग तप ही अधिक बलवान है।

६२२६. जब तक फल न मिले, तब तक साधना जारी रखना चाहिए।

६२२७. नौका जल में रह सकती है किन्तु जल नौका में नहीं रहना चाहिए उसी प्रकार साधक संसार में रहें किन्तु संसार का माया मोह साधक के मन में न रहे।

६२२८. साधना का लक्ष्य है वासनाओं का नाश करना और सद्वृत्तियों का विकास करना/ वासनाओं के नष्ट होते ही दिव्य भावों से हृदय परिपूर्ण हो जायेगा, हृदय में दिव्य भावों के प्रवेश करते ही समस्त दुर्बलताएँ भाग जायेंगी।

६२२९. क्षति चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न उठानी पड़ी हो, परन्तु बड़प्पन इसी में है कि मनुष्य उसे मन में न लावें और बदला लेने के विचार से दूर रहें।

६२३०. संसार त्यागी पुरुषों से भी बढ़कर सन्त वह है, जो अपनी निन्दा करने वालों की कटुवाणी को सहन कर लेता है।

६२३१. उपवास करके तपश्चर्या करने वाले निंसन्देह महान् हैं, पर उनका स्थान उन लोगों के पश्चात् ही है, जो अपनी निन्दा करने वालों को क्षमा कर देते हैं।

६२३२. सब प्रकार की ईर्ष्या से रहित स्वभाव के समान दूसरा और कोई बड़ा वरदान नहीं है।

६२३३. शान्तिपूर्वक दुःख सहन करना और जीव हिंसा न करना, बस इन्हीं में तपस्या का सार है।

६२३४. तपस्वी जितने बड़े कष्टों को सहता है, उसके उतने ही अधिक आत्मिक भाव निर्मल होते हैं।

६२३५. विद्वेष का फल बुरा होता है, जबकि भलाई का परिणाम शान्ति और समन्वयकारी होता है।

७८. प्रेम से सब कुछ पाया जा सकता है

६२३६. जीवन की सभी बुराइयों की औषधि है–प्रेम।

६२३७. जिसके कर–कमल में दानरूपी अमृत है, मुख कमल में वचन रूपी अमृत है और हृदयकमल में दया रूपी अमृत है वह मनुष्य सभी को प्रिय होता है।

६२३८. जिस प्रकार निर्गन्ध पुष्प, दन्तहीन मुख और सत्यहीन वचन शोभायमान नहीं होता उसी प्रकार धर्म शून्य मानव भी शोभायमान नहीं होता है।

६२३९. आँख सुधरने से मन सुधरता है और जीभ सुधारने से जीवन सुधरता है।

६२४०. प्रेम के मात्र चार दुश्मन हैं–लोभ, मोह, अहंकार और अधिकार है।

६२४१. अहंकार और अधिकार की भूमि पर प्रेम का बीज अंकुरित नहीं होता है।

६२४२. प्रेम में पराया भी अपना नजर आता है और प्रतिस्पर्धा में अपना भी दुश्मन लगता है।

६२४३. दुनिया में सर्वोत्तम दिन है–आज, अच्छे काम के लिए सबसे उपयुक्त समय है–अभी। व्यक्ति की सबसे बड़ी भूल है–समय की बर्बादी। दोस्ती में सबसे बड़ी बाधा है–अधिक

बोलना। दुनिया में सबसे बुरी भावना है–ईर्ष्या। दुनिया में सबसे बड़ा दिवालियापन है–निरुत्साह होना। दुनिया का खूबसूरत पौधा प्रेम का जो जमीन पर नहीं दिल में उगता है।

६२४४. ज्ञान से ध्यान की सिद्धि होती है, ध्यान से अष्टकर्मों का नाश होता है, अतः ध्यान की सिद्धि करने वाले ज्ञान का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

६२४५. प्रेम हो तो घड़ी के काँटों जैसा, जो मिलते तो क्षण भर के लिए हैं, लेकिन हमेशा कनेक्टेड रहते हैं।

६२४६. जहाँ प्रेम वहाँ सत युग, जहाँ कलह वहाँ कलियुग।

६२४७. जो इंसान आप से ज्यादा प्यार करेगा वो आपसे रोज लड़ेगा, लेकिन जब आपका एक आँसू गिरेगा तो उसे रोकने के लिए वह सारी दुनिया से लड़ेगा।

६२४८. स्त्री, बालक, रोगी, दास, पशु, धन, विद्याभ्यास, साधु पुरुषों की सेवा की एक क्षण भी उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

६२४९. जो मनुष्य जैन मन्दिर बनवाता है, उसके लिए समस्त संसार किंकर के समान आचरण करता है और वह शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त होता है।

६२५०. माँ जो भी बनाए उसे बिना नखरे किए खा लिया करो क्योंकि दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जिनके पास या तो खाना नहीं होता है या माँ नहीं होती है।

६२५१. मिलते हैं हजारों लोग, पर हजारों गलतियाँ माफ करने वाले माँ–बाप दुबारा नहीं मिलते हैं। लोगों से कह दो हमारी तकदीर से जलना छोड़ दें क्योंकि हम घर से दवा नहीं माँ की दुआ लेकर चलते हैं।

६२५२. माँ संसार का सुन्दर शब्द है, माँ कहते ही कलेजा भर आता है जवान मीठी हो जाती है और आँखों से गंगा जमुना बहने लगती है।

६२५३. देखो सच्चा प्यार! जब पति ने अपना पसीना पत्नि के दुपट्टे से पोछना चाहा तो पत्नि बोली दुपट्टा गंदा मत करो। जब माँ के दुपट्टे से पोछना चाहा तो माँ बोली ये गन्दा है साफ लाके देती हूँ।

६२५४. जिन मूर्तियों को हम बनाते हैं उनकी हम पूजा करते हैं, पर जिन्होंने हमें बनाया है हम उन माता–पिता कि सेवा क्यों नहीं करते हैं?

६२५५. दुनिया के सभी रिश्तों में माँ का रिश्ता सबसे बड़ा है क्योंकि उसकी आयु सभी रिश्तों से नौ माह अधिक है।

६२५६. जिसके हृदय में करुणा, प्रेम, दया एवं अनुराग होता है उसके शरीर में स्वास्थ्यवर्धक श्वेत कणों की वृद्धि होती है।

६२५७. सुखद मधुर वचन व्यक्त करने वालों के पास दुःखद दारिद्र्य कभी नहीं भटकता है।

६२५८. सहानुभूति मानवता का गौरव है एवं सहृदयता की सच्ची निशानी है।

६२५९. दादागिरी दिखाने की बजाय मिठास से काम लीजिए क्योंकि डंडा मारकर मधुमक्खियों के छत्ते से शहद नहीं लिया जा सकता है।

६२६०. समता का कवच पहन लेने पर कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता जैसे रुई तलवार से भी नहीं कटती है।

६२६१. ताकत की जरूरत तभी होती है जब कुछ बुरा करना हो, वर्ना दुनिया में सब कुछ पाने के लिए प्यार ही काफी है।

६२६२. सेवा से बढ़कर कोई सुख नहीं, प्रेम से बढ़कर कोई प्रार्थना नहीं, सहानुभूति से बढ़कर कोई सौन्दर्य नहीं होता है।

६२६३. कम बोलो काम का बोलो।

६२६४. टालमटोल करने की बजाय सही जवाब दीजिए।

६२६५. अहंकार में निकले वचन हमेशा झूठे समझो।

६२६६. प्रेम में शिकायत नहीं होती, प्रेम करने वाला तो धन्यवाद देता है।

६२६७. प्रेम देने वाला आनन्द से भर जाता है।

६२६८. प्रेम माँगने से नहीं देने से मिलता है।

६२६९. सभी प्राणी भोजन-पानी के नहीं, प्रेम के भूखे होते हैं।

६२७०. प्रेम सांसारिक जीवन का सार है।

६२७१. जहाँ प्रेम की वर्षा होती है, वहाँ शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

६२७२. दूसरों को अधिकार या क्रोध से नहीं प्रेम से जीता जाता है।

६२७३. मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला यदि जगत् में कोई असली चुंबक है तो वह केवल प्रेम है।

६२७४. प्रेम कभी दावा नहीं करता, वह तो हमेशा देता है, प्रेम हमेशा कष्ट सहता है न कभी झुँझलाता है, न बदला लेता है।

६२७५. प्रेम क्या है? दूसरों के लिए सद्भावना।

६२७६. प्रेम का अर्थ दूसरों को सुख पहुँचाना है और अहिंसा का अर्थ दूसरों को दुःख नहीं पहुँचाना है।

६२७७. प्रेम का विरोधी घृणा नहीं, अहंकार है।

६२७८. एक कठोर दण्ड बरसों के प्रेम को मिट्टी में मिला देता है।

६२७९. जिन्दगी की वह उम्र जब इंसान को प्रेम की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, वह बचपन है।

६२८०. जो काम प्रेम से निकल सकता है वह घृणा, क्रोध, भय और मार से नहीं।

६२८१. अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सताये उसके लिए प्रार्थना करो।

६२८२. प्रेम में समय का और भक्ति में धन का दान नहीं देखा जाता है।
६२८३. प्रेम बाँटने से शत्रु भी झोली फैलाकर खड़े हो जाते हैं।
६२८४. जिन्दगी पैसे से नहीं, प्रेम से चलती है।
६२८५. जगत् का प्रेम पाना चाहते हो, तो किसी के विरुद्ध कोई भी कार्य मत करो।
६२८६. किसी आदमी से कितना भी प्रेम हो, मगर उसकी औरत के पास अकेले में नेक इरादे से भी मत बैठो।
६२८७. अगर आपको अपने जीवन से सच्चा प्रेम है तो समय के मूल्य को समझो।
६२८८. पड़ोसी से आत्मीयता जतलाने पर पड़ोसी अपना प्यार पूरे परिवार पर उड़ेल देता है।
६२८९. प्रेम का कच्चा धागा जन्म-जन्मान्तरों को बाँध लेता है, जिसे लोहे की जंजीर नहीं बाँध पाती है।
६२९०. जो मनुष्य ईश्वर को छोड़कर दूसरे से प्रेम करता है वह क्या कभी सुखी हो सकता है?
६२९१. प्रेम की शक्ति डण्डे की शक्ति से हजार गुनी प्रभावशाली और स्थायी होती है।
६२९२. यदि कोई क्षणभर को भी आपसे मिले तो उससे प्रेमपूर्वक मिलो, उसके हृदय में प्रेम का अमृत भर दो फिर वह आपको कभी भी भूल न पायेगा।
६२९३. प्रेम सबसे, विश्वास थोड़ों से तथा नुकसान किसी का भी नहीं करना चाहिए।
६२९४. जैसे शरीर को भोजन की जरूरत होती है वैसे ही आत्मा को प्रेम की जरूरत होती है।
६२९५. अपने मन को मंदिर बनाओ और उसमें प्रेम-प्रीति की प्रतिमा को बसाओ।
६२९६. महान् वह है जिसने अपने दुश्मनों को हरा दिया किन्तु महामना वह है जिसने उन्हें अपना बना लिया है।
६२९७. बात करते समय मन में किंचित् न रहे शल्य, वही है वात्सल्य।
६२९८. व्यक्ति को शल्य से नहीं वात्सल्य से जीना चाहिए।
६२९९. स्थायी शान्ति संधिपत्रों से नहीं किन्तु प्रेम से हो सकती है।
६३००. शान्ति तलवार से नहीं, प्रेम के जोर से होती है, प्रेम से बढ़कर जोड़ने वाली चीज दुनिया में नहीं है।
६३०१. सम्मान लड़ने से नहीं लाड़ करने से मिलता है।
६३०२. साम्प्रदायिक आस्था आपसी प्रेम एवं एकता को खंडित करती है।
६३०३. साम्प्रदायिकता टकराती है तो विद्वेष और शत्रुता पैदा होती है।
६३०४. पृथ्वी पर सब कुछ संभव है लेकिन साम्प्रदायिक मन में प्रेम और एकता संभव नहीं है।
६३०५. जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए।
६३०६. आप जो हैं उसका बहुत कम श्रेय आपको जाता है और याद रखें अगर लोग चिड़चिड़े,

तार्किक या पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं तो इसमें उनका दोष भी बहुत कम है, अतः उनके साथ सहानुभूति रखिये और स्वयं से कहिए यदि मुझ पर ईश्वर की कृपा न होती तो मैं भी इसकी जगह पर हो सकता था इसलिए सामने वाले व्यक्ति के विचारों और इच्छाओं के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करें क्योंकि पूरी मानव जाति सहानुभूति चाहती है, बच्चा अपनी चोट दिखाता है और यदि उसे चोट न भी लगी हो तो वह जानबूझकर चोट लगा लेता है, जिससे उसे सहानुभूति मिल सके, महिलायें तो अत्यधिक सहानुभूति की भूखी रहती हैं और जब उन्हें सहानुभूति नहीं मिलती तो अक्सर बीमारी का बहाना बनाकर लेट जाती हैं जिससे पति दुकान आदि से आकर सिर के पास बैठकर पूछता है अब आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

६३०७. दुनिया में सबसे कीमती भेंट है सरल हृदय से सहानुभूति देना।

६३०८. साधुओं को श्रावक के प्रति वात्सल्य भाव रखना चाहिए क्योंकि श्रावक साधु के पास शान्ति पाने के लिए आता है।

६३०९. सुख परिग्रह के बाहुल्य में नहीं, हृदय की विशालता से बढ़ता है।

६३१०. सुख और आनंद ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे, उतनी ही सुगन्ध आपके भीतर समायेगी।

६३११. यदि लोगों के सम्मान के लिए तेरे हृदय में स्थान है, तब तो तेरे लिए भी लोग सहयोग करने तैयार है, अन्यथा तो कुछ भी चाह करना पागलपन है।

६३१२. आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व बनाये रखने के लिए प्रसन्न चित्त दिखना आवश्यक है, स्नेह-प्रेम और सद्भावना से भरे हृदय में मधुरवाणी और व्यवहार में आकर्षण अपने आप दिखाई देता है।

६३१३. अभिषेक की धारा की तरह सुधार शीर्षस्थ लोगों से शुरू होना चाहिए।

६३१४. किसी ने परमात्मा से पूछा प्यार का असली मतलब क्या है, उन्होंने हँसकर कहा जो मतलब के लिए किया जाये वो प्यार नहीं कहलाता है।

६३१५. आप कितने ही परेशान क्यों न हो, परन्तु परेशान को देखकर ये जरूर कहें कि चिंता की कोई बात नहीं 'मैं हूँ ना' ये तीन शब्द उसके जीवन में ऊर्जा भर देंगे।

६३१६. मिले को अपना न समझो मुक्ति स्वतः सिद्ध है।

६३१७. किसी की नफरत पाकर विजित होने की अपेक्षा प्यार पाकर हार जाना अच्छा है।

६३१८. जिससे काम निकालना है उसे खिलाने के साथ स्नेह वात्सल्य भी दो।

६३१९. सुकाल में किया कार्य सुफल देता है अकाल का कार्य कुफल देता है।

६३२०. घर के बाहर भले ही दिमाग ले जाओ क्योंकि दुनिया एक बाजार है, लेकिन घर में दिल लेकर आना क्योंकि वहाँ एक परिवार है।

६३२१. जिस घर में प्रेम होता है वहाँ सफलता और धन स्वयं चलकर आते हैं।

६३२२. चाहत ऐसी हो कि उसे तुम्हारे सिवा किसी और की चाहत पसंद ना आये। काश कोई ऐसा हो जो गले लगाकर कहे तेरे दर्द से मुझे भी तकलीफ होती है।

६३२३. जब दर्द और कड़वी बोली मीठी लगने लगे तब समझना आपको जीना आ गया।

६३२४. जिन्दगी में जो चाहे हासिल कर लो, बस ख्याल रखना कि आपकी मंजिल का रास्ता कभी लोगों के दिलों को तोड़ता हुआ न गुजरे।

६३२५. अच्छा 'दिल' सम्बन्धों को तो जीत सकता है, पर अच्छा स्वभाव जीवन भर निभा सकता है।

६३२६. प्रेम सभी रोगों की औषधि है। प्रेम शान्ति का महामंत्र है। प्रेम से तनाव नष्ट होता है, प्रेम ही परमात्मा तक पहुँचने की सीढ़ी है।

६३२७. इंसान होता है प्यार करने के लिए और पैसा होता है उपयोग करने के लिए, लेकिन दुःख तब होता है जब हम प्यार तो पैसे से करते है और उपयोग इंसान का करते हैं।

६३२८. आदर करो उसका जिसने अपनी व्यस्तता में आपके लिए समय निकाला परन्तु प्यार करो उसको जिसने अपनी व्यस्तता को नहीं देखा जब आपको जरूरत थी उसकी।

६३२९. कठिन समय में ज्ञानी रास्ता खोजता और अज्ञानी बहाना खोजता है।

६३३०. माँ सबकी जगह ले सकती है लेकिन एक माँ की जगह कोई नहीं ले सकता मुफ्त में सिर्फ माँ बाप का प्यार मिलता है इसके बाद दुनिया में हर रिश्ते के लिए कुछ न कुछ चुकाना पड़ता है।

६३३१. आँसू पौंछकर हँसाया है मुझे, मेरी गलती पर भी सीने से लगाया है मुझे कैसे प्यार न हो ऐसी माँ से, जिसने सच्चा जीना सिखाया है मुझे।

६३३२. जिसके हृदय में वात्सल्य नहीं वह जीव हिंसक है।

६३३३. प्रेम बराबर वालों में, स्नेह छोटों से, राग विशेषों से और वात्सल्य धर्म-धर्मात्मा से होता है।

६३३४. वात्सल्य की दृष्टि से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

६३३५. यदि किसी को कुछ दे सकते हो तो पहले वात्सल्य देना।

६३३६. यदि किसी से उत्कृष्ट प्रीति रखना चाहते हो तो उससे तीन काम मत करो–१. वाचनिक विवाद, २.अर्थ का लेन-देन, ३.परोक्ष में उसकी स्त्री से मेल-जोल।

६३३७. देना, लेना, गुप्त बात कहना, गुप्त बात पूछना, भोजन करना और कराना ये ६ प्रीति के लक्षण हैं।

६३३८. सिर्फ दिल है जो बिना आराम किए सालों साल काम करता रहता है, अतः इसे हमेशा खुश रखिये चाहे अपना हो या दूसरों का।

६३३९. आप केवल इन तीन लोगों पर विश्वास करें—१.जो आपकी हँसी के पीछे का दर्द समझे। २. आपके गुस्से के पीछे का प्यार समझे। ३.आपके मौन होने का कारण समझे।

६३४०. वस्तुतः जिनके भीतर आचरण की दृढ़ता रहती है, वे ही विचार में निर्भीक और स्पष्ट हुआ करते हैं।

६३४१. नेतृत्व उस व्यक्ति को मिलता है जो खड़ा होकर अपने विचार व्यक्त कर सके।

६३४२. दयार्द्र होकर दान करने से भी कहीं श्रेष्ठ है, प्रसन्न मुख के साथ मधुर वचन व्यक्त करना।

६३४३. सहानुभूति व्यथित हृदय से ही होती है।

६३४४. सहानुभूति से हमारा आनंद बढ़ता है और कष्ट कम होते हैं।

६३४५. जब आप दूसरों के दुःखों में सहानुभूति रखेंगे तो कल जब आपको उसकी आवश्यकता होगी, तब वे ही लोग आपको तहे दिल से सहयोग देंगे।

६३४६. औदार्यमय दान से भी बढ़कर सौन्दर्य वाणी की मधुरता, दृष्टि की स्निग्धता और स्नेहार्द्रता में है।

६३४७. जो मनुष्य सब जीवों पर कृपा तथा दया दिखलाता है, उसे उन पाप परिणामों को नहीं भोगना पड़ता, जिन्हें देखकर ही आत्मा काँप उठती है।

६३४८. कहते हैं मिलनसारिता प्रायः उन लोगों में पायी जाती है, जो खुले हृदय से सब लोगों का स्वागत करते हैं।

६३४९. कुलीन व्यक्ति स्वभाव की सरलता के कारण अपमानित होने पर भी कटु वचन नहीं बोलता है; मलय चन्दन के वृक्ष पर परशु का प्रहार किए जाने पर भी दुर्गन्ध नहीं निकलती है।

७९. वाणी वीणा हो, बाण नहीं

६३५०. वाणी में भी अजीब शक्ति होती है कड़वा बोलने वाले की शहद भी नहीं बिकती मीठा बोलने वाले की मिर्ची भी बिक जाती है।

६३५१. वाणी में सुई भले ही रखो पर धागा डाल कर रखो, ताकि सुई केवल छेद ही न करें, आपस में माला की तरह जोड़कर भी रखे।

६३५२. विवेक हीन से बात करना अपने शब्दों को व्यर्थ फेंकना है।

६३५३. अक्सर लोग बोलने की फिक्र में सोचना भूल जाते हैं और दौड़ने की फिक्र में मंजिल भूल जाते हैं; ठीक इसी प्रकार कमाने की चिन्ता में यह भूल जाते हैं कि किसलिए और क्यों कमा रहे हैं?

६३५४. बुद्धि का फल तत्त्व विचार है, शरीर का सार व्रत धारण करना है, धन का सार पात्र दान है और वाणी का सार मनुष्यों में प्रीति उत्पन्न करना है।

६३५५. मधुर आवाज व मनमोहक मुस्कुराहट वाले व्यक्ति सबका दिल जीत लेते हैं।

६३५६. जब भी बोलें, धीमें और धैर्य से बोलें तो आपकी वाणी दूसरों के दिल में प्रेम और जिज्ञासा का झरना बहाएगी।

६३५७. यदि आप एक ही धर्म से सारे जगत् को अपने वश में करना चाहते हैं तो दूसरों की निंदा रूपी धान्य भरे खेतों में विचर रही अपनी वाणी रूपी गौ को रोक लीजिए।

६३५८. वचन पालन करने वाला कंजूस की तरह तौल-तौलकर अपने मुख से शब्द निकालता है।

६३५९. जो व्यक्ति वाणी से ईमानदार नहीं, वह सब कामों में बेईमान हो सकता है।

६३६०. वाणी वीणा का काम करे तब तक ठीक, लेकिन वाणी जैसे ही बाण का काम करने लगे कि विनाश समझना चाहिए।

६३६१. वचन जब तक नहीं निकला तब तक वह तुम्हारे वश में है निकलने पर तुम उसके वश में हो जाओगे अतः सोच कर बोलो।

६३६२. वक्तृत्व कला—स्कूल स्तर पर हर विद्यार्थी को एक कुशल वक्ता बनाना, उसका अच्छा अभ्यास करवाना ताकि वह जीवन के हर स्तर पर सफल हो सके।

६३६३. शब्द-शब्द सब कोई कहे शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे एक करे सौ घाव ॥

६३६४. हम बच्चों पर इतना बोझ डाल देते हैं कि उनकी सोचने की क्षमता क्षीण हो जाती हैं, अतः उन्हें पर्याप्त समय देकर उनकी प्रतिभा को उभारना और एक अच्छा विचारक बनाना ताकि वे भविष्य में समाज को नयी संरचनात्मकता दे सकें।

६३६५. आर्थिक शिक्षा—अमीर कैसे बनना? इसकी शिक्षा वह नहीं दे सकता जो खुद अमीर नहीं है और किसी ने पैसा कमा भी लिया हो तो उस पैसे को कैसे निवेश करना कि अमीरी बनी रहे।

६३६६. मौत के बाद दूसरा सबसे बड़ा भय होता है जनता के बीच बोलने का।

६३६७. आपकी वाणी में इतनी दम होना चाहिए कि जिसे सुनकर लोगों को जिनवाणी पर श्रद्धा हो जाये।

६३६८. इंसान तो हर घर में जन्म लेते हैं बस इन्सानियत कहीं-कहीं है।

६३६९. अपनी वाणी पर नियंत्रण रखो कहीं यह आपका सौभाग्य ही नष्ट न कर दे।

६३७०. जिसका भाषण सुनकर श्रोता अमृत पान जैसा आनंद मानते हैं वह श्रेष्ठ वक्ता है।

६३७१. जिसके पास मीठी जुबान होती है उसे हीरे मोती पहनने की जरूरत नहीं होती है।

६३७२. अगर आपकी आँखें अच्छी हैं तो आप दुनिया को अच्छी देखेंगे अगर आपकी जुबाँ अच्छी तो आप दुनिया को अच्छे लगोगे।

६३७३. हर इंसान जुबान के पीछे छुपा है, अगर उसे समझना चाहते हो तो उसे बोलने दो।
६३७४. जो मन चाहा बोलता, उसे अनचाहा सुनना पड़ता है।
६३७५. आदमी जन्म के दो वर्ष बाद बोलना सीख जाता है पर 'क्या बोलना' यह सीखने के लिए पूरी जिन्दगी बीत जाती है।
६३७६. शालीनता से बात करने पर इज्जत मुफ्त में मिलती है।
६३७७. यदि आपके एक शब्द से भी किसी को कष्ट पहुँचता है तो आप अपनी सर्व भलाई नष्ट हुई समझो।
६३७८. लोकप्रियता के लिए वाणी माधुर्य, अनुपम जादू है, वाणी व्यक्ति को रुला भी देती है हँसा भी देती, रागी को वैरागी व वैरागी को रागी, वाणी कर्म बंध भी करा देती, कर्म बंध से मुक्ति भी करा देती है। 'साधक की वाणी मृदु, मधुर व गंभीर हो।'
६३७९. बीन सुनकर साँप खड़ा हो जाता ऐसे ही आप वाणी का प्रयोग करें कि 'सोता' व्यक्ति भी खुशी से जाग जाये।
६३८०. पानी मर्यादा तोड़े तो विनाश और वाणी मर्यादा तोड़े तो सर्वनाश होता है।
६३८१. प्रियवाणी बोलने वाले का कोई शत्रु नहीं होता है और कटु बोलने वाले का कोई मित्र नहीं होता है।
६३८२. कर क्रोध को पित्त के समान छोड़कर, लोभ को आँव के समान छोड़कर, भय को वात के समान भेद नष्ट कर, हास्य को कफ के समान नष्ट कर स्वस्थ हो मनुष्य को वाणी बोलना चाहिए।
६३८३. प्रभावी ढंग से बोलना सीखें।
६३८४. बहुत अधिक बोलने वाले पर बोला गया शब्द इतिहास बन जाता है।
६३८५. विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार पेश किया जा चुका हो, लेकिन आखिरकार वह उसका है जो उसे बेहतरीन तरीके से पेश करे।
६३८६. बार-बार कहने से झूठ सच में नहीं बदल जाता है।
६३८७. एक झूठ को यदि सौ बार सत्य बना करके बोला जाये तो वह झूठ भी सत्य सा महसूस होने लगता है।
६३८८. असत्य हमेशा सत्य की बैसाखियों पर चलकर आता है।
६३८९. असत्य तभी बोलिए जब सच खतरे में पड़ा हो।
६३९०. असत्य विजयी भी हो जाये तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है।
६३९१. झूठ बोलकर भविष्य की किसी विशेष अर्थ हानि को बचाया जा सके अथवा महान् कार्य सिद्ध हो सके तो वह झूठ झूठ नहीं है।
६३९२. प्राणघात के अवसर पर यदि झूठ बोलकर किसी निरपराध व्यक्ति के प्राणों की रक्षा की

जा सके तो वह झूठ झूठ नहीं है।

६३९३. वक्ता वह नहीं जो कि सुंदर बोलने वाला हो अपितु वह है जिसका अंतरंग आत्म विश्वास से ओत-प्रोत हो।

६३९४. गाली देकर सिर्फ अपमान ही किया जा सकता है मान की प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती है।

६३९५. कठोर बात ही दुनिया में सबसे ज्यादा कमजोर होती है।

६३९६. गाली वापसी का टिकट लेकर ही आती है।

६३९७. जिस तरह भूसे को कूटना निरर्थक है उसी तरह विचार हीन व्यक्ति से युक्ति युक्त बात करना निरर्थक है।

६३९८. अशान्ति न करने वाला, प्रिय, हितकारी, यथार्थ सत्यभाषण और स्वाध्याय का अभ्यास- ये सब वाणी के तप कहे जाते हैं।

६३९९. जो मनुष्य अपने दुःखों को गाता है वह उन्हें चौगुना करता है।

६४००. सत्य के अनन्य भक्त के लिए मौन आध्यात्मिक नियंत्रण का एक अंग है।

६४०१. मधुर (मीठा) खाकर कटु बोलना न्याय संगत नहीं है।

६४०२. अनुभव के बिना बोलना विनाश का कारण होता है।

६४०३. भाषण सत्य हो तो संसार के बहुत से अनर्थ यूँ ही रूक जाएँ।

६४०४. भाषा हमें इसलिए दी गयी थी कि हम एक-दूसरे से रूचिकर बातें कर सकें।

६४०५. जिस बेटे को बाप बचपन में बोलना सिखाता है, वही बेटा पचपन की उम्र में बाप को चुप रहना सिखाता है।

६४०६. प्रत्येक मनुष्य कहना पसंद करता है, सुनना नहीं।

६४०७. दिमाग को आराम देने के लिए मौन रहिये।

६४०८. अपनी जुबान को हार बनाइये, हथियार नहीं।

६४०९. हँसी-मजाक में भी कहे कड़वे वचन आदमी के दिल में चुभ जाते हैं।

६४१०. वाणी ही एक ऐसा आभूषण है जो अन्य आभूषणों की तरह कभी घिसता नहीं है।

६४११. हृदय को सरल व वाणी को निर्दोष रखना चाहिए।

६४१२. वाणी से बढ़कर चरित्र की निश्चित परिचायिका और कोई चीज नहीं।

६४१३. मैं कथनी की अपेक्षा करनी में अधिक विश्वास रखता हूँ।

६४१४. यदि आपको बूढ़ों का ज्यादा बोलना अच्छा नहीं लगता तो उनसे यह शिक्षा लो कि कल जब आप बूढ़े होगे तो जरूरत से ज्यादा न बोलोगे।

६४१५. सामने वाले व्यक्ति को ज्यादा बातें करने दें।

६४१६. भाषण मस्तिष्क का दर्पण है।

६४१७. कुशल वाणी बड़े-बड़े विरोधी वक्ताओं को भी बिल्कुल मूक बना देती है।
६४१८. दूसरों को उपदेश देना सरल है।
६४१९. मुँह से एक शब्द गलत निकल जाए तो रामायण होते-होते महाभारत हो जाता है।
६४२०. मधुर शब्दों में कही हुई बात अनेक प्रकार से कल्याण करती है किन्तु वही बात यदि कटु शब्दों में कही जाए तो महान् अनर्थ का कारण बन जाती है।
६४२१. किसी भी बात पर वाद-विवाद बढ़ा कि मन का संतुलन नष्ट हो जाता है।
६४२२. किसी को शोर करते हुए देखें तो समझे उसकी शक्ति कम हो गई हैं।
६४२३. यदि आपके एक शब्द से भी किसी को कष्ट पहुँचता है तो आप अपनी सब भलाई नष्ट हुई समझो।
६४२४. शब्दों का उपयोग कंजूस की भाँति करना चाहिए।
६४२५. शब्दों के माध्यम से पूर्ण की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है।
६४२६. सत्य वही कहना चाहिए, जिससे दूसरों का हित हो।
६४२७. सत्य स्वयं को विज्ञापित करने का कोई उपाय नहीं खोजता है।
६४२८. सत्य सबकी रक्षा करता है पर सत्य की सब हत्या करते हैं।
६४२९. जिनके साथ सत्य है वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है।
६४३०. सत्य समय से बढ़कर मूल्यवान है।
६४३१. सत्य बहुमत की अपेक्षा नहीं रखता आचरण और अनुभूति की अपेक्षा रखता है।
६४३२. सत्य के लिए सन्तों का चरित्र पढ़ना और उनका मनन करना आवश्यक है।
६४३३. सत्य के लिए हर वस्तु की बलि दी जा सकती हैं किन्तु सत्य की बलि किसी भी वस्तु के लिए नहीं दी जा सकती।
६४३४. तुम एकमात्र सत्य पर आरूढ़ होओ, इस बात से भयभीत मत होओ कि अधिकांश लोग तुम्हारे विरुद्ध हैं।
६४३५. सत्य की साधना करने वाला साधक सब ओर दुःखों से घिरा रहकर भी घबराता नहीं है, विचलित नहीं होता है।
६४३६. सत्य से कष्ट होता हो तो भी सत्य नहीं छोड़ो और असत्य से लाभ होता हो तो भी असत्य का अवलंबन न लो।
६४३७. यदि सत्य की ओर बढ़ने में एक हजार धारणाएँ धाराशायी होती हों तो भी हमें आगे बढ़ने से रुकना नहीं चाहिए।
६४३८. दीर्घ संसारी जीव को सत्य सुई के समान चुभता है।
६४३९. सत्य परेशान हो सकता है परास्त नहीं।
६४४०. जहाँ सत्य बोलना संभव न हो, तो झूठ बोलने से तो चुप रहना ही बेहतर है।

६४४१. सत्य का स्थान हृदय में है मुख में नहीं, केवल मुख से निकलने के कारण ही कोई बात सत्य नहीं हो जाती है।
६४४२. जो समय बचाना जानता है वह अनावश्यक बात एक भी नहीं करेगा।
६४४३. हर आदमी की बात सुनो परन्तु अपनी बात बहुत कम किसी को सुनाओ।
६४४४. जो ज्यादा जानता है वह कम बोलता है और जो ज्यादा बोलता है वह कम जानता है।
६४४५. प्रवचन में जो तुम श्रोताओं से कहते हो, वह अपने से भी कहो।
६४४६. वेशभूषा से विदूषक भी आकर्षण कर लेता है, पर वह स्थायी नहीं वाणी का आकर्षण स्थाई होता है।
६४४७. 'बहुभाषिणो न श्रद्धति लोकः' संक्षिप्त और सारयुक्त वचन अच्छे वक्ता का लक्षण है, बहुत बोलने वाले का लोग विश्वास नहीं करते हैं।
६४४८. नर्स की सहानुभूतिपूर्ण वाणी रोगी को स्वस्थ करती है, कर्कश वाणी रोग बढ़ाती है।
६४४९. अध्यापक की क्रोध भरी फटकार विद्यार्थी की मेधा को कुंठित करती है।
६४५०. लिखे हुए शब्द क्रान्ति नहीं लाते बोले हुए शब्द क्रान्ति लाते हैं।
६४५१. जीवन में ७५ प्रतिशत से अधिक कार्य बोलकर ही करने है, अच्छा सेल्समेन का अच्छा वक्ता होना आवश्यक है। सफल वक्ता आत्म विश्वास से भरा होता है।
६४५२. दर्शकों को बताइये कि आप क्या कहने जा रहे हैं, उसे कहिये और फिर उन्हें बताइये कि आपने क्या कहा है।
६४५३. अपनी भाषा पर जरा ध्यान दीजिए अन्यथा आप अपना भाग्य खराब कर लेंगे।
६४५४. नाप-तौल कर बोलें और कम से कम शब्दों में अपनी बात को रखें, शब्दों का चयन भी सही हो।
६४५५. 'ना' कहने से कई तरह की परेशानी से आप बच सकेंगे। समय भी बचेगा और सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।
६४५६. खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं।
६४५७. इंसान के द्वारा उपयोग में आने वाले सभी शब्दों में सबसे जादुई और करिश्माई शब्द है 'धन्यवाद'। शिक्षा, चिकित्सा आदि में पैसे से ज्यादा महत्त्व धन्यवाद का होता है।
६४५८. अगर आपका कोई कार्य रुक गया है या नहीं हो रहा है तो उस कार्य को करवाने की शक्ति इस 'धन्यवाद' शब्द में है।
६४५९. परोक्ष-अपरोक्ष रूप में सहयोग करने वाले को 'धन्यवाद' देना नैतिक जिम्मेदारी है।
६४६०. जो काम पैसे से नहीं हो सकता वह काम इस जादुई शब्द 'धन्यवाद' से संभव है।
६४६१. शुद्धि की विधि बताने के अतिरिक्त कभी भी भोजन कथा मत करो।
६४६२. जो पुरुष दूसरों की शान्ति की परवाह न करके किसी भी क्षम्य बात को अशान्ति से

कहता है, वह निर्दयी पुरुष है, उसका मनोबल हीन हो जाता है और स्वयं अशान्त रहता है, अतः प्रत्येक बात को सावधानी से दूसरों की शान्ति की रक्षा का विचार करते हुए रखो।

६४६३. मेहमानों से या मोबाइल पर संक्षेप में बात करें।

६४६४. बहस में अक्सर वही जीतता है जो ऊँचा बोल पाता है।

६४६५. समय ही अपना धन है।

६४६६. जिसकी चर्चा और चर्या एक होती है उसकी वाणी में ओज होता है।

६४६७. वाचालता अल्पज्ञता की पहचान है।

६४६८. मधुरवाणी शत्रु को भी मित्र बनाती है।

६४६९. इंसान की तरह बोलना न आये तो जानवर की तरह मौन रहो।

६४७०. सर्वाधिक धारा प्रवाही वक्ता अथवा सर्वाधिक उपयुक्त तार्किक सदैव न्याय पूर्ण विचारक नहीं होते हैं।

६४७१. कठोर तर्क प्रस्तुत करते समय कोमल शब्दों का प्रयोग करें।

६४७२. जो वाक्य बिजली के तार की तरह हृदय को धक्का न दे सके उसे निष्फल जानो।

६४७३. तीर्थंकर जैसे महायोगी जिन्होंने सभी कार्य करना छोड़ दिया पर उपदेश करना नहीं छोड़ा और तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि अशरीरी सिद्ध नहीं हो गये अतः जब तक शरीर में शक्ति हैं, जिह्वा में दम है, जब तक कण्ठ काम करना बंद न कर दे तब तक उपदेश देना बंद नहीं करना चाहिए।

६४७४. सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं अपने आचरण से दिया जाता है।

६४७५. दूसरों को सुनाने के लिए अपनी आवाज ऊँची मत करो, बल्कि अपना व्यक्तित्व इतना ऊँचा बनाओ कि आपको सुनने के लिए लोग निवेदन करें।

६४७६. कड़क लफ्जों में हल्की बात कहने की बजाय 'नरम' लफ्जों में ठोस बात कहें।

६४७७. जिसकी भाषा में संयम नहीं उसके भावों में संयम नहीं होता है।

६४७८. शब्दों में दयाभाव रखने से आत्म विश्वास बढ़ता है, विचारों में दया रखने से गंभीरता आती है, हृदय में दया रखने से प्रेम बढ़ता है।

६४७९. एक बेहतरीन इंसान अपनी जुबान से ही पहचाना जाता है, वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती हैं।

६४८०. दावानल से जला वन हरा भरा हो जाता है पर जिह्वारूपी अग्नि से जला हृदय चिरकाल में भी प्रसन्न चित्त नहीं हो पाता है।

६४८१. कष्ट काँटों के चुभने से कम बातों के चुभने से ज्यादा होता है।

६४८२. बात इतनी मधुर रखो कि कभी वापस लेनी पड़े तो खुद को कड़वी न लगे।

६४८३. साधु के वचन मृदु, मधुर, गंभीर, हितकर और संशय को हरने वाले होते हैं।
६४८४. अधिक बोलने वालों की अपेक्षा कम बोलने वालों के शब्दों में अधिक वजन होता है।
६४८२. सम्यग्ज्ञान से रहित अज्ञानी जिन कर्मों को लाख करोड़ भवों में नष्ट करता है, सम्यग्ज्ञानी उन कर्मों को मन-वचन-काय को क्षण भर में वश में करके नष्ट कर देता है।
६४८३. वाणी वाण न बने वीणा जैसी गुंजायमान हो।
६४८४. जरूरी नहीं कि कुछ तोड़ने के लिए पत्थर ही मारा जाये, लहजा बदलकर बोलने से भी बहुत कुछ टूट जाता है।
६४८५. जिन्दगी की आधी शिकायतें ऐसे ही ठीक हो जायें, अगर लोग एक दूसरे के बारे में बोलने की जगह, एक दूसरे से बोलना सीख जाएँ।
६४८६. प्यार के दो मीठे बोल से खरीद लो मुझे, दौलत दिखाई तो सारे जहाँ की कम पड़ जायेगी।
६४८७. शब्दों के दाँत नहीं होते लेकिन जब काटते हैं तो दर्द बहुत होता है और कभी-कभी घाव इतने गहरे होते हैं कि जीवन समाप्त हो जाता पर घाव नहीं भर पाते हैं।
६४८८. अपने शब्दों में ताकत डालें आवाज में नहीं क्योंकि फूल बारिश से खिलते हैं, तूफान से नहीं।
६४८९. लाठी-पत्थर से हड्डियाँ टूटती हैं पर शब्दों से प्रायः सम्बन्ध टूटते हैं।
६४९०. जो ज्यादा बोलते हैं, समझना कि उनका संसार बहुत दीर्घ है।
६४९१. जो अत्यन्त कुपित होने पर भी दुर्वचन नहीं बोलता वह समस्त पृथ्वी पर श्रेष्ठ धर्मात्मा है।
६४९२. बोली गोली से छोटी होती है पर बोली गोली से खोटी होती है।
६४९३. जब मधुर वाणी से सर्प भी वश में हो जाता तो इंसान क्या बड़ी बात है?
६४९४. जो वाणी मित्रों रिश्तेदारों के सामने निकलती है, वही परिवार वालों के सामने निकले तो घर स्वर्ग बन जाये। ''जिस वाणी में स्व-पर हित निहित हो वही सार्थक है।''
६४९५. मिश्री की मिठास कण्ठ पर जाकर समाप्त हो जाती है पर वाणी तन-मन को प्रसन्न कर हृदय को आनंद से भर देती है, अतः ज्यादा मीठी है।
६४९६. कर्कश वाणी पशुत्व का प्रतीक है, मधुर वाणी देवत्व का प्रतीक है।
६४९७. समयानुसार बोलने वाला ही बुद्धिमान होता है।
६४९८. रिश्ते पंछियों की तरह होते हैं, जोर से पकड़ो तो मर सकते हैं, धीरे से पकड़ो तो उड़ सकते हैं, लेकिन प्यार से पकड़कर रखो तो जिन्दगी भर साथ में रहते हैं।
६४९९. अच्छे लोगों की एक खूबी ये भी है कि उन्हें याद रखना नहीं पड़ता, वे याद आते हैं।
६५००. मीठा बोलने में खर्च कुछ नहीं होता मुफ्त में दूसरों का स्नेह और सम्मान प्राप्त होता है।

६५०१. वाणी को सँभल कर बोलना चाहिए क्योंकि इस पंचमकाल में काँच का बर्तन टूटने में तो समय लगता है पर लोगों की श्रद्धा टूटने में समय नहीं लगता अतः देव-शास्त्र-गुरु पर अश्रद्धा न हो ऐसी ही चर्चा और चर्या करना चाहिए।

६५०२. आपके द्वारा किसी को श्रद्धा न हो तो कोई बात नहीं पर किसी की भी श्रद्धा न टूटे यह ध्यान रखें।

६५०३. वाणी का सर्वोत्तम गुण संक्षिप्तता है।

६५०४. प्रेम युक्त मीठी वाणी चुम्बक के समान अपनी ओर खींचती है।

६५०५. वाणी वह है, जो सुनने वाले को वशीभूत कर ले और नहीं सुनने वाले को भी सुनने के लिए विवश कर दे।

६५०६. प्रश्न उल्टा-सीधा कैसा भी हो उत्तर सरस, सरल, विनम्रता पूर्वक ही देना चाहिए।

८०. जीवन सुधरे जीभ से

६५०७. व्यर्थ बोलने की अपेक्षा मौन रहना वाणी की प्रथम विशेषता है, सत्य बोलना वाणी की दूसरी विशेषता है, प्रिय बोलना वाणी की तीसरी विशेषता है, धर्म बोलना चौथी विशेषता है, इनमें उत्तरोत्तर श्रेष्ठता है।

६५०८. जगत् में सब भाषाओं को जन्म देने वाली कौन है ? चमकती हुई संस्कृत। कहो वेद की जननी कौन है? ओजमयी संस्कृत। अनुपम व सरस साहित्य से सम्पन्न कौन हैं? श्रेष्ठ संस्कृत। कहो भारत के अनुरूप भाषा कौन है? सुरभारती संस्कृत।

६५०९. भाव बिगड़ने से स्वयं का नुकसान तथा भाषा बिगड़ने से परिवार का नुकसान होता है

६५१०. क्रोध की भाषा ही महाभारत की परिभाषा है।

६५११. कुलीन व्यक्ति क्रोधित होने पर भी असभ्य नहीं बोलता है, निश्चय ही गन्ना निचोड़े जाने पर भी मीठा ही उगलता है। नीच व्यक्ति सैंकड़ों गुणों से सहित होने पर भी जो हँसी में कहता है, वह झगड़े में भी कथनीय नहीं होता है।

६५१२. मूर्खों की बात का उत्तर मौन है-''एक चुप सौ को हरावे''।

६५१३. दो चीजें निंदनीय हैं—बोलने के समय चुप रहना और चुप रहने के समय बोलना। जो लोग विद्वानों की सभा में अपने सिद्धान्त श्रोताओं के हृदय में नहीं रख सकते है, उनका अध्ययन चाहे कितना ही विस्तृत हो, फिर भी वह निरुपयोगी है।

६५१४. भली प्रकार प्रयुक्त की गई गौ (वाणी) विद्वानों ने कामनापूर्ण करने वाली कामधेनु कहा है किन्तु वही वाणी दुष्प्रयुक्त होने पर वक्ता में गोत्व (मूर्खता) को सूचित करती है।

६५१५. दूसरों से मधुर वचन बोलना जप है एक मात्र तप है।

६५१६. दुर्जनों की गालियों की परवाह करने की कोई आवश्यकता नहीं उनके कुवचनों से कुछ

नहीं बिगड़ता किन्तु सज्जनों के मुख से निकलने वाले कुवाक्य अभिशाप बन कर लोगों को कष्ट पहुँचाते हैं, अतः उनके हृदय को दुःखाना ठीक नहीं है।

६५१७. जितना दिखाते हो उससे अधिक तुम्हारे पास होना चाहिए, जितना जानते हो उससे कम तुम्हें बोलना चाहिए।

६५१८. हे जीभ! भोजन और भाषण दोनों में ही संयत होओ क्योंकि अति भोजन और अतिभाषण दोनों ही प्राणों को शीघ्र ही नाश करते हैं।

६५१९. सच्ची शिक्षा का लक्ष्य बुद्धिमत्ता के साथ चरित्र का विकास करना है।

६५२०. स्पष्टवादिता सर्वोच्च बुद्धिमत्ता है। अल्पभाषी व्यक्ति सर्वोत्तम होते हैं।

६५२१. व्यक्ति के स्वभाव को स्पष्ट करने वाली उसकी वाणी होती है उसका रूप नहीं।

६५२२. बादल समुद्र का खारा जल पीता है और उसको मीठा बना कर बरसा देता है इसी प्रकार सज्जन भी दुर्वचन सुन कर और सहकर उत्तर में सुवचन ही बोलते हैं।

६५२३. यदि आप एक ही कार्य से सारे जगत् को वश में करना चाहते हो तो अपनी वाणी रूपी गाय को पर की निंदा रूपी धान मत चरने दो।

६५२४. प्रवाद चाहे सत्य हो या असत्य, फिर भी लोकापवाद उच्च पदस्थ व्यक्तियों की महिमा का नाश करता ही है।

६५२५. दोषों को भूलकर भाइयों पर स्नेह एवं बन्धुओं पर प्रेम स्थापित करना चाहिए, पत्नि-पति से मधुर तथा कोमल शब्द बोले, मातापिता के प्रति पुत्र निष्ठावान हो, माता-पिता और बहन का दुःख प्राण देकर भी दूर करना चाहिए।

६५२६. ''मधुरतम शब्द प्रशंसा है।'' जीवन का सत्य प्रसन्नता है।

६५२७. ऐसी कोई बात किसी आदमी के बारे में मत कहो, जो उस मनुष्य के मुँह पर नहीं कह सकते हैं। जो अभिमानी हैं, आदर के योग्य नहीं है, उचित अनुचित के विवेक से रहित हैं, अप्रिय वक्ता हैं, दुःख और अपमान से संकुचित हो रहे हैं ऐसे व्यक्तियों से अत्यन्त गुणी मनुष्य संभाषण नहीं करते हैं।

६५२८. वह सर्वाधिक सुखकर बातचीत है जहाँ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, कोई दंभ नहीं अपितु भावों का शांत और आडंबर हीन आदान-प्रदान होता है।

६५२९. विवेक रहित लोगों को सज्जनों की वाणी अर्थहीन लगती है।

६५३०. मुखरता छोटा बनाती है और मौन उन्नति करने वाला होता है, मुखर नूपूर को पैर में और मौन हार को कण्ठ में पहना जाता है।

६५३१. अज्ञानी के लिए मौन से श्रेष्ठ कुछ नहीं है और यदि वह यह युक्ति समझ ले तो अज्ञानी न रहे।

६५३२. दरिद्रों में दरिद्र वह है जो अतिथि सत्कार न करें।

६५३३. बहुत-सा विचार थोड़े शब्दों में व्यक्त करना एक महती कला है।
६५३४. जो वाचाल नहीं है, वह मिथ्या नहीं बोलता है।
६५३५. झूठे आरोपों का सर्वोत्तम उत्तर मौन है।
६५३६. छोटे लोगों के गुण का वर्णन करने वाला अन्य कोई नहीं मिलता है अतएव वह स्वयं ही उसे कहता है अर्थात् स्वगुण वर्णन करने वाला छोटा होता है।
६५३७. वार्तालाप से बुद्धि विकसित होती है किन्तु प्रतिभा की पाठशाला तो एकान्त ही है।
६५३८. बहुत बोलने वाला कदाचित् ही अपने कहे का पालन करता है।
६५३९. महाकुलों में जन्में जनों का पारस्परिक विरोध धर्मोपदेश के अधिकारी गुरुजनों के वचनों से शान्त हो जाया करता है।
६५४०. आँकड़ों की अपेक्षा तथ्य अधिक जोर से बोलते हैं।
६५४१. कड़ी बात भी हँसकर कही जाये तो मीठी हो जाती है।
६५४२. दूसरों के अप्रिय वचन सुनकर भी उत्तम व्यक्ति सदाप्रिय वाणी ही बोलते हैं।
६५४३. मीठे बोल से ही बदले में मीठा व्यवहार मिलता है।
६५४४. मीठे शब्दों के रहते हुए भी जो मनुष्य कड़वे शब्दों का प्रयोग करता है, वह मानों पके फलों को छोड़कर कच्चे फल खाता है।
६५४५. यदि समस्त प्रजा की पहुँच राजा तक हो और राजा कभी कठोर वचन न बोले, तो उसका राज्य सबसे अपार रहेगा।
६५४६. जो वाक् कला मित्रों को और भी घनिष्ठता के सूत्र में आबद्ध करती है तथा विरोधियों को भी अपनी ओर आकर्षित करती है, बस वही यथार्थ वक्तृता है।
६५४७. जो आदमी सुवक्ता है और गड़बड़ाना या डरना नहीं जानता है विवाद में उसको हरा देना किसी के लिए संभव नहीं है।
६५४८. जिसकी वक्तृता परिमार्जित और विश्वासोत्पादक भाषा में सुसज्जित होती है, सारी पृथ्वी उसके संकेत पर नाचती है।
६५४९. जो लोग अपने मन की बात थोड़े से चुने हुए शब्दों में कहना जानते है वास्तव में उनको अधिक बोलने की आदत नहीं होती है।
६५५०. वक्ता बुद्धिमान श्रोताओं के समक्ष भाषण देने में किसी प्रकार की चूक नहीं करते हैं।
६५५१. तर्क शास्त्र को तुम भली-भाँति सीख लो, जिससे कि मानव समुदाय के सामने बिना भयातुर हुए बोल सको।

८१. याचना नहीं, अर्चना करो

६५५२. अगर सेवक सुख चाहें, भिखारी मान चाहें, व्यसनी धन की इच्छा करें, व्यभिचारी शुभ गति चाहें, लोभी यश चाहें तो समझो कि ये लोग आकाश से दूध दुहना चाह रहे हैं।

६५५३. यदि भीख माँगनी ही है तो बड़ों से आशीर्वाद, छोटों से सहयोग, संसार से प्यार, परमात्मा से दुआ माँगो।

६५५४. श्रावक से माँगने वाला ही भिखारी नहीं परमात्मा के चरणों में प्रार्थना कर याचना करने वाला सर्वोच्च भिखारी है।

६५५५. आपके दुःखों का कारण संसार में रहकर सुख की माँग है।

६५५६. दुनिया का सबसे बढ़िया जेवर आपकी अपनी मेहनत है।

६५५७. याचना करने वाला कौन व्यक्ति लघु नहीं गिना जाता? अर्थात् सभी।

६५५८. जैसे ही हम माँगते हैं हमारा हृदय सिकुड़ जाता है और चेतना के द्वार तत्काल बंद हो जाते हैं।

६५५९. गरीबी कुछ ही चीजें माँगती है, विलासता बहुत-सी किन्तु मोह समस्त चीजें चाहता है।

६५६०. कामना का सर्वदा त्याग कर दें, तो आवश्यक वस्तुएँ स्वतः प्राप्त होंगी क्योंकि वस्तुएँ निष्काम पुरुषों के पास आने के लिए लालायित रहती हैं।

६५६१. जो मुनि तप चारित्र सद्गुणों के द्वारा मेरु के समान गुरुत्व को प्राप्त हुआ है वह भी याचना के द्वारा आक की रुई के समान लघु हो जाता है।

८२. यश हो, परवश न हो

६५६२. अपने माता-पिता के पैर छूने में जिन्हें शर्म आती है, यशः कीर्ति भी उनके पास आने में शर्माती है।

६५६३. मरने के बाद तुम्हें भुला न दिया जाय इसके लिए दो में से एक काम जरूर करो या तो पढ़ने लायक कुछ लिख जाओ या लिखने लायक कुछ कर डालो।

६५६४. प्राप्त करना है तो रागी विरागी दोनों गावे ऐसा यश प्राप्त करो।

६५६५. यशःकीर्ति पुण्य प्रकृति है जो पुण्य पुरुषों की स्तुति वंदना के बिना प्राप्त नहीं होती है।

६५६६. यशःकीर्ति पुण्य का फल है, गुणों का आंकलन नहीं।

६५६७. देह छूटने के बाद राख हो जाने पर प्राणी अपने यश से वैसे ही जाना जाता है, जैसे कपूर अपनी सुगंध से।

६५६८. बड़े आदमियों का नाम फैलने से जितने फायदे हैं, उतनी ही मुश्किलें भी हैं।

६५६९. जो आदमी अपनी प्रशंसा के भूखे होते हैं वे साबित करते हैं कि उनमें योग्यता नहीं है। जिसमें योग्यता है उसका ध्यान ही प्रशंसा की ओर नहीं जाता है।

६५७०. बाह्य प्रसिद्धि के प्रसंगों से दूर भागने वाला ही ब्रह्म ज्ञानी होता है।

६५७१. प्रशंसा का विष संन्यास को बदनाम कर देता है। प्रशंसा का अमृत संन्यास को मृत बना देता है।

६५७२. अच्छी पुस्तकें हीरा-मोती से ज्यादा कीमती हैं क्योंकि हीरा-मोती बाहर को चमकाते हैं, पुस्तकें हृदय को चमकाती हैं।

६५७३. सत्य और समाज के प्रति निर्भीक होकर स्वतन्त्र जीने का नाम संन्यास है।

६५७४. अच्छे (नेक) बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में एक दिन भी नहीं लगता है।

६५७५. अच्छा सम्मान पाने की राह यह है कि आप जैसा प्रतीत होने की भावना करते हो वैसा करने का प्रयत्न करो।

६५७६. वर्दी (वेश) की गरिमा को दाग न लगने दें।

६५७७. संसार में समाज का सम्मान झूठा है क्योंकि समाज की निगाहें बदलते वक्त नहीं लगता है लोग जिस मुख से प्रशंसा करते है उसी मुख से निंदा करने लगते हैं।

६५७८. जैसे लोग फिल्म देखकर नायक-नायिका की नकल करते हैं, उसी प्रकार भगवान् के गुण गाते-गाते भक्त भी उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है।

६५७९. जो देश व समाज के लिए जीते हैं उनका अभिनंदन होना चाहिए, उनका शरीर चले या न चले उनका यश चलता है, वे जिंदा रहे या न रहे उनका यश जिंदा रहता है।

६५८०. अपने प्राण अथवा धन देकर यश की रक्षा करना चाहिए।

६५८१. मनुष्य के लिए इससे बढ़कर सुयश और कोई नहीं है कि लोगों में उसकी प्रसिद्धि हो कि वह झूठ बोलना जानता ही नहीं अर्थात् ऐसा पुरुष अपने शरीर को कष्ट दिये बिना ही सब तरह की सिद्धियों को पा जाता है।

६५८२. जो राजा प्रीति के साथ दान देता है और प्रेम के साथ शासन करता है उसका यश सारे जगत् में फैल जाता है।

६५८३. जिन लोगों को अपनी कीर्ति प्यारी है, वे अपने दोष को राई के समान छोटा होने पर भी ताड़वृक्ष के बराबर समझते हैं।

६५८४. जिनेन्द्र भगवान् ने एक बूँद जल में जो जीव बतलाये हैं, वे यदि कबूतर के बराबर होकर उड़े तो जम्बूद्वीप में न समायें अतः रोग और हिंसा से बचने के लिए पानी छानकर पियें।

स्वाध्याय

६५८५. राजा, प्रधान श्रावक और साधु का मरण होने पर, ग्रहण आदि के समय तथा पर्व के दिनों में सिद्धान्त ग्रन्थों को नहीं बांचना चाहिए। अमावस्या और पूर्णिमा का पाठ गुरु घातक है, चतुर्दशी का पाठ शिष्य घातक है, अष्टमी का पाठ दोनों का घातक है और प्रतिपदा पाठ का घात करने वाली है।

६५८६. जिस समय आप खुद को खुश करने के लिए किसी का 'अपमान' कर रहे होते हैं सच

आप उस समय अपना सम्मान खो रहे होते हैं।

६५८७. जितना पुण्य धन-धान्य से पूर्ण इस समस्त पृथ्वी का दान में देने से मिलता है उससे अधिक पुण्य स्वाध्याय करने से मिलता है।

६५८८. स्वाध्याय का परित्याग कर देने से उत्तम कुल भी नीच कुल हो जाते हैं।

६५८९. स्वाध्याय वाणी का तप है।

६५९०. संसार में बहुत से बड़े आदमी स्वाध्याय के बल पर ही ऊँचे चढ़े हैं, स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई तो निमित्त मात्र है।

६५९१. स्वाध्याय हमें मनोबल प्रदान करता है एवं हतोत्साहित होने पर रामबाण दवा का काम करता है।

६५९२. स्वाध्याय यानि स्व का स्व के लिए स्व के द्वारा अध्ययन करना स्वाध्याय है।

६५९३. स्वाध्याय परमतप है गुणश्रेणी निर्जरा का कारण है।

६५९४. स्वाध्याय करने से सदाचार का पालन होता है, इन्द्रियों का दमन होता है, राग-द्वेष आदि विकारों की मंदता होती है, मन की चंचलता रुकती है, सद्‌गुणों का विकास होता है, वैराग्य दृढ़ होता है, परिणामों में निर्मलता होती है, आत्मा में विशुद्धि बढ़ती है और मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है। ''स्वाध्याय का फल शान्ति धारण करना है।''

६५९५. स्वाध्याय करना कभी बंद मत कर देना क्योंकि समाधि के समय अंतिम श्वासों तक स्वाध्याय ही काम आयेगा।

६५९६. पंचमकाल में परिणामों को वश में करने वाली विद्या तो सिर्फ स्वाध्याय है।

६५९७. स्वाध्याय करने वाला कभी अनाचारी नहीं होता, आँखों को अक्षरों में और मन को अर्थ निकालने में लगा देने से अनर्थ होना बंद हो जाता है।

६५९८. अज्ञानी के दो-चार-पाँच-छह-आठ आदि उपवास करने में जितनी विशुद्धि कर्म निर्जरा होती है, उससे बहुगुणी विशुद्धि निर्जरा भोजन करते हुए शास्त्र पढ़ने से होती है।

६५९९. जो आत्मा के स्वरूप को जानने में कुशल व निपुण है, उनके तप व संयम होता है, समभावी के वैराग्य होता है, शास्त्र पढ़ने वाले के तप, संयम, वैराग्य; तीनों होते हैं, अतः शास्त्र अवश्य पढ़ना चाहिए।

६६००. जहाँ पर अच्छी पुस्तकें हैं, वहाँ से व्यसन, पाप, कषाय, राग-द्वेष आदि विकारों व रोगों को भगाना कठिन नहीं है।

६६०१. किसी भी सामाजिक संस्था की कुछ खास बातें–

१. आप कुछ नहीं करेंगे तो आपको कोई कुछ नहीं कहेगा।

२. अगर आप सक्रिय हैं तो आप पर अँगुलियाँ उठेंगी।

३. अगर आप यह नहीं सोचेंगे कि श्रेय किसको मिलेगा तो आप बहुत कुछ कर

सकते हैं।

४. आपके जितने विरोधी होंगे आपका उतना ज्यादा सम्मान होगा।

५. आप जितना ज्यादा काम करेंगे आपको उतना ज्यादा और काम करना पड़ेगा।

६. जिम्मेदारी उसी की तरफ खिंची आती है, जो उठाना चाहता है।

७. आप अपने मन में जो भी प्रोजेक्ट सोचेंगे उसकी सफलता का श्रेय संस्था को मिलेगा और असफलता की जवाबदेही आपकी होगी?

८. जो आपका सबसे अच्छा हितैषी हैं, वो आपके मुँह पर आपकी आलोचना करेगा।

९. आपको प्रशंसा तब मिलेगी जब आप उसकी उपेक्षा करें।

१०. आप लोकप्रिय तब बनेंगे जब अपने साथियों को सराहेंगे और उनके काम में उत्साह बढ़ायेंगे।

११. आप कब सही थे कोई याद नहीं रखेगा, आप कब गलत थे कोई नहीं भूलेगा।

१२. आप जितना नियम मान कर चलेंगे आप पर उतना ज्यादा नियम मानने का दबाव बनाया जायेगा।

सबसे खास बात सामाजिक कार्यों का उद्देश्य मन की संतुष्टि होती है और इसके लिए बहुत कुछ सहना पड़ता है और आत्मसंतुष्टि से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

❑ ❑ ❑

हमारी आँखें : जीवन का आधार

❑ मनुष्य के पास पाँच इन्द्रिय हैं। यथा–चक्षु (आँख), नाक, कान, रसना और स्पर्शन। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चक्षु अर्थात् आँख है। आँख के अभाव में मनुष्य का जीवन अत्यधिक कठिन है। आँख से मनुष्य के स्वभाव का परिचय मिल जाता है। मनुष्य स्वभाव से कठोर, क्रोधी, नम्र, वात्सल्य पूर्ण अथवा स्नेहमयी है, यह उसकी दृष्टि से झलक जाता है। मनुष्य दो प्रकार के कर्म करता है। १. शुभ अथवा पुण्य कर्म, २. पाप कर्म। आँखें मनुष्य के लिए वरदान है। उसके माध्यम से मनुष्य पुण्य एवं पाप कर्म का बंध करता है। जहाँ एक ओर अच्छी दृष्टि के द्वारा १०० प्रतिशत पुण्य कर्म अर्जित कर सकता है। वहीं मनुष्य को जितना पाप कर्म का बंध होता है, उसका बहुभाग लगभग ८३ प्रतिशत आँख (दृष्टि) के माध्यम से होता है। शेष लगभग १७ प्रतिशत पाप कर्म अन्य शेष चार इन्द्रियों से होता है। यथा–कान (कर्ण), नाक (घ्राण), रसना और स्पर्शन के माध्यम से होता है। मनुष्य आँख के माध्यम से ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जिनवाणी के पठन–पाठन में आँखों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। ज्ञानार्जन के लिए आँखें आवश्यक हैं।

❑ जीवन में आँखों की देखभाल करना आवश्यक है।

आँखों के उपचार सम्बन्धी प्राथमिक जानकारी संकलित कर दी जा रही है–

१. सोने से पहले पैर के तलबे की घी से मालिश करें। ठंडी प्रकृति वाले सरसों के तेल से करें।

२. सीधे लेटकर नाभि में गाय का घी भर दीजिए।

३. सोते समय आँखों में २-२ बूँद गाय का घी डालें।

४. सिर की अंगुलियों से हल्की मालिश करें।

५. भोजन के पहले गर्म पानी में २ चम्मच गाय का घी डाल की पियें।

६. गाय के घी का दीपक जलाकर लगभग १ मीटर दूरी से १-२ मिनट एक टक देखें।

७. तत्काल के ऊगते सूरज को १-२ मिनट देखें।

८. आँवला खायें / मुरब्बा बनाकर या जिस किसी रूप में भी लें। आँवला का पानी गर्मी में ले सकते हैं। ताजे आँवले का रस लें।

९. मोबाइल, लेपटाप पर काम करते समय प्रति घंटा में थोड़ा आराम दें। प्राकृतिक वातावरण दें।

१०. आँखों का व्यायाम करें। ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ एवं गोलाकार घुमाएँ।

११. एक चम्मच त्रिफला चूर्ण की पोटली बनाकर रात में १-२ कप पानी में डाल दें। सुबह इस पानी में आँखें घुमाएँ। पानी के लिए मिट्टी का बर्तन उपयोग करें।

१२. बासा थूक आँखों में लगाएँ।

१३. मुँह में पानी भरकर आँखों में छीटें डालें।

१४. भोजन के पहले १ चम्मच बूरा, २ चम्मच घी एवं १० कालीमिर्च का सेवन करें।

१५. ताजा नींबू का रस १-१ बूँद डालें। नींबू में लकड़ी की काड़ी से छेदकर रस निकालें। चाकू का प्रयोग न करें।

१६. बाजार के बने भोजन से बचें।

१७. ब्रह्मचर्य से रहें।

१८. पुस्तक तिरछी टिकाकर पढ़ें, पुस्तक को अधिक पास रखकर न पढ़ें, ज्यादा छोटे अक्षर न पढ़ें। पढ़ते समय उजाला पीछे से अथवा बगल से आये, लेटकर न पढ़ें।

१९. तेज लाइट एवं ज्यादा मंद लाइट में न पढ़ें।

२०. संक्लेश नहीं करना। अधिक सोचना, आर्तध्यान, रौद्रध्यान नहीं करना।

२१. पुण्य कमाने वाले कार्य करें।

२२. मोबाइल, लेपटाप, टी.व्ही. का कम से कम प्रयोग करें।

औषधि मंजूषा से साभार संकलन-आर्यिका विज्ञानमति माता जी

१. चन्द्रमा को जितना देख सकते हो उतना देखें।
२. गर्मी में ठण्डे पानी में कपड़ा गीला करके तथा सर्दी में गर्म पानी के कपड़े से सेक करें।
३. आँखों को जल्दी-जल्दी झपकाएँ, फिर कुछ क्षण के लिए बंद कर लें। ऐसा कई बार करें।
४. आँखों में चोट लगी हो, जल गई हो, मिर्च मसाला गिर गया हो, कीड़ा आदि गिर गये हों या कीड़े ने काट लिया हो, लाल हो, दुखती हो, कीचड़ आता हो, प्रकाश सहन नहीं होता हो तो रुई का फोहा दूध में भिगोकर आँखों पर रखें। उसको रात भर आँखों पर बाँध दें तो ज्यादा और शीघ्र लाभ होता है।
५. भोजन के बाद हाथ धोकर गीले हाथों की दोनों हथेलियों को आपस में रगड़कर नेत्रों पर लगायें। इससे आँखों में कोई रोग नहीं होता है।
६. एक गिलास संतरे के रस में जरा सी कालीमिर्च, सैंधा नमक मिलाकर पीवें। गाय के दूध की छाछ पीवें।
७. बादाम गिरी १०० ग्राम, माखन मिश्री १०० ग्राम, सौंफ १०० ग्राम, नारियल गिरी १०० ग्राम सभी को अलग-अलग पीसकर काँच के बर्तन में रखें। प्रतिदिन दो चम्मच सुबह-शाम चबा-चबाकर खायें, फिर एक गिलास दूध पीवें। इससे पेट साफ होता है, स्मरण शक्ति एवं नेत्र ज्योति बढ़ती है।
८. शुद्ध देसी घी (गाय का) काली मिर्च और बूरा समान मात्रा में मिलाकर रख दें। प्रतिदिन सुबह-शाम १/४ चम्मच खाकर दूध पीवें।
९. २० ग्राम त्रिफला चूर्ण को २५० ग्राम जल में धीरे-धीरे पकाएँ। चौथाई शेष रहने पर उतारकर छान लें, फिर उसमें ५ ग्राम लोह भस्म मिलाकर १०० ग्राम पुटी की ३० पुड़िया बनाकर रख लें। उसमें से एक पुड़िया प्रतिदिन २ चम्मच देशी घी, २ चम्मच चीनी मिलाकर खावें नेत्र ज्योति शीघ्र बढ़ जाती है। कम से कम दो-तीन माह तक लेते रहें। इससे अंधे भी देखने लगते हैं।
८. आँखों को हथेलियों से ढककर अँधेरा करके या कमरे को बंद करके अँधेरा कर लें, उसे देखें। प्रति घण्टे में ५ मिनट ऐसा करने से आँखों को आराम मिलता है। इससे मोतियाबिन्द नहीं होता है।
९. उगते हुए सूर्य को देखें। (मात्र २-५ मिनट)
१०. प्रातःकाल उठते ही कायोत्सर्ग करके (९बार णमोकार मंत्र पढ़कर) हाथ धोकर मुँह की लार आँखों में लगावें। ४-६ माह में चश्मा का नम्बर कम होगा।

❑ ❑ ❑

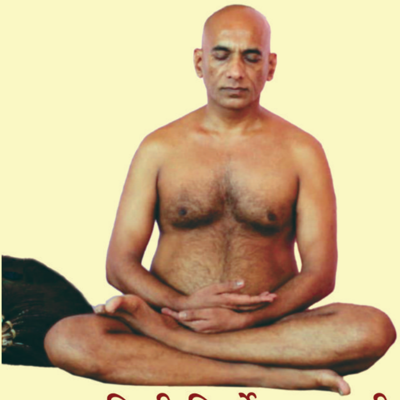

प.पू. मुनिश्री निर्लोभसागरजी

जीवन-परिचय

पूर्व नाम	-	बाल ब्रह्मचारी श्री कमलकुमार जैन
जन्म स्थान	-	तारादेही, जिला-दमोह (म.प्र.)
जन्म तिथि	-	05 अप्रैल 1970
पिता का नाम	-	श्री भागचन्द्र बड़कुल
माता का नाम	-	श्रीमती मालतीबाई जैन
भाई (दो छोटे)	-	श्री अखिलेश जैन, श्री प्रवीण जैन
बहिन (दो)	-	श्रीमती सुशीला जैन, श्रीमती संगीता जैन
अध्ययन	-	सिद्धांत रत्न, न्याय रत्न
मातृभाषा	-	हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत
ब्रह्मचर्य व्रत	-	पूज्य 108 श्री निर्वाणसागरजी से 29 जून को
मुनि दीक्षा	-	10 अगस्त 2013, रामटेक, नागपुर
मुनि दीक्षा गुरु	-	संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज
कृति संपादन	-	सूक्तिमुक्तावली, सुबोध संस्कृत भारती, श्रावक चर्या, दशधर्म स्कंध, वृहद् सामायिक पाठ, नाममालादि शब्दकोश, अराधना पाठावली, जयसेन प्रतिष्ठा पाठ, अमृत भारती, श्रुताराधना, तत्त्वार्थ सूत्र (प्रभाचंद्राचार्य कृत), जैनेन्द्रवृत्ति, आराध्य सूत्र, आराध्य सूक्ति, आराध्य मञ्जरी, णमोकार का जाप करो अपनी रक्षा आप करो इत्यादि।

सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी
ललित कूट
स्वर्णभद्र कूट